Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

असली व प्रमाणिक पंचांग दिवाकर देवी दयाल मशहूर आलम ज्योतिषी लाहौर वालों का

इस पंचांग का कॉपी राईट रजिस्टर्ड हो चुका है। जिसका नं. A-23940/79 है।

इस पंचांग का सर्वाधिकार प्रकाशक आधीन है। कोई महाशय इसकी नकल करने की कोशिश न करें।

प्रकाशक :
धर्मसन प्रकाशन
२५९६, नई सड़क, दिल्ली-६
दूरभाष : ३२६४१८६, ३२८५२३८

मशहूर आलम
पं० देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़
माई हीरां गेट, जालन्धर शहर-१४४००८ (लाहौर वाले)

मूल्य:
26.50
रुपए

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ॐ ॐ

आधुनिक वैज्ञानिक वेधशालाओं की गणितविधि से प्रस्तुत

॥ श्री आर्यभट्ट पंचांगम् ॥

(नव संवत् का सम्पूर्ण एवं वृहद् संस्करण)

राजधानी दिल्ली के अक्षांश २८/३८ पर आधारित एवं
केतकी चित्रापक्षीय दृग्गणित द्वारा वेधसिद्ध

विशेषतः उत्तर भारत एवं समस्त भारत महादेश के लिए उपयोगी, आधुनिक वैज्ञानिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित सर्वोत्तम पंचांग, जिसमें सभी नियमित विषयों के साथ विशेष रूप से प्रस्तुत लेख हैं-

* भारत के सभी प्रमुख धर्म-सम्प्रदायों के व्रत-पर्व-त्यौहार, उत्सव-मेले-जयन्तियों आदि का पूर्ण और प्रामाणिक विवरण;
* पुष्यामृत, सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, पुष्कर आदि सभी शुभ एवं सिद्ध मुहूर्तों का विवरण;
* संसार, स्वदेश एवं सभी प्रदेशों की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और मौसम की भविष्यवाणी;
* बारह राशि-लग्नों का चमत्कारी एवं सत्यसिद्ध सविस्तार फलित तथा ग्रह-दशाओं का फलित;
* सूर्य-चन्द्र ग्रहण और उनका सभी राशि-नक्षत्रों तथा संसार पर होने वाला शुभ-अशुभ प्रभाव;
* जन्म-कुण्डली, प्रश्न-कुण्डली, वर्षफल, महादशा-अन्तर्दशा आदि स्वयं बनाने की सरल विधि;
* प्राचीन ऋषि-मुनियों की अनुभूत एवं चमत्कारी सिद्ध औषधियां तथा असाध्य रोगों की चिकित्सा;
* हस्त रेखा, मस्तक रेखा एवं मुखदर्शन द्वारा स्वयं फलित जानने की वैज्ञानिक और सरल विधि;
* विवाह-द्विरागमन-यज्ञोपवीत आदि संस्कारों के साथ गृहारम्भ, नौकरी या व्यापार आरम्भ करने आदि के मुहूर्त;
* पारिवारिक शुभ संस्कारों एवं यात्रा आदि के शुभ मुहूर्त स्वयं जानने की सरल विधि;
* व्यापारिक तेजी-मंदी की अनेक विधियों से, अनेक विद्वानों द्वारा प्रस्तुत खोजपूर्व भविष्यवाणियां;
* प्रश्न विज्ञान, अंक विज्ञान, रत्न विज्ञान, केरलीय विद्या, रमल प्रश्नोत्तरी एवं गृह शांति के उपाय;
* शनि की साढ़ेसाती-ढैया का सभी राशियों पर शुभ-अशुभ प्रभाव;
* वर-कन्या की जन्म कुंडली मिलाने की विधि मंगलीक योग परिहार सहित;
* यंत्र-मंत्र-तंत्र की साधना और वशीकरण, रोग-निवारण, शत्रु-संहार के चमत्कारी तंत्र;
* शुभ-अशुभ शकुन, छींक, छिपकली, स्वप्न आदि के द्वारा फलित जानने की सरल विधि;

प्रतिवर्ष अनेक नये विषयों का समावेश करके इसे भारत के सर्वोत्तम पंचांग के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, ताकि इसके पाठक स्वयं ज्योतिषी बन सकें। २३२ पृष्ठों के बड़े पंचांग के साथ एक छोटा (लघु) पंचांग मुफ्त संलग्न है। आर्यभट्ट पंचांग के साथ-साथ आर्यभट्ट जन्त्री भी अपनी अनोखी विशेषताओं सहित प्रकाशित हो गयी है।

मूल्य २०.९५ रु. डाक व्यय अलग।

मिलने का पता:- **धर्मसन प्रकाशन** २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

ॐ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

पृष्ठ विषय-सूची

२ पंचांग दिवाकर को देखने की विधि
३-५ व्रत-पर्व तथा अवकाश
६ ग्रहण
७-११ द्वादश राशिफल
१२-१४ दैवज्ञ की दृष्टि
१५ कैलेण्डर १७०१-१९९९
१६-१७ ग्रहों की आकाशी कौंसिल का विचार
१८ शनि की साढ़ेसाती-ढैया विचार
२१ कुम्भ महापर्व हरिद्वार
२२-२३ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक
२४-२५ सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र संचार
२६ सर्वार्थ सिद्धि योग
२७ राशि गुण स्वभाव चक्र
२८ आपके जीवन में क्या होने वाला है ?
२९ ग्रह राशियों की तेजी मन्दी विचार
३०-३१ बारह लग्नों व राशियों का फल
३२ बाल कष्टावली
३३-३४ नक्षत्र कष्टावली
३५ सूर्यादि ग्रहों के लिए दान
३६-३८ श्री भैरव भविष्य ज्ञान प्रश्नावली
३९ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को वर्ष का श्रवण फल
४३ ५.३० बजे से अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने की सारणी
४५-५६ दैनिक ग्रह स्पष्ट
५२-५७ तिथि नक्षत्र योग के घंटे मिनट
५७-८० दैनिक पक्ष
८१ कुंडली में मंगलीक योग विचार
८२ वर्षफल बनाने की सारणी
८३ वर्ष कुण्डली में १२ भावों के फल
८४ मन्दी-तेजी का सुलभ प्रकार
८५ स्वप्न देखने के शुभाशुभ फल
८६-८७ सीमान्त मुहूर्त विचार
८८ नक्षत्र, योनि, नाड़ी ज्ञान
८९-९१ भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांशादि
९२ दशम लग्न सारणी
९३ ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान चक्र
९४ जैमनीय सूत्रांक आयुर्विचार सारणी
९५ स्त्रियों के तिलादि विचार
९६ सकल साधारणोपयोगी प्रश्न चक्र
९७ गण्डान्त नक्षत्र
९८ कृष्ण चतुर्दशी जन्म फल
९९ लग्न सारणी बनाने की विधि
१०० लग्न सारणी जालन्धर
१०१ नींबू और तंत्र क्रियायें, टोना टूटका
१०२-३ हिमा. प्रदेश के शहरों का सूर्योदयास्त
१०३ विश्व के प्रसिद्ध शहरों के सूर्योदयास्त
१०४-९ दैनिक लग्न सारणी
११०-११ षट्वर्ग फलादेश एवं सारणी

वर्ष का राजा मंगल

पंचाङ्ग दिवाकर

संवत २०५४

वर्ष का मंत्री सूर्य

श्री गणेशाय नमः   पं. देवी दयालु मशहूर आलम ज्योतिषी   श्री सरस्वत्यै नमः

असली पंचांग-दिवाकर

मशहूर आलम पं. देवी दयालु ज्योतिषी लाहौर वालों का जो सूक्ष्म नवीन गणित से तैयार होता है।

पं. सुशील शर्मा सुपुत्र पं. रामशरण ज्योतिषाचार्य
प्रपौत्र पं. देवी दयाल ज्योतिषी (लाहौर वाले) के पद चिन्हों पर
नव वर्ष की मुफीद आलम जन्त्री उर्दू व हिन्दी में छपकर तैयार है जो जन साधारण के लिए उपयोगी है।

प्रकाशक:
धर्मसन प्रकाशन
नई सड़क, दिल्ली-११०००६
दूरभाष: ३२८५२३४, ३२६४९८६

११२ प्रत्येक स्थान का सूर्योदय ज्ञान
११३-१४ जन्म समय द्वादश लग्न फल
११४ जन्म कुंडली विचारणीय योग
११४-१५ अशौच व्यवस्था
११५ ग्रहदशा फल
११६ अंक विद्या
११७-१८ एषां परिहार वाक्यानि, काल गणना
११९ मंत्रों-यंत्रों द्वारा इष्ट सिद्धि
१२० केरल प्रश्न चक्र
१२१ प्रश्न फल विचार
१२२-२३ वर-कन्या मेलापक सारणी
१२४ नवरत्न की अंगूठी बनाने का ढंग
१२५ लता दोष
१२६-२७ भूमि सुप्तज्ञान
१२८ यात्रा मुहूर्त विचार
१२९-३३ सूर्यादि ज्ञान सारणी
१३४ मन्त्र प्रयोग द्वारा कामना सिद्धि
१३५ नालवेष्ठित अंग ज्ञान
१३६ सिद्धि अनुभूत वशीकरण मन्त्र
१३७ लाल किताब के अनुभूत योग
१३८ सूर्यादि ग्रहों का गोचर फल
१३९ ग्रह शांति हेतु सप्तवार व्रत विधि
१४० ग्रहों के नाम, दृष्टि, गुण आदि
१४१-४४ जालन्धर से भारत के अन्य शहरों का लग्न समाप्ति काल
१४५-४८ सूर्योदय गणित, चर सारिणी
१४९-५३ अक्षांश की अलग-२ सारिणियां
१५४ बालक के जन्म समय अरिष्ट योग
१५५-६० विंशोत्तरीय दशा गणित
१६१ मंगली दोष
१६२ आइए जन्म पत्रिका बनाएं
१६३ शाबर मन्त्र
१६४-६५ मुखाकृति से भविष्य ज्ञान
१६६ लग्न विचार
१६७-६८ हथेली से भविष्य ज्ञान
१६९-७३ दैनिक शुभाशुभ देखने का चन्द्रकालानल चक्र
१७४-७६ शनि का पाया विचार
१७७-९२ व्यापार विमर्श (A to P)

कालाष्टमी ... ४ | प्रतिपदा पूर्णिमा, कन्या संक्रांति १६ '' | ... दिवस १४ नानक जयंती, मेला गढ़ गंगा १४ '' | कालाष्टमी, सहादत हजरत अलीर१ '' बोस जयंती, जुमा-तुल-विदा २३ '' | भाई २, सन्त तुकाराम ज. १५ '' सोम शीतला पूजन १६ ''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri

॥ पंचांग दिवाकर देखने की विधि ॥

१. हमारे "पंचांग दिवाकर" का निर्माण ग्रीनविच (ब्रिटेन) से पूर्व रेखांश ७५°।१८' एवं उत्तर अक्षांश ३१°।२१' के आधार पर किया गया है। अतएव इस पंचांग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान अर्थात् जालन्धर शहर के हैं।

२. 'पंचांग दिवाकर' के गणित में प्राचीन ज्योतिर्विदों द्वारा प्रमाणित तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त 'सूक्ष्म दृक्गणित' एवं चित्रा पक्षीय 'निरयणपद्धति' को ही अपनाया गया है।

३. पक्षवाले सभी पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जालन्धर शहर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण-वक्री-भवन संस्कार के कारण वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्त में अन्तर आना स्वाभाविक है। अतः प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट ऋण (-) तथा सूर्यास्त में दो मिनट योग (+) करने की आवश्यकता है।

४. वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करणों के साथ सामने दिये गये घटी पल, उनका समाप्तिकाल दर्शाते हैं जोकि स्थानीय सूर्योदय के उपरान्त से माना जाये। उन घटी पलों के घण्टा मिनट बनाकर उसमें पंचांग के स्थानीय सूर्योदय के घण्टा मिनट जोड़ देने से तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में ज्ञात हो जायेगा।

५. पाठकों को सुविधा के लिए गत वर्षों से तिथि नक्षत्रादि के घटी पलों के समाप्ति काल (सूर्योदय संस्कार करके) घण्टा मिनट में भी दे दिये गये हैं जिससे तिथि नक्षत्रादि के समाप्तिकाल को घण्टा मिनट में जानने के लिए कोई परेशानी नहीं हो रही है। सीधे ही तिथ्यादि का समाप्ति काल घंटे मिनट में पढ़ा जा सकता है। जहां २४ लिखा हो वह रात्रि के ठीक १२ बजे समझे जायें। जहां २७।१८ लिखा हो वहं २७ में से २४ घटाकर रात्रि के ३ बजकर १८ मिनट समझे जायें। यह समय भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार सूर्योदय से पहले तक पूर्व तिथि में ही माना जायगा।

६. पक्ष वाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कालम में १५ को पूर्णमासी तथा कृष्णपक्ष में ३० को अमावस समझा जाये। शुक्ल पक्ष को सुदी, कृष्ण पक्ष को वदी भी कहते हैं।

७. कालमों के पश्चात लस्टर में सूर्य चन्द्रादि ग्रहों का नक्षत्र, राशि में प्रवेश काल घटी पलों में दिया हुआ है जिसे उपर्युक्त विधि से (सूर्योदय संस्कार करके) घण्टा मिनटों में परिवर्तित किया जा सकता है। यह चन्द्रादि ग्रहों का राशि नक्षत्र में प्रवेश, सूर्योदय से प्रारंभ काल है, न कि उनका समाप्ति काल।

८. दिनमान घटी-पलों में है जो कि पहले ही कालम में दिया गया है। करणों के कालम के पश्चात् अंग्रेजी तारीखें अंग्रेजी अंकों में लिखी हैं, उसके पश्चात् राष्ट्रीय (शाकीय) तिथि, फिर प्रविष्ठा, फिर मुस्लिम तारीखें दी गई हैं।

९. दैनिक ग्रह स्पष्ट संवत २०५३ वि. से प्रातः ५-३० बजे के दिए गए हैं। अपने अभीष्ट समय पर उनको ग्रह की दैनिक गति का त्रैराशिक विधि से संस्कार करके मार्गी ग्रह में युक्त करने, वक्रीग्रह में से घटाने से इष्ट समय के ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।

१०. तिथि के क्षय के आगे (पक्ष वाले पृष्ठों में) शून्य ० चिन्ह लगाया गया है। जहां कहीं नक्षत्र या योग का क्षय हुआ है उसे लस्टर के ऊपर अलग [illegible] गया है तिथि, नक्षत्रादि के आगे ६०-०० घटी लिखा है उस तिथि नक्षत्रादि की वृ[illegible]ती:-

* * *

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग), अग्नि (पंचक), अगस्त, अप्रैल (मास), अक्टूबर
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान् यो., आषा., आश्विन
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ. = उदय, उपरान्त
उ.फा. = उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
उ.षा. = उत्तराषाढ़ा (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपदा (नक्षत्र)
ऐं. = ऐंन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि), कला
का. = कार्तिक (मास)
क्रांति सा. = साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र), कृष्ण पक्ष
कुं. = कुंभ (राशि),
गु. = गुरु (वार), गुरु ग्रह
गु.दा. = गुरु दान से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घन्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द्र (सोमवार), चन्द्र ग्रह
ज.-जयन्ती, जनवरी (मास)
ज. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि. ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि) धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धूमिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
नि. = निम्बार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग), पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारम्भ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा. = पूर्वा फाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपदा (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन (मास)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र), भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई (मास),
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न), मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल = लग्न
व. = वज्र, वरियान् यो., वाणिज क., वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशा. (नक्षत्र), विष्कुंभ (योग), विकला
वि. मु. = विवाह मुहूर्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा (नक्षत्र)
शि = शिव (योग)
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सिं. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हि. = हिन्दी (मास-तारीख)

रंजन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्रतोत्सव, अवकाश दिन तथा वर्गीकृत त्यौहारादि सं. २०५४ वि. शाके १९१९ सन् १९९७-९८ ई.

गुड़ी १, वर्षारम्भ, गौतम ज.	८	अप्रै.
श्रीमत्स्य जयंती, झूलेलाल ज.	९	"
गणगौर पूजन, सौभाग्य तीज	१०	"
हयव्रत पंचमी	१२	"
वैशाखी पर्व, मेष संक्रान्ति	१३	"
स्कन्द षष्ठी मेला अमृतसर	१३	"
विशू केरला, डॉ. अम्बेडकर ज.	१४	"
मेला मनसा देवी	१५	"
श्री रामनवमी व्रतोत्सव	१६	"
हज्ज	१७	"
कामदा एकादशी व्रत	१८	"
ईद-उल-जुहा बकरीद	१८	"
श्री महावीर जयंती	२०	"
मेला देववन्द (यू.पी.)	२१	"
चैत्री पूर्णिमा, हनुमज्जयंती	२२	"
बाबू कुँअर सिंह जयंती	२३	"
शीतलाष्टमी (बासोड़ा)	३०	"
मजदूर दिवस (मई डे)	१	मई
वरूथिनी ११ व्रत	३	"
बल्लभाचार्य जयंती	३	"
प्रदोष व्रत	४	"
अमापुण्यम्	६	"
टैगोर ज., देवदामोदर तिथि	७	"
परशुराम जयंती, अक्षय तीज	९	"
आद्य शंकराचार्य जयंती	११	"
श्री रामनुजाचार्य जयंती	११	"
श्री गंगा सप्तमी पूजन	१३	"
वृष संक्रान्ति दुर्गाष्टमी	१४	"
श्री जानकी ज. वैष्णव मत	१५	"
मुहर्रम, मोहिनी ११ व्रत	१८	"
सोमप्रदोष व्रत	१९	"
श्री नृसिंह जयंती	२०	"
श्री छिन्नमस्ता व कूर्म ज.	२१	"
बुद्ध पूर्णिमा, गंगा स्नान	२२	"
श्री नारद जयंती वीणादान	२४	"
श्री श्री आनन्दमयी म. पूजा	२५	"
पं. जवाहरलाल नेहरू नि. दि.	२७	"
कालाष्टमी व्रत	२९	"

अपरा ११ भद्रकाली ११ व्रत	१	जून
सोम प्रदोष व्रत	२	"
वटसावित्री व्रत कथा	५	"
करवीर व्रत प्रतिपदा	६	"
रम्भातीज व्रत	७	"
श्री प्रताप ज. मेला हल्दी घाटी	८	"
श्रुति पंचमी जैन	१०	"
विन्ध्यवासिनी पूजा	११	"
अरण्य षष्ठी (बंगाल)	११	"
श्री दुर्गा ८ मेला क्षीरभवानी (क.)	१३	"
माहेश्वरि ९, मिथुन संक्रान्ति	१४	"
दशहरा मेला हरिद्वार	१५	"
निर्जला एकादशी व्रत	१६	"
चम्पक द्वादशी	१७	"
सावित्री व्रत प्रा., प्रदोष व्रत	१८	"
वटसावित्री व्रत, सं. कबीर ज.	२०	"
गु. हरगोविन्द जयंती	२१	"
चैहल्लुम	२६	"
कालाष्टमी व्रत	२७	"
योगिनी एकादशी व्रत	३०	"
प्रदोष, आखरी चहार शाम्बा	२	जुला.
अमापुण्यम्, सहादते ईमाम हसन	४	"
जगदीश रथ यात्रा (उड़ीसा)	६	"
कुमार षष्ठी व्रत	११	"
मेला क्षीरभवानी (कश्मीर)	१४	"
शयनी ११, कर्क संक्रांति	१६	"
दादा मेला अजमेर, मानस पूजा बंगाल	१६	"
प्रदोष व्रत	१७	"
ईद-उल-मिलाद (बारावफात)	१८	"
सत्यव्रत पूर्णिमा	१९	"
व्यास पूजा गुरु पूर्णिमा	२०	"
मौलाद तिलक जयंती	२३	"
नागपंचमी मरुस्थले	२४	"
कालाष्टमी व्रत	२७	"
कामिका एकादशी व्रत	३०	"
प्रदोष व्रत	३१	"
हरियाली मावस	३	अग.
नक्त व्रतारम्भ	४	"

हरियालीतीज सिंधारा	६	अग.
वरद चतुर्थी व्रत	७	"
नागपंचमी देशाचारे	८	"
कल्कि जयंती, वर्ण षष्ठी	९	"
श्री तुलसी ज., शीतला पूजा	१०	"
दुर्गाष्टमी मे. नयनादेवी	११	"
पुत्रदाएकादशी व्रत	१४	"
स्वतन्त्रता दिवस	१५	"
प्रदोषव्रत, सिंह संक्रांति	१६	"
रक्षाबन्धन (राखी)	१८	"
सातूतीज कजरी ३	२०	"
बहुला चौथ व्रत	२१	"
चन्द्रषष्ठी व्रत ललहीछटि	२३	"
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त	२४	"
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव	२५	"
सन्तज्ञानेश्वर ज. दूर्वाष्टमी व्रत	२५	"
गोगा नवमी (नन्दगांव)	२६	"
अजा एकादशी व्रत	२८	"
गोवत्स द्वादशी गोपूजन	२९	"
शनि प्रदोष व्रत	३०	"
अघोरा चौदश	३१	"
सोमवती मावस	१	सितं.
मेला सुथरे शाह दिल्ली	१	"
वीर जन्मोत्सव जैन	२	"
रुणीचा मेला जैसलमेर	४	"
हरितालिका तीज, शिक्षक दिवस	५	"
पत्थर चौथ व्रत	६	"
ऋषि पंचमी, क्षमावाणी पर्व	७	"
सूर्य षष्ठी, हलधर छटि	८	"
सन्तान सप्तमी	९	"
राधाष्टमी दधीचि जयंती	१०	"
श्रीचन्द ९ उदासीन सम्प्र.	११	"
मेला रामदेव जैसलमेर (राज.)	१२	"
पद्मा एकादशी व्रत (डोल ११)	१३	"
ओनम् पर्व केरला	१४	"
वामन द्वादशी मेला पटियाला	१४	"
अनन्त १४, इन्जीनियर्स डे	१५	"
प्रौष्ठपदी पूर्णिमा, कन्या संक्रांति	१६	"

श्री विश्वकर्मा पूजा	१७	सितं.
कालाष्टमी व्रत	२४	"
इन्दिरा एकादशी व्रत	२७	"
प्रदोष व्रत, सन्यासी श्राद्ध	२८	"
अर्धवार्षिक लेखाबन्दी	३०	"
सर्वपितर अमावस्या	१	अक्तू.
नवरात्र प्रा., अग्रसैन जयंती	२	"
श्रीगांधी व शास्त्रीजी जयंती	२	"
वैनायक चतुर्थी व्रत	५	"
उपाङ्ग ललिता पंचमी व्रत	६	"
ओली प्रा., वायु सैना दिवस	८	"
भद्रकाली ज. अन्नपूर्णा परि.	९	"
महानवमी शस्त्र पूजा	१०	"
विजया १० दशहरा मेला	११	"
पांपाकुशा एकादशी, भरत मिलाप	१२	"
शरत्पूर्णिमा सत्यव्रत	१५	"
म. वाल्मीकि ज., ओलीपूर्ण	१६	"
अशून्य शयन व्रत, तुला संक्रांति	१७	"
करक चतुर्थी व्रत	१९	"
पद्मप्रभु जयंती जैन	२०	"
कालाष्टमी, अहोई अष्टमी	२३	"
रमा एकादशी व्रत	२६	"
सवत्सागोपूजा	२७	"
प्रदोष, धन त्रयोदशी	२८	"
नरक चतुर्दशी दीपदान	२९	"
दीपावली महालक्ष्मी पूजन	३०	"
अन्नकूट गोवर्धन पूजा	३१	"
भाई दूज (टिक्का)	२	नवं.
श्री विश्वकर्मा जयंती	२	"
अजमेर का उर्स मेला शुरू	३	"
सौभाग्य पंचमी व्रत	५	"
सूर्य षष्ठी डाला छटि	६	"
गोपाष्टमी गोपूजन	८	"
अक्षय नवमी कूष्माण्ड ९	९	"
प्रबोधिनी एकादशी व्रत	१०	"
वैकुंठ चतुर्दशी	१३	"
सत्यव्रत पूर्णिमा, बाल दिवस	१४	"
नानक जयंती, मेला गढ़ गंगा	१४	"

जन्म दिन हजरत अली	१५	नवं.
अशून्य श. २, वृश्चिक संक्रांति	१६	"
सौभाग्य सुन्दरी व्रत	१७	"
महाकाल भैरवाष्टमी व्रत	२२	"
उत्पत्ति एकादशी व्रत	२५	"
शब्बे मिराज, बालाजी ज.	२९	"
अमापुण्यम्	३०	"
श्रीगणेश ४ व्रत	३	दिसं.
नाग ५ द. भारत, नौ सेना दिवस	४	"
गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस	४	"
स्कन्द षष्ठी चम्पा षष्ठी	५	"
मित्र सप्तमी, नरसी मेहता ज.	६	"
झंडा दिवस	७	"
मोक्षदा एकादशी व्रत	१०	"
अखण्डा १२, प्रदोष व्रत	११	"
सत्यव्रत पू., दत्तात्रेय जयंती	१३	"
पूर्णिमापुण्यं, अन्नपूर्णा ज.	१४	"
शब्बेबरात, धनु संक्रांति	१५	"
कालाष्टमी अष्टकाश्राद्ध	२२	"
श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	२३	"
श्री पार्श्वनाथ जयंती	२४	"
क्रिसमस डे, मालवीय ज.	२५	"
सफला एकादशी व्रत	२५	"
बकुला मावस उड़ीसा	२९	"
सन् 1998 ई.		
ईसाई नववर्षारम्भ	१	जन.
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	५	"
शाम्बदशमी (उड़ीसा)	७	"
पुत्रदा एकादशी व्रत	८	"
शनि प्रदोष व्रत	१०	"
सत्यव्रत पूर्णिमा	१२	"
लोहड़ी उत्सव पंजाब	१३	"
मकर संक्रांति पोंगल	१४	"
माघविहू आसाम	१४	"
संकष्टी श्रीगणेश चौथ व्रत	१६	"
स्वा. विवेकानन्द, रामानन्दाचार्य ज.	२०	"
कालाष्टमी, सहादते हजरत अली	२१	"
बोस जयंती, जुमा-तुल-विदा	२३	"

षट्तिला एकादशी व्रत	२४	जन.
प्रदोष व्रत, शीतलनाथ जयंती	२५	"
मेरु त्रयोदशी जैन, गणतन्त्र दि.	२६	"
शब-इ-कद्र	२७	"
मौनी अमावस्या	२८	"
लाजपतराय ज., मेला हरिद्वार	२८	"
ईदुल-फितर ईद	३०	"
तिलचतुर्थी कुन्द चतुर्थी	३१	"
वसन्त पंचमी	१	फर.
दस्तकार दिवस	२	"
भानु सप्तमी, माधवाचार्य ज.	३	"
भीष्माष्टमी व्रत	४	"
महानवमी, हरसू ब्रह्मदेव	५	"
जया एकादशी व्रत	७	"
प्रदोष, भीष्म द्वादशी	८	"
जितेन्द्र रथयात्रा (जैन)	१०	"
माघी पूर्णिमा, रविदास ज.	११	"
दीनबन्धु एंड्र्यूज जयंती	१२	"
कालाष्टमी, सीताष्टमी	२०	"
समर्थगुरु रामदास नवमी	२१	"
विजया एकादशी व्रत	२३	"
भौम प्रदोष व्रत	२४	"
महाशिवरात्रि व्रत	२५	"
अमापुण्यम्	२६	"
रामकृष्ण परमहंस जयंती	२८	"
पं. लेखरामवीर तृतीया	१	मार्च
अष्टाह्निक जैन व्रत	४	"
होलाष्टक प्रारम्भ	४	"
श्री अन्नपूर्णाष्टमी	५	"
आमला एकादशी व्रत	८	"
महिला दिवस, फूल-डोल उत्स.	८	"
होली, सत्यव्रत पूर्णिमा	१२	"
धुलैण्डी, चैतन्यमहाप्रभु ज.	१३	"
होला मेला, वसन्तोत्सव	१३	"
वसन्त प्रतिपदा, संक्रांति	१४	"
पंखा मेला झझर	१४	"
भाई २, सन्त तुकाराम ज.	१५	"
सोम शीतला पूजन	१६	"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली - 110006 ☎ 3285234, 3264986

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस्लामी त्यौहार, मेले, जैन ज., महापुरुष ज., दशावतार ज., संक्रांति, गुरु पर्व आदि सं. २०५४ वि. शाके १९१९ सन् १९९७-९८ ई.

रंगपंचमी होली मिलन	१८ मार्च
एकनाथ षष्ठी व्रत	१९ ''
शीतलापूजन	२० ''
शीतलाष्टमी मेला करौली	२१ ''
केशरिया मेला मेवाड़	२१ ''
नौचण्डी मेला मेरठ	२२ ''
दशमाताव्रत, शहीद दिवस	२३ ''
पाप मोचनी एकादशी व्रत	२४ ''
प्रदोष व्रत	२५ ''
नवरात्रारम्भ, श्रीगौतम जयंती	२८ ''
सम्वत समाप्त, कुम्भ पर्व स्नान	२८ ''

इस्लामी त्यौहार

हज्ज	१७ अप्रै.
इदुल-जुहा (बकरीद)	१८ ''
मुहर्रम हिजरी सन् १४१८ प्रा.	९ मई
मुहर्रम ताजिये	१८ ''
चैहल्लुम	२६ जून
आखरी चहार शाम्बा	२ जुला.
सहादते ईमाम हसन	४ ''
ईद-उल-मिलाद (बारावफात)	१८ ''
ईद-ए-मौलाद	२३ ''
फतीहायजदहूम	१५ अग.
अजमेर का उर्स मेला शुरू	३ नवं.
शब्बे-मिराज	२९ ''
शब्बेरात यवनोत्सव	१५ दिसं.
रमजान १ रोजारम्भ	१ जन.
सहादते हजरत अली	२१ ''
जुमातुलविदा	२३ ''
शब्ब-इ-कद्र	२७ ''
ईदुल-फितर (ईद)	३० ''

महापुरुष जयंतियाँ (जैन)

मुनि सुमतिनाथ जयंती	१८ अप्रै.
मुनि महावीर स्वामी जयंती	२० ''
मुनि सुव्रतनाथ जयंती	२ मई
मुनि कुन्थनाथ जयंती	७ ''
मुनि अनन्तनाथ जयंती	२ जून
मुनि शान्तिनाथ जयंती	४ जून
मुनि सुपार्श्वनाथ जयंती	१७ ''
मुनि नमिनाथ जयंती	२९ ''
मुनि नेमिनाथ जयंती	९ अग.
मुनि पद्म प्रभुनाथ जयंती	१२ नवं.
मुनि सम्भवनाथ जयंती	१४ ''
मुनि मल्लिनाथ जयंती	१० दिसं.
मुनि अरहनाथ जयंती	१३ ''
मुनि पुष्पदन्तनाथ जयंती	१४ ''
मुनि चन्द्रप्रभु पार्श्वनाथ जयंती	२५ ''
मुनि शीतलनाथ	२५ जन.
मुनि अजितनाथ जयंती	६ फर.
मुनि अभिनन्दन नाथ जयंती	८ ''
मुनि धर्मनाथ	९ ''
मुनि विमलनाथ	१० ''
मुनि श्रेयांशनाथ	२३ ''
मुनि वासुपूज्यनाथ	२३ ''
मुनि ऋषभनाथ	२२ मार्च

मेला दशहरा तथा अन्य उत्सव

मेला आर्यसमाज स्थापन (दिवस)	८ अप्रै.
मेला चौमा नानकसर पंजाब	८ ''
मेला माईसरखाना पंजाब	१३ ''
मेला मनसादेवी हरिद्वार	१५ ''
मेला वाहुफोर्ट जम्मू-कश्मीर	१५ ''
मेला मानकपुर शरीफ रोपड़	२२ ''
मेला पींपलजातर कुल्लू हि.प्र.	२८ ''
मेला पिंजोर हरियाणा	६ मई
मेला डूंगरीजातर मनाली	१४ ''
मेला बंजार हिमाचल	१४ ''
मेला शाढ़ीजातर नगर हिमाचल	१८ ''
मेला क्षीरभवानी कश्मीर	१३ जून
मेला भून्तर हिमाचल प्रदेश	१४ ''
मेला दशहरा हरिद्वार	१५ ''
मेला बहिरेभटिण्डा पंजाब	१६ ''
मेला शरीफ भवानी कश्मीर	१४ जुला.
मेला नयनादेवी चिन्तपूर्णी	११ अग.
मेला अमरनाथ दर्शन कश्मीर	१८ ''
मेला कैलाशयात्रा कश्मीर	३० अग.
मेला गोसांईआणा कुराली	२ सितं.
मेला पात कश्मीर	७ ''
मेला वामन द्वादशी अम्बाला	१४ ''
मेला छपार पंजाब	१५ ''
मेला गोयन्दवाल पंजाब	१६ ''
मेला ज्वालादेवी तारादेवी हि.प्र.	९ अक्तू.
मेला दशहरा कुल्लू	११ ''
मेला शाकुंभरी देवी उ. प्रदेश	१५ ''
मेला दीपावली अमृतसर	३० ''
मेला रेणुका हिमाचल	१० नवं.
मेला रुद्रानारी ऊना हि. प्र.	११ ''
मेला वीरवैरागी नकोदर पं.	१२ ''
मेला बालमेला दिल्ली	१४ ''
मेला पुष्करराज राजस्थान	१४ ''
मेला पुरमण्डल देविका स्नान	२२ ''
मेला जोड़ पंजाब	२६ दिसं.
मेला संगीत जालन्धर	२८ ''
मेला लोहड़ी पंजाब	१३ जन.
मेला मुक्तसर पंजाब	१४ ''
मेला मस्तुआणा पंजाब	१ फर.
मेला वसन्त	१ ''
मेला पचखण्ड पीठ विराटनगर	९ ''
मेला महाशिवरात्रि	२५ ''
मेला होला आनन्दपुर	१३ मार्च
मेला पंखामेला झझर	१४ ''
मेला गुरु रामसहाय देहरादून	१८ ''
मेला वीरभद्रासबधौची पटियाला	१८ ''
मेला शीतलामाता कुराली	२० ''
मेला पिहोवातीर्थ हरियाणा	२६ ''

महापुरुषों के जन्म दिन

श्री गौत्तम जयंती	८ अप्रै.
श्री झूलेलाल जयंती	९ ''
श्री अम्बेडकर जयंती	१४ ''
श्री बाबू कुंअर सिंह जयंती	२३ ''
श्री वल्लभाचार्य जयंती	३ मई
श्री टैगोर व देवदामोदर जयंती	७ ''
श्री शिवाजी जयंती	८ मई
श्री आद्य शंकराचार्य जयंती	११ ''
श्री सूरदास व रामानुजाचार्य ज.	११ ''
श्री माँ आनन्दमयी जयंती	२५ ''
श्री महाराणा प्रताप जयंती	८ जून
श्री सन्त कबीर जयंती	२० ''
श्री हरगोविन्द जयंती	२१ ''
जिनदत्त सूरी जयंती	१६ जुला.
लोकमान्य तिलक जयंती	२३ ''
गो. तुलसीदास जयंती	१० अग.
सन्त ज्ञानेश्वर जयंती	२५ ''
सन्त सुथरेशाह जयंती	१ सितं.
वीरजन्मोत्सव जैन	२ ''
श्री बलदेव छटि	८ ''
श्री गोविन्द बल्लभ पंत ज.	९ ''
श्री चन्दनवमी, विनोबा भावे ज.	११ ''
दशावतार माता जयंती	१२ ''
श्री गांधी व अग्रसैन जयंती	२ अक्तू.
श्री लालबहादुर शास्त्री जयंती	२ ''
श्री माधवाचार्य जयंती	११ ''
श्री महर्षि बाल्मीक जयंती	१६ ''
श्री धनवन्तरि जयंती	२८ ''
श्री रामतीर्थ जन्म-मृत्यु दिन	३१ ''
श्री विश्वकर्मा जयंती	२ नवं.
श्री कवि कालीदास जयंती	११ ''
श्री नानक देव जयंती	१४ ''
पं. नेहरू व निम्बार्का. जयंती	१४ ''
श्रीमती इन्द्रागांधी जयंती	१९ ''
श्री सुविधानाथ जयंती	१९ ''
मित्र नरसी मेहता जयंती	६ दिसं.
ऋषि दत्तात्रेय जयंती	१३ ''
श्री पार्श्वनाथ जयंती	२४ ''
ईसा तथा मालवीय जयंती	२५ ''
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	५ जन.
श्री विवेकानन्द, रामानुजा. ज.	२० ''
श्री सुभाष चन्द्र बोस ज.	२३ ''
श्री लाला लाजपतराय ज.	२८ ''
श्री बल्लभ व लाल दयाल ज.	२९ ''
श्री माधवाचार्य व नर्मदा ज.	३ फर.

क्रिश्चियन त्यौहार

पाम सण्डे	२३ मार्च
गुड फ्राईडे	२८ ''
ईष्टर सण्डे	३० ''
नया साल	१ जन.

सिक्खों के गुरु पर्व

गुरु तेग बहादुर जी	२७ अप्रै.
गुरु अर्जुन देव जी	२९ ''
गुरु अनंगदेव जी	७ मई
गुरु अमरदास जी	२१ ''
गुरु हरगोविन्द जी	२१ जून
गुरु हरिकिशन जी	२८ जुला.
गुरु रामदास जी	१७ अक्तू.
गुरु नानकदेव जी	१४ नवं.
गुरु गोविन्द सिंह जी	५ जन.
गुरु हरराय जी	९ फर.

गुरुयायी मिली

गुरु अमरदास जी	८ अप्रै.
गुरु तेग बहादुर जी	२१ ''
गुरु हरगोविन्द जी	३० ''
गुरु अर्जुन देव जी	४ सितं.
गुरु रामदास जी	१५ ''
गुरु अनंगदेव जी	२१ ''
गुरु हरिकिशन जी	२४ अक्तू.
गुरु गोविन्द सिंह जी	२ दिसं.
गुरु हररायजी जी	२६ मार्च

ज्योति ज्योति समाये

गुरु अनंगदेव जी	११ अप्रै.
गुरु हरगोविन्द जी	१२ ''
गुरु हरिकिशन जी	२१ ''
गुरु अर्जुनदेव जी	९ जून
गुरु रामदास जी	५ सितं.
गुरु अमरदास जी	१६ ''
गुरु नानकदेव जी	२६ सितं.
गुरु हरराय जी	२४ अक्तू.
गुरु गोविन्द सिंह जी	५ नवं.
गुरु तेग बहादुर जी	४ दिसं.

देशावतार जयंतियाँ

श्री मत्स्य जयंती	९ अप्रै.
श्री रामनवमी	१६ ''
श्री परशुराम जयंती	९ मई
श्री नृसिंह जयंती	२० ''
श्री कूर्म जयंती	२१ ''
श्री कल्कि जयंती	९ अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२४ ''
श्री वराहवतार	५ सितं.
श्री वामन जयंती	१४ ''
श्री बौद्धावतार	११ अक्तू.

संक्रांतियाँ

मेष	१३ अप्रै.
वृष	१४ मई
मिथुन	१४ जून
कर्क	१६ जुला.
सिंह	१६ अग.
कन्या	१६ सितं.
तुला	१७ अक्तू.
वृश्चिक	१६ नवं.
धनु	१५ दिसं.
मकर	१४ जन.
कुम्भ	१२ फर.
मीन	१४ मार्च

व्रत पूर्णिमा

चैत्र	२२ अप्रै.
वैशाख	२१ मई
ज्येष्ठ	२० जून
आषाढ़	१९ जुला.
श्रावण	१७ अग.
भाद्रपद	१६ सितं.

धर्मसन प्रकाशन, २५९६ नई सड़क, दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पूर्णिमा, गणेश चतुर्थी, एकादशी, प्रदोष व्रत, अमावस्या, गंडमूल तथा पंचकादि सं. २०५४ वि. शाके १९१९ सन् १९९७-९८ ई.

आश्विन	१५	अक्टू.
कार्तिक	१४	नवं.
मार्गशीर्ष	१३	दिसं.
पौष	१२	जन.
माघ	१०	फरवरी
फाल्गुन	१२	मार्च

श्रीगणेश चतुर्थी व्रत

चैत्र	१०	अप्रै.
वैशाख	२६	"
ज्येष्ठ	२५	मई
आषाढ़	२३	जून
श्रावण	२३	जुला.
श्रावण	७	अग.
भाद्रपद	२१	"
भाद्रपद	६	सितं.
आश्विन	१९	"
कार्तिक	१९	अक्टू.
मार्गशीर्ष	१७	नवं.
मार्गशीर्ष	३	दिसं.
पौष	१७	"
माघ	१६	जन.
माघ	३१	"
फाल्गुन	१५	फर.
चैत्र	१६	मार्च

एकादशी व्रत

चैत्र	कामदा	१८	अप्रै.
वैशाख	वरूथिनी	३	मई
वैशाख	मोहिनी	१८	"
ज्येष्ठ	अपरा	१	जून
ज्येष्ठ	निर्जला	१६	"
आषाढ़	योगिनी	३०	"
आषाढ़	शयनी	१६	जुला.
श्रावण	कामिका	३०	"
श्रावण	पुत्रदा	१४	अग.
भाद्रपद	अजा	२८	"
भाद्रपद	पद्मा	१३	सितं.
आश्विन	इन्दिरा	२७	सितं.
आश्विन	पापांकुशा	१२	अक्टू.
कार्तिक	रम्भा	२६	"
कार्तिक	प्रबोधिनी	११	नवं.
मार्गशीर्ष	उत्पत्ति	२५	"
मार्गशीर्ष	मोक्षदा	१०	दिसं.
पौष	सफला	२५	"
पौष	पुत्रदा	९	जन.
माघ	षट्तिला	२४	"
माघ	जया	७	फर.
फाल्गुन	विजया	२३	"
फाल्गुन	आमला	९	मार्च
चैत्र	पापमोचनी	२४	"

प्रदोष व्रत

चैत्र	शुक्ल	२०	अप्रै.
वैशाख	कृष्ण	४	मई
वैशाख	शुक्ल	१९	"
ज्येष्ठ	कृष्ण	२	जून
ज्येष्ठ	शुक्ल	१८	"
आषाढ़	कृष्ण	२	जुला.
आषाढ़	शुक्ल	१७	"
श्रावण	कृष्ण	३१	"
श्रावण	शुक्ल	१६	अग.
भाद्रपद	कृष्ण	३०	"
भाद्रपद	शुक्ल	१४	सितं.
आश्विन	कृष्ण	२८	"
आश्विन	शुक्ल	१३	अक्टू.
कार्तिक	कृष्ण	२८	"
कार्तिक	शुक्ल	१२	नवं.
मार्गशीर्ष	कृष्ण	२७	"
मार्गशीर्ष	शुक्ल	११	दिसं.
पौष	कृष्ण	२७	"
पौष	शुक्ल	१०	जन.
माघ	कृष्ण	२५	"
माघ	शुक्ल	८	फर.
फाल्गुन	कृष्ण	२४	फर.
फाल्गुन	शुक्ल	१०	मार्च
चैत्र	कृष्ण	२५	"

अमावस्यायें

वैशाख	मंगल	६	मई
ज्येष्ठ	गुरु	५	जून
आषाढ़	शुक्र	४	जुला.
श्रावण	रवि	३	अग.
भाद्रपद	सोम	१	सितं.
आश्विन	बुध	१	अक्टू.
कार्तिक	शुक्र	३१	"
मार्गशीर्ष	रवि	३०	नवं.
पौष	चन्द्र	२९	दिसं.
माघ	बुध	२८	जन.
फाल्गुन	गुरु	२६	फर.
चैत्र	शनि	२८	मार्च

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

पूर्णिमा	१६	सितं.
प्रतिपदा	१७	"
द्वितीया	१८	"
तृतीया	१९	"
चतुर्थी व पंचमी	२०	"
षष्ठी	२१	"
सप्तमी	२२	"
अष्टमी	२३	"
नवमी	२४	"
दशमी	२५	"
एकादशी	२६	"
एकादशी	२७	"
द्वादशी	२८	"
त्रयोदशी	२९	"
चतुर्दशी	३०	"
सर्व पितर	१	अक्टू.

गंडमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल

प्रारम्भ				समाप्ति काल			
ता.	मास	घं. मि.	से	ता.	मास	घं. मि.	तक
				८	अप्रै.	२४।५०	"
१६	अप्रै.	५।५७	"	१८	"	१२।४	"
२५	"	२४।७	"	२७	"	२३।३८	"
४	मई	१३।५८	"	६	मई	१०।४१	"
१३	"	१३।५५	"	१५	"	१९।४६	"
२३	"	७।७	"	२५	"	५।४५	"
३१	"	२०।४३	"	२	जून	१८।३३	"
९	जून	२२।९	"	११	"	२७।४६	"
१९	"	१५।४५	"	२१	"	१३।३९	"
२७	"	२६।६	"	२९	"	२४।२९	"
७	जुला.	५।५०	"	९	जुला.	११।२४	"
१६	"	२५।२१	"	१८	"	२३।१७	"
२५	"	८।८	"	२७	"	५।५१	"
३	अग.	१२।४२	"	५	अग.	१८।१७	"
१३	"	१०।३२	"	१५	"	९।२७	"
२१	"	१६।१७	"	२३	"	१२।४०	"
३०	"	१८।४३	"	१	सितं.	२४।३०	"
९	सितं.	१८।१०	"	११	सितं.	१८।२८	"
१७	"	२६।३४	"	१९	"	२१।४०	"
२६	"	२४।४०	"	२९	"	६।३१	"
६	अक्टू.	२४।१३	"	८	अक्टू.	२५।३५	"
१५	"	१३।३८	"	१७	"	८।२०	"
२४	"	६।५९	"	२६	"	१३।५	"
३	नवं.	५।४८	"	५	नवं.	७।१५	"
११	"	२३।२८	"	१३	"	१८।५७	"
२०	"	१५।२८	"	२२	"	२०।३३	"
३०	"	१२।३०	"	२	दिसं.	१२।५९	"
९	दिसं.	६।४०	"	१०	"	२७।३४	"
१७	"	२४।२८	"	१९	"	२८।४९	"
२७	"	२१।३	"	२९	"	२०।५५	"
५	जन.	१२।५	"	७	जन.	९।४३	"
१४	"	९।११	"	१६	"	१३।१६	"
२४	"	६।४१	"	२६	"	६।५०	"
१	फर.	१८।१७	"	३	फर.	१५।१०	"
१०	"	१६।३९	"	१२	"	२०।५५	"
२०	"	१५।३६	"	२२	"	१६।५०	"
२८	"	२६।५८	"	२	मार्च	२२।२१	"
९	मार्च	२२।४१	"	११	"	२७।२५	"
१९	"	२२।५८	"	२१	"	२५।३०	"
२८	"	१३।५२	"				

पंचकारम्भ व समाप्ति काल

प्रारम्भ				समाप्ति काल			
ता.	मास	घं. मि.	से	ता.	मास	घं. मि.	तक
१	मई	७।५४	से	५	मई	१२।१४	तक
२८	"	१३।२०	"	१	जून	१९।३३	"
२४	जून	१९।२४	"	२८	"	२५।३७	"
२१	जुला.	२७।३६	"	२६	जुला.	६।४७	"
१८	अग.	१३।४२	"	२२	अग.	१४।१२	"
१४	सितं.	२४।३३	"	१८	सितं.	२३।५५	"
१२	अक्टू.	१०।१५	"	१६	अक्टू.	१०।५५	"
८	नवं.	१७।३१	"	१२	नवं.	२१।१३	"
५	दिसं.	२२।५६	"	१०	दिसं.	५।७	"
१	जन.	२९।०	"	६	जन.	१०।५०	"
२९	"	१३।३१	"	२	फर.	१६।३४	"
२५	फर.	२४।९	"	१	मार्च	२४।३१	"
२५	मार्च	११।२	"				

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहण विवरण सम्वत् २०५४ वि.

सम्वत् २०५४ विक्रमी (अप्रैल १९९७ ई. से मार्च सन् १९९८ ई.) के मध्य इस वर्ष विश्व में केवल चार ग्रहण होंगे। दो सूर्य ग्रहणों में एक खण्ड ग्रास तथा दूसरा खग्रास होगा। दो चन्द्र ग्रहणों में एक खग्रास तथा दूसरा नाममात्र का उपछायी ग्रहण होगा। भारतीय भूभाग पर १६ सितम्बर ९७ में होने वाला खग्रास चन्द्रग्रहण ही दिखाई देगा। इस वर्ष होने वाले रवि-चन्द्र ग्रहणों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है–

१:–अदृश्य खण्डग्रास सूर्य ग्रहण–१ सितम्बर सन् १९९७ ई. सोमवार, भाद्रपद कृष्ण सोमवती अमावस्या तिथि में मध्यरात्रि के उपरान्त ३ बजकर १४ मिनट से शरू होने वाले एक चौथाई (खण्डग्रास) रवि ग्रहण को भारत से बाह्य देश आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, वारेन, न्यूगिनी द्वीप समूह तथा दक्षिणी प्रशान्त महासागर के क्षेत्रों में देखा जा सकता है। यह ग्रहण भारतीय भूभाग के किसी भी भाग में दिखाई नहीं देगा। ग्रहणांत मंगलवार ता. २ सितम्बर के प्रातः ७ बजकर ५३ मिनट पर होगा।

२:–भारतीय भूभाग पर खग्रास चन्द्रग्रहण–१६ सितम्बर सन् १९९७ भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा तिथि दिन मंगलवार रात्रि भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार घं. २२ मि. ३८ बजे से शुरू होने वाले खग्रास चन्द्र ग्रहण को भारत वर्ष के प्रत्येक स्थान से देख सकते हैं। भारत के अतिरिक्त उभरते हुए चन्द्र ग्रहण को पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान-ईराक, सऊदी अरब, कजाकिस्तान, तुर्किस्तान, चीन, इथ्योपिया, थाईलैण्ड और श्रीलंका के कुछ भागों से देखा जा सकेगा। ग्रहणान्त ता. १७ सितम्बर १ घं. ५५ मि. प्रातः बजे होगा। अन्त समय तक ग्रहण कुछ काल के लिए अल्जीरिया तक भी दिखाई दे सकता है। भा.स्टें. टा. के अनुसार खग्रास ग्रहण का स्पर्श, सम्मीलन, मध्य, उन्मीलन, मोक्षादि का स्पष्ट ज्ञान चक्र से करलें। प्रत्यक्ष खग्रास चन्द्र ग्रहणाकृति के साथ विवरण दे रहे हैं।

अंग्रेजी मास	प्रारम्भ	सम्मीलन	ग्रहणमध्य	उन्मीलन	अन्त	कुल समय
१६ सितम्बर	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
P.M.	२२।३८	२३।४५	२४।१७	२४।४९	१।५५	३/१७
				१७ सित. A.M.	१७ सित. A.M	

खग्रास ग्रहणाकृति

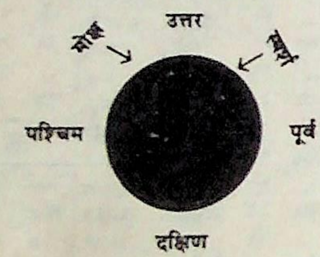

१६ सितम्बर सन् १९९७ ई. में होने वाला खग्रास चन्द्रग्रहण रात्रि के समय पूर्वाभाद्रपद नामक नक्षत्र एवं कुम्भ और मीन दो राशियों में हो रहा है। पूभा. नक्षत्र कुम्भ-मीन राशि वालों के लिए श्रेष्ठ नहीं है। ग्रहणों का मानव मन और विचार शक्ति अर्थात् ज्ञान से सीधा सम्पर्क है। जब कभी खगोलीय घटना घटती है तब मन मस्तिष्क विक्षिप्त हो जाते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव पशु-पक्षी, जीवन-जन्तु, वन्य प्राणी, कुत्ता, बन्दर आदि पर तत्काल देखने को मिलता है। मनुष्य हमेशा से चेतन प्राणी ज्ञानवान रहा है इसीलिए इन पर तत्काल दुष्प्रभाव नहीं हो पाता है। ग्रहण दुष्प्रभावफल किंचित देर से होता है। यह तो सुनिश्चित है चराचर में जो कुछ भी है और जो कुछ हो रहा है वह सब ग्रहाधीन है जैसा कि वृहस्पति जी महाराज ने कहा है–

ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः। सृष्टि-रक्षण-संहारा-सर्वे चापि ग्रहानुगाः॥

देश काल परिस्थितियों का बदलाव भी ग्रहों के प्रभावानुसार हुआ करता है। जिस देश के राजा की जन्म या नाम राशि पर ग्रहण होता है उसे नुकसान होता है। इसी प्रकार ग्राम, नगर अथवा देश की राश्यानुसार जानना चाहिए।

यन्नक्षगतो राहुर्ग्रसते शशिभास्करौ। तज्जातां भवेत्पीड़ा ये नराः शान्तिवर्जिताः॥
यस्य त्रिजन्मनक्षत्रे तस्य रोगोऽथवामृतिः॥

दुष्प्रभावाधीन राशियाँ–कर्क, सिंह व्यवसायिक गतिरोध, आधि व्याधि अन्यान्य परेशानी, घर परिवार अथवा दफ्तर आदि के साथियों में बेमतलब वैमनस्य हो जाय अथवा किसी के द्वारा नाहक सताया जाना सम्भव है।

तुला-वृश्चिक व धनु–के यह ग्रहण मिथ्या अपवाद, बदलाव आर्थिक विकास में गतिरोध कारक है। कुम्भ और मीन राशियों वाले किसी विशेष प्रकार की कठिनाई से गुजर सकते हैं। दान पुण्य, अथेष्ट आराधना, भूदेव, सेवा, सतीर्थोदक स्नान, पुण्यार्जन करते रहना श्रेयष्कर रहेगा। दुष्प्रभाव की निवृत्ति होकर नये काम की रूपरेखा बनेगी। आमदनी बढ़ेगी। शेष राशियाँ मेष, वृष, मिथुन, कन्या और मकर के लिए ग्रहणफल मध्यम जानें, धर्म का अनुशरण करते रहें।

सूतक–''ग्रहण का दोष'' १६ सितम्बर सन् १९९७ मंगलवार दिन में १ बजकर ३८ मिनट से प्रारम्भ हो जायेगा। ग्रहणांत साथ ही समाप्त भी हो जायेगा। सूतक से दूषित समय में बाल वृद्ध और रोगियों को छोड़कर अन्य किसी को भोजनादि नहीं करना चाहिए। सूतक काल को अपने इष्ट देव की आराधना, भगवान् के भजन पूजन, कीर्तन यज्ञानुष्ठान, मन्त्र जाप आदि सतकर्म में व्यतीत करना चाहिए। पुण्यार्जन ही सर्वोपरीय है। मंगलवार सांयकाल देव दर्शन का लाभ प्राप्त हो सकेगा।

३:–खग्रास सूर्य ग्रहण दूसरे देशों में–ता. २६ फरवरी सन् १९९८ ई. फाल्गुन कृष्ण ३० गुरुवार की रात्रि में २० बजकर २१ मिनट पर शुरू होने वाले ग्रहण को भारत से बाह्य दूसरे देश अमेरिका, अर्जेण्टीना, कोलम्बिया और वेन्जुऐला निवासी देख सकेंगे। यह ग्रहण प्रशांत महासागर के ऊपर होगा। भारत में कहीं भी ग्रहण दिखाई नहीं देगा। ग्रहणान्त मध्यरात्रोपरान्त १ बजकर २६ मिनट पर होगा। खग्रास सूर्य ग्रहण का दुष्प्रभाव अमेरिका आदि देशों पर सर्वाधिक पड़ेगा। कहीं युद्धोत्पात का भय बना रहेगा तो कहीं आंधी, तूफान, भयंकर वर्षा, बाढ़, झन्झावात तो कहीं अन्यान्य प्राकृतिक आपदावसात् क्षति सम्भव है। कहीं राजविग्रह हो सकता है।

४–उपछायी क्रान्तिमलिन्य चन्द्रग्रहण ता. १३ मार्च सन् १९९८ ई. फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार में दिन के ७ घं. ४५ मि. से ११ घं. ५६ मिनट के मध्य चन्द्रमा की निस्तेज वाले उपछायी ग्रहण को भारत से बाह्य पश्चिम के पाकिस्तानादि देशों में देखा जा सकेगा। यह धूमिल ग्रहण वास्तव में ग्रहण नहीं होता इसका सूतक पातक भी नहीं माना जायेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश राशिफल सम्वत् २०५४ वि०

मेष–चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अप्रैल–आशातीत लाभ के ग्रह योग बन रहे हैं। समय का सही उपयोग करें। चल-अचल सम्पत्ति का सुख मिलेगा। आलस्य-प्रमाद अवनति की ओर ले जायेगा। चौपाया पशु एवम् वाहनादि से कष्ट सम्भव है।

मई–मध्यम ग्रहचाल के प्रभाव से लाभालाभ समान होगा। कोई नाहक कष्ट पहुंचाने की चेष्टा करेगा। सोचा हुआ काम विलम्ब से बनेगा। पदोन्नति के समाचार से मन खुश होगा। घूमने-फिरने का अवसर मिलेगा। घर-परिवारों में नये मेहमान की खुशी व्यापेगी। मनोमालिन्य से बचे रहें।

जून–बढ़ती उच्चाकांक्षाओं पर नियन्त्रिण रखें। प्रतियोगिता में नम्बर मिलेगा। सोचा-समझा काम बन जायेगा। घर गृहस्थी का मसला हल हो जायेगा। शुभाशुभ समाचार आयेगा। राजनीति में झन्झट होगा।

जुलाई–काम शुरू कीजिए, ग्रह भाग्य विकास में सहायक हैं। दोस्तों के साथ अच्छी पटेगी। छोटी यात्रा लाभप्रद रहेगी। नये काम की इच्छा बलवन्ती होगी। कानूनी विवाद में उलझें नहीं, स्वास्थ्य नियमों का पालन करें।

अगस्त–मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। राजनैतिक माहौल में सितारा चमकेगा। पुराने रोग, ऋण, उपद्रवादि से छुटकारा मिलेगा। खरीद फरोख्त के धन्धे से लाभ होगा। चोर, उचक्के, लफंगे, वाहनादि से सावधानी बरतें। कानूनी विवाद को सुलझाने की चेष्टा करें, उपयोगी रहेगा।

सितम्बर–अकर्मण्यता मिलने वाले शुभ फलों में बाधक है। सावधानी बरतने वाले कामयाब होंगे। बढ़ते जनसम्पर्क, ऐश्वर्य वृद्धि से पड़ौसी जलेंगे। आवश्यक, अनावश्यक भाग दौड़ का चक्कर चलेगा। घर गृहस्थी में कटुतावादिता तदन्तर सरसता का संयोग बनेगा।

अक्तूबर–बढ़ते उत्तरदायित्व को बखूबी निभाएं। अनजान से दोस्ती का हाथ ना मिलायें। समस्या उलझने के बाद सुलझेगी। अच्छी खबर मन खुश करेगी। प्रतिकूल खबर से कुछ तकलीफ होगी। युवा वर्ग की पठन पाठन, साहित्य संगीत में रुचि बढ़ेगी।

नवम्बर–ग्रहचाल हानि लाभ का समान परिचायक है। बदलते परिवेश में सावधानी बरतें। किसी की कही सुनी बातों में ना आवें। इष्ट आराधना, संयम बरतना श्रेष्ठ रहेगा। नवनिर्माण तथा लम्बी यात्रा का विचार बनेगा। स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

दिसम्बर–पुरानी निराशा का समापन होगा। आगमन प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। राजनैतिक, सामाजिक जनसम्पर्क बढ़ेगा। साथी नुकसान पहुंचाने की कुचेष्टा करेगा। कानूनी विवाद ले देकर छूट जायेगा।

जनवरी (९८)–के गोचर ग्रह तरक्की में सहायक हैं। प्रत्येक कदम सोच विचार कर उठावें। आलस्य प्रमाद, उच्चाकांक्षायें न बढ़ने दें। अकर्मण्यता अदृश्य फलों में बाधक ही नहीं, भाग्यावरोधक भी है। घर गृहस्थी की खुशी व्यापेगी।

फरवरी–गोचर ग्रह मध्यम फल दायक हैं । प्रत्येक कदम उठाते समय सावधानी बरतनी चाहिए। उच्चाधिकारी की हां में हां मिलाते रहें। मर्यादा रहित व्यवहार, लोकोपवाद, स्वास्थ्य हानि से बचे रहें।

मार्च–ग्रह चाल भाग्य विकास में सहायक है। आशातीत लाभ की सम्भावना बनेगी। दोस्तों में मटर गस्ती चलती रहेगी। अच्छी खबर मन खुश करेगी। घर गृहस्थी की चिन्ता सतायेगी। स्थान परिवर्तन, लम्बी यात्रा सुखद नहीं।

वृष–ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वु, वे, वो

अप्रैल–चल रहे सामयिक काम में गतिरोध चिन्ता का कारण बनेगा। उत्तरार्ध में विशुद्ध लाभ अधिक होगा। मंगलोत्सव का समाचार आयेगा। सामाजिक काम, देवदर्शन का लाभ होगा। घर गृहस्थ की समस्या का समाधान मिलेगा।

मई–चल-अचल सम्पत्ति का लेन देन सुखद रहेगा। सोचा हुआ काम देर से बनेगा। प्यार प्रीति का चक्कर चलेगा। मन नित नई उधेड़ बुन में लगा रहेगा। खेल कूद में मन खूब लगेगा।

जून–समय रहते समस्या को सुलझाने की कोशिश करें। दोस्तों से सहयोग की इच्छा छोड़ दें। खरीद-फरोख्त के धन्धे से लाभ होगा। कोई तुम्हें गुमराह करने की कोशिश करेगा। स्वास्थ्य कुछ ढीला चलेगा। न चाहते हुए भी कहीं जाना पड़ेगा।

जुलाई–मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। श्रमिक तथा कृषक वर्ग खुश हाली महसूस करेगा। जमाखाता बढ़ेगा। साझे में किया गया काम सफल होगा। लोकोपवाद की आशंका से बचे रहना चाहिए। स्वास्थ्य का ध्यान रहे।

अगस्त–राजनैतिक गठबन्धन सुखद रहेगा। नये काम के तहत भाग्य का सितारा चमकेगा। अचानक धनलाभ का संयोग बनेगा। लम्बी यात्रा पर जा सकते हैं। स्थान परिवर्तन सुखद नहीं। बड़े अधिकारी की गतिविधियां देखते रहें। दोस्ती का हाथ ना मिलावें।

सितम्बर–अच्छी खराब दोनों किस्म की खबर मिलेगी। घूमने-फिरने की इच्छा बलवन्ती होगी। घर परिवार में नये मेहमान की खुशी व्यापेगी। किसी दोस्त से खटकेगी। अव्यवस्थित दिन चर्या रोग का कारण बनेगी असफलता के मध्य सफलता मिलेगी।

अक्तूबर–जमा खर्च का सन्तुलन बना रहेगा। अकर्मण्यता अदृश्य फलों में बाधक ही नहीं भाग्यावरोधक भी है। प्रत्येक कदम सोचविचार कर उठावें। यात्रा छोटी मगर फायदेमन्द रहेगी। पारिवारिक झन्झटों से मुक्ति मिलेगी। स्वास्थ्य पर मौसम की प्रतिक्रिया होगी।

नवम्बर–मास विशेष खुशियां लिए आ रहा है। बढ़ते उत्तरदायित्व बखूबी निभायें। उच्चाधिकारी की गतिविधियां देखते रहें। जमा खाता बढ़ेगा। लाभकारी योजना पर धन खर्च होगा।

दिसम्बर–उत्तम ग्रहचाल के प्रभाव से नया काम बनेगा। यात्रा छोटी से लाभ होगा। दोस्तों में हास्यरस चलता रहेगा। पड़ौसी की गतिविधियां देखते रहें। कानूनी विवाद में ना उलझें । मेहनत के चलते सेहत का ख्याल करें।

जनवरी (९८)–समयानुकूल काम करने वाले भौतिक विकास के भागीदार बनेंगे। मर्यादा रहित व्यवहार से नुकसान सम्भव है। आलस्य प्रमाद ना बढ़ने दें। उच्चाकांक्षायें नियन्त्रित करें। अनावश्यक घूमना फिरना बन्द कर दें।

फरवरी–राजनैतिक माहौल में रुतबा बढ़ेगा। यशोपलब्धि भी मिलेगी। श्री वृद्धि से पड़ौसियों को ईर्ष्या होगी। चौपाए वाहन उपद्रव से नुकसान सम्भव है। प्रत्येक कदम सोच विचार कर उठावें। अधिकारी की हाँ में हाँ मिलाते रहें।

मार्च–कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। समय का उचित उपयोग करें। लोकोपवाद की आशंका से बचे रहें। जमाखाता बढ़ेगा। पारिवारिक विचार पूरा होगा। उपयोगी सामान खरीदा जायेगा। शुभाशुभ समाचार भी आयेगा।

मिथुन–क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, हा

अप्रैल–अकर्मण्यता वसात् कुछ काम बिगड़ सकता है। सम्भव हो तो लम्बी यात्रा टाल दें। सांसारिक सुखोपभोग का साधन मिलेगा। खरीद फरोख्त के धन्धे से लाभ होगा। पुराने रोग, ऋण, विवाद से छुटकारा हो जायेगा।

मई–असफलता के मध्य सफलता मिलेगी। लोकोपवाद की आशंका से बचे रहें। तत्परता वसात् कोई काम बिगड़ सकता है। इस महीने धन लाभ अच्छा होगा। घूमने फिरने का अवसर मिलेगा।

जून–कार्यारम्भ कीजिए भाग्य का सितारा बुलन्द होगा। शुभाशुभ समाचार मिलेगा। सोचा समझा काम सहयोग से बनेगा। कोई तुम्हें नाहक

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

परेशान करने की कोशिश करेगा। उपयोगी सामान खरीदा तथा बेचा जायेगा।

जुलाई–बनते बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। दोस्त इच्छित मदद करेंगे। पड़ौसी नुकसान पहुंचा सकता है। सावधानी चाहिए। धन का सही उपयोग करें। राजनैतिक अपवाद में ना उलझें। यशोपलब्धि मिलेगी। दूरदराज की यात्रा सम्भव है दिनचर्य्या अव्यवस्थित न होने दें।

अगस्त–इच्छित विकास की दशा में कदम बढ़ावें। उत्तरोत्तर विकास होगा। खेलकूद में मन खूब लगेगा। सहपाठी, इष्ट मित्र रचनात्मक काम में मदद करेंगे। परोपकार की भावना पनपेगी। अनावश्यक भाग दौड़ से बचे रहना चाहिए। चोर-लफंगे, वाहनादि से सावधान रहें।

सितम्बर–मास में नित्यानन्द का अनुभव होगा। सूझबूझ से किया गया काम सफल होगा। रुका हुआ धन भी मिलेगा। लोकोपवाद की आशंका से बचे रहना चाहिए। अनजान से दोस्ती का हाथ ना मिलावें। महिला वर्ग का अधिक समय बातचीत में बीतेगा।

अक्तूबर–रहन-सहन, बोलचाल में सादगी बर्तें। मर्यादा रहित व्यवहार से दूर रहें। पदोन्नति में साथी बाधा डलवायेगा। संयम बरतने पर काम बन जायेगा। सुखद समाचार आयेगा।

नवम्बर–कार्यारम्भ कीजिए भाग विकास का संयोग है। रुका हुआ धन देर से मिलेगा। पुराने रोग-ऋण, उपद्रवादि से छुटकारा मिल जायेगा। मेहनत के चलते सेहत का ख्याल करें। घर गृहस्थ की समस्या का समाधान खोजें।

दिसम्बर–बनते बिगड़ते परिवेश में नये आयम मिलेंगे। दोस्त भरपूर मदद करेंगे। पठन, पाठन, साहित्य, संगीत, से प्रेम बढ़ेगा। घर परिवार का विचार पूरा हो जायेगा। प्रतियोगिता में जीव का अहसास होगा। स्वास्थ्य कुछ ढीला चलेगा।

जनवरी (९८)–पूर्वा पेक्षा इस महीने विशुद्ध लाभ अधिक होगा। कोई तुम्हें गुमराह करने की कोशिश करेगा। घूमने फिरने का विचार बनेगा। उपयोगी सामान खरीदा जायेगा। पदोन्नति का चांस मिल जायेगा। शुभाशुभ समाचार आयेगा।

फरवरी–इच्छित लाभ का सुयोग है। नवनिर्माण, देवदर्शन की इच्छा बलवन्ती होगी। सांसारिक सुखोपभोग की सुविधा मिलेगी। मन मुटाव से बचे रहें। बढ़ते उत्तरदायित्व को निभायें। घर गृहस्थी से सरसता बनाये रखें।

मार्च–रोजमर्रा के कामों में कोताही ना बरतें यह मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। चौपाया, वाहन, सामाजिक उपद्रववादि से बचे रहना चाहिए। कानूनी कार्यवाही के चक्कर में ना पड़ें। धर्म के कामों में समय लगावें।

कर्क– ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अप्रैल–ग्रह चाल प्रगति में सहायक है। कार्यारम्भ कीजिए भाग्य आपकी प्रातीच्छा कर रहा है। भौतिक विकास के अवसर ना चूकें। न चाहते हुए भी कहीं जाना पड़ेगा। चल-अचल सम्पति का लाभ होगा। यश भी मिलेगा।

मई–अतीत के संदर्भ में नई खोज का लाभ मिलेगा। कोई तुम्हें बहला-फुसला लेने की कोशिश करेगा। लोकोपवाद की आशंका से बचे रहें। चौपाया, वाहनादि से सावधानी बरतें। घर गृहस्थी में सरसता बनाये रखें। यश मिलेगा।

जून–मास में कर्क राशि वाले नित्यानन्द का अनुभव करेंगे। शरीर में स्फूर्ति का संचार होगा। देश-विदेश से सुखद समाचार मिलेगा। घर परिवार का मसला हल हो जायेगा। स्थान परिवर्तन सुखद रहेगा। नया काम बनेगा।

जुलाई–गोचर ग्रह मध्यम फलदायक हैं। नव निर्माण व लम्बी यात्रा का विचार बनेगा। राजकीय आश्वासन अधूरा मिलेगा। अपने बल पौरुष से काम पूरा होगा। ढील बरतने पर काम बिगड़ सकता है। सचेत रहें।

अगस्त–काम शुरू कर सकते हैं, ग्रह भाग्य विकास के परिचायक पुरानी निराशा समाप्त होगी। रोग, ऋण, उपद्रवादि झन्झट से राहत मिलेगी नये काम की रूपरेखा बनेगी। खरीद फरोख्त के धन्धे से नफा मिलेगा। प्यार प्रीति का चक्कर चलेगा।

सितम्बर–मास कुछ विशेषता लिए आ रहा है। कर्क राशि के सचेतन प्राणियों का सितारा चमकेगा। कानूनी विवाद ले देकर छूट जायेगा। दोस्ती में सौदा पटेगा। नई सोच का लाभ मिलेगा। शरीर पर मौसम का प्रभाव पड़ेगा। नौकापवाद स[illegible]ना पड़ेगा।

अक्तूबर–आशा निराशा का समान योग है। प्रतिद्वन्दी से सावधान रहें। अकर्मण्यता मिलने वाले शुभ फलों में बाधक है। रोजमर्रा के कामों में कोताही ना बरतें। पास पड़ौस में सरसता का व्यवहार बनाये रखें।

नवम्बर–इस महीने उपयोगी इच्छित वस्तु खरीदी जायेगी। शुभाशुभ दोनों किस्म की सूचना आयेगी। आगन्तुक मेहमान की खुशी व्यापेगी। सगे सम्बन्धी, इष्ट मित्र की चिन्ता सतायेगी। यात्रा छोटी मोटी मगर लाभप्रद रहेगी।

दिसम्बर–अधूरा पड़ा काम पूरा होगा। घूमने-फिरने का अवसर मिलेगा। राजनैतिक माहौल में रुतबा बढ़ेगा। एकाध काम बिगड़ेगा। दाम्पत्य जीवन, बाल बच्चों में हास्यरस चलेगा। सुखोपभोग होगा। सैर सपाटे के लिए मन करेगा।

जनवरी (९८)–मास नई उपलब्धि करायेगा। खरीद-फरोख्त के धन्धे से नफा मिलेगा। मन अनावश्यक उलझनों में उलझा रहेगा। आठवाँ गुरु कानूनी विवाद में उलझा सकता है। अपने रोज के काम नियमित करें। सेहत का ख्याल रखें।

फरवरी–की ग्रहचाल अनुकूल रहेगी। अच्छी खबर मन सुख करेगी। पुरानी दोस्ती और गहरायेगी। घर परिवार की समस्या हल हो जायेगी। समय का सही उपयोग करें। शत्रुजनित षड्यन्त्र लोकोपवाद की आशंका से बचे रहें।

मार्च–गोचर ग्रह भाग्य विकास में सहायक हैं। बढ़ते जन सम्पर्क का फायदा उठावें। राजनीति में लड़ें झगड़े नहीं। आगम धन प्राप्ति का रास्ता खुलेगा। लोकोपवाद का संयोग भी बनेगा। प्रत्येक कदम सोच समझ कर उठावें।

सिंह– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

अप्रैल–मास में नित नया हर्षोल्लास बढ़ेगा। इच्छित काम कठिनाई से पूरा होगा। छोटी यात्रा से लाभ होगा। लम्बी यात्रा, नव निर्माण का विचार बनेगा। चोर, लंफगे, वाहनादि से सावधान रहें। मर्यादा रहित व्यवहार छोड़ दें।

मई–मास में आवश्यक अनावश्यक भाग दौड़ लगी रहेगी। कुछ काल तक परिवार की चिन्ता सतायेगी। घनिष्ठ स्नेही से अच्छी खबर भी आयेगी। रुका हुआ धन देर से मिलेगा। पुरानी निराशा का समापन होगा।

जून–मास हंसी खुशी से बीतेगा। घर में नये मेहमान का आना होगा। बच्चों का खेल कूद में समय बीतेगा। गृहणियां बातचीत में मसगूल रहेंगी। यात्रा छोटी मगर फायदे मन्द रहेंगी। कहीं से किसी विशेष प्रकार की खबर मिलेगी।

जुलाई–ग्रहचाल समस्या के समाधान में सहायक रहेगी। दफ्तर आदि के काम काज में जिम्मेदारी बढ़ेगी। नये काम में पूंजी खर्च हो जायेगी। राजनीति परिचर्चा कम करें। बढ़ते उत्तरदायित्व को संभालें। अनजान से दोस्ती का हाथ ना मिलावें।

अगस्त–अकर्मण्यता भाग्य विकास में गतिरोध पैदा करेगी। लोकोपवाद की आशंका बनेगी। भूमि-पशु यातायात कारगर फायदे में रहेंगे। दोस्त आपकी मदद करेंगे। मेहनत के चलते स्वास्थ्य नियमों का पालन करें। लम्बी यात्रा टाल दें।

सितम्बर–सुखोपभोग की सामग्री खरीदी जायेगी। पारिवारिक खबर आयेगी। नये काम की इच्छा अधूरी रह जायेगी। देव दर्शन की इच्छा

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बलवन्ती होगी। स्वास्थ्य पर मौसम सम्बन्धी प्रतिक्रिया होगी। किसी से कहा सुनी सम्भव है।

अक्तूबर–मास आर्थिक विकास कार्यों के लिए अच्छा रहेगा। साझे में किया गया काम सफल होगा। घूमने-फिरने का विचार बनेगा। लोकोपवाद से बचे रहना चाहिए। दिन-रात्रि चर्य्या अव्यवस्थित न होने दें।

नवम्बर–मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। पुराने रोग, ऋण, झन्झट का समापन होगा। नया समझौता कारगर रहेगा। रुका हुआ धन कठिनाई से मिलेगा। लम्बी योजना पर व्यय हो जायेगा। स्वास्थ्य कुछ गड़बड़ायेगा।

दिसम्बर–गोचर ग्रह मध्यम फल दायक हैं। इस महीने सिंह राशि वालों को कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। लाभ-व्यय का सन्तुलन गड़बड़ायेगा। घर गृहस्थी में कटुता वादिता के बाद सरसता बनेगी।

जनवरी (९८)–में बदलाव की प्रतिक्रिया चलेगी। पदोन्नति की खुशी मिलेगी। अच्छी खबर से इच्छा पूरी होगी। नई दोस्ती कामयाब रहेगी। घूमने-फिरने की मंशा पूरी होगी। आवश्यक सामग्री खरीदी जायेगी।

फरवरी–सोचा हुआ काम कठिनाई से बनेगा। आगम धन प्राप्ति का रास्ता खुलेगा। कोई तुम्हें गुमराह करने की कोशिश करेगा। शुभाशुभ समाचार मिलेगा।

मार्च–मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। दैनिक काम में कोताही ना बरतें। आलस्य प्रमाद ना बढ़ने दें। बढ़ती उच्चाकांक्षायें नियन्त्रित करें। स्वास्थ्य सम्बन्धित नियमों का ध्यान रखें।

कन्या– टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अप्रैल–अचानक यात्रा पर जाना पड़ सकता है। राजनैतिक सम्बन्धों से लाभ होगा। व्यवसायिक क्षेत्र में उत्तरदायित्व बढ़ेगा। बड़े अधिकारी से अनबन हो सकती है।

मई–चालू काम में प्रगति होगी। दोस्ती में सरसता बढ़ेगी। विजय श्री मिलेगी। विरोधी को टाह होगी। घर गृहस्थी की समस्या नहीं सुलझेगी। बड़े अधिकारी से कहा-सुनी सम्भव है। कानूनी विवाद में उलझें नहीं।

जून–परिवर्तन धनवृद्धि में सहायक रहेगा। आगम धन प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। नित नई उलझनों में से गुजरना पड़ेगा। यह मास नये काम के लिए चिरस्मरणीय रहेगा। स्वास्थ्य पर ग्रहों का प्रभाव पड़ेगा।

जुलाई–मास नित नई खुशियां लिए आ रहा है। आप अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहें। बढ़ते जनसम्पर्क का फायदा उठावें। लोकोपवाद की आशंका से बचे रहें। अकर्मण्यता मिलने वाले शुभ फलों में बाधक है। सेहत का ध्यान रखें।

अगस्त–प्रतिकूल ग्रह दुष्प्रभाववसात् चौराग्नि भय व्यापेगा। कुछ काल तक विषम परिस्थितियों से गुजरना पड़ेगा। उत्तरार्ध में नया सम्पर्क बनेगा। लाभ का नया स्त्रोत खुलेगा। कोई तुम्हें बहला फुसलाने की चेष्टा करेगा।

सितम्बर–कार्यारम्भ कीजिए ग्रह भाग्य विकास में सहायक हैं। बनते बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। समय का सही उपयोग करने वाले लाभ कमायेंगे। घर गृहस्थ की समस्या सुलझ जायेगी। पड़ौसी से कहा सुनी होगी। बड़ा अधिकारी नाहक परेशान करेगा।

अक्तूबर–इस महीने कन्या राशि वाले नयेपन का अनुभव करेंगे। कुछ काम बनेंगे तो कुछ काम बिगड़ेंगे। पुरानी निराशा, रोग, ऋण का समापन होगा। कानूनी विवाद सुलझ जायेगा। प्रतियोगिता में नम्बर मिलेगा। साहस उत्साह बढ़ेगा।

नवम्बर–लाभ खर्च का समान योग है। रुका हुआ धन कठिनाई से मिलेगा। लम्बी योजना पर धन खर्च होगा। यशोपलब्धि, श्री वृद्धि से पड़ौसी जलेगा। स्वास्थ्य पर मौसम का प्रभाव पड़ेगा। घर में नये मेहमान का आगमन होगा।

दिसम्बर–कार्यारम्भ कीजिए ग्रह विकास में सहायक हैं। इस महीने कन्या राशि वाले लाभ कमायेंगे। यश कीर्ति के भागीदार बनेंगे। दोस्त आपकी भरपूर मदद करेंगे। चोर, उपद्रवकारी से सावधान रहें। स्वास्थ्य हानी से बचे रहें।

जनवरी (९८)–इस महीने सामाजिक, राजनैतिक जनसम्पर्क बढ़ेगा। पुरानी निराशा का समापन होगा। नव निर्माण, लम्बी यात्रा का सुयोग मिलेगा। पदोन्नति का समाचार आयेगा। कोई तुम्हें बहला-फुसलाने की चेष्टा करेगा।

फरवरी–मास आर्थिक लाभ के कामों के लिए अच्छा रहेगा। लोकोपवाद का योग बनेगा। मर्यादारहित व्यवहार नुकसान पहुँचायेगा। राजनैतिक माहौल में सितारा चमकेगा। कहीं शुभाशुभ दोनों किस्म का समाचार मिलेगा।

मार्च–मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। समय का सही उपयोग करें। पत्नी तथा बाल बच्चों की बातें ध्यान से सुनें। पुराने रोग, ऋण, मुकद्दमादि से राहत मिलेगी। नये काम तथा घूमने फिरने की इच्छा बलवन्ती होगी।

तुला– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अप्रैल–मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहें। आलस्य-प्रमाद का त्याग करें। अनावश्यक उच्चाकांक्षायें न बढ़ने दें। विशेष लाभ का संयोग मिलेगा। किसी से अनावश्यक झन्झट हो सकता है।

मई–तीव्र लाभ की जिज्ञासा बढ़ती जायेगी। कई कार्यों की बनने वाली योजना असफल रहेगी। दोस्तों के साथ मौज-मस्ती चलेगी। घर गृहस्थी की योजना सफल होगी। देव दर्शन, नवनिर्माण की इच्छाशक्ति बढ़ेगी।

जून–मास में अच्छा खराब दोनों किस्म का समाचार मिलेगा, घूमने-फिरने का विचार पूरा होगा। पदोन्नति में व्यवधान पड़ेगा। अर्थाभाव से जरूरी काम अधूरा रह जायेगा। मन नई योजना में उलझ जायेगा।

जुलाई–में नये काम के तहत भाग्य का सितारा चमकेगा। अचानक नये काम का अच्छा खासा लाभ होगा। लेन-देन के धंधे से लाभ होगा। दोस्तों के साथ-अच्छी पटेगी। सोची समझी योजना कारगर रहेगी।

अगस्त–काम शुरू कीजिए भाग्य आपकी प्रतीच्छा कर रहा है। स्थान परिवर्तन सुखद नहीं रहेगा। बड़ा अधिकारी नाहक परेशान करेगा। अन्तर्विरोध सहना पड़ेगा। मंगलोत्सव का समाचार मिलेगा। स्वास्थ्य कुछ ढीला चलेगा।

सितम्बर–अकर्मण्यता मिलने वाले शुभ फलों में बाधक है। कूट राजनीतिज्ञ से बचे रहें। अनजान से दोस्ती का हाथ ना मिलावें। सम्भव हो तो लम्बी यात्रा टाल दें। बढ़ती उच्चाकांक्षा नियन्त्रित करें। स्वास्थ्य हानि से बचे रहें।

अक्तूबर–राजनैतिक माहौल में सितारा चमकेगा। एक काम बनेगा तो एक बिगड़ेगा। जोड़तोड़ की राजनीति लाभ देगी। चौपाया पशु, वाहनादि से डर बना रहेगा। कानूनी विवाद नया मोड़ ले सकता है। बड़े अधिकारी से सावधान रहें।

नवम्बर–विचाराधीन काम बनेगा। भूमि, वाहनादि खरीदा जायेगा। शुभाशुभ समाचार आयेगा। अनावश्यक भाग दौड़ का चक्र चलेगा। लोकोपवाद का डर बना रहेगा। सामाजिक काम का यश मिलेगा।

दिसम्बर–कार्यारम्भ कीजिए। लोक में नये आयाम मिलेंगे। दोस्त आप की मदद करेंगे। आगन्तुक मेहमान बे फजूल खर्च करवायेंगे। घर परिवार के झमेलों में आप उलझ सकते हैं। दौड़ धूप की अधिकता बनी रहेगी।

CC-0. In Public Domain. Kritjkant Sharma, Najafgarh, Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जनवरी (९८)–मास नई खुशियां लिए आ रहा है। बढ़ते जन सम्पर्क का फायदा उठावें। पारिवारिक मनोमालिन्य से बचे रहें। भाग्य का सितारा चमकेगा। इष्ट लाभ होगा। दोस्ती में सहयोग मिलेगा। लम्बी यात्रा सम्भव हो तो टाल दें।

फरवरी–इस महीने चल अचल सम्पत्ति का लाभ होगा। बटवारे की रूप रेखा बनेगी। एकाध प्रतिकूल नुकसान भी करवा सकता है। प्रत्येक काम सोच विचार कर करें लाभालाभ का समान योग है। चौपाया से सावधान रहें।

मार्च–सोची समझी योजना कारगर रहेगी। तीव्र लाभ की जिज्ञासा बलवन्ती होगी। इस महीने अपव्यय का भी योग है। अनावश्यक बातें, राजनैतिक भागदौड़ कम करें। अभेष्ट आराधना से लाभ होगा। घर गृहस्थी का विचार पूरा हो जायेगा।

वृश्चिक– तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैल–मास में धन प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। साझीदार तथा उच्चाधिकारी से मनोमालिन्य न होने दें। प्यार प्रीति के चक्कर से बचे रहें। अकर्मण्यता अदृश्य फलों में बाधक होने के साथ-साथ भाग्यावरोधक भी है।

मई–नित नई समस्या का सामना करना पड़ेगा। यह मास उहापोह में बीतेगा। संयम बरतने वाले अधूरे काम पूरे करने में सक्षम हो सकते हैं। दोस्तों से इच्छित सहयोग मिलेगा।

जून–कार्यारम्भ कीजिए ग्रह विकास में सहायक हैं। इस महीने वृश्चिक राशी वाले नित नये पन का अनुभव करेंगे। भूमि, वाहनादि खरीदा जायेगा। घर गृहस्थी में सरसता का संयोग बनेगा। स्वास्थ्य कुछ गड़बड़ी करेगा।

जुलाई–जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उत्तरदायित्व बढ़ेगा। पढ़ाई लिखाई में मन खूब लगेगा। पुरानी निराशा का समापन होगा। कोई नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेगा। संयम से काम लें।

अगस्त–कार्यारम्भ करें। राजकीय सहयोग मिलेगा। भाग्य का सितारा चमकेगा। प्यार मुहब्बत में काम खराब होगा। चोर, बदमाश, उचक्के, सवारी से डर बना रहेगा। मौसम का सेहत पर प्रभाव पड़ेगा।

सितम्बर–बनते बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। मित्र आपकी भरपूर मदद करेंगे। आलस्य प्रमाद न बढ़ने दें। खरीद फरोख्त का धन्धा मिले तो अवश्य करें। राजकीय आश्वासन अधूरे भाग्य की बिडम्बना ही जानें।

अक्तूबर–कानूनी विवाद को सुलझाने की कोशिश करें। उन्नति-अवनति का योग समान है। मंगलोत्सव की खुशी होगी। दोस्तों में मटरगस्ती चलेगी। स्थान परिवर्तन की रूपरेखा बनेगी। नये काम की इच्छा पूरी होगी।

नवम्बर–मास के गोचर ग्रह भाग्य विकास में सहायक है। खरीद फरोख्त के धन्धे से नफा मिलेगी। यात्रा छोटी मगर लाभप्रद रहेगी। पुरानी बीमारी से राहत मिलेगी। आगम धन प्राप्ति की रूपरेखा सफल होगी।

दिसम्बर–घर गृहस्थी, इष्ट मित्रों में सरसता बढ़ती जायेगी। विदेश से अच्छी खबर आयेगी। इच्छित वस्तु खरीदी जायेगी। किसी की कही सुनी बातों में ना आवें। रोग, ऋण, उपद्रवादि से बचे रहें।

जनवरी (९८)–मास वृश्चिक राशि वालों के लिए उलझन पूर्ण रहेगा। इच्छित कार्य पूर्ति के लिए भारी संघर्ष करना पड़ेगा। लाभ तो होगा, मगर देर से। स्थानान्तरण सुखद नहीं। बड़े अधिकारी से बना कर रखने में ही फायदा है।

फरवरी–असफलता के मध्य सफलता मिलेगी। घूमने-फिरने की इच्छा बलवन्ती होगी। घर गृहस्थ की समस्या उलझने के बाद ही सुलझेगी। मर्यादा रहित व्यवहार से नुकसान हो सकता है।

मार्च–दोस्तों के साथ अच्छी पटेगी। अच्छी खबर मन खुश करेगी सांसारिक सुख की सामग्री खरीदी जायेगी। प्रतिकूल सूचना मन दुखायेगी। प्रतियोगिता में विजय मिल जायेगी।

धनु– ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

अप्रैल–मास में गोचर ग्रह अनुकूल रहेंगे। राजनैतिक दबदबा बढ़ेगा। मनोरंजन का सुखद समाचार मिलेगा। रोग, ऋण, पुराना विवाद खत्म होगा। अनसुलझी पहेली भी सुलझ जायेगी। खरीददारी से नफा मिलेगा।

मई–ग्रहयोग आशातीत लाभ के परिचायक हैं। दैनिक कामों में कोताही बरतना श्रेष्ठ नहीं। आलस्य-प्रमाद उच्चाकांक्षा से काम बिगड़ सकता है। व्यापारी वर्ग को कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।

जून–साहित्य, संगीत, मनोरंजन, आमोद प्रमोद में समय बीतेगा। यात्रा, देव दर्शन का विचार बनेगा। सुखद समाचार से मन खुश होगा। प्रतिकूल खबर से विषाद होगा। न चाहते हुए भी कहीं जाना पड़ेगा।

जुलाई–मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। दोस्ती में प्यार प्रीति का चक्कर चलेगा। तत्परता में बनने वाला गठजोड़ नुकसान देगा। बड़े अधिकारी की गतिविधियां पहिचानें। अनजान से दोस्ती का हाथ ना मिलावें।

अगस्त–अकर्मण्यता मिलने वाले शुभ फलों में बाधक है। आलस्य प्रमाद न बढ़ने दें। अनावश्यक उच्चाकांक्षायें नियन्त्रित करें। अचूक लाभ का संयोग बनेगा। स्वास्थ्य कुछ गड़बड़ी करेगा।

सितम्बर–भूमि, वाहन, पशु आदि का लेन देन अच्छा रहेगा। इस महीने निराशा निवृत्ति का सुयोग है। रुका हुआ धन तो आयेगा मगर देर से पारिवारिक वैमनस्य से बचे रहें। पड़ोसी नुकसान करवा सकता है।

अक्तूबर–मन नित नई उधेड़ बुन में लगा रहेगा। एक काम का लाभ तो दूसरे से नुकसान होगा। असामान्य विषम परिस्थिति में नया रास्ता मिलेगा। अपने बाहुबल का भरोसा रखें। सरकारी सहयोग की आशा छोड़ दें।

नवम्बर–कार्यारम्भ कीजिए ग्रह सफलता में सहायक है। धनु राशि वालों को नई उपलब्धि मिलेगी। घर गृहस्थी में प्यार प्रीति की प्रतिक्रिया होगी। धार्मिक काम में मन लगेगा। लम्बी यात्रा का विचार बनेगा।

दिसम्बर–तीव्र लाभ की जिज्ञासा बढ़ती जायेगी। कानूनी समस्या और भी जटिल हो जायेगी। खरीद फरोख्त के धन्धे में नफा मिल जायेगी। अच्छी खराब दोनों किस्म की खबर आयेगी। स्वास्थ्य हानि से बचे रहें।

जनवरी (९८)–मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। मनोरथ सिद्धि होगी सामाजिक मान सम्मान मिलेगा। भाग्य का सितारा चमकेगा। कोई तुम्हें नाहक परेशान करेगा। पदोन्नति में बाधा डलवायेगा। चोर, डकैत, सवारी से सावधान रहना पड़ेगा।

फरवरी–अकर्मण्यता मिलने वाले शुभ फलों में बाधक है। दैनिक काम काज में कोताही न बरतें। पारिवारिक समस्या मिलबैठ कर सुलझा लें। आशातीत लाभ होगा। पुराने रोगोपद्रव से छुटकारा मिल जायेगा।

मार्च–असफलता के मध्य सफलता मिलेगी। देव दर्शन की इच्छा बलवन्ती होगी। लाटरी आदि से लाभ हो सकता है। बदले की भावना त्याग दें। सृजनात्मक काम का लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य हानि से बचे रहें।

मकर– भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

अप्रैल–घर गृहस्थी की समस्या का समाधान देर से होगा। विरोधियों का ईर्ष्याभाव बढ़ेगा। लम्बी यात्रा का विचार बनेगा। मंगलोत्सव में जाना पड़ेगा। साथी उन्नति में बाधा डलवायेगा। खरीद-फरोख्त का धन्धा पनप जायेगा।

मई–जमा खर्च का योग समान है। बनते बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। इष्ट मित्र इच्छित काम में मददगार होंगे। आप यात्रा पर जा सकते हैं। बड़े अधिकारी से कहासुनी सम्भव है। स्वास्थ्य नियमों का पालन करें।

जून–मास मकर राशि वालों के लिए कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। कानूनी विवाद प्रतियोगिता में विजय मिलेगी। देव दर्शन की इच्छा प्रबल होगी। घर गृहस्थी की समस्या नहीं सुलझ पायेगी। स्वास्थ्य हानि से बचे रहें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई–घर गृहस्थी में कटुता बढ़ सकती है। पुरुषार्थ की निर्बलता वसात नुकसान हो सकता है। सजगता स्फूर्ती से काम सही बनेगा। स्त्री समाज का समय बातचीत में बीतेगा। बच्चे खेलकूद में रुचि लेंगे।

अगस्त–सोचे हुए काम बनेंगे। कुछ विलम्ब से नये काम का लाभ होगा। सांसारिक सुख का समान खरीदा जायेगा। बड़ा अधिकारी बेमतलब परेशान करेगा। स्थान परिवर्तन लाभ प्रद होगा।

सितम्बर–यह भौतिक विकास के लिए अच्छा रहेगा। जन्माङ्गचक्र में पड़े उत्तम ग्रह प्रभाव से सितारा चमकेगा। घर परिवार को नई उलझन का सामना करना पड़ेगा। मौसम का स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अशान्ति का कारण बनेगा।

अक्तूबर–चल रहे सामयिक काम में गतिरोध चिन्ता का कारण बनेगा। कोई तुम्हें बहला फुसलाने की कोशिश करेगा। बहुत ही सोच समझकर काम करें। अनजान की दोस्ती फायदेमन्द नहीं।

नवम्बर–अतीत के संदर्भ में नये काम का लाभ मिलेगा। पुराने रोग, ऋण, उपद्रवादि से छुटकारा मिल जायेगा। प्रतियोगिता में जीत हासिल होगी। सुखोपभोग की रूपरेखा बनेगी। छोटी यात्रा लाभप्रद रहेगी।

दिसम्बर–पूर्वापेक्षा धन लाभ का अच्छा योग है। इच्छित सहयोग मिलेगा। घर गृहस्थी का उत्तरदायित्व बढ़ेगा। आगन्तुक मेहमान का हर्षोल्लास होगा। मर्यादा रहित व्यवहार नुकसान दे सकता है।

जनवरी (९८)–जमा खर्च का समान योग है। मेहनत के चलते सेहत का ख्याल करें। साझे के काम, लेन देन के मामले में सावधानी बरतें। अकर्मण्यता मिलने वाले शुभ फलों में बाधक है। प्रतिकूल खबर मिलेगी।

फरवरी–उत्तम ग्रह चाल से सितारा चमकेगा। सोचा-समझा काम सावधानी बरतने से बनेगा। असावधानी वसात नुकसान हो सकता है। भूमि, वाहन की खरीद फरोख्त फायदे में रहेगी। प्यार प्रीति की प्रतिक्रिया चलेगी।

मार्च–आशा निराशा का समान योग है। दैनिक कामों में कोताही ना बरतें। बड़े अधिकारी की घनिष्ठता त्याग दें। घर गृहस्थी में सरसता बनाये रखें। पत्नी, बाल बच्चों की फरियाद ध्यान से सुनें।

कुम्भ– गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अप्रैल–मास में लाभार्जन का चांस मिलेगा। सामाजिक काम में मन लगेगा। राजनैतिक उठा पटक में खिलाड़ी को नुकसान होगा। दूर दराज की यात्रा का संयोग बनेगा स्वास्थ्य कुछ गड़बड़ी करेगा।

मई–प्रतिकूल गोचर के प्रभाव से अशान्ति रहेगी। कानूनी विवाद सुलझने की बजाय उलझ जायेगा। सूझ बूझ के लिए काम में सफलता भी मिलेगी। दोस्तों में मटरगस्ती चलेगी। पुरानी बीमारी दूर भगेगी।

जून–दोस्ती में सौदा अच्छा पटेगा। घूमने फिरने का अवसर मिलेगा। सुखद समाचार में मन खुश होगा। लेन देन के मामले में झगड़े नहीं। इष्ट आराधना में समय लगावें। शत्रु की कुचाल से बचे रहें।

जुलाई– मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। अपने कर्तव्य पालन में निष्ठावान अर्थलाभ के भागीदार बनेंगे। यश की कीर्ति के विस्तार से आपके दुश्मन जलेंगे। चौपाया, वाहनादि उपद्रव से बचे रहें।

अगस्त–जमाखर्च का योग समान है। रुका हुआ धन तो मिलेगा मगर देर से। जमीन जायदाद, वाहन आदि वस्तु खरीदने का विचार बनेगा। लम्बी लाभप्रद योजना में धन खर्च होगा।

सितम्बर–अतीत से संदर्भ में नई खोज का लाभ मिलेगा। साथी ही पदोन्नति में बाधा डलवायेगा। कानूनी विवाद और भी उलझ सकता है। प्रत्येक कदम सोच विचार कर उठावें। स्वास्थ्य नियमों का पालनन करें। घर-परिवार की समस्या को सुलझाने की कोशिश करें।

अक्तूबर–मास नित नई उपलब्धियां कराने आ रहा है। गृहस्थी का विचार पूरा हो जायेगा। प्यार प्रीति का चक्कर चलेगा। पुराने दोस्त से मनोरंजन का समय मिलेगा। मर्यादा रहित व्यवहार नुकसान देगा।

नवम्बर–की ग्रहचाल अनुकूल होने से काम बनेगा। देव दर्शन लम्बी यात्रा का संयोग बनेगा। आगम प्राप्ति का नया रास्ता खुलेगा। मंगल काम का समाचार मिलेगा। अज्ञात कारण वसात नुकसान सम्भव है।

दिसम्बर–लाभप्रद योजना सफल रहेगी। इस महीने इष्ट मित्र, दोस्तों के साथ अच्छी पटेगी। उपयोगी वस्तु खरीदी तथा बेची जायेगी। कार्य शैथिल्यता नुकसान पहुंचायेगी।

जनवरी ९८–यह मास नये कारोबार के लिए उत्तम रहेगा। घर गृहस्थी में हास्य रस बढ़ता जायेगा। विरोधी नुकसान पहुंचायेगा। लोकोपकार की भावना का उदय होना। पुराना दोस्त मदद करेगा। रोग, ऋण, उपद्रवादि से बचे रहें।

फरवरी–में आशातीत लाभ के ग्रह योग बन रहे हैं। अपने काम के प्रति निष्ठावान लाभ कमायेंगे। लापरवाही बरतने वाले नुकसान में रहेंगे। यार दोस्त आपकी मदद करेंगे। मेहनत के चलते हुए सेहत का ख्याल करें।

मार्च–मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहें। राजनैतिक गठजोड़ फायदे में रहेगा। भाग्य का सितारा चमकेगा। पदोन्नति का समाचार मिलेगा। साथी ईर्ष्या भाव रखेगा। नुकसान करवा सकता है।

मीन– दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

अप्रैल–अकर्मण्यता अदृश्यफलों में बाधक है। अतीत के संदर्भ में नये काम का लाभ मिलेगा। दोस्तों के साथ घूमने फिरने का सुनहरा अवसर मिलेगा। सचेतन चुस्त रहने वालों को फायदा होगा।

मई–मास की ग्रहचाल लाभालाभ की परिचायक है। साझीदार से लड़ें झगड़ें नहीं। कानूनी समस्या ले देकर सुलझाने की कोशिश करें। अचूक लाभ का चांस मिलेगा। पड़ौसियों से सहानुभूति मिलेगी।

जून–घर गृहस्थी के झन्झट बढ़ते जायेंगे। लोकोपवाद की आशंका से बचे रहना चाहिए। इष्ट लाभ होगा। विषम स्थिति से गुजरना पड़ेगा। बच्चों का मन खेल कूद में लगा रहेगा।

जुलाई–कानूनी विवाद, रोग, ऋणादि से छुटकारा हो जायेगा। मन अकेलेपन का अनुभव करने लगेगा। इस महीने पर्याप्त विकास होगा। चल-अचल सम्पत्ति का सुख मिलेगा। कोई तुम्हारे साथ धोखेबाजी कर सकता है। नशे बाजी से बचे रहें लाभ मिलेगा।

अगस्त–घूमने फिरने का लाभ होगा। यश कीर्ति का विस्तार होगा। सामाजिक काम में समय लगेगा। चला आ रहा विवाद समाप्त हो जायेगा। स्वास्थ्य कुछ ढीला चलेगा।

सितम्बर–मास कुछ विशेषतायें लिए आ रहा है। नया काम तो बनेगा। अन्तर्विरोध भी चलता रहेगा कानूनी झन्झट ले देकर छूट जायेगा। मिलजुलकर समस्या का हल खोजें।

अक्तूबर–लाभकारी लम्बी योजना में धन लगेगा। नव निर्माण एवं देव दर्शन का लाभ होगा। राजनैतिक माहौल में सितारा चमकेगा। देश विदेश से समाचार मिलेगा। पुरानी निराशा का समापन होगा।

नवम्बर–कुछ काम बनेंगे, कुछ बिगड़ेंगे, उच्चाधिकारी से टकराव मोल न लें। शत्रु पराभव, स्वजन समागम, लम्बी यात्रा हो सकती है। प्रतिस्पर्धाओं में मन लगा रहेगा।

दिसम्बर–व्यर्थ के झगड़े झमेलों में भाग न लें। परिवार में खुशी मिलेगी। रुका हुआ धन मिलेगा। मिथ्याभियोग से बचे रहें। यह मास मीन राशि वालों को फायदा पहुँचायेगा।

जनवरी ९८–अकर्मण्यता मिलने वाले फलों में बाधक है। अपने काम कल पर ना छोड़ें। सांसारिक सुख मिलेगा कोई तुम्हें गुमराह करने की कोशिश करेगा। मौसम का शरीर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

फरवरी–आशा-निराशा में बदल सकती है। अभीष्ट लाभ की खुशी मिलेगी। लाभालाभ की योजना रद्द हो सकती है। स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का पालन करना चाहिए।

मार्च–जोड़ तोड़ की नीति फायदे में रहेगी। घर गृहस्थी में कुशलता बनी रहेगी। अभीष्ट लाभ की रूपरेखा बनेगी। देव दर्शन लालसा बढ़ती जायेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र

विक्रम सम्वत् २०५४ (ता. ९ अप्रैल १९९७ से २८ मार्च सन् १९९८ ई. तक)

- *मंगल के राज्यकाल यह पूरा वर्ष अशान्तमय वातावरण में बीतेगा। राजनैतिक उलटफेर कहीं ना कहीं होते ही रहेंगे।*
- *मन्त्री सूर्य के प्रभाव से पापाचार, दुराचार, अत्याचार की उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। मीन के शनिश्चर ने आकाशीय चुनाव में महत्त्वपूर्ण तीन पद लिए हैं, यह किसी राष्ट्र को ध्वस्त करवायेगा।*
- *कहीं भूकम्प तो कहीं अतिवृष्टि, कहीं अनावृष्टि, आंधी, तूफान, वडम्बर आने से भारी क्षति होगी। प्राकृतिक आपत्तियां आयेंगी। कहीं ओला वृष्टि त्रासदी का कारण बनेगी।*
- *राजनैतिक नेता तथा आस्तीन में छुपे हुए सांप विश्वास घात की सोचने लगेंगे। सरकारी तन्त्र की हालत बिगड़ती जायेगी। गाली गलोच भी सम्भव है।*
- *जनता में नाना प्रकार की आदि व्याधि बीमारियाँ फैलती जायेंगी। इलाज भी नये तरीके से खोजे जायेंगे। देश के दो प्रभावशाली व्यक्तियों के लिए समय सानुकूल नहीं है।*
- *सरकार को स्वास्थ्य लाभ के कार्यक्रमों पर काफी धन खर्च करना पड़ेगा। व्यर्थ, व्यय अन्त्यज, अछूतोद्धार के नाम पर होगा। वास्तव में जिसको लाभ मिलना चाहिए उनको नहीं मिलेगा।*
- *जनता में छल, दम्भ, कपट, पाखण्ड, परस्पर ईर्ष्या, द्वेशपूर्ण असुरक्षा की भावना पनपने लगेगी। असमाजिक तत्त्वों की मनमर्जी चलेगी। खूब चांदी कटेगी।*
- *विकृति नामक सम्वत् में विश्वव्यापी अन्तर्राष्ट्रीय जगत् के प्राणियों की भावना विकृति भाव को प्राप्त होती जायेगी। सम्यावस्था बिगड़ने लगेगी।*
- *कोई देश किसी देश वासियों को युद्धोत्पात के लिए मजबूर करेगा। शान्ति प्रस्ताव अन्यायपूर्ण अमान्य होगा।*
- *उत्तरी गोलार्ध के दशाधिक्य देशों पर अशुभ ग्रहों का वध कहर बायेगा। कहीं विखण्डन की स्थिति से भारी नुकसान होगा। प्रजा पलायन, भारी चीख पुकारें सुनाई पड़ने लगेंगी।*

वर्ष प्रवेश कुण्डली

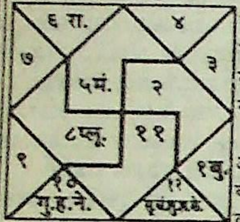

विक्रम सम्वत् २०५३ अन्तिम दिन चैत्र कृष्ण अमा. चन्द्रवार तदनुसार तारीख ७ अप्रैल सन् १९९७ ई. सांय ४ बजकर ३६ मिनट इष्ट घट्यादि २६।१० पर सिंह लग्नोदय ४।२७।२८।५ से सम्वत् २०५४ शाके १९१९ का शुभारम्भ हो रहा है। तत्काल आकाशीय गोचर ग्रह स्थिति जानने के लिए इस लेख के साथ संलग्न है। सिंह लग्न की कुण्डली जोकि ध्यान देने योग्य है।

परम पिता परमात्मा की योगमाया के आदेशानुसार (संम्वत् २०५४ ता. ८ अप्रैल ९७ से २८ मार्च सन् १९९८ ई. तक की अवधि के लिए इस वर्ष आकाशीय कौंसल ग्रह परिषद के चुनाव में संसार चक्र का संचालन करने के हेतु मंगल ग्रह को राजा बनाया गया है तो मन्त्री क्रूर ग्रह विश्व की आत्मा, अध्यात्म और भौतिक जगत् (समस्त ब्रह्माण्ड के नेत्र) सूर्य भगवान् को मन्त्री नियुक्त किया गया है। शेष आठ पदों में से धन राजस्व विभाग वित्त मन्त्रालय भी मंगल के पास है। सस्येश और नीरसेश बुध है। धान्येश चन्द्रमा है। रसेश शुक्र है। तीन पद मेष, फल और दुर्ग शनि ग्रह ने हथिया लिये हैं।

वर्ष प्रवेश कुण्डली में सिंह लग्न का स्वामी सूर्य परस्पर विरोधी चार (चन्द्र, शुक्र, शनि और केतु) ग्रहों के साथ त्रक स्थान में अति निर्बल स्थिति में बैठा है। जिस वर्ष लग्नेश वर्ष प्रवेश कुण्डली के ६।८।१२ भाव में अशुभ ग्रह संयोग में निर्बल बन कर बैठ जाता है। तो वह लग्न बलहीन समझी जाती है। लग्न ही देश के यथार्थ हालात जानने का आधार बिन्दु है। जब आधार ही बलहीन है तो इस वर्ष भौतिक समृद्धि पर्याप्त मात्रा में होना नामुमकिन बात है। प्रजातन्त्र में मन्त्री ही सत्ता संचालन का सर्वेसर्वा होता है। जब मन्त्री ही विकल हो, केतु ग्रहण लगा रहा हो, मलेच्छ तामसीवृत्ति के अशुभ ग्रह शुक्र तथा शनि के सानिध्य में हो, निम्न कोटि के दुःखों के सृजन करने वाले अपने पुत्र मोह में फंसा धृतराष्ट्र की तरह अन्धानुकरण कर रहा हो, असत्यासत्य का विवेक खो बैठा हो तो राजतन्त्र कैसे चलेगा। इस बात का बुद्धिमान मनुष्य सहज अनुमान लगा सकता है।

इस वर्ष की प्रारम्भिक कुण्डली में पाप ग्रह मंगल तथा अशुभ ग्रह शनि, राहु, यम और हर्शल का वर्चस्व कायम है। राष्ट्रीय सम्पदा चल-अचल सम्पत्ति को राहु ने ग्रस लिया है। भारत के सुखोपभोग भौतिक संसाधन विकास स्थान चतुर्थभाव को प्लूटो यम ने दग्ध कर रखा है। देशवासियों की बौद्धिक सम्पदा कुण्डली का पांचवाँ स्थान शनि की दृष्टि में है और इस स्थान का नायक ग्रह नीच का होकर छटे स्थान (शत्रु क्षेत्र में) गुरु को हर्शल, नेपच्यून ने निर्बल बना रखा है। सत्ता संचालन करने वालों की बुद्धि विवेकशून्य होकर केवल अपना ही पेट भरने की सोचने के लिए विवस हो जायेगी। राष्ट्रीय सम्पदा का खूब दुरुपयोग होगा। अल्पसंख्यक, निम्नस्तरीय समाज, अन्त्यज, अनुसूचित जाति, जनजाति अछूतोद्धार के नाम अनेकों योजनायें चलाई जायेंगी, फिर जिनको लाभ मिलना चाहिए उन्हें न के बराबर फायदा होगा। गरीबों की हमदर्दी का ढोल पीटने वाले लोलुपचारी केवल अपना पेट भरने में लगे रहेंगे।

राजा मंगल के राज्यकाल इस वर्ष 'सम्वत् २०५४ में खूब दंगल होगा, अर्थात् चारों और झगड़े-झमेले, दंगे फसाद, धार्मिक उन्माद, कहीं जातीवाद के तहत साम्प्रदायिक तनाव बढ़ेगा। खुले आम चोरी, डांका, लूटपाट, आगजनी, राहजनी, बलात्कार की दुःखद घटनायें घटित होती रहेंगी। असमाजिक तत्व, चोर उचक्के, लफंगे, नशेबाज, जुआरी, लाटरीबाज, तस्कर मनमर्जी करेंगे। सरकारी तन्त्र न्याय विभाग, पुलिस प्रशासन की निष्क्रियता बढ़ती जायेगी। गोचर में अशुभ ग्रहों की बलवानता के दुष्प्रभावावसात् वर्ष १९९७से मार्च सन् १९९८ तक अपूज्यों की खूब पूजा होगी। पद के अयोग्य होते हुए भी उच्च पदों पर आंख मीचकर नियुक्त कर दिये जायेंगे। अच्छे पढ़े लिखे विद्वान, द्विज, वैज्ञानिक, शोधकर्त्ता, समाज सुधारक एवं विदुषी महिलाओं का तिरस्कार होगा। निरपराध व्यक्ति, मासूम बच्चों की हत्या, कुमारियों से बलात्कार, जन्म पापाचार बढ़ता जायेगा। प्रकृति प्रकुपित होकर अपना सफाई अभियान चलायेगी। किसी भी प्रकार का जान लेवा उपद्रव हो सकता है। तत्त्वदर्शी महर्षियों ने फल इस प्रकार लिखा है, यथा-

भौमे नृपे वन्हिभयं जनक्षयं चौराकुल पार्थिव विग्रहं च। दुःखं प्रजाव्याधि वियोग पीड़ा स्वल्पं पयोमुञ्चति वारिवाहाः॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राजा मंगल के राज्य काल सम्वत् २०५४ अंग्रेजी तारीख ८ अप्रैल ९७ से २८ मार्च सन् १९९८ ई. तक की अवधि में कई छोटे, बड़े शहर, नगर, ग्रामादि में भयंकर अग्निकाण्ड, विस्फोट आदि के कारण प्राणियों की क्षति होगी। चोरों के उपद्रव, राजाओं के कलह असाह्य लड़ाई झगड़े होते रहने से जनता में त्राहि-त्राहि मचेगी। प्रजा को नाना प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ेगा। इस वर्ष प्रकृति की मार (नाना प्रकार के रोग व्याधियों द्वारा) खानी पड़ेगी। परस्पर सगे सम्बन्धियों के साथ-साथ अपने वंशजों का वियोग भी सहना पड़ेगा। मेघ पृथ्वी पर उत्तम जल की कम ही वर्षा करेंगे। संयोगवस इस सम्वत् का नाम भी तो विकृत है। जिसमें सभी पदार्थ विकृत भाव को प्राप्त होने लगते हैं।

प्रकृतिर्विकृति याति विकृतिः प्रकृतिस्तथा। तथा पिसुखिनोलोका भृशं विकृति वत्सरे॥

कुदरत की स्वाभाविक अवस्था विकृति नामक सम्वत्सर में बिगड़ने लगी है या यों कहना चाहिए कि जब पापाचार बढ़ता जाता है। तब प्रकृति उसे सुधारने के लिए साधारण रूप से अपना सफाई अभियान चलाती है। दुर्जनों को दुःखद परिणाम दण्ड भोगना पड़ता है। अच्छे स्वभाव वालों का किंचित सुख भी होता है।

मन्त्री रवि है वह भी पाप ग्रह संयोग में होने के कारण सुखों में बाधक है जिसका फल भी राजाओं में युद्ध भयातंक कारक लिखा है, यथा-

नृपभयंगदतोपिहि तस्करा प्रचुर धान्यधनादि महीतले। रसचयं हि समर्घतम सदा रविरमात्यपदं हि समागते॥

विश्व के किसी ना किसी भाग में राजमद में मदोन्मत्त नेताओं, राजा महाराजाओं में लड़ाई झगड़े होते रहने से जनता में भय बना रहता है। जीवनोपयोगी पदार्थों की तस्करी करने वाले जीना दुःखदपूर्ण कर देते हैं। पर्याप्त मात्रा में उत्पादन होने पर भी उत्तरोत्तर महंगाई बढ़ती जाती है। विशेषतः खाद्यान्न की कमी अखरने लगती है। शनि फल-फूल, सब्जियों का मालिक है। कमी करवाता है। याद रहे यह दुर्ग का मालिक भी है। राजाओं, राष्ट्रनायकों में कहीं भी युद्ध करवा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् के किसी भी राष्ट्र की सम्प्रभुता विनष्ट करवा सकता है।

रविसुते गढ़पालिनि विग्रहैः सकल देश गताश्चलिताजनाः। विविधवैरि विशेषितनागराः कृषिधनंशलभैर्मुषितंभुवि॥

राज्य (राष्ट्र) रक्षा का अधिकार "दुःखं दिनेशात्मजः" दुःखों के सृजन करने वाले शनि को तो क्यों नहीं वह अपने स्वभाव का विस्तार करेगा। अर्थात् गढ़पालक राज्य संचालक मन्त्री स्तर के बड़े-बड़े नेताओं में परस्पर जमकर लड़ाई-झगड़े करवायेगा। जनता भयविषाद, आतंकवाद, दुराचार से दुःखित अशान्तमय इधर से उधर भागती फिरेगी। नागरिकों में विविध प्रकार के विरोध ,वैरभाव बढ़ते जायेंगे। कृषि में पैदावार तो होगी, लेकिन टिड्डी, चूहा, कातरा अन्यान्य विषाक्त कीट पतंगों का डर बना रहेगा। यत्र-तत्र नुकसान भी होगा।

मकर में नीच का गुरु, वर्ष प्रवेश लग्न कुण्डली में पापग्रह भौम और साक्षात यम (प्लूटो) ग्रह का वर्चस्व है तथा शनि-केतु ने रवि को ग्रस रखा है। इस वर्ष की ग्रहचाल अशुभ फल दायक है। मानसिक हीनता बढ़ती जायेगी। लोलुपचारी नेताओं को तो केवल अपने वोट कायम करने की फिक्र सतायेगी। देश में विदेशी कम्पनियाँ अपना शिकंजा कसती चली जायेंगी। सरकार के अधिकांश विभाग अपनी कार्य कुशलता कम करते जायेंगे। घाटे की शक्ल में लड़खड़ाते चलेंगे। सरकारी खजाने की कमी पड़ेगी। विदेशी कर्जा बढ़ेगा। इस वर्ष दल बदल करने वाले पटेबाजों के लिए समय सानुकूल रहेगा। पुराने घुटालों का पर्दाफास होगा तो नये घोटालों का दौर शुरू होगा।

सौर जगत् लग्न कुण्डली

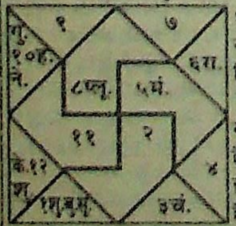

शुभ सम्वत् २०५४ शाके १९१९ चैत्र शुक्ल पंचमी रविवार तदनुसार ता. १३ अप्रैल सन् १९९७ ईस्वी रात्रि २२ बजकर ५४ मिनट के आसन्न सूर्य भगवान् का सप्ताश्वजुतरथ अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में प्रवेश करेगा। आकाशीय ग्रह स्थिति की कुण्डली वृश्चिक लग्न वाली साथ में ध्यान देने योग्य है।

वृश्चिक लग्न का स्वामी (राजा) केन्द्र में बली बनकर बैठा है। अपने स्थान लग्न में यम को स्थान दे दिया है। केन्द्र गत अन्य कोई भी शुभ ग्रह नहीं है। शुभ तीसरे स्थान में हर्शल। नेपच्यून के साथ है। शुक्र-बुध कर्मेश सूर्य के साथ छटे भाव में बलहीन है। यह ग्रह संयोग अन्तर्राष्ट्रीय जगत के शुभ सूचक नहीं है। इस वर्ष सम्वत् २०५४ में विधर्मी ग्रह संयोग सबल बनने से देश तथा विदेशों में अशुभ-अक्षोभनीय कुकृत्य अधिक होंगे। यम तथा मंगल दोनों ही अपने प्रभाव का विस्तार करेंगे। समस्त विश्व को ये दोनों ग्रह बारूद के ढेर पर ले जाकर खड़ा कर देंगे। समस्त देश मात्र लोक दिखावा के लिए शान्ती का ढोल पीटते रहेंगे। साथ-साथ अपनी विस्तारवादी नीति का खुलकर प्रचार-प्रसार करेंगे। किसी भी समय किसी भी विशेष प्रकार की घटना घट सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में किसी दादा देश की धौंस जमती चली जायेगी। अचानक कहीं किसी देश में युद्ध या अन्यान्य किसी किस्म का उत्पात भी हो सकता है। सभी देशों को सचेत रहना चाहिए। कहीं किसी देश में इस वर्ष अधिक वर्षा, आंधी, तूफान, बडम्बर, बर्फवारी, ओला वृष्टि वसात् नुकसान होगा। तो कहीं शीतलहर कहर ढायेगी। कहीं सूखा पड़ जाने के कारण कृषि में पैदावार कम होगी। अन्यान्य देशों में कल कारखाना, उद्योग धन्धों में श्रमिक और मालिकों में वैमनस्य बढ़ने, तोड़फोड़ होने से भारी क्षति होगी। उत्पादन की कमी से उत्तरोत्तर महंगाई बढ़ती जायेगी। अप्रैल-मई में सूर्य-मंगल-गुरु और शनि का परस्पर बनने वाला षडाष्टक, नवपंचम योग नेष्ट फलदायक है। चल रहे राजनैतिक, सामाजिक कार्यों में गतिरोध होगा। साम्प्रदायिक मतभेद उभरकर सामने आयेंगे। वसुन्धरा पर नाना प्रकार के अत्याचार बढ़ते जायेंगे। राजनैतिक घटकों में उठापटक जारी रहेगी। किसी प्रदेश तथा देश की सरकार को समय सानुकूल नहीं कहा जा सकता है।

चैत्र-वैशाख और ज्येष्ठ के पूर्वार्ध तक मरुप्रदेशों में धूलभरी आंधियाँ चलेंगी। उत्तर भारत में वायु अति तीव्र गति से बहेगी। वैशाख के कृष्ण पक्ष में पश्चिमोदय शुक्र के प्रभाव से मौसम प्रतिकूल बनेगा। कहीं भारी वडम्बर का डर बना रहेगा। दिन में गर्मी बढ़ेगी तो रात्रि में हल्की ठंड रोग का कारण बनेगी।

उदयास्त गतः शुक्रो बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यङ्गारके वृष्टिस्त्रिधा वृष्टिः शनैश्चरे॥

देश के कई बड़े नगरों में अग्निभय विषाद व्याप्त रहेगा तो कहीं अमन चैन की वंशी बजेगी। किसी प्रदेश में मन्त्रिस्तर के नेता राजनैतिक षड्यन्त्र रचने में लगे रहेंगे। चीन, रूस, अमेरिका, जापान, अफगानिस्तान, पाकिस्तान तथा बांग्लादेश में भारी भगदड़ मचने का संकेत ग्रहचाल के हिसाब से मिलता है। भारत सरकार को कश्मीर के मामले में सतर्कता बर्तनी चाहिए। जून मास में सूर्य के आगे शुक्र ग्रह सांयकाल पश्चिम दिखाई देगा यह वर्षा की कमी करेगा। राहु-सूर्य और गुरु-सूर्य का बनने वाला नवपंचयोग प्रचण्ड गर्मी, धूल वर्षण अर्थात् आंधियाँ आने और पशु पक्षी, जीव जन्तु, मनुष्यादि प्राणियों में रोगोपद्रवादि का कारण माना जाता है। इस योग के चलते पशुओं में रोग फैलता है। चारे का भाव भी बढ़ने लगता है। सरकारी तौर पर कोई नया कार्यक्रम चलाया जाता है। बड़ी मात्रा में प्रजा पलायन होता है।

आर्द्रा प्रवेश लग्नम्

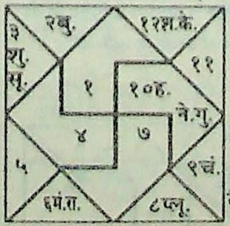

सम्वत् २०५४ शाके १९१९ आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा शनिवार ता. २१ जून १९९७ ई. रात्रि २ बजे के आसन्न सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। तत्काल मेष लग्न की कुण्डली इस लेख के साथ दी गई है। ग्रहचाल के हिसाब से जून के उत्तरार्ध में कहीं वर्षा खूब होगी। तो कहीं धूल उड़ेगी। कहीं अग्निभय व्याप्त रहेगा। अग्नि मण्डल के नक्षत्रों में ग्रहों का वेध लगने से कहीं विस्फोट की सम्भावना जाननी चाहिए। आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष में कर्क में पहुंचने पर शुक्र ग्रह कहीं तो दैनिक जीवनोपयोगी पदार्थों में भारी महंगाई करवायेगा तो विश्व के किसी भाग में जल की अच्छी वर्षा होगी-

दैत्यगुरुर्यदा कर्के रसानां वै महर्घता सार्वधान्य समर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि॥

आषाढ़ शुक्ल पक्ष में सभी ग्रह योग वर्षा अवर्षण कारक बन रहे हैं। लेकिन शुक्र-बुध का संयोग बृहस्पति से दृष्ट होने पर अच्छी वर्षा करता है। अतः योगायोग से कहीं वर्षा कम तो कहीं ज्यादा होगी। सामाजिक मतभेद उभरने लगेंगे। जुलाई और अगस्त में कहीं दंगा फसाद हो जाय तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए। कहीं तो खूब खुशहाली बढ़ती है तो कहीं कल कारखानों में तोड़फोड़, हड़ताल, तालाबन्दी के कारण नुकसान होता है। कहीं समयोचित वर्षा होने से कृषि में पैदावार की अच्छी उम्मीद बंधती है। कर्क के बुध का फल ऐसा लिखा है-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

निशापतेश्च तनयः कर्कराशौ यदा भवेत्। ततोऽतिदुःखं भवति सुभिक्षं स्वल्पकारकम्॥

२० जुलाई तक शुक्र+बुध के एक राशि में चलने पर वर्षा की उत्तर भारत में कम ही आशा जाननी चाहिए। पर्वतीय प्रदेशों में तीव्रवायु वेग, अन्य उपद्रव से यातायात में व्यवधान पड़ेगा। मासान्त में कहीं भारी मौसम खराब होगा। राजनैतिक उत्पात भी सम्भव है।

अगस्त और सितम्बर में सम्पूर्ण देश में अच्छी वर्षा होने के योग बन रहे है। पूर्वी और दक्षिण-पश्चिमी भूभाग पर बाढ़ की आशंका जाननी चाहिए। भारत सरकार को पहले ही राहत कार्यों पर ध्यान देना चाहिए। शनि-भौम का समसप्तक योग कहीं भी उपद्रव करवा सकता है। झन्झावात, चक्रवात, वडम्बर, भूमि कम्पन, दिग्दाह किंवा भूस्खलन की सम्भावना जाननी चाहिए। अगस्त से मीन राशि में शनि वक्री चलेगा। १७ दिसम्बर तक परस्पर विरोधी राष्ट्र समुदाय राजनैतिक दलों में कहीं ना कहीं झगड़े फसाद करवाता ही रहेगा। जैसा कि ज्योतिष के आविष्कार करने वाले पूर्वाचार्यों ने लिखा है-

कन्यायां मीन सिंहे वृषधनुषि यदा वक्रगौ, भौममन्दौ। पृथ्वीशाः क्रूररूपा बहुरिपुदलिता विग्रहश्चैव पीड़ा॥

सितम्बर में वाणिज्य कर्त्ताओं को नुकसान भी हो सकता है। भाद्रपद मास के द्वितीय पक्ष में वर्षा की कम ही आशा करनी चाहिए। इस मास के अन्तिम सप्ताह से उत्तरोत्तर महंगाई बढ़ती जायेगी। कश्मीर की समस्या सिर उठायेगी। विदेशी सह पर दंगा भड़क सकता है। भारत सरकार को प्रत्येक कदम पर बड़ी ही सर्तकता बरतनी चाहिए। आस्तीन के छुपे सांपों से प्रतिदिन सावधान रहना ही अच्छा रहेगा।

अक्टूबर में चालू बाजार का रूख गर्म रहेगा। लोक में अपवाद का मामला गर्मायेगा। राजा लोग आपस में कलह करने में लगे रहेंगे। कार्तिक मास प्रारम्भ से ही व्यापार राशि का बुध शनै-शनै सभी वस्तुओं में तेजी का रुख बनाता जायेगा। वसुन्धरा के भाग में भारी वर्षा का संयोग बनेगा, यथा-

वणिजस्थे सोमपुत्रे जलं वर्षति वारिदः। सर्वसस्य महर्घत्वं राजानः कलहप्रियाः॥

नवम्बर-दिसम्बर–इस वर्ष कार्तिक शुक्ल पंचमी के दिन मूल नक्षत्र का संयोग अर्धाधिक्य होने से श्रेष्ठ नहीं है। जिस वर्ष ऐसा योग बनता है उस साल राजा तथा प्रजाजनों में परस्पर इतना अधिक वैमनस्य बढ़ जाता है। परस्पर एक दूसरें को कुछ देने मदद करने से भी इन्कार कर देते हैं-

दीवा बीती पंचमी जो मूल नक्षत्र होय। खप्पर हाथों जग भ्रमे भीख न घाले कोय॥

नवम्बर उत्तरार्ध आश्विन मासारम्भ से ही इस वर्ष धीर-धीरे सर्दी बढ़ने लगेगी। १० दिसम्बर के पश्चात् मौसम की प्रतिकूलता होने पर शीतलहर चलेगी। आगे शनि राहु के मध्य सभी एक राशिपथ पर चलेंगे। जिसके योग के दुष्प्रभाव से बसुन्धरा के किसी भाग में कहीं किसी विशेष प्रकार का उपद्रव होने की आशंका जाननी चाहिए। बढ़ते पापाचार से पृथ्वी अकुलायेगी। जब पूरी तरह से देश में अयोग्य अपूज्य अधिकार जमाने लगते हैं। तब प्राकृतिक प्रकोप बढ़ा करते हैं। या यों कहिए कि प्रकृति अपने आप बिगड़ी अवस्था का सुधार करती है। अच्छे ग्रहभी खराब फल देना शुरू कर देते हैं। महर्षियों ने गुरु-शुक्र-हर्षल तथा नेपच्यून का फल इस प्रकार लिखा है-

अंग्रेजी वर्षारम्भ कुं.

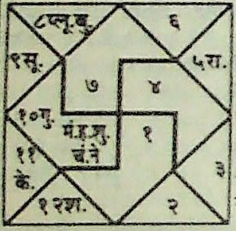

एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्चखेचराः।
प्लावयन्ति महींसर्वा रुधिरेण जलेन वा॥

अंग्रेजी वर्ष १९९८ ईस्वी की शुरूआत बुधवार के दिन पौष शुक्ल द्वितीया श्रवण नक्षत्र तथा तुला लग्न से हो रही है। लग्नेश शुक्र सुख स्थान में बैठा अति विकल है। केन्द्र बिन्दु मकर में पांच ग्रह संयोग खाड़ी के देशों में गर्मागर्म वातावरण बनवायेगा। रूस, चीन, जापान, तुर्की, लेबनान, श्रीलंका, सऊदी अरब, इजरायल, अमेरिका, पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान आदि देशों के आन्तरिक कलह बढ़ेगा। कहीं विभाजन, सत्ता परिवर्तन का संयोग बनेगा।

भारतीय गणतन्त्र लग्नम्

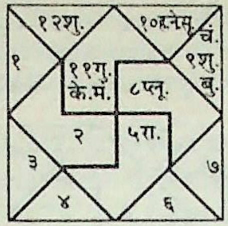

माघ कृष्णा त्रयोदशी सम्वत् २०५४ शाके १९१९, २६ जनवरी १९९८ ई. भारतीय गणतन्त्र परेड लग्न कुण्डली में पाप ग्रह केतु+मंगल के साथ शुभग्रह गुरु शनिश्चर की राशि में अति विकल है। प्लूटो (यम) ने इस कुण्डली में दशम भाव केन्द्र में अपना वर्चस्व कायम कर रखा है। पाप ग्रहों के सम्पुट में तथा पापकर्तरी योग में लग्न शुभ नहीं है। यह ग्रह संयोग शुभ कृत्यों में किंचित व्यवधान कारक माना जाता है। मंगल+केतु का अंगारक योग मन में उत्तेजना पैदा करता है। देश में सुरक्षा प्रबन्धों की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

आगे-पीछे बहुत ग्रह, रवि के भौम अगार।
राजनीति सह द्विन्द से, नैतिक पतन विचार॥

इस योग के चलते राजा की ओर से प्रजा में असुरक्षा की भावना पनपने लगती है। राजतन्त्र की अकर्मण्यता बढ़ती जाती है। जनता में महंगाई से त्राहि-त्राहि मचती है। राजनैतिक घटकों में फेर बदल की प्रतिक्रिया होती है। भारत के किसी प्रदेश में राष्ट्रपति शासन की सम्भावना बन सकती है। विदेशी मेहमान का आगमन काफी महंगा पड़ेगा। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में तनाव बढ़ सकता है। पड़ौसी राज्यों से लगने वाली भारतीय सीमाओं पर सैन्यबल बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए। गणतन्त्र के अवसर पर अन्तरिक्ष में बनने वाले ग्रह योगों के अनुसार यत्र-तत्र बादल चाल किंवा हल्की वर्षा भी होगी तो कहीं भारी मेघ गर्जना के साथ ओला वृष्टि सम्भव है। खड़ी फसलों में नुकसान होगा। पवन अति तीव्र गति से वहेगी। पर्वतीय प्रदेशों में हिमपात, शीतलहर, झन्झावात से यातायात में व्यवधान पड़ सकता है। उत्तर प्रदेश तथा उत्तरकाशी में यान-खान कुघटना चक्र अथवा किसी बड़े नेता के देहावसान से व्यवधान होगा।

फरवरी-मार्च की ग्रह चाल देखने से पता चलता है स्वदेश में महंगाई बढ़ेगी। कुम्भ राशि में पंचग्रही योग के प्रभाव से कहीं सत्ता हस्तान्तरण की लड़ाई चर्म सीमा पार कर जायेगी। विश्व के किसी देश में आन्तरिक कलह बढ़ती जायेगी। विघटनकारी ताकतें सिर उठाने लगेंगी। कहीं मौसम की प्रतिकूलता चलेगी किंवा दुर्दिन वसात् हानि होगी। कहीं क्रांति संभ्भव है।

एक राशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्चखेचराः। प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥

इस योग के चलते वसुन्धरा पर नाना प्रकार के कष्टों का प्रादुर्भाव होगा। सात्विक प्रवृत्ति का हास होता जायेगा। रजोगुण तमोगुण बढ़ता जायेगा। इस वर्ष सम्वत् २०५४ में सबसे अधिक फायदे में हेराफेरी करने वाले तस्कर, चोर, उच्चके, लफंगे, असामाजिक तत्व, घोटालेबाज, समय-समय पर दल बदल करने वाले फायदे में रहेंगे राजनैतिक दशा भी अनिश्चित रहेगी। वर्ष असामयिक अनियमित होने से कृषि कार्यों में कमी पड़ेगी।

सम्वत्सर २०५४ के अन्तिम काल में मीन राशि में बनने बाला शनि+मंगल+बुध का योग भी कम भयावह नहीं है। जब कभी अन्तरिक्ष में ऐसे योग बनते हैं तब पृथ्वी पर सभी प्रकार के उपद्रव होते हैं। जनता में भयानक त्रासदी होने से त्राहि-त्राहि मचती है।

कर्क मीन कन्या मकर जब शनि मंगल बास।
युद्ध विकलता भूमि पर अरु धन धान्य विनाश॥

इति शुभम् भूयात्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कैलेण्डर १८०१-१९९९

(अ) वर्ष								(ब) महीने											
१८०१-१९००				१९०१-१९९९				जन	फर	मार्च	अप्रै.	मई	जून	जुला.	अग.	सितं.	अक्टू.	नवं.	दिसं.
०१	२९	५७	८५		२५	५३	८१	४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
०२	३०	५८	८६		२६	५४	८२	५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
०३	३१	५९	८७		२७	५५	८३	६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०४	३२	६०	८८		२८	५६	८४	०	३	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
०५	३३	६१	८९	०१	२९	५७	८५	२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
०६	३४	६२	९०	०२	३०	५८	८६	३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
०७	३५	६३	९१	०३	३१	५९	८७	४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
०८	३६	६४	९२	०४	३२	६०	८८	५	१	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०९	३७	६५	९३	०५	३३	६१	८९	०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१०	३८	६६	९४	०६	३४	६२	९०	१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
११	३९	६७	९५	०७	३५	६३	९१	२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
१२	४०	६८	९६	०८	३६	६४	९२	३	६	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
१३	४१	६९	९७	०९	३७	६५	९३	५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
१४	४२	७०	९८	१०	३८	६६	९४	६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
१५	४३	७१	९९	११	३९	६७	९५	०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१६	४४	७२		१२	४०	६८	९६	१	४	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
१७	४५	७३		१३	४१	६९	९७	३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
१८	४६	७४		१४	४२	७०	९८	४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
१९	४७	७५		१५	४३	७१	९९	५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
२०	४८	७६		१६	४४	७२		६	२	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
२१	४९	७७	००	१७	४५	७३		१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२२	५०	७८		१८	४६	७४		२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
२३	५१	७९		१९	४७	७५		३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
२४	५२	८०		२०	४८	७६		४	०	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
२५	५३	८१		२१	४९	७७		६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
२६	५४	८२		२२	५०	७८		०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
२७	५५	८३		२३	५१	७९		१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२८	५६	८४		२४	५२	८०		२	५	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१

(स) साप्ताहिक दिन

रवि	१	८	१५	२२	२९	३६
सोम	२	९	१६	२३	३०	३७
मंगल	३	१०	१७	२४	३१	
बुध	४	११	१८	२५	३२	
गुरु	५	१२	१९	२६	३३	
शुक्र	६	१३	२०	२७	३४	
शनि	७	१४	२१	२८	३५	

कलैण्डर को प्रयोग में लाने की विधि-

अगर हमें मालूम करना है कि किस तारीख को कौन सा दिन पड़ता है। जैसे १ मई १८८६ को कौन सा दिन था? पहले वर्ष वाले कॉलम (अ) में (१८०१ से १९०० तक) सन् १८८६ पर अंगुली रखें उसकी सीध में अंगुली महीने वाले कॉलम (ब) में मई मास पर ले जाएं। जो अंक प्राप्त हो (६) उसे उस तारीख में जोड़ दें (१) जिस तारीख का हमें वार मालूम करना है। (६+१=७) अब आप कॉलम (स) में ७ के सामने शनिवार पाएंगे तो पहली मई १८८६ को शनिवार था।

॥ दुर्लभ प्राचीन भृगु संहिता ॥

प्राचीन भारतीय ज्योतिष विज्ञान का ग्रंथरत्न—

जिसकी प्रति किसी-किसी विद्वान् के पास ही उपलब्ध होती थी, उसे लगभग २५० वर्ष पहले—जब भारत में मुद्रण कला का प्रारंभ हुआ तब कुछ खोजी विद्वानों ने संग्रह करके प्रकाशित किया। परन्तु पिछले प्रायः १५० वर्षों से वह भी अनुपलब्ध हो चुकी हैं। हमने बहुत परिश्रम और व्यय करके, अनेक विद्वानों के सहयोग से उसकी एक प्रति लगभग पूर्ण रूप में प्राप्त की है, जोकि गुणग्राहक सज्जनों को यथावत् फोटो-प्रिंट के रूप में उपलब्ध हो सकती है।

फुल स्केप आकार के लगभग १२०० पृष्ठों की इलेक्ट्रोस्टेट प्रति का लागत मूल्य मात्र १७५०/- रुपये देकर आप इसे प्राप्त कर सकते हैं। डाक व्यय+रजिस्ट्री आदि अलग देय होगा। अपना आदेश भेजें।

पता:- **धर्मसन प्रकाशन**
२५९६-९७, नई सड़क, दिल्ली-११०००६
फोन : ३२६४९८६, ३२८५२३४

विद्वान् ज्योतिषी जो पंचांग गणित में अच्छी योग्यता रखते हों। वह पत्र व्यवहार करें या स्वयं मिलें। हमारे कार्यालय में कुछ अनुसंधान कार्य करने योग्य हैं।

आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र

2/45ए, वेस्ट एवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग वेस्ट,
दिल्ली-110026

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अभिजित मुहूर्त्त

सूर्य जब ठीक सिर पर हो, तो वह काल अर्थात् मध्याह्न में पौने बारह बजे से साढ़े बारह बजे तक का मध्यान्तर अभिजित मुहूर्त कहलाता है।

अभिजित काल में किए गए शुभ कार्य के लिए किसी प्रकार के समयशुद्धि विचार करने की आवश्यकता नहीं रहती। अभिजित मुहूर्त भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भांति अन्य सर्व प्रकार के दोषों का नाश कर देता है—

'दिन मध्य गते सूर्य मुहूर्त हि अभिजित्प्रभुः।"
चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥"—ज्योतिष सार

रामायणादि कथा प्रारम्भ करने का मुहूर्त्त

गोचरस्थ बृहस्पति के नक्षत्र से अभीष्ट दिन के नक्षत्र सहित प्रथम चार नक्षत्र अर्थदायक, फिर चार नक्षत्र लाभप्रद इत्यादि निम्नलिखित क्रमानुसार जानें। उदाहरण के लिए, जैसे—

५ से ८वां, ९ से १२वां, १३ से १६वां, १७ से २०, २१ से २४, २४ से २७वां

	प्रथ.	द्विती.	तृती.	चतु.	पंच.	षष्ठी	सप्त.
नक्षत्र क्रम	४	४	४	४	४	४	३
फल	अर्थदा	लाभ	सिद्धि	लाभ	कष्ट	राजभय	मोक्ष

मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त

उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, अश्विनी, श्रवण, विशाखा, मृगशिर इन नक्षत्रों में रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र इन वारों में और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ पूर्णिमा—इन तिथियों में यन्त्र-मन्त्र सिद्ध करना शुभ होता है।

रोग सम्बन्धी प्रश्न

यदि कोई व्यक्ति पूछे कि मेरा रोग कब ठीक होगा तो प्रश्नकालीन जो नक्षत्र हो उसको रोगी के नक्षत्र की संख्या तक गिनें। उस संख्या में प्रश्नकालिक तिथि की संख्या जोड़ें, फिर रविवार से गिनकर उस दिन के वार तक की संख्या जमा कर दें। उसको ४ से भाग कर दें, यदि शेष १ बचे तो मृत्यु तुल्य कष्ट, २ बचें तो अधिक पीड़ा, ३ बचें तो रोगी शीघ्र अच्छा हो जाएगा—ऐसा कहना चाहिए। तिथि की गणना शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से करें।

विदेश की यात्रा के योग—जब अष्टम भाव में तथा उसके स्वामी ग्रह पर पापी ग्रहों का प्रभाव अधिक होता है, तो विदेश गमन का योग बनता है।

अष्टंगस्तस्य भावोदर्शी क्षयं नयति सर्वं गात्रं च।
भ्रमयति देशात-देशां प्रमापयत्यपि च विक्लिष्टम्॥ सारा-वली

इसके अतिरिक्त लग्नेश सहित ग्रह यदि चर राशियों में ३रे, ९वें, ११वें अथवा १२वें भाव में हों तो विदेश यात्रा लाभदायक रहती है। इस सम्बन्ध में दशा अन्तर्दशा एवं गोचर ग्रहों का भी विचार कर लेना संगत होगा।

मूसल योग—यदि समस्त ग्रह स्थिर राशियों (२, ५, ८, ११) में स्थित हों, तो मूसल योग होता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति समाज में उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित, धनी, ज्ञानी, राजमान्य, प्रसिद्ध, पुत्र संतानयुक्त एवं शासनाधिकारी होता है।

रज्जु योग—यदि सभी ग्रह चर (१, ४, ७, १०) राशियों में स्थित हों, तो रज्जु योग होता है। इस योग में उत्पन्न जातक सुन्दर, भ्रमणशील, देश-विदेश में घूमने से लाभ प्राप्त करने वाला, क्रोधी स्वभाव, उन्नतिशील तथा बड़ी चालाकी से अपना कार्य सिद्ध करने वाला होता है।

नल योग—यदि समस्त ग्रह द्विस्वभाव (३, ६, ९, १२) राशियों में स्थित हों, तो नल योग होता है। ऐसा जातक हीनांग अथवा अधिक अंग वाला, अति चतुर, धनवान, राजनीतिक दाव पेंचों में कुशल, प्रतियोगिताओं एवं चुनावों आदि में सफलताएं प्राप्त करता है।

वज्र योग—यदि समस्त पाप ग्रह चतुर्थ और दशम भाव में स्थित हों एवं शुभ ग्रह लग्न और सप्तम स्थान में स्थित हों तो वज्र योग होता है। इस योग वाला बाल्य और वृद्धावस्था में परेशानियों से घिरा रहेगा। कुछ हठी एवं खल प्रकृति वाला, पुलिस या सेना की नौकरी में सफल रहता है।

ग्रह पीड़ा निवारक यन्त्र—जिस व्यक्ति का कोई ग्रह अनिष्ट कारक हो और वह विशेष पीड़ा प्रदान कर रहा हो तो उस व्यक्ति को चाहिए कि वह इस यन्त्र को विधि पूर्वक तैयार करके धारण करे, जिससे ग्रह पीड़ा शान्त हो और उस व्यक्ति का जीवन सुख शान्ति से व्यतीत हो।

८	१	६
३	५ ह्रींखये	७
४	९	२

विधि—भोजपत्र पर पीपल की जड़ की कलम से गोरोचन द्वारा ऊपर लिखे हुये यन्त्र के चित्रानुसार १ से ९ तक के अंक लिख कर, मध्य के कोष्ठक में 'ह्रींखये' लिखे। बाद में इस यन्त्र का पुष्पादि से पूजन करे। इस प्रकार २८ दिन तक क्रम से यन्त्र लिखे और उसका पूजन करे। फिर इस यन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर पूजन करके 'त्रिधातु' के तावीज में भरकर भुजा अथवा गले में धारण करें।

जड़ी बूटियों से अनिष्ट ग्रहों की शान्ति—हमारे परम दयालु महर्षियों, ने (जो लोग बहुमूल्य रत्नों को धारण करने से असमर्थ हैं—उनके) ग्रह दोषों की शान्ति के लिये जड़ी बूटी का धारण करना भी बतलाया है। वह इस प्रकार समझें—

सूर्य पीड़ाकारक हो तो बेलपत्र की जड़ गुलाबडोरे में रविवार को धारण करें। चन्द्र पीड़ाकारक हो तो खिरनी की जड़ सफेद डोरे में सोमवार को, मंगल पीड़ाकारक हो तो अनन्तमूल की जड़ लाल डोरे में मंगलवार को, बुध पीड़ाकारक हो तो विधारा की जड़ हरे डोरे में बुधवार को। गुरु पीड़ाकारक हो तो नारंगी या केले की जड़ पीले डोरे में गुरुवार को, शुक्र पीड़ाकारक हो तो सरपोंखा की जड़ सफेद डोरे में शुक्रवार को धारण करें। शनि पीड़ाकारक हो तो बिच्छू की जड़ काले डोरे में शनिवार को धारण करें। राहु पीड़ाकारक हो तो सफेद चन्दन नीले डोरे में बुधवार को धारण करें। केतु पीड़ाकारक हो तो असगन्ध की जड़ आसमानी डोरे में गुरुवार को धारण करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आवश्यक मुहूर्त: विचार

नाम मुहूर्त	ग्राह्य तिथि	श्रेष्ठ बार मास	शुभ नक्षत्र
बच्चों को स्कूल बिठलाना	२-३-५-६-६-१० ११-१२	उत्तरायण से ५-७ वर्ष में रवि वृ. शु.	आ.पु.श्र.स्वा. रे.पुन.चि.आ.
दुकान खोलना	२-३-५-६-७-८ १०-११-१३	सू.चं.बु.वृ.शु.	चि.अनु.मृ.रे.उ.३,रो.ह.अ.पुष्य
नया जेवर बनाना	२-३-५-७-१३	वृ. शु. रवि	ह.अ.श.पु.स्वा.श्र.ध.उ.३रो.मृ.
दरवाजा लगाना	२-३-५-७-१० ११-१३	चं. बु. वृ. शु.	ऊ.३ अ.रो.मृ.पु.ह.स्वा.श्र.
सीना पिरोना सीखना	१-२-३-५-६-७ ११-१२-१३	सू. चं. बु. वृ. शु.	अ.पुन.चि.अनु.घ.
घर बनाना	२-३-५-६-७-१० ११-१२-१३-१५ बदी १	वै.श्रा. मार्ग. मा. फा. चं. वृ. शु. श.	रो.मृ.चि.ह.स्वा.उ. ३, अनु.ध. श.रे.
नये घर में प्रवेश	शुभ तिथियां	वै.ज्ये.श्रा.श्रा.आश्वि. मा.फा. उत्तरायण में चं. बु. वृ. शु.	उ. ३,अनु.रे.रो.मृ.चि.
कूप बावली बनाना	शुभ तिथियां	चं. बु. वृ. शु.	अनु.ह.उ ३.रो.ध.श.म.पूषा.रे. पु. मृ.

नाम मुहूर्त	ग्राह्य तिथि	श्रेष्ठ बार मास	शुभ नक्षत्र
वस्तु पाने का मुहूर्त	शुभ तिथियां	चं. बु. शु. मा. फा. वै. ज्ये.	व.ध.श.मृ.मू.अनु.ह.चि.रे.स्वा. रो. अश्वि.
हल चलाना बीज बोना	शुभ तिथियां	चं. बु. वृ. शु.	अ पू.३,चि.वि.ध.श. सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिने पहले ३ हानि ५ वृद्धि ३ हानि ५ वृद्धि ३ हा ५ वृ. ३ हा. २ वृद्धि
अनाज भरना	२-३-५-७-१३	रवि. गुरु. शुक्र.	अ.रो.पु.पु.मू. चि.स्वा.अनु.श्र. ध. श. उ ३. रे.
बीमारी से उठने का स्नान	४-६-१४	रवि. मंगल.	अ. ह. चि. अनु. ध. श.
पशु खरीदना	शुभ तिथियां	चं. बु. वृ. शु. श.	उ३, पूषा. पुन. पु. रो. चि. अ.
अर्जी दावा करना	४-६-१४	मंगल. शनि.	आ.भ.कृ.अ.श्ले.म.ज्ये.वि.मू.पू.३
नौकरी करना	२-३-५-६-७-१० ११-१२	र.बु.वृ.शु. स्वामी से राशि मैत्री देखकर	अ. मृ. चि. ह. पुष्य अनु. रे
नई बहू का घर में आना	शुभ तिथियां	चं. वृ. शु.	ह. चि. स्वा. रो. मृ. पू. पुष्य, ध. मू. श्र. अनु. उ. ३, अ रे

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है

दिन	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	बृहस्पतिवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा शुभ	पूर्व, उत्तर	पश्चिम, दक्षिण	दक्षिण, पूर्व	दक्षिण, पूर्व	उत्तर, पश्चिम	पूर्व, उत्तर	पश्चिम, दक्षिण
यात्रा	पश्चिम, दक्षिण	पूर्व, उत्तर	उत्तर, पश्चिम	उत्तर, पश्चिम	दक्षिण, पूर्व	पश्चिम, दक्षिण	पूर्व, उत्तर
ज्ञान और विद्या सम्बन्धी	पढ़ना पढ़ाना लिखना मध्यम रहे	औषधि संबंधी पढ़ाई डाक्टरी विशेष शुभ रहेगी	शस्त्र विद्या, वायुयान चलाना शुभ रहेगा	योगक्रिया या कृषि गणित सम्बन्धी ज्ञान शुभ है	वेदारंभ संस्कृत पढ़ना हिन्दी साहित्यारम्भ शुभ है	कविता कला कौशल एवं अरबी भाषा पढ़ना शुभ	अंग्रेजी, फारसी, उर्दू, यावनी भाषा का ज्ञान शुभ है
व्यापार सम्बन्धी कार्य	अन्न, सोना, तांबा, पाट, बारदाना, कथा का कार्य शुभ है	औषधि, चांदी, दूध, दही, हलवाई, तेल, घृत का व्यापार शुभ है	कोई भी कार्य व्यापार संबन्धी नही आरम्भ करना चाहिये	शेयर मार्केट, जमीन जायदाद संबंधी कार्य शुभ और अशुभ	प्रत्येक कार्यारम्भ में बृहस्पतिवार श्रेष्ठ	कपड़ा, रुई, काष्ठ, इमारतों का ठेका शुभ है	मशीनरी, टड्द, लोहे का व्यापार शुभ है, चाड़े का कार्य करना अच्छा
नवीन वस्त्र पहनना	शुभ ही है	मध्यम है	अशुभ है	शुभ रहेगा	शुभ रहेगा	बहुत शुभ रहेगा	अशुभ है
हजामत बनवाना	मध्यम है	शुभ है	अशुभ है	बहुत शुभ	अशुभ है	शुभ है	मध्यम
तेल लगाना	अशुभ है	शुभ है	अशुभ है	बहुत शुभ है	अशुभ है	शुभ है	बहुत शुभ है
जूता पहनना	मध्यम है	शुभ है	अशुभ है	मध्यम है	शुभ है	शुभ है	मध्यम
मुकद्दमा दायर करना	अशुभ है	अशुभ है	शुभ है	शुभ है	अशुभ है	मध्यम है	शुभ है

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विक्रम सम्वत् २०५४ मध्ये उत्तम-मध्यमादि विवाह मुहूर्त्ता:

शुक्रोदय—वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि रविवार तदनुसार ता. २७ अप्रैल सन् १९९७ ई. को शुक्र ग्रह पश्चिम दिशा में उदय होगा।

शुक्रोदयास्त—माघ मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि ता. १३ जनवरी सन् १९९८ ई. मंगलवार में पश्चिमास्त होकर शुक्र पुन: आठवें दिन माघ कृष्ण सप्तमी मंगलवार २० जनवरी को पूर्व दिशा में उदय होगा।

गुरु उदयास्त—फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की द्वितीया तिथि शुक्रवार तदनुसार ता. १३ फरवरी सन् १९९८ ई. को गुरु ग्रह पश्चिम दिशा में अस्त होकर मास पर्यन्त चैत्र कृष्ण द्वितीया ता. १५ मार्च रविवार को पूर्व दिशा में उदय होगा।

वैशाख कृष्ण पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
१८	वैशाख	८	बुध.	३०	अप्रै.	श्रव. धनि. रे. ८ ॥ऽ गु. ॥॥ऽ॥ ल. कर्क घं. १० मि. ४३ से, रात्रि वृश्चिकादि ३, घं. २० मि. ५ से, रात्रौ धनिष्ठायां गुरौ युति सुखा.
१९	"	९	गुरु.	१	मई	धनिष्ठा रे ७ ॥ऽ ॥ऽ रो. ।ऽ ॥ दिवा लग्न कर्क १० घं. ३९ मि. से शुभ: अन्य चिन्त्येत्बुध:

वैशाख शुक्ल पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
२६	"	२	गुरु.	८	"	रोहिणी रे. ८ ॥॥ऽ चोर ऽ ॥। दिवा ल. ४ रात्रि ९।९०, घं. २१ मि. ५४ से
२७	"	३	शुक्र.	९	"	मृगशिर रे. १० ॥॥॥॥॥ अनपुच्छा स्वयंसिद्धि मुहूर्त, इच्छित लग्न दैवज्ञ चिन्त्येत्बुध:
२	ज्येष्ठ	८	गुरु.	१५	"	मघा रे. ८ ॥॥ऽ गु. ॥ऽ ॥ दिवा लग्न ९।४४ से अत्यावश्यके रविनिरंश:
५	"	११	रवि.	१८	"	हस्त रे. ८ऽ ॥॥।ऽ ॥। वि. ल. १६।३३ बजे से ७ बु. दान: रात्रि धनु-मकर २१ घं. १४ मि. से श्रेष्ठ
७	"	१३	भौम.	२०	"	स्वाती रे. ७।ऽ ॥ऽ बुध ।ऽ श. ॥। गोधूलिवैलायां बु. दा. सोग्रांग: ९।९०, २१ घं. ७ मि. से कुम्भ सप्तम भौम पूज्य
९	"	१५	गुरु.	२२	"	अनु. रे ७ ॥॥ऽ स्. ।ऽऽ ॥ तुला से बुध पूज्य, ९।९० श्रे. २० घं. ५९ मि. से

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
११	"	२	शनि.	२४	"	मूल रे. ८ ॥॥ऽ शु. ।ऽ ॥। विवाह लग्न तुला एवं मकर-कुम्भ श्रे.
१३	"	४	चन्द्र.	२६	"	उषा. रे. ६ ॥।ऽ शु. ।ऽ अ. ।ऽऽ।१६ घं. १ मि. वि. लग्न श्रे. शुक्रवेधाऽभाव: उषायां चतुर्थ चर्णे वेधदोष:
१४	"	५	मंग.	२७	"	श्रव. रे. ८ ॥॥॥।ऽऽ। तुला-धनु-मकर लग्न श्रेष्ठ, ग. क्रांतिसाम्याऽभाव:
१५	"	७	बुध.	२८	"	धनिष्टा रे. ६ऽ।ऽ गु. ॥ऽ राज. ऽ ॥। गोधूलि वैलायां बु. सू. शु. दानादि श्रे. अन्य २०।३५ बजे से धनु-मकर ग्राह्य, गु. युति ग्राह्य
१७	"	९	शुक्र.	३०	"	उभा. रे. ७ ॥॥ऽऽ चोर ।ऽ ॥ वि. ल. रात्रौ धनु-मकर और मेष चिन्त.
१८	"	१०	शनि.	३१	"	उभा. रे. ८ ॥॥ऽ ॥ऽ ॥ विवाह लग्न १५ घं. ४२ मि. बु. सू. दानादि श्रेष्ठ
१९	"	११	रवि.	१	जून	अश्वि रे. ८ऽ गु. ॥॥ऽ रोग ॥॥२० घं. १९ मि. से धनु-मकर अन्य २।५१ से मेष चिन्त.
२०	"	१२	चन्द्र.	२	"	अश्विनी रे. ९ऽ गु. ॥॥॥॥। १५ घं. २४ मि. से तुला-वृश्चि. श्रे. सू. बुध दान

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
२८	"	५	मंग.	१०	"	मघा रे. ८ ।ऽ ॥ऽ गु. ॥॥। मघायां रात्रौ लग्न मेष २ घं. १६ मि. उप.
२९	"	६	बुध.	११	"	मघा रे. ७ऽ।ऽ गु ऽ रो. ॥ गोधूलि सू बु शु दान, अन्य १९ घं. ४० मि. से धनु-मकर तथा मेष चिन्तनीयम्
२	आषाढ़	१०	रवि.	१५	"	हस्त रे. ८ ।ऽ ॥॥ऽ ॥। केवल दिवा लग्न ४।५ रविनिरंश: पर्वदिन श्रेष्ठ
४	"	१२	मंग.	१७	"	स्वाती रे. ८ ॥॥।ऽ अ. ऽ ॥। दिवा ल. कर्क-सिंह एवं तुला रात्रौ नक्षत्राऽभाव:
५	"	१३	बुध.	१८	"	अनु. रे. ९ ॥॥॥ऽ ॥। वि. ल. १४।३१ से रात्रि २१।२७ से मकर-कुम्भ १
६	"	१४	गुरु.	१९	"	अनु. रे. ८ ॥॥।ऽ राज. ऽ ॥। केवल दिवा लग्न सिंह-तुला विचारणीय

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
७	आषाढ़	१५	शुक्र.	२०	जून	मूल रे. ६ ॥।ऽ शु. ऽ बु. ।ऽ।ऽ। वि. ल. रात्रि १०।११ श्रे. २१ घं. ९ मि. से शु. मं. दान, गणितेन क्रांतिसाम्य एवं शुक्रवेधदोषाऽभाव:

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
९	"	२	रवि.	२२	"	उषा. रे. ९ ॥॥ऽ शु. ॥॥। वृश्चिक-मकर-कुम्भ-मेष और वृष लग्न श्रे.
१०	"	३	चन्द्र.	२३	"	श्रवण रे. ८ ।ऽ ॥।ऽ रोग ॥॥२०।५७ से ०।३ तक अन्य १।२५ से १।२ श्रेष्ठ वास पाताले, उत्तरदलेदिवाविष्टि, वैधृतिमध्यान्हात्परत शुभम्।
११	"	४	मंग.	२४	"	धनिष्टा रे. ७ ॥ऽ गु. ॥।ऽऽ॥१४।७ से तुला-वृश्चिक २०।५४ से मकर १।२१ से मेषादि
१३	"	६	गुरु.	२६	"	उभा. रे. ८ ॥॥ऽऽ ॥॥ वृष लग्न रात्रौ पूभायां उपरान्त श्रेष्ठ
१४	"	७	शुक्र.	२७	"	उभा. रे. ८ ॥॥ऽ ॥॥ऽ वि. ल. तुला-वृश्चिक-धनु तथा मकर श्रे. सू. बु. शु. दान तिथि क्षय दग्धादोषमध्यदेशे वर्जित:
१५	"	९	शनि.	२८	"	अश्विनी रे. ७ऽ ॥॥ऽ नृ. ।ऽ ॥ विवाह लग्न रात्रौ १ घं. ५ मि. से अश्विनी में
१६	"	१०	रवि.	२९	"	अश्वि. रे.७ऽ ॥॥ऽ रा. ।ऽ ॥१३।४८ से २०।३४ से मकर पूजनादि से श्रेष्ठ, विष्टिवासस्वर्गे शुभम्।
१८	"	१२	मंग.	१	जुला.	रोहिणी रे. ७ऽऽ ॥॥ऽ ॥। वि. ल. रात्रौ घं. ० मि. ५३ से. मेष चिन्त.
१९	"	१३	बुध.	२	"	रोहिणी रे. ८ऽऽ ॥॥॥॥ वि. ल. तुला-वृश्चिक-मकर शु. पू. क्षीणेन्दु

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
२५	"	४	मंग.	८	"	मघा रे. ८ ॥॥ऽऽ रा. ॥॥ दिवा लग्न तुला-वृश्चिक रात्रि मेष-वृष श्रेष्ठ अतिआवश्यकता में भद्रा मुख कालत्याज्य
२८	"	६	शुक्र.	११	"	हस्त रे. ८ ॥ऽ ॥।ऽ ॥। वि. ल. ० घं. १४ मि. उप. कन्यागत मित्रक्षेत्रेन्दु भौमयुतिदोषाऽभाव: केन्द्रे गुरुशुभ:
३२	"	१०	मंग.	१५	"	अनु. रे. ८ ॥॥।ऽ अग्नि ऽ ॥। रात्रौ २५ घं. १८ मि. मेष-वृष श्रेष्ठ अत्यावश्यके मासान्त दोष
३	श्रावण	१३	शुक्र.	१८	"	मूल रे. ८ ॥।ऽ ॥ऽ ॥। ल. ८।९, घं. १५ मि. ५४ से ग. रविवेधाऽभाव:
४	"	१४	शनि.	१९	"	उषा. रे. ९ ॥॥॥।ऽ ॥ रात्रौ २३ घं. ४३ मि. बजे से मेष-वृष व मिथुन
५	"	१५	रवि.	२०	"	उषा. रे. ९ ॥॥॥।ऽ ॥ दिवा लग्न ७।८।९, घं. १६ मि. २५ बजे से

श्रावण कृष्ण पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
६	"	२	चन्द्र.	२१	"	धनिष्ठा रे. ८ऽ।ऽ गु. ॥॥॥। लग्न १७।३ से ९ रात्रि २३।३५ से मेषादि
९	"	५	गुरु.	२४	"	उभा. रे. ८ ॥॥ऽ ॥ऽ ॥ वृश्चिक-धनु-मकर दग्धादोष मध्यदेश
११	"	७	शनि.	२६	"	अश्विनी रे. ९ ॥॥ऽ मं. ॥॥१४।२३ से ल. ८।९।१० रात्रि मेष चिन्तनीय
१४	"	१०	मंग.	२९	"	रोहिणी रे. ७ऽ ॥॥।ऽऽ ॥ वृश्चिक-धनु-मकर रात्रि मेष-वृष २३।३ से
१५	"	११	बुध.	३०	"	मृगशीर्ष रे. ९ ॥॥।ऽ नृप. ॥॥ दि. ल. १४।३ से रात्रि २२।५९ बजे से शुभ

श्रावण शुक्ल पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
२४	"	५	शुक्र.	८	अग.	हस्त रे. ७ ॥॥।ऽ नृ. ऽऽ ॥ घं. १३ मि. ३२ से १९।३८ तक रात्रि २३।५७ से ४।५ तक
२६	"	७	रवि.	१०	"	स्वाती रे. ८ ॥॥।ऽ चोर ऽ ॥१३।२८ से १९।३२ तक रात्रि २३।४९ से ल. ८।९।१०।१।२
२८	"	८	मंग.	१२	"	अनु. रे. ७ ॥॥।ऽ रोग ऽ।ऽ। वृश्चिक-धनु-मकर सू. पू. रात्रौ मेषादि श्रे.

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
७	भाद्रपद	५	शुक्र.	२२	"	अश्वि. रे. ६ ।ऽ ।ऽ ॥।ऽऽ। लग्न धनु, वृष, मिथुन, कर्क बुधवेधाऽभाव: गणितेन क्रान्तिसाम्यदोषाऽभाव: रेखावृद्धि: २

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
१०	भाद्रपद	८	चन्द्र.	२५	अग.	रोहि. रे.७ ॥॥ऽरोग ऽऽ॥ मकर १६।५० से, वृषादि २२।५० से श्रेष्ठ, श्रीकृष्णावतारतिथि शुभ:
११	"	९	मंग.	२६	"	मृगशिर रे. ७ऽऽ ॥॥ऽ॥ दिवा लग्न मकर रात्रि वृष-मिथुन दग्धा दोष:

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
२०	"	२	गुरु.	४	सितं.	हस्त रे. ९॥॥ऽ॥। दिवा लग्न ११।४६ से १७।५१ तक रात्रि २२।११ से वृषादि
२२	"	४	शनि.	६	"	स्वाती रे. ७॥॥ऽ मृ. ऽऽ॥ वि. ल. मकर रात्रि वृष-मिथुन-कर्क श्रेष्ठ
२३	"	५	रवि.	७	"	स्वाती रे. ७॥॥ऽ अ. ऽऽ॥ केवल दिवा लग्न वृश्चिक-धनु १५।१ तक चिन्त.
२४	"	६	चन्द्र.	८	"	अनु. रे. ७ऽ॥॥ऽ रा. ऽ॥। लग्न वैधृतिपातोपरान्त मिथुन-कर्क चिन्तनीय
२५	"	७	मंग.	९	"	अनु. रे. ८ऽ॥॥ऽ॥। लग्न १३।४६ से १७।१२ तक भद्रात्पूर्व श्रेष्ठ
२६	"	८	बुध.	१०	"	मूल रे. ७ऽ॥॥ऽ चोर ऽ॥। रात्रि लग्न २१।४७ से वृषादि चिन्त्येत्बुध:
२७	"	९	गुरु.	११	"	मूल रे. ८ऽ॥॥ऽ॥। लग्न १३ घं. ३८ मि. से रात्रौ नक्षत्राऽभाव:
२८	"	१०	शुक्र.	१२	"	उषा. रे. ७॥॥ऽ रो. ऽ॥ऽ लग्न वृष-मिथुन दग्धादोषमध्यदेशे
२९	"	११	शनि.	१३	"	उषा. रे. ९॥॥॥ऽ॥। वृश्चिकादि लग्न ११।१० बजे से भद्रा त्यागकर देशकालपरिस्थितिवसात यत्नेन लग्न चिन्त्येत्बुध:

आश्विन शुक्ल पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
१८	आश्विन	२	शुक्र.	३	अक्तू.	स्वाती रे. ८।ऽ॥॥ऽ॥। रात्रि लग्न मिथुन-कर्क २२।११ बजे से
१९	"	३	शनि.	४	"	स्वाती रे. ७।ऽ॥ऽ रोग ऽ॥। विवाह लग्न मकर तथा मेष चिन्त.
२३	"	६	बुध.	८	"	मूल रे. ८ऽ॥॥ऽ॥। घं. १३ मि. ५७ से, १० घं. १८ मि. २४ से. १ घं. २१ मि. ५१ से.
२५	"	९	शुक्र.	१०	"	उषा. रे. ८ऽ मं. ॥॥॥ऽ॥ विवाह लग्न १०।१।३।४ चिन्त्येत्बुध:
२६	"	१०	शनि.	११	"	श्रवण रे. ८॥ऽ गु. ॥ऽ चोर ॥॥ मकर १३।४५ से मेष १८।१२ से मिथुन २१।४० से
२७	"	११	रवि.	१२	"	धनिष्ठा रे. ८।ऽ॥॥ऽ॥। विवाह लग्न १३।४१ से १८।४ से उत्तरार्ध की विष्टि शुभ:
२९	"	१३	मंग.	१४	"	उभा. रे. ९॥॥॥॥ऽ। उभायां लग्न मेष-मिथुन-कर्क गुरु दानादि

कार्तिक कृष्ण पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
३	कार्तिक	४	रवि.	१९	"	रोहिणी रे. ६।ऽ॥ऽ अग्नि ऽऽ॥ व्यतिपातोपरान्त लग्न चिन्त्येत्बुध:
४	"	५	चन्द्र.	२०	"	मृगशीर्ष रे. ८॥॥ऽ॥ऽ॥ वि. ल. २१।४ बजे के उप. मिथुनादि श्रेष्ठ
९	"	१०	शनि.	२५	"	मघा रे. ६ऽबु. ॥ऽगु. ।ऽ रोग ।ऽ॥२२।५० से पादभेदेन गुरुवेध दोषाऽभाव: भद्रोत्तर लग्न चिन्त्येत्बुध:
१०	"	११	रवि.	२६	"	मघा रे. ७ऽबु. ॥ऽगु. ॥।ऽ॥ मध्यान्हात्पूर्वे घं. १० मि. ४१ से धनुष्यादि

कार्तिक शुक्ल पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
१७	"	२	रवि.	२	नवं.	अनु. रे. ९॥॥॥ऽ॥। लग्न १२।१८ से रात्रि वृष बुध पू. कर्क से गुरु पूज्य
२१	"	६	गुरु.	६	"	उषा. रे. ७ऽऽ॥।ऽ अग्नि ॥॥ वि. ल. दिवा मकर रात्रि कर्क श्रेष्ठ
२२	"	७	शुक्र.	७	"	श्रवण रे. ८।ऽऽ गुरु ॥॥॥। उपरोक्त साहा लग्न श्रेष्ठ गुरु युति श्रेष्ठ
२३	"	८	शनि.	८	"	धनिष्ठा रे. ६॥॥ऽ राज. ऽऽऽ। गणितेन क्रांतिसाम्यदोषाऽभावः लग्न १० एवं गोधूलि र. बु. दा. अन्य कर्क
२६	"	११	मंग.	११	"	उभा. रे. ८।ऽ॥॥॥ऽ अणपृछा मुहूर्त लग्न वृष बुध-शुक्र दान अन्य ४
२८	"	१४	गुरु.	१३	"	अश्विनी रे. ९॥ऽ॥॥॥ केवल दिवा लग्न मकर श्रेष्ठ, रात्रौनक्षत्राऽभाव: पादभेदेनवेध दोषाऽभाव:

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
६	मार्गशीर्ष	७	शुक्र.	२१	"	मघा रे.९॥।ऽ गु. ॥॥२४।१७ वेधोपरान्त कन्या-तुला घं. १ मि. ५६ चरणभेदेनगुरुवेधदोषाऽ. रेखावृद्धि
७	"	८	शनि.	२२	"	मघा रे. ८॥ऽ गु. ।ऽ चोर ॥॥ वि. ल. २५।२७ से १ विचारणीयम्
८	"	९	रवि.	२३	"	उफा. रे. ६ऽ॥ऽऽ॥ऽ॥ लग्न रात्रौ घं. १ मि. ४८ से शनिदानादि श्रेष्ठ गणितेन शनिवेधदोषाऽभाव:
९	"	१०	चन्द्र.	२४	"	हस्त रे. ६ऽ॥॥ऽ रो. ऽऽ॥ रात्रि लग्न १ घं. ४४ मि. से कन्यायां शनि दानादि
१०	मार्गशीर्ष	११	मंग.	२५	नवं.	हस्त रे. ७ऽ॥॥।ऽऽ॥ मेष, गोधूलि रवि. दा. रात्रौ कर्क अन्य तुला श्रेष्ठ

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
१९	"	५	गुरु.	४	दिसं.	श्रवण रे. ८ऽ॥॥॥ऽ॥ लग्न मेष सोप्रांग्र: गोरजे, अन्य ३ घं. २२ मि. कन्यायां शनि दानादि शुभ:
२३	"	९	चन्द्र.	८	"	उभा. रे. ९॥॥।ऽ राज. ॥॥ मेष-वृष र. दा. अन्य चिन्त्येत्बुध:
२५	"	११	बुध.	१०	"	अश्विनी रे. ७ऽ॥ऽ।ऽ॥॥ भद्रोत्तर लग्न मेष-वृष र. बु. मं. दान चरणभेदेन राहु वेधदोषाऽभाव:
२७	"	१३	शुक्र.	१२	"	रोहिणी रे. ८॥॥ऽ।ऽ॥२४ घं. ३३ मि. से कन्या अन्य तुला श्रेष्ठ, शुक्र वेधदोषाऽभाव:
२८	"	१४	शनि.	१३	"	रोहिणी रे. ८॥ऽ शुक्र ॥।ऽ॥ विवाह हेतु मेष लग्न श्रेष्ठ २ र. पूज्य वृषेन्दुविष्टि दोषाऽभाव:

माघ कृष्ण पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
१०	माघ	१०	शुक्र.	२३	जन.	अनु. रे. ९॥॥॥ऽ॥। लग्न ६।१७।४ घं. २१ मि. ४७ कन्यायां शनि दानादि
१२	"	१२	रवि.	२५	"	मूल रे. ७ऽ॥॥ऽ अ. ॥।ऽ लग्न २।६।१७।४ अत्यावश्यके व्याघात

माघ शुक्ल पक्ष

प्र.	मास	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र रेखा लग्न शुद्धि, विवाह लग्न तथा अन्य विवरण
१८	"	४	शनि.	३१	"	उभा. रे. ६ऽ॥॥ऽ रोग ऽऽ॥ रिक्तातिथ्योत्तर लग्न तुलादि श्रेष्ठ
१९	"	५	रवि.	१	फर.	उभा. रे. ७ऽ॥॥।ऽऽ॥ लग्न १४ घं. १४ मि. से शु.पू. अन्यचिन्त्येत्बुध:
२३	"	९	गुरु.	५	"	रोहिणी रे. ८॥॥ऽ राज ॥ऽ। गणितेन क्रान्तिसाम्यदोषाऽभाव: घं. २३ मि. १४ तुलादि विचारणीयम्
२४	"	१०	शुक्र.	६	"	मृगशिर रे. ८।ऽ॥॥॥ऽ। लग्न २।३।१७ समयादि चिन्तनीय

अशुद्ध विवाह मुहूर्त्त सम्वत् २०५४ वि.

३	मई	शनि उभा मृत्युपंचक, वैधृतिपात दोष
४	"	रवि रेवती मृत्युवान, शनियुति दोष
५	"	चन्द्र अश्विनी क्षीणतियेन्दुभद्रा दोष
१०	"	शनि मृग. लग्नाऽभाव, रिक्तातिथि
१४	"	बुध मघा संक्रान्ति दिन
१६	"	शुक्र उफा. राहु युति शनिवेध
१७	"	शनि उफा. राहु युति शनिवेध
१९	"	सोम चित्रा केतुवेध, जामित्र दोष
१	जून	रवि रेवती शनि युति राहु वेध दोष
४	"	बुध रोहिणी क्षीणेन्दु मृत्यु वान दोष
५	"	गुरु रोहिणी क्षीणेन्दु अमावस्या
६	"	शुक्र मृगशिर प्रतिपदा क्षीणेन्दु दोष
१३	"	शुक्र उफा. भौम राहु युति शनिवेध और मृत्युवान दोष
१४	"	शनि उफा. युति. हस्त नेष्ट, संक्रान्तिदिन व्यतिपात दोष
१६	"	चन्द्र. चित्रा केतुवेध मृत्युवान दोष
२०	"	शुक्र मूलवेध २६।१८ से ३१।५९ तक गणितेन, क्रान्तिसाम्य दोषाऽभाव: आवश्यकता में ग्राह्य
२१	"	शनि मूल नन्दतिथि लग्नाऽभाव:
२७	"	शुक्र उभा. २३।५१ तक आवश्यकता में ग्राह्य
२८	"	शनि रेवती शनियुति, राहुवेध दोष
२	जुला.	बुध रोहिणी क्षीणेन्दु आवश्यकता में ग्राह्य
३	"	गुरु मृगशिर क्षीणेन्दु, भद्रादोष
९	जुला.	बुध मघा लग्नाऽभाव, व्यतीपात दोष
१०	"	गुरु उफा. राहुयुति, शनिवेध व चौरवान
१२	"	शनि चित्रा केतुवेधदोष, भद्रा दोष
१३	"	रवि चित्रा केतुवेध दोष अग्राह्य
१६	"	बुध अनु. संक्रान्तिदिन, भद्रा दोष
१७	"	गुरु मूल रात्रि मृत्युवान दोष
२२	"	भौम धनिष्ठा भद्रादोष लग्नाऽभाव
२५	"	शुक्र रेवती शनियुति राहु वेध दोष
५	अग.	मंगल मघा मृत्युवान दोष
६	"	बुध उफा. राहुयुति शनि वेध दोष
७	"	गुरु उफा. राहुयुति शनि वेध दोष
९	"	शनि चित्रा भौमयुति केतु वेध दोष
१४	"	गुरु मूल मृत्युवान तिथि क्षय दोष
१५	"	शुक्र मूल दिवा लग्नाऽभाव
१६	"	शनि उषा. संक्रान्ति दिन
१७	"	रवि श्रवण गुरुयुति सूर्य वेध
१८	"	चन्द्र धनिष्ठा मृत्युवान दोष
२०	"	बुध उभा. शुक्रवेध, भद्रा, तिथिक्षय
२१	"	गुरु रेवती शनियुति, राहु-शुक्रवेध दोष
२२	"	शुक्र रेवती युतिदोष, वेध दोष
२३	"	शनि अश्विनी दिवा लग्नाऽभाव:
२७	"	बुध मृगशिर भद्रादोष, मृत्युवान
१	सित.	चन्द्र मघा अमावस्या पितृौरी ३०
३	"	बुध उफा. शनिवेध केतु जामित्र दोष

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

५	सितं.	शुक्र चित्रा शुक्रयुति केतुवेध दोष
१४	"	रवि श्रवण बुधवेध, मृत्युपंचक
३	अक्तू.	शुक्र चित्रा केतुवेध, वैधृतिपात दोष
५	"	रवि अनु. भौम-शुक्र युति, भद्रा दोष
६	"	चन्द्र अनु. भौम-शुक्र युति मृत्युबाण दोष
७	"	भौम. मूल रात्रौ लग्नाऽभाव:
१५	"	बुध रेवती शनि युति, मृत्युबाण, व्याघात
१५	"	बुध उभा. व्याघात, भद्रा दोष, लग्नाऽभाव
१६	"	गुरु अश्विनी राहुवेध, मासान्त, तिथिक्षय:
२७	"	सोम उफा. मृत्युबाण, शनिवेध, क्षीणेन्दु
२८	"	भौम उफा. शनिवेध क्षीणेन्दु, वैधृतिपात
२९	"	बुध हस्त क्षीणेन्दु, भद्रा, वैधृतिपात
३०	"	गुरु चित्रा केतुवेध क्षीणेन्दु, रिक्तातिथि
३१	"	शुक्र स्वाती अमावस्या अस्तेन्दुदोष:
४	नवं.	भौम मूल शुक्र युति भद्रा दोष
१०	"	चन्द्र उभा. भद्रा दोष लग्नाऽभाव:
१२	"	बुध रेवती शनियुति, अश्विनी राहुवेध
१३	"	गुरु अश्विनी वेध दोष द्वितीयभागे
१५	"	शनि रोहिणी मृत्युबाण, मासान्त दोष
१६	"	रवि मृगशिर संक्रान्ति दिन
१७	"	सोम मृगशिर मृत्युबाण दोष नेष्ट
२४	"	सोम दिवा उफायां शनि वेध, रोगबाण
२६	"	बुध चित्रा मृत्युबाण केतु वेधदोष
२७	"	गुरु स्वात्यां मृत्युबाण, क्षीणेन्दु
२९	"	शनि अनुराधा क्षीणेन्दु
३०	"	रवि अनुराधा अमावस्या अस्तेन्दु
१	दिसं.	चन्द्र. मूल नन्दातिथि क्षीणेन्दु
२	"	भौम मूल तिथिक्षय लग्नाऽभाव
३	"	बुध उषा. शुक्रयुति, भद्रा, रिक्तातिथि
५	"	शुक्र श्रवण, धनिष्ठायां मृत्युबाण
६	"	शनि धनिष्ठायां विवाह लग्नाऽभाव
९	"	भौम रेवती शनियुति व्यतीपातदोष
१४	"	रवि मृगशिर शुक्र भौमयुति, मृत्युबाण

आगे मास पर्यन्त खर मास दोष जानें

१५	जन.	गुरु मघा मृत्युबाण भद्रा शुक्रास्तदोष
१६	"	शुक्र मघा लग्नाऽभाव मृत्युबाण
१७	"	शनि उफायां शनिग्रह वेधमृत्युदा
१८	"	रवि उफायां शनिवेध शुक्रास्त दोष
१९	"	चन्द्र हस्त भद्रा व शुक्रास्त दोष
२०	"	भौम चित्रा जामित्र एवं शुक्रास्त दोष
२१	"	बुध स्वात्यां शुक्रबालत्व दोष
२४	जन.	शनि रात्रौ मूल लग्नाऽभाव
२६	"	चन्द्र उषा. लग्नाऽभाव क्षीणेन्दु
२७	"	भौम उषा. युति दोष अस्तेन्दु
२८	"	बुध श्रवण रवियुति अमावस्या
२९	"	गुरु धनिष्ठा व्यतीपात तिथि क्षीण
२	फर.	सोम रेवती, अश्विनी युति मृत्युबाण दोष
३	"	मंगल अश्विनी राहुवेध अग्निबाण दोष
७	"	शनि मृग. लग्नाऽभाव, वैधृति, भद्रा दोष
११	"	बुध मघा गुरु वृद्धत्वदोष: फाल्गुन मासे गुरोरस्तत्वादभाव: पुन: मीन सक्रान्ति (खर) मास दोषश्च शुभकृत्याऽभाव

द्विरागमन मुहूर्त्त सं. २०५४ वि.

मास	प.	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र लग्न विवरण
वैशाख	कृ.	१०	शुक्रे	२	मई	शतभिषा लाभामृत चौघ.
"	"	१३	रवि	४	"	उभायां घं. ९ मि. २३ उप.
"	शु.	२	गुरौ	८	"	रोहिणी ८।३५ उप. श्रे.चौघ.
"	"	५	रवि	११	"	पुन. में लग्न चिन्तनीय
मार्ग.	कृ.	५	बुधे	१९	नवं.	पुन. मकर लग्न में शुभ
"	"	१०	चन्द्रे	२४	"	उफायां भद्रात्पूर्वे
"	"	१३	गुरौ	२७	"	चित्रा स्वाती १०।४० उप.
"	शु.	५	गुरौ	४	दिसं.	उषायां लग्न चिन्त्येत्बुध

गृहारम्भ मुहूर्त्त सं. २०५४ वि.

वैशाख	शु.	१२	चन्द्रे	१९	मई	चित्रा ९।५० उप. २४ ल. श्रे.
"	"	१५	गुरौ	२२	"	अनु. ७।११ उप. लग्न चिन्त.
श्रावण	कृ.	२	चन्द्रे	२१	जुला.	श्रवण अभि. स्थिर नवांशे
"	शु.	९	बुधे	१३	अग.	अनु. ८।३३ उप स्थिर लग्ने
"	"	१२	शुक्रे	१५	"	मूल ९।२७ तक लग्न चिन्त.
कार्तिक	"	७	शुक्रे	७	नवं.	श्रवण लाभामृत चौघड़िया
माघ	"	१०	शुक्रे	६	फर.	रोहिणी लाभामृत चौघड़िया
"	"	११	शनि	७	"	मृगशिर भ. शुभ ल. चिन्त.
"	"	१३	चन्द्रे	९	"	पुन. अमृत चौघड़िया

गृह प्रवेश मुहूर्त्त सं. २०५४ वि.

वैशाख	कृ.	८	बुधे	३०	अप्रै.	श्रवण वृष मिथुन ल.
"	शु.	३	शुक्रे	९	मई	रोहि. मृग. स्वयं सिद्धि मु.
"	"	१५	गुरौ	२२	"	अनु. ७।११ उप. अभि.
ज्येष्ठ	कृ.	८	गुरौ	२९	"	शत. अभिजिन्मुहूर्ते
"	"	१२	चन्द्रे	२	जून	अश्वि. लग्न चिन्त्येत्बुध
"	शु.	२	शनि	७	"	आर्द्रा. ५।५९ उप. मिथुन
"	"	८	शुक्रे	१३	"	उफा. लग्न भद्रोत्तर

मास	प.	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र लग्न विवरण
आषाढ़	कृ	१३	बुधे	२	जुला.	रोहिण लग्न चिन्त्येत्बुध
"	शु.	१३	शुक्रे	१८	"	मूल जया तिथि में ल. श्रे.
श्रावण	कृ.	२	चन्द्रे	२१	"	श्रवण स्थिर लग्न में श्रे.
"	"	७	शनि	२६	"	अश्विनी लग्न नवांश शु.
"	"	११	बुधे	३०	"	रोहिणी मृगशिर श्रेष्ठ
"	"	१२	गुरौ	३१	"	मृगशिर आर्द्रायां
"	शु.	९	बुधे	१३	अग.	अनु. दशमी तिथि में
"	"	१२	शुक्रे	१५	"	मूल लग्न चिन्त्येत्बुध
कार्तिक	कृ.	८	गुरौ	२३	अक्तू.	गुरुपुष्यामृत योग
"	शु.	७	शुक्रे	७	नवं.	श्रवण अभिजिन्मुहूर्ते
"	"	८	शनि	८	"	धनिष्ठायां मकरलग्न
"	"	१२	बुधे	१२	"	रेवती लाभामृत चौघ.
मार्गशीर्ष	कृ.	६	गुरौ	२०	"	गुरुपुष्यामृत योगे
"	"	१०	चन्द्रे	२४	"	उफा. भद्रात्पूर्वे ल. चि.
"	"	१२	बुधे	२६	"	चित्रा मकर लग्न में
"	"	१३	गुरौ	२७	"	स्वाती लग्न चिन्त्येत्बुध:
"	शु.	६	शुक्रे	५	दिसं.	श्रवण धनि. स. सि. योग
"	"	७	शनि	६	"	धनि. लग्न चिन्त्येत्बुध
माघ	कृ.	१०	शुक्रे	२३	जन.	अनु. तिथ्योत्तरभागे वि. शु.
"	शु.	१०	शुक्रे	६	फर.	रोहिणी लाभामृत चौघ.
"	"	११	शनि	७	"	मृगशिर लग्न चिन्तनीय
"	"	१३	चन्द्रे	९	"	पुन. स्थिर लग्न में शुभ

उपनयन मुहूर्त्त सं. २०५४ वि.

वैशाख	कृ.	१२	रवि	४	मई	उभा. लाभामृत चौघ.
"	शु.	३	शुक्रे	९	"	रोहिणी स्वयं सिद्धि मुहूर्त
"	"	११	रवि	१८	"	हस्त भद्रोत्तर अभि. मु.
"	"	१३	भौमे	२०	"	स्वाती लग्न चिन्तनीय
"	"	१५	गुरौ	२२	"	अनु. मध्याह्न कर्क लग्न
ज्येष्ठ	"	३	रवि	८	जून	पुन. कर्क लग्न शुभ
माघ	कृ.	१०	शुक्र	२३	जन.	अनु. भद्रावास स्वर्गे
"	"	१२	रवि	२५	"	मूल ल. चिन्त्येत्बुध:
"	शु.	५	रवि	१	फर.	उभा. वसन्त पंचमी
"	"	७	भौमे	३	"	अश्विनी सामवेदियों...
"	"	१०	शुक्रे	६	"	रोहिणी भद्रात्पूर्वे लग्न चि.
"	"	१२	रवि	८	"	आर्द्रा लाभामृत चौघड़िया

देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०५४ वि.

वैशाख	कृ.	८	बुधे	३०	अप्रै.	श्रवण लाभामृत चौघ.
"	शु.	३	शुक्रे	९	मई	रोहिणी मृग. स्वयं सिद्धि मु.

मास	प.	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र लग्न विवरण
वैशाख	शु.	५	रवि	११	मई	आर्द्रा लाभ + अमृत चौघ.
"	"	१५	गुरौ	२२	"	अनु. ७।११ उप. स्थिर लग्ने
ज्येष्ठ	कृ.	१२	चन्द्रे	२	जून	अश्विनी लग्न चिन्त.
"	शु.	१०	रवि	१५	"	हस्त लाभामृत चौघड़िया
माघ	कृ.	१२	रवि	२५	जन.	मूल लग्न चिन्त्येत्बुध:
"	शु.	५	रवि	१	फर.	उभा. वसन्त पंचमी
"	"	१०	शुक्रे	६	"	रोहिणी लाभामृत चौघड़िया
"	"	१२	रवि	८	"	आर्द्रा लग्न चिन्त्येत्बुध:
"	"	१३	सोम	९	"	पुन. स्थिर नवांश लग्ने शुभ

तामसी देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०५४

ज्येष्ठ	शु.	२	शनि	७	जून	आर्द्रायां श्रेष्ठ
"	"	८	शुक्रे	१३	"	उफायां भद्रोत्तर
आषाढ़	कृ.	२	रवि	२२	"	उषा. अभिजित
"	"	१०	रवि	२९	"	अश्वि. भद्रात्पूर्वे
"	"	१३	बुधे	२	जुला.	रोहिणी लाभामृत
"	शु.	२	रवि	६	"	रवि पुष्यामृत योग
"	"	६	शुक्रे	११	"	उफा. कुमार षष्ठि
"	"	९	चन्द्रे	१४	"	स्वाती भड्डरि नवमी
श्रावण	कृ.	२	चन्द्रे	२१	"	श्रवण सर्वार्थसिद्धि योग
"	"	५	गुरौ	२४	"	उभा. सर्वार्थसिद्धि योग
"	"	११	बुधे	३०	"	रोहिणी सर्वार्थसिद्धि योग
"	शु.	१०	बुधे	१३	अग.	अनु. अमृतसिद्धि योग
भाद्र	कृ.	५	शुक्रे	२२	"	रेवती लग्न चिन्तनीयम्
"	"	८	चन्द्रे	२५	"	रोहिणी अवतार तिथि
"	"	१२	शुक्रे	२९	"	पुन. तामसी देव
"	"	१३	शनि	३०	"	पुष्य नक्षत्र में शुभ
"	शु.	५	रवि	७	सितं.	स्वाती लग्न चिन्त.
आश्विन	"	३	शनि	४	अक्तू.	स्वाती शुभ चौघड़िया
"	"	१५	गुरौ	१६	"	अश्विनी पूर्णिमायां
कार्तिक	कृ.	५	चन्द्रे	२०	"	मृगशिर नक्षत्रे
"	"	८	गुरौ	२३	"	गुरु पुष्यामृत योगे
"	"	१३	बुधे	२९	"	हस्त लग्न चिन्तनीय
"	शु.	७	शुक्रे	७	नवं.	श्रवण सर्वार्थसिद्धियोग
"	"	११	भौमे	११	"	उभा. ल. चिन्त्येत्बुध
मार्ग.	कृ.	६	गुरौ	२०	"	गुरुपुष्यामृत योग
"	शु.	५	गुरौ	४	दिसं.	उषा. लग्न चिन्त.
माघ	कृ.	१२	रवि	२५	जन.	मूलभे. लाभामृत चौघ.
"	शु.	५	रवि	१	फर.	उभा. सर्वार्थसिद्धि योग
"	"	७	भौमे	३	"	अश्विनी भद्रात्पूर्वे लग्न

CC-0 In Public Domain: Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मास	प.	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र लग्न विवरण
माघ	शु.	१०	शुक्रे	६	फर.	रोहिणी लग्न चिन्तनीय
"	"	१२	रवि	८	"	आर्द्रा लग्न चिन्त्येत्बुधः
"	"	१३	चन्द्रे	९	"	पुन. उत्तमयोगे

कर्णवेध चूड़ाकरण (मुण्डन संस्कार)

वैशाख	कृ.	१०	शुक्रे	२	मई	शत. सिद्धि योग श्रेष्ठ
"	शु.	३	"	९	"	रोहि. अक्षय तीज
"	"	१२	चन्द्रे	१९	"	चित्रा लाभ शुभ चौघ.
आषाढ़	कृ.	५	बुधे	२५	जून	धनि. लग्न चिन्तनीय
मार्गशीर्ष	कृ.	५	बुधे	१९	नवं.	पुन. पंचमी तिथि में
"	"	६	गुरौ	२०	"	गुरु पुष्यामृत योग
"	"	१३	गुरौ	२७	"	स्वाती उत्तम लग्न में
"	शु.	५	गुरौ	४	दिसं.	श्रवण में लग्न चिन्त
माघ	शु.	२	शुक्रे	३०	जन.	शत. लाभामृत चौघड़िया

रत्नांकुर मुहूर्त्त (बीज बोवन मुहूर्त्त)

चैत्र	शु.	४	शुक्रे	११	अप्रै.	रोहिणी
"	"	९	बुधे	१६	"	आश्लेषा
"	"	१३	रवि	२०	"	उत्तराफाल्गुनी
वैशाख	कृ.	२	गुरौ	२४	"	विशाखा
"	"	१२	रवि	४	मई	उत्तराभाद्रपद
"	शु.	२	गुरौ	८	"	रोहिणी
"	"	१३	भौमे	२०	"	चित्रा
ज्येष्ठ	कृ.	२	शनि	२४	"	मूलभे
"	शु.	२	शनि	७	जून	आर्द्रायां
"	"	७	गुरौ	१२	"	पूर्वाफाल्गुनी
"	"	१५	शुक्रे	२०	"	ज्येष्ठा
आषाढ़	कृ.	४	भौमे	२४	"	श्रवण
"	"	५	बुधे	२५	"	धनिष्ठा
"	"	६	गुरौ	२६	"	पूर्वाभाद्रपद
"	शु.	४	बुधे	९	जुला.	मघायां
"	"	८	रवि	१३	"	चित्राभे
"	"	१२	गुरौ	१७	"	ज्येष्ठा
श्रावण	कृ.	७	शनि	२६	"	अश्विनी
"	"	८	रवि	२७	"	अश्विनी
"	"	१२	गुरौ	३१	"	मृगशिर
"	शु.	१	चन्द्रे	४	अग.	आश्लेषा
"	"	५	शुक्रे	८	"	हस्तभे
"	"	९	बुधे	१३	"	अनुराधा
भाद्र.	कृ.	५	शुक्रे	२२	"	रेवती

मास	प.	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र लग्न विवरण
भाद्र.	कृ.	१०	बुधे	२७	अग.	मृगशिर
"	शु.	२	गुरौ	४	सितं.	उत्तराफाल्गुनी
आश्विन	कृ.	२	गुरौ	१८	"	रेवती
"	"	१४	भौमे	३०	"	पूर्वाफाल्गुनी
"	शु.	३	शनि	४	अक्टू.	स्वाती
कार्तिक	कृ.	३	शनि	१८	"	कृतिका
"	"	८	गुरौ	२३	"	गुरुपुष्य
"	"	१३	बुधे	२९	"	हस्तभे
"	शु.	४	भौमे	८	नवं.	मूलभे
"	"	५	बुधे	५	"	मूलभे
"	"	८	शनि	८	"	धनिष्ठा
"	"	१४	गुरौ	१३	"	अश्विनी
"	"	१५	शुक्रे	१४	"	भरणी
मार्ग	"	४	भौमे	१८	"	आर्द्रायां
"	"	५	बुधे	१९	"	पुनर्वसु
"	"	६	गुरौ	२०	"	गुरु + पुष्य
"	"	८	शनि	२२	"	मघायां
"	"	१२	बुधे	२६	"	चित्रायां
"	शु.	८	रवि	७	दिसं.	शतभिषा
"	"	१२	गुरौ	११	"	भरणी
"	"	१५	रवि	१४	"	मृगशिर
पौष	कृ.	१०	बुधे	२४	"	चित्रायां
"	"	१३	शनि	२७	"	अनुराधा
"	शु.	३	गुरौ	१	जन.	श्रवण
"	"	१०	बुधे	७	"	अश्विनी
माघ	कृ.	६	रवि	१८	"	उत्तराफाल्गुनी
"	"	१४	भौमे	२७	"	उत्तराषाढ़ा
"	शु.	१	गुरौ	२९	"	धनिष्ठा
"	"	५	रवि	१	फर.	उत्तराभाद्रपद
"	"	१३	चन्द्रे	९	"	पुष्यभे
"	"	१४	भौमे	१०	"	पुष्यभे
"	"	१५	बुधे	११	"	आश्लेषा
फाल्गुन	कृ.	७	बुधे	१८	"	स्वाती
"	"	८	शुक्रे	२०	"	अनुराधा
"	"	१०	रवि	२२	"	मूलभे
"	शु.	३	रवि	१	मार्च	रेवती
"	"	११	रवि	८	"	पुनर्वसु
"	"	१५	रवि	१३	"	उत्तराफाल्गुनी
चैत्र	कृ.	४	भौमे	१७	"	स्वाती
"	"	५	बुधे	१८	"	विशाखा
"	"	८	शनि	२१	"	मूल नक्षत्र

कुम्भ महापर्व हरिद्वार सन् १९९८ ई.

आगामी संवत् २०५४ में १४ अप्रैल सन् १९९८ दिन मंगल को मेष संक्रान्ति वाले दिन गुरु ग्रह अपनी कक्षा में घूमते हुए कुम्भ राशि में आ जायेंगे। तब हरिद्वार में महाकुम्भ पर्व होगा और अवन्तिका पुरी (उज्जैन) में अर्धकुम्भ स्नान-दानादि का लाभ प्राणियों को प्राप्त होगा। धर्मशास्त्रों की ऐसी मान्यता है कि जिस दिन कुम्भ राशि में वृहस्पति चल रहा हो और सूर्य का मेष में प्रवेश पुण्यकाल को उस दिन श्री गङ्गाद्वार (हरिद्वार) में स्नान पुण्यार्जन करने वाले बार-बार जन्म-मरण के बन्धन से छूट जाते हैं, यथा--

कुम्भराशिगते जीवे यद्दिने मेषगो रविः। हरिद्वारे कृतं स्नानं पुनरावृत्तिवर्जनम्॥
लोके कुम्भ इतिख्यातो जानीयात्सर्वकामदः। गङ्गायां स्नानमहात्म्यं नालं वक्तु चतुर्मुखः॥

ऐसा जानकर जो व्यक्ति कुम्भ पर्व दिन श्री गङ्गा जी में स्नान करता है वह पुनरावृत्ति के बन्धन से छूट जाता है। पद्मपुराण के सृष्टि खण्ड में तो लिखा है। श्री गङ्गाजी के नाम का स्मरण करने मात्र से पातक, कीर्तन से अतिपातक और दर्शन से भारी-भारी पातक (महापाप) भी नष्ट हो जाते हैं।

गङ्गेति स्मरणादेव क्षयं याति च पातकम्। कीर्तनादति पापानि दर्शनाद्गुरुकल्मषम्॥
स्नानात् पानाच्च जाह्नव्यां पितृणां तर्पणात्तथा। महापातकवृन्दानि क्षयं यान्ति दिने-दिने॥

आगामी वर्ष जनवरी १९९८ के द्वितीय सप्ताह से गुरु ग्रह कुम्भ राशि में चलने लगेगा। इसलिए मकर संक्रान्ति १४ जनवरी, १९९८ से ही हरिद्वार में कुम्भ महापर्व स्नान करने का महत्व प्रारम्भ हो जायेगा। १ फरवरी श्री पंचमी से तो मेला की रौनक देखते ही बनेगी। जाने माने शाही अखाड़ों के साधु-सन्यासी, योगी, जती, तपस्वी अपने-अपने अनुयायियों के सहित पहुँचने लगेंगे।

कुम्भ पर्व के प्रमुख शाही स्नान—

२५ फरवरी '९८	बुधवार	महाशिवरात्रि पर्व प्रथम शाही स्नान
२८ मार्च '९८	शनिवार	चैत्री अमावस्या द्वितीय शाही स्नान
१४ अप्रैल '९८	मंगलवार	मेष संक्रान्ति पुण्यकाल तृतीय शाही स्नान
११ मई '९८	सोमवार	वैशाख की पूर्णिमा अवन्तिका स्नान

कुम्भ के गुरु और पवित्र स्नान के माघ मास में लम्बे अरसे तक पुण्यलाभ प्राप्त करने वाले कुछ ऐसे भी महानुभाव हैं जो तीर्थ में पहले ही पहुँच जाते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो गृहस्थ के झन्झट, व्यवसाय आदि गोरख धन्धे में व्यस्त रहने के कारण उपरोक्त निश्चित तिथियों में कुम्भ स्थल पर नहीं पहुँच पाते हैं उन्हें लाभ प्राप्त करने की इच्छा होती है। उनके लिए लाभार्जन के सामान्य पर्व दिन निम्नलिखित हैं—

१४ जनवरी '९८	बुधवार	मकर संक्रान्ति
२८ जनवरी '९८	बुधवार	मौनी अमावस्या
१ फरवरी '९८	रविवार	वसन्त पंचमी
११ फरवरी '९८	बुधवार	माघी पूर्णिमा
२५ फरवरी '९८	बुधवार	महाशिवरात्रि
१२ मार्च '९८	गुरुवार	फाल्गुनी पूर्णिमा
२८ मार्च '९८	शनिवार	चैत्री अमावस्या
११ अप्रैल '९८	शनिवार	चैत्री पूर्णिमा
१४ अप्रैल '९८	मंगलवार	मेष संक्रान्ति
२८ अप्रैल '९८	मंगलवार	परशुराम जयंती

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सं. २०५४ वि. (८ अप्रैल १९९७ से २८ मार्च १९९८ तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय ज्ञानार्थ कोष्ठक (बन्द कोष्ठकों में घंटा-मिनट लिखे हैं।)

विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु गत वर्षों से देते आ रहे हैं, आशा है सुविज्ञजन लाभान्वित हुए होंगे। इस सन्दर्भ में पाठकों के अनेक पत्र हमारे पास आते रहे हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अपने खट्टे-मीठे अनुभव अवश्य लिखेंगे। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए चौथे, आठवें और बारहवें चन्द्रमा अथवा राशि से सूर्य का परित्याग कर शेष सभी मासों के मुहूर्तों की तारीखें लिख दी गई हैं। साथ ही प्रत्येक राशि के सामने किस तारीख से किस तारीख तक सूर्य की पूजा रहेगी यह भी लिख दिया गया है। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह लगभग सभी बड़ी अवस्था में करते हैं। अतः चतुर्थ, अष्टम और बारहवें स्थानों में चल रहे गोचर में गतिशील गुरु को नेष्ट न मानकर पूजा का मानना चाहिए। इन्हीं स्थानों में स्थित गुरु की पूजा दानादि करायें।

लड़का	लड़कों के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़कियों के लिए पूज्य गुरु
मेष–अप्रैल ३०, मई १, ८, ९, १५, १८, २०, २४, २६, २७, २८, जून १, (१९।३३ उप.), २, १०, (२४।५७ उप.), ११, १५, १७, २०, २२, २३, २४, २६ (२१।४२ तक), २८, २९, जुला. १, २, ८, ११, १५, अग. २२, २५, २६, सित. ४, ६, ७, १० (१८।४२ उप.), ११, १२, १३, अक्टू. ३, ४, ८, १०, ११, १२, १९, २०, २५, २६, नव. ६, ७, ८, १३, जन. २५ (७।७ उप.), ३१ (१४।४४ तक), फर. ५, ६।	१३ अप्रैल से १४ जून तक १६ अग. से १६ सित. तक १६ अक्टू. से १५ नव. तक	**मेष**–अप्रैल ३०, मई १, ८, ९, १५, १८, २०, २४, २६, २७, २८, जून १ (१९।३३ उप.), २, १० (२४।५७ उप.), ११, १५, १७, २०, २२, २३, २४, २६ (२१।४२ तक), २८, २९, जुला. १, २, ८, ११, १५ (१९।५ तक), १८, १९, २०, २१, २६, २९, ३०, अग. ८, १०, २२, २५, २६, सित. ४, ६, ७, १० (१८।४२ उप.), ११, १२, १३, अक्टू. ३, ४, ८, १०, ११, १२, १९, २०, २५, २६, नव. ६, ७, ८, १३, २१ (१७।५५ उप.), २२, २३, २४, २५, दिस. ४, १०, १२, १३, जन. २५, ३१, फर. ५, ६।	
वृष–मई ८, ९, १८, २०, २२, २६, २७, २८, ३०, ३१, जून १ (१९।३३ तक), १० (२४।५७ तक), १५, १७, १८, १९, २२ (१७।३५ उप.), २३, २४, २६, २७, २८ (२५।३७ तक), जुला. १, २, ११, १५, २०, २१, २४, २९, ३०, अग. ८, १०, १२, अक्टू. ३, ४, १०, ११, १२, १४, १९, २०, नव. २, ६, ७, ८, ११, २१ (१७।५५ तक), २४, २५, दिस. ४, ८, १२, १३, जन. २३, ३१, फर. १, ५, ६।	१४ मई से १६ जुलाई तक १६ सित. से १६ अक्टू. तक १५ नव. से १५ दिस. तक १३ जन. से १२ फर. तक	**वृष**–अप्रैल ३०, मई १, ८, ९, १८, २०, २२, २६, २७, २८, ३०, ३१, जून १ (१९।३३ तक), १० (२४।५७ तक), १५, १७, १८, १९, २२ (१७।३५ उप.), २३, २४, २६, २७, २८ (२५।३७ तक), जुला. १, २, ११, १५, १९ (२६।५१ उप.), २०, २१, २४, २९, ३०, अग. ८, १०, १२, २५, २६, सित. ४, ६, ७, ८, ९, १० (१८।४२ तक), १२ (२३।९ उप.), १३ अक्टू. ३, ४, १०, ११, १२, १४, १९, २०, नव. २, ६, ७, ८, ११, २१ (१७।५५ तक), २४, २५, दिस. ४, ८, १२, १३, जन. २३, ३१, फर. १, ५, ६।	
मिथुन–मई १, ८, ९, जून १५ (२५।१५ उप.), १७, १८, १९, २०, २२ (१७।३५ तक), २४, २६, २७, २८, २९, जुला. ८, १५, १८, १९, (२६।५१ तक), २४, २६, ३० (१८।३५ उप.), अग. १०, १२, २२, २६ (२४।११ उप.), सित. ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२ (२३।९ तक), अक्टू. २०, २५, २६, नव. २, ८ (१७।३१ उप.), ११, १३, २१, २२, २३, दिस. ८।१०।	१४ जून से १६ अग. तक १६ अक्टू. से १५ नव. तक १२ फर. से १३ मार्च तक	**मिथुन**–मई १, ८, ९, १५, २०, २२, २४, २८, ३०, ३१, जून १, २, १०, ११, १५ (२५।१५ से), १७, १८, १९, २०, २४ (१९।२४ उप.), २६, २७, २८, २९, जुला. ८, १५, १९ (२६।५१ तक), २४, २६, ३०, अग. १०, १२, २२, २६, सित. ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२ (२३।९ तक), अक्टू. ३, ४, ८, १२, १४, २० (१५।२० उप.), २५, २६, नव. २, ८ (१७।३१ उप.), ११, १३, २१, २२, २३, दिस. ८, १०, जन. २३, २५, ३१, फर. १, ६ (२५।३१ उप.)।	८ जनवरी तक विशेष पूज्य गुरु
कर्क–अप्रैल ३०, मई ८, ९, १५, १८, २२, २४, २६, २७, ३०, ३१, जून १, २, १०, ११, जुला. १८, १९, २०, २१ (२७।३७ तक), २४, २६, २९, ३० (१८।३५ तक), अग. ८, १२, २२, २५, २६, सित. ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, अक्टू. ८, १०, ११, १४, नव. २१, २२, २३, २४, २५, दिस. ४, ८, १०, १२, १३, जन. २३, २५, ३१, फर. १, ५, ६ (२५।२१ तक)।	१६ जुला. से १६ सित. तक १५ नव. से १५ दिस. तक १३ जन. से १२ फर. तक	**कर्क**–अप्रैल ३०, मई ८, ९, १५, १८, २२, २४, २६, २७, ३० (१६।१९ उप.), ३१, जून १, २, १०, ११, १५ (२५।१५ तक), १८, १९, २०, २२, २३, २४ (१९।२४ तक), २६ (२१।४२ उप.), २७, २८, २९, जुला. १, २, ८, ११, १५ (१९।५ उप.), १८, १९, २०, २१ (२७।३७ तक), २४, २६, २९, ३० (१८।३५ तक), अग. ८, १२, २२, २५, २६ (२४।११ तक), सित. ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, अक्टू. ८, १०, ११, १४, १९, २० (१५।२० तक), २५, २६, नव. २, ६, ७, ८ (१७।३१ तक), ११, १३, २१, २२, २३, २४, २५, दिस. ४, ८, १०, १२, १३, जन. २३, २५, ३१, फर. १, ५, ६ (२५।२१ तक)।	८ जनवरी से आगे पूज्य गुरु
सिंह–अप्रैल ३०, मई १, ८, ९, १५, १८, २०, २४, २६, २७, २८, जून १ (१९।३३ उप.), २, १० (२४।५७ उप.), ११, १५, १७, २०, २२, २३, २४, २६ (२१।४२ तक), २८, २९, जुला. १, २, ८, ११, १५ अग. २२, २५, २६, सित. ४, ६, ७, १० (१८।४२ उप.), ११, १२, १३, अक्टू. ३, ४, ८, १०, ११, १२, १९, २०, २५, २६, नव. ६, ७, ८, १३, जन. २५ (७।७ उप.), ३१ (१४।४४ तक), फर. ५, ६।	१३ अप्रै. से १४ मई तक १६ अग. से १६ अक्टू. तक १२ फर. से १३ मार्च तक	**सिंह**–अप्रैल ३०, मई १, ८, ९, १५, १८, २०, २४, २६, २७, २८, जून १ (१९।३३ उप.), २, १० (२४।५७ उप.), ११, १५, १७, २०, २२, २३, २४, २६ (२१।४२ तक), २८, २९, जुला. १, २, ८, ११, १५ (१९।५ तक), १८, १९, २०, २१, २६, २९, ३० अग. ८, १०, २२, २५, २६, सित. ४, ६, ७, १० (१८।४२ उप.), ११, १२, १३, अक्टू. ३, ४, ८, १०, ११, १२, १९, २०, २५, २६, नव. ६, ७, ८, १३, २१ (१७।५५ उप.), २२, २३, २४, २५, दिस. ४, १०, १२, १३, जन. २५, ३१, फर. ५, ६।	
कन्या–मई ८, ९, १८, २०, २२, २६, २७, २८, ३०, ३१, जून १ (१९।३३ तक), १० (२४।५७ तक), १५, १७, १८, १९, २२ (१७।३५ उप.), २३, २४, २६, २७, २८ (२५।३७ तक), जुला. १, २, ११, १५, २०, २१, २४, २९, ३०,	१४ मई से १४ जून तक १६ सित. से १४ नव. तक १३ जन. से १२ फर. तक	**कन्या**–अप्रैल ३०, मई १, ८, ९, १८, २०, २२, २६, २७, २८, ३०, ३१, जून १ (१९।३३ तक), १० (२४।५७ तक), १५, १७, १८, १९, २२ (१७।३५ उप.), २३, २४, २६, २७, २८ (२५।३७ तक), जुला. १, २, ११, १५, १९ (२६।५१ उप.), २०, २१, २४, २९, ३०,	

पंचांग दिवाकर
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लड़का	लड़कों के लिए पूज्य सूर्य	लड़की	लड़कियों के लिए पूज्य गुरु
अग. ८, १०, १२, अक्टू. ३, ४, १०, ११, १२, १४, १९, २०, नव. २, ६, ७, ८, ११, २१ (१७।४५ तक), २४, २५, दिस. ४, ८, १२, १३, जन. २३, ३१, फर. १, ५, ६।		अग. ८, १०, १२, २५, २६, सित. ४, ६, ७, ८, ९, १० (१८।४२ तक), १२ (२३।९ उप.), १३, अक्टू. ३, ४, १०, ११, १२, १४, १९, २०, नव. २, ६, ७, ८, ११, २१ (१७।४५ तक), २४, २५, दिस. ४, ८, १२, १३, जन. २३, ३१ फर. १, ५, ६।	
तुला–मई १, ८, ९. जून १५ (२५।१५ उप.), १७, १८, १९, २०, २२ (१७।३५ तक), २४, २६, २७, २८, २९, जुला. ८, १५, १८, १९ (२६।५१ तक), २४, २६, ३० (१८।३५ उप.), अग. १०, १२, २२, २६ (२४।११ उप.), सित. ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२ (२३।९ तक), अक्टू. २०, २५, २६, नव. २, ८ (१७।३१ उप.), ११, १३, २१, २२, २३, दिस. ८, १०।	१३ अप्रैल से १४ मई तक १४ जून से १६ जुला. तक १६ अक्टू. से १४ दिस. तक १२ फर. से १३ मार्च तक	**तुला**–मई १, ८, ९, १५, २०, २२, २४, २८, ३०, ३१, जून १, २, १०, ११, १५ (२५।१५ उप.), १७, १८, १९, २०, २४ (१९।२४ उप.), २६, २७, २८, २९, जुला. ८, १५, १८, १९ (२६।५१ तक), २४, २६, ३०, अग. १०, १२, २२, २६, सित. ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२ (२३।९ तक), अक्टू. ३, ४, ८, १२, १४, २० (१५।२० उप.), २५, २६, नव. २, ८ (१७।३१ उप.), ११, १३, २१, २२, २३, दिस. ८, १०, जन. २३, २५, ३१, फर. १, ६ (२५।३१ उप.)।	८ जनवरी तक विशेष पूज्य गुरु
वृश्चिक–अप्रैल ३०, मई ८, ९, १५, १८, २२, २४, २६, २७, ३०, ३१, जून १, २, १०, ११, जुला.-१८, १९, २०, २१ (२७।३७ तक), २४, २६, २९, ३० (१८।३५ तक), अग. ८, १२, २२, २५, २६, सित. ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, अक्टू. ८, १०, ११, १४, नव. २१, २२, २३, २४, २५, दिस. ४, ८, १०, १२, १३, जन. २३, २५, ३१, फर. १, ५, ६ (२५।२१ तक)।	१४ मई से १४ जून तक १६ जुला. से १६ अग. तक १५ नव. से १४ दिस. तक	**वृश्चिक**–अप्रैल ३०, मई ८, ९, १५, १८, २२, २४, २६, २७, ३० (१६।१९ उप.), ३१, जून १, २, १०, ११, १५ (२५।१५ तक), १८, १९, २०, २२, २३, २४ (१९।२४ तक), २६ (२१।४२ उप.), २७, २८, २९, जुला.-१, २, ८, ११, १५ (१९।५ उप.), १८, १९, २०, २१ (२७।३७ तक), २४, २६, २९, ३० (१८।३५ तक), अग. ८, १२, २२, २५, २६ (२४।११ तक), सित. ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, अक्टू. ८, १०, ११, १४, १९, २० (१५।२० तक), २५, २६, नव. २, ६, ७, ८ (१७।३१ तक), ११, १३, २१, २२, २३, २४, २५, दिस. ४, ८, १०, १२, १३, जन. २३, २५, ३१, फर. १, ५, ६(२५।२१ तक)।	८ जनवरी से आगे पूज्य गुरु
धनु–अप्रैल ३०, मई १, ८, ९, १५, १८, २०, २४, २६, २७, २८, जून १ (१९।३३ उप.), २, १० (२४।०७ उप.), ११, १५, १७, २०, २२, २३, २४, २६ (२१।४२ तक), २८, २९, जुला. १, २, ८, ११, १५, अग. २२, २५, २६, सित. ४, ६, ७, १० (१८।४२ उप.), ११, १२, १३, अक्टू. ३, ४, ८, १०, ११, १२, १९, २०, २५, २६, नव. ६, ७, ८, १३, जन. २५ (७।७ उप.), ३१ (१४।४४ तक), फर. ५, ६।	१३ अप्रैल से १४ मई तक १४ जून से १६ जुला. तक १६ अग. से १६ सित. तक १३ जन. से १२ फर. तक	**धनु**–अप्रैल ३०, मई १, ८, ९, १५, १८, २०, २४, २६, २७, २८ जून १ (१९।३३उप.), २, १० (२४।०७ उप.), ११, १५, १७, २०, २२, २३, २४, २६ (२१।४२ तक), २८, २९, जुला. १, २, ८, ११, १५ (१९।५ तक), १८, १९, २०, २१, २६, २९, ३०, अग. ८, १०, २२, २५, २६, सित. ४, ६, ७, १० (१८।४२ उप.), ११, १२, १३, अक्टू. ३, ४, ८, १०, ११, १२, १९, २०, २६, नव. ६, ७, ८, १३, २१ (१७।४५ उप.). २२, २३, २४, २५, दिस. ४, १०, १२, १३, जन. २५, ३१, फर. ५, ६।	
मकर–मई ८, ९, १८, २०, २२, २६, २७, २८, ३०, ३१, जून (१९।३३ तक), १० (२४।०७ तक), १५, १७, १८, १९, २२ (१७।३५ उप.), २३, २४, २६, २७, २८ (२५।३७ तक), जुला. ३१, २, ११, १५, २०, २१, २४, २९, ३०, अग. ८, १०, १२, अक्टू. ३, ४, १०, ११, १२, १४, १९, २०, नव. २, ६, ७, ८, ११, २१ (१७।४५ तक) २४, २५, दिस. ४, ८, १२, १३, जन. २३, ३१, फर. १, ५, ६।	१४ मई से १४ जून तक १६ जुला. से १६ अग. तक १६ सित. से १५ अक्टू. तक १३ जन. से १३ मार्च तक	**मकर**–अप्रैल ३०, मई १, ८, ९, १८, २०, २२, २६, २७, २८, ३०, ३१, जून १ (१९।३३ तक), १० (२४।०७ तक), १५, १७, १८, १९, २२ (१७।३५ उप.), २३, २४, २६, २७, २८ (२५।३७ तक), जुला. १, २, ११, १५, १९ (२६।५१ उप.), २०, २१, २४, २९, ३०, अग. ८, १०, १२, २५, २६, सित. ४, ६, ७, ८, ९, १० (१८।४२ तक), १२ (२३।९ उप.) १३, अक्टू. ३, ४, १०, ११, १२, १४, १९, २०, नव. २, ६, ७, ८, ११, २१ (१७।४५ तक), २४, २५, दिस. ४, ८, १२, १३, जन. २३, ३१, फर. १, ५, ६।	
कुम्भ–मई १, ८, ९, जून १५ (२५।१५ उप.), १७, १८, १९, २०, २२ (१७।३५ तक), २४, २६, २७, २८, २९, जुला. ८, १५, १८, १९ (२६।५१ तक), २४, २६, ३० (१८।३५ उप.), अग. १०, १२, २२, २६ (२४।११ उप.), सित. ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२ (२३।९ तक), अक्टू. २०, २५, २६, नव. २, ८ (१७।३१ उप.), ११, १३, २१, २२, २३, दिस. ८, १०।	१४ जून से १६ जुला. तक १६ अग. से १६ सित. तक १६ अक्टू. से १५ नव. तक १२ फर. से १३ मार्च तक	**कुम्भ**–मई १, ८, ९, १५, २०, २२, २४, २८, ३०, ३१, जून १, २, १०, ११, १५, (२५।१५ उप.), १७, १८, १९, २०, २४ (१९।२४ उप.), २६, २७, २८, २९, जुला. ८, १५, १८, १९ (२६।५१ तक), २४, २६, ३०, अग. १०, १२, २२, २६, सित. ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२ (२३।९ तक), अक्टू. ३, ४, ८, १२, १४, २० (१५।२० उप.), २५, २६, नव. २, ८ (१७।३१ उप.), ११, १३, २१, २२, २३, दिस. ८, १०, जन. २३, २५, ३१, फर. १, ६ (२५।३१ उप.)।	८ जनवरी तक विशेष पूज्य गुरु
मीन–अप्रैल ३०, मई ८, ९, १५, १८, २२, २४, २६, २७, ३०, ३१, जून १, २, १०, ११, जुला. १८, १९, २०, २१ (२७।३७ तक), २४, २६, २९, ३० (१८।३५ तक), अग. ८, १२, २२, २५, २६, सित. ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, अक्टू. ८, १०, ११, १४, नवम्बर २१, २२, २३, २४, २५, दिस. ४, ८, १०, १२, १३, जन. २३, २५, ३१, फर. १, ५, ६ (२५।२१ तक)।	१३ अप्रैल से १४ मई तक १६ जुला. से १६ अग. तक १६ सित. से १६ अक्टू. तक १५ नव. से १४ दिस. तक १२ फर. से १३ मार्च तक	**मीन**–अप्रैल ३०, मई ८, ९, १५, १८, २२, २४, २६, २७, ३० (१६।१९ उप.), ३१, जून १, २, १०, ११, १५ (२५।१५ तक), १८, १९, २०, २२, २३, २४ (१९।२४ तक), २६, (२१।४२ उप.), २७, २८, २९, जुला. १, २, ८, ११, १५ (१९।५ उप.), १८, १९, २०, २१ (२७।३७ तक), २४, २६, २९, ३० (१८।३५ तक), अग. ८, १२, २२, २५, २६ (२४।११ तक), सित. ४, ८, ९, १०, ११, १२, १३, अक्टू. ८, १०, ११, १४, १९, २० (१५।२० तक), २५, २६, नवम्बर २, ६, ७, ८ (१७।३१ तक), ११, १३, २१, २२, २३, २४, २५, दिस. ४, ८, १०, १२, १३, जन. २३, २५, ३१, फर. १, ५, ६ (२५।२१ तक)।	८ जनवरी से आगे पूज्य गुरु

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार सम्वत् २०५४ वि.

सूर्य नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
१०	अप्रैल	रेवती	४	
१३	"	अश्विनी	१	मेष
१७	"	"	२	
२०	"	"	३	
२३	"	"	४	
२७	"	भरणी	१	
३०	"	"	२	
४	मई	"	३	
८	"	"	४	
११	"	कृत्तिका	१	
१४	"	"	२	वृष
१८	"	"	३	
२१	"	"	४	
२५	"	रोहिणी	१	
२८	"	"	२	
३१	"	"	३	
४	जून	"	४	
७	"	मृगशिर	१	
११	"	"	२	
१४	"	"	३	मिथु.
१८	"	"	४	
२१	"	आर्द्रा	१	
२५	"	"	२	
२९	"	"	३	
२	जुलाई	"	४	
५	"	पुनर्वसु	१	
९	"	"	२	
१२	"	"	३	
१६	"	"	४	कर्क
१९	"	पुष्य	१	
२३	"	"	२	
२६	"	"	३	
३०	"	"	४	
२	अग.	श्लेषा	१	
६	"	"	२	

सूर्य नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
९	अग.	श्लेषा	३	
१३	"	"	४	
१६	"	मघा	१	सिंह
१९	"	"	२	
२३	"	"	३	
२७	"	"	४	
३०	"	पू.फा.	१	
३	सित.	"	२	
६	"	"	३	
९	"	"	४	
१३	"	उफा.	१	
१६	"	"	२	कन्या
२०	"	"	३	
२३	"	"	४	
२६	"	हस्त	१	
३०	"	"	२	
३	अक्तू.	"	३	
७	"	"	४	
१०	"	चित्रा	१	
१३	"	"	२	
१७	"	"	३	तुला
२०	"	"	४	
२३	"	स्वाती	१	
२७	"	"	२	
३०	"	"	३	
२	नव.	"	४	
६	"	विशाखा	१	
९	"	"	२	
१२	"	"	३	
१६	"	"	४	वृश्चि.
१९	"	अनुराधा	१	
२२	"	"	२	
२६	"	"	३	
२९	"	"	४	
२	दिस.	ज्येष्ठा	१	

सूर्य नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
५	दिस.	ज्येष्ठा	२	
९	"	"	३	
१२	"	"	४	
१५	"	मूल	१	धनु
१९	"	"	२	
२२	"	"	३	
२५	"	"	४	
२८	"	पूषा.	१	
(सन १९९८ ई.)				
१	जन.	पूषा.	२	
४	"	"	३	
७	"	"	४	
१०	"	उषा.	१	
१४	"	"	२	मकर
१७	"	"	३	
२०	"	"	४	
२०	"	अभि.प्र.	१	
२४	"	श्रवण	१	
२४	"	अभि.नि.		
२७	"	"	२	
३०	"	"	३	
२	फर.	"	४	
६	"	धनिष्ठा	१	
९	"	"	२	
१३	"	"	३	कुम्भ
१६	"	"	४	
१९	"	शतभिषा	१	
२२	"	"	२	
२६	"	"	३	
१	मार्च	"	४	
४	"	पूभा.	१	
८	"	"	२	
११	"	"	३	
१४	"	"	४	मीन
१७	"	उभा.	१	

सूर्य नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
२१	मार्च	उभा.	२	
२४	"	"	३	
२८	"	"	४	

मंगल नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
३	अप्रैल	पूफा.	४	
२०	"	"	३	
२८	"	"		मार्गी
६	मई	"	४	
२३	"	उफा.	१	
३	जून	"	२	कन्या
१२	"	"	३	
२०	"	"	४	
२७	"	हस्त	१	
४	जुलाई	"	२	
११	"	"	३	
१७	"	"	४	
२३	"	चित्रा	१	
२९	"	"	२	
४	अगस्त	"	३	तुला
९	"	"	४	
१५	"	स्वाती	१	
२०	"	"	२	
२५	"	"	३	
३१	"	"	४	
५	सित.	विशाखा	१	
१०	"	"	२	
१५	"	"	३	
१९	"	"	४	वृश्चि.
२४	"	अनुराधा.	१	
२९	"	"	२	
४	अक्तू.	"	३	
९	"	"	४	
१३	"	ज्येष्ठा	१	
१८	"	"	२	

मंगल नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
२२	अक्तू.	ज्येष्ठा	३	
२७	"	"	४	
३१	"	मूल	१	धनु
५	नव.	"	२	
९	"	"	३	
१४	"	"	४	
१८	"	पूषा.	१	
२३	"	"	२	
२७	"	"	३	
१	दिस.	"	४	
६	"	उषा.	१	
१०	"	"	२	मकर
१४	"	"	३	
१८	"	"	४	
२३	"	श्रवण	१	
२७	"	"	२	
३१	"	"	३	
(सन १९९८ ई.)				
४	जन.	श्रवण	४	
९	"	धनिष्ठा	१	
१३	"	"	२	
१७	"	"	३	कुंभ
२१	"	"	४	
२६	"	शतभिषा.	१	
३०	"	"	२	
३	फर.	"	३	
७	"	"	४	
११	"	पूभा.	१	
१६	"	"	२	
२०	"	"	३	
२४	"	"	४	मीन
१	मार्च	उभा.	१	
५	"	"	२	
९	"	"	३	
१४	"	"	४	

मंगल नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
१८	मार्च	रेवती	१	
२२	"	"	२	
२७	"	"	३	
३१	"	"	४	

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
८	अप्रैल	भरणी	१	
१५	"			वक्री
२२	"	अश्विनी	४	
२७	"	"	३	
३	मई	"	२	
९	"			मार्गी
१२	"	"	३	
१९	"	"	४	
२३	"	भरणी	१	
२६	"	"	२	
२९	"	"	३	
३१	"	"	४	
२	जून	कृत्तिका	१	
५	"	"	२	वृष
७	"	"	३	
९	"	"	४	
११	"	रोहिणी	१	
१२	"	"	२	
१४	"	"	३	
१६	"	"	४	
१७	"	मृगशिर	१	
१९	"	"	२	
२१	"	"	३	मिथुन
२२	"	"	४	
२४	"	आर्द्रा	१	
२५	"	"	२	
२७	"	"	३	
२८	"	"	४	
३०	"	पुनर्वसु	१	

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
१	जुलाई	पुनर्वसु	२	
३	"	"	३	
५	"	"	४	कर्क
६	"	पुष्य	१	
८	"	"	२	
१०	"	"	३	
१२	"	"	४	
१४	"	श्लेषा.	१	
१६	"	"	२	
१८	"	"	३	
२०	"	"	४	
२२	"	मघा	१	सिंह
२४	"	"	२	
२७	"	"	३	
३०	"	"	४	
२	अग.	पूफा.	१	
५	"	"	२	
१०	"	"	३	
१८	"	"		वक्री
२४	"	"	२	
२९	"	"	१	
२	सित.	मघा.	४	
६	"	"	३	
१०	"	"		मार्गी
१३	"	"	४	
१७	"	पूफा.	१	
२०	"	"	२	
२२	"	"	३	
२४	"	"	४	
२६	"	उफा.	१	
२८	"	"	२	कन्या
३०	"	"	३	
२	अक्तू.	"	४	
४	"	हस्त	१	
६	"	"	२	
८	"	"	३	

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद	
१०	अक्तू.	हस्त	४	
११	"	चित्रा	१	
१३	"	"	२	
१५	"	"	३	तुला
१७	"	"	४	
१९	"	स्वाती	१	
२१	"	"	२	
२३	"	"	३	
२६	"	"	४	
२८	"	विशाखा	१	
३०	"	"	२	
१	नव.	"	३	
३	"	"	४	वृश्चि.
५	"	अनुराधा	१	
८	"	"	२	
१०	"	"	३	
१२	"	"	४	
१५	"	ज्येष्ठा	१	
१७	"	"	२	
१९	"	"	३	
२२	"	"	४	
२५	"	मूल	१	धनु
२८	"	"	२	
१	दिस.	"	३	
८	"	"		वक्री
१२	"	"	२	
१६	"	"	१	
१८	"	ज्येष्ठा	४	वृश्चि,
२१	"	"	३	
२६	"	"	२	
२८	"	"		मार्गी
२९	"	"	३	
(सन १९९८ ई.)				
३	जन.	ज्येष्ठा	४	
७	"	मूल	१	धनु

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार सम्वत् २०५४ वि.

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१०	जन.	मूल	२
१३	"	"	३
१५	"	"	४
१८	"	पूषा.	१
२०	"	"	२
२३	"	"	३
२५	"	"	४
२७	"	उषा.	१
२९	"	"	२ मकर
३१	"	"	३
२	फर	"	४
५	"	श्रवण	१
७	"	"	२
९	"	"	३
११	"	"	४
१३	"	धनिष्ठा	१
१५	"	"	२
१६	"	"	३ कुम्भ
१८	"	"	४
२०	"	शतभिषा	१
२२	"	"	२
२४	"	"	३
२५	"	"	४
२७	"	पूभा.	१
१	मार्च	"	२
३	"	"	३
५	"	"	४ मीन
७	"	उभा.	१
८	"	"	२
१०	"	"	३
१२	"	"	४
१४	"	रेवती	१
१६	"	"	२
१९	"	"	३
२४	"	"	४
२८	"	"	" वक्री

गुरु नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१३	अप्रैल	धनिष्ठा	१
१०	मई	"	२
११	जुन	वक्री	
१०	जुलाई	"	१
८	अग.	श्रवण	४
५	सित.	"	३
९	अक्तू.	मार्गी	
९	नव.	"	४
४	दिस.	धनिष्ठा	१
२३	"	"	२
(सन् १९९८ ई.)			
८	जन.	धनिष्ठा	३ कुम्भ
२३	"	"	४
६	फर.	शतभिषा	१
२०	"	"	२
६	मार्च	"	३
२०	"	"	४

शुक्र नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
११	अप्रैल	अश्विनी	१ मेष
१४	"	"	२
१६	"	"	३
१९	"	"	४
२२	"	भरणी	१
२४	"	"	२
२७	"	"	३
३०	"	"	४
३	मई	कृतिका	१
५	"	"	२ वृष
८	"	"	३
११	"	"	४
१३	"	रोहिणी	१
१६	"	"	२
१९	"	"	३
२२	"	"	४

शुक्र नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२४	मई	मृगशिर	१
२७	"	"	२
३०	"	"	३ मिथुन
१	जून	"	४
४	"	आर्द्रा	१
७	"	"	२
१०	"	"	३
१२	"	"	४
१५	"	पुनर्वसु	१
१८	"	"	२
२१	"	"	३
२३	"	"	४ कर्क
२६	"	पुष्य	१
२९	"	"	२
१	जुलाई	"	३
४	"	"	४
७	"	श्लेषा	१
१०	"	"	२
१३	"	"	३
१५	"	"	४
१८	"	मघा	१ सिंह
२१	"	"	२
२३	"	"	३
२६	"	"	४
२९	"	पूफा.	१
१	अग.	"	२
४	"	"	३
६	"	"	४
९	"	उफा.	१
१२	"	"	२ कन्या
१५	"	"	३
१८	"	"	४
२०	"	हस्त	१
२३	"	"	२
२६	"	"	३
२९	"	"	४
१	सित.	चित्रा	१

शुक्र नक्षत्र चार

	मास	नक्षत्र	पाद
४	सित.	चित्रा	२
६	"	"	३ तुला
९	"	"	४
१२	"	स्वाती	१
१५	"	"	२
१८	"	"	३
२१	"	"	४
२४	"	विशाखा	१
२७	"	"	२
२९	"	"	३
२	अक्तू.	"	४ वृश्चि.
५	"	अनुराधा	१
८	"	"	२
११	"	"	३
१४	"	"	४
१७	"	ज्येष्ठा	१
२०	"	"	२
२४	"	"	३
२७	"	"	४
३०	"	मूल	१ धनु
[illegible]	नव.	"	२
५	"	"	३
९	"	"	४
१२	"	पूषा.	१
१६	"	"	२
१९	"	"	३
२३	"	"	४
२७	"	उषा.	१
२	दिस.	"	२ मकर
७	"	"	३
१३	"	"	४
२४	"	श्रवण	१
२७	"	"	वक्री
२९	"	उषा.	४
(सन १९९८ ई.)			
८	जन.	उषा.	३
१४	"	"	२

शुक्र नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२०	जन.	उषा.	१ धनु
२७	"	पूषा.	४
६	फर.	मार्गी	
१६	"	उषा.	१
२३	"	"	२ मकर
२८	"	"	३
५	मार्च	"	४
९	"	श्रवण	१
१३	"	"	२
१७	"	"	३
२०	"	"	४
२४	"	धनिष्ठा	१
२७	"	"	२
३१	"	"	३ कुम्भ

शनि नक्षत्र चार

१	अप्रैल	रेवती	१
२९	"	"	२
३०	मई	"	३
२	अग.	वक्री	
७	अक्तू.	"	२
२८	नव.	"	१
१७	दिस.	मार्गी	
(सन १९९८ ई.)			
३	जन.	"	२
२०	"	"	३
२१	मार्च	"	४

राहु नक्षत्र चार

२२	अप्रैल	उफा.	२
२४	जून	"	१ सिंह
२६	अग.	पूफा.	४
२८	अक्तू.	"	३
३०	दिस.	"	२
(सन १९९८ ई.)			
२	मार्च	"	१

केतु नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२२	अप्रैल	पूभा.	४
२४	जून	"	३ कुम्भ
२६	अग.	"	२
२८	अक्तू.	"	१
३०	दिस.	शत.	४
(सन १९९८ ई.)			
२	मार्च	"	३

हर्शल नक्षत्र चार

१४	मई	वक्री	
१८	जुलाई	श्रवण	१
१६	अक्तू.	मार्गी	
(सन १९९८ ई.)			
१	जन.	"	२
१	मार्च	"	३

नेपच्यून नक्षत्र चार

३	मई	वक्री	
१०	अक्तू.	मार्गी	
(सन १९९८ ई.)			
११	फर	उषा.	४

प्लूटो नक्षत्र चार

९	जून	अनु.	२
१४	अग.		मार्गी
१३	अक्तू.	"	३
(सन १९९८ ई.)			
१२	जन.	अनु.	४
११	मार्च	वक्री	

भौम उदयास्त

(सन १९९८ ई.)		
२८	फरवरी	अस्त (प.)

बुधोदयास्त

ता.	मास	
१६	अप्रैल	अस्त (प.)
३	मई	उदय (पू.)
१४	जून	अस्त (पू.)
७	जुलाई	उदय (प.)
२४	अगस्त	अस्त (प.)
८	सितम्बर	उदय (पू.)
२७	"	अस्त (पू.)
४	नवम्बर	उदय (प.)
११	दिसम्बर	अस्त (प.)
२३	"	उदय (पू.)
(सन १९९८ ई.)		
३	फरवरी	अस्त (पू.)
२	मार्च	उदय (प.)

बुध वक्री-मार्गी

१५	अप्रैल	वक्री
९	मई	मार्गी
१८	अगस्त	वक्री
१०	सितम्बर	मार्गी
८	दिसम्बर	वक्री
२८	"	मार्गी
(सन १९९८ ई.)		
२८	मार्च	वक्री

गुरु उदयास्त

१३	फरवरी	अस्त (प.)
१५	मार्च	उदय (पू.)

गुरु वक्री-मार्गी

११	जून	वक्री
९	अक्तूबर	मार्गी

शुक्र उदयास्त

ता.	मास	
२७	अप्रैल	उदय (प.)
(सन १९९८ ई.)		
१३	जनवरी	अस्त (प.)
२०	"	उदय (पू.)

शुक्र वक्री-मार्गी

२७	दिसम्बर	वक्री
(सन १९९८ ई.)		
६	फरवरी	मार्गी

शनि उदयास्त

१७	अप्रैल	उदय (पू.)
(सन १९९८ ई.)		
२७	मार्च	अस्त (प.)

शनि वक्री-मार्गी

२	अगस्त	वक्री
१७	दिसम्बर	मार्गी

हर्शल वक्री-मार्गी

१४	मई	वक्री
१६	अक्तूबर	मार्गी

नेपच्यून वक्री-मार्गी

३	मई	वक्री
१०	अक्तूबर	मार्गी

प्लूटो वक्री-मार्गी

१४	अगस्त	मार्गी
(सन १९९८ ई.)		
११	मार्च	वक्री

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वि.सं. २०५४ के सर्वार्थ सिद्धि अमृत सिद्धि तथा रविपुष्य, गुरुपुष्यामृत योग

अंग्रेजी तारीखों में भा.स्टैं.टा. के अनुसार आरम्भ और समाप्ति काल सहित दिये गये हैं। इस समय में कार्यारम्भ सिद्धिदायक होता है।

ता.	मा.	घं.मि.	से	ता.	मा.	घं.मि.	तक
८	अप्रैल	६।११	"	८	अप्रैल	२४।५०	"
१४	"	२७।१४	"	१५	"	११।३३	"
१७	"	६।००	"	१७	"	१६।२२	"
१८	"	१२।१४	"	१८	"	१८।५५	"
२०	"	५।५७	"	२१	"	५।५५	"
२५	"	५।५५	"	२५	"	२४।१७	"
२७	"	५।४९	"	२७	"	२३।३८	"
१	मई	१६।५१	"	२	मई	५।४४	"
२	"	१४।२८	"	३	"	५।४३	"
४	"	५।४२	"	४	"	१३।५८	"
६	"	५।४०	"	६	"	१०।४१	"
७	"	९।२६	"	८	"	५।३८	"
१२	"	५।३५	"	१२	"	२५।१४	"
१३	"	५।३५	"	१४	"	५।३४	"
१८	"	१२।३६	"	१९	"	५।३१	"
२०	"	५।३१	"	२०	"	१४।५४	"
२२	"	७।११	"	२३	"	५।२९	"
२८	"	५।२८	"	२८	"	२६।२७	"
३	जून	१७।४६	"	४	जून	५।२६	"
४	"	१७।१६	"	५	"	५।२५	"
६	"	५।२५	"	६	"	१२।११	"
८	"	२०।१	"	९	"	२२।१	"
१०	"	५।२५	"	१०	"	२४।४७	"
१३	"	५।२५	"	१३	"	६।५१	"
१५	"	५।२५	"	१५	"	१२।१७	"
१८	"	१५।५७	"	१९	"	१५।४५	"
२२	"	१२।२	"	२३	"	५।२६	"
२९	"	५।२८	"	२९	"	२४।२९	"
१	जुला.	५।२९	"	२	जुला.	२४।२०	"
६	"	५।३१	"	७	"	५।५०	"
८	"	५।३१	"	८	"	८।२६	"
१०	"	५।३२	"	१०	"	९।१९	"
११	जुला.	५।३२	"	११	जुला.	११।५३	"
१६	"	५।३५	"	१६	"	२५।२१	"
१९	"	५।३७	"	१९	"	११।४४	"
२०	"	५।३७	"	२०	"	१९।१०	"
२१	"	५।३७	"	२१	"	१६।४६	"
२४	"	५।४१	"	२४	"	१७।१९	"
२५	"	८।८	"	२६	"	५।४२	"
३०	"	९।३७	"	३१	"	५।४५	"
१	अग.	८।३३	"	२	अग.	१२।६	"
३	"	५।४७	"	३	"	१२।४२	"
५	"	१८।१७	"	६	"	५।४९	"
१३	"	५।५४	"	१३	"	१०।३२	"
२१	"	१६।१७	"	२२	"	१४।१२	"
२५	"	११।२२	"	२६	"	६।१	"
२७	"	६।२	"	२७	"	१२।४०	"
२८	"	१४।२५	"	२९	"	१६।१६	"
६	सितं.	६।७	"	६	सितं.	१५।१८	"
८	"	१६।५४	"	९	"	६।८	"
१८	"	६।१५	"	१९	"	२१।४०	"
२२	"	६।१७	"	२३	"	६।१८	"
२५	"	६।१९	"	२६	"	६।१९	"
२६	"	९।५६	"	२६	"	२४।४०	"
१	अक्तू.	१२।४८	"	२	अक्तू.	६।२२	"
४	"	६।२४	"	४	"	२०।४६	"
६	"	६।२५	"	६	"	२४।१३	"
१४	"	१६।२२	"	१५	"	६।२२	"
१६	"	६।३२	"	१७	"	८।२०	"
२०	"	६।३६	"	२०	"	२७।१२	"
२३	"	६।३७	"	२४	"	६।५९	"
२८	"	९।२	"	२९	"	६।४२	"
२९	"	११।३३	"	२९	"	२२।१२	"
३०	"	१३।४३	"	३१	"	६।४४	"
३१	"	१५।३०	"	१	नवं.	६।४५	"
७	नवं.	६।५०	"	८	"	६।५०	"
११	"	७।२५	"	११	"	२३।२८	"
१३	"	६।५५	"	१३	"	१८।५७	"
१५	"	२५।१४	"	१६	"	६।५७	"
१७	नवं.	६।५८	"	१७	नवं.	१३।००	"
२०	"	७।००	"	२०	"	१५।२८	"
२३	"	२२।३९	"	२४	"	७।४	"
२६	"	७।६	"	२६	"	२८।४५	"
४	दिसं.	७।१२	"	४	दिसं.	२७।५१	"
५	"	७।१२	"	५	"	२६।१९	"
९	"	२९।७	"	१०	"	७।१६	"
१३	"	७।१९	"	१३	"	२३।३३	"
१६	"	७।२१	"	१७	"	६।३५	"
१८	"	७।३०	"	१९	"	७।२४	"
२१	"	७।४३	"	२२	"	७।२६	"
२६	"	२०।१२	"	२७	"	७।२८	"
२८	"	२१।१६	"	२९	"	७।२८	"
४	जन.	१३।२६	"	५	जन.	७।२९	"
६	"	१०।५०	"	७	"	७।२९	"
१६	"	१३।१६	"	१७	"	७।२८	"
१८	"	७।२८	"	१९	"	७।२८	"
२०	"	११।५८	"	२१	"	७।२७	"
२३	"	७।२६	"	२३	"	३०।४१	"
२५	"	७।२५	"	२६	"	६।५०	"
१	फर.	७।२२	"	१	फर.	१८।२७	"
३	"	७।२१	"	३	"	१५।१०	"
९	"	१५।१	"	१०	"	७।१७	"
१५	"	७।१२	"	१५	"	२९।४०	"
१८	"	७।८	"	१८	"	११।३१	"
१९	"	१३।५१	"	२०	"	१५।३६	"
२२	"	७।५	"	२२	"	१६।५०	"
२६	"	७।१	"	२६	"	२२।५५	"
२७	"	७।००	"	२७	"	१९।३१	"
४	मार्च	६।५२	"	४	मार्च	२६।४९	"
८	"	२०।५३	"	९	"	२२।४१	"
१०	"	६।४४	"	१०	"	२४।५३	"
१२	"	७।४२	"	१३	"	६।४१	"
१५	"	६।३८	"	१५	"	१२।१९	"
१८	"	२०।४८	"	१९	"	२२।५८	"
२२	"	२५।४२	"	२३	"	६।२८	"
२५	"	६।२६	"	२५	"	१९।१	"

अमृत सिद्धि योग

ता.	मा.	घं.मि.	से	ता.	मा.	घं.मि.	तक
८	अप्रैल	१३।४९	से	८	अप्रैल	२४।५०	तक
२०	"	१७।४१	"	२१	"	५।५४	"
६	मई	५।४१	"	६	मई	१०।४१	"
१८	"	५।३४	"	१८	"	२७।१४	"
२०	"	५।३२	"	२०	"	१४।५४	"
१५	जून	५।२७	"	१५	जून	१२।१७	"
१८	"	१५।५७	"	१९	"	५।२८	"
१६	जुला.	५।३८	"	१६	जुला.	२५।२१	"
२५	"	८।८	"	२६	"	५।४३	"
२२	अग.	५।२८	"	२२	अग.	१४।१२	"
२२	सितं.	१८।३६	"	२२	सितं.	६।१४	"
२५	"	२२।११	"	२६	"	६।१७	"
२०	अक्तू.	६।३०	"	२०	अक्तू.	२७।१२	"
२३	"	६।३२	"	२४	"	६।३२	"
१५	नवं.	१५।१४	"	१६	नवं.	६।४९	"
१७	"	६।४९	"	१७	"	१३।१०	"
२०	"	६।५२	"	२०	"	१५।२८	"
१३	दिसं.	७।७	"	१३	दिसं.	२३।३३	"
६	जन.	१०।५०	"	७	जन.	७।२८	"
१८	"	१९।३	"	१९	"	७।२९	"
१५	फर.	७।३	"	१५	फर.	२९।४०	"
१५	मार्च	६।३५	"	१५	"	१२।१९	"

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग

तिथि, वार, नक्षत्र संगोगादि से बनने वाले द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग अपने नामानुसार मृत्यु, विनाश और वृद्धि में द्विगुणित-त्रिगुणित फल दिया करते हैं। व्यापार में लगाया या बैंक आदि में जमा किया धन उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता रहता है।

द्विपुष्कर योग

ता.	मा.	घं.मि.	से	ता.	मा.	घं.मि.	तक
१८	मई	२७।१४	से	१९	मई	५।३१	तक
२७	"	२८।३६	"	२८	"	५।२८	"
१०	अग.	५।५२	"	१०	अग.	६।१९	"
२३	सितं.	६।१८	"	२३	सितं.	७।७	"
१६	नवं.	१३।४३	"	१६	नवं.	१५।१९	"
२५	"	२९।४१	"	२६	"	७।०६	"

ता.	मा.	घं.मि.	से	ता.	मा.	घं.मि.	तक
६	दिसं.	७।१३	"	६	दिसं.	१०।२८	"
२०	जन.	७।२८	"	२०	जन.	११।५७	"
१५	मार्च	१२।१९	"	१५	मार्च	१५।१४	"
२४	"	२४।१	"	२५	"	६।२५	"

त्रिपुष्कर योग

ता.	मा.	घं.मि.	से	ता.	मा.	घं.मि.	तक
१९	अप्रैल	१५।२	से	१९	अप्रैल	२१।२१	तक
२९	"	५।४७	"	२९	"	२१।५३	"
३	मई	११।५७	"	३	मई	१५।४६	"
१७	जून	१५।२७	"	१७	जून	२८।२२	"
२२	"	१२।२	"	२२	"	१९।५३	"
१	जुला.	५।२९	"	१	जुला.	२४।२	"
१९	अग.	२१।२८	"	२०	अग.	५।५७	"
२४	"	११।४२	"	२४	"	२०।३०	"
१३	सितं.	१३।५५	"	१३	सितं.	१५।५८	"
२१	अक्तू.	२७।४७	"	२२	अक्तू.	६।३७	"
२८	"	६।४१	"	२८	"	९।२	"
१	नवं.	१६।४९	"	१	नवं.	२८।४४	"
२१	दिसं.	७।४३	"	२१	दिसं.	१३।५८	"
३०	"	२१।७	"	३१	"	७।२८	"
४	जन.	१०।५१	"	४	जन.	१३।२६	"
२४	फर.	७।३	"	२४	फर.	७।२४	"
३	मार्च	२८।२७	"	४	मार्च	६।५२	"

रवि पुष्य, गुरु पुष्यामृत योग

केवल विवाह को छोड़कर अन्य सभी कार्यों में सिद्धि दायक हैं।

रवि पुष्य यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र सिद्धिदायक है। नग धारण, जड़ी-बूटी ग्रहण करना श्रेयष्कर है। गुरु पुष्यामृत योग व्यापारिक कामों में अधिक फलीभूत होता है।

ता.	मा.	घं.मि.	से	ता.	मा.	घं.मि.	तक
८	जून	२०।१	से	९	जून	५।२५	तक
६	जुला.	५।३१	"	७	जुला.	५।३१	"
३	अग.	५।४७	"	३	अग.	१२।४२	"
२५	सितं.	२२।११	"	२६	सितं.	६।१९	"
२३	अक्तू.	६।३७	"	२४	अक्तू.	६।३८	"
२०	नवं.	७।००	"	२०	नवं.	१५।२८	"
८	मार्च	२०।५३	"	९	मार्च	६।४५	"

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली - 110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशि गुण स्वभाव चक्र

राशि	स्वामी	शुभ अशुभ	स्त्री, पुरुष संज्ञा	सम विषम	जाति	जाति धर्म	लक्षण	स्वभाव	अवस्था	वर्ण	गुण	तत्त्व	बलाबल समय	शरीर अंग विभाग	स्थान	सजल निर्जल	दिशा	घं । पहर
मेष	मंगल	अशुभ	पुरुष	विषम	क्षत्रिय	क्रूर	चंचल	चर	युवा	लाल	रज	अग्नि	रात्रि	मस्तक	पर्वत	निर्जल	पूर्व	६
वृष	शुक्र	शुभ	स्त्री	सम	ब्राह्मण	सौम्य	शांत	स्थिर	युवा	गोरा	तम	भूमि	,,	मुख	जमीन	,,	दक्षिण	४
मिथुन	बुध	शुभ	पुरुष	विषम	वैश्य	क्रूर	चं + शां	द्विस्वभाव	बाल	हरा	सत	वायु	,,	स्तन	जंगल	,,	पश्चिम	३
कर्क	चन्द्र	शुभ	स्त्री	सम	शूद्र	सौम्य	चंचल	चर	बाल	गोरा	रज	जल	,,	हृदय	जल	सजल	उत्तर	१
सिंह	सूर्य	अशुभ	पुरुष	विषम	क्षत्रिय	क्रूर	शांत	स्थिर	वृद्ध	लाल गोरा	तम	अग्नि	दिन	उरु	पर्वत	निर्जल	पूर्व	१
कन्या	बुध	शुभ	स्त्री	सम	शूद्र	सौम्य	चं + शां	द्विस्वभाव	बाल	चित्र	सत	भूमि	,,	कमर	जमीन	,,	दक्षिण	१
तुला	शुक्र	शुभ	पुरुष	विषम	वैश्य	क्रूर	चंचल	चर	युवा	नीला	रज	वायु	,,	नाभि	जंगल	सजल	पश्चिम	४
वृश्चिक	मंगल	अशुभ	स्त्री	सम	ब्राह्मण	सौम्य	शांत	स्थिर	युवा	सुनहरा	तम	जल	,,	लिंग	जल	सजल	उत्तर	१
धन	गुरु	शुभ	पुरुष	विषम	क्षत्रिय	क्रूर	चं + शां	द्विस्वभाव	बाल	पीला	सत	अग्नि	रात्रि	जंघा	पर्वत	निर्जल	पूर्व	३
मकर	शनि	अशुभ	स्त्री	सम	शूद्र	सौम्य	चंचल	चर	वृद्ध	भूरा	रज	भूमि	,,	घुटना	जमीन	सजल	दक्षिण	४
कुंभ	शनि	अशुभ	पुरुष	विषम	वैश्य	क्रूर	शांत	स्थिर	वृद्ध	काला	तम	वायु	दिन	पिंडली	जंगल	सजल	पश्चिम	३
मीन	गुरु	शुभ	स्त्री	सम	ब्राह्मण	सौम्य	चं + शां	द्विस्वभाव	वृद्ध	कर्बुर	सत	जल	रात्रि	पाँव	जल	सजल	उत्तर	४

ग्रह—गुणस्वभाव चक्र

ग्रह	स्वगृह राशि	मूल त्रिकोण	गुण	स्वभाव	वर्ण	रूप	अधिकार	शारीरिक भाग	शरीर के अंतर्भाग	जाति	तत्त्व	आप्तवर्ग सुख	स्त्री पुरुष	विद्या	शुभाशुभ	दिशा	बलाबल समय	भाग्योदय काल वर्ष
रवि	सिंह	सिंह	सत्व	स्थिर	लाल	गोल	सिर से मुख	आत्म	अस्थि	क्षत्रिय	अग्नि	पिता	पुरुष	राजविद्या	अशुभ	पूर्व	दिन	२२—२४
चन्द्र	कर्क	वृष	सत्व	चंचल	गोरा	सुन्दर	गले से हृदय	मन	रुधिर	वैश्य	जल	माता	स्त्री	ज्योतिष	बलीशुभ निर्बलीअशु	वायव्य	रात्रि	२४—२५
मंगल	वृश्चिक	मेष	तम	उग्र	लाल	कृश	पेट से पीठ	सत्व	मज्जा	क्षत्रिय	अग्नि	बन्धु	पुरुष	मनु	अशुभ	दक्षिण	रात्रि	२८—३२
बुध	कन्या	कन्या	रज	मिश्र	हरा	प्रसन्न	हाथ पाँव	वाचा	त्वचा	वैश्य	भूमि	बन्धु	क्लीब नपुंसक	गणित	शुभाशुभ	उत्तर	सर्वकाल	३२—३६
गुरु	मीन	धन	सत्व	क्षिप्र	पीला	स्थूल	कमर से जंघा	जीव	चर्बी	ब्राह्मण	आकाश	संतान	पुरुष	वेदांत व्याकरण	शुभ	ईशान	दिन	१५—२२
शुक्र	वृष	तुला	रज	मृदु	सफेद	तेजस्वी	शिश्न से वृषन	काम	वीर्य	ब्राह्मण	जल	स्त्री	स्त्री	गायन वादन	शुभ	आग्नेय	दिन	२६—२८
शनि	मकर	कुम्भ	तम	दारुण	काला	आलसी	पिं घुटना	दुःख	स्नायु	अन्त्यज	वायु	नौकर	क्लीब	कायदा	अशुभ	पश्चिम	रात्रि	३६—४२
राहु	कन्या	कर्क	तम	दारुण	मिश्र	मलीन		दुःख	स्नायु	नीच		आजी		गारुडी	अशुभ	नैर्ऋत्य		२४—५०
केतु	मीन	मकर	तम	दारुण	मिश्र	मलीन		दुःख	स्नायु	नीच		आजी		तंत्रमंत्र	अशुभ			४८—५४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आपके जीवन में क्या होने वाला है?

घर बैठे ही अपना भविष्य जानें

जन्म कुण्डली टेवा :- संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए अपनी जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र लिख भेजें। आपकी सेवा मे फलादेश सहित टेवा बनाकर वी.पी. द्वारा भेज दिया जावेगा। जिसकी दक्षिणा १०१) रु. होगी। विदेश में पैदा होने वाले सज्जनों के लिए दक्षिणा १८१) रु. होगी। कृप्या आधी राशि पेशगी अवश्य भेजें।

वर्षफल :- आपके लिए यह वर्ष कैसा रहेगा। यह जानने के लिए जन्म कुण्डली की नकल अवश्य भेजें। यदि जन्म कुण्डली नहीं है तो पत्र लिखने का समय, अंग्रेजी तारीख, स्थान तथा मन पसंन्द फूल का नाम लिख भेजें। संक्षिप्त फलादेश के लिए दक्षिणा २५१) रु. और विस्तार पूर्वक फलादेश के लिए दक्षिणा ५०१) रु. होगी। कृपया आधी राशि अग्रिम भेजें।

जन्मपत्री :- इसमें आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाआदि के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विवरण दिया जायेगा जिसकी दक्षिणा ५०१) से ११००) रु. होगी। जन्म पत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गौत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता का नाम, दादा का नाम लिख भेजें। आधी राशि अग्रिम आनी आवश्यक है।

परेशानियों से छुटकारा पाइये

साढ़ेसति नाशक यन्त्र :- जिन बन्धुओं पर शनि को साढ़ेसति अथवा ढैया चल रही हो वे हमारे कार्यालय द्वारा विधि पूर्वक तैयार किये इस यंत्र को धारण करें। अत्यंत लाभ दायक सिद्ध होगा। चालीस दिन में शनि के कुप्रभाव से राहत मिलेगी।

नवग्रह शान्ति यन्त्र :- यह यन्त्र नवग्रहों को शान्ति के लिए तत्काल प्रभावी सिद्ध होगा। इसको धारण करने से सब परेशानियों से छुटकारा मिलेगा। इस यन्त्र की दक्षिणा १५१) रु. है।

सर्व कार्य सिद्धि यंत्र :- इसके धारण करने से मुकद्दमा, परीक्षा, व्यापार, नौकरी आदि सब कार्यों में आशातीत सफलता प्राप्त होती है। दक्षिणा ५०१) रु. होगी।

लक्ष्मी सिद्धि यंत्र :- इस यंत्र के धारण करने से व्यापार में सफलता, नौकरी में उन्नति तथा धन की कमी दूर होती है। दक्षिणा १५१) रु. है।

नोट :- कृपया यन्त्र मंगवाने वालों से अनरोध है कि वे हमें पूरी राशि अग्रिम भेजें अन्यथा उत्तर नहीं दिया जावेगा।

आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र (पंजीकृत)

२/४५ए, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-११००२६

जब हमारी घड़ियां १२ बजाती हैं

भिन्न-भिन्न देशों का समय

संसार के हर एक देश में दिन तो २४ घण्टे का माना जाता है परन्तु हर देश का स्टैंडर्ड टाईम अर्थात् समय भिन्न है। उदाहरण के रूप में जब भारत में दिन के १२ बजते हैं तो लन्दन में प्रात: के साढ़े छ: बजे होते हैं। भिन्न-भिन्न देशों की राजधानियों के समय और भारत के समय में अन्तर स्पष्ट किये जाते हैं:-

नगर	देश	समय
लन्दन	ब्रिटेन	६-३० प्रात:
बैंकाक	थाइलैंड	९-३० रात
मक्का	साऊदी अरब	९-३० प्रात:
कुंआलालम्पुर	मलेशिया	२-०० प्रात:
पेरिस	फ्रांस	७-३० प्रात:
नेरोबी	कीनिया	१०-०० प्रात:
तेहरान	ईरान	१०-०० प्रात:
काबुल	अफगान	११-०० प्रात:
बुडापेस्ट	हंगरी	७-३० प्रात:
कराची	पाकिस्तान	११-३० दोपहर
मास्को	रूस	९-३० प्रात:
पेइचिंग	चीन	२-३० दोपहर
बगदाद	इराक	९-३० प्रात:
न्यूयार्क	अमेरिका	२-३० प्रात:
टोकियो	जापान	३-३० सांय
बर्लिन	पू. जर्मनी	७-३० प्रात:
काहिरा	मिश्र	८-३० प्रात:
जेनैवा	स्वि. लैण्ड	७-३० प्रात:
कनाडा	कैनेडा	११-०० रात्रि

मन्त्रों को सिद्ध करने की विधि

कर्म छ: प्रकार के होते हैं। १. शान्ति कर्म। २. वशीकरण। ३. स्तम्भन। ४. वैर। ५. उच्चाटन। ६. मारण।

कर्मों के लक्षण

१. रोग और ग्रहादि के निवारण को शांत कर्म कहते हैं।
२. सब वस्तुओं को वश में करने को वशीकरण कहते हैं।
३. चलते हुओं को रोकने को स्तम्भन कहते हैं।
४. दो मित्रों में वैर कहते हैं।
५. स्वदेश से निकल कर दूसरे देश में चले जाने को उच्चाटन कहते हैं।
६. जीव को मार देना मारण कहते हैं।

कर्मों की दिशा

शान्ति कर्म ईशान दिशा में करना चाहिए, वशीकरण उत्तर दिशा में करना चाहिए, स्तम्भन पूर्व दिशा में करना चाहिए, विदेश नेऋत्य दिशा में, उच्चाटन वायव्य दिशा में और मारण अग्नि दिशा में करना चाहिए।

खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं?

१. अन्धाक्ष नक्षत्रों में खोई हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा को जाती है और उसकी पुन: प्राप्ति शीघ्र हो जाती है। २. सुलोचन नक्षत्रों में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है। ३. मध्याक्ष नक्षत्र में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। इस बात का पता भी चल जाता है परन्तु प्राप्त (हस्तगत) नहीं होती। ४. मन्दाक्ष नक्षत्र में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है। तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं:-

नक्षत्र संख्या	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
१ अन्धाक्ष	रोहिणी	पुष्य	उफा.	पू.फा.	विशा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
२. सुलोचन	कृति.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूला.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
३. मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा	मघा	पूभा.	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पता लगने पर भी नहीं मिलेगी।
४. मन्दाक्ष	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	उषा.	शत.	बहुत यत्न करने पर मिलेगी।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सडक, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह-राशियों की तेजी-मंदी विचार

राशियों के पदार्थ

मेष—सोना, गेहूं, जौ, कम्बल, पशमीना, दालें, मसूर और चावल। **वृष**—कपड़ा, सरसों, पुष्प, जौ, चावल, महिष, बैल, गेहूं और लघु धान्य। **मिथुन**—रुई, कपास, बिनौला, ग्वार, ज्वार, मकई, तोरिया, अलसी, मूंग और माष। **कर्क**—केला, घास, जायफल, दालचीनी, तम्बाकू, चाय, सोना, चांदी, जवाहरात। **सिंह**—गुड़, खांड, साठी, चावल, तैल, घी, मृगछाल, षटरस। **कन्या**—ज्वार, बाजरा, कुल्थी, रत्न, गेहूं, अलसी, मूंग और माष। **तुला**—उड़द, गेहूं, सरसों, नारियल, हरड़े, मटर, तोरिया, जौ। **वृश्चिक**—गुड़, खांड, नगर, पान, लोहा, चना, चौपाए, पीतल, तांबा आदि धातुयें। **धनु**—रस, घोड़ा, लवण, चित्र-वस्त्र, गुड़, रुई। **मकर**—कनीर, मजीठ, जियीकन्द, सोना, चांदी, पीतल, तांबा, लोहा,। **कुम्भ**—तैल, घी, पोस्त, जवाहरात, रंगदार वस्तुयें, सोना, चांदी, ग्वार। **मीन**—सीप, मोती, पंसारियों की वस्तुयें।

ग्रहों के पदार्थ

सूर्य—तुष्य धान्य, बीज, गेहूं, गुड़, शक्कर, खांड, ऊनी वस्त्र, सोना, तांबा, सुगन्धित वस्तुयें, घी, तैल, नमक, रस। **चन्द्रमा**—चावल, मीठे रस, फल, फूल, जलोदर वस्तुयें, नमक, मोती, औषधियां, गेहूं, कांसी, दूध, दही। **मंगल**—गेहूं, चना, मूंग, गुड़, शक्कर, लघुधान्य, सोना, तांबा, पीतल, चौपाए। **बुध**—सरसों, तोरिया, घी, बिनौला, मक्की, ज्वार, बाजरा, दाल, लघुधान्य, सब्ज, रंग की वस्तुयें, रुई। **गुरु**—मीठे रस, सुगन्धित पदार्थ, पारा, नमक, चाय, कपड़ा, पीले रंग की वस्तुयें, घी, गेहूं, चावल, घोड़ा। **शुक्र**—रुई, कपास, कपड़ा, चांदी, लघुधान्य और भोग सामग्री, खांड, चावल और सफेद रंग की वस्तुयें। **शनि**—कटु वस्तुयें, मिर्च काली, माष, चना, मटर, लोहा, रंग सींधा, तोरिया, अलसी, कंगनी, कोयला, काले रंग की वस्तुयें, तिल, तैल, मूंगफली और नशीली वस्तुयें आदि।

ग्रहों-राशियों से मन्दा-तेजी जानने का प्रकार

जब कोई राशि क्रूर ग्रहों से पीड़ित हो दूषित हो या उसको क्रूर ग्रह देखते हों अथवा वहां पड़े हों या वह राशि क्रूर ग्रहों की कर्तरी में हो तो उस राशि जन्य पदार्थों की तेजी होती है। और राशि शुभ ग्रहों से युक्त, दृष्ट हो उसके पदार्थों का मन्दा होता है। इसी प्रकार जो ग्रह अशुभ ग्रहों से पीड़ित अथवा दृष्ट या युक्त हो तो उन ग्रहों के पदार्थों की तेजी होती है और जो ग्रह शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हों उनके पदार्थों का मन्दा होता है। जिस वस्तु की राशि से गुरु ४, १०, २, ११, ७, ९, ५ इतनी राशि पर हो तो उस वस्तु की मन्दी करता है और १, ३, ४, ६, ७, ९, १२ इन स्थानों पर बुध हो तो उस वस्तु की तेजी करता है। ऐसे ही २, ११, १०, ५, ८ स्थानों पर शुक्र सर्वदा मन्दा करता है। मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य और क्षीण चन्द्र यह ग्रह ३, ६, १०, ११ स्थानों पर मन्दा और १, २, ४, ५, ७, ८, ९ स्थानों पर होने से तेजी हो।

तेजी-मन्दी जानने के सिद्धान्त

(१) यदि रविवार को तेजी या मन्दी हो तो सोमवार को मन्दी अथवा तेजी आ जाती है। (२) सोमवार को एकदम मन्दी के आने पर मंगलवार को विचार से सौदा करना चाहिए। (३) सोमवार की मन्दी के बाद मंगलवार को तेजी अवश्य होती है, अथवा सोमवार को तेजी हो तो मंगलवार को मन्दी अवश्य होगी। (४) मंगलवार को आई मन्दी बुधवार को १२ बजे तक चलती है इसी प्रकार मंगलवार की तेजी बुधवार १२ बजे हो।

यन्त्र-मन्त्रों द्वारा इष्टसिद्धि

६०	६७	२	७
६	३	६४	६३
६६	६१	८	१
४	५	६२	६५

सट्टा, लाटरी जीतने का विजय यन्त्रम्—अनार की कलम से रक्त चंदन द्वारा भोजपत्र पर लिखना चाहिए। अष्ट धातु के यन्त्र में रखकर गुगुल की धूनी देकर दक्षिण भुजा पर धारण करना चाहिए। लिखने का क्रम क्रमिक ढंग पर है। चक्र लिखते समय उठने न पाये।

गर्भ रक्षा यन्त्रम्—अनार की लेखनी से अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखे तांबे के यन्त्र में रविवार को धूप बत्ती की धूनी देकर कमर में बांधें उसी दिन रविवार को पुष्य नक्षत्र में लाई हुई काले धतूरे की जड़ को कुंआरी छोटी कन्या के हाथ से काले सूत से कमर में बांधें गर्भ न गिरेगा।

२४२	२४१	२४०	२३९
२३८	२३७	२३६	२३५
२३४	२३३	२३२	२३१
श्रीं	ह्रीं	लं	छिं

बीसा यन्त्र विघ्न नाश के लिए—जब नया चन्द्र शुरू हो तो उसके बाद पहला रविवार हो तो उस दिन १२ बजे दिन के केसर के साथ लिखें, सफलता, तरक्की गुरु चन्द्र में ५।९ दृष्टि हो लिख लें इसको पास रखने से लाभ हो।

८	२	१०
९	७	४
३	११	६

२४९	२५४	२५७	२४२
२५६	२४३	२४८	२५३
२४४	२५९	२५०	२४७
२५१	२४६	२४५	२५५

परदेश गये लौटने के लिए—जब किसी का लड़का या नौकर या संबन्धी घर से चला जाये और उसका पता न लगे तो नकशा चर्खे से बांध कर चर्खे को उलटा चलाए चर्खे का सूत कन्या के हाथ का हो।

८०५	८१८	८१५	८१२
८१६	८११	८०६	८१७
८१०	८१३	८२०	८०७
८१९	८०८	८०९	८१४

सन्तान के लिए—यदि किसी के सन्तान न होती हो या लड़कियां अधिक होती हों या संतान होकर मर जाती हो तो वे यन्त्र को पूर्णमासी के दिन अष्ट गन्ध से लिखकर पास रखें।

६	१	८
७	५	३
२	९	४

रोग नाश के लिए—यदि किसी का रोग दूर न होता हो तो उसको चाहिए कि इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष में रविवार के दिन अष्ट गन्ध से लिखकर चांदी में रखकर गले में डाल लेवें रोग दूर होगा।

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

सर्व सिद्धि के लिए—इस यन्त्र को ग्रहण या गुरुवार पूर्णमासी के दिन अष्ट गन्ध से लिख कर पास रखें या गले में डाल लेवें सब कार्यों में सफलता होगी और विघ्न नाश होंगे।

१२	५	१०
७	९	११
८	१३	६

विद्या प्राप्ति के लिए—यदि किसी की स्मरण शक्ति निर्बल हो या विद्या प्राप्ति में दिल न लगता हो तो उसको चाहिए कि यन्त्र को लिखकर बालक के गले में डाल देवें गुरुवार अष्ट गन्ध से लिखें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह लग्नों व राशियों का फल

मेष लग्न फलम्—जिसका जन्मलग्न मेष हो उस पुरुष के भीतरी और बाहरी भाव सदा एक जैसे रहते हैं, शूरवीर, हर एक बात में फैसले के तौर पर अपनी राय देने में झट तैयार हो जाता है, इसके भाग्य में कई प्रकार की तबदीली होती है, जायदाद, जमीन के कामों की उन्नति के लिए अपने विचार बढ़ाता रहता है, जायदाद सम्बन्धी कई प्रकार के झगड़े पेश आते रहते है और इन्हीं कामों के सम्बन्ध द्वारा लाभ भी होता रहता है, भाई-बहिन ज्यादा नही होते, हों भी तो मर जाते हैं, पिता का सुख विशेष नहीं होता, रिश्तेदारों का भी सुख कम होता है, बहुत देर तक एक जगह पर रहना मुश्किल होता है, सन्तान की तरफ से पूर्ण सुख नहीं होता वह पुरुष चुस्त, चालाक तथा चंचल स्वभाव का होता है, स्वतन्त्र रहना पसन्द करता है, जब कभी कष्ट हो तो गुरदा दर्द, सोजश, हाथ, पांव, आंख पर चोट, रक्त विकार हो । ३-११-१५-२१-२७-४५ वर्ष में कष्ट ।

वृष लग्नम्—यदि लग्न वृष राशि का हो तो वह पुरुष अपने हठ पर दृढ़ रहता है, दूसरे की बात को नहीं मानता जो काम करे देरी से करता है, दिल बहुत मजबूत होता है, आराम पसंद रहना इसका स्वाभाविक धर्म है, छोटे-छोटे कामों पर भी लम्बे-२ विचार करता रहता है, हर एक काम में झगड़े का कारण आप ही हो जाता है, बीमार हो तो बहुत कठिनाई और देरी से अच्छा होता है, झगड़ा और मुकद्दमा के कामों में बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं, माता-पिता का सुख अच्छा, यदि पहली सन्तान में लड़की हो तो मर जाती है, जिन्दगी का पिछला हिस्सा आराम से बीतता है, शत्रु इसके अधिक बने रहते हैं, कई तरह के मामलों का सामना करना पड़ता है, इसकी मृत्यु विदेश में अथवा पानी के कारण होती है । ५-२६-३७-४७ वर्ष में कष्ट हो ।

मिथुन लग्नम्—जिसका जन्मलग्न मिथुन राशि का हो उसका स्वभाव नरम होता है, जिस काम को करने के लिए तत्पर हो जाए उसको सच्चाई से करता है, हरेक बात में अंदरूनी भाव सदा गुप्त रखता है, नये-२ विचार पैदा करता रहता है, कानूनी काम, व्यापार व लेखा संबंधी कामों को बड़ी गम्भीरता से करता दिल का बहुत मजबूत होता है परन्तु नरम स्वभाव होने के कारण कमजोर समझा जाता है, विद्या द्वारा मान प्राप्त करता है, प्रायः इसको यात्रा बहुत करनी पड़ती है, दुःख और सुख में सदा एक भाव में रहता है, घरेलू झगड़ों में सदा चितातुर रहता है, इसका एक भाई मानी और प्रतिष्ठित होता है, पिता से इसका मन सदा उदासीन, संतान उत्पन्न तो बहुत होती है परन्तु मर कर थोड़ी रह जाती है, सन्तान की तरफ से चिंता ही रहती है, मित्रों से प्रीति तो बहुत करें परन्तु मित्रों से कुछ लाभ नहीं होता, स्त्री प्रेम से भी क्लेश रहता है, इसका सम्बन्ध दो जगह होता है अथवा दो स्त्रियों से संयोग होता है, औरतों के झगड़ों से तंग रहता है, गुप्त इसके शत्रु बने रहते हैं, कई मामलों का समना करना पड़ता है, पर परिणाम अच्छा ही होता है, लिखने पढ़ने के कार्यों में प्रवृत्ति अधिक होती है, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होती है । ३-५-८-११-१८-२०-२८-४५ वर्ष में कष्ट हो ।

कर्क लग्नम्—जिसका जन्मलग्न कर्क राशि का हो तो वह दिल से जिस काम को चाहे कर ही लेना है, इसकी जिंदगी अक्सर उथल-पुथल होती है, चंचल प्रकृति और शान्त स्वभाव होता है, विचार शक्ति इसकी बहुत प्रबल होती है, टालमटोल करना बहुत जानता है, कभी-२ क्रोधित भी हो जाता है और हर एक से मेल मिलाप रखने वाला होता है, यह पुरुष हर एक बात के भाव को पहले से ही झट समझ लेता है, दूसरे के विचारों को अपने विचार में प्रकट करने वाला होता है, क्षणभर क्रोध में आकर झट शांत हो जाता है, धन इकट्ठा करने में कष्टता रहे, पैतृक सम्पत्ति थोड़ी प्राप्त हो, आयु के पहले हिस्से में अमन और सुख रहे, इसक कोई भाई-बहिन पूर्णायु न भोग कर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, स्त्री से क्लेश, शत्रु इसके गुप्त रूप से बने रहते हैं, इसकी जीत रहती है, जिंदगी इस[illegible] ३५ वर्ष तक डांवांडोल रहे, यह पुरुष नाजुक मिजाज होता है । ५-१६-१८-२०-२४ वर्ष में कष्ट हो ।

सिंह लग्नम्—जन्म लग्न यदि सिंह राशि का हो तो वह पुरुष अपने गुणों से पुरुषार्थ द्वारा हर काम में उन्नति प्राप्त कर लेता है, मज[illegible] दिल वाला होता है । धर्मात्मा, दानी और भरोसे पर काम करने वाला होता है, पुरुषार्थी और अहंकार से युक्त होता है, मामूली बातों को नफरत की निगाह से देखने वाला होता है, बड़े-२ कामों के करने में तत्पर हो जाता है और उनको पूरे तौर पर कर लेता है, हर तरह के काम में अपनी सम्पत्ति झट कायम कर लेता है, नौकर और खानदानी कामों, झगड़ों में परेशानी रहा करेगी, पहनने और खाने वाली चीजों के व्यापार से लाभ होगा, संतान बहुत हो परन्तु सुख कम होगा, पहली सन्तान जीवित न रहे, दो सम्बन्ध अथवा दो स्त्रियों से संयोग हो । ५-१०-२७-३० वर्षों में कष्ट हो ।

कन्या लग्नम्—यदि कन्या जन्म लग्न हो तो वह पुरुष ज्ञानी और पवित्रात्मा होता है, बुरी-भली बात को पहचानने वाला होता है, परिश्रमी शांत स्वभाव और अपने गुणों द्वारा संसार में मान प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता है, शुद्ध चित्त, धैर्यवान और दूसरों में निर्मोह का बर्ताव करने वाला होता है, जिस से प्रेम करे तो दिलोजान से करता है, अपने छोटों के साथ सख्ती से बर्ताव करता है, यह पुरुष जिस काम को करना चाहे कर लेता है और जिस बात पर बिगड़ जावे उस बात को कभी नहीं छोड़ता, इतिहास, नाटक, चित्रकारी और बाग बगीचा संबंधी काम करने वाला होता है, सभा में चतुर और अच्छा बोलने वाला अति परिश्रम करने पर भी बहुत धन इकट्ठा नहीं होता, निर्वाह मात्र प्राप्त होता है, पैतृक सम्पत्ति भी कुछ प्राप्त होती है, बाल्यावस्था में बीमारी से कष्ट रहे, पिछली अवस्था सुखी रहे, व्यापार व बैंकादि के कामों से धन प्राप्ति हो, परदेश में भाग्योदय रहे, संबन्धियों व पड़ौसियों में द्वेष रहे, पहली संतान युवावस्था में ही नष्ट हो जाए, दो संबंध या स्त्रियों से ताल्लुक हो । ३-५-१०-१८-३२-४० वर्ष में कष्ट हो ।

तुला लग्नम्—इस लग्न वाला नरम स्वभाव मीठा बोलने वाला नीति करने में निपुण, हर बात में हर तरह से सहायक और नीति के अनुकूल काम करने वाला होता है, संगति का असर इसको बहुत जल्दी होता है, क्षण में क्रोधयुक्त और क्षण में शांत हो किसी नई बात को जानने और बनाने में तथा जहाज सम्बन्धी कामों में निपुण होता है, मानसिक शक्ति प्रबल रहती है परन्तु बहुत देर तक नहीं रहती, जब तक किसी कामको करने में लगा रहता है तब तक दिलोजान और मजबूत दिल होकर करता है परन्तु अपने विचार बदलने में भी झट तैयार हो जाता है, इसके भाई-बहिन और संबन्धी बहुत होते हैं, सुख किसी का नहीं होता, इसका पिता ऊंचे दरजे से नीचे के दरजे को प्राप्त हो जाता है और

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बारह लग्नों वा राशियों का फल

इसका पिता ही इसकी मुसीबत का कारण बने, जितनी संतान रहे खुशहाल रहे। ८-१५-१८-२३ वर्ष में कष्ट पाये यदि बच जाए तो ६८ वर्ष ७ महीने तक आयु भोगे।

वृश्चिक लग्नम्—इस लग्न वाला अत्यन्त ज्ञानी या अत्यन्त मूर्ख होता है, ईर्षा, द्वेष और अहंकार युक्त अथवा बड़े-२ कामों के करने में देवता के समान होता है, शूरवीर, दिलावर, लड़ाई में तत्पर और हर एक काम अत्यंतता करने से इसकी बीमारी का कारण हो जाता है, आत्मिक शक्ति बलवान् और स्थाई होती है, यह पुरुष हर एक काम के रहस्य को जानकर उसकी कमजोरियों को दूर कर लेता है, अग्नि के समान प्रचंड प्रकृति वाला गंवारों जैसे व्यवहार वाला, सत्यवक्ता और भय रहित होता है, इस लग्न वाला धन संबन्धी कामों में घबराहट से युक्त प्रथम अवस्था में भाग्योदय न हो मध्य अवस्था में भाग्योदय होता है, दूसरे देशों की यात्रा करता है, ससुराल के रिश्तेदारोंऔर कानूनी कामों से फायदा होता है, अचानक धन मिलने की सम्भावना होती है, भाई-बहिन इसके कम होते हैं, बल्कि पिता की एक ही संतान रह जाती है, संतान बहुत होने पर भी सुख नहीं होता, संबन्धियों को चाहने वाला होता है, एक से अधिक विवाह होंगे गुप्त रोगों से कष्ट उठाये। ७-५-१०-१२-१८-२० और ३० वर्ष की आयु में कष्ट उठाये यदि बच जाये तो फिर ८५ वर्ष तक आयु भोगे।

धन लग्नम्—इस लग्न वालों की दो प्रकार की प्रकृति होती है। नियमों को पालन करने में तत्पर अथवा नियमों का उल्लंघन करने में तत्पर होते हैं, भविष्यवाणी करने में और दूसरों मन के गुप्त रहस्यों के जानने वाले होते हैं, विश्वास पात्र, दानी-सत्यवक्ता और निष्काम काम करने वाले, कई प्रकार की विद्या को जानने वाले, स्वतन्त्र रुचि वाले, किसी के ऊपर विश्वास न करने वाले और शांत स्वभाव, बिना कहे किसी बात में न बोलने वाले ईश्वर संबन्धी विषयों में तत्पर और दिमागी काम करने वाले होते हैं, पहली अवस्था में पिता को सुख कम, पिता की विपत्ति के कारण इसका भाग्योदय नहीं होता, अपने परिश्रम द्वारा धन कमाता है, इसके भाई कम हों, संबंधियों से प्रेम रहे, संतान कम होती है, दुश्मन बने रहते हैं, देवताओं और ब्राह्मणों का सेवक हो, यात्रा आदि बहुत करे। ८-१२-१५-२६-३८-४० वर्ष में कष्ट भोगे और यदि बच जाए तो ७५ वर्ष की आयु भोगे।

मकर लग्नम्—इस लग्न वालों का प्राय: सेवा करना धर्म है, जिस काम को करने की रुचि हो उसको दृढ़ता और शांति से करते हैं, परिश्रमी अधिक होते हैं, कभी मलीनचित्त और ईर्ष्या द्वेष से युक्त भी हो जाते हैं, किसी समय शूरवीरता और दृढ़ता से बड़े भारी काम को भी कर लेते हैं। चलना-फिरना कुछ अजीब व चतुर हो, परन्तु बोलते-२ वाणी में कुछ रुकावट सी हो जाती है, संशयात्मक बुद्धि और उदासीनता में रहते हैं, इनका जीवन हर्ष से व्यतीत नहीं होता, मित्रों में स्वतन्त्रता और दूसरे पुरुषों से लज्जा युक्त रहना, शत्रु को क्षमा करना, शत्रुता न भूलना, मित्रों से युक्त व्यवहार करते हैं, हरेक बात को सोच-समझकर करते हैं, काम में लगे रहना, व्यापार द्वारा धन अधिक प्राप्त करते हैं, भाई-बहिन बहुत होते हैं, सम्बन्धियों व भाई-बहिनों से सुख नहीं, पिता का सुख भी विशेष नहीं होता, कई विवाह होते हैं परन्तु विवाह होने के समय बहुत अड़चनें होती हैं। स्त्री प्रसन्न रहे, संतान थोड़ी होती है, खांसी और वायु रोग से दुःखी हो। ३-१८-२०-२४-३०-४२ वर्ष में कष्ट भोगे, बचे तो ५६ वर्ष की आयु भोगे।

कुम्भ लग्नम्—इस लग्न वाले को साहित्यकला, कौशल और दर्शनों के गुप्त रहस्यों का शौक होता है, लेखक और वक्ता भी अच्छा होता है, प्रेम करने की चाहना भी होती है, खासकर वृद्धावस्था तक अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, एकांत सेवी होता है, अन्य लोगों से मेल-जोल बहुत कम रखता है, अच्छे-२ मित्र होते हैं, इच्छा शक्ति प्रबल होती है, बड़ी-२ मुश्किलों का सामना करके अपने काम को कर लेता है, प्रसन्नात्मा होता है, दौलत और मरतब हासिल करने में बहुत परिश्रम करने पर भी कामयाब नहीं होता, क्योंकि इसके कई गुप्त दुश्मन और गुप्त साजिशें बनी रहती हैं। कुटुम्ब के मनुष्यों से जायदाद व धन संबंधी सहायता और मित्रों द्वारा अपने मरतबे की सहायता इसके दुःख का कारण होती है। मकान के रुपये की खातिर लम्बी-२ यात्रा होती है, कभी-२ इसके संबंधी खासतौर पर इसका भाई कारोबार में कष्ट का कारण होता है, इसकी आमदनी कई कारणों से गुप्त रूप में होती है। सरकारी फौज की तरफ से गुप्तचर होता है, भाई-बहिन इसके कम होते हैं, अगर हों तो सलूक अच्छा नहीं होता, अक्सर कई बार भाई के साथ झगड़ा हो जाता है, पिता का देहान्त जल्दी हो जाता है। इसके संतान कम होती है, किसी समय जोड़े पैदा होते हैं, संतान से सुख कम, खासकर पहली संतान का दुःख होता है, इसकी शादी खानदानी रिश्ता या गवैया स्त्री से होती है, सम्बन्ध का लाभ हो, स्त्री विद्या को जानने वाली कन्या हो और वृश्चिक राशि वालों से दुःखी हो। ६-११.१९-२५-३९-४० वर्ष में दुःखी और कष्ट पाये, यदि बच जाए तो ४५ वर्ष उम्र होने की आयु भोगे।

मीन लग्नम्—इस लग्न वाले प्राय: देवता के समान प्रकृति वाले होते हैं और यह लग्न मनुष्य का बहुत कम होता है, अपने जीवन में मान और प्रतिष्ठा बढ़ाते हैं, प्राय: विद्वता और कला कौशल इनके जीवन का आधार होता है। प्रसिद्ध लेखक नए विचारों से कई प्रकार की बातों को प्रकट करते हैं और उसका पूरा फल प्राप्त करते हैं, इसके विचारों का प्रभाव दूसरे के चित्त पर बहुत जल्दी पड़ जाता है, कई बार इसके विचार अपने ही दुःख का कारण बन जाते हैं, इस लग्न वाला ज्ञानहीन नहीं होता, साहित्य और संगीत विद्या में बहुत निपुण होते हैं, भोग में इनकी प्रवृत्ति अधिक होती है, संतान बहुत अधिक होती है और भाग्यवान होती है। दानी और पुण्यात्मा लोगों के साथ सहानुभूति रखते हैं। अपने स्वार्थ के लिए दूसरों पर अन्याय करना पसन्द नहीं करते, अधिकार को प्राप्त करने पर भी सदा न्याय करते हैं, क्रोध जल्दी नहीं करते और शांत भी जल्दी नहीं होते, धन प्राप्ति के लिए कई प्रकार का कारोबार करते हैं और उसमें कामयाब भी हो जाते हैं, इसके भाई-बहिन अधिक होते हैं और इसके सम्बन्धित सहायक होते हैं। भाई व बहिन किसी की अकाल मृत्यु हो जाती है, माता-पिता का सुख कम होता है, पिता अकाल मृत्यु से मरता है, अधिक प्रतापशाली, व्यापार में लाभ, कर्णपीड़ा, विदेश में दुःखी हो। ४-२५-२०-३२-३८ और ४० वर्ष में कष्ट से बचे तो ८० वर्ष की आयु भोगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बाल-कष्टवली पूतना-विधान

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्ति द्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा ०१	वर्ष ०१	१ बोगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर	नदी की मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चन्दन का लेप सफेद फूल ध्वजा ५ (चिलड़ियां) पूड़े ५ दीपक ५ प्रातः समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्व पत्र बिल्ली और मनुष्य के केश नीम के पत्तों का धूप	ॐ नमो मकरवत्से मोचिनि स्वाहा।
दि ०२	मा ०२	वर्ष ०२	१ सुनंदिनी २ बोगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोच दांतों का पसीना आंखें मींचना ज्वरादिरोदन आंखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला २ दिन विधान	उबले चावल सेर भर आटे के पूड़े मछली और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवति स्वाहा
दि ०३	मा ०३	वर्ष ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प प्रलाप अरुचि आंख मींचना वमन रोमांच	पूर्ववत् मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लाल फूल सायं काल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोरुख और सांप की कांचली का धूप देना।	ॐ नमो भगवति स्वाहा
दि ०४	मा ०४	वर्ष ०४	१ मुखमंड-लिका रक्षा-कारायोगिनी	ज्वर गात्रभंग आंख मींचना शिर झुकना श्वास श्वा-सता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला बिल्व के कांटे से रेखा	सफेद चन्दन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवे।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो-घृत का धूप देना।	ॐ नमो पुत्रेनाविवर्षि भवसुशोभने बालकं मुंच।
दि ०५	मा ०५	वर्ष ०५	बिडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि	सेर भर चावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपराह्न के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् धूप देना।	ॐ सुभगे सुभद्रे देवि सर्वसद्गु-निवारिणि। कुरु शांतिं शिशोः स्वास्थ्यं जीवदानेन रक्षसि।
दि ०६	मा ०६	वर्ष ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मछली का मांस बकरे का मांस पायस दूध आध सेर आटे के पूड़े अपराह्न पश्चिम दिशा में तीन दिन बलि देवे।	कुठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो-घृत का धूप देना।	ॐ रक्षसि त्वं महाभागे बालं मुंच शुभान्न न, वरं कुरु।
दि ०७	मा ०७	वर्ष ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत् मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चन्दन सायं काल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोरुख और लहसन से पूर्ववत् धूप देना।	ॐ नमोपद्मपत्राक्षि विशालाक्षि वने स्थिते। संगृह्य बलिमात्रं बालं मुञ्च सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	वर्ष ०८	बिडालिका	ज्वर गात्र संकोच आंखें मींचना रोना जिह्वा-शोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत् मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्याह्न व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गुग्गुल में घृत मिला कर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्वभूतेषि शोभने त्वं पिशाचिनि। बलिं चैवोररीकृत्य त्वरितं मुंच बालकम्॥
दि ०९	मा ०९	वर्ष ०९	मदोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच शूल	पूर्ववत् मूर्ति	उबले चावल मछली का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोरुख को घृत में घिस कर पूर्ववत् धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट् स्वाहा।
दि १०	मा १०	वर्ष १०	रेवती	ज्वर वमन तृष्णा श्वास पीड़ा	पूर्ववत् मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लाल फूल २५ सफेद फूल ४४ संध्या समय दक्षिण में २ दिन बलि देवे	गोरुख लहसन को घृत में मिला कर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट् स्वाहा।
दि ११	मा ११	वर्ष ११	दुर्मुखा	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी की मूर्ति	उबले चावल सफेद चन्दन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत् धूप देना।	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास खड्गहराय ॐ हुं फट् स्वाहा।
दि १२	मा १२	वर्ष १२	वक्रमुखा	ज्वर रोदन पसीना आंखें दुखना फूत्कार रोमांच	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मछली का मांस बकरे का मांस पायस संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे।	गोरुख को घृत में घिस कर पूर्ववत् धूप देना।	ॐ नमो नारायण प्रज्वल २ तापं हर २ शोषय २ मर्दय २ हनुमताय हुं फट् स्वाहा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र-कष्टावली

नक्षत्र संख्या	च १	च २	च ३	च ४	कष्टलक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप-संख्या	जपार्थं नक्षत्रमन्त्राणि	बलिदान
अश्विनी १	दि ०६	दि ११	दि १०	दि २०	सर्व गात्रपीडा वात ज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुम्भ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५००० हजार	ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः ॥ १ ॥	कुंकुम चन्दन चम्पक पुष्प मंडुक मोदक नैवेद्य गुडोदन धूप तिल ।
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दिरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी छायापात्र दान	१०००० हजार	ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे देवस्त्वा सविता मध्वा नक्तु पृथिव्याः स᳚ स्पृशस्पाहि अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीर पुष्प गुग्गुल धूप गुडोदन नैवेद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा ।
कृत्तिका ३	दि ०६	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उदरशूल नेत्र पीडा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गोदान ग्रह-शांति	१०००० हजार	ॐ अयमग्निः सहस्रिणो वाजस्य शांति᳚ वनस्पतिः मूर्द्धा कवीरयीणाम् ॥३॥ अग्नये नमः ॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुल धूपघृत दीप तिलमाष गुडोदन पायस नैवेद्य ।
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०६	दि १८	दि ३०	शिरदर्द ज्वर पीडा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णा गौ दुग्ध खंड	१००० हजार	ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥४॥	चन्दन गन्ध पुष्प असगन्ध धूप मोदक घृत छोर नैवेद्य ।
मृगशिर ५	दि ०६	दि ०५	दि ०७	दि १०	सर्व शरीर पीडा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधि तंडुल गोवत्स दान ब्राह्मण भोजन	१०००० हजार	ॐ सोमो धेनु᳚ सोमो अर्वन्तमाशु᳚ सोमो वीरं कर्मण्यन्ददाति सादन्यं विदथ्य᳚ सभेयम्पितृ श्रवणं यो ददाशदस्मै नमः ॥५॥	चन्दन गन्ध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृत दुग्ध दध्योदन ।
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांग पीडा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वस्त्र दान कृष्ण वस्त्रादि	१०००० हजार	ॐनमस्ते रुद्रमन्यव उतोत इषवे नमः बाहुभ्यामुत ते नमः ॥६॥ ॐ रुद्राय नमः ।	हरिद्रा कुंकुम गन्ध सवल्लिकापुष्प अष्ट-गन्ध तिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत प्रियदानैवेद्य ।
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	सर्व शरीर पीडा शिरपीडा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्या भोजन वस्त्र	१०००० हजार	ॐअदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः । विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥७॥	कुंकुम गन्ध वारिज पुष्प गुग्गुल पुष्प घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड घृत ।
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीडा शूल अति कठिनरोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गोदान पक्वान्न दान	१०००० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐगुरवे नमः ॥८॥	कुंकुम अगर गंध अगस्त पुष्प घृत गुग्गुल धूपसार नैवेद्य दध्योदन ।
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ४१	दि ००	सर्व गात्र पीडा पाद पीडा	सर्प देवता	कुलस्थान् योगिनी पूजा गौ शय्यादान	१०००० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु । ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः ॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्प गुग्गुल घृत पुष्प मिष्टान्न हवि नैवेद्य तिल घृत दुग्ध ।
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	सर्व गात्र पीडा शीतज्वर रोगभय	पितर देवता	तिल तंडुल माष वस्त्र दान	१०००० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्य स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्य स्वधायिभ्यः स्वधा नमः । अक्षन्न पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः शुन्धध्वम् ॥१०॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्प गुग्गुल घृत पुष्प मिष्टान्न हवि नैवेद्य तिल घृत दुग्ध ।
पूर्वा फाल्गुनी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि २०	सर्वगात्र पीडा ज्वर अर्धशिर रोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गौ स्वर्ण दान	१०००० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगेमां धियमुदवाददन्नः भगप्रणोजनय गोभिरश्वैर्भगप्रनृभिर्नृवन्तः स्याम ॥११॥ भगाय नमः ॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल घृत धूप शर्करा मोदक पूपादान घृत-पायस नैवेद्य ।
उत्तरा फा० १२	दि ०७	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षि शूल रोग	अर्यमा देवता	सुवर्ण रजत अन्न गौ वस्त्र दान	२००० हजार	ॐ दैव्यावध्वर्यू आगत᳚ रथेन सूर्यत्वचा । मध्वायज्ञ᳚ समञ्जाथे प्रत्नयाऽयं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ अर्यम्णे नमः ॥	कपूर कुंकुम गन्ध अर्कपुष्प घृत गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य घृतान्न होम ।
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वांग पीडा उदर शूल प्रस्वेद अकरा	सविता देवता	गोदान छाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	१००० हजार	ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविहुतम् वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा विराजति ॥१३॥	कुंकुम रक्तचन्दन गन्ध कमल पुष्प सुगंध गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य ।
चित्रा १४	दि ११	दि ०६	दि ०६	दि १६	विविध रोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्र वृषभ गुड तिल छाया पात्र	५००० हजार	ॐ त्वष्टा तुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम् । द्विपदाछन्द इन्द्रियमुक्षा गौर्नवयोदधुः ॥१४॥ त्वष्ट्रे नमः ॥	कुंकुम अगरगन्ध विचित्र पुष्प गुग्गुल धूप मोदक घृत विचित्रान्न हवि नैवेद्य ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र	च १	च २	च ३	च ४	कष्टलक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप-संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदानद्रव्याणि
स्वाति १५	दि ६०	दि १७	दि ३०	दि ००	अनेक तरह के रोग पैदा होवें	वायु देवता	रक्तगो स्वर्णपक्वान्न दान	५००० हजार	ॐवायोऽन्नरयि वृद्धः सुमेधः श्वेतः सिषक्तिनि यूतान्मिश्री ॐतेवायवेसमनसा बिस्युरविश्वनरः स्वपन्या निचक: ।।१५।।	चन्दनगन्ध कमल पुष्प अगर गुग्गल धूप पायस शर्करा घृत नैवेद्य ।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नि देवता	रक्तपित्त वस्त्र कृष्ण वृषभ दान	२००० हजार	ॐइन्द्राग्नि आगतं सुतङ्गीर्भिर्नभोवरेण्यं । अस्य पादन्धियविता ।।१६।।	श्रीखण्ड चंदन गंध कमलपुष्प देव- दारु धूप घृत पायस नैवेद्य ।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३८	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गोदान छायापात्र	१००० हजार	ओं नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवाय तदृतं संपर्यत् दूरेदृशं तादेवजातायकेतवे दिवस्पुत्राय सूर्यायशं शत:।।१७। ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम । ह्वयामि शक्रम्पुरहूतमिन्द्रं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्र; ।।१८।	कुंकुम गन्ध कमल पुष्प चंदनधूप पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य ।
ज्येष्ठा १८	दि ५६	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नीलवस्त्र छायापात्र दान	५००० हजार	ॐ मातेव पुत्रं पृथ्वी पुरीष्यामग्निं स्वेयोनावभारुखा विश्वैर्देवैर्ऋतुभिःसंविदानःप्रजापतिर्विश्वकर्माविमुञ्चतु १९	चंदन गन्ध सुगन्ध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य ।
मूला १९	दि ००	दि ०६	दि १५	दि ०६	ज्वर शूल सन्निपात महा कठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्णकृष्ण गोछायापात्र दान	५००० हजार	ॐअपाधमय किल्विषमपकृत्यामपोरप, अपामार्गत्वमस्म- दपटुः दुश्वप्नं सुव; ।।२०।।	कृष्ण अगर गंध नीलपद्म पुष्पकृष्ण अगरधूप मिष्टान्नहवि माष नैवेद्य चन्दन गन्ध पद्म गुग्गल धूप दुग्ध पायस नैवेद्य ।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २१	दि १०	शरीरपीड़ कंपरोग शिररोग महाकष्ट	आप देवता	श्वेतवस्त्र तंडुलस्वर्ण जलकुम्भ १०००	२००० हजार	ॐ विश्वे अद्यमरुतो विश्व ऊति विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः विश्वे नोदेवा अवसागमन्तु विश्वमस्तु द्रविणवाजो अस्मे २१	चन्दन गंध मालती पुष्प गुग्गल पायस नैवेद्य ।
उ० षाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटि पीड़ा प्रलापउरु शूल रोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१००० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोश्नप्त्रे स्थोविष्णोस्यूरसि विष्णो	चन्दन गंध मालतीपुष्पकपूर गुग्गल
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०६	वात पित्त कफ रोग अतिसारसर्वगात्रपीड़ा	गोविन्द देवता	सुवर्णगोदान ब्राह्मण भोजन छायापात्र	१०००० हजार	ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ।।२२।। ॐ विष्णवे नमः । ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारंवसोःपवित्रमसि सहस्रधारम्	धूप ओदन पायस [illegible] नैवेद्य । अगर गंध कमलपु[illegible] अगर धूप
धनिष्ठा २३	दि १५	दि ०२	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ्र कप ज्वर रक्त अतिसार	वसू देवता	छत्री जूतों स्वर्ण गो छायापात्र दान	१००० हजार	देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेण शतधारेणसुप्वाकामधुक्षः ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थोवरुणस्य	घृत पायस नैवेद्य । कुंकुम अगर गंध कमलपुष्प अगर
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	बायु रोग से भय [illegible] ज्वर पीड़ा	वरुण देवता	तिल सुवर्ण घृत तेल अजा गोदान	१०००० हजार	ऋतसदन्यसि वरुणस्यऋतसदनमसिवरुणस्यऋतसदनमासीद	धूप घृत नैवेद्य ।
पूर्वाभाद्र पदा२५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १६	सर्वगात्र पीड़ासर्दी चिन्ता व्याकुलता	अजकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेतवस्त्र घृत दूध	५००० हजार	ॐउतनोऽहिर्बुध्न्यःशृणोत्वजएकपात्पृथिवि समुद्रः । विश्वे देवा ऋतावृधो हुवानां स्तुतामंत्रा कविशस्ता अवन्तु ।।२५।	कुंकुम चंदन गंध श्वेतार्कपुष्प सर्वो- षधमिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य ।
उ० भाद्र पदा२६	दि १०	दि २०	दि ०६	दि १५	कामलारोग अतिसार ज्वर वायु शूल भ्रम	अहिर्बुध्न्य देवता	रजत कृष्णवस्त्र तिल सुवर्ण दान	१००० हजार	ॐशिवोनामासिस्वधितिस्ते पितानमस्तेऽस्तु मामा हीसिनि तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय [सुवीर्याय ।।२६।।	कपूर चन्दन गन्ध पद्मपुष्प बिल्व गुग्गल धूप दधि पायस नैवेद्य ।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ६	दि २०	वातपित्त ज्वर भ्रम ऊरुशूल पीड़ा	पूषा देवता	पित्तलपात्र रक्तवृषभ वस्त्र छायापात्र दान	१०००० हजार	ॐ पूषं तवव्रते वयन्नरिष्येम कदाचन । स्तोतारस्त इहमसि ।।२७।।	रक्त चन्दन गन्ध सम्पर्क पुष्प घृत गुग्गल पायस नैवेद्य ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

	सूर्यादि ग्रहों के लिए दान												संख्या	मन्त्र	अवस्था
सूर्य	कनक	मानि	धन	गुड़	सुवर्ण	ताम्र	कमल	रक्तवस्त्र	रक्तचन्दन	चामर	दक्षिणा	जप	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	वर्ष २२
चन्द्र	मोती	चांदी	सिता	शंख	वंशपात्र	चावल	कपूर	श्वेतवस्त्र	श्वेतचन्दन	श्वेतवस्त्र	दक्षिणा	जप	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	वर्ष २४
भौम:	मूंगा	कनक	गुड़	सुवर्ण	ताम्र	रक्तवस्त्र	रक्तचन्दन	रक्तवृषभ	मसूर	रक्तपुष्प	दक्षिणा	जप	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	वर्ष २८
बुध:	हरितवस्त्र	मूंगी	कांस्य	घृत	मिश्री	गजदन्त	सवर्ण	पन्ना	पुष्प	कपूर	दक्षिणा	जप	८०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	वर्ष २२
गुरुः	हरिद्रा	घोड़ा	खाण्ड	सुवर्ण	सिता	पुष्पराग	पीतवस्त्र	लवण	पीतपुष्प	मोदक	दक्षिणा	जप	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	वर्ष १६
शुक्र	श्वेतवस्त्र	श्वेतवस्त्र	घृत	श्वेतचन्दन	हीरा	चांदी	चावल	खाण्ड	दुग्ध	श्वेतपुष्प	दक्षिणा	जप	११०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	वर्ष २५
शनि:	तिल	तेल.	माष	नीलम	कृष्णपुष्प	कृष्णवस्त्र	कृष्ण गौ	महिषी	लोहा	मुदंग	दक्षिणा	जप	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	वर्ष ३६
राहु	गुलमेद	घोड़ा	खड्ग	नीलम	कम्बल	सुवर्ण	तिल	तेल	नरेल	सप्तधान्य	दक्षिणा	जप	१८०००	ॐ छ्रां छ्रीं छ्रौं सः राहवे नमः	वर्ष ४२
केतु	कस्तूरी	कम्बल	खण्ड	बकरा	तिल	सवर्ण	खण्ड	सप्तधान्य	खोवा	कृष्णवस्त्र	दक्षिणा	जप	७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	वर्ष ४२

सूर्यादि ग्रह पीडासु स्नानार्थमौषधानि —(यथा सिद्धौषधै रोगान्नदत युमंन्त्रतो भयम् । तथा स्नान विधानेनग्रह दोष प्रणश्यति ॥)

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मन शिला	पञ्चगव्य	बिल्व छाल	गोबर	मालती	इलायची	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गजमद	रक्तचन्दन	अक्षत	पुष्प	मनशिला	सुरमा	तिलपत्र	तिलपत्र
देवदारु	शंख	धमनी	फल	श्वेतसरसों	सुवृक्षमुल	लोबान	मुत्थरा	मुत्थरा
केशर	सिपी	रक्त पुष्प	गोरोचन	मुलट्ठी	केशर	धमनी	गजदन्त	गजदन्त
खस	श्वेतचन्दन	सिगरफ	मधु	मधु		सौंफ	कुस्तूरी	छागमूत्र
मुलट्ठी	स्फटिक	मालकंगनी	मोती	मालती		मुत्थरा		
रक्त पुष्प		मोलसरी	सुवर्ण			खिला		
रक्त कनेर								

ग्रहपीड़ा निवृत्ति के लिये यन्त्र

सूर्ययन्त्रम			चन्द्रयन्त्रम			भौमयन्त्रम			बुधयन्त्रम			गुरुयन्त्रम			शुक्रयन्त्रम			शनियन्त्रम			राहुयन्त्रम			केतुयन्त्रम		
६	१	८	७	२	९	८	३	१०	९	४	११	१०	५	१२	११	६	१३	१२	७	१४	१३	८	१५	१४	९	१६
७	५	३	८	६	४	९	७	५	१०	८	६	११	९	७	१२	१०	८	१३	११	९	१४	१२	१०	१५	१३	११
२	९	४	३	१०	५	४	११	६	५	१२	७	६	१३	८	७	१४	९	८	१५	१०	९	१६	११	१०	१७	१२

नवरत्न मुद्रा

बुध-पन्ना	शुक-हीरा	चन्द्र मोती
गुरु-पुखराज	सूर्य-मणि	मं०-मूंगा
केतु-लसन	शनि-नीलम	रा०-गुलेम

अदरक के लाभ :—अदरक को नमक लगा कर खान से हाजिमा को तेज करता है । जबान और गले को साफ करता है । कब्ज को दूर करके भूख को बढ़ाता है । अदरक के रस में मधु मिलाकर प्रयोग करने से खांसी दमा और जिगर के रोगों को दूर करता है । अदरक घी में भून कर कुछ नमक मिलाकर खाने से अफारा दूर होता है । अदरक का रस निंबु के रस में नमक डाल कर पीने से बदहजमी दूरहोती है । चाए कीतरह जल में पका कर दूध मिलाकर पीने से सर्दी, खांसी,जुकाम को नाश होताहै ।

रोग त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू. फा.	उ. फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत	भर.	कृ.	प्रथम
पुन	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू. भा	अश्वि	रो	द्वितीय
पुष्य	आश्ले	चित्रा	स्वा	पू षा	उ षा	उ. भा	रेव.	मृ.	अन्त

सूर्य नक्षत्र, दिन नक्षत्र, जन्म नक्षत्र अथवा नाम नक्षत्र रोग त्रिनाड़ी चक्र में जब एक ही नाड़ी पर हो तो असाध्य होता है रोगी का मरण होता है । यह रोग त्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय भी वर्जित है ।

मंगलवार १।६।११ तिथि कृतिक, नक्षत्र बुधवार २।७।१६ तिथि अश्लेषा नक्षत्र, गुरुवार ३।८ १३ तिथि मघा हस्त नक्षत्र, शुक्रवार ४।६।१४ तिथि आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र, शनिवार ५।१०।१५तिथि भरणी नक्षत्र इन तिथि वार और नक्षत्रों के योग में रोग का आरम्भ हो तो मृत्यु व मृत्यु तुल्य कष्ट जानें :

कालस्य मुखदंष्ट्राज्ञानम्

रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१३।२३ संख्या पर हो तो काल मुख होता है, और १०।१८ नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती है, मुख या दाढ़ में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यन्त रोगग्रसित पुरुष को मृत्यु तुल्य कष्टजाने ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२ (बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अत: उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्ठक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व "ॐ नमो भैरवाय" मन्त्र की तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या दोनों का योग कर ले तथा इस योग में से १ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्ठक संख्या के आगे उत्तर देख लें-

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई १२ (बारह), यन्त्र के कोष्ठक की संख्या है १५ (पन्द्रह), दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इस में से १ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अत: केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्ठक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्ठक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इन को योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ वह बत्तीस की संख्या से अधिक है अत: इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र के नीचे १० वीं संख्या का उत्तर मिला "पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी" इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करलें।

३२ बत्तीसा यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

प्र. सं.	प्रश्न	अधिपति देवता
१.	मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं?	श्री भैरव
२.	मेरी मुकदमें में हार होगी अथवा जीत?	शिव
३.	मेरा भाग्योदय कब होगा?	कृष्ण
४.	मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं?	राम
५.	मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं?	सीता
६.	खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि?	राधा
७.	मैं अपना मकान बना सकूंगा या नहीं?	लक्ष्मी
८.	क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी?	विष्णु
९.	मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं?	नारायण
१०.	मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं?	दामोदर
११.	क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है?	इन्द्र
१२.	मेरा विवाह होगा अथवा नहीं?	गणेश
१३.	अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं?	अग्नि
१४.	मेरे स्वप्न का फल कैसा?	वायु
१५.	क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा?	वरुण
१६.	मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि?	यम
१७.	क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी?	कुबेर
१८.	मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी?	सूर्य
१९.	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं?	चन्द्र
२०.	मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं?	मंगल
२१.	प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा?	बुध
२२.	क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा?	बृहस्पति
२३.	मेरे भाईयों से कैसे निभेगी?	शुक्र
२४.	क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा?	शनि
२५.	मेरे लिए यह वर्ष कैसा है?	राहु
२६.	मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा?	केतु
२७.	अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री?	मित्र
२८.	क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी?	पृथ्वी
२९.	मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी?	काल
३०.	क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा?	शेष
३१.	प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं?	यक्ष
३२.	मैं तीर्थ यात्रा करूंगा अथवा नहीं?	तक्षक

(१) श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है होशियार!
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पूरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

(२) शिव

१. मुकदमे में जीत होगी।
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. सम्बन्धी धोखा देगा, सावधान!
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयें में अनबन रहेगी।
१३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

(३) कृष्ण

१. आप का भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकदमे में जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

(४) राम

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकद्मा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. सम्बन्धी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी;
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

(५) सीता

१. उन्नति (प्रमोशन) मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिल जायेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
४. चिन्ता न करें मुकद्मा जीत जाओगे।
५. सन्तान सुख के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. सम्बन्धी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. यह वर्ष आप के लिए चुनौतियों से भरा होगा।
१४. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी होने में देरी है।
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

(६) राधा

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।
५. मुकद्दमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर आना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र प्रेम का दिखावा करता/करती है।
९. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुआं बन जायेगा।

(७) लक्ष्मी

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अधिक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकद्दमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. सम्बन्धी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

(८) विष्णु

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।
४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
६. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।
७. मुकद्दमे में जीत जाओगे।
८. सन्तान सुख के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. सम्बन्धी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तान जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

(९) नारायण

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें सन्देह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर आने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें!
१२. सम्बन्धी धोखा अवश्य देगा सावधान!
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

(१०) दामोदर

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जावेगी।

(११) इन्द्र

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
२. जीवन में सफलता प्राप्त कर लो ऐसे योग हैं।
३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकद्दमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा। लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
१४. सम्बन्धी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

(१२) गणेश

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं है।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जायेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकद्दमा हार जाओगे।
१२. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. सम्बन्धी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

(१३) अग्नि

१. बीमार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।
३. गढ़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या/प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं है।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
१५. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

(१४) वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह सम्बन्ध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकद्दमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

(१५) वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गढ़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१५. सन्तान सुख भाग्य में नहीं है।

(१६) यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गढ़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।
१०. मकान बनाने में देर लगेगी।
११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।

(१७) कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गढ़े धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमत् उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसे योग नहीं हैं।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

(१८) सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गढ़ा धन भाग्य में नहीं है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

९. जीवन में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगा कर पढ़ो।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

(१९) चन्द्र

१. कर्जा मिलने में विघ्न-बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जायेगी, ईश्वराधना करें।
४. व्यापार से लाभ रहेगा।
५. तबादला होकर रुक जायेगा।
६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए विस्वासुमन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गढ़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

(२०) मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नहीं लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गढ़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती से लाभ रहेगा।

(२१) बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ रहेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गढ़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति के योग नहीं है।
१४. उत्तीर्ण होने के लिए परिश्रम एवं हनुमतमन्त्र जपें।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

(२२) बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४. कर्जा विलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गढ़ा धन मिलना सम्भव नहीं है।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं है।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे। चिन्ता न करो।

(२३) शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट जायेगा।
४. खोई हुई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करें।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

(२४) शनि

१. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाइयों से बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्ज मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी, श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ्य लाभ लेना असम्भव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. गढ़ा धन नहीं मिलेगा।
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

(२५) राहु

१. यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुआं बन जाएगा।
३. भाईयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. कर्ज मिल जाएगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गढ़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

(२६) केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुंआं नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अत: उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

(२७) चित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआं बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
९. कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

(२८) पृथ्वी

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआं बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों से मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

(२९) काल

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुंआं बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

(३०) शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुंआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाइयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

(३१) यक्ष

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. गृह निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

(३२) तक्षक

१. तीर्थ-यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
९. कुआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ बना रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को वर्ष का फल श्रवण

ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः । अचिन्त्या व्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने । समस्त जगदाधार मूर्त्तये ब्रह्मणे नमः ॥१॥ गणनाथं नमस्कृत्य प्रणम्य पर प्रपितामहम् । चन्द्र मिश्रं तथा रामजीदत्त तद् सुतं बुद्धम् ॥२॥ ततसूनं पितरं देवीदयालु पण्डितं स्मरन् भक्तया लोक हितार्थाय सुख सम्पत्ति हेतवे ॥३॥ वृषभ नामाब्दे विक्रमे सम्वत्सरे शुभे पण्डित सुशील कुमार सुपुत्र पं० राम शरण ज्योतिषाचार्य प्रपौत्र मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी कुर्वे पंचांग दिवाकरम् ।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें । तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता ब्राह्मण गुरु की पूजा करें, स्त्रियां शिशु आदि वस्त्र आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे संवत्सर का फल श्रवण करें ।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सैंधा) आजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है ।

सम्वत्सर के फल-श्रवण का माहात्म्य—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव सम्वत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुने एवं गायत्री मंत्र "ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च" मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पचांगस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवा कर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें । तदुपरान्त सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें । जैसे कहा है—

"यश्चैत्र शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृणोति वार्षीय फल पवित्रम् भवेद् धनाढयो बहुसस्य भोगी जह्याच्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम् ।"

अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को, इस पवित्र वर्ष फल का श्रवण करता है, वह बहु धन, धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है । इस दिन से श्री राम नवमी तक श्री दुर्गा पूजन एवं पाठादि का भी विशेष माहात्म्य होता है ।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सत्युग :—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई । इसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की है । इसमें मत्स्य, कूर्म्म, बराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, बराह जी ने जलोद्धार किया, कूर्म्म जी ने पृथ्वी की रक्षा की और उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का बध किया । इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे, शाप और वरदान देने में समर्थ थे । क्षत्रिय अपने बहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुये थे । वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे । शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे । समय पर वर्षा होती थी, फसलें अच्छी होती थी । स्त्रियां पतिव्रता थीं, गौएं दूध अधिक देती थीं । मनुष्य की परमायु: १,००,००० वर्ष, बाल्यावस्था १०,००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी । पुण्य २० विश्वे, पाप का नाम तक भी न था । सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था । सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण २,००० थे ।

त्रेतायुग :—बैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई । इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष थी । इस युग से तीन अवतार वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए । श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया । श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार बध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था । श्री रामचन्द्र जी ने रावणादि राक्षसों का वध किया । मनुष्य की परमायु: १०,००० वर्ष और बाल्यावस्था १,००० वर्ष थी । पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था । पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नयून तपोनिष्ट त्यागी थे । वे शाप देने में समर्थ थे । स्त्रियां पतिव्रता थी । सुवर्ण का सिक्का चलता था । सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण ३०,००० थे । तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था ।

द्वापर युग :—माघ कृष्ण ३० को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई । इसकी आयु ८,६४,००० वर्ष थी । इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया । पुरुष की परमायु १,००० वर्ष थी, बाल्यावस्था १०० वर्ष थी । पुरुष का देहमान ७ हाथ था । ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे । अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे । चादी के सिक्के का व्यवहार अधिक था । कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था । पुण्य १० विश्वे था । सूर्य ग्रहण २४,००० और चन्द्र ग्रहण ३६,००० थे ।

कलियुग—भाद्र कृष्ण १३ को कलियुग की उत्पत्ति हुई । इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष है, इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं, उनका काम धर्म का उद्धार करना है । मनुष्य की परमायु १२० वर्ष और बाल्यावस्था १० वर्ष है । पुरुष का देहमान ३॥ हाथ है । पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे है, गंगा तीर्थ प्रधान है । इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा । सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे । ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे । क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे । वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे । धूर्त विद्या की पूजा होगी । सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६,००० होंगे । सं. २०४६ में कलियुग के ५०६० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४,२६,९१० वर्ष रहे हैं । कलियुग के अन्त में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा । कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी । अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी । व्यभिचारी स्त्रियां अपने को सती कहेंगी । पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे । पिता कन्या को बेचेंगे । स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे । लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे । संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा । धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा । मुख्य तीर्थ श्री गंगा होगी ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सम्वत्सर मध्ये राजादि दशाधिकारी शुभाशुभ फलम्

विकृतिनाम संवत्सर फलम्—प्रकृतिर्विकृति याति विकृतिः प्रकृतिंतथा। तथापिसुखिनोलोका भृशं विकृतिवत्सरे॥

इस वर्ष विकृति नामक सम्वत्सर में प्रकृति अपनी साम्यावस्था विरुद्ध विकृति (विकाल) रूप धारण कर लेती है और बहुतेरे विकृति भाव भी प्रकृति अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं। परिणामस्वरूप वर्षभर अनेक प्रकार के उपद्रव होते रहते हैं। फिर भी संसार के लोग ऐशपरस्ती में लिप्तायमान सौख्य समृद्धि का अनुभव करते हुए सुखी रहते हैं। राजनैतिक दलों के उच्चाधिकारी तथा राष्ट्रनायक परस्पर एक दूसरे को क्रूर दृष्टि से देखेंगे। इस वर्ष मानवता के प्रतिकूल विकृत भाव को प्राप्त हुए मदोन्मत दुराचारी, पापाचारी, तस्कर, उच्चके, लफंगे, चोर, अत्याचारी जन मन खूब पाप करेंगे। दो या दो से अधिक देशों में परस्पर युद्धादि, किसी विशेष प्रकार का उपद्रव हो जाए तो आश्चर्य नहीं। असामान्य विषम परिस्थितियों में तीनों प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ेगा। बड़ी मात्रा में प्रजा पलायन होगा। किसी राज्य, प्रान्त विशेष में उपयोगी वस्तुओं का अभाव अखरता रहेगा।

अखिलेश्वर काल के कर्त्ता अभियन्ता लोकनायक परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के दशाधिकारी राजा मन्त्री आदि का फल न्यूनाधिक मात्रा में सर्वत्र होता है। लेकिन राजा का प्रभाव सर्वाधिक वसुन्धरा का स्वर्ग भारत का ताज कश्मीर तथा अफगानिस्तान में होता है। ऐसे ही मन्त्री का पूर्व के देश कलिंग में, सस्येश का ईशान पूर्वोत्तर के मध्य विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कोंकण तथा गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, इसी प्रकार फलेश का पश्चिमी भूभाग पर कश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ फल घटित होता है। धान्येश तथा दुर्गेश का फल सर्वत्र एक समान होता है।

राजाभौमस्तत्फलम्—

भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिव विग्रहं च।
दुःख प्रजाव्याधि वियोग पीड़ा स्वल्पं पयोमुञ्चति वारिवाहाः॥

राजा मंगल का फल—इस वर्ष राजा एवम् प्रजाजनों में भयातंक व्याप्त होगा। बड़ी मात्रा में प्राणियों का क्षय होगा। विश्व व्यापी अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में अग्नि प्रकोप, यान, खान, विस्फोटादि दुर्घटना, भूकम्पादि महोत्पात से जनधन की क्षति होगी। चोरों का भय बढ़ेगा। कृषि में हानि और उद्योगों में उत्पादन कम होने से महँगाई बढ़ेगी। जनता में त्राहि-त्राहि मचेगी।

मन्त्रीरवि फलम्—

नृपभय गदतोपिहि तस्करात प्रचुरधान्यधनादि महीतले।
रसचयं हि समर्घतम सदा रविरमात्यपदं हि समागते॥

मन्त्री सूर्य का फल—आततायी राष्ट्रनायक के भय, रोगोपद्रवों से प्रजा भयभीत रहेगी। तस्कर, उच्चके, बलात्कारी मनमर्जी करेंगे। धन धान्य पर्याप्त मात्रा में होगा। सम्पूर्ण रस पदार्थ मन्दे बिकेंगे। कहीं फल-फूल, घृत, दुग्धादि की कमी से जनता को कष्ट होगा। राजविग्रह, आन्तरिक कलह सम्भव है।

सस्येशो बुधस्तत्फलम्—

जलधरा जलराशिमुचो भृशं सुखसमृद्धियुतं निरुपद्रवम्।
द्विजगणः श्रुतिपाठकरः सदा प्रथमसस्यपतौ सति बोधने॥

सस्येश बुध का फल—इस वर्ष समयोचित वर्षा अच्छी होगी। कृषि में पैदावार बढ़ेगी। अन्न के भावों में मन्दी भी होगी। सात्त्विक वृत्तिवाली जनता सुखशान्ति का अनुभव करेगी। द्विज लोग धार्मिक कृत्यों में तल्लीन देश में सत्कृत्यों को बढ़ावा देंगे। ज्ञान का उत्तम बोध होगा।

धान्येशश्चंद्रः फलम्—चन्द्रे धनाधिपे जाते प्रजावृद्धिः प्रजायते। गोधूमादि सर्वपाश्चैव गोषुक्षीरंतदा बहु॥

धान्येश चन्द्र का फल—विश्व की जनसंख्या में वृद्धि होगी। गेहूँ, जौ, तिलादि उत्पादन अच्छा होगा। गाय, भैंस, बकरी आदि दुधारू पशु अधिक दूध देंगे। वसुन्धरा पर मेघ वर्षा उत्तम करेंगे। जिससे सब धान्यादि पदार्थों की वृद्धि होगी। विभिन्न प्रकार के उत्सव घरों में होते रहेंगे।

मेघेश शनिः फलम्—

रविसुते जलदस्यपतौ भवेद्विरल वृष्टिवृतीवसुधा तदा।
मनसितापकरो नृपतिः सदा विविधरोगरता जनता मता॥

मेघेश शनि का फल—इस वर्ष पृथ्वी पर विरल वृष्टि होगी अर्थात् कहीं कम तो कहीं अधिक वर्षा के कारण क्षति उठानी पड़ेगी। राष्ट्रनायकों को सदैव सन्ताप बना रहेगा। जनता में नाना प्रकार के रोगों का प्रादुर्भाव होगा। दुष्ट राजा विस्तारवादी नीति पर चलेंगे। शोक बढ़ेंगे।

रसेश शुक्रस्तत्फलम्—

यजनयाजनकोत्सवकोत्सुका जनपदा जलतोषितमानसाः।
सुख सुभिक्षसुमोदवतीधरा धराणिपाहत पापगण प्रियाः॥

रसेश शुक्र का फल—जनता एवं द्विजमात्र सभी यज्ञोत्सवों में भाग लेने के लिए लालायत रहेंगे। समयोचित वर्षा अच्छी होगी। पृथ्वी पर सौख्य समृद्धि बढ़ेगी। शासन तंत्र के सुधार की रूपरेखा बनेगी। विश्व के अनेक भागों में पापकृत्यों की बढ़ोत्तरी होगी।

नीरसेशो बुधस्तत्फलम्—चित्र वस्त्रादिकश्चैव शंखचन्दनपूर्वकम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेतनीरसेशोबुधोयदि॥

नीरसेश बुध का फल—चित्र विचित्र वस्त्र, शंख, चन्दन, पन्नादि, हीरा, जवाहरात के भावों में तेजी होगी। खनिज पदार्थ भी इस वर्ष कम मात्रा में उपलब्ध होंगे। सभी चीजों के भावों में उत्तरोत्तर वृद्धि होती जायेगी। बढ़ती दिक्कतों से जनता दुःख पावेगी।

फलेशः शनिः फलम्—

यदि शनिः फलपः फलहाभवेज्जनित पुण्यगणस्य द्रुमः सदा।
हिमभयंवरतस्करजन्तुभी जनपदोगदराशि समाकुलः॥

फलेश शनि का फल—इस वर्ष समयोचित वर्षा की कमी से तृण, घास, फल, फूल की पैदावार कम होगी। मूल्यों में अकल्पित उलटफेर होगा। हिमपात, शीतलहर, तुषारपात नुकसान होगा। वायु विग्रह, कीट पतंगे आक्रमण करेंगे। चोर व असामाजिक तत्व आतंक फैलायेंगे।

धनेशोभौमः फलम्—

असममौल्यकरो धरणीसुतः शरदि तापकरस्तुषधान्यहन्न।
सहसि मासि भवेद्विगुणं तदा नरपतिर्जनशोक विधायकः॥

धनेश मंगल का फल—इस वर्ष तेजी-मन्दी की दो तरफा चाल चलेगी। जौ, गेहूँ, सरसों आदि की खेती में विशेष हानि होगी। शासनाधिकारी चिन्तित रहेंगे। आर्थिक संकट और भी गहरायेगा। मार्गशीर्ष में संग्रहीत वस्तुओं का आगे चलकर लाभ मिलेगा।

दुर्गेशः शनि फलम्—

रविसुते गढ़पालिनविग्रहैः सकल देश गताश्चलिताजनाः।
विविधवैरिविशेषितनागराः कृषिधनं शलभे मुषितंभुवि॥

दुर्ग के मालिक शनि का फल—इस वर्ष राष्ट्रनायक तथा प्रजाजनों में विग्रह, भारी कलह होगा। राज की छीना झपटी सम्भव है। कृषि कार्यों में टिड्डी, चूहा, कातरा का भय होगा। जनता पलायन करेगी। कई देश तथा प्रदेशों में नेतृत्व परिवर्तन सम्भव है।

वर्षनाम श्रावणः फलम्—

मनोल्हादं प्रकुर्वन्ति जनाः सौख्यसमायुताः।
श्रावणेवृष्टिरत्युग्रागोमहिष्यादिकं सुखं॥

वर्ष नाम श्रावण का फल—प्रजाजनों में हर्षोल्लास की वृद्धि होगी। पर्याप्त सौख्य समृद्धि बढ़ेगी। पय दुग्धादि की वृद्धि होगी। पशुओं की बढ़ोतरी होगी। समयोचित वर्षा होगी।

मेघनाम संवर्त फलम्—'संवर्तेजलपूरिता' इस वर्ष सम्वर्त नामक मेघ होने से धरा पर पर्याप्त मात्रा में जल की वृष्टि होने से पदार्थों की पैदावार अच्छी होगी।

रोहिणी निवास संधौ फलम्—'खंडवृष्टिश्च संधिषु' रोहिणी निवास सन्धि में होने से कहीं वर्षा कम तो कहीं अधिक होगी। कहीं बिल्कुल न होने से कृषि में पैदावार कम होगी।

समयनिवासो वाणिक्गृहेफलम्—''वणिकगृहे शुभनास्ति''—इस वर्ष संवत् का वासा वैश्य के घर होने से देश-विदेश में व्यापार खूब बढ़ेगा। व्यापारी वर्ग लाभान्वित होगा। चोर, उचक्के, तस्कर, घोटालेबाज, मौजमस्ती करेंगे।

ग्रहों की आकाशीय कौंशिल का विचार सं. २०५४ वि.

चान्द्र सम्वत्सर विक्रमाब्द २०५३ चैत्र कृष्ण पक्ष अमावस्या तिथि दिन सोमवार तदनुसार ता. ७ अप्रैल सन् १९९७ ई. भारतीय स्टेण्डर्ड टाईम के अनुसार घं. १६ मि. ३६ बजे जालन्धर समयानुसार इष्ट घट्यादि २६। ० पर सम्वत् २०५४ विक्रमी का शुभारम्भ सिंह लग्न एवम् मीन राश्यान्तर्गत हो रहा है। ग्रहगोचर दृष्टव्य कुण्डली आगे दी गई है। वर्ष लग्न सिंह है जिसका स्वामी राजतन्त्र का कर्त्ता ग्रह सूर्य

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्ष प्रवेश लग्नम्

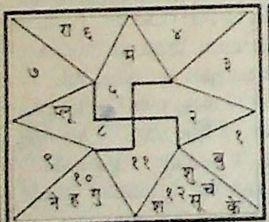

सौर जगत लग्नम्

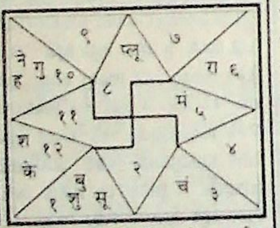

म्लेच्छ ग्रह संयोग (पञ्चग्रही) योग में अष्टमभाव स्थिति अति बलहीन है। स्मरण रहे—इस वर्ष ग्रहपरिषद् के चुनाव में परमपिता परमात्मा की आज्ञा से भुवनभास्कर भगवान् सूर्य देव मन्त्री पद पर अभिषिक्त हुए हैं। संवत् २०५४ सन् १९९७ व १९९८ के लिए राजा मंगल को बनाया गया है। वर्षारम्भ कुण्डली में भाग्येश और कर्मेश अर्थात् विश्व का भाग्यविधाता और कर्म का कर्त्ता बनकर पाप ग्रह मंगल वर्ष लग्न में बलवान होकर बैठा है। जिसका प्लूटो यम और पंचग्रही योग से पूर्ण दृष्टि (अनुपूरक) सम्बन्ध बना हुआ है। वर्ष कुण्डली में शुभग्रहों का अस्तित्व प्रायः लुप्त है। मंगल और प्लूटो (यम) ये दोनों ग्रह अपने स्वभाव का खुलकर विस्तार करने में सक्षम होंगे। अतः वसुन्धरा पर युद्ध अन्यान्य आपदावसात भयंकर रक्तपात हो जाए तो आश्चर्य नहीं। पञ्चग्रही योग का फल पूर्वाचार्यों ने इस प्रकार लिखा है, यथा—

एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्चखेचराः।
प्लावयन्तिमही सर्वारुधिरेण जलेन वा॥

अनुभव से भी यह देखा गया है कि जब-जब अन्तरिक्ष में चार या पांच ग्रह किसी एक राशि में गमन करते हैं तब-तब पृथ्वी के विभिन्न हिस्सों (देशों) में कहीं ना कहीं जानलेवा उपद्रव होते रहते हैं। कहीं सत्ता हस्तान्तरण की लड़ाई लड़ी जाती है। मानव जन्य दुष्कर्मों का परिपाक होकर प्राकृतिक आपदा के रूप में परिणित होकर जानलेवा सिद्ध होती है। कहीं जल अधिक बरसता है, कहीं आंधी तूफान, बडम्बर उठ खड़े होते हैं। कहीं भूमिकम्पन, दिग्दाह, वज्रघोष तो कहीं अस्त्र-शस्त्रों की भयंकर आवाजें गूंजने लगती हैं। कहीं नाना प्रकार के रोगों का प्रादुर्भाव होता है तो कहीं विस्फोट जन्य असामान्य विषम परिस्थितियों में से गुजरना पड़ता है। इस वर्ष अकल्पित राजनैतिक उलटफेर होंगे। अनिश्चितता की स्थिति में देश की सम्प्रभुता का ह्रास होता जायेगा—

राजा मंगल पाप ग्रह, मन्त्री रवि लाचार।
राजनीति सह द्वन्द से, नैतिक पतन विचार॥

इस वर्ष, वर्ष प्रवेश कुण्डली और सौर जगत लग्न कुण्डली के केन्द्र स्थान १। ४। १० में युद्धप्रिय, कलह प्रिय, अत्याचार प्रिय, घोटालाप्रिय, तस्करीप्रिय, मादावर्ग तिरस्कार प्रिय, बालहत्याप्रिय और सभी प्रकार के बलात्कार, चोरी, डाका प्रिय, तामस और राजस वृत्ति के पापग्रह मंगल और यम बैठे हैं। ये दोनों अपने स्वभावानुकूल उत्कावृत्ति के समस्त कृत्यों को इस वर्ष खूब बढ़ावा देंगे। राष्ट्रीय सम्प्रभुता का खुले आम दुरुपयोग होगा। कहीं अछूतोद्धार के नाम पर तो कहीं गरीबों के उत्थान के नाम पर तो कहीं अन्याय बहाने बतौर धन खूब खर्च किया जायेगा। मंगल युद्ध प्रिय ग्रह है सो यह अस्त्र-शस्त्र संग्रह कराने पर भी खूब दिल खोलकर खर्च करवायेगा। पश्चिमोत्तरीय भारतीय सीमा पार से अक्षोभनीय वारदातें बर्दास्त से बाहर होंगी। युद्ध के काले बादल मंडराते नजर आयेंगे। अगर बरसने भी लगे तो आश्चर्य नहीं करना चाहिए।

वर्ष प्रवेश कुण्डली के सुखस्थान केन्द्रगत वृश्चिक का यमग्रह भारतीय राजनीति में नया मोड़ देगा। अयोग्य व्यक्तियों को उच्च पदों पर आसीन करवायेगा। दिशाहीन राजनीति सत्तारूढ दल की नय्या डगमगाने लगेगी। भावी युद्ध का बीजारोपण भी इसी वर्ष होगा। सत्पुरुष सुयोग्य सज्जनों का खुलेआम अपमान होने लगेगा। निम्नलिखित पंक्तियाँ सत्य सिद्ध होंगी—

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यानाम च व्यतीक्रमः।
गोण तीन भविष्यन्ति दुर्भिक्षं मरणं भयम्॥

इस वर्ष चैत्र शुक्ल षष्ठी रविवार तदनुसार ता. १३ अप्रैल १९९७ ई. रात्रि १० बजकर ५४ मिनट पर भुवनभास्कर भगवान् सूर्य देव का सप्ताश्वजुत रथ अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में प्रवेश करेगा। तत्कालीन गोचरग्रह स्थिति की वृश्चिक लग्नवाली कुण्डली विगतपृष्ठ पर दृष्टव्य है। जिसमें विश्वात्मा जगत्चक्षु सूर्य मलेच्छ ग्रह शुक्र के साथ निर्बल स्थान में है। और मन के कर्त्ता चन्द्रमा आठवें घर में शनि प्लूटो से दृष्ट अति विकल हैं। यह गोचर ग्रह स्थिति विश्वव्यापी अन्तर्राष्ट्रीय जगत के लिए श्रेष्ठ नहीं है। दो बड़े देशों में विभाजन जन्य असामान्य विषम परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। कई देश मिलकर किसी एक देश को अपने कोप का भाजन भी बना सकते हैं। स्वदेश में विदेशी कम्पनियों का जमावड़ा घातक सिद्ध होगा।

संवत् २०५४ शाके १९१९ आषाढ कृष्णपक्ष प्रतिपदा शनिवार तारीख २१ जून, १९९७ ई. रात्रि घं. २ मि. ३ बजे के आसन्न भगवान् सूर्य देव मेष लग्न और धनु राशिस्थ चन्द्र के रहते हुए आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। तत्कालीन गोचर ग्रह स्थिति की कुण्डली साथ में दृष्टव्य है। आर्द्रा प्रवेश की मेष लग्न अग्नितत्व कारक है तो उक्त समय में सूर्य+बुध+शुक्र का संयुक्त योग वायुतत्व प्रधान राशि में बना है। धनु राशि (अग्नि) गत चन्द्रमा त्रग्रही योग से देख रहा है। यह ग्रह संयोग आर्द्रा में रहते हुए सूर्य के पृथ्वी पर भयंकर अग्निदाह, बडम्बर, आंधी, तूफान, मेघाडम्बर का परिचायक है। इस योग से जहाँ तहाँ वर्षा न के बराबर हुआ करती है। जुलाई के प्रथम तथा दूसरे सप्ताह में सभी जगह न्यूनाधिक मात्रा में वर्षा होगी। जुलाई में दक्षिण भारत में अच्छी वर्षा के योग बन रहे हैं। ५ से २० जुलाई आषाढ मास के शुक्ल पक्ष में सूर्य के आगे शुक्र-बुध चलेंगे, फल इस प्रकार लिखा है—**सूर्याग्रे च यदा शुक्रस्तदा वृष्टिः सुशोभना॥** पुनर्वसु में सूर्य प्रवेश के समय चन्द्र चन्द्र नक्षत्र संयोग तथा वर्षा का वाहन अश्व होने के कारण प्रबल वायुवेग, मेघाडम्बर के साथ

आर्द्रा प्रवेश लग्नम्

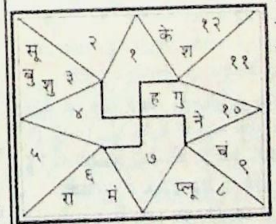

अच्छी वर्षा होगी। **आषाढ़े शुक्ल पक्षे च द्वितीया नवमी दिने। चन्द्रेन्ग्य भृगुवाराः स्यु सुवृष्टिश्च समर्घताः॥** इस पक्ष में अच्छी वर्षा हो तो दैनिक उपयोगी वस्तुओं के भावों में गिरावट आयेगी। यदि अवर्षण हो तो महँगाई और भी बढ़ जाती है। **२१ जुलाई से १८ अगस्त** के मध्य अन्तरिक्ष में बनने वाले गोचर ग्रहों के प्रभाव से कहीं घनघोर वर्षा होगी तो कहीं अल्पवृष्टि होगी। पूर्वी प्रदेशों और मरुप्रदेशों तथा पर्वतीय प्रदेशों में बाढ़ की आशंका जाननी चाहिए। राज्य सरकारों को पहले ही राहत कार्यों की समीक्षा कर लेनी चाहिए। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में सिंह का शुक्र व तुला राशि में मंगल गतिशील रहेगा और आमने-सामने सूर्य-गुरु का योग चलेगा। अन्तरिक्ष में जब यह योग बनता है तब वसुन्धरा पर धूल वर्षण होती है। वायु अति तीव्रगति से वहती है, जैसा कि पूर्वाचार्यों ने लिखा है—

सिंहशुक्रस्तुला भौमः कर्के जीवो यदा भवेत्।
धूलिवर्षा महान वायुर्भवेद्धान्यमहार्घताः॥

उपरोक्त योग का पूर्णफल तो इसलिए घटित नहीं होगा क्योंकि गुरु मकर राशि में हैं लेकिन वर्षा की कमी अवश्य करेगा। भाद्रपद मास में उन्नीस अगस्त से आगे गोचर ग्रहों के बनने वाले योग अच्छी वर्षा होने के परिचायक हैं। भादों के शुक्ल पक्ष में तुला का शुक्र सम्प्रदाय (जनसमूहों) में मतभेद तो पैदा करेगा लेकिन सुवृष्टि के साथ-साथ सौख्य समृद्धि का प्रादुर्भाव भी होगा।

यदादैत्यगुरुश्चैव तुला राशि प्रवर्तते।
मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किंचित्किंचिविरोध कृत्॥

इस वर्ष के कुल योग मिलाकर मध्यम फलदायक हैं अतः पूर्वापेक्षा पृथ्वी पर अन्न, फल फूल, विभिन्न उपयोगी वस्तुओं की पैदावार अधिक होगी। खनिज पदार्थ तथा कल-कारखानों में उत्पादन कम होगा। भारत देश में विदेशीपन का बोलवाला होता जायेगा। विदेशी कम्पनियों के माध्यम से देश का दोहन होगा। धीरे-धीरे भारतीयों में अकर्मण्यता का आवरण छाता जायेगा।

गणतन्त्र लग्नम्

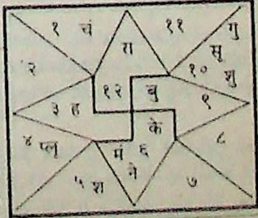

शुभ सम्वत् २००६ माघ शुक्ला अष्टमी गुरुवार तारीख २६ जनवरी सन् १९५० ई. इष्ट घट्यादि ७। ३७ पर भारतीय गणतन्त्र (गणराज्यो स्वराज) की घोषणा मीन लग्न एवं मेष राशि में चन्द्र संचार के समय हुई थी। तत्कालीन मीन लग्न की कुण्डली साथ में दृष्टव्य है। उस

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

समय की आकाशीय ग्रह स्थिति का अवलोकन कुण्डली में कर सकते हैं।

आगामी ४९ वें गणतन्त्र का आरंभ २६ जनवरी, १९९८ ई. माघ कृष्ण पक्ष त्रयोदशी सोमवार को पूषा नक्षत्र, हर्षण योग और विष्टि करण विहितकाल नवीन मानानुसार वारेष्ट २।२५।५८ घं. १७ मि. ३९ बजे पर हो रहा है। ४९ ऽब्द प्रवेश कर्क लग्न जालन्धर में ३।९।१९।४ पर स्पष्ट हो रहा है। साथ में कर्क लग्न तथा मकर राशि की कुण्डली दृष्टव्य है।

४९ वाँ वर्ष गणतन्त्र लग्नम्

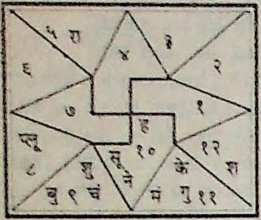

४९वें गणतन्त्र लग्न का स्वामी चन्द्रमा पाप कर्तरी योग में यम से दृष्ट नेष्ट फलदायक है। राजस्वविभाग, भाग्यस्थान, कर्मक्षेत्र और सुख का स्वामी सभी निर्बल स्थिति में हैं। राष्ट्र की कुल सम्प्रभुता के खाने में राहु बैठा है। राष्ट्र की सबल शक्ति तार्किक बुद्धिस्थान पर प्लूटो यम ने कब्जा कर लिया है। अतः इस वर्ष बनने वाले सभी ग्रह योग गणतन्त्र के लिए शुभ संकेत नहीं हैं।

क्रूर पाप के मध्य में, मंगल केतु संग।
अनहोनी होवे तभी, होय किसी से जंग॥

भारत के कर्णधारों को चाणिक्य का सूत्र ध्यान में रखते हुए बहुत ही सीमावर्ती क्षेत्रों में सावधानी बरतनी चाहिए। सैन्यबल बढ़ाना चाहिए। गणतन्त्र कुण्डली में बननेवाले योग को विश्वासघाती योग भी कहा जा सकता है। विदेशी कम्पनियों का स्वदेश में बढ़ता वर्चस्व भी शुभ लक्षण नहीं। मीन का शनिश्चर और वर्ष के पूर्वार्ध में मलेच्छ केतु का संग सात्त्विक प्रवृत्ति वाले देश तथा समुदायों के लिए कोढ़ में को खाज तुल्य कष्ट दायक है। ईश्वरीय योगमाया से अनुनयविनय है कि राष्ट्र नायकों को सद्बुद्धि दें। सभी विश्व कल्याण के मार्ग पर चलें। राष्ट्र क्षोभरहित समृद्ध बने।

विश्वामान

समय विश्वा १२, समय वाहन वृषभ, स्तंभ २ वायु और अन्न, सोमवती अमावस्या २, सोम पंचमी ४, अङ्गार की चतुर्थी ४, बुधाष्टमी ६, भानुसप्तमी ३, रविदशमी ३, समयमुहूर्ताः ३६०, समयदिनानि ३५५, तिथि क्षय १५, तिथि वृद्धि ८, उत्पत्ति विश्वा ९६, खपत्तिविश्वा १०८, वर्षाविश्वा ११, धान्य विश्वा ९, तृण विश्वा १७, शीत ९, तेज ११, वायु १३, वृद्धि विश्वा ११, क्षयविश्वा १६, विग्रह विश्वा ११, एक्यम १११, सत्य आधा, धर्म ड्योढ़ा, पापविश्वा १८, शनि दृष्टि उत्तर में, ग्रहण तीन, भारत में १ चन्द्र ग्रहण। त्वष्ट दैवतयुगम्। वर्षनाम श्रावणः। मेघनाम संवर्तः, रोहिणी निवास सन्धिगत। समयनिवास वैश्य के घर शुभाशुभ चिन्तनीयम्।

॥ अथ (विन्ध्य से दक्षिणवासियों के लिए) अष्टोत्तरी मतेनाय-व्यय चक्रम्॥

राशि नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	८	२	५	१४	२	५	२	८	११	१४	१४	११
व्यय	१४	८	५	२	१४	५	८	१४	५	१४	१४	५

॥ अथ (विन्ध्य से उत्तर वासियों के लिए) विंशोत्तरी मतेनाय-व्यय चक्रम्॥

राशि नाम	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	२	११	२	११	१४	२	११	२	१४	८	८	१४
व्यय	१४	५	५	१४	११	५	५	१४	२	५	५	२

संवत् २०५४ वि. में शनि की साढ़ेसाती ढैय्या विचार

८ अप्रैल १९९७ ई. से २८ मार्च १९९८ ई. तक इस वर्ष संवत् २०५४ वि. में शनिग्रह मीन राशि में ही भ्रमण करता रहेगा। रेवती नक्षत्र के चारों चरणों को प्रभावित करेगा। २ अगस्त को वक्री होकर १७ दिसम्बर को मार्गी होगा, अर्थात् अपनी कक्षा में सीधा गमन करने लगेगा। खलग्रह शनि अपने वक्रत्वकाल में तहलका मचवायेगा। जिन जातकों का रेवती नक्षत्र व मीन राशि है उन्हें शनि शान्त्यिर्थ उपायों पर विचार करना चाहिए। छायादान, बन्दरों को चना, गुड़ खिलाना, शनि स्त्रोत का पाठ या महामृत्युञ्जय जाप आदि करवाना चाहिए।

मीन के शनि का राशि फल

मेष—शिर पर चढ़ती शनि की साढ़ेसाती अतिनेष्ट फलदायक है। इस वर्ष पूर्वापेक्षा लाभ कम होगा। अनावश्यक-आवश्यक कार्यों में धन अधिक लगेगा। चाँदी पादफल उत्तम होने से नये कारोबार का संयोग बनेगा। ललित कलाओं के प्रति मनाकर्षण होगा। शत्रुजनित षड्यन्त्र लोकोपवाद की आशंका से बचे रहना चाहिए। शनिस्त्रोत का पाठ छायादान करना, बन्दरों को गुड़, चना खिलाना न भूलना।

वृष—राशि वालों के लिए लाभ स्थान में पधारे शनि ग्रह लोह पादफल नेष्ट, मतान्तर से श्रेष्ठ है। अतः इस वर्ष आगम प्राप्ति का मार्ग अवरुद्ध होने से चिन्ता व्यापेगी। नई योजना सफल होने से हर्षोल्लास होगा। घूमने-फिरने का विचार बनेगा। स्टील, लोहादि से सम्बन्धित काम का लाभ होगा। राजनैतिक विजय मिलेगी। घर गृहस्थी में सरसता बनाये रखें।

मिथुन—राशिवालों को दशम कर्म क्षेत्र में गतिशील शनि इस वर्ष व्यवसायिक क्षेत्र में गड़बड़ी पैदा करता रहेगा। नये कारोबार के माध्यम से तथा राजनैतिक पुरुषार्थ परिपूर्ण राजनैतिक कामों में सम्मान बढ़वायेगा। हर्ष विषाद में समय लगेगा।

कर्क—भाग्य भवन में गतिशील शनि का स्वर्णपाद फल नेष्ट है। बनते बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। शत्रु षड्यन्त्र रचना में सफल होंगे। नये काम के तहत भाग्य का सितारा चमकेगा। मान सम्मान हानि का संयोग बनेगा।

सिंह—से आठवें भाव में गतिशील शनि चाँदी पाद फल शुभ है। शत्रु पराभव होगा। पुराने ऋण रोगोपद्रव से राहत मिलेगी। नवनिर्माण तथा घूमने फिरने की इच्छा बलवंती होगी। गुप्त शत्रु से सावधान रहना चाहिए।

कन्या—राशि वालों को सातवाँ शनि आया लोहा के पाया से मध्यम फलदायक है। बनते बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। विरोधी किस्म के लोग नुकसान करवायेंगे, तो मित्र भाव रखनेवालों से लाभ होगा। आय व्यय का सन्तुलन बना रहेगा।

तुला—शत्रुक्षेत्री शनि का ताम्रपाद फल अच्छा होने से विरोधियों पर जीत हासिल होगी। नई योजना कामयाब होगी। सोच विचार कर कामों को करें। शत्रु कुचाल से बचे रहें। असावधानी बरतने से कार्य हानि सम्भव है। कही सुनी बातों पर ध्यान न दें।

वृश्चिक—पंचम बुद्धि स्थान (सन्ततिभाव) में शनि का भ्रमण चांदीपाद से भौतिक विकास में सहायक है। जमा खर्च का सन्तुलन बना रहेगा। घर गृहस्थी में सन्तानादि के दुःख सुख समान उपस्थित होंगे। ज्ञानार्जन के विषय में मेहनत से सफलता मिलेगी।

धनु—राशि वालों को चौथा शनि लघु कल्याणी ढैय्या स्वर्णपाद फल श्रेष्ठ नहीं है। घर परिवार बन्धु बान्धवों से सम्बन्धित दुःख सुख समान उपस्थित होते रहेंगे। भाग दौड़ काफी करनी पड़ेगी। कोर्ट कचहरी के कामों से बचे रहना चाहिए। लाभ खर्च के मामले में सावधानी बर्तनी चाहिए।

मकर—तृतीय पराक्रम भाव में लौहपाद से शनि भ्रमण का फल मध्यम है। दिन रात्रि चर्य्या अव्यवस्थित न होने दें। बनते बिगड़ते परिवेश में नये आयाम मिलेंगे। राजनैतिक जोड़ तोड़ में उलझ सकते हैं। पारिवारिक समस्या मिलजुलकर सुलझाने की कोशिश करें।

कुम्भ—से उतरती पैरों पर शनि की साढ़े साती ढैय्या स्वर्णपाद फल नेष्ट है। अनावश्यक दौड़ धूप से बचे रहना चाहिए। चौपाया पशु या वाहनादि का डर रहेगा। शनि शान्ति दानोपाय करते रहने से विकास को बल मिलेगा। लम्बी यात्रा का सुख होगा। कठिनाई से पदोन्नति का अवसर मिलेगा।

मीन—राशिवालों को ताम्रपाद से चलने वाली हृदय पर बीच की ढैय्या कष्ट कारक है। भौतिक विकास में गतिरोध होगा। मन अशान्ति अन्य व्यवधान से क्षोभ होगा। दुष्प्रभाव निवृत्ति हेतु दानोपाय करते रहने से चल रहे सामयिक कार्यों को बल मिलेगा। लोकोपवाद, शत्रुजनित षड्यन्त्र से बचे रहना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लाभकारी नवग्रह यंत्र

अथ नव ग्रह-शान्ति स्तोत्रम्:

जगद्गुरुंनमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरु भाषितम्। ग्रह शांति प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे॥ जिनेन्द्राःखेचरा ज्ञेया, पूजनीया विधिक्रमात्। पुष्पैर्विलेपनंधूपैनैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे॥ पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रप्रभस्य च॥ वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधश्चाष्टिजिनेशिनां॥ विमलानन्त धर्मेश, शांति कुन्थुर्नेस्तथा। वर्धमानजिनेन्द्रस्य, पादपद्मंबुधोनमेत्॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा:, साभिनन्दनशीतलौ। सुमतिः सम्भवस्वामी, श्रेयांसेषु बृहस्पतिः॥ सुविधिः कथितः शुक्रे, सुव्रतश्च शनिश्चरे। नेमनाथो भवेद्राहोः केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयो:॥ जन्म लग्नं च राशि च, यदि पीडयति खेचराः। तदा संपूजयेत् धीमान्, खेचरान् सह तान्जिनान्॥ आदित्य सोममंगल, बुधगुरु शुक्रे शनि:(?) राहु केतु भेखाग्रेया जिन पूजाविधायक:॥ जिना नमोग्न तपोहि, ग्रहाणां तुष्टिहेतवे। नमस्कारशतं भवक्त्या जपेदष्टोत्तर-शतं॥ भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी, पंचमः श्रुत केवली। विद्याप्रसादतः पूर्व, ग्रह शांतिं विधिः कृत्ता॥ यः पठेत् प्रातरुत्थाय, शुचिर्भूत्वा समाहितः। विपत्तितो भवेच्छांतिः, क्षेमं तस्य पदे पदे॥

नवग्रहों के जाप्य

१. सूर्य्यमहा ग्रह मन्त्र

१. ॐ नमो भगवते श्रीमते पद्मप्रभुतीर्थ कराय कुसुलयक्ष मनोवेगा यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: आदित्यमहाग्रह (मम कुटुम्बवर्ग) सर्व दुष्ट ग्रह रोग कष्ट निवारणं कुरू कुरू सर्व शांति कुरू कुरू सर्व समृद्धि कुरू-कुरू इष्ट संपदा कुरू कुरू अनिष्ट निरसनं कुरू कुरू धन धान्य समृद्धि कुरू कुरू काम मांगल्योत्सवं कुरू कुरू हूं फट्॥ ७००० जाप्य॥

२. **मध्यम मंत्र:**- ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्री पद्म प्रभुजिनेन्द्राय नम: शांति कुरू कुरू स्वाहा॥ जाप्य ७०००॥

३. **लघु मंत्र:**- ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं॥ १०००० जाप्य॥

२. सोम महाग्रह मन्त्र

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चन्द्रप्रभु तीर्थं कराय विजय यक्ष ज्वालामालिनी यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: सोम महाग्रह मम दुष्ट ग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरू कुरू हूं फट् ॥११००० जाप्य॥

२. **मध्यम मंत्र:**- ॐ ह्रीं क्रों श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय नम: शांति कुरू कुरू स्वाहा॥ ११००० जाप्य॥

३. **लघु मंत्र:**- ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं॥ जाप्य १००००॥

३. मंगल महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते वासुपूज्य तीर्थं कराय षण्मुखयक्ष गांधारीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: मंगल कुज महाग्रह मम-दुष्ट ग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरू कुरू हूं फट्॥१०००० जाप्य॥

२. **मध्यम मंत्र:**- ॐ आँ क्रों ह्रीं श्रीं क्लीं भौमारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नम: शांति कुरू कुरू स्वाहा॥१०००० जाप्य॥

३. **लघु मंत्र:**-ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं॥१०००० जाप्य॥

४. बुध महाग्रह मंत्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मल्ली तीर्थंकराय कुबेरयक्ष अपराजिता यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: बुधमहाग्रह मम दुष्ट ग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरू कुरू हूं फट्॥१४००० जाप्य॥

२. **मध्यम मन्त्र:**-ॐ ह्रीं क्रौं आँ श्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल अनंतधर्म शांति कुन्थुअरह नमिवर्धमान अष्टजिनेंद्रेभ्योनम: शांतिं कुरू कुरू स्वाहा॥ ८००० जाप्य॥

३. **लघु मन्त्र:**-ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं॥१०००० जाप्य॥

५. गुरु महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमान तीर्थंकराय मातंगयक्ष सिद्धायिनीयक्षी सहिताय ॐ क्रों ह्रीं ह: गुरु महा ग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्टनिवारणं सर्व शांति च कुरू कुरू हूं फट्॥१९००० जाप्य॥

२. **मध्यम मन्त्र:**-ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गुरु अरिष्टनिवारक ऋषभ अजितसंभवअभिनंद सुमति सुपार्श्वशीतल श्रेयांस अष्टजिनेंद्रेभ्योनम: शांतिं कुरू कुरू स्वाहा॥१९००० जाप्य॥

३. **लघु मन्त्र:**-ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं॥१०००० जाप्य॥

६. शुक्र महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पुष्पदंत तीर्थं कराय अजितयक्ष महाकालीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: शुक्र महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरू कुरू हूं फट्॥१६००० जाप्य॥

२. **मध्यम मन्त्र:**-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक्र अरिष्ट निवारक श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय नम: शांतिं कुरू कुरू स्वाहा॥ ११००० जाप्य॥

३. **लघु मंत्र:**-ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं ॥१०००० जाप्य॥

७. शनि महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनि सुव्रततीर्थं कराय वरुण यक्ष बहुरूपिणीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं: ह: शनिमहाग्रह मम दुष्ट ग्रह रोग कष्ट निवारण सर्व शांतिं च कुरू कुरू हूं फट्॥२३००० जाप्य॥

२. **मध्यम मंत्र:**-ॐ ह्रीं क्रौं ह: श्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नम: शांतिं कुरू कुरू स्वाहा॥२३००० जाप्य॥

३. **लघु मंत्र:**-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥१०००० जाप्य॥

८. राहु महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नेमितीर्थं कराय सर्वाण्हयक्ष कुष्मांडीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रौं ह्रीं: ह: राहुमहाग्रह मम दुष्ट ग्रह रोग कष्ट निवारण सर्व शांति च कुरू कुरू हूं फट् ॥१८००० जाप्य॥

२. **मध्यम मंत्र:**-ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ह राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमीनाथ जिनेंद्राय नम: शांतिं कुरू कुरू स्वाहा॥ १८००० जाप्य॥

३. **लघु मंत्र:**-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥१०००० जाप्य॥

९. केतु महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थं कराय धरणेंद्र यक्षपद्मावतीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रौं ह्रीं ह: केतुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरू कुरू-फट्॥७००० जाप्य॥

२. **मध्यम मंत्र:**-ॐ ह्रीं क्लीं ऐं केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय नम: शांतिं कुरू कुरू स्वाहा॥७००० जाप्य॥

३. **लघु मंत्र:**-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥१०००० जाप्य॥

नोट:- जो सज्जन समय अभाव के कारण जप आदि करने में समर्थ नहीं, वे हमारे कार्यालय से ग्रह शान्ति के अलग-अलग ताम्र यंत्र मंगवा कर लाभ उठावें। जिन सज्जनों ने इन यंत्रों को मंगवाया उन के प्रशंसा पत्र हमें समय-समय पर प्राप्त हुऐ और यंत्र धारकों ने इसे भविष्य में देते रहने का अनुरोध भी किया। अपने पाठकों की रुचि व अनुरोध को ध्यान में रखते हुऐ हम कुछ सीमित यंत्रों को दीपावली व होली के पवित्र पर्वों पर तैयार करते हैं। आप जल्द ही समय के रहते इन यंत्रों को मंगवाने के लिये जवाबी पत्र द्वारा सम्पर्क करें अन्यथा साल भर इन्तजार करना पड़ेगा।

कीमत तांबे के सिद्ध यन्त्र

सिद्ध यन्त्र	५५१/-	छोटे सिद्ध यन्त्र	३५१/-
शनि साढ़सती यन्त्र	५५१/-	छोटा शनि साढ़सती यन्त्र	३५१/-
डाक खर्च अलग		अति स्पेशल	७५१/-

पता: धर्मसन प्रकाशन. 2596,
नई सडक. दिल्ली-110006
☎ 3285234, 3264986

शास्त्रीय-विधि-विधान द्वारा शुभ मुहूर्त में निर्मित ताम्र यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

शास्त्रीय-विधि-विधान द्वारा यंत्र-मंत्र-तंत्र की साधना मानव जीवन में बहुत ही चमत्कारी व अमूल्य परिवर्तनकारी होती है। पूर्व कर्मों के अशुभ फल, अभिशाप, संकटों का समाधान, अशुभ ग्रहों की शान्ति एवं सुख-सौभाग्य की वृद्धि कर जीवन में सुख-समृद्धि को देने वाले ये सिद्ध चमत्कारी यंत्र होते हैं। यंत्रों की प्राण प्रतिष्ठा और जप आदि विधिवत् करने पर ही ये पूर्ण फलकारी होते हैं। शास्त्रीय विधि विधान से ताम्र पत्रों पर इन अमूल्य यंत्रों का निर्माण करते हैं और आर्डर मिलने पर सप्लाई करते हैं। हम इस कार्य को पिछले १२१ वर्षों से कर रहे हैं। इन ताम्र यंत्रों का मूल्य ३५१/- (३"X३" आकार) तथा ५५१/- (५"X५" आकार) डाक खर्च १५ रु. सहित अग्रिम भेजें। नोट: इन यंत्रों को वी.पी.पी. नहीं भेजी जाती। जिन सज्जनों को आध्यात्मिक शक्ति एवं यंत्रों पर विश्वास हो वे ही सज्जन यंत्रों को मंगवाकर लाभ उठा सकते हैं।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली - 110006 ☎ 3285234, 3264986

यंत्र सूची

१. श्री सूर्य यन्त्र	६. श्री शुक्र यन्त्र	१३. श्री नव दुर्गा यन्त्र	२०. श्री कुबेर यन्त्र
२. श्री चन्द्र यन्त्र	७. श्री शनि यन्त्र	१४. श्री नव ग्रह यन्त्र	२१. श्री सरस्वती यन्त्र
३. श्री मंगल यन्त्र	८. श्री राहु यन्त्र	१५. श्री महा मृत्युंजय यन्त्र	२२. श्री व्यापार वृद्धि यन्त्र
४. श्री बुध यन्त्र	९. श्री केतु यन्त्र	१६. श्री सुख-समृद्धि यन्त्र	२३. श्री गुरु प्रसाद यन्त्र ताबीज में
५. श्री बृहस्पति (गुरु) यन्त्र	१०. श्री लाभ यन्त्र	१७. श्री कनक धारा यन्त्र	२४. श्री नव ग्रह युक्त बीसा यन्त्र
	११. श्री महालक्ष्मी यन्त्र	१८. श्री भैरों यन्त्र	२५. श्री पंद्रहिया यन्त्र
	१२. श्री दुर्गा बीसा यन्त्र	१९. श्री कार्य सिद्धि यन्त्र	२६. श्री गोपाल यन्त्र
			२७. श्री मनोकामनापूर्ण यन्त्र

एक यन्त्र का मूल्य इस प्रकार है, सिद्ध यन्त्र - ३५१/-, सिद्ध यन्त्र स्पेशल ५५१/
पावर फुल स्पेशल ७५१/-, डाक खर्च अलग.

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली - 110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साढ़े पांच बजे (प्रातः ५ बजकर ३० मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम साढ़े पांच बजे के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने १५ अगस्त १९९६ शाम रात्रि १२ बजे का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है। इसके लिए १६ अगस्त प्रातः ५-३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ५.३० घंटे की गति घटायेंगे। १६ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२९-३५-४५) में से १५ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२८-३८-०४) घटा देने से २४ घंटे की गति पता चलेगी जोकि ५७।४१ कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें ५७ कला के सामने ५ घंटे के नीचे हमें ११.५३ मिले। इसमें ३० मिनट की गति १।११ कलादि जमा कर देने से हमें १३।०४ कलादि योग प्राप्त हुआ। अब ४१ विकला (५७।४१) के संस्कार समीपस्थ ४१ कला के (५.३० घंटे) संस्कार ९ विकला जमा कर देने से हमें १३।१३ कलादि ५ घण्टे ३० मिनट की गति प्राप्त हुई इसको १६ अगस्त साढ़े पांच के सूर्य स्पष्ट (३।२९।३५।४५) में से घटा देने से रात्रि १२ बजे का सूर्य स्पष्ट ३/२९/२२/३२ राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं। **मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।**

५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का ग्रह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया प्रथक प्रथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये **१५ अगस्त सन् १९९६ को रात्रि के १२ बजे** ग्रह स्पष्ट करने हैं।

मार्गी ग्रहों के लिए: सूर्य: १५ अग. के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२८।३८।४ है और अगले दिन १६ अगस्त के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२९।३५।४५ है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रहस्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं-यहां १६ तारीख के सूर्य स्पष्ट में से १५ तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

		रा.	अं.	क.	वि.
१६ ता. को सूर्य स्पष्ट		३	२९	३५	४५
१५ ता. के सूर्य स्पष्ट घटाएं	(-)	३	२८	३८	०४
		०	०	५७	४१

अतः ५७' कला ४१'' विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। ५७'-४१'' के विकला बनाये: ५७x६०+४१= ३४६१ विकला। सूर्य की यह गति १५ ता. के ५-३० बजे से १६ ता. के ५-३० बजे तक २४ घंटे (१४४० मि.) की है। अब अपने इष्ट समय रात्रि १२ बजे में से ५-३० बजे को घटाया तो समयान्तर १८ घंटे ३० मिनट (१११० मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की- १४४० मि. में सूर्य की गति ३४६१ विकला है। १११० मि. में सूर्य की गति =३४६१×१११०÷१४४० = २६६८ विकला = २६६८÷६० कला = ४४ कला २८ विकला ४४'२८'' इसको १५ अगस्त के सूर्योदय में जोड़ दें।। (३-२८-३८-४)+(४४-२८)=३-२९-२२-३२ अतः १५ अगस्त की **रात्रि १२ बजे का सूर्य स्पष्ट** ३-२९-२२-३२ बना। इसी प्रकार अन्य सभी मार्गी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री ग्रहों के लिए:- शनि वक्री अतः उलटी क्रिया करनी होगी अर्थात् १५ अगस्त १९९६ के शनिस्पष्ट में १६ अगस्त के शनि स्पष्ट घटाने होंगे:- १५ अगस्त के शनि स्पष्ट ११-१२-५८-२२ में से **१६ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५५-३४ को घटायें = २-४८ यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। २ क. ४८ वि. = १६८ विकला अतः क्रिया पूर्ववत १६८×१११० ÷१४४० = १३० वि.=२ क. १० वि.। २'१०'' को १५ अगस्त के शनि स्पष्ट में से घटाया (११-१२-५८-२२)-(२-१०)=११-१२-५६-१२ अतः १५ अगस्त की रात्रि १२ बजे के वक्री शनि स्पष्ट ११-१२-५६-१२ आया।

यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो ५-३० बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। **इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।**

कृपया पाठक इन (❖ को ¼) (★ को ½) (● को ¾) पढ़ें।

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९ घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
१	०।०१ •	०।०२ •	०।०५	०।०७ •	०।१०	०।१२ •	०।१५	०।१७ •	०।२०	०।२२ •	०।२५	०।२७ •	०।३०
२	०।०२ •	०।०५	०।१०	०।१५	०।२०	०।२५	०।३०	०।३५	०।४०	०।४५	०।५०	०।५५	१।००
३	०।०३ ●	०।०७ •	०।१५	०।२२ •	०।३०	०।३७ •	०।४५	०।५२ •	१।००	१।०७ •	१।१५	१।२२ •	१।३०
४	०।०५	०।१०	०।२०	०।३०	०।४०	०।५०	१।००	१।१०	१।२०	१।३०	१।४०	१।५०	२।००
५	०।०६ •	०।१२ •	०।२५	०।३७ •	०।५०	१।०२ •	१।१५	१।२७ •	१।४०	१।५२ •	२।०५	२।१७ •	२।३०
६	०।०७ •	०।१५	०।३०	०।४५	१।००	१।१५	१।३०	१।४५	२।००	२।१५	२।३०	२।४५	३।००
७	०।०८ ●	०।१७ •	०।३५	०।५२ •	१।१०	१।२७ •	१।४५	२।०२ •	२।२०	२।३७ •	२।५५	३।१२ •	३।३०
८	०।१०	०।२०	०।४०	१।००	१।२०	१।४०	२।००	२।२०	२।४०	३।००	३।२०	३।४०	४।००
९	०।११ •	०।२२ •	०।४५	१।०७ •	१।३०	१।५२ •	२।१५	२।३७ •	३।००	३।२२ •	३।४५	४।७ •	४।३०
१०	०।१२ •	०।२५	०।५०	१।१५	१।४०	२।०५	२।३०	२।५५	३।२०	३।४५	४।१०	४।३५	५।००
११	०।१३ ●	०।२७ •	०।५५	१।२२ •	१।५०	२।१७ •	२।४५	३।१२ •	३।४०	४।७ •	४।३५	५।२ •	५।३०
१२	०।१५	०।३०	१।००	१।३०	२।००	२।३०	३।००	३।३०	४।००	४।३०	५।००	५।३०	६।००
१३	०।१६ •	०।३२ •	१।०५	१।३७ •	२।१०	२।४२ •	३।१५	३।४७ •	४।२०	४।५२ •	५।२५	५।५७ •	६।३०
१४	०।१७ •	०।३५	१।१०	१।४५	२।२०	२।५५	३।३०	४।०५	४।४०	५।१५	५।५०	६।२५	७।००
१५	०।१८ ●	०।३७ •	१।१५	१।५२ •	२।३०	३।०७ •	३।४५	४।२२ •	५।००	५।३७ •	६।१५	६।५२ •	७।३०
१६	०।२०	०।४०	१।२०	२।००	२।४०	३।२०	४।००	४।४०	५।२०	६।००	६।४०	७।२०	८।००
१७	०।२१ •	०।४२ •	१।२५	२।०७ •	२।५०	३।३२ •	४।१५	४।५७ •	५।४०	६।२२ •	७।०५	७।४७ •	८।३०
१८	०।२२ •	०।४५	१।३०	२।१५	३।००	३।४५	४।३०	५।१५	६।००	६।४५	७।३०	८।१५	९।००
१९	०।२३ ●	०।४७ •	१।३५	२।२२ •	३।१०	३।५७ •	४।४५	५।३२ •	६।२०	७।७ •	७।५५	८।४२ •	९।३०
२०	०।२५	०।५०	१।४०	२।३०	३।२०	४।१०	५।००	५।५०	६।४०	७।३०	८।२०	९।१०	१०।००
२१	०।२६ •	०।५२ •	१।४५	२।३७ •	३।३०	४।२२ •	५।१५	६।०७ •	७।००	७।५२ •	८।४५	९।३७ •	१०।३०
२२	०।२७ •	०।५५	१।५०	२।४५	३।४०	४।३५	५।३०	६।२५	७।२०	८।१५	९।१०	१०।०५	११।००
२३	०।२८ ●	०।५७ •	१।५५	२।५२ •	३।५०	४।४७ •	५।४५	६।४२ •	७।४०	८।३७ •	९।३५	१०।३२ •	११।३०
२४	०।३०	१।००	२।००	३।००	४।००	५।००	६।००	७।००	८।००	९।००	१०।००	११।००	१२।००
२५	०।३१ •	१।०२ •	२।०५	३।०७ •	४।१०	५।१२ •	६।१५	७।१७ •	८।२०	९।२२ •	१०।२५	११।२७ •	१२।३०
२६	०।३२ •	१।०५	२।१०	३।१५	४।२०	५।२५	६।३०	७।३५	८।४०	९।४५	१०।५०	११।५५	१३।००
२७	०।३३ ●	१।०७ •	२।१५	३।२२ •	४।३०	५।३७ •	६।४५	७।५२ •	९।००	१०।७ •	११।१५	१२।२२ •	१३।३०
२८	०।३५	१।१०	२।२०	३।३०	४।४०	५।५०	७।००	८।१०	९।२०	१०।३०	११।४०	१२।५०	१४।००
२९	०।३६ •	१।१२ •	२।२५	३।३७ •	४।५०	६।०२ •	७।१५	८।२७ •	९।४०	१०।५२ •	१२।५	१३।१७ •	१४।३०
३०	०।३७ •	१।१५	२।३०	३।४५	५।००	६।१५	७।३०	८।४५	१०।००	११।१५	१२।३०	१३।४५	१५।००

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
३१	०।३८ ●	१।१७ •	२।३५	३।५२ •	५।१०	६।२७ •	७।४५	९।०२ •	१०।२०	११।३७ •	१२।५५	१४।१२ •	१५।३०
३२	०।४०	१।२०	२।४०	४।००	५।२०	६।४०	८।००	९।२०	१०।४०	१२।००	१३।२०	१४।४०	१६।००
३३	०।४१ •	१।२२ •	२।४५	४।०७ •	५।३०	६।५२ •	८।१५	९।३७ •	११।००	१२।२२ •	१३।४५	१५।०७ •	१६।३०
३४	०।४२ •	१।२५	२।५०	४।१५	५।४०	७।०५	८।३०	९।५५	११।२०	१२।४५	१४।१०	१५।३५	१७।००
३५	०।४३ ●	१।२७ •	२।५५	४।२२ •	५।५०	७।१७ •	८।४५	१०।१२ •	११।४०	१३।०७ •	१४।३५	१६।०२ •	१७।३०
३६	०।४५	१।३०	३।००	४।३०	६।००	७।३०	९।००	१०।३०	१२।००	१३।३०	१५।००	१६।३०	१८।००
३७	०।४६ •	१।३२ •	३।०५	४।३७ •	६।१०	७।४२ •	९।१५	१०।४७ •	१२।२०	१३।५२ •	१५।२५	१६।५७ •	१८।३०
३८	०।४७ •	१।३५	३।१०	४।४५	६।२०	७।५५	९।३०	११।०५	१२।४०	१४।१५	१५।५०	१७।२५	१९।००
३९	०।४८ ●	१।३७ •	३।१५	४।५२ •	६।३०	८।०७ •	९।४५	११।२२ •	१३।००	१४।३७ •	१६।१५	१७।५२ •	१९।३०
४०	०।५०	१।४०	३।२०	५।००	६।४०	८।२०	१०।००	११।४०	१३।२०	१५।००	१६।४०	१८।२०	२०।००
४१	०।५१ •	१।४२ •	३।२५	५।०७ •	६।५०	८।३२ •	१०।१५	११।५७ •	१३।४०	१५।२२ •	१७।०५	१८।४७ •	२०।३०
४२	०।५२ •	१।४५	३।३०	५।१५	७।००	८।४५	१०।३०	१२।१५	१४।००	१५।४५	१७।३०	१९।१५	२१।००
४३	०।५३ ●	१।४७ •	३।३५	५।२२ •	७।१०	८।५७ •	१०।४५	१२।३२ •	१४।२०	१६।०७ •	१७।५५	१९।४२ •	२१।३०
४४	०।५५	१।५०	३।४०	५।३०	७।२०	९।१०	११।००	१२।५०	१४।४०	१६।३०	१८।२०	२०।१०	२२।००
४५	०।५६ •	१।५२ •	३।४५	५।३७ •	७।३०	९।२२ •	११।१५	१३।०७ •	१५।००	१६।५२ •	१८।४५	२०।३७ •	२२।३०
४६	०।५७ •	१।५५	३।५०	५।४५	७।४०	९।३५	११।३०	१३।२५	१५।२०	१७।१५	१९।१०	२१।०५	२३।००
४७	०।५८ ●	१।५७ •	३।५५	५।५२ •	७।५०	९।४७ •	११।४५	१३।४२ •	१५।४०	१७।३७ •	१९।३५	२१।३२ •	२३।३०
४८	१।००	२।००	४।००	६।००	८।००	१०।००	१२।००	१४।००	१६।००	१८।००	२०।००	२२।००	२४।००
४९	१।०१ •	२।०२ •	४।०५	६।०७ •	८।१०	१०।१२ •	१२।१५	१४।१७ •	१६।२०	१८।२२ •	२०।२५	२२।२७ •	२४।३०
५०	१।०२ •	२।०५	४।१०	६।१५	८।२०	१०।२५	१२।३०	१४।३५	१६।४०	१८।४५	२०।५०	२२।५५	२५।००
५१	१।०३ ●	२।०७ •	४।१५	६।२२ •	८।३०	१०।३७ •	१२।४५	१४।५२ •	१७।००	१९।०७ •	२१।१५	२३।२२ •	२५।३०
५२	१।०५	२।१०	४।२०	६।३०	८।४०	१०।५०	१३।००	१५।१०	१७।२०	१९।३०	२१।४०	२३।५०	२६।००
५३	१।०६ •	२।१२ •	४।२५	६।३७ •	८।५०	११।०२ •	१३।१५	१५।२७ •	१७।४०	१९।५२ •	२२।०५	२४।१७ •	२६।३०
५४	१।०७ •	२।१५	४।३०	६।४५	९।००	११।१५	१३।३०	१५।४५	१८।००	२०।१५	२२।३०	२४।४५	२७।००
५५	१।०८ ●	२।१७ •	४।३५	६।५२ •	९।१०	११।२७ •	१३।४५	१६।०२ •	१८।२०	२०।३७ •	२२।५५	२५।१२ •	२७।३०
५६	१।१०	२।२०	४।४०	७।००	९।२०	११।४०	१४।००	१६।२०	१८।४०	२१।००	२३।२०	२५।४०	२८।००
५७	१।११ •	२।२२ •	४।४५	७।०७ •	९।३०	११।५२ •	१४।१५	१६।३७ •	१९।००	२१।२२ •	२३।४५	२६।०७ •	२८।३०
५८	१।१२ •	२।२५	४।५०	७।१५	९।४०	१२।०५	१४।३०	१६।५५	१९।२०	२१।४५	२४।१०	२६।३५	२९।००
५९	१।१३ ●	२।२७ •	४।५५	७।२२ •	९।५०	१२।१७ •	१४।४५	१७।१२ •	१९।४०	२२।०७ •	२४।३५	२७।०२ •	२९।३०
६०	१।१५	२।३०	५।००	७।३०	१०।००	१२।३०	१५।००	१७।३०	२०।००	२२।३०	२५।००	२७।३०	३०।००

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सडक, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 2264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक ग्रह स्पष्ट

नीचे यहाँ सभी ग्रहों की स्पष्ट स्थिति के राशि, अंश, कला, विकला आदि दिये गये हैं अर्थात् प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन प्रातः ५.३० बजे भारतीय स्टैण्डर्ड समय की ग्रह स्थिति के राशि, अंश, कला, विकला अधिक अंकित हैं। यह ग्रह स्थिति पृथ्वी पर सभी स्थानों हेतु स्वीकार्य है, अन्य देशों के लिए उचित समय संस्कार कर लें। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अन्तर के घटी, पल बनाकर उस दिन की ग्रह जाति के साथ त्रैराशि विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय पर उस ग्रह की स्पष्ट स्थिति होगी। जिस दिन की ग्रह गति जाननी हो उस दिन के तथा उससे पूर्व के ग्रह स्पष्ट का अन्तर ले लें, यही उस ग्रह की गति होगी।

अप्रैल सन् १९९७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ४८' ५८''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अप्रै.
८	११ २४ २२ ४९	० १ ४४ ८	४ २५ २७ ३८	० १२ ५८ ५५	९ २२ २३ ४७	११ २५ ४६ १४	११ १७ २६ ५५	५ ४ ४ ५०	९ १४ २० ३०	९ ५ ५९ ३७	७ ११ ३२ ४३	८
९	११ २५ २१ ४९	० १६ ७ ५५	४ २५ ११ ४९	० १३ ४४ २५	९ २२ २३ ५५	११ २७ ० ४०	११ १७ ३४ २०	५ ४ १ ३९	९ १४ २२ ४	९ ६ ० २०	७ ११ ३१ ५०	९
१०	११ २६ २० ४६	१ ० १० ४७	४ २४ ५८ ३४	० १४ २९ ५४	९ २२ ४३ ३१	११ २८ १५ ६	११ १७ ४१ ४६	५ ३ ५८ २८	९ १४ २३ ३८	९ ६ १ ३	७ ११ ३० ५४	१०
११	११ २७ १९ ४१	१ १३ ४९ ८	४ २४ ४५ १९	० १५ ६ ८	९ २२ ५३ ५	११ २९ २९ ३२	११ १७ ४९ ११	५ ३ ५५ १७	९ १४ २५ १२	९ ६ १ ४६	७ ११ २९ ४८	११
१२	११ २८ १८ ३३	१ २७ १ ४१	४ २४ ३२ ४	० १५ ३१ ८	९ २३ २ ३९	० ० ४३ ५६	११ १७ ५६ ३८	५ ३ ५२ ६	९ १४ २६ ४६	९ ६ २ २९	७ ११ २८ ४२	१२
१३	११ २९ १७ २३	२ ९ ५१ २	४ २४ १८ ४९	० १५ ४६ ११	९ २३ १२ १३	० १ ५८ १३	११ १८ ४ ४	५ ३ ४८ ५६	९ १४ २८ २०	९ ६ ३ १२	७ ११ २७ ३६	१३
१४	० ० १६ १०	२ २२ १८ ४८	४ २४ ९ ४९	० १५ ४९ २१	९ २३ २१ ४७	० ३ १२ ३०	११ १८ ११ ३०	५ ३ ४५ ४५	९ १४ २९ ५४	९ ६ ३ ५४	७ ११ २६ ३०	१४
१५	० १ १४ ५६	३ ४ २८ ५७	४ २३ ५९ १९	० १५ ५० ५६	९ २३ ३१ २१	० ४ २६ ४७	११ १८ १८ ५४	५ ३ ४२ ३४	९ १४ ३१ १२	९ ६ ४ १९	७ ११ २५ २४	१५
१६	० २ १३ ४०	३ १६ २६ ४९	४ २३ ४९ ३४	० १५ ४८ ६	९ २३ ४० ५५	० ५ ४१ ४	११ १८ २६ १३	५ ३ ३९ २३	९ १४ ३२ २९	९ ६ ४ ४४	७ ११ २४ १८	१६
१७	० ३ १२ २१	३ २८ १७ ४१	४ २३ ३९ ४९	० १५ ३५ ५४	९ २३ ४९ २१	० ६ ५५ २१	११ १८ ३३ २९	५ ३ ३६ १२	९ १४ ३३ ४६	९ ६ ५ ९	७ ११ २३ १२	१७
१८	० ४ ११ ०	४ १० ६ ३	४ २३ ३३ ४	० १५ २१ ४६	९ २३ ५७ ४७	० ८ ९ ३८	११ १८ ४० ४५	५ ३ ३३ २	९ १४ ३५ ३	९ ६ ५ ३४	७ ११ २२ ६	१८
१९	० ५ ९ ३७	४ २१ ५५ ४४	४ २३ २६ १९	० १५ ५ ३६	९ २४ ६ १३	० ९ २३ ५६	११ १८ ४८ १	५ ३ २९ ५१	९ १४ ३६ २०	९ ६ ५ ५९	७ ११ २१ ०	१९
२०	० ६ ८ १२	५ ३ ५१ ३७	४ २३ १९ ३४	० १४ ३९ ५१	९ २४ १४ ३९	० १० ३८ ५	११ १८ ५५ १७	५ ३ २६ ४०	९ १४ ३७ ३७	९ ६ ६ २४	७ ११ १९ ५४	२०
२१	० ७ ६ ४४	५ १५ ५७ ८	४ २३ १२ ४९	० १४ ४ ५१	९ २४ २३ ५	० ११ ५२ १४	११ १९ २ ३३	५ ३ २३ २९	९ १४ ३८ ५४	९ ६ ६ ५०	७ ११ १८ ३०	२१
२२	० ८ ५ १५	५ २८ १३ ४२	४ २३ ८ ४९	० १३ २९ ५१	९ २४ ३१ ३०	० १३ ६ २३	११ १९ ९ ४९	५ ३ २० १८	९ १४ ३९ ५४	९ ६ ७ ६	७ ११ १७ ६	२२
२३	० ९ ३ ४४	६ १० ४२ ५१	४ २३ ४ ४९	० १२ ५४ ५१	९ २४ ३९ ५५	० १४ २० ३२	११ १९ १७ १	५ ३ १७ ७	९ १४ ४० ५४	९ ६ ७ २३	७ ११ १५ ४२	२३
२४	० १० २ १२	६ २३ २८ १	४ २३ ० ४९	० १२ १९ ५१	९ २४ ४७ ३७	० १५ ३४ ४१	११ १९ २४ ९	५ ३ १३ ५६	९ १४ ४१ ५४	९ ६ ७ ४०	७ ११ १४ १८	२४
२५	० ११ ० ३७	७ ६ २४ ४४	४ २२ ५७ ४९	० ११ ४४ ५१	९ २४ ५५ २०	० १६ ४८ ५०	११ १९ ३१ १७	५ ३ १० ४६	९ १४ ४२ ५३	९ ६ ७ ५६	७ ११ १२ ५४	२५
२६	० ११ ५९ १	७ १९ ३८ १	४ २२ ५६ ४९	० ११ ५ ३९	९ २५ ३ ३	० १८ २ ५६	११ १९ ३८ २५	५ ३ ७ ३५	९ १४ ४३ ५२	९ ६ ८ १३	७ ११ ११ ३०	२६
२७	० १२ ५७ २३	८ ३ २ ३८	४ २२ ५५ २९	० १० २६ २७	९ २५ १० ४६	० १९ १६ ५६	११ १९ ४५ ३३	५ ३ ४ २४	९ १४ ४४ ५१	९ ६ ८ २९	७ ११ १० ६	२७
२८	० १३ ५५ ४३	८ १६ ४० ६	४ २२ ५४ ४९	० ९ ४७ १५	९ २५ १८ २९	० २० ३० ५६	११ १९ ५२ ४१	५ ३ १ १४	९ १४ ४५ ५०	९ ६ ८ ४५	७ ११ ८ ४२	२८
२९	० १४ ५४ १	९ ० २७ ४६	४ २२ ५५ ४९	० ९ ८ ३	९ २५ २६ १२	० २१ ४४ ५६	११ १९ ५९ ४९	५ २ ५८ ३	९ १४ ४६ २६	९ ६ ८ ४६	७ ११ ७ १८	२९
३०	० १५ ५२ १८	९ १४ २६ ३	४ २२ ५६ ४९	० ८ २८ ५१	९ २५ ३३ ५४	० २२ ५८ ५६	११ २० ६ ४९	५ २ ५४ ५२	९ १४ ४७ ०	९ ६ ८ ४७	७ ११ ५ ५४	३०

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई सन् १९९७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३°४९' १०''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मई
१	० १६ ५० ३४	९ २८ ३३ ४४	४ २२ ५८ ४९	० ७ ५८ ५१	९ २५ ४० ३६	० २४ १२ ५६	११ २० १३ ४९	५ २ ५१ ४१	९ १४ ४७ ३४	९ ६ ८ ४८	७ ११ ४ ५०	१
२	० १७ ४८ ४८	१० १२ ४९ १	४ २३ ३ १	० ७ २९ ५१	९ २५ ४७ १८	० २५ २६ ५६	११ २० २० ४९	५ २ ४८ ३०	९ १४ ४८ ८	९ ६ ८ ४९	७ ११ ३ १७	२
३	० १८ ४७ १	१० २७ ९ ५०	४ २३ ७ १३	० ७ ० ५१	९ २५ ५४ ०	० २६ ४० ५२	११ २० २७ ४८	५ २ ४५ १९	९ १४ ४८ ४२	९ ६ ८ ०व.	७ ११ १ ४४	३
४	० १९ ४५ १२	११ ११ ३५ ५	४ २३ ११ २५	० ६ ३१ ५१	९ २६ ० ४३	० २७ ५४ ४८	११ २० ३४ ४८	५ २ ४२ ८	९ १४ ४९ १६	९ ६ ८ ४५	७ ११ ० ११	४
५	० २० ४३ २१	११ २५ ५८ ४६	४ २३ १५ ३७	० ६ १६ ५१	९ २६ ७ २५	० २९ ८ ३९	११ २० ४१ ४८	५ २ ३८ ५८	९ १४ ४९ ५०	९ ६ ८ ४०	७ १० ५८ ३७	५
६	० २१ ४१ २९	० १० १७ ७	४ २३ १९ ४९	० ६ १ ५१	९ २६ १४ ७	१ ० २२ ३०	११ २० ४८ ४८	५ २ ३५ ४७	९ १४ ५० १०	९ ६ ८ ३०	७ १० ५७ ४	६
७	० २२ ३९ ३६	० २४ २३ ४५	४ २३ २७ १३	० ५ ४६ ५१	९ २६ २० ४९	१ १ ३६ २१	११ २० ५५ ३१	५ २ ३२ ३६	९ १४ ५० २०	९ ६ ८ २०	७ १० ५५ ३०	७
८	० २३ ३७ ४१	१ ८ १५ ५९	४ २३ ३४ ३७	० ५ ४० ५६	९ २६ २६ २५	१ २ ५० १२	११ २१ २ १३	५ २ २९ २६	९ १४ ५० २७	९ ६ ८ १०	७ १० ५३ ५७	८
९	० २४ ३५ ४३	१ २१ ४७ ४१	४ २३ ४२ १	० ५ ३९ ५१मा.	९ २६ ३२ ०	१ ४ ४ ३	११ २१ ८ ५६	५ २ २६ १५	९ १४ ५० ३२	९ ६ ८ ०	७ १० ५२ २४	९
१०	० २५ ३३ ४५	२ ४ ५९ ३	४ २३ ४९ २५	० ५ ४६ २१	९ २६ ३७ ३३	१ ५ १७ ५२	११ २१ १५ ३९	५ २ २३ ४	९ १४ ५० ३६	९ ६ ७ ५०	७ १० ५० ५०	१०
११	० २६ ३१ ४५	२ १७ ४७ ४४	४ २३ ५६ ४९	० ५ ५४ ५१	९ २६ ४३ ७	१ ६ ३१ ३५	११ २१ २२ २२	५ २ १९ ५३	९ १४ ५० ४०	९ ६ ७ २६	७ १० ४९ १४	११
१२	० २७ २९ ४४	३ ० १५ ५९	४ २४ ७ २५	० ६ ४ ५१	९ २६ ४८ ४१	१ ७ ४५ १८	११ २१ २९ ५	५ २ १६ ४२	९ १४ ५० ४४	९ ६ ७ २	७ १० ४७ ३८	१२
१३	० २८ २७ ४०	३ १२ २७ ४०	४ २४ १८ १	० ६ २१ ५१	९ २६ ५४ १५	१ ८ ५९ १	११ २१ ३५ ४८	५ २ १३ ३१	९ १४ ५० ४८	९ ६ ६ ३८	७ १० ४६ २	१३
१४	० २९ २५ ३४	३ २४ २६ ४९	४ २४ २८ ३६	० ६ ४७ १	९ २६ ५९ ४९	१ १० १२ ४३	११ २१ ४२ ६	५ २ १० २१	९ १४ ५० ०व.	९ ६ ६ १४	७ १० ४४ २६	१४
१५	१ ० २३ २६	४ ६ १८ ४६	४ २४ ३९ १२	० ७ १५ ११	९ २७ ४ ९	१ ११ २६ २८	११ २१ ४८ २३	५ २ ७ १०	९ १४ ५० ४७	९ ६ ५ ५०	७ १० ४२ ५०	१५
१६	१ १ २१ १७	४ १८ ७ १७	४ २४ ४९ ४८	० ७ ४७ २१	९ २७ ८ २९	१ १२ ४० १०	११ २१ ५४ ४०	५ २ ३ ५९	९ १४ ५० ४०	९ ६ ५ २६	७ १० ४१ १४	१६
१७	१ २ १९ ६	४ २९ ५८ ५५	४ २५ ३ ८	० ८ १९ ३६	९ २७ १२ ४९	१ १३ ५३ ५२	११ २२ ० ५७	५ २ ० ४८	९ १४ ५० ३०	९ ६ ५ १	७ १० ३९ ३८	१७
१८	१ ३ १६ ५४	५ ११ ५७ ४३	४ २५ १६ २८	० ८ ५१ ५१	९ २७ १७ ९	१ १५ ७ ३२	११ २२ ७ १४	५ १ ५७ ३८	९ १४ ५० २०	९ ६ ४ ३६	७ १० ३८ २	१८
१९	१ ४ १४ ४०	५ २४ ८ ५९	४ २५ २९ ४८	० ९ ४१ १	९ २७ २१ २९	१ १६ २१ १२	११ २२ १३ ३१	५ १ ५४ २७	९ १४ ५० १०	९ ६ ४ ११	७ १० ३६ २६	१९
२०	१ ५ १२ २४	६ ६ ३५ ४४	४ २५ ४३ ८	० १० ३१ १२	९ २७ २५ ४९	१ १७ ३४ ५२	११ २२ १९ ४८	५ १ ५१ १६	९ १४ ४९ ५०	९ ६ ३ ४५	७ १० ३४ ५०	२०
२१	१ ६ १० ७	६ १९ २० ४	४ २५ ५६ ४८	० ११ २३ २२	९ २७ २९ ९	१ १८ ४८ ३२	११ २२ २५ ४८	५ १ ४८ ५	९ १४ ४९ २०	९ ६ ३ २	७ १० ३३ १०	२१
२२	१ ७ ७ ४९	७ २ २३ ५७	४ २६ १२ ४७	० १२ १५ ४२	९ २७ ३२ २९	१ २० २ १२	११ २२ ३१ ४८	५ १ ४४ ५५	९ १४ ४८ ५०	९ ६ २ १९	७ १० ३१ ३०	२२
२३	१ ८ ५ २९	७ १५ ४४ ३८	४ २६ २८ ४६	० १३ ११ ५२	९ २७ ३५ ४९	१ २१ १५ ५०	११ २२ ३७ ४८	५ १ ४१ ४४	९ १४ ४८ २०	९ ६ १ ३६	७ १० २९ ५०	२३
२४	१ ९ ३ ८	७ २९ २१ ४८	४ २६ ४४ ४५	० १३ ५६ ५२	९ २७ ३९ ९	१ २२ २९ २८	११ २२ ४३ ४८	५ १ ३८ ३३	९ १४ ४७ ५०	९ ६ ० ५३	७ १० २८ ९	२४
२५	१ १० ० ४६	८ १३ ११ ३७	४ २७ ० ४४	० १५ ७ ५९	९ २७ ४२ २९	१ २३ ४२ ५९	११ २२ ४९ ४८	५ १ ३५ २२	९ १४ ४६ ३४	९ ६ ० १०	७ १० २६ २९	२५
२६	१ १० ५८ २२	८ २७ १० ४७	४ २७ १६ ४६	० १६ १९ ८	९ २७ ४५ ४९	१ २४ ५६ ३०	११ २२ ५५ ४८	५ १ ३२ ११	९ १४ ४५ ५६	९ ५ ५९ २७	७ १० २४ ४९	२६
२७	१ ११ ५५ ५८	९ ११ १६ ३	४ २७ ३४ ५८	० १७ ३० १६	९ २७ ४८ १३	१ २६ ९ ५९	११ २३ १ ४८	५ १ ३० -०	९ १४ ४५ १६	९ ५ ५८ ४४	७ १० २३ ९	२७
२८	१ १२ ५३ ३३	९ २५ २२ ५६	४ २७ ५३ १०	० १८ ४१ २४	९ २७ ५० ३७	१ २७ २३ २८	११ २३ ७ २२	५ १ २६ ५०	९ १४ ४४ ३८	९ ५ ५८ १	७ १० २१ २८	२८
२९	१ १३ ५१ ७	१० ९ ३१ ३९	४ २८ ११ २२	० १९ ५२ ३२	९ २७ ५३ १	१ २८ ३६ ५७	११ २३ १२ ५५	५ १ २३ ३९	९ १४ ४३ ५८	९ ५ ५७ १७	७ १० १९ ४८	२९
३०	१ १४ ४८ ४०	१० २३ ३९ ३	४ २८ २९ ३६	० २१ ३ ४०	९ २७ ५५ २५	१ २९ ५० २६	११ २३ १८ २९	५ १ २० २८	९ १४ ४३ १८	९ ५ ५६ ३३	७ १० १८ ८	३०
३१	१ १५ ४६ १२	११ ७ ४४ ४१	४ २८ ४७ ४६	० २२ १४ ४७	९ २७ ५७ ४९	२ १ ३ ५२	११ २३ २४ ३	५ १ १७ १७	९ १४ ४२ ५०	९ ५ ५५ ४५	७ १० १६ २८	३१

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली - 110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जून सन् १९९७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३°४९'१३"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जून
१	१ १६ ४३ ४३	११ २१ ४८ ४५	४ २९ ८ १	० २३ ४५ १७	९ २७ ५९ ५९	२ २ १७ १७	११ २३ २९ ३८	५ १ १४ ६	९ १४ ४१ ५०	९ ५ ५४ ४५	७ १० १४ ४७	१
२	१ १७ ४१ १३	० ५ ४७ ३९	४ २९ २८ ३२	० २५ १५ ४७	९ २८ ० ४८	२ ३ ३० ४२	११ २३ ३५ १६	५ १ १० ५६	९ १४ ४० ५०	९ ५ ५३ ४५	७ १० १३ ७	२
३	१ १८ ३८ ४३	० १९ ३९ ५८	४ २९ ४८ ५५	० २६ ४६ १७	९ २८ २ १९	२ ४ ४४ ७	११ २३ ४० ४२	५ १ ७ ४५	९ १४ ३९ ५०	९ ५ ५२ ४५	७ १० ११ २७	३
४	१ १९ ३६ १२	१ ३ २२ ३८	५ ० ९ १९	० २८ १६ ५२	९ २८ ३ ४९	२ ५ ५७ ३२	११ २३ ४५ ५१	५ १ ४ ३४	९ १४ ३८ ५०	९ ५ ५१ ४५	७ १० ९ ४७	४
५	१ २० ३३ ४०	१ १६ ५३ ३३	५ ० २९ ४४	० २९ ४७ २७	९ २८ ४ ३३	२ ७ १० ५७	११ २३ ५१ ०	५ १ १ २३	९ १४ ३७ ५०	९ ५ ५० ४५	७ १० ८ ७	५
६	१ २१ ३१ ७	२ ० १० ४	५ ० ५२ १८	१ १ १८ २	९ २८ ५ १८	२ ८ २४ २२	११ २३ ५६ ९	५ ० ५८ १२	९ १४ ३६ ४९	९ ५ ४९ ४५	७ १० ६ २७	६
७	१ २२ २८ ३३	२ १३ ८ ३७	५ १ १४ ५२	१ २ ४८ ४७	९ २८ ५ ५८	२ ९ ३७ ४७	११ २४ १ १६	५ ० ५५ २	९ १४ ३५ ४८	९ ५ ४८ ४५	७ १० ४ ४७	७
८	१ २३ २५ ५९	२ २५ ५० ८	८ १ ३७ २६	१ ४ ३७ १७	९ २८ ६ ४८	२ १० ५१ ४	११ २४ ६ २५	५ ० ५१ ५१	९ १४ ३४ ४७	९ ५ ४७ ४५	७ १० ३ ७	८
९	१ २४ २३ २२	३ ८ १३ ४०	५ २ ० ०	१ ६ २५ ४७	९ २८ ६ ४३	२ १२ ४ २१	११ २४ ११ ३४	५ ० ४८ ४०	९ १४ ३३ ४६	९ ५ ४६ ४५	७ १० १ २७	९
१०	१ २५ २० ४५	३ २० २३ ५५	५ २ २२ ३४	१ ८ १४ १७	९ २८ ६ ४८	२ १३ १७ ३८	११ २४ १६ ४२	५ ० ४५ २९	९ १४ ३२ ४५	९ ५ ४५ ४५	७ ९ ५९ ४५	१०
११	१ २६ १८ ८	४ २ २० ४४	५ २ ४५ ८	१ १० २ ५२	९ २८ ६s०व.	२ १४ ३० ५५	११ २४ २१ १९	५ ० ४२ १८	९ १४ ३१ १५	९ ५ ४४ ३३	७ ९ ५८ ३	११
१२	१ २७ १५ २९	४ १४ ११ ४०	५ ३ ७ ४४	१ १२ ५१ २७	९ २८ ६ ४६	२ १५ ४४ १२	११ २४ २५ ५३	५ ० ३९ ७	९ १४ २९ ४५	९ ५ ४३ २१	७ ९ ५६ २१	१२
१३	१ २८ १२ ४९	४ २६ ० २	५ ३ ३२ ३५	१ १३ ४० २	९ २८ ६ १८	२ १६ ५७ २९	११ २४ ३० २७	५ ० ३५ ५७	९ १४ २८ १५	९ ५ ४२ ९	७ ९ ५४ ३९	१३
१४	१ २९ १० ८	५ ७ ५१ ४२	५ ३ ५७ २६	१ १५ २८ ४७	९ २८ ५ ३३	२ १८ १० ४७	११ २४ ३५ १	५ ० ३२ ४६	९ १४ २६ ४५	९ ५ ४० ५७	७ ९ ५२ ५७	१४
१५	२ ० ७ २६	५ १९ ५२ ६	५ ४ २२ १७	१ १७ ३२ ५५	९ २८ ४ ४३	२ १९ २३ ५६	११ २४ ३९ ३५	५ ० २९ ३५	९ १४ २५ १५	९ ५ ३९ ४५	७ ९ ५१ १५	१५
१६	२ १ ४ ४३	६ २ ६ ४५	५ ४ ४७ ८	१ १९ ३७ ३	९ २८ ३ २३	२ २० ३७ ४	११ २४ ४४ ९	५ ० २६ २४	९ १४ २३ ४५	९ ५ ३८ ३३	७ ९ ४९ ३३	१६
१७	२ २ २ ०	६ १४ ३८ ५६	५ ५ ११ ५९	१ २१ ४१ ११	९ २८ २ ३	२ २१ ५० १४	११ २४ ४८ ४२	५ ० २३ १४	९ १४ २२ १५	९ ५ ३७ २१	७ ९ ४७ ५१	१७
१८	२ २ ५९ १५	६ २७ ३३ १७	५ ५ ३६ ५०	१ २३ ४५ १९	९ २८ ० ३८	२ २३ ३ २४	११ २४ ५२ ५१	५ ० २० ३	९ १४ २० ४५	९ ५ ३६ ९	७ ९ ४६ ९	१८
१९	२ ३ ५६ ३१	७ १० ५० २	५ ६ १ ४१	१ २५ ४९ २७	९ २७ ५९ १३	२ २४ १६ ३३	११ २४ ५७ ०	५ ० १६ ५२	९ १४ १९ १५	९ ५ ३४ ५७	७ ९ ४४ २७	१९
२०	२ ४ ५३ ४६	७ २४ २९ ४०	५ ६ २८ ३२	१ २७ ५३ ३५	९ २७ ५७ ४३	२ २५ २९ ४०	११ २५ १ ९	५ ० १३ ४१	९ १४ १७ ४५	९ ५ ३३ ४५	७ ९ ४२ ४५	२०
२१	२ ५ ५० ५९	८ ८ ३० ३	५ ६ ५५ २३	१ २९ ५७ ४८	९ २७ ५५ १९	२ २६ ४२ ४८	११ २५ ५ १८	५ ० १० ३०	९ १४ १५ ५७	९ ५ ३२ १५	७ ९ ४१ २९	२१
२२	२ ६ ४८ १३	८ २२ ४४ ४१	५ ७ २२ १४	२ २ ८ ३९	९ २७ ५२ ५५	२ २७ ५५ ४८	११ २५ ९ २८	५ ० ७ १९	९ १४ १४ ९	९ ५ ३० ४५	७ ९ ४० १२	२२
२३	२ ७ ४५ २६	९ ७ ८ ५६	५ ७ ४९ ५५	२ ४ १९ २९	९ २७ ५० ३१	२ २९ ८ ४८	११ २५ ३ ३६	५ ० ४ ८	९ १४ १२ २१	९ ५ २९ १५	७ ९ ३८ ५६	२३
२४	२ ८ ४२ ३९	९ २१ ३७ ३८	५ ८ १५ ५६	२ ६ ३० २२	९ २७ ४८ ७	३ ० २१ ४८	११ २५ १७ ४३	५ ० ० ५८	९ १४ १० ३३	९ ५ २७ ४५	७ ९ ३७ ३९	२४
२५	२ ९ ३९ ५२	१० ६ ४ ५५	५ ८ ४२ ४७	२ ८ ४१ १३	९ २७ ४५ ४३	३ १ ३४ ४८	११ २५ २१ १३	४ २९ ५७ ४७	९ १४ ८ ४५	९ ५ २६ १५	७ ९ ३६ २३	२५
२६	२ १० ३७ ५	१० २० २४ ३५	५ ९ ९ ४१	२ १० ५२ १३	९ २७ ४३ १९	३ २ ४७ ४८	११ २५ २४ ४३	४ २९ ५४ ३६	९ १४ ६ ५७	९ ५ २४ ४५	७ ९ ३५ ६	२६
२७	२ ११ ३४ १८	११ ४ ३६ ५१	५ ९ ३८ १५	२ १३ २ ५६	९ २७ ३८ ५५	३ ४ ० ४८	११ २५ २८ १३	४ २९ ५१ २६	९ १४ ५ ९	९ ५ २३ १५	७ ९ ३३ ५०	२७
२८	२ १२ ३१ ३१	११ १८ ३९ ३	५ १० ६ ४९	२ १५ १३ ४८	९ २७ ३५ ३१	३ ५ १३ ४८	११ २५ ३१ ४३	४ २९ ४८ १५	९ १४ ३ २१	९ ५ २१ ४५	७ ९ ३२ ३३	२८
२९	२ १३ २८ ४४	० २ ३० ४१	५ १० ३५ २२	२ १७ १९ २४	९ २७ ३२ ७	३ ६ २६ ४८	११ २५ ३५ १३	४ २९ ४५ ४	९ १४ १ ३३	९ ५ २० १५	७ ९ ३१ १७	२९
३०	२ १४ २५ ५७	० १६ ११ ३३	५ ११ ३ ५७	२ १९ २५ ०	९ २७ २८ ४३	३ ७ ३९ ४८	११ २५ ३८ ४३	४ २९ ४१ ५४	९ १३ ५९ ४३	९ ५ १८ ४५	७ ९ ३० ०	३०

धर्मसम प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली - 110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई सन् १९९७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ४९' १७''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जुला.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जुला.
१	२ १५ २३ ९	० २९ ४३ ४	५ ११ ३२ ३१	२ २१ ३० ३६	९ २७ २४ २६	३ ८ ५२ ४८	११ २५ ४१ ४४	४ २९ ३८ ४३	९ १३ ५७ १७	९ ५ १७ १५	७ ९ २८ ४३	१
२	२ १६ २० २२	१ १३ १ ४१	५ १२ १ २५	२ २३ ३६ १०	९ २७ २० ९	३ १० ५ ४८	११ २५ ४४ ४४	४ २९ ३५ ३२	९ १३ ५५ ३१	९ ५ १५ ४५	७ ९ २७ ३३	२
३	२ १७ १७ ३५	१ २६ ९ ५७	५ १२ ३० ४०	२ २५ ४१ ४४	९ २७ १५ ५२	३ ११ १८ ४८	११ २५ ४७ ४२	४ २९ ३२ २२	९ १३ ५३ २५	९ ५ १४ १५	७ ९ २६ २२	३
४	२ १८ १४ ४८	२ ९ ४ ३५	५ १३ ० ४७	२ २७ ४७ १८	९ २७ ११ ३५	३ १२ ३१ ४८	११ २५ ५० ४१	४ २९ २९ ११	९ १३ ५१ १९	९ ५ १२ ४५	७ ९ २५ १२	४
५	२ १९ १२ २	२ २१ ४६ ४५	५ १३ ३० ५४	२ २९ ५२ ४८	९ २७ ७ १७	३ १३ ४४ ४८	११ २५ ५३ ३९	४ २९ २६ ०	९ १३ ४९ १३	९ ५ ११ १५	७ ९ २४ १	५
६	२ २० ९ १६	३ ४ १४ ५५	५ १४ १ २८	३ १ ४८ २३	९ २७ ३ ०	३ १४ ५७ ३०	११ २५ ५६ ३	४ २९ २२ ४८	९ १३ ४७ ७	९ ५ ९ ४५	७ ९ २२ ५१	६
७	२ २१ ६ ३०	३ १६ २९ ४३	५ १४ ३१ ८	३ ३ ४३ ५८	९ २६ ५८ ४२	३ १६ १० १२	११ २५ ५८ २७	४ २९ १९ ३८	९ १३ ४५ १	९ ५ ८ १५	७ ९ २१ ४०	७
८	२ २२ ३ ४३	३ २८ ३३ १	५ १५ १ २५	३ ५ ३९ २३	९ २६ ५३ १६	३ १७ २२ ५४	११ २६ ० ५१	४ २९ १६ २७	९ १३ ४२ ५५	९ ५ ६ ४५	७ ९ २० ३१	८
९	२ २३ ० ५६	४ १० २५ ३८	५ १५ ३१ ४२	३ ७ ३४ ५८	९ २६ ४७ ५०	३ १८ ३५ ३६	११ २६ ३ १५	४ २९ १३ १६	९ १३ ४० ४८	९ ५ ५ १४	७ ९ १९ २३	९
१०	२ २३ ५८ ८	४ २२ १४ ३४	५ १६ २ ३८	३ ९ ३० ४२	९ २६ ४२ २४	३ १९ ४८ १८	११ २६ ५ ३९	४ २९ १० ५	९ १३ ३८ ४०	९ ५ ३ ४०	७ ९ १८ १४	१०
११	२ २४ ५५ २१	५ ४ १ ५५	५ १६ ३४ २९	३ ११ १६ १८	९ २६ ३६ ५८	३ २१ १ ०	११ २६ ७ ३९	४ २९ ६ ५५	९ १३ ३६ ३२	९ ५ २ ४	७ ९ १७ ६	११
१२	२ २५ ५२ ३४	५ १५ ५२ ४३	५ १७ ६ २०	३ १३ १ ५४	९ २६ ३१ ३२	३ २२ १३ ४३	११ २६ ९ ३९	४ २९ ३ ४४	९ १३ ३४ ४	९ ५ ० २८	७ ९ १५ ५७	१२
१३	२ २६ ४९ ४७	५ २७ ५२ ५८	५ १७ ३८ ११	३ १४ ४७ ३०	९ २६ २६ ६	३ २३ २६ १७	११ २६ ११ ३९	४ २९ ० ३३	९ १३ ३१ ४६	९ ४ ५८ ५२	७ ९ १४ ४९	१३
१४	२ २७ ४७ ०	६ १० ६ ५१	५ १८ १० २	३ १६ ३३ ६	९ २६ २० ४२	३ २४ ३८ ५१	११ २६ १३ ३९	४ २८ ५७ २२	९ १३ २९ २८	९ ४ ५७ १६	७ ९ १३ ४०	१४
१५	२ २८ ४४ १३	६ २२ ३९ ३६	५ १८ ४१ ५३	३ १८ १८ ४२	९ २६ १४ २२	३ २५ ५१ २५	११ २६ १५ ३९	४ २८ ५४ ११	९ १३ २७ १०	९ ४ ५५ ४०	७ ९ १२ ४९	१५
१६	२ २९ ४१ २६	७ ५ ३५ ६१	५ १९ १३ ४४	३ १९ ५४ ५४	९ २६ ८ १	३ २७ ३ ५९	११ २६ १७ १६	४ २८ ५१ ०	९ १३ २४ ५२	९ ४ ५४ ४	७ ९ ११ ५७	१६
१७	३ ० ३८ ३९	७ १८ ५८ ४४	५ १९ ४५ ३८	३ २१ ३१ ६	९ २६ १ ४०	३ २८ १६ ३३	११ २६ १८ ५२	४ २८ ४७ ५०	९ १३ २२ ३४	९ ४ ५२ २८	७ ९ ११ ६	१७
१८	३ १ ३५ ५२	८ २ ४७ ३६	५ २० १८ ३८	३ २३ ७ १८	९ २५ ५५ १७	३ २९ २९ ७	११ २६ २० २८	४ २८ ४४ ३९	९ १३ २० १६	९ ४ ५० ५२	७ ९ १० १४	१८
१९	३ २ ३३ ६	८ १७ ० ५९	५ २० ५१ ३८	३ २४ ४३ ३०	९ २५ ४९ ०	४ ० ४१ ४३	११ २६ २२ ४	४ २८ ४१ २८	९ १३ १७ ५८	९ ४ ४९ १६	७ ९ ९ २३	१९
२०	३ ३ ३० २०	९ १ ३४ ३४	५ २१ २४ ३८	३ २६ १९ ४१	९ २५ ४२ ३७	४ १ ५३ ५९	११ २६ २३ ४०	४ २८ ३८ १७	९ १३ १५ ४०	९ ४ ४७ ४०	७ ९ ८ ३१	२०
२१	३ ४ २७ ३५	९ १६ २२ १	५ २१ ५७ ३८	३ २७ ४५ ५३	९ २५ ३७ ३७	४ ३ ६ १७	११ २६ २४ ४०	४ २८ ३५ ६	९ १३ १३ २०	९ ४ ४६ २	७ ९ ७ ४०	२१
२२	३ ५ २४ ५०	१० १ १२ ४०	५ २२ ३० ३८	३ २९ १२ ५	९ २५ २८ ३७	४ ४ १८ ३३	११ २६ २५ ४०	४ २८ ३१ ५५	९ १३ १० ५८	९ ४ ४४ २४	७ ९ ७ ४	२२
२३	३ ६ २२ ६	१० १६ १ ५१	५ २३ ३ ३८	४ ० ३८ १७	९ २५ २१ ३७	४ ५ ३० ५१	११ २६ २६ ४०	४ २८ २८ ४४	९ १३ ८ ३६	९ ४ ४२ ४६	७ ९ ६ २८	२३
२४	३ ७ १९ २३	११ ० ४१ ३७	५ २३ ३६ ३८	४ २ ४ २९	९ २५ १४ ३७	४ ६ ४३ ८	११ २६ २७ ४०	४ २८ २५ ३४	९ १३ ६ १४	९ ४ ४१ ८	७ ९ ५ ५२	२४
२५	३ ८ १६ ४१	११ १५ ६ ३३	५ २४ १० ४६	४ ३ ३० ४१	९ २५ ७ ३७	४ ७ ५५ २५	११ २६ २८ ४०	४ २८ २२ २३	९ १३ ३ ५२	९ ४ ३९ २९	७ ९ ५ २६	२५
२६	३ ९ १३ ५९	११ २९ १५ ४२	५ २४ ४४ ५४	४ ४ ४६ १७	९ २५ ० ३७	४ ९ ७ ४३	११ २६ २९ १६	४ २८ १९ १२	९ १३ १ ३०	९ ४ ३७ ५१	७ ९ ४ ४०	२६
२७	३ १० ११ १९	० १३ ७ ५७	५ २५ १९ २	४ ६ १ ५३	९ २४ ५३ ३७	४ १० १९ ५२	११ २६ २९ ५२	४ २८ १६ २	९ १२ ५९ ८	९ ४ ३६ १३	७ ९ ४ १०	२७
२८	३ ११ ८ ३९	० २६ ४१ ३१	५ २५ ५३ १०	४ ७ १७ २९	९ २४ ४६ ३७	४ ११ ३२ ०	११ २६ ३० २९	४ २८ १२ ५१	९ १२ ५६ ४६	९ ४ ३४ ३५	७ ९ ३ ४०	२८
२९	३ १२ ६ ०	१ ९ ५९ ३	५ २६ २७ १८	४ ८ ३३ ३	९ २४ ३९ ३	४ १२ ४४ १०	११ २६ ३१ ५	४ २८ ९ ४०	९ १२ ५४ २४	९ ४ ३२ ५६	७ ९ ३ १०	२९
३०	३ १३ ३ २३	१ २३ १ ३९	५ २७ १ २६	४ ९ ४८ ४१	९ २४ ३१ ३०	४ १३ ५६ २०	११ २६ ३१ ४१	४ २८ ६ २९	९ १२ ५२ २	९ ४ ३१ १८	७ ९ २ ४०	३०
३१	३ १४ ० ४६	२ ५ ४९ ५४	५ २७ ३५ ३८	४ १० ५४ ६	९ २४ २३ ५६	४ १५ ८ २७	११ २६ ३२ ११	४ २८ ३ १८	९ १२ ४९ ४०	९ ४ २९ ४०	७ ९ २ १०	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अगस्त सन् १९९७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ४९' २०''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा..अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अग.
१	३ १४ ५८ ११	२ १८ २५ ३४	५ २८ ११ ३	४ ११ ५९ २१	९ २४ १६ २२	४ १६ २० ३७	११ २६ ३२ ३१	४ २८ ० ७	९ १२ ४७ १६	९ ४ २८ १०	७ ९ १ ४०	१
२	३ १५ ५५ ३६	३ ० ४९ ५९	५ २८ ४६ २८	४ १३ ४ ३१	९ २४ ८ ४८	४ १७ ३२ ४३	११ २६ ३२ ०व.	४ २७ ५६ ५७	९ १२ ४४ ५२	९ ४ २६ ४०	७ ९ १ १६	२
३	३ १६ ५३ ३	३ १३ २ ३८	५ २९ २१ ५३	४ १४ ९ ४१	९ २४ १ १४	४ १८ ४४ ३५	११ २६ ३२ ३३	४ २७ ५३ ४६	९ १२ ४२ २८	९ ४ २५ १०	७ ९ ० ५२	३
४	३ १७ ५० ३०	३ २५ ६ ५१	५ २९ ५७ १८	४ १५ ३ २६	९ २३ ५३ ३८	४ १९ ५६ २७	११ २६ ३२ ९	४ २७ ५० ३५	९ १२ ४० ४	९ ४ २३ ४०	७ ९ ० २८	४
५	३ १८ ४७ ५८	४ ७ १ ३०	६ ० ३२ ४३	४ १५ ५७ ११	९ २३ ४५ ५७	४ २१ ८ १९	११ २६ ३१ ४५	४ २७ ४७ २४	९ १२ ३७ ४०	९ ४ २२ १०	७ ९ ० ४	५
६	३ १९ ४५ २८	४ १८ ५१ ५६	६ १ ८ ८	४ १६ ५० ५५	९ २३ ३८ ६	४ २२ २० ११	११ २६ ३१ २०	४ २७ ४४ १४	९ १२ ३५ १६	९ ४ २० ४०	७ ८ ५९ ४०	६
७	३ २० ४२ ५८	५ ० ३७ ३२	६ १ ४३ ३८	४ १७ ४४ ४०	९ २३ ३० १५	४ २३ ३२ २	११ २६ ३० ४१	४ २७ ४१ ३	९ १२ ३२ ५२	९ ४ १९ १०	७ ८ ५९ २८	७
८	३ २१ ४० २८	५ १२ २४ ४९	६ २ १९ ५५	४ १८ २५ १०	९ २३ २२ ३३	४ २४ ४३ ५४	११ २६ २९ ५३	४ २७ ३७ ५२	९ १२ ३० २८	९ ४ १७ ४०	७ ८ ५९ १६	८
९	३ २२ ३७ ५९	५ २४ १५ ३६	६ २ ५६ १२	४ १९ ५ ४०	९ २३ १४ ३१	४ २५ ५५ ४२	११ २६ २९ ५	४ २७ ३४ ४१	९ १२ २८ ४	९ ४ १६ १०	७ ८ ५९ ४	९
१०	३ २३ ३५ ३२	६ ६ १४ ४५	६ ३ ३२ २९	४ १९ ४६ १०	९ २३ ६ ३८	४ २७ ७ १८	११ २६ २८ १७	४ २७ ३१ ३०	९ १२ २५ ४०	९ ४ १४ ४०	७ ८ ५८ ५२	१०
११	३ २४ ३३ ५	६ १८ २७ ३५	६ ४ ८ ४६	४ २० २६ ४०	९ २२ ५८ ३८	४ २८ १८ ५२	११ २६ २७ २९	४ २७ २८ १९	९ १२ २३ २२	९ ४ १३ १०	७ ८ ५८ ४१	११
१२	३ २५ ३० ४०	७ ० ५८ ५२	६ ४ ४५ ३	४ २० ५१ १०	९ २२ ५० ५५	४ २९ ३० २६	११ २६ २६ ४१	४ २७ २५ ८	९ १२ २१ ४	९ ४ ११ ४०	७ ८ ५८ ४०	१२
१३	३ २६ २८ १५	७ १३ ५२ ३६	६ ५ २१ २०	४ २१ १५ ४०	९ २२ ४३ १२	५ ० ४१ ५९	११ २६ २५ ४१	४ २७ २१ ५८	९ १२ १८ ४६	९ ४ १० १०	७ ८ ५८ ३९	१३
१४	३ २७ २५ ५०	७ २७ ११ २७	६ ५ ५७ ३८	४ २१ ४० १०	९ २२ ३५ २९	५ १ ५३ ३४	११ २६ २४ ४१	४ २७ १८ ४७	९ १२ १६ २८	९ ४ ८ ४०	७ ८ ५८ ३८	१४
१५	३ २८ २३ २७	८ १० ५८ ५५	६ ६ ३४ ४६	४ २२ ४ ४०	९ २२ २७ ४५	५ ३ ५ ८	११ २६ २३ ४१	४ २७ १५ ३६	९ १२ १४ १०	९ ४ ७ १०	७ ८ ५८ ४८	१५
१६	३ २९ २१ ५	८ २५ १३ २९	६ ७ ११ ५४	४ २२ १४ ४०	९ २२ २० २	५ ४ १६ ४२	११ २६ २२ ४१	४ २७ १२ २६	९ १२ ११ ५२	९ ४ ५ ४०	७ ८ ५९ २	१६
१७	४ ० १८ ४५	९ ९ ५२ ३८	६ ७ ४९ २	४ २२ २० ४०	९ २२ १२ १९	५ ५ २७ ५१	११ २६ २१ ४१	४ २७ ९ १५	९ १२ ९ ३४	९ ४ ४ १०	७ ८ ५९ २१	१७
१८	४ १ १६ २५	९ २४ ४९ ५९	६ ८ २६ ११	४ २२ २४ ०व.	९ २२ ४ ३९	५ ६ ३८ ५९	११ २६ २० ५	४ २७ ०६ ४	९ १२ ७ १६	९ ४ २ ४०	७ ८ ५९ ४०	१८
१९	४ २ १४ ७	१० ९ ५६ ४७	६ ९ ३ १९	४ २२ २० ५०	९ २१ ५७ १२	५ ७ ५० ९	११ २६ १८ २९	४ २७ २ ५३	९ १२ ४ ५८	९ ४ १ १०	७ ८ ५९ ५४	१९
२०	४ ३ ११ ५१	१० २५ ३ ३५	६ ९ ४० २७	४ २२ ६ ४७	९ २१ ४९ ४६	५ ९ १ २१	११ २६ १६ ५३	४ २६ ५९ ४१	९ १२ २ ४०	९ ३ ५९ ४०	७ ९ ० ८	२०
२१	४ ४ ९ ३५	११ १० २ २६	६ १० १७ ३९	४ २१ ५१ ४४	९ २१ ४२ २०	५ १० १२ ३०	११ २६ १५ १७	४ २६ ५६ ३०	९ १२ ० ४०	९ ३ ५८ २३	७ ९ ० २२	२१
२२	४ ५ ७ २०	११ २४ ४६ ५९	६ १० ५५ ५५	४ २१ ३५ ३९	९ २१ ३४ ५४	५ ११ २३ ३८	११ २६ १३ ४१	४ २६ ५३ २०	९ ११ ५८ ३९	९ ३ ५७ ६	७ ९ ० ३६	२२
२३	४ ६ ५ ८	० ९ ९ ३९	६ ११ ३४ ११	४ २१ ० ५४	९ २१ २७ २८	५ १२ ३४ ४२	११ २६ ११ २९	४ २६ ५० ९	९ ११ ५६ ३९	९ ३ ५५ ४९	७ ९ १ ०	२३
२४	४ ७ २ ५७	० २३ ८ २८	६ १२ १२ २६	४ २० २६ ९	९ २१ २० २	५ १३ ४५ ३१	११ २६ ९ १७	४ २६ ४६ ५८	९ ११ ५४ ३९	९ ३ ५४ ३२	७ ९ १ २४	२४
२५	४ ८ ० ४९	१ ६ ४५ ४३	६ १२ ५० ४३	४ १९ ५१ २४	९ २१ १२ ३८	५ १४ ५६ २०	११ २६ ७ ५	४ २६ ४३ ४८	९ ११ ५२ ३८	९ ३ ५३ १५	७ ९ १ ४८	२५
२६	४ ८ ५८ ४२	१ १९ ५९ ३१	६ १३ २९	४ १९ १६ ३९	९ २१ ५ ४४	५ १६ ७ ८	११ २६ ४ ५३	४ २६ ४० ३८	९ ११ ५० ३८	९ ३ ५१ ५८	७ ९ २ १२	२६
२७	४ ९ ५६ ३७	२ २ ५३ ५०	६ १४ ७ १५	४ १८ २४ १५	९ २० ५८ ५३	५ १७ १७ ५७	११ २६ २ ३६	४ २६ ३७ २७	९ ११ ४८ ३८	९ ३ ५० ४१	७ ९ २ ३६	२७
२८	४ १० ५४ ३३	२ १५ ३० २६	६ १४ ४५ ३५	४ १७ ३१ ५१	९ २० ५२ २	५ १८ २८ ४७	११ २५ ५९ २४	४ २६ ३४ १६	९ ११ ४६ ३७	९ ३ ४९ २४	७ ९ ३ ११	२८
२९	४ ११ ५२ ३१	२ २७ ५२ ४१	६ १५ २४ २६	४ १६ ३९ २७	९ २० ४५ ११	५ १९ ३९ ३५	११ २५ ५६ १२	४ २६ ३१ ५	९ ११ ४४ ३७	९ ३ ४८ ७	७ ९ ३ ४८	२९
३०	४ १२ ५० ३२	३ १० २ ३४	६ १६ ३ १७	४ १५ ४७ ३	९ २० ३८ २०	५ २० ५० २१	११ २५ ५२ ५९	४ २६ २७ ५५	९ ११ ४२ ३६	९ ३ ४६ ५१	७ ९ ४ २४	३०
३१	४ १३ ४८ ३३	३ २२ ३ ५१	६ १६ ४२ ८	४ १४ ५४ ३९	९ २० ३१ २९	५ २२ ० ४९	११ २५ ४९ ४८	४ २६ २४ ४४	९ ११ ४० ३६	९ ३ ४५ ३५	७ ९ ५ ०	३१

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली - 110006 ☎3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितंबर सन् १९९७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ४९' २४''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
सित.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	सित.
१	४ १४ ४६ ३६	४ ३ ५९ ३१	६ १७ २१ ०	४ १४ १२ २६	९ २० २४ ३८	५ २३ ११ १७	११ २५ ४६ ३६	४ २६ २१ ३३	९ ११ ३८ ४८	९ ३ ४४ ३५	७ ९ ५ ३६	१
२	४ १५ ४४ ४१	४ १५ ४७ ४६	६ १७ ५९ ५१	४ १३ ३० १३	९ २० १८ ३८	५ २४ २१ ४५	११ २५ ४३ २४	४ २६ १८ २२	९ ११ ३७ ०	९ ३ ४३ ३५	७ ९ ६ १९	२
३	४ १६ ४२ ४८	४ २७ ३४ २६	६ १८ ३८ ४२	४ १२ ४८ ०	९ २० १२ ३८	५ २५ ३२ १४	११ २५ ४० १३	४ २६ १५ ११	९ ११ ३५ १२	९ ३ ४२ ३५	७ ९ ७ २	३
४	४ १७ ४० ५६	५ ९ २१ २५	६ १९ १७ ३६	४ ११ २३ ३३	९ २० ६ ३९	५ २६ ४२ ४२	११ २५ ३७ १	४ २६ १२ ००	९ ११ ३३ २४	९ ३ ४१ ३५	७ ९ ७ ४४	४
५	४ १८ ३९ ६	५ २१ १० ३५	६ १९ ५७ १८	४ १० ४८ ३३	९ २० ० ३९	५ २७ ५३ ९	११ २५ ३३ ४९	४ २६ ८ ५०	९ ११ ३१ ३६	९ ३ ४० ३५	७ ९ ८ २७	५
६	४ १९ ३७ २८	६ ३ ५ ५०	६ २० ३७ ०	४ १० १३ ३३	९ १९ ५४ ३९	५ २९ ३ ३६	११ २५ ३० ३७	४ २६ ५ ३९	९ ११ २९ ४८	९ ३ ३९ ३५	७ ९ ९ ९	६
७	४ २० ३५ ३१	६ १५ ९ १	६ २१ १६ ४३	४ ९ ४० ३३	९ १९ ४८ ३९	६ ० १३ ३६	११ २५ २७ १	४ २६ २ २८	९ ११ २८ ०	९ ३ ३८ ३५	७ ९ ९ ५२	७
८	४ २१ ३३ ४६	६ २७ २३ ३०	६ २१ ५६ २५	४ ९ ११ ३३	९ १९ ४३ २७	६ १ २३ ३६	११ २५ २३ २५	४ २५ ५९ १७	९ ११ २६ १२	९ ३ ३७ ४१	७ ९ १० ३५	८
९	४ २२ ३२ २	७ ९ ५३ ४४	६ २२ ३६ ७	४ ८ ५६ ३३	९ १९ ३८ १५	६ २ ३३ ३६	११ २५ १९ ४९	४ २५ ५६ ७	९ ११ २४ २४	९ ३ ३६ ५०	७ ९ ११ ३५	९
१०	४ २३ ३० १९	७ २२ ४३ २८	६ २३ १५ ४९	४ ८ ५२ ३३मा	९ १९ ३३ २	६ ३ ४३ ३६	११ २५ १६ १३	४ २५ ५२ ५६	९ ११ २२ ३६	९ ३ ३५ ५९	७ ९ १२ ३५	१०
११	४ २४ २८ ३९	८ ५ ५६ ५५	६ २३ ५५ ३५	४ ८ ५६ ४८	९ १९ २७ ५०	६ ४ ५३ ३६	११ २५ १२ ३७	४ २५ ४९ ४५	९ ११ २१ १२	९ ३ ३५ ८	७ ९ १३ ३५	११
१२	४ २५ २७ ०	८ १९ ३५ २६	६ २४ ३५ ५९	४ ९ ५ ५३	९ १९ २२ ३८	६ ६ ३ ३६	११ २५ ८ ४९	४ २५ ४६ ३४	९ ११ १९ ४६	९ ३ ३४ १७	७ ९ १४ ३५	१२
१३	४ २६ २५ २२	९ ३ ४० ५२	६ २५ १६ २५	४ ९ ३१ ३२	९ १९ १८ २	६ ७ १३ ३५	११ २५ ५ १	४ २५ ४३ २३	९ ११ १८ २०	९ ३ ३३ २६	७ ९ १५ ३५	१३
१४	४ २७ २३ ४६	९ १८ १० २३	६ २५ ५६ ५१	४ १० १५ १८	९ १९ १३ २६	६ ८ २३ १	११ २५ १ १३	४ २५ ४० १२	९ ११ १६ ५४	९ ३ ३२ ३५	७ ९ १६ ३५	१४
१५	४ २८ २२ १२	१० ३ २ ४२	६ २६ ३७ १७	४ १० ५९ ३	९ १९ ८ ५०	६ ९ ३२ २७	११ २४ ५७ २५	४ २५ ३७ २	९ ११ १५ २८	९ ३ ३१ ५२	७ ९ १७ ३५	१५
१६	४ २९ २० ४०	१० १८ ८ ५३	६ २७ १७ ४३	४ ११ ४२ ४८	९ १९ ४ १४	६ १० ४१ ५३	११ २४ ५३ ३७	४ २५ ३३ ५१	९ ११ १४ २	९ ३ ३१ ९	७ ९ १८ ५३	१६
१७	५ ० १९ ९	११ ३ २१ २९	६ २७ ५८ ९	४ १२ २६ ३३	९ १८ ५९ ३८	६ ११ ५१ १९	११ २४ ४९ २५	४ २५ ३० ४०	९ ११ १२ ३६	९ ३ ३० २६	७ ९ २० ११	१७
१८	५ १ १७ ४१	११ १८ ३१ ४६	६ २८ ३८ ३५	४ १३ ४२ २१	९ १८ ५६ २	६ १३ ० ४५	११ २४ ४५ १३	४ २५ २७ २९	९ ११ ११ ११	९ ३ २९ ४१	७ ९ २१ २९	१८
१९	५ २ १६ १४	० ३ २८ ३९	६ २९ १९ ३३	४ १४ ५८ ९	९ १८ ५२ २६	६ १४ १० ११	११ २४ ४१ १	४ २५ २४ १८	९ ११ १० २	९ ३ २९ ६	७ ९ २२ ४७	१९
२०	५ ३ १४ ४९	० १८ ६ ३३	७ ० ० ३३	४ १६ १३ ५७	९ १८ ४८ ५०	६ १५ १९ ३५	११ २४ ३६ ४९	४ २५ २१ ८	९ ११ ८ ४५	९ ३ २८ २३	७ ९ २४ ५	२०
२१	५ ४ १३ २६	१ २ १८ ५७	७ ० ४१ ३३	४ १७ २९ ४५	९ १८ ४५ १४	६ १६ २८ २५	११ २४ ३२ ३७	४ २५ १७ ५७	९ ११ ७ २८	९ ३ २७ ३५	७ ९ २५ १३	२१
२२	५ ५ १२ ६	१ १६ ३ ३०	७ १ २२ ३४	४ १८ ४५ ३३	९ १८ ४१ ३८	६ १७ ३७ १७	११ २४ २८ १३	४ २५ १४ ४६	९ ११ ६ ११	९ ३ २७ ९	७ ९ २६ ३२	२२
२३	५ ६ १० ४७	१ २९ २२ ४८	७ २ ३ ३४	४ २० २४ १३	९ १८ ३८ ५१	६ १८ ४६ ८	११ २४ २३ ४९	४ २५ ११ ३५	९ ११ ४ ५४	९ ३ २६ ४३	७ ९ २७ ५२	२३
२४	५ ७ ९ ३१	२ १२ १६ ४२	७ २ ४४ ३४	४ २२ २ ५३	९ १८ ३६ ६	६ १९ ५४ ५९	११ २४ १९ २५	४ २५ ८ २४	९ ११ ३ ३४	९ ३ २६ १७	७ ९ २९ १२	२४
२५	५ ८ ८ १८	२ २४ ४८ १७	७ ३ २६ ३४	४ २३ ४१ ३२	९ १८ ३३ २०	६ २१ ३ ५०	११ २४ १५ ०	४ २५ ५ १४	९ ११ २ ५१	९ ३ २५ ५१	७ ९ ३० ३२	२५
२६	५ ९ ७ ६	३ ७ ४ ४७	७ ४ ८ २५	४ २५ २० १२	९ १८ ३० ३४	६ २२ १२ ४१	११ २४ १० ३७	४ २५ २ ३	९ ११ २ ८	९ ३ २५ २६	७ ९ ३१ ५२	२६
२७	५ १० ५ ५७	३ १९ ६ ४३	७ ४ ५० १६	४ २६ ५८ ५२	९ १८ २८ ३४	६ २३ २१ ३४	११ २४ ६ १३	४ २४ ५८ ५२	९ ११ १ २५	९ ३ २५ ०	७ ९ ३३ १२	२७
२८	५ ११ ४ ५०	४ १ ० ३५	७ ५ ३२ ७	४ २८ ३७ ३२	९ १८ २६ ३४	६ २४ २९ ३४	११ २४ १ ४९	४ २४ ५५ ४१	९ ११ ० ४२	९ ३ २४ ३५	७ ९ ३४ ३२	२८
२९	५ १२ ३ ४५	४ १२ ४९ ५४	७ ६ १३ ५८	५ ० २४ ५७	९ १८ २४ ३४	६ २५ ३७ ३४	११ २३ ५७ २५	४ २४ ५२ ३०	९ १० ५९ ५९	९ ३ २४ १५	७ ९ ३५ ५२	२९
३०	५ १३ २ ४२	४ २४ ३५ ३१	७ ६ ५५ ४९	५ २ १२ २२	९ १८ २२ ३४	६ २६ ४५ ३४	११ २३ ५३ १	४ २४ ४९ १९	९ १० ५९ १६	९ ३ २३ ५५	७ ९ ३७ १२	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्तूबर सन् १९९७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ४९' २७"

ता. अक्तू.	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि (वक्री) रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्शल (वक्री) रा. अं. क. वि.	नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क. वि.	प्लूटो रा. अं. क. वि.	ता. अक्तू.
१	५ १४ १ ४१	५ ६ २३ ४३	७ ७ ३७ ४०	५ ३ ५९ ४७	९ १८ २१ १९	६ २७ ५३ ३४	११ २३ ४८ ३७	४ २४ ४६ ९	९ १० ५८ ३३	९ ३ २३ ४०	७ ९ ३८ ३३	१
२	५ १५ ० ४२	५ १८ १४ २६	७ ८ १९ ३४	५ ५ ४७ १२	९ १८ २० ४	६ २९ १ ३४	११ २३ ४३ ५२	४ २४ ४२ ५८	९ १० ५८ ७	९ ३ २३ २५	७ ९ ४० २०	२
३	५ १५ ५९ ४६	६ ० १० २२	७ ९ १ ५८	५ ७ ३४ ३७	९ १८ १८ ४९	७ ० ९ ३४	११ २३ ३९ ७	४ २४ ३९ ४७	९ १० ५७ ४१	९ ३ २३ १०	७ ९ ४२ ६	३
४	५ १६ ५८ ५१	६ १२ १३ ४६	७ ९ ४४ २४	५ ९ २२ २	९ १८ १७ ३४	७ १ १७ ३४	११ २३ ३४ २२	४ २४ ३६ ३६	९ १० ५७ १५	९ ३ २३ ०	७ ९ ४३ ५५	४
५	५ १७ ५७ ५८	६ २४ २६ ४१	७ १० २६ ५०	५ ११ ९ २७	९ १८ १६ ५४	७ २ २४ ४२	११ २३ २९ ३७	४ २४ ३३ २६	९ १० ५६ ४९	९ ३ २२ ५२	७ ९ ४५ ४१	५
६	५ १८ ५७ ८	७ ६ ५० २५	७ ११ ९ १६	५ १२ ५५ १९	९ १८ १६ २४	७ ३ ३१ ५०	११ २३ २४ ५३	४ २४ ३० १५	९ १० ५६ २२	९ ३ २२ ४५	७ ९ ४७ २७	६
७	५ १९ ५६ १९	७ १९ २६ ४८	७ ११ ५१ ४२	५ १४ ४१ ३१	९ १८ १६ ४	७ ४ ३८ ५८	११ २३ २० ९	४ २४ २७ ४	९ १० ५५ ५७	९ ३ २२ ४०	७ ९ ४९ १३	७
८	५ २० ५५ ३२	८ २ १९ ३६	७ १२ ३४ ८	५ १६ २७ ३	९ १८ १५ ५४	७ ५ ४६ ६	११ २३ १५ २५	४ २४ २३ ५४	९ १० ५५ ३३	९ ३ २२ ३५	७ ९ ५० ५९	८
९	५ २१ ५४ ४६	८ १५ २९ २९	७ १३ १६ ३४	५ १८ १२ ५४	९ १८ १५।४मा.	७ ६ ५३ १४	११ २३ १० ४१	४ २४ २० ४३	९ १० ५५ २०	९ ३ २२ ३२	७ ९ ५२ ४५	९
१०	५ २२ ५४ २	८ २८ ५९ ४१	७ १३ ५९ ४२	५ १९ ५८ ४५	९ १८ १५ ५४	७ ८ ० २०	११ २३ ५ ५७	४ २४ १७ ३२	९ १० ५५ १०	९ ३ २२ ३०मा.	७ ९ ५४ ३२	१०
११	५ २३ ५३ २०	९ १२ ५१ २२	७ १४ ४२ ५०	५ २१ ४४ ३६	९ १८ १६ ३५	७ ९ ७ ३०	११ २३ १ १३	४ २४ १४ २१	९ १० ५५ ०	९ ३ २२ ३३	७ ९ ५६ २६	११
१२	५ २४ ५२ ४०	९ २७ ५ ३९	७ १५ २५ ५८	५ २३ ३० २७	९ १८ १७ २५	७ १० १३ ३०	११ २२ ५६ २९	४ २४ ११ १०	९ १० ५४ ५२	९ ३ २२ ३८	७ ९ ५८ २०	१२
१३	५ २५ ५२ २	१० ११ ३९ १८	७ १६ ९ ६	५ २५ ११ ५२	९ १८ १८ ३५	७ ११ १९ ३०	११ २२ ५१ ४५	४ २४ ७ ५९	९ १० ५४ ४५	९ ३ २२ ४८	७ १० ० १४	१३
१४	५ २६ ५१ २६	१० २६ ३१ ४४	७ १६ ५२ १४	५ २६ ५३ १८	९ १८ १९ ५०	७ १२ २५ २९	११ २२ ४७ ०	४ २४ ४ ४८	९ १० ५४ ३८	९ ३ २३ ०	७ १० २ ८	१४
१५	५ २७ ५० ५२	११ ११ ३३ ४०	७ १७ ३५ २२	५ २८ ३४ ४४	९ १८ २१ ५	७ १३ ३१ २९	११ २२ ४२ १७	४ २४ १ ३८	९ १० ५४ ३३	९ ३ २३ १५	७ १० ४ २	१५
१६	५ २८ ५० १९	११ २६ ३७ २९	७ १८ १८ ३२	६ ० १६ १०	९ १८ २२ २०	७ १४ ३७ २९	११ २२ ३७ ३३	४ २३ ५८ २७	९ १० ५४ ३०मा.	९ ३ २३ ३०	७ १० ५ ५६	१६
१७	५ २९ ४९ ४८	० ११ ३५ ३८	७ १९ २ ६	६ १ ५७ ३६	९ १८ २३ ३५	७ १५ ४३ २९	११ २२ ३२ ५७	४ २३ ५५ १६	९ १० ५४ ३५	९ ३ २३ ४५	७ १० ७ ५०	१७
१८	६ ० ४९ १९	० २६ १७ १९	७ १९ ४५ ४०	६ ३ ३९ २	९ १८ २५ ४६	७ १६ ४९ २९	११ २२ २८ २१	४ २३ ५२ ५	९ १० ५४ ५०	९ ३ २४ ०	७ १० ९ ४४	१८
१९	६ १ ४८ ५३	१ १० ३८ ३८	७ २० २९ १४	६ ५ २० २८	९ १८ २७ ५७	७ १७ ५४ १२	११ २२ २३ ४५	४ २३ ४८ ५४	९ १० ५५ ८	९ ३ २४ १५	७ १० ११ ३८	१९
२०	६ २ ४८ २९	१ २४ ३१ १४	७ २१ १२ ४८	६ ६ ५७ २८	९ १८ ३० ८	७ १८ ५८ ५५	११ २२ १९ ९	४ २३ ४५ ४४	९ १० ५५ ३०	९ ३ २४ ३०	७ १० १३ ३२	२०
२१	६ ३ ४८ ७	२ ७ ५७ ८	७ २१ ५६ २२	६ ८ ३४ २८	९ १८ ३२ १९	७ २० ३ ३८	११ २२ १४ ३३	४ २३ ४२ ३३	९ १० ५५ ५०	९ ३ २५ ०	७ १० १५ ४२	२१
२२	६ ४ ४७ ४७	२ २० ५५ २६	७ २२ ३९ ५६	६ १० ११ २८	९ १८ ३४ ३०	७ २१ ८ २०	११ २२ १० ३	४ २३ ३९ २२	९ १० ५६ १२	९ ३ २५ ३३	७ १० १७ ५२	२२
२३	६ ५ ४७ ३०	३ ३ ३० २८	७ २३ २३ ३२	६ ११ ४८ २८	९ १८ ३७ ४३	७ २२ १३ ४	११ २२ ५ ३३	४ २३ ३६ ११	९ १० ५६ ३७	९ ३ २६ ६	७ १० २० २	२३
२४	६ ६ ४७ १४	३ १५ ४५ २०	७ २४ ७ ४०	६ १३ २५ २८	९ १८ ४० ५५	७ २३ १७ ४७	११ २२ १ ३	४ २३ ३३ ००	९ १० ५७ ३	९ ३ २६ ३९	७ १० २२ १२	२४
२५	६ ७ ४७ १	३ २७ ४५ ४६	७ २४ ५१ ४८	६ १५ २ २८	९ १८ ४४ ७	७ २४ २२ २९	११ २२ ५६ ३३	४ २३ २९ ५०	९ १० ५७ ३०	९ ३ २७ १२	७ १० २४ २२	२५
२६	६ ८ ४६ ५१	४ ९ ३६ ३४	७ २५ ३५ ५६	६ १६ ३९ २८	९ १८ ४७ १९	७ २५ २५ ३९	११ २१ ५२ ३	४ २३ २६ ३९	९ १० ५८ १०	९ ३ २७ ४५	७ १० २६ ३२	२६
२७	६ ९ ४६ ४२	४ २१ २३ १८	७ २६ २० ४	६ १८ १२ ४५	९ १८ ५० ३१	७ २६ २८ ४९	११ २१ ४७ ४५	४ २३ २३ २८	९ १० ५९ ५०	९ ३ २८ १८	७ १० २८ ४२	२७
२८	६ १० ४६ ३६	५ ३ ११ ७	७ २७ ४ १२	६ १९ ४६ २	९ १८ ५४ ४३	७ २७ ३१ ५९	११ २१ ४३ २७	४ २३ २० १७	९ १० ५९ ३०	९ ३ २८ ५१	७ १० ३० ५२	२८
२९	६ ११ ४६ ३२	५ १५ ० ४६	७ २७ ४८ १९	६ २१ १९ १९	९ १८ ५८ ५५	७ २८ ३५ ९	११ २१ ३९ ९	४ २३ १७ ६	९ ११ ० १०	९ ३ २९ २४	७ १० ३३ २	२९
३०	६ १२ ४६ ३०	५ २६ ५८ ३२	७ २८ ३२ ३१	६ २२ ५२ ३६	९ १९ ३ ७	७ २९ ३८ १९	११ २१ ३४ ५२	४ २३ १३ ५६	९ ११ ० ५०	९ ३ २९ ५७	७ १० ३५ १२	३०
३१	६ १३ ४६ २९	६ ९ ४ १९	७ २९ १७ १३	६ २४ २५ ५३	९ १९ ७ १९	८ ० ४१ २९	११ २१ ३० ३४	४ २३ १० ४५	९ ११ १ ३०	९ ३ ३० ३०	७ १० ३७ २१	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवंबर सन् १९९७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ४९' ३१"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
नव.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	नव.
१	६ १४ ४६ ३०	६ २१ २१ १५	८ ० १ ५७	६ २५ ५९ १०	९ १९ ११ ३१	८ १ ४२ २९	११ २१ २६ २२	४ २३ ७ ३४	९ ११ २ ३४	९ ३ ३१ २४	७ १० ३९ ३०	१
२	६ १५ ४६ ३४	७ ३ ५० ४१	८ ० ४६ ४०	६ २७ ३२ २८	९ १९ १६ ४१	८ १ ४३ २९	११ २१ २२ १०	४ २३ ४ २३	९ ११ ३ ४०	९ ३ ३२ १८	७ १० ४१ ४३	२
३	६ १६ ४६ ३९	७ १६ ३० २५	८ १ ३१ २२	६ २९ २ ३८	९ १९ २१ ५१	८ ३ ४४ २९	११ २१ १७ ५८	४ २३ १ १२	९ ११ ४ ४६	९ ३ ३३ १२	७ १० ४३ ५६	३
४	६ १७ ४६ ४६	७ २९ २२ ३५	८ २ १६ ३	७ ० ३२ ४८	९ १९ २७ १	८ ४ ४५ २९	११ २१ १३ ४६	४ २२ ५८ २	९ ११ ५ ५२	९ ३ ३४ ६	७ १० ४६ १०	४
५	६ १८ ४६ ५५	८ १२ २६ १६	८ ३ ० ४५	७ २ ३ ०	९ १९ ३२ ११	८ ५ ४६ २८	११ २१ ११ ३४	४ २२ ५४ ५१	९ ११ ६ ५८	९ ३ ३५ ०	७ १० ४८ २३	५
६	६ १९ ४७ ५	८ २५ ४४ ४७	८ ३ ४५ २९	७ ३ ३३ ८	९ १९ ३७ २१	८ ६ ४७ २८	११ २१ ५ ५७	४ २२ ५१ ४०	९ ११ ८ ४	९ ३ ३५ ५४	७ १० ५० ३६	६
७	६ २० ४७ १७	९ ९ १४ १८	८ ४ ३० ३७	७ ५ ३ १८	९ १९ ४२ ३१	८ ७ ४८ २८	११ २१ २ २१	४ २२ ४८ २९	९ ११ ९ १०	९ ३ ३६ ४८	७ १० ५२ ५०	७
८	६ २१ ४७ ३१	९ २२ ५९ ३७	८ ५ १५ ४५	७ ६ ३३ २९	९ १९ ४८ ४८	८ ८ ४७ १६	११ २० ५८ ४५	४ २२ ४५ १८	९ ११ १० १६	९ ३ ३७ ४२	७ १० ५५ ३	८
९	६ २२ ४७ ४५	१० ६ ५९ २६	८ ६ ० ५३	७ ८ १ १७	९ १९ ५५ ५	८ ९ ४६ ४	११ २० ५५ ९	४ २२ ४२ ८	९ ११ ११ २२	९ ३ ३८ ३६	७ १० ५७ १६	९
१०	६ २३ ४८ १	१० २१ १४ ३५	८ ६ ४६ १	७ ९ २९ ५	९ २० १ २२	८ १० ४४ ५२	११ २० ५१ ३३	४ २२ ३८ ५७	९ ११ १२ २८	९ ३ ३९ ३०	७ १० ५९ ३०	१०
११	६ २४ ४८ १९	११ ५ ४३ १५	८ ७ ३१ ८	७ १० ५६ ५३	९ २० ७ ३९	८ ११ ४३ ४०	११ २० ४८ ३	४ २२ ३५ ४६	९ ११ १४ ४	९ ३ ४० ४२	७ ११ १ ५४	११
१२	६ २५ ४८ ३८	११ २० २० ५४	८ ८ १६ १६	७ १२ २४ ४१	९ २० १३ ५६	८ १२ ४२ २८	११ २० ४४ ३३	४ २२ ३२ ३५	९ ११ १५ ४०	९ ३ ४१ ५४	७ ११ ४ १८	१२
१३	६ २६ ४८ ५९	० ५ ५ २४	८ ९ १ २६	७ १३ ५२ २९	९ २० २० १३	८ १३ ३८ ५२	११ २० ४१ ३	४ २२ २९ २४	९ ११ १७ १६	९ ३ ४३ ४	७ ११ ६ ४२	१३
१४	६ २७ ४९ २१	० १९ ४७ ४०	८ ९ ४६ ४३	७ १५ १७ १७	९ २० २६ ३२	८ १४ ३५ १६	११ २० ३७ ३३	४ २२ २६ १४	९ ११ १८ ५३	९ ३ ४४ १६	७ ११ ९ ६	१४
१५	६ २८ ४९ ४४	१ ४ १९ १४	८ १० ३२ ०	७ १६ ४२ ५	९ २० ३३ ४९	८ १५ ३१ ४०	११ २० ३४ ३३	४ २२ २३ ३	९ ११ २० २८	९ ३ ४५ २८	७ ११ ११ ३०	१५
१६	६ २९ ५० १०	१ १८ ३४ १०	८ ११ १७ १७	७ १८ ६ ५३	९ २० ४१ ६	८ १६ २८ ४	११ २० ३१ ३३	४ २२ १९ ५२	९ ११ २२ ४	९ ३ ४६ ४०	७ ११ १३ ५४	१६
१७	७ ० ५० ३७	२ २ २७ ४१	८ १२ २ ३४	७ १९ ३१ ४१	९ २० ४८ २३	८ १७ २४ २८	११ २० २८ ३३	४ २२ १६ ४१	९ ११ २३ ४०	९ ३ ४७ ५१	७ ११ १६ १८	१७
१८	७ १ ५१ ५	२ १५ ५५ १९	८ १२ ४७ ५१	७ २० ५६ २९	९ २० ५५ ४०	८ १८ १८ ४	११ २० २५ ३३	४ २२ १३ ३०	९ ११ २५ १६	९ ३ ४९ ३	७ ११ १८ ४२	१८
१९	७ २ ५१ ३७	२ २८ ५६ ३३	८ १३ ३३ ८	७ २२ १६ ५	९ २१ २ ५७	८ १९ ११ ४०	११ २० २२ ४८	४ २२ १० २०	९ ११ २६ ५२	९ ३ ५० १५	७ ११ २१ ६	१९
२०	७ ३ ५२ १	३ ११ ३४ १५	८ १४ १९ २६	७ २३ ३२ ४१	९ २१ १० १४	८ २० ५ १६	११ २० २० ३	४ २२ ७ ९	९ ११ २८ २८	९ ३ ५१ २५	७ ११ २३ ३०	२०
२१	७ ४ ५२ ४३	३ २३ ५१ ८	८ १५ ५ १७	७ २४ ५५ १७	९ २१ १७ ३२	८ २० ५८ ५२	११ २० १७ १८	४ २२ ३ ५८	९ ११ ३० २८	९ ३ ५२ ४९	७ ११ २५ ५१	२१
२२	७ ५ ५३ १८	४ ५ ५३ ४४	८ १५ ५१ ८	७ २६ १४ ५३	९ २१ २५ ५६	८ २१ ५२ २८	११ २० १४ ३३	४ २२ ० ४७	९ ११ ३२ २८	९ ३ ५४ १३	७ ११ २८ १२	२२
२३	७ ६ ५३ ५६	४ १७ ४५ १८	८ १६ ३६ ५९	७ २७ ३४ २९	९ २१ ३४ २२	८ २२ ४२ २८	११ २० ११ ३	४ २१ ५७ ३६	९ ११ ३४ २८	९ ३ ५५ ३७	७ ११ ३० ३४	२३
२४	७ ७ ५४ ३५	४ २९ ३२ ३१	८ १७ २२ ५०	७ २८ ४६ २९	९ २१ ४२ ४८	८ २३ ३२ २८	११ २० ९ ३३	४ २१ ५४ २६	९ ११ ३६ २८	९ ३ ५७ १	७ ११ ३२ ५५	२४
२५	७ ८ ५५ १६	५ ११ २० २०	८ १८ ८ ४०	७ २९ ५८ २९	९ २१ ५१ १४	८ २४ २२ २८	११ २० ७ ३	४ २१ ५१ १५	९ ११ ३८ २८	९ ३ ५८ २५	७ ११ ३४ १७	२५
२६	७ ९ ५५ ५९	५ २३ १४ ३५	८ १८ ५४ ३१	८ १ १० २९	९ २१ ५९ ४०	८ २५ १२ २८	११ २० ४ ३३	४ २१ ४८ ४	९ ११ ४० २८	९ ३ ५९ ४९	७ ११ ३७ ३८	२६
२७	७ १० ५६ ४३	६ ५ १७ २२	८ १९ ४० २५	८ २ २२ २९	९ २२ ८ ६	८ २६ २ २८	११ २० २ ४७	४ २१ ४४ ५३	९ ११ ४२ २८	९ ४ १ १३	७ ११ ३९ ५९	२७
२८	७ ११ ५७ २९	६ १७ ३४ ३०	८ २० २६ ४२	८ ३ २२ १३	९ २२ १६ ३२	८ २६ ४८ १४	११ २० १ ३	४ २१ ४१ ४२	९ ११ ४४ २८	९ ४ २ ३७	७ ११ ४२ २१	२८
२९	७ १२ ५८ १६	७ ० ५ १६	८ २१ १२ ५९	८ ४ २१ ५८	९ २२ २५ ५६	८ २७ ३४ १	११ १९ ५९ १८	४ २१ ३८ ३१	९ ११ ४६ २८	९ ४ ४ १	७ ११ ४४ ४२	२९
३०	७ १३ ५९ ४	७ १२ ५१ ३८	८ २१ ५९ १६	८ ५ २१ ४२	९ २२ ३५ २२	८ २८ १९ ४८	११ १९ ५७ ३३	४ २१ ३५ २१	९ ११ ४८ २८	९ ४ ५ २५	७ ११ ४७ ३	३०

CC-0 In Public Domain, Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दिसंबर सन् १९९७ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ४९' ३५"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
दिस.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	दिस.
१	७ १४ ५८ ५३	७ २५ ५३ ३७	८ २२ ४५ ३३	८ ६ २१ २५	९ २२ ४४ ४८	८ २९ ५ ३५	११ १९ ५५ ४७	४ २१ ३२ १०	९ ११ ५० ५२	९ ४ ७ १३	७ ११ ४९ २५	१
२	७ १६ ० ४४	८ ९ ८ १६	८ २३ ३१ ५०	८ ७ ३ ४५	९ २२ ५४ १४	८ २९ ५१ २२	११ १९ ५३ ५९	४ २१ २८ ५९	९ ११ ५३ १६	९ ४ ९ १	७ ११ ५१ ४५	२
३	७ १७ १ ३५	८ २२ ३५ ३०	८ २४ १८ ७	८ ७ ४६ ५	९ २३ ३ ४०	९ ० ३१ २२	११ १९ ५२ १५	४ २१ २५ ४८	९ ११ ५५ ४०	९ ४ १० ४९	७ ११ ५४ ५	३
४	७ १८ २ २७	९ ६ ११ १७	८ २५ ४ २३	८ ८ २८ २५	९ २३ १३ ६	९ १ ११ २२	११ १९ ५० २८	४ २१ २२ ३८	९ ११ ५८ ४	९ ४ १२ ३७	७ ११ ५६ २५	४
५	७ १९ ३ २०	९ १९ ५५ ३३	८ २५ ५० ५७	८ ८ ५३ २५	९ २३ २२ ३२	९ १ ५१ २२	११ १९ ४९ २८	४ २१ १९ २७	९ १२ ० २८	९ ४ १४ २५	७ ११ ५८ ४५	५
६	७ २० ४ १५	१० ३ ४६ ३०	८ २६ ३७ ३१	८ ९ ११ २५	९ २३ ३२ ४०	९ २ ३१ २२	११ १९ ४८ २८	४ २१ १६ १६	९ १२ २ ५२	९ ४ १६ १३	७ १२ १ ५	६
७	७ २१ ५ १०	१० १७ ४४ २०	८ २७ २४ ५	८ ९ २६ २५	९ २३ ४२ ४८	९ ३ ११ २२	११ १९ ४७ २८	४ २१ १३ ५	९ १२ ५ १६	९ ४ १८ १	७ १२ ३ २५	७
८	७ २२ ६ ५	११ १ ४८ ४२	८ २८ १० ३९	८ ९ ३२ २५ व.	९ २३ ५२ ५६	९ ३ ५१ २२	११ १९ ४६ २८	४ २१ ९ ५५	९ १२ ७ ४०	९ ४ १९ ४९	७ १२ ५ ४५	८
९	७ २३ ७ २	११ १५ ५८ १८	८ २८ ५७ १३	८ ९ २४ २५	९ २४ ३ ४	९ ४ ३४ ३७	११ १९ ४५ ४३	४ २१ ६ ४४	९ १२ १० ४	९ ४ २१ ३७	७ १२ ५ ८	९
१०	७ २४ ७ ५८	० ० १३ ३३	८ २९ ४३ ४७	८ ९ ४ २५	९ २४ १३ १३	९ ४ ५७ ५२	११ १९ ४४ ५८	४ २१ ३ ३३	९ १२ १२ २८	९ ४ २३ २५	७ १२ १० २५	१०
११	७ २५ ८ ५६	० १४ २९ ११	९ ० ३० २३	८ ८ १२ १	९ २४ २३ २२	९ ५ ३१ ७	११ १९ ४४ १३	४ २१ ० २२	९ १२ १५ १५	९ ४ २५ ११	७ १२ १२ ४३	११
१२	७ २६ ९ ५४	० २८ ४४ ३९	९ १ १७ ६	८ ७ १९ ३८	९ २४ ३३ ३२	९ ६ ४ २२	११ १९ ४३ २८	४ २० ५७ ११	९ १२ १८ २	९ ४ २७ १३	७ १२ १५ १	१२
१३	७ २७ १० ५३	१ १२ ५१ १०	९ २ ३ ४९	८ ६ २७ १४	९ २४ ४४ ३२	९ ६ ३० ३४	११ १९ ४२ ५८	४ २० ५४ ०	९ १२ २० ४९	९ ४ २९ ७	७ १२ १७ १९	१३
१४	७ २८ ११ ५३	१ २६ ४७ २७	९ २ ५० ३२	८ ५ ३४ ५०	९ २४ ५५ ३२	९ ६ ५६ ४६	११ १९ ४२ ४३	४ २० ५० ५०	९ १२ २३ ३६	९ ४ ३१ १	७ १२ १९ ३७	१४
१५	७ २९ १२ ५४	२ १० २६ १७	९ ३ ३७ १५	८ ४ ४२ २६	९ २५ ६ ३२	९ ७ २२ ५८	११ १९ ४२ ३५	४ २० ४७ ३९	९ १२ २६ २३	९ ४ ३२ ५५	७ १२ २१ ५५	१५
१६	८ ० १३ ५५	२ २३ ४५ ३०	९ ४ २३ ५८	८ ३ २२ १४	९ २५ १७ ३२	९ ७ ४९ १०	११ १९ ४२ ३०	४ २० ४४ २८	९ १२ २९ १०	९ ४ ३४ ४९	७ १२ २४ १३	१६
१७	८ १ १४ ५६	३ ६ ४३ १४	९ ५ १० ४१	८ २ २ २	९ २५ २८ ३२	९ ८ १५ २२	११ १९ ४२ २८ मा.	४ २० ४१ १७	९ १२ ३१ ५७	९ ४ ३६ ४३	७ १२ २६ ३१	१७
१८	८ २ १५ ५९	३ १९ १९ ३८	९ ५ ५७ २३	८ ० ४१ ५०	९ २५ ३९ ३२	९ ८ ३३ ७	११ १९ ४२ ३०	४ २० ३८ ६	९ १२ ३४ ४४	९ ४ ३८ ३७	७ १२ २८ ४९	१८
१९	८ ३ १७ २	४ १ ३७ १९	९ ६ ४४ २२	७ २९ २१ ३८	९ २५ ५० ३२	९ ८ ५० ५२	११ १९ ४२ ४५	४ २० ३४ ५६	९ १२ ३७ ३१	९ ४ ४० ३१	७ १२ ३१ ७	१९
२०	८ ४ १८ ७	४ १३ ४० २४	९ ७ ३१ २२	७ २८ १ २६	९ २६ २ १६	९ ९ ८ ३७	११ १९ ४२ ५९	४ २० ३१ ४५	९ १२ ४० २०	९ ४ ४२ २५	७ १२ ३३ २५	२०
२१	८ ५ १९ १२	४ २५ ३३ ९	९ ८ १८ २१	७ २७ ० ६	९ २६ १३ ५९	९ ९ २६ २२	११ १९ ४३ २८	४ २० २८ ३४	९ १२ ४३ २५	९ ४ ४४ ३०	७ १२ ३५ ३०	२१
२२	८ ६ २० १८	५ ७ २१ १९	९ ९ ५ २१	७ २५ ५८ ४६	९ २६ २५ ४२	९ ९ ३५ ५२	११ १९ ४४ १३	४ २० २५ २३	९ १२ ४६ ३०	९ ४ ४६ ३५	७ १२ ३७ ३६	२२
२३	८ ७ २१ २५	५ १९ १० ११	९ ९ ५२ २१	७ २४ ५७ २५	९ २६ ३७ २५	९ ९ ४५ २२	११ १९ ४४ ५७	४ २० २२ १२	९ १२ ४९ ३५	९ ४ ४८ ४०	७ १२ ३९ ४१	२३
२४	८ ८ २२ ३२	६ १ ५ २८	९ १० ३९ २१	७ २४ २६ २५	९ २६ ४९ ८	९ ९ ५४ ५२	११ १९ ४५ ४२	४ २० १९ २	९ १२ ५२ ४०	९ ४ ५० ४५	७ १२ ४१ ४७	२४
२५	८ ९ २३ ४१	६ १३ ११ १७	९ ११ २६ २१	७ २३ ५५ २५	९ २७ ० ५१	९ १० ४ २३	११ १९ ४६ २७	४ २० १५ ५१	९ १२ ५५ ४५	९ ४ ५२ ५०	७ १२ ४३ ५२	२५
२६	८ १० २४ ४९	६ २५ ३३ ३४	९ १२ १३ २९	७ २३ २४ २५	९ २७ १२ ३३	९ १० ७ १८	११ १९ ४७ ४२	४ २० १२ ४०	९ १२ ५८ ५०	९ ४ ५४ ५५	७ १२ ४५ ५८	२६
२७	८ ११ २५ ५९	७ ८ १३ १२	९ १३ ० ३७	७ २३ १८ २५	९ २७ २४ ४७	९ १० ८ २७ व.	११ १९ ४८ ५७	४ २० ९ २९	९ १३ १ ५६	९ ४ ५७ ०	७ १२ ४८ ३	२७
२८	८ १२ २७ ८	७ २१ १४ २९	९ १३ ४७ ४५	७ २३ १५ २५ मा.	९ २७ ३७ ३	९ १० ७ १८	११ १९ ५० १२	४ २० ६ १८	९ १३ ५ २	९ ४ ५९ ५	७ १२ ५० ९	२८
२९	८ १३ २८ १७	८ ४ ३४ १५	९ १४ ३४ ५३	७ २३ ३२ ४४	९ २७ ४९ १९	९ १० १ २२	११ १९ ५१ २७	४ २० ३ ८	९ १३ ८ ८	९ ५ १ १०	७ १२ ५२ १४	२९
३०	८ १४ २९ २८	८ १८ १३ ४०	९ १५ २२ १	७ २३ ५० १२	९ २८ १ ३५	९ ९ ५४ २२	११ १९ ५३ ३	४ १९ ५९ ५७	९ १३ ११ १४	९ ५ ३ १५	७ १२ ५४ १९	३०
३१	८ १५ ३० ३८	९ २ ५ १६	९ १६ ९ ९	७ २४ [illegible]	९ २८ २३ ४१	९ ९ ४७ २३	११ १९ ५४ ३९	४ १९ ५६ ४६	९ १३ १४ २०	९ ५ ५ २०	७ १२ ५६ २०	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जनवरी सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ४९' ३९''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जन.
१	८ १६ ३१ ४७	९ १६ ८ ९	९ १६ ५६ २१	७ २४ ५० २२	९ २८ २६ ७	९ ९ ३२ ६	११ १९ ५५ १५	४ ११ ५३ ३५	९ १३ १७ ३८	९ ५ ७ ३२	७ १२ ५८ ३०	१
२	८ १७ ३२ ५८	१० ० १७ ३२	९ १७ ३ ३७	७ २५ ३३ २२	९ २८ ३८ २३	९ ९ १६ ५२	११ १९ ५६ ५०	४ ११ ५० २४	९ १३ २० ५६	९ ५ ९ ४४	७ १३ ० २९	२
३	८ १८ ३४ ८	१० १४ २८ १७	९ १८ ३० ५४	७ २६ १६ २२	९ २८ ५१ १४	९ ९ १ ३५	११ १९ ५९ २१	४ ११ ४७ १४	९ १३ २४ १४	९ ५ ११ ५६	७ १३ २ २८	३
४	८ १९ ३५ १८	१० २८ ३९ २६	९ १९ १८ ११	७ २६ ५९ २२	९ २९ ४ ५	९ ८ ४६ १८	११ २० १ ३३	४ ११ ४४ ३	९ १३ २७ ३२	९ ५ १४ ८	७ १३ ४ २७	४
५	८ २० ३६ २८	११ १२ ४८ ३६	९ २० ५ २८	७ २७ ४२ २२	९ २९ १६ ५६	९ ८ २१ ४८	११ २० ३ ४५	४ ११ ४० ५२	९ १३ ३० ५०	९ ५ १६ २०	७ १३ ६ २६	५
६	८ २१ ३७ ३७	११ २६ ५३ ७	९ २० ५२ ४५	७ २८ ४५ १०	९ २९ २९ ४८	९ ७ ५७ ११	११ २० ५ ५७	४ ११ ३७ ४१	९ १३ ३४ ८	९ ५ १८ ३२	७ १३ ८ २५	६
७	८ २२ ३८ ४६	० १० ५३ २८	९ २१ ४० २	७ २९ ४७ ५८	९ २९ ४२ ४०	९ ७ ३२ ४९	११ २० ८ ९	४ ११ ३४ ३०	९ १३ ३७ २६	९ ५ २० ४४	७ १३ १० २४	७
८	८ २३ ३९ ५६	० २४ ५९ १२	९ २२ २७ २०	८ ० ५० ४६	९ २९ ५५ ३२	९ ७ ८ ११	११ २० १० २१	४ ११ ३१ २०	९ १३ ४० ४४	९ ५ २२ ५६	७ १३ १२ २३	८
९	८ २४ ४१ २	१ ८ ३७ ३	९ २३ १४ ३७	८ १ ५३ ३४	१० ० ८ २३	९ ६ ३६ ११	११ २० १३ ११	४ ११ २८ ९	९ १३ ४४ २	९ ५ २५ ८	७ १३ १४ २२	९
१०	८ २५ ४२ ९	१ २२ १७ १५	९ २४ १ ५४	८ २ ५६ २२	१० ० २१ ३१	९ ६ ४ ११	११ २० १५ ४५	४ ११ २४ ५८	९ १३ ४७ २०	९ ५ २७ २०	७ १३ १६ २०	१०
११	८ २६ ४३ १७	२ ५ ४५ ३२	९ २४ ४९ ११	८ ४ ११ ३२	१० ० ३४ ३९	९ ५ ३२ ११	११ २० १८ २७	४ ११ २१ ४७	९ १३ ५० ४४	९ ५ २९ ३८	७ १३ १८ ३	११
१२	८ २७ ४४ २४	२ १९ ० १८	९ २५ ३६ २८	८ ५ २६ ४२	१० ० ४७ ४७	९ ५ ० ११	११ २० २१ ३	४ ११ १८ ३६	९ १३ ५४ ८	९ ५ ३१ ५६	७ १३ १९ ४५	१२
१३	८ २८ ४५ ३०	३ २ ० १४	९ २६ २३ ४५	८ ६ ४१ ५३	१० १ ० ५६	९ ४ २४ ११	११ २० २३ ४२	४ ११ १५ २६	९ १३ ५७ ३२	९ ५ ३४ १४	७ १३ २१ २७	१३
१४	८ २९ ४६ ३६	३ १४ ४५ ४	९ २७ ११ २	८ ७ ५७ ३	१० १ १४ ४	९ ३ ४८ ११	११ २० २६ २१	४ ११ १२ १५	९ १४ ० ५६	९ ५ ३६ ३२	७ १३ २३ १०	१४
१५	९ ० ४७ ४१	३ २७ १३ ३२	९ २७ ५८ १८	८ ९ १२ १३	१० १ २७ १३	९ ३ १२ ११	११ २० २९ ४१	४ ११ ९ ४	९ १४ ४ २०	९ ५ ३८ ५०	७ १२ २४ ५३	१५
१६	९ १ ४८ ४७	४ ९ २६ २५	९ २८ ४५ ३५	८ १० २७ २३	१० १ ४० २३	९ २ ३६ ११	११ २० ३३ १	४ ११ ५ ५३	९ १४ ७ ४४	९ ५ ४१ ८	७ १३ २६ ३८	१६
१७	९ २ ४९ ५२	४ २१ २७ ४६	९ २९ ३२ ५२	८ ११ ५० ३२	१० १ ५४ ५	९ १ ५९ ४९	११ २० ३६ २१	४ ११ २ ४२	९ १४ ११ ८	९ ५ ४३ २६	७ १३ २८ २०	१७
१८	९ ३ ५० ५७	५ ३ २० १०	१० ० २० ९	८ १३ १३ ४१	१० २ ७ ४८	९ १ २३ ११	११ २० ३९ ४१	४ १८ ५९ ३२	९ १४ १४ ३२	९ ५ ४५ ४४	७ १३ ३० ३	१८
१९	९ ४ ५२ २	५ १५ ८ २८	१० १ ७ २६	८ १४ ३६ ५०	१० २ २१ ३२	९ ० ४६ ४९	११ २० ४३ १	४ १८ ५६ २१	९ १४ १७ ५६	९ ५ ४८ २	७ १३ ३१ ४६	१९
२०	९ ५ ५३ ६	५ २६ ५७ २०	१० १ ५४ ४३	८ १५ ५९ ५९	१० २ ३५ १५	९ ० १० ११	११ २० ४६ २१	४ १८ ५३ १०	९ १४ २१ २०	९ ५ ५० २०	७ १३ ३३ २९	२०
२१	९ ६ ५४ १०	६ ८ ५२ ११	१० २ ४२ ०	८ १७ २३ ८	१० २ ४८ ५८	८ २९ ३७ ११	११ २० ५० २१	४ १८ ४९ ५९	९ १४ २४ ५२	९ ५ ५२ ३६	७ १३ ३५ १२	२१
२२	९ ७ ५५ १४	६ २० ५७ २७	१० ३ २९ १८	८ १८ ४६ १७	१० ३ २ ४१	८ २९ ४ ११	११ २० ५४ २१	४ १८ ४६ ४८	९ १४ २८ २४	९ ५ ५४ ५२	७ १३ ३६ ५५	२२
२३	९ ८ ५६ १८	७ ३ १९ ९	१० ४ १६ ४३	८ २० ९ २३	१० ३ १६ २४	८ २८ ३१ ११	११ २० ५८ २१	४ १८ ४३ ३८	९ १४ ३१ ५६	९ ५ ५७ ८	७ १३ ३८ ३८	२३
२४	९ ९ ५७ २०	७ १६ १ २२	१० ५ ४ ८	८ २१ ३८ २३	१० ३ ३० १५	८ २७ ५९ ११	११ २१ २ २०	४ ११ ४० २७	९ १४ ३५ २८	९ ५ ५९ २२	७ १३ ४० २०	२४
२५	९ १० ५८ २३	७ २९ ५ ४१	१० ५ ५१ ३३	८ २३ ७ २३	१० ३ ४४ ६	८ २७ ३३ ३४	११ २१ ६ २०	४ १८ ३७ १६	९ १४·३९ ०	९ ६ १ ३८	७ १३ ४१ ४२	२५
२६	९ ११ ५९ २४	८ १२ ३४ ८	१० ६ ३९ ०	८ २४ ३६ २३	१० ३ ५७ ५७	८ २७ ७ ४९	११ २१ १० २०	४ १८ ३४ ५	९ १४ ४२ ३२	९ ६ ३ ५४	७ १३ ४३ ४	२६
२७	९ १३ ० २४	८ २६ २७ ४	१० ७ ३६ २३	८ २६ ५ २३	१० ४ ११ ४८	८ २६ ४२ ४	११ २१ १४ २०	४ १८ ३० ४४	९ १४ ४६ ४	९ ६ ६ १०	७ १३ ४४ २६	२७
२८	९ १४ १ २४	९ १० ३९ २६	१० ८ १३ ४८	८ २७ ३४ २३	१० ४ २५ ४०	८ २६ १६ २०	११ २१ १८ ५४	४ १८ २७ ४४	९ १४ ४९ ३६	९ ६ ८ २६	७ १३ ४५ ४९	२८
२९	८ १५ २ २३	९ २५ ७ १५	१० ९ १ १६	८ २९ ३ २३	१० ४ ३९ ३२	८ २५ ५९ ३४	११ २१ २३ २८	४ १८ २४ ३३	९ १४ ५३ ८	९ ६ १० ४२	७ १३ ४७ ११	२९
३०	९ १६ ३ २१	१० ९ ४४ २५	१० ९ ४८ ३३	९ ० ३२ २३	१० ४ ५३ २३	८ २५ ४२ ५०	११ २१ २८ २	४ १८ २१ २२	९ १४ ५६ ४०	९ ६ १२ ५८	७ १३ ४८ ३३	३०
३१	९ १७ ४ १८	१० २४ २३ ११	१० १० ३५ ५०	९ २ ६ १३	१० ५ ७ ४०	८ २५ २६ ५	११ २१ ३२ ३६	[illegible]	९ १५ ० १५	९ ६ १५ १५	७ १३ ४९ ५४	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फरवरी सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ४९' ४२"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
फर.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	फर.
१	९ १८ ५ १३	११ ८ ५८ १३	१० ११ २३ ८	९ ३ ४० ३	१० ५ २१ ५७	८ २५ ९ २०	११ २१ ३७ १०	४ १८ १५ ००	९ १५ ३ ४५	९ ६ १७ २७	७ १३ ५१ १८	१
२	९ १९ ६ ८	११ २३ २५ ५	१० १२ १० २४	९ ५ १३ ५४	१० ५ ३६ १४	८ २४ ५९ २०	११ २१ ४१ ४१	४ १८ ११ ५०	९ १५ ७ १५	९ ६ १९ ३९	७ १३ ५२ २७	२
३	९ २० ७ १	० ७ ४१ २१	१० १२ ५७ ४१	९ ६ ४७ ४४	१० ५ ५० ३१	८ २४ ५१ २०	११ २१ ४६ २१	४ १८ ८ ३९	९ १५ १० ४५	९ ६ २१ ५१	७ १३ ५३ ३५	३
४	९ २१ ७ ५३	० २१ ४३ ११	१० १३ ४४ ५८	९ ८ २१ ३४	१० ६ ४ ४८	८ २४ ४५ २०	११ २१ ५१ २९	४ १८ ५ २८	९ १५ १४ १५	९ ६ २४ ३	७ १३ ५४ ४४	४
५	९ २२ ८ ४३	१ ५ ३० २८	१० १४ ३२ १६	९ ९ ५५ २४	१० ६ १९ ६	८ २४ ४१ २०	११ २१ ५६ ३५	४ १८ २ १७	९ १५ १७ ४५	९ ६ २६ १५	७ १३ ५५ ५३	५
६	९ २३ ९ ३२	१ १९ २ १५	१० १५ १९ २८	९ ११ ३३ ३४	१० ६ ३३ २३	८ २४ ३९ २० मा.	११ २२ १ ४३	४ १७ ५९ ७	९ १५ २१ १५	९ ६ २८ २७	७ १३ ५७ १	६
७	९ २४ १० २०	२ २ २० १०	१० १६ ६ ३६	९ १३ ११ ४४	१० ६ ४७ ४०	८ २४ ४२ २०	११ २२ ६ ५१	४ १७ ५५ ५६	९ १५ २४ ४५	९ ६ ३० ३९	७ १३ ५८ १०	७
८	९ २५ ११ ६	२ १५ २५ २६	१० १६ ५३ ४४	९ १४ ४९ ५४	१० ७ १ ५७	८ २४ ४६ २०	११ २२ १२ ०	४ १७ ५२ ४५	९ १५ २८ १५	९ ३ ३२ ५१	७ १३ ५९ १८	८
९	९ २६ ११ ५१	२ २८ १५ १२	१० १७ ४० ५२	९ १६ २८ ४	१० ७ १६ १४	८ २४ ५२ २०	११ २२ १७ ७	४ १७ ४९ ३४	९ १५ ३१ ४५	९ ६ ३५ ३	७ १४ ० ९	९
१०	९ २७ १२ ३४	३ १० ५३ ३२	१० १८ २८ ०	९ १८ ६ १४	१० ७ ३० ३१	८ २४ ५९ २१	११ २२ २२ १५	४ १७ ४६ २३	९ १५ ३५ १५	९ ६ ३७ १५	७ १४ १ ०	१०
११	९ २८ १३ १५	३ २३ १९ ६	१० १९ १५ ८	९ १९ ४४ २४	१० ७ ४४ ४८	८ २५ ११ २१	११ २२ २७ ४९	४ १७ ४३ १२	९ १५ ३८ ३९	९ ६ ३९ २१	७ १४ १ ५१	११
१२	९ २९ १३ ५६	४ ५ ३४ ३३	१० २० २ १६	९ २१ २७ २४	१० ७ ५९ ५	८ २५ २३ २१	११ २२ ३३ २३	४ १७ ४० २	९ १५ ४२ ३	९ ६ ४१ २७	७ १४ २ ४२	१२
१३	१० ० १४ ३५	४ १७ ३९ २२	१० २० ४९ १६	९ २३ १० २४	१० ८ १३ २३	८ २५ ३९ २१	११ २२ ३८ ५७	४ १७ ३६ ५१	९ १५ ४५ २७	९ ६ ४३ ३३	७ १४ ३ ३३	१३
१४	१० १ १५ १२	४ २९ ३४ ५९	१० २१ ३६ १५	९ २४ ५३ २४	१० ८ २७ ४८	८ २५ ५५ २१	११ २२ ४४ ३१	४ १७ ३३ ४०	९ १५ ४८ ५१	९ ६ ४५ ३९	७ १४ ४ २४	१४
१५	१० २ १५ ४८	५ ११ २६ १४	१० २२ २३ १६	९ २६ ३६ २४	१० ८ ४२ १३	८ २६ १६ ६	११ २२ ५० ५	४ १७ ३० २९	९ १५ ५२ १५	९ ६ ४७ ४५	७ १४ ५ १५	१५
१६	१० ३ १६ २४	५ २३ १५ १९	१० २३ १० १६	९ २८ १९ २३	१० ८ ५६ ३७	८ २६ ३६ ५१	११ २२ ५५ ३९	४ १७ २७ १८	९ १५ ५५ ३९	९ ६ ४९ ५१	७ १४ ५ ५८	१६
१७	१० ४ १६ ५८	६ ५ ४ ३३	१० २३ ५७ १६	१० ० २ २३	१० ९ ११ २	८ २६ ५९ ३६	११ २३ १ १४	४ १७ २४ ८	९ १५ ५९ ३	९ ६ ५१ ५७	७ १४ ६ ४१	१७
१८	१० ५ १७ ३१	६ १६ ५८ १७	१० २४ ४४ १६	१० १ ४० २३	१० ९ २५ २७	८ २७ २२ २१	११ २३ ७ १४	४ १७ २० ५७	९ १६ २ २७	९ ६ ५४ ३	७ १४ ७ २४	१८
१९	१० ६ १८ २	६ २९ ३ १३	१० २५ ३१ १६	१० ३ ३८ २३	१० ९ ३९ ५२	८ २७ ४९ ३६	११ २३ १३ १४	४ १७ १७ ४६	९ १६ ५ ५१	९ ६ ५६ ९	७ १४ ८ ७	१९
२०	१० ७ १८ ३२	७ ११ २१ २८	१० २६ १८ ६	१० ५ २६ २३	१० ९ ५४ १७	८ २८ १८ ५१	११ २३ १९ १४	४ १७ १४ ३५	९ १६ ९ १५	९ ६ ५८ १५	७ १४ ८ ५०	२०
२१	१० ८ १९ १	७ २३ ५९ ९	१० २७ ४ ५६	१० ७ १४ २३	१० १० ८ ४२	८ २८ ४९ ६	११ २३ २५ १४	४ १७ ११ २४	९ १६ १२ ३०	९ ७ ० १५	७ १४ ९ ३३	२१
२२	१० ९ १९ २८	८ ६ ५९ ३०	१० २७ ५१ ४७	१० ९ २ २३	१० १० २३ ८	८ २९ १७ २१	११ २३ ३१ १४	४ १७ ८ १४	९ १६ १५ ४५	९ ७ २ १५	७ १४ १० १५	२२
२३	१० १० १९ ५४	८ २० २५ १०	१० २८ ३८ ३८	१० १० ५९ ५२	१० १० ३७ ३४	८ २९ ५० ६	११ २३ ३७ १३	४ १७ ५ ३	९ १६ १९ ०	९ ७ ४ १५	७ १४ १० ४९	२३
२४	१० ११ २० १९	९ ४ १७ ३	१० २९ २५ २९	१० १२ ५७ २२	१० १० ५१ ५९	९ ० २४ ५१	११ २३ ४३ १३	४ १७ १ ५२	९ १६ २२ १५	९ ७ ६ १५	७ १४ ११ २३	२४
२५	१० १२ २० ४२	९ १८ ३५ १३	११ ० १२ २१	१० १४ ५४ ५२	१० ११ ६ २६	९ ० ५९ ३६	११ २३ ४९ ४७	४ १६ ५८ ४२	९ १६ २५ ३०	९ ७ ८ १५	७ १४ ११ ५७	२५
२६	१० १३ २१ ४	१० ३ १५ २२	११ ० ५९ १३	१० १६ ५२ २२	१० ११ २० ५२	९ १ ३६ २१	११ २३ ५६ २१	४ १६ ५५ ३१	९ १६ २८ ४५	९ ७ १० १५	७ १४ १२ ३१	२६
२७	१० १४ २१ २४	१० १८ १० ७	११ १ ४५ ४९	१० १८ ४९ ५२	१० ११ ३५ १७	९ २ १६ ३२	११ २४ २ ५५	४ १६ ५२ २०	९ १६ ३२ ०	९ ७ १२ १५	७ १४ १३ ५	२७
२८	१० १५ २१ ४२	११ ३ १२ १२	११ २ ३२ २३	१० २० ४७ २२	१० ११ ४९ ४३	९ २ ५६ ४३	११ २४ ९ २९	४ १६ ४९ ९	९ १६ ३५ १५	९ ७ १४ १५	७ १४ १३ ३९	२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्च सन् १९९८ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ४९' ४६''

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
मार्च	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मार्च
१	१० १६ २१ ५७	११ १८ १४ ८	११ ३ १८ ५७	१० २२ ३६ ९	१० १२ ४ ८	९ ३ ३६ ५४	११ २४ १६ ३	४ १६ ४५ ५८	९ १६ ३८ १५	९ ७ १५ ५९	७ १४ १४ १५	१
२	१० १७ २२ ११	० ३ ५ २३	११ ४ ५ ३१	१० २४ २४ ५५	१० १२ १८ ३४	९ ४ १७ ५	११ २४ २२ ३७	४ १६ ४२ ४७	९ १६ ४१ १५	९ ७ १७ ४३	७ १४ १४ २७	२
३	१० १८ २२ २२	० १७ ४१ ६	११ ४ ५२ ५	१० २६ १३ ४२	१० १२ ३२ ५९	९ ४ ५७ १६	११ २४ २९ १३	४ १६ ३९ ३६	९ १६ ४४ १५	९ ७ १९ २७	७ १४ १४ ३९	३
४	१० १९ २२ ३२	१ १ ५६ २८	११ ५ ३८ ३९	१० २८ २ २९	१० १२ ४७ २६	९ ५ ४३ ३३	११ २४ ३५ ५६	४ १६ ३६ २६	९ १६ ४७ १५	९ ७ २१ ११	७ १४ १४ ५१	४
५	१० २० २२ ४३	१ १५ ४८ ४४	११ ६ २५ १३	१० २९ ५१ १६	१० १३ १ ५१	९ ६ २९ ५०	११ २४ ४२ ३९	४ १६ ३३ १५	९ १६ ५० १५	९ ७ २२ ५५	७ १४ १५ ३	५
६	१० २१ २२ ४७	१ २९ १८ ३३	११ ७ ११ ३९	११ १ ४० १६	१० १३ १६ १७	९ ७ १६ ७	११ २४ ४९ २२	४ १६ ३० ४	९ १६ ५३ १५	९ ७ २४ ३९	७ १४ १५ १५	६
७	१० २२ २२ ५१	२ १२ २७ ९	११ ७ ५८ ५	११ ३ २९ १६	१० १३ ३० ३४	९ ८ २ २४	११ २४ ५६ ५	४ १६ २६ ५३	९ १६ ५६ १५	९ ७ २६ २३	७ १४ १५ २७	७
८	१० २३ २२ ५३	२ २५ ४८ २१	११ ८ ४४ ३१	११ ५ १८ १६	१० १३ ४४ ५०	९ ८ ४८ ४१	११ २५ २ ४८	४ १६ २३ ४३	९ १३ ५९ १५	९ ७ २८ ७	७ १४ १५ ३९	८
९	१० २४ २२ ५३	३ ७ ५० ११	११ ९ ३० ५७	११ ७ ७ १६	१० १३ ५९ ७	९ ९ ३४ ५८	११ २५ ९ ३१	४ १६ २० ३२	९ १७ २ १५	९ ७ २९ ५१	७ १४ १५ ५१	९
१०	१० २५ २२ ५१	३ २० १० ८	११ १० १७ २३	११ ८ ५६ १६	१० १४ १३ २४	९ १० २१ १६	११ २५ १६ १४	४ १६ १७ २१	९ १७ ५ १५	९ ७ ३१ ३५	७ १४ १६ ३	१०
११	१० २६ २२ ४६	४ २ २० १३	११ ११ ३ ४९	११ १० ४४ १६	१० १४ २७ ४१	९ ११ १२ ५१	११ २५ २३ २२	४ १६ १४ १०	९ १७ ८ ८	९ ७ ३३ ९	७ १४ १६ १५व.	११
१२	१० २७ २२ ४०	४ १४ २२ २९	११ ११ ५० १३	११ १२ ३२ १६	१० १४ ४१ ५८	९ १२ ४ ३४	११ २५ ३० ३०	४ १६ १० ५९	९ १७ १० ५५	९ ७ ३४ ४३	७ १४ १६ ३	१२
१३	१० २८ २२ ३२	४ २६ १७ ५९	११ १२ ३६ १३	११ १४ २० १६	१० १४ ५६ १६	९ १२ ५६ २६	११ २५ ३७ ३९	४ १६ ७ ४८	९ १७ १३ ४२	९ ७ ३६ १७	७ १४ १५ ५१	१३
१४	१० २९ २२ २२	५ ८ ९ २३	११ १३ २२ १३	११ १५ ४९ ३१	१० १५ १० ३३	९ १३ ४८ ९	११ २५ ४४ ४७	४ १६ ४ ३८	९ १७ १६ २९	९ ७ ३७ ५१	७ १४ १५ ३९	१४
१५	११ ० २२ ९	५ १९ ५८ १	११ १४ ८ १२	११ १७ १८ ४६	१० १५ २४ ५०	९ १४ ४० ५२	११ २५ ५१ ५६	४ १६ १ २७	९ १७ १९ १६	९ ७ ३९ २५	७ १४ १५ २७	१५
१६	११ १ २१ ५५	६ १ ४८ ३१	११ १४ ५४ १२	११ १८ ४८ १	१० १५ ३९ ७	९ १५ ३१ ३५	११ २५ ५९ ५	४ १५ ५८ १६	९ १७ २२ ३	९ ७ ४० ५९	७ १४ १५ १५	१६
१७	११ २ २१ ४०	६ १३ ४० १५	११ १५ ४० ११	११ २० १७ १६	१० १५ ५३ २४	९ १६ २३ १७	११ २६ ६ १४	४ १५ ५५ ५	९ १७ २४ ५०	९ ७ ४२ ३३	७ १४ १५ २	१७
१८	११ ३ २१ २२	६ २५ ३७ ३	११ १६ २६ ११	११ २१ २३ १६	१० १६ ७ ४१	९ १७ १९ ८	११ २६ १३ २२	४ १५ ५१ ५४	९ १७ २७ ३७	९ ७ ४४ ७	७ १४ १४ ४९	१८
१९	११ ४ २१ २	७ ७ ४३ २६	११ १७ १२ ११	११ २२ २९ १६	१० १६ २१ ५८	९ १८ १४ ५९	११ २६ २० ३१	४ १५ ४८ ४३	९ १७ ३० २४	९ ७ ४५ ४१	७ १४ १४ ३६	१९
२०	११ ५ २० ४१	७ २० १ ७	११ १७ ५८ २	११ २३ ३५ १६	१० १६ ३६ १६	९ १९ १० ४९	११ २६ २७ ४०	४ १५ ४५ ३२	९ १७ ३३ ११	९ ७ ४७ १५	७ १४ १४ २३	२०
२१	११ ६ २० १८	८ २ ३५ १८	११ १८ ४३ ५४	११ २४ ४१ १६	१० १६ ५० १०	९ २० ६ ४०	११ २६ ३४ ४९	४ १५ ४२ २१	९ १७ ३५ ३८	९ ७ ४८ ३२	७ १४ १४ १०	२१
२२	११ ७ १९ ५३	८ १३ ३७ १०	११ १९ २९ ४५	११ २५ २१ १६	१० १७ ४ १	९ २१ २ ३१	११ २६ ४१ ५८	४ १५ ३९ १०	९ १७ ३८ ५५	९ ७ ४९ ४९	७ १४ १३ ४६	२२
२३	११ ८ १९ २६	८ २८ ४६ १९	११ २० १५ ३६	११ २५ ५८ १६	१० १७ १७ ५२	९ २१ ५८ २२	११ २६ ४९ ६	४ १५ ३६ ०	९ १७ ४० ३२	९ ७ ५१ ६	७ १४ १३ २२	२३
२४	११ ९ १८ ५८	९ १२ २९ १	११ २१ १ २७	११ २६ ३५ १५	१० १७ ३१ ४३	९ २२ ५४ १६	११ २६ ५६ १४	४ १५ ३२ ५०	९ १७ ४२ ५९	९ ७ ५२ २३	७ १४ १२ ५८	२४
२५	११ १० १८ २८	९ २६ ३९ १८	११ २१ ४७ १८	११ २७ ९ १५	१० १७ ४५ ३३	९ २३ ५२ १६	११ २७ ३ ४७	४ १५ २९ ३९	९ १७ ४५ २६	९ ७ ५३ ३९	७ १४ १२ ३४	२५
२६	११ ११ १७ ५६	१० ११ १४ ७	११ २२ ३३ १२	११ २७ २९ १५	१० १७ ५९ २४	९ २४ ५१ १६	११ २७ ११ २०	४ १५ २६ २८	९ १७ ४७ ५३	९ ७ ५४ ५५	७ १४ १२ १०	२६
२७	११ १२ १७ २२	१० २६ १० ५९	११ २३ १८ ४६	११ २७ ३७ १५	१० १८ १३ १५	९ २५ ५० १६	११ २७ १८ ४३	४ १५ २३ १७	९ १७ ५० २०	९ ७ ५६ ११	७ १४ ११ ३५	२७
२८	११ १३ १६ ४६	११ ११ २० ५७	११ २४ ४ २०	११ २७ ४० १५व.	१० १८ २६ ५८	९ २६ ४९ १६	११ २७ २६ २७	४ १५ २० ६	९ १७ ५२ ४७	९ ७ ५७ २७	७ १४ ११ ०	२८
२९	११ १४ १६ ८	११ २६ ३६ २३	११ २४ ४९ ५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ चैत्र शुक्ल पक्ष-१

दिनांक ८ से २२ अप्रैल, सन् १९९७ ई.
वसन्त ऋतु, रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

तिथि ति	तिथि वा	तिथि घ	तिथि प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	नक्षत्र न	नक्षत्र घ	नक्षत्र प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	योग यो	योग घ	योग प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	करण क	करण घ	करण प	स्टैं.टा. घं	स्टैं.टा. मि	तारीखें अं. अप्रै	तारीखें शा. चैत्र	तारीखें प्र. चैत्र	तारीखें मु. जि.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	दै.रवि स्पष्ट रा.	दै.रवि स्पष्ट अं.	दै.रवि स्पष्ट क.	दै.रवि स्पष्ट वि	सू.उ.अ. उ	सू.उ.अ. अ	चन्द्रोदय उदय घं	चन्द्रोदय उदय मि	चन्द्रोदय अस्त घं	चन्द्रोदय अस्त मि
१	मं	१९	५	१३	४९	अ	४६	३७	२४	५०	वैधृ	१३	२७	११	३४	बव	१९	५	१३	४९	8	१८	२६	२९	मेष	नवरात्रारम्भ घटस्थापन, वर्षफल श्रवण, श्री दुर्गार्चन, आर्यसमाज स्थापन दिवस, A	११	२४	२२	४९	६ ११	६ ४४	६	४४	१९	५१
२	बु	१३	१०	११	२६	भ	४३	२०	२३	३०	वि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	१३	१०	११	२६	9	१९	२७	जि	वृ. २९।१३	सिंधारा, श्रीमत्स्य जयन्ती, श्री झूलेलाल जयन्ती उत्सव सिन्धी स., मु. मास जिल्हेज १२	११	२५	२१	४९	१०	४५	७	२८	२०	५४
३	गु	८	४३	९	३७	कृ	४१	३८	२२	४७	आ	५३	४३	२७	३७	गर	८	४३	९	३७	10	२०	२८	२	वृष	भ. ३७।१८ (२१।३) से, श्रीगणगौर पूजन मेला (राज.), सौभाग्य तृतीया व्रत, B	११	२६	२०	४६	८	४६	८	१६	२१	५४
४	शु	५	५२	८	२८	रो	४१	४२	२२	४८	सौ	५०	०	२६	७	वि	५	५२	८	२८	11	२१	२९	३	वृष	भ. ५।५२ (८।२८) तक, अश्विनी मेष में शुक्र २३।२ (१५।२०)	११	२७	१९	४१	७	४७	९	५	२२	५०
५	श	५	०	८	६	मृ	४३	३३	२३	३१	शो	४७	४२	२५	११	बा	५	०	८	६	12	२२	३०	४	मि. ११८	हयव्रत पंचमी, कल्पादि तिथि, श्री रामजन्मोत्सव लग्न कर्क, श्री लक्ष्मी पू.	११	२८	१८	३३	६	४८	९	५६	२३	४४
६	र	६	३	८	३०	आ	४७	२५	२५	३	अति	४७	०	२४	५३	तै	६	३	८	३०	13	२३	वै.	५	मिथुन	अश्विनी मेष में सूर्य ४२।२ (२२।५४), संक्रान्ति मु. १५ महर्घः, स्कन्दषष्ठी मेला C	११	२९	१७	२३	५	४८	१०	४६	-	-
७	चं	९	२	९	४१	पुन	५२	५५	२७	१४	सु	४७	३७	२५	७	व	९	२	९	४१	14	२४	२	६	क. २०।४०	भ. ९।२ (९।४१) से ४१।२४ (२२।३८) तक, जैन आयंबिल ओली प्रारम्भ, D	०	०	१६	१०	४	४९	११	३७	०	३२
८	मं	१३	४७	११	३३	पु	५९	४७	२९	५७	धृ	४९	२३	२५	४७	बव	१३	४७	११	३३	15	२५	३	७	कर्क	अशोकाष्टमी, श्री दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, मेला मनसादेवी अन्नपूर्णा पूजा परिक्रमा, E	०	१	१४	५६	२	४९	१२	२९	१	१७
९	बु	१९	३५	१३	५१	आ	६०	०	-	-	शूल	५१	४२	२६	४२	कौ	१९	३५	१३	५१	16	२६	४	८	कर्क	श्री रामनवमी व्रत, श्री राम प्राकट्योत्सव लग्न ४, श्री दुर्गानवमी, नवरात्र समा., बुध अस्त F	०	२	१३	४०	१	५०	१३	२०	१	५९
१०	गु	२५	५५	१६	२२	आ	७	२५	८	५८	गंड	५४	१८	२७	४३	गर	२५	५५	१६	२२	17	२७	५	९	सिं. ८।५८	भ. ५९।७ (२९।३९) से, शनि पूरब में उदय २१।५० (१४।४४), हज्ज	०	३	१२	२१	०	५०	१४	१२	२	३८
११	शु	३२	२०	१८	५५	मघ	१५	१२	१२	४	वृद्धि	५६	४७	२८	४२	वि	३२	२०	१८	५५	18	२८	६	१०	सिंह	भ. ३२।२० (१८।५५) तक, कामदा एकादशी व्रत (सबका), श्री लक्ष्मीकान्त डोलोत्सव, G	०	४	११	०	[illegible]	५१	१५	२	३	१४
१२	श	३८	२८	२१	२१	पूफा	२२	४०	१५	२	ध्रु	५८	५५	२९	३२	बव	५	२५	८	८	19	२९	७	११	क. २१।४३	श्री हरिदमनोत्सव कर्ते। E बुध वक्री २८।१२ (१७।१९) F पश्चिम में ३७।५ (२०।५१)	०	५	९	३७	५८	५२	१५	५४	३	५०
१३	र	४३	३२	२३	२२	उफा	२९	२०	१७	४१	व्या	६०	०	-	-	कौ	११	०	१०	२१	20	३०	८	१२	कन्या	प्रदोष व्रत, अनङ्गत्रयोदशी, श्री महावीर जयन्ती, सायनवृष में रवि १।३७ H	०	६	८	१२	५७	५३	१६	४६	४	२४
१४	चं	४७	३५	२४	५७	हस्त	३४	५७	१९	५४	व्या	०	१०	५	५९	गर	१५	३५	१२	९	21	वै.	९	१३	कन्या	भ. ४७।३५ (२४।५७) से, बाला सुन्दरी मेला देवबन्द उ.प्र., राष्ट्रीय वैशाख प्रारम्भ	०	७	६	४४	५५	५३	१७	३८	४	५७
१५	मं	५०	२०	२६	३	चि	३९	३३	२१	४३	ह	०	३७	६	९	वि	१९	०	१३	३०	22	२	१०	१४	तु. ८।५०	भ. १९।० (१३।३०) तक, सत्यव्रत चैत्री पूर्णिमा, सिद्धाचल यात्रा, आयंबिल J	०	८	५	१५	५४	५३	१८	३१	५	३५

A श्री गौतम ज., गुड़ी पडवा, चन्द्रदर्शन मु. ३०, भरणी में बुध प्रवेश २६।१३ (१६।४०) B शिवशक्ति पू[illegible]न, वैनायक चतुर्थी व्रत, मन्वादि तिथि, रेलसप्ताह शुरू C माईसरखाना (अमृतसर), सौर मास वैशाख प्रारम्भ, वैशाखी पर्व पुण्यकाल मध्यान्होत्तर, धनिष्ठा में गुरु ४७।१० (२४।५७) D विशु केरला, डा. अम्बेडकर जयन्ती G ईद-उल-जुहा (बकरीद) H (६।३६), ग्रीष्मऋतु प्रारम्भ, अगस्तास्त ४३।२ (२३।१०) J ओली समाप्त, श्री हनुमज्जयन्ती, वैशाख स्नान प्रारम्भ, वक्री अश्विनी में बुध १६।० (१२।१८), भरणी में शुक्र ९।५० (९।५०), उ.फा. २ राहु पू.भा. ४ केतुः ४।० (७।३०)

ग्र. स्प. चैत्र शुक्ल ८ भौमे प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये १५ अप्रैल

|| फलम् ||

कु. पूर्णिमा सूर्योदये २२ अप्रैल ❖ ग्र. स्प. चैत्र शुक्ल १५ भौमे प्रातः ५।३० बजे

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	३	४	०	९	०	११	५	११	९	९	७
१	४	२३	१५	२३	४	१८	३	३	१४	६	११
२४	२८	५९	५०	३१	२६	१८	४२	४२	३१	४	२५
५६	५७	१९	५६	२१	४७	५४	३४	३४	१२	१९	२४
५८	३१	९	१	९	७४	७	३	३	१	०	१
४४	५२	४५	३५	३४	१७	१९	११	११	१७	२५	६
मा.	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	अ.			
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

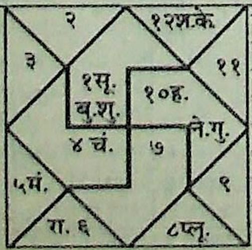

विक्रम सम्वत् २०५४वें वर्ष का आरम्भ पाप ग्रह के वार से ही रहा है। सम्वत्सर का नाम भी विकृति है सो यह समस्त संसार के लिए शुभ फल दायक नहीं है। २४ जून तक मीन राशि में शनि + केतु का चलने वाला मलेच्छ ग्रह संयोग सर्वहारा वर्ग के लिए दुःख का कारण तो बनेगा ही किसी विशेष प्रकार के घटना चक्र को जन्म भी दे सकता है। चोर, उचक्के, लफंगे, असमाजिक तत्व, तस्कर व अनैतिक आचरण करने वाले मलेच्छ इस योग में खूब फलते फूलते हैं। सत्ता के भूखे लोलुपचारी नेता आपस में लड़ते झगड़ते रहते हैं। राजकाज न के बराबर हो पाता है। कहीं युद्ध का षड्यन्त्र रचा जाता है। **तेजी-मन्दी विचार**-इस पक्ष में फसल की अच्छी उम्मीद बंधने से बाजार भाव समानान्तर चलते रहेंगे। पेय पदार्थ, रसकश, वस्त्र तथा धातुओं से बने कल पुर्जे महंगे हो सकते हैं। सर्राफा तथा शेयर बाजार में दो तरफा चाल चलेगी। **आकाश लक्षण**—आकाशीय ग्रह चाल के अनुसार मौसम साफ रहेगा। पवन, अतितीव्र गति से बहेगी। प्रकृति की बदलती चादर शोभायमान लगेगी। सर्द-गर्म की मिली जुली प्रतिक्रिया से रोगों की बढ़ोत्तरी होगी।

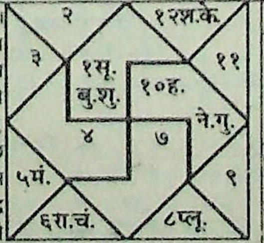

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	५	४	०	९	०	११	५	११	९	९	७
८	२८	२३	१३	२४	१३	१९	३	३	१४	६	११
५	१३	८	२९	३१	६	९	२०	२०	३९	७	१७
१५	४२	४९	५१	३०	२३	४९	१८	१८	५४	६	६
५८	७४९	४	३५	८	७४	७	३	३	१	०	१
२९	९	०	०	२५	९	१२	११	११	०	१७	२४
मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा संवत्सरारम्भः- नवरात्रोत्सवं निम्बपत्रप्राशनं च कार्यम् ततः संवत्सराधिपतीनां फल श्रवण च कार्यम्। चैत्र शुक्ला तु नवमी पुनर्वसु युता यदि। सैव मध्याह्न योगेन महा पुण्यतमा भवेत्। चैत्र मासे नवम्यां तु जाते रामः स्वयं हरि पुनर्वस्वर्क्ष संयुक्ता सा तिथि सर्वकामदा। चैत्र शुक्ला त्रयोदश्यामनंगत्र्योदशी ता च मध्याह्न व्यापि[illegible] ग्राह्या।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ वैशाख कृष्ण पक्ष-२

दिनांक २३ अप्रैल से ६ मई, सन् १९९७ ई. ग्रीष्म ऋतु, रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

दि. घप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	तारीखें अं. अप्रै	शा. वैशा	प्र. वैशा	मु. जि.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	दै.रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय		अस्त	
३३/३२	१	बु	५१	४५	२६	३५	स्वा	४२	४५	२२	५९	वज्र	०/५८	२/१८	५/२१	५८/१२	बा	२१	५	१४	१९	23	३	११	१५	तुला	बाबू कुँअर सिंह जयन्ती (बिहार)	०	९	३	४४	५/५३	६/५४	१९	२७	६	१२
३६	२	गु	५२	२	२६	४१	वि	४४	४७	२३	४७	व्य	५५	५०	२८	१२	तै	२१	५५	१४	३८	24	४	१२	१६	वृ. १७।३५		०	१०	२	१२	५२	५४	२०	२५	६	५३
४०	३	शु	५१	२	२६	१६	अनु	४५	४०	२४	७	वरि	५२	१७	२६	४६	व	२१	३२	१४	२८	25	५	१३	१७	वृश्चिक	भ. २१।३२ (१४।२८) से ५१।२ (२६।१६) तक	०	११	०	३७	५१	५५	२१	२१	७	३७
४४	४	श	४९	५	२५	२८	ज्ये	४५	३२	२४	३	परि	४८	२	२५	३	बव	२०	५	१३	५२	26	६	१४	१८	ध. २४।३	कृष्णा चतुर्थी व्रत	०	११	५९	१	५०	५६	२२	१८	८	२५
४९	५	र	४६	१३	२४	१८	मूल	४४	३३	२३	३८	शि	४३	३	२३	२	कौ	१७	४०	१२	५३	27	७	१५	१९	धनु	भरणी में सूर्य प्रवेश २२।२३ (१४।४६), [शुक्र उदय] पश्चिम में ५५।५२ (२८।१०)	०	१२	५७	२३	४९	५७	२३	१३	९	१८
५३	६	चं	४२	३५	२२	५०	पूषा	४२	४५	२२	५४	सिद्ध	३७	२८	२०	४७	गर	१४	२५	११	३४	28	८	१६	२०	म. २८।४०	भ. ४२।३५ (२२।५०) से, मार्गी मंगल ३१।२० (१८।२०)	०	१३	५५	४३	४८	५७	-	-	१०	१४
५८	७	मं	३८	१५	२१	५	उषा	४०	१५	२१	५३	सा	३१	१८	१८	१८	वि	१०	२५	९	५७	29	९	१७	२१	मकर	भ. १०।२५ (९।५७) तक, रेवती २ में शनि: (५।४३)	०	१४	५४	१	४७	५८	०	६	११	१२
३३/२	८	बु	३३	१५	१९	४	श्र	३७	८	२०	३७	शुभ	२४	३७	१५	३७	बा	५	४५	८	४	30	१०	१८	२२	मकर	शीतलाष्टमी, कालाष्टमी, बासीभोजन ग्राह्य, बूढ़ा बासोड़ा	०	१५	५२	१८	४६	५९	०	५६	१२	१६
६	९	गु	२७	४५	१६	५१	ध	३३	३०	१९	९	शु	१७	३०	१२	४५	तै	०	३०	५	५७	M	११	१९	२३	कु. ७।५४	भ. ५४।४८ (२७।४०) से, मई मास ५ ता. ३१, पंचक प्रारम्भ ५।२२ (७।५४), A	०	१६	५०	३४	४५	५९	१	४३	१३	१८
१०	१०	शु	२१	५०	१४	२८	श	२९	२७	१७	३१	ब्र	१०	०	९	४४	वि	२१	५०	१४	२८	2	१२	२०	२४	कुम्भ	भ. २१।५० (१४।२८) तक, कृतिका में शुक्र ५९।५ (२९।२२)	०	१७	४८	४८	४४	५९/०	२	२७	१४	२२
१५	११	श	१५	३५	११	५७	पूभा	२५	८	१५	४६	ऐं	२/५७	१५/१५	६/२७	३७/२५	बा	१५	३५	११	५७	3	१३	२१	२५	मी. १०।१३	वरूथिनी एकादशी व्रत (सबका), श्री बल्लभाचार्य जयंती, सौर ऊर्जा दिवस, B	०	१८	४७	१	४३	१	३	१०	१५	२५
२०	१२	र	९	१२	९	२३	उभा	२०	४०	१३	५८	वि	४६	२०	२४	१४	तै	९	१२	९	२३	4	१४	२२	२६	मीन	प्रदोष व्रत	०	१९	४५	१२	४२	२	३	५३	१६	२९
२४	१३	चं	२	५३	६	५०	रे	१६	२२	१२	१४	प्री	३८	४०	२१	९	व	२	५३	६	५०	5	१५	२३	२७	मे. १२।१४	भ. २।५३ (६।५०) से २९।५१ (१७।३७), पंचक समाप्त १६।२२ (१२।१४), वृष में शुक्र C	०	२०	४३	२१	४१	३	४	३५	१७	३२
०	१४	चं	५६	५०	२८	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	००	चतुर्दशी क्षय:	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	३०	मं	५१	४०	२६	२०	अ	१२	३३	१०	४१	आ	३१	३०	१८	१६	च	२४	१५	१५	२२	6	१६	२४	२८	मेष	देवपितृकार्येऽमापुण्यम्	०	२१	४१	२९	४०	३	५	१९	१८	३५

A मई डे विश्व मजदूर दिवस B बुध उदय पूर्व दिशा में ४७।३५ (२४।४५), नेपच्यून वक्री ३७।२३ (२०।४०) C प्रवेश ४१।१२ (२२।१०)

ग्र. स्प. वैशाख कृष्ण ८ बुधे प्रात: ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये ३० अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	९	४	०	९	०	११	५	११	९	९	७
१५	१४	२२	८	२५	२२	२०	२	२	१४	६	११
५२	२६	५६	२८	३३	५८	६	५४	५४	४७	८	५
१८	३	४९	५१	५४	५६	४९	५२	५२	०	४७	५४
५८	८४३	२	३०	६	७४	७	३	३	०	०	१
१६	४१	०	०	४२	०	०	११	११	३४	१	४
मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
भरणी	श्रवण	पू.फा.	अश्वि.	धनिष्ठा	भरणी	रेवती	उ.फा.	पू.भा.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

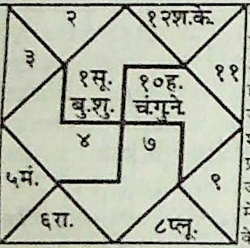

॥ फलम् ॥

मास में पांच बुधवारों का फल श्रेष्ठ है—**बुधस्य पंचवारा:स्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुखसम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते॥** के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में नाना प्रकार के भौतिक सुख सुविधाओं का प्रादुर्भाव होगा। समयोचित उपयोगी वस्तुएं प्राप्त होने से जनता राहत महसूस करेगी। जलचर- थलचर तथा नभचर वासी प्राणियों की उत्तरोत्तर वृद्धि होगी। विश्व शान्ति के उपायों पर हर सम्भव विचार किया जायेगा। पांच गुरुवारों का प्रतिकूल फल होने से पश्चिम के देशों में राज विग्रह आन्तरिक कलह बढ़ता जायेगा। कहीं युद्धोत्पात का षड्यन्त्र रचा जायेगा। पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्रों में चौकसी बर्तनी चाहिए। मंगल- शनि का षडाष्टक योग किसी विशेष प्रकार के उपद्रव को जन्म दे सकता है। तेजी-मन्दी विचार— अन्तरिक्ष में बनने वाले ग्रहयोगायोग के फलस्वरूप भावों में कम ही घटा-बढी होगी। वृष का शुक्र सुभिक्ष कारक होता है। सर्वहारा वर्ग में सौख्य समृद्धि बढ़ती है। किंचित यत्र-तत्र विग्रह भी होता रहता है। **भृगुपुत्रे वृषे स्थित्वा सुभिक्षं पृथ्वीतले। प्रजानां सुखमुत्पन्नं किंचिद्विग्रहकारकम्॥** इस योग के चलते कहीं झगड़े भी बढ़ सकते हैं। सरकार को हर कदम पर सचेत रहना चाहिए। **आकाश लक्षण**— इस पक्ष में आकाश प्राय स्वच्छ रहेगा। हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, पंजाब व हरियाणा में यत्र-तत्र बादल चाल, तीव्र वायुवेग का संयोग बनेगा। सुदूर पर्वतीय प्रदेशों में वर्षा भी सम्भव है।

कु. अमावस्या सूर्योदये ६ मई ❖ ग्र. स्प. वैशाख कृ. ३० भौमे प्रात: ५।३० बजे

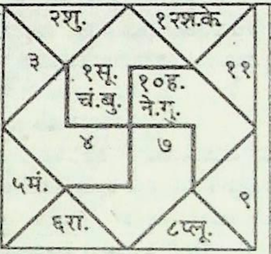

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	०	४	०	९	१	११	५	११	९	९	७
२१	१०	२३	६	२६	०	२०	२	२	१४	६	१०
४१	१७	१९	१	१४	२२	४८	३५	३५	५०	८	५७
२९	७	४९	५१	७	३०	४८	४७	४७	१०	३०	४
५८	८४६	७	१५	६	७३	६	३	३	०	०	१
७	३८	२४	०	४२	५१	४३	११	११	१०	१०	३४
मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
भरणी	अश्वि.	पू.फा.	अश्वि.	धनिष्ठा	कृतिका	रेवती	उ.फा.	पू.भा.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

वैशाख मासे स्नानान्तरं तिलै: पितृणां तर्पणं विधाय बहुतोयैरश्वत्थ मूलं सिंचेत् प्रदक्षिणा च कुर्यात्। अनेन कुलतारणफल भवति। हविष्यान्नप्राशनं ब्रह्मचर्यादयोनियमांश्च पालनीया इति। अत्रैव मासे कृष्णगोराख्या। तुलसीभि: विष्णुम् त्रिकालमर्चयेत्। व्यंजनं छत्रोपाहनं चन्द्रनादि दानेन महाफलम्॥

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ वैशाख शुक्ल पक्ष-३

दिनांक ७ मई से २२ मई, सन् १९९७ ई.
ग्रीष्म ऋतु, रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।

तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	तारीखें अं. मई	शा. वैशा	प्र. वैशा	मु. जि.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है।	दै.रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय		अस्त	
१	बु	४७	४७	२४	४६	भ	९	२७	९	२६	सौ	२५	०	१५	३९	किं	११	४५	१३	३३	7	१७	२५	२९	वृ. १५।१३	देवदामोदर तिथि आसाम, कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर जयंती	०	२२	३९	३६	५/३९	७/४	६	५	१९	३७
२	गु	४४	२२	२३	२३	कृ	७	२२	८	३५	शो	१९	२५	१३	२४	बा	१६	७	१२	५	8	१८	२६	३०	मेष	चन्द्र दर्शन मु. ४५ समर्घ:, छत्रपति शिवाजी जयंती प्राचीन मत से	०	२३	३७	४१	३८	५	६	५३	२०	३७
३	शु	४२	५५	२२	४७	रो	५	१३	७	४२	अति	१५	०	११	३७	तै	१३	४०	११	५	9	१९	२७	मु.	मि.२०।१०	आखा तीज, श्री परशुराम जयंती, मातङ्गी जयंती, त्रेतायुगादि कल्पादि:, **मुहर्रम A**	०	२४	३५	४३	३७	५	७	४३	२१	३३
४	श	४३	१२	२२	५३	मृ	७	३८	८	३९	सु	११	५२	१०	२१	व	१३	५	१०	५०	10	२०	२८	२	मिथुन	भ. १३।५ (१०।५०) से ४३।१२ (२२।५३) तक, धनिष्ठा के २ में गुरु ३६।२० (१६।१२)	०	२५	३३	४५	३६	६	८	३५	२२	२५
५	र	४५	१८	२३	४३	आ	१०	२०	९	४४	धृ	१०	१३	९	४१	बव	१४	१५	११	१८	11	२१	२९	३	क. २९।४	कृतिका में सूर्य ८।० (८।४८), श्री आद्यशंकराचार्य ज., सूरदास ज., रामानुजाचार्य जयंती	०	२६	३१	४५	३६	७	९	२८	२३	१२
६	चं	४९	७	२५	१४	पुन	१४	५२	११	३२	शूल	१०	०	९	३५	कौ	१७	१२	१२	२८	12	२२	३०	४	कर्क	श्री रामानुजाचार्य जयंती उत्तर भारत	०	२७	२९	४४	३५	७	१०	१९	२३	५७
७	मं	५४	१५	२७	१७	पुष्य	२०	५०	१३	५५	गंड	१०	५७	९	५८	गर	२१	४२	१४	१६	13	२३	३१	५	कर्क	भ. ५४।१५ (२७।१७) से, श्रीगंगा सप्तमी, रोहिणी में शुक्र ४९।३२ (२५।२४)	०	२८	२७	४०	३५	८	११	१२	-	-
८	बु	६०	०	-	-	श्ले	२७	५५	१६	४४	वृ	१२	५५	१०	४४	वि	२७	१५	१६	२८	14	२४	ज्ये	६	सिं.१६।४४	भ. २७।१५ (१६।२८) तक, **वृष में सूर्य प्रवेश** ३५।२७ (१९।४५), संक्रान्ति मु. ३०,B	०	२९	२५	३४	३४	८	१२	२	०	३५
८	गु	०	१५	५	४०	म	३५	३०	११	४६	ध्रु	१५	२०	११	४२	बव	०	१५	५	४०	15	२५	२	७	सिंह	वैष्णव मतानुसार श्रीजानकी जयंती	१	०	२३	२६	३४	९	१२	५४	१	१२
९	शु	६	४०	८	१३	पूफा	४३	८	२२	४८	व्या	१७	५५	१२	४३	कौ	६	४०	८	१३	16	२६	३	८	सिंह	श्री सीतानवमी	१	१	२१	१७	३३	१०	१३	४५	१	४९
१०	श	१२	४०	१०	३६	उफा	५०	५	२५	३४	ह	२०	१०	१३	३६	गर	१२	४०	१०	३६	17	२७	४	९	क. ५।३२	भ. ४५।१० (२३।३६) से, श्री महावीर केवलल ज्ञान (जैन)	१	२	१९	६	३२	११	१४	३७	२	२३
११	र	१७	४०	१२	३६	ह	५४	१५	२७	१४	वज्र	२१	३७	१४	११	वि	१७	४०	१२	३६	18	२८	५	१०	कन्या	भ. १७।४० (१२।३६) तक, मोहिनी एकादशी व्रत (सबका), मुहर्रम ताजिये	१	३	१६	५४	३२	११	१५	२९	२	५६
१२	चं	२१	२०	१४	३	चि	६०	०	-	-	सि	२२	२	१४	२०	बा	२१	२०	१४	३	19	२९	६	११	तु. १६।२६	सोम प्रदोष व्रत	१	४	१४	४०	३१	१२	१६	२३	३	३१
१३	मं	२३	२७	१४	५४	चि	०	१७	५	३८	व्य	२१	१५	१४	१	तै	२३	२७	१४	५४	20	३०	७	१२	तुला	श्री नृसिंह जयंती	१	५	१२	२४	३१	१३	१७	१८	४	७
१४	बु	२३	५८	१५	५	स्वा	३	२	६	४३	वरि	११	१५	१३	१२	व	२३	५८	१५	५	21	३१	८	१३	वृ. २५।५	भ. २३।५८ (१५।५) से ५३।२७ (२६।५३) तक, सत्यव्रत, श्री छिन्नमस्ता जयंती, C	१	६	१०	७	३०	१३	१८	१३	४	४८
१५	गु	२२	५५	१४	४०	वि	४	१३	७	११	परि	१५	५७	११	५३	बव	२२	५५	१४	४०	22	ज्ये	९	१४	वृश्चिक	बुद्ध पूर्णिमा परिनिर्वाण दिवस, यम प्रीतियर्थ जलघटदानम्, वैशाख स्नान समाप्त, D	१	७	७	४९	३०	१४	१९	१०	५	३२

A मास १ हिजरी सन् १४१८ प्रारम्भ, मार्गी बुध ३१।२२ (१८।१०) **B** सौर ज्येष्ठ मास प्रारम्भ, हर्शल वक्री २५।३५ (१५।४८) **C** कूर्म जयंती, सायन मिथुन में सूर्य १।३ (५।५५) **D** राष्ट्रीय ज्येष्ठ मास प्रारम्भ

ग्र. स्प. वैशाख शुक्ल ८ बुधे प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये १४ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	३	४	०	९	१	११	५	११	९	९	७
२९	२४	२८	६	२६	१०	२१	२	२	१४	६	१०
२५	२६	२८	४७	५९	१२	४२	१०	१०	५०	६	४४
३४	४९	३६	१	४९	४३	६	२१	२१	५०	१४	२६
५७	७११	१०	२८	४	७३	६	३	३	०	०	१
५२	५७	३६	१०	२०	४५	१७	११	११	२	२४	३६
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कृत्तिका	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

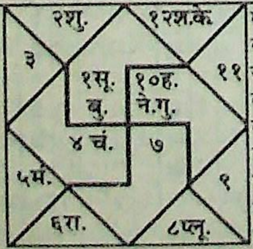

॥ फलम् ॥

कु. पूर्णिमा सूर्योदये २२ मई ❖ ग्र. स्प. वैशाख शुक्ल १५ गुरौ प्रातः ५।३० बजे

मास में पांच बुधवारों का फल श्रेष्ठ तो पांच गुरुवारों का फल नेष्ट है, यथा—यत्रमासे पंचवारा जायन्ते च वृहस्पतेः।विग्रहः पश्चिमेदेशे खड्गयुद्धञ्च जायते॥ के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में कहीं सभी प्रकार की सौख्य समृद्धि बढ़ेगी। जनता समयोचित उपयोगी वस्तुएं मिलते रहने से राहत महसूस करेगी। कहीं नाना प्रकार के उपद्रव होने से त्राहि-त्राहि मचेगी। बड़ी मात्रा में प्रजा पलायन करेगी। असमाजिक तत्व चोर, उचक्के, लफंगे, बलात्कारी, तस्कर आदि सभ्य समाज विरोधियों की चांदी कटेगी। केतु के साथ मीन की शनिश्चरी में अपूज्यों की खूब पूजा होती है। विषाक्त रोगों का प्रादुर्भाव होता है। किसी प्रभावी नेता के लिए समय स नुकूल नहीं। तेजी-मन्दी विचार— वैशाख शुक्ल द्वितीया गुरुवार में चन्द्र दर्शन मु. ४५ वालू मार्कीट भावों में गिरावट के सूचक हैं। अष्टमी बुधवार ता. १४ मई में बैठी वृष की संक्रान्ति मु. ३० के प्राभाव से स्थिर लाईन बनेगी। वैशाख कृष्णा चतुर्दशी क्षय होकर शुक्ला अष्टमी की वृद्धि हुई है जिसका फल इस प्रकार लिखा है, यथा—**कृष्ण पक्ष की तिथि घटे, शुक्ल पक्ष बढ़ जाय। एक चीज तो क्या बढ़े, सभी चीज बढ़ जाय॥** आकाश लक्षण— अन्तरिक्ष में बनने वाले ग्रह योगायोग के कारण कर्नाटक, आसाम, केरला, मध्य प्रदेश तथा पर्वतीय प्रदेशों में जहां-तहां बादल चाल, हल्की वर्षा सम्भव है। उत्तर भारत में गर्मी बढ़ती जायेगी। मरु प्रदेशों में धूल भरी आंधियां चलेंगी।

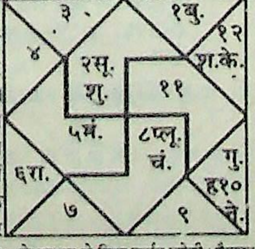

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	७	४	०	९	१	११	५	११	९	९	७
७	२	२६	१२	२७	२०	२२	१	१	१४	६	१०
७	२३	१२	१५	३२	२	३१	४४	४४	४८	२	३१
४९	५७	४७	४२	२९	१२	४८	५५	५५	५०	१९	३०
५७	८००	१५	५६	३	७३	६	३	३	०	०	१
४०	४१	५९	१०	२०	३८	०	११	११	३०	४३	४०
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
कृत्तिका	विशाखा	पूफा.	अश्वि.	धनिष्ठा	रोहिणी	रेवती	उफा.	पूभा.	श्रवण	उषा.	[illegible]

श्री परशुराम जयंती-सा प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या। वैशाखस्य शुक्लपक्षे तृतीयां पुनर्वसौ। निशायां प्रथमे यामे रामाख्यो समयो हरिः अक्षय तृतीया-वैशाखे शुक्लपक्षे तु तृतीया रोहिणयुता। दुर्लभा बुधवारेण सोमेनापि युता तथा। सा पूर्वाह्न व्यापिनी ग्राह्या। नृसिंह चौदस-वैशाखे शुक्ल पक्षे तु चतुर्दश्यां निशामुखे। मज्जन्म संभव व्रतं पाप प्रणाशनम्॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४

शाके १९१९ ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-४

दिनांक २३ मई से ५ जून, सन् १९९७ ई.
ग्रीष्म ऋतु, रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले

घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

दि. घप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	तारीखें अं. मई	शा. ज्ये.	प्र. ज्ये.	मु. मुह	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	विवरण	दैनिक स्पष्ट रा.	अं	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय		अस्त	
[illegible]	१	शु	२०	३८	१३	४४	अनु	४	५	७	७	शि	११	४२	१०	१०	कौ	२०	३८	१३	४४	23	२	१०	१५	वृश्चिक	उत्तरा फाल्गुनी में मंगल ४१।३७ (२२।४), भरणी में बुध १०।५२ (९।५०)	१	८	५	२९	[illegible]	[illegible]	२०	११	६	११
२७	२	श	१७	१७	१२	२३	ज्ये	२	५०	६	३६	सिद्ध	६	३०	८	४	गर	१७	१७	१२	२३	24	३	११	१६	ध. ६।३६	भ. ४५।११ (२३।३२) से, श्री नारद जयंती, वीणादान, मृगशिर में शुक्र ४१।१३ A	१	९	३	८	२८	१४	२१	८	७	१२
३०	३	र	१३	५	१०	४२	मू	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	१३	५	१०	४२	25	४	१२	१७	धनु	भ. १३।५ (१०।४२) तक, चतुर्थी व्रत, श्री श्री माँ आनन्दमयी महापूजा	१	१०	०	४५	२८	१५	२२	२	८	८
३३	४	चं	८	१८	८	४७	उषा	५४	४२	२७	२१	शु	४७	२०	२४	२४	बा	८	१८	८	४७	26	५	१३	१८	म. १०।१८		१	१०	५८	२२	२८	१६	२२	५४	९	८
३५	५	मं	३	७	६	४३	श्र	५१	२३	२६	१	ब्र	४०	२५	२१	३८	तै	३	७	६	४३	27	६	१४	१९	मकर	भ. ५७।५० (२८।३६) से, पं. जवाहरलाल नेहरू जी निर्वाण दिवस	१	११	५५	१८	२८	१७	२३	४१	१०	९
०	६	मं	५७	५०	२८	३६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	षष्ठी क्षयः	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३८	७	बु	५२	२८	२६	२७	ध	४७	५७	२४	३९	ऐं	३३	२५	१८	५०	वि	२५	८	१५	३१	28	७	१५	२०	कु. १३।२०	भ. २५।८ (१५।३१) तक, पंचक प्रारम्भ १९।४० (१३।२०)	१	१२	५३	३३	२८	१८	-	-	११	१२
३८	८	गु	४७	७	२४	१९	श	४४	३५	२३	१८	वै	२६	२५	१६	२	बा	१९	४७	१३	२३	29	८	१६	२१	कुम्भ	श्री दादुदयाल पुण्यः, चौ. चरण सिंह पुण्य तिथि, कालाष्टमी व्रत	१	१३	५१	७	२८	१९	०	२७	१२	१५
४०	९	शु	४१	५७	२२	१४	पूभा	४१	२०	२१	५९	वि	१९	३२	१३	१६	तै	१४	३२	११	१६	30	९	१७	२२	मी. १६।१९	मिथुन में शुक्र ७।५० (८।३५), रेवती ३ में शनि प्रवेश १५।३० (११।३९)	१	१४	४८	४०	२७	१९	१	१०	१३	१७
४३	१०	श	३६	५३	२०	१२	उभा	३८	१०	२०	४३	प्री	१२	४३	१०	३२	व	९	२५	९	१३	31	१०	१८	२३	मीन	भ. ९।२५ (९।१३) से ३६।५३ (२०।१२) तक	१	१५	४६	१२	२७	२०	१	५२	१४	१९
४५	११	र	३२	२	१८	१५	रे	३५	१७	१९	३३	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बव	४	३०	७	१४	J	११	१९	२४	मे. १९।३३	जून मास ६ ता. ३०, पंचक समाप्त ३५।१७ (१९।३३), अपरा एकादशी व्रत (सबका), B	१	१६	४३	४३	२६	२०	२	३३	१५	२१
४७	१२	चं	२७	३३	१६	२७	अ	३२	४८	१८	३३	शो	५३	३०	२६	५०	तै	२७	३३	१६	२७	2	१२	२०	२५	मेष	कृतिका में बुध ५६।५ (२७।५२), सोमप्रदोष व्रत	१	१७	४१	१३	२६	२१	३	१५	१६	२३
४९	१३	मं	२३	३५	१४	५२	भ	३०	५०	१७	४६	अति	४६	५५	२४	१२	व	२३	३५	१४	५२	3	१३	२१	२६	वृ. २३।३७	भ. २३।३५ (१४।५२) से ५१।५९ (२६।१४) तक, कन्या में मंगल २८।३७ (१६।५३)	१	१८	३८	४३	२६	२१	३	५७	१७	२३
५०	१४	बु	२०	२२	१३	३५	कृ	२९	३५	१७	१६	सु	४३	५	२२	४०	श	२०	२२	१३	३५	4	१४	२२	२७	वृष	पितृकार्येऽमा, आर्द्रा में शुक्र ३४।४५ (१९।२०)	१	१९	३६	१२	२६	२२	४	४४	१८	२२
५२	३०	गु	१८	५	१२	३९	रो	२९	२०	१७	९	धृ	३९	२	२१	२	ना	१८	५	१२	३९	5	१५	२३	२८	वृष	शनि जयंती, भावुका ३० अमापुण्यम्, वट्सावित्री व्रत पूजनार्चन, वृष में बुध ८।३२ C	१	२०	३३	४०	२५	२२	५	३२	१९	२१

A(२१।५७), रोहिणी में सूर्य ५९।१० (२९।८) B भद्रकाली एकादशी पंजाब C (८।५०), सावित्री सत्यवान व्रत कथा श्रवण

ग्र. स्प. ज्येष्ठ कृष्ण ८ गुरौ प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये २९ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१०	४	०	९	१	११	५	११	९	९	७
१३	९	२८	१९	२७	२८	२३	१	१	१४	५	१०
५१	३१	११	५२	५३	३६	१२	२३	२३	४३	५७	१९
७	३९	२२	३२	१	५७	५५	३९	३९	५८	१७	४८
५७	८४३	१८	३१	२	३३	५	३	३	०	०	१
३३	२४	१६	८	२४	२९	३४	११	११	४०	४४	४०
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
रोहिणी	शत.	उ.फा.	भरणी	धनिष्ठा	मृगशिरा	रेवती	उ.फा.	पू.भा.	श्रवण	उ.षा.	ज्ये.

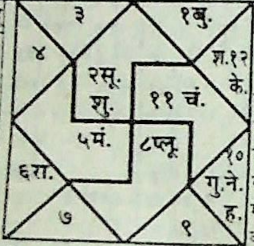

॥ फलम् ॥

३ से २४ जून तक कन्या राशि में राहु + मंगल का अङ्गारक योग तथा मीन में शनि + केतु का मलेच्छ योग अतिनेष्ट चलेगा। जिसे राजविग्रह, आन्तरिक कलह कारक माना जाता है ॥ सम सप्तक शनि भौम हो, अथवा एक हि संग। प्रजा कष्ट औ अन्न से, जन विग्रह का रंग ॥ इस योग के चलते राजनैतिक पार्टियों में परस्पर तनाव बढ़ेगा। एक दूसरे पर कीचड़ उछालने में समय विनष्ट होता रहेगा। राष्ट्र हित में कामकाज प्राय न के बराबर होगा। राजा-प्रजाजन एक दूसरे के प्रति उदासीन भाव बनाये रखने में मसगूल रहने लगते हैं। साम्प्रदायिक मतभेद उभरते जाते हैं। कहीं सरकार को कठोर से कठोर कदम उठाने पड़ते हैं, सीमाओं पर चौकसी बर्तनी चाहिए। भारत सरकार को सैन्य बल बढ़ाना चाहिए। तेजी-मन्दी विचार — मास में पांच शुक्रवारों का फल उत्तम होने से चल रहे सामयिक भावों में गिरावट आयेगी। यदि तापमान की बढ़ोत्तरी अधिक हुई तो घी, दूध, दही, खोया, पनीर, रसकश, चावल, सूती वस्त्र, सोना, चांदी तथा शेयर बाजार गर्म रहेगा। कुछ वस्तुओं के भावों में दो तरफा चाल चलेगी। व्यापारी वर्ग को सावधानी पूर्वक काम करना चाहिए। आकाश लक्षण — इस पक्ष में वायु अति तीव्र गति से बहेगी। कहीं आंधी तूफान से छति होगी। महानगर में अग्निकाण्ड भय विषाद सम्भव है। उत्तरोत्तर गर्मी का जोर बढ़ता जायेगा। समुद्र तटवर्ती प्रदेशों में वर्षा सम्भव है।

कु. अमावस्या सूर्योदये ५ जून ❖ ग्र. स्प. ज्येष्ठ कृ. ३० गुरौ प्रातः ५।३० बजे

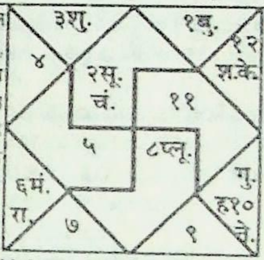

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१	५	०	९	२	११	५	११	९	९	७
२०	१६	०	२९	२८	७	२३	१	१	१४	५	१०
३३	५३	२९	४७	४	१०	५१	१	१	३७	५०	८
४०	३३	४४	२७	३३	५७	०	२३	२३	५०	४५	७
५७	७१६	२२	९०	०	७३	५	३	३	१	१	१
२७	३१	३४	३५	४५	२५	९	११	११	१	०	४०
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
रोहिणी	रोहिणी	उ.फा.	कृत्तिका	धनिष्ठा	आर्द्रा	रेवती	उ.फा.	पू.भा.	श्रवण	उ.षा.	ज्ये.

ज्येष्ठ मासस्यामायां वैधव्यदोष प्रशमनाय वट् सावित्री व्रतम् कुर्यात्। इदम् ज्येष्ठ त्रयोदशीमारभ्यामान्तं कर्तव्यमिति। ततो वशमये पात्रे वस्त्रयुग्मेन वेष्टिते। सावित्री प्रतिमां कुर्यात् सौवर्णी वापि मृण्मयीम्। अनेन कुलतारण फलं भवति। अत्रैव हविष्यान्न पारणं ब्रह्मचर्यादयो नियमांश्च पालनीया इति।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-५

तारीख | चन्द्र संचार

दिनांक ६ से २० जून, सन् १९९७ ई.
ग्रीष्म ऋतु, रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं. टा. जालन्धर

दि.	तिथि		स्टैं.टा.				नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		अं.	शा.	प्र.	मु.	भा.स्टैं.टा.	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है।	दै.रवि स्पष्ट				सू.उ.अ.		चन्द्रोदय			
प	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	जून	ज्ये	ज्ये	मुह	ग.घं.मि.	घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	रा.	अं.	क.	वि	उ	अ	उदय		अस्त	
[illegible]	१	शु	१६	५५	१२	११	मृ	३०	१५	१७	३१	शूल	३६	०	११	४९	बव	१६	५५	१२	११	6	१६	२४	२९	मि. ५।२०	चन्द्रदर्शन मु. १५ महर्घः, श्री गंगादशाश्वमेध घाट स्नान प्रारंभ, करवीर व्रत	१	२१	३१	७	२५	२३	६	२५	२०	१६
५	२	श	१७	१५	१२	१९	आ	३२	३७	१८	२८	गंड	३४	७	११	४	कौ	१७	१५	१२	१९	7	१७	२५	सफ	मिथुन	सफर मु. मास २, रम्भातीज व्रत, मृगशिर में सूर्य ४४।१२ (२७।६)	१	२२	२८	३३	२५	२३	७	१६	२१	६
६	३	र	१९	५	१३	३	पुन	३६	३०	२०	१	वृ	३३	२७	१८	४८	ग	१९	५	१३	३	8	१८	२६	२	क. १३।३७	भ. ५०।४८ (२५।४४) से, श्री महाराणा प्रताप जंयती, मेला हल्दी घाटी राजस्थान	१	२३	२५	५९	२५	२४	८	९	२१	५३
८	४	चं	२२	३०	१४	२५	पुष्य	४१	५०	२२	९	ध्रु	३४	०	११	१	वि	२२	३०	१४	२५	9	१९	२७	३	कर्क	भ. २२।३० (१४।२५) तक, वक्री अनु. २ में प्लूटो ५७।५ (२८।१८), गुरु अर्जुन देव निधन दि.	१	२४	२३	२२	२५	२४	९	३	२२	३५
९	५	मं	२७	१२	१६	१८	आ	४८	२५	२४	४७	व्या	३५	३०	११	३७	बा	२७	१२	१६	१८	10	२०	२८	४	सिं. २४।४७	श्रुतिपंचमी (जैन), रोहिणी में बुध ५९।७ (२९।४)	१	२५	२०	४५	२५	२५	९	५५	२३	१३
[illegible]	६	बु	३३	०	१८	३७	म	५५	५३	२७	४६	ह	३७	४७	२०	३२	कौ	०	७	५	२८	11	२१	२९	५	सिंह	रोहिणी में बुध (५।४), श्री विन्ध्यवासिनी देवी पूजा, अरण्य षष्ठी (बंगाल), वक्री A	१	२६	१८	८	२५	२५	१०	४७	२३	४९
०	७	गु	३९	१५	२१	७	पूफा	६०	०	-	-	वज्र	४०	२५	२१	३५	गर	६	८	७	५२	12	२२	३०	६	सिंह	भ. ३९।१५ (२१।७) से,	१	२७	१५	२९	२५	२५	११	३८	-	-
१	८	शु	४५	२३	२३	३४	पूफा	३	३५	६	५१	सि	४२	५५	२२	३५	वि	१२	१७	१०	२०	13	२३	३१	७	क. १३।३६	भ. १२।१७ (१०।२०) तक, श्री दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती, मेला क्षीर भवानी (कश्मीर)	१	२८	१२	४९	२५	२५	१२	३०	०	२२
२	९	श	५०	४५	२५	४३	उफा	१०	५५	९	४७	व्य	४४	५०	२३	२१	बा	१८	२	१२	३८	14	२४	आ	८	कन्या	माहेश्वरि नवमी, **मिथुन में सूर्य प्रवेश** ५२।२७ (२६।२४), संक्रान्ति मुहूर्त ३० सौर B	१	२९	१०	८	२५	२६	१३	२१	०	५४
२	१०	र	५४	४५	२७	१९	ह	१७	१०	१२	१७	वरि	४५	४०	२३	४१	तै	२२	४५	१४	३१	15	२५	२	९	तु. २५।२६	संक्रान्ति जन्य पुण्यकाल, श्री गंगादशहरा मेला हरिद्वार, सेतु बन्धु रामेश्वर प्रतिष्ठा दि.,C	२	०	७	२६	२५	२६	१४	१२	१	३०
३	११	चं	५७	२	२८	१४	चि	२२	०	१४	१३	परि	४५	२०	२३	३३	व	२५	५३	१५	४६	16	२६	३	१०	तुला	भ. २५।५३ (१५।४६) से ५७।२ (२८।१४) तक, निर्जला एकादशी व्रत (सबका)	२	१	४	४३	२५	२६	१५	६	२	६
३	१२	मं	५७	२३	२८	२२	स्वा	२५	५	१५	२७	शिव	४३	२७	२२	४८	बव	२७	१२	१६	१८	17	२७	४	११	तुला	चम्पक द्वादशी, निम्बार्कमतानुसार निर्जला एकादशी व्रत, मृगशिर में बुध ४८।२२ (२४।४६)	२	२	२	०	२५	२६	१६	२	२	४३
३	१३	बु	५५	५२	२७	४६	वि	२६	२०	१५	५७	सिद्ध	४०	५	२१	२७	कौ	२६	३७	१६	४	18	२८	५	१२	वृ. १।५०	प्रदोष व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भः, लक्ष्मीबाई पुण्यः	२	२	५९	१५	२५	२६	१६	५९	३	२५
४	१४	गु	५२	४०	२६	२९	अनु	२५	५०	१५	४५	सा	३५	२०	१९	३३	गर	२४	१८	१५	८	19	२९	६	१३	वृश्चिक	भ. ५२।४० (२६।२९) से,	२	३	५६	३१	२५	२७	१७	५७	४	१०
४	१५	शु	४८	०	२४	३७	ज्ये	२३	४८	१४	५६	शुभ	२९	२२	१७	१०	बि	२०	२०	१३	३३	20	३०	७	१४	ध. १४।५६	भ. २०।२० (१३।३३) तक, सत्यव्रत पूर्णिमा पुण्यं, गुर्जराणाम् वट्सावित्री व्रत, D	२	४	५३	४६	२५	२७	१८	५६	५	२

A गुरु ४२।४२ (२२।३०) B आषाढ़ मास प्रारम्भः, बुध पूर्व दिशा में अस्त ५१।५२ (२६।१०) C रामेश्वर यात्रा, दर्शन पूजा, बटुक भैरव जयंती, दशहरा व्रत समाप्त, पुनः शुक्र २९।३५ (१७।१५) D सन्त कबीर जयंती, मन्वादिः

ग्र. स्प. ज्येष्ठ शुक्ल ८ शुक्रे प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये १३ जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	४	५	१	९	२	११	५	११	९	९	७
२८	२६	३	१३	२८	१६	२४	०	०	१४	५	९
२२	०	३२	४०	६	५७	३०	३५	३५	२८	४२	५४
४९	२	३५	२	१८	२९	२७	५७	५७	१५	९	३९
[illegible]	[illegible]	२४	१०८	०	७३	४	३	३	१	१	१
१९	४०	५१	४५	४५	१८	३४	११	११	३०	१२	४२
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥ फलम् ॥

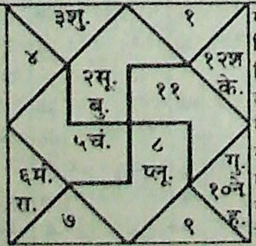

मास में पांच शुक्रवारों का फल श्रेष्ठ है—शुक्रस्य पंचवारास्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजा वृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥ के अनुसार देश-विदेश में प्रजाजन, जीवजन्तु, पशु पक्षियों की खूब वृद्धि होगी। बढ़ती तकनीक के माध्यम से भौतिक सुखोपभोग के साधन सुलभ होंगे। प्राणियों में परस्पर सौहार्द पूर्ण मैत्री की भावना पनपेगी। हर्षोल्लास बढ़ता जायेगा। सर्वहारा वर्ग खुश हाली महसूस करेगा। सात्त्विक प्रवृत्ति का प्रादुर्भाव होगा। मंगलोत्सवों का सिलसिला जारी रहेगा। मंगल + राहु का अङ्गारक योग छुटपुट दंगे फसाद भी करवायेगा। किसी प्रान्तीय मंत्रिमण्डल तथा प्रभावी नेता के लिए समय सानुकूल नहीं है। उच्चस्तरीय नेताओं को प्रत्येक कदम पर सावधानी वर्तनी चाहिए। **तेजी-मन्दी विचार**—ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा में चन्द्र दर्शन मु. १५ महंगाई कारक है। पक्ष के पूर्वार्ध में तेजी की चाल चलेगी। अनाज गेहूं, जौ, चना, दालें, और मेवाओं के भाव अधिक बढ़ सकते हैं। १४ जून शनिवार में मूती मिथुन की संक्रान्ति मु. ३० के प्रभाव से पक्ष के उत्तरार्ध में दैनिक उपयोगी वस्तुओं के बाजार भाव समानान्तर चलते रहेंगे। **आकाश लक्षण**—इस पक्ष की वर्षा चौमासा के लिए श्रेष्ठ नहीं होती। प्रचण्ड गर्मी पड़ेगी। धूलभरी आंधियां आयेंगी। मरुप्रदेशों में तूफान की सम्भावना बनेगी। कहीं अग्निदाह भी सम्भव है। तापमान उत्तरोत्तर बढ़ता जायेगा।

कु. पूर्णिमा सूर्योदये २० जून ❖ ग्र. स्प. ज्येष्ठ शुक्ल १५ शुक्रे प्रातः ५।३० बजे

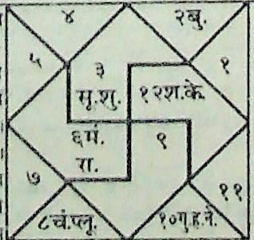

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	७	५	१	९	२	११	५	११	९	९	७
४	२४	६	२७	२७	२५	२५	०	०	१४	५	९
५३	२९	२८	५३	५७	२९	१	१३	१३	१७	३३	४२
४६	४०	३२	३५	४३	४०	९	४१	४१	४५	४५	४५
५७	८४०	२६	१२४	२	७३	४	३	३	१	१	१
१३	२३	५१	१३	२४	८	९	११	११	४८	३०	१६
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ज्येष्ठ शुक्ल दशम्यां गंगावतारः इयं दशहराख्येति। अत्र दशयोगा उच्यन्ते-ज्येष्ठेमासि १ सितेपक्षे २ दशम्यां ३ बुध ४ हस्तयोः ५ व्यतिपाते ६ गंरा ७ नन्दे ८ कन्या चन्द्रे ९ वृषे रवौ १०। दशयोगे नराः स्नात्वा सर्वपापौ प्रमुच्यते॥ इह दशमी व्यतिपातयोर्मख्यत्व ज्ञेयम्। पूजा मन्त्र-ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै नमो नमः॥

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ आषाढ़ कृष्ण पक्ष-६

दिनांक २१ जून से ४ जुलाई, सन् १९९७ ई.
वर्षा ऋतु, रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

दि.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		तारीखें अं.	शा.	प्र.	मु.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा.	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है।	दै.रवि स्पष्ट				सू.उ.अ.		चन्द्रोदय			
घप	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	जून	ज्ये	आ.	सफ	रा.घं.मि.	घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	रा.	अं.	क.	वि	उ	अ	उदय		अस्त	
[illegible]	१	श	४२	२३	२२	२३	मू	२०	३३	१३	३९	शु	२२	२८	१४	२५	बा	१५	१०	११	३०	21	३१	८	१५	धनु	आर्द्रा में सूर्य ५१।३० (२६।२), सावित्री व्रतोद्यापन, गुरुहरगोविन्द जयंती, मिथुन में A	२	५	५०	५९	५/२८	७/२८	१९	५३	५	५६
५	२	र	३६	७	१९	५३	पूषा	१६	३०	१२	२	ब्र	१४	५७	११	२५	तै	९	१५	९	८	22	आ	९	१६	म.१७।३६	राष्ट्रीय आषाढ़ मास प्रारम्भ:	२	६	४८	१३	२६	२८	२०	४८	६	५६
४	३	चं	२९	३०	१७	१४	उषा	१२	०	१०	१४	ऐं	७/५८	०/५०	८/२८	१४/५८	व	२	४७	६	३३	23	२	१०	१७	मकर	भ. २।४७ (६।३३) से २९।३० (१७।१४) तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, कर्क में शुक्र B	२	७	४५	२६	२६	२८	२१	३९	७	५९
४	४	मं	२२	४५	१४	३२	श्र	७	१५	८	२०	वि	५०	४५	२५	४४	बा	२२	४५	१४	३२	24	३	११	१८	कु. ११।२४	पंचक प्रारम्भ ३४।५५ (१९।२४), उफा. १ सिंह में राहु, पूभा. ३ कुम्भ में केतु १८।०C	२	८	४२	३९	२६	२८	२२	२७	९	१
३	५	बु	१६	१२	११	५६	ध	२/५८	३५/२५	६/२८	२९/४९	प्री	४३	०	२२	३९	तै	१६	१२	११	५६	25	४	१२	१९	कुम्भ		२	९	३९	५२	२७	२८	२३	११	१०	७
२	६	गु	१०	८	९	३०	पूभा	५४	४२	२७	२०	आ	३५	३७	१९	४२	व	१०	८	९	३०	26	५	१३	२०	मी. २१।४२	भ. १०।८ (९।३०) से ३७।२० (२०।२३) तक, पुष्य में शुक्र प्रवेश २६।४० (१६।७), चैहल्लुम	२	१०	३७	५	२७	२८	२३	५३	११	११
२	७	शु	४	३२	७	१६	उभा	५१	३७	२६	६	सौ	२८	४५	१६	५७	बव	४	३२	७	१६	27	६	१४	२१	मीन	कालाष्टमी व्रत, हस्त में मंगल का प्रवेश ४५।५७ (२३।५०)	२	११	३४	१८	२७	२८	-	-	१२	१२
०	८	शु	५९	३३	२९	१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	अष्टमी क्षय:	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१	९	श	५५	१७	२७	३५	रे	५०	२२	२५	३७	शो	२२	२०	१४	२४	तै	२७	२३	१६	२५	28	७	१५	२२	मे. २५।३७	पंचक समाप्त ५०।२२ (२५।३७)	२	१२	३१	३१	२८	२८	०	३४	१३	१४
[illegible]	१०	र	५१	४८	२६	११	अ	४७	३३	२४	२९	अति	१६	३३	१२	५	व	२३	३३	१४	५३	29	८	१६	२३	मेष	भ. २३।३३ (१४।५३) से ५१।४८ (२६।११) तक	२	१३	२८	४४	२८	२८	१	१५	१४	१५
५८	११	चं	४८	५५	२५	३	भ	४६	३०	२४	५	सु	११	१५	९	५९	बव	२०	२०	१३	३७	30	९	१७	२४	मेष	योगिनी एकादशी व्रत (सबका) स्मार्त वैष्णव, बल्लभानाम्, पुनर्वसु में D	२	१४	२५	५७	२९	२८	१	५८	१५	१५
५८	१२	मं	४७	०	२४	१७	कृ	४६	२२	२४	२	धृ	६	३८	८	८	कौ	१७	५७	१२	४०	J	१०	१८	२५	वृ. ६।१	जुलाई मास ७ ता. ३१, योगिनी एकादशी व्रत निम्बार्कनाम्	२	१५	२३	९	२९	२८	२	४०	१६	१४
५७	१३	बु	४५	५५	२३	५१	रो	४७	७	२४	२०	शूल	२/५९	४०/२७	६/२९	०३/१६	गर	१६	२८	१२	४	2	११	१९	२६	वृष	भ. ४५।५५ (२३।५१) से, प्रदोष व्रत, आखरी चहारशाम्बा	२	१६	२०	२२	२९	२८	३	२६	१७	१२
५६	१४	गु	४५	५०	२३	५०	मृ	४८	४८	२५	१	वृ	५७	१०	२८	२२	वि	१५	५०	११	५०	3	१२	२०	२७	मि.१२।३९	भ. १५।५० (११।५०) तक	२	१७	१७	३५	३०	२८	४	१६	१८	७
५५	३०	शु	४६	५०	२४	१४	आ	५१	३५	२६	८	धु	५५	४३	२७	४७	च	१६	२०	१२	२	4	१३	२१	२८	मिथुन	सहादते ईमाम हसन, देवपितृकार्येऽमापुण्यम्	२	१८	१४	४८	३०	२८	५	७	१८	५७

A बुध ०।४० (५।५२), सायन कर्क में सूर्य प्रवेश २१।२ (१३।५१), रवि दक्षिणायने, वर्षा ऋतुप्रारम्भ B प्रवेश ४२।१८ (१२।२१) C (१२।३८), आर्द्रा में बुध ४।३२ (७।१५) D बुध १६।५२ (१२।१४)

ग्र. स्प. आषाढ़ कृ. शुक्रे प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. सप्तमी सूर्योदये २७ जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	११	५	२	९	३	११	४	१०	९	९	७
११	४	९	१३	२७	४	२५	२९	२९	१४	५	९
३४	३६	३८	२	३८	०	२८	५१	५१	५	२३	३३
१८	५१	१५	५६	५५	४८	१३	२६	२६	९	१५	५०
५७	८६२	२८	१३०	३	७३	३	३	३	१	१	१
१३	१२	३४	५२	२४	०	३०	११	११	४८	३०	१७
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
आर्द्रा	उभा.	उफा.	आर्द्रा	धनिष्ठा	पुष्य	रेवती	उफा.	पूभा.	श्रवण	उषा.	अनु.

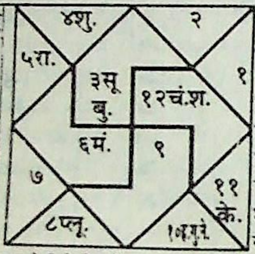

।। फलम् ।।

कु. अमावस्या सूर्योदये ४ जुलाई ❖ ग्र. स्प. आषाढ़ कृष्ण ३० शुक्रे प्रातः ५।३० बजे

इस मास में पांच शनि तथा पांच ही रविवार हैं। जिस मास में पांच शनिवार पड़ते हैं उस मास अग्निभय विषाद व्याप्त होता है। भूमि कम्पन अथवा प्राकृतिक आपदा की आशंका बनी रहती है। किसी देश या प्रदेश की सत्तारूढ़ पार्टी मृत प्राय अस्तित्व हीन हो जाती है, यथा- शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भङ्गश्च वन्हिदाहो महर्घता ॥ बेतहासा महंगाई बढ़ोत्तरी होती है। कहीं भावों में गिरावट आती है। अनावश्यक-आवश्यक जनता समुदाय विशेषों के मध्य तनाव बढ़ने लगता हैं। दुःखों के सृजन कर्त्ता शनि, युद्ध के देवता मंगल का आमने-सामने समसप्तक योग चल ही रहा है। यह योग शान्ति के मध्य अशान्ति का परिचायक है। २३ जून से १८ जुलाई तक दो विरोधी ग्रहों का समसप्तक योग साम्प्रदायिक दंगे फसादों को हवा देगा। तेजी-मन्दी विचार— कर्क का शुक्र ग्रह समस्त पेयपदार्थ, रसकश, अचार, मुरब्बा, दही-दूध, दाल, सब्जियों के भावों में तेजी करेगा तो अनाजों में मन्दी का प्रभाव दिखायेगा, यथा—दैत्यगुरुर्यदा कर्के रसानां वे महर्घत्व:। सर्वधान्य समर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि॥ इस योग में मेघ पृथ्वी पर अच्छी जल की वर्षा करते हैं। इस पक्ष में कहीं वर्षा होगी तो कहीं सूखा पड़ेगा। खाद्यान्न समस्या उलझती जायेगी। रात्रि में सर्दी दिन में पड़ने वाली सड़ी गर्मी नाना प्रकार के रोगों का कारण बनेगी। यत्र-तत्र आंधियां आयेंगी।

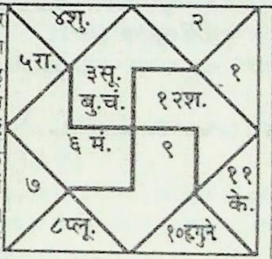

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	२	५	२	९	३	११	४	१०	९	९	७
१८	९	१३	२७	२७	१२	२५	२९	२९	१३	५	९
१४	४	०	४७	११	३१	५०	२९	२९	५१	१२	२५
४८	३५	४७	१८	३५	४८	४१	११	११	१९	४५	१२
५७	७६२	३०	१२५	४	७३	२	३	३	२	१	१
१४	१०	७	३०	१८	०	५८	११	११	६	३०	११
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
आर्द्रा	आर्द्रा	हस्त	पुनर्वसु	धनिष्ठा	पुष्य	रेवती	उफा.	पूभा.	श्रवण	उषा.	अनु.

आषाढ़े चैकभक्तेन स्थित्वा मासमतीन्द्रितः। बहुधनो बहुपुत्राश्च जायन्ते। उपानधुगले छत्र लवणामलिकानि च। आषाढ़े वामन प्रीत्यै दात्व्यानीह भक्तिनः अथेह सर्व व्रतेषु सामान्य धर्मान् उच्यन्ते। क्षमा सत्यं दया दानं शौचमिन्द्रिय निग्रह। देवपूजाग्नि हवनं संतोष [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४

शाके १९१९ आषाढ़ शुक्ल पक्ष-७

दिनांक ५ से २० जुलाई, सन् १९९७ ई.

वर्षा ऋतु, रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।

दि.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		तारीखें				चन्द्र संचार		दै.रवि स्पष्ट				सू.उ.अ.		चन्द्रोदय			
घप	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	अं. जुला	शा. आषा.	प्र. आषा.	मु. सफ.	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.		रा.	अं.	क.	वि	उ	अ	उदय		अस्त	
[illegible]	१	श	४९	७	२५	९	पुन	५५	३८	२७	४५	व्या	५५	१५	२७	३६	किं	१७	५८	१२	४१	5	१४	२२	२९	क.२१।२०	कर्क में बुध प्रवेश ३।४० (६।५८), पुन. में सूर्य प्रवेश ५०।२७ (२५।४१)	२	१९	१२	२	५/३०	७/२८	५	५८	१९	४३
५१	२	र	५२	३५	२६	३३	पुष्य	६०	०	-	-	ह	५५	४३	२७	४८	बा	२०	५०	१३	५१	6	१५	२३	३०	कर्क	चन्द्रदर्शन मु. ३० साम्यार्घः, पुष्य से बुध प्रवेश ४७।४० (२४।३५), मनोरथ २ A	२	२०	९	१६	३१	२८	६	५२	२०	२९
५०	३	चं	५७	२०	२८	२७	पुष्य	०	४७	५	५०	वज्र	५७	८	२८	२२	तै	२४	५७	१५	३०	7	१६	२४	श्र.अ	कर्क	रवि उल अव्वल मु. मास ३, बुध पश्चिम में उदय १४।७ (११।१०), श्लेषा में शुक्र B	२	२१	६	३०	३१	२७	७	४५	२१	९
४८	४	मं	६०	०	-	-	आ	७	१८	८	२६	सि	५९	२२	२९	१६	व	३०	१५	१७	३७	8	१७	२५	२	सिं. ८।२६	भ. ३०।१५ (१७।३७) से,	२	२२	३	४३	३१	२७	८	३८	२१	४६
४८	४	बु	३	१०	६	४८	मघा	१४	४०	११	२४	व्य	६०	०	-	-	वि	३	१०	६	४८	9	१८	२६	३	सिंह	भ. ३।१० (६।४८) तक	२	२३	०	५६	३२	२७	९	३०	२२	२२
४६	५	गु	९	२८	९	१९	पूफा	२२	२७	१४	३१	व्य	२	३	६	२१	बा	९	२८	९	१९	10	१९	२७	४	क. २१।१८	वक्री धनिष्ठा १ में गुरु प्रवेश २६।३५ (१६।१०)	२	२३	५८	८	३२	२७	१०	२१	२२	५४
४५	६	शु	१५	५२	११	५३	उफा	३०	८	१७	३५	वरि	४	५०	७	२८	तै	१५	५२	११	५३	11	२०	२८	५	कन्या	कुमार षष्ठी व्रत, महावीर गर्भ कल्याणंक	२	२४	५५	२१	३२	२६	११	१२	२३	२८
४३	७	श	२१	३५	१४	११	ह	३७	७	२०	२४	परि	७	१२	८	२६	व	२१	३५	१४	११	12	२१	२९	६	कन्या	भ. २१।३५ (१४।११) से ५३।५४ (२७।७) तक	२	२५	५२	३४	३३	२६	१२	२	२४	०
४२	८	र	२६	१३	१६	२	चि	४३	०	२२	४५	शि	८	४७	९	४	बव	२६	१३	१६	२	13	२२	३०	७	तु. ९।३६		२	२६	४९	४७	३३	२६	१२	५५	-	-
४०	९	चं	२९	१०	१७	१४	स्वा	४७	७	२४	२५	सिद्ध	९	१३	९	१५	कौ	२९	१०	१७	१४	14	२३	३१	८	तुला	भड्डरि नवमी, मेला शरीफ भवामी (कश्मीर), कन्दर्प ९ शूद्रादि ९, श्लेषा में बुध C	२	२७	४७	०	३४	२६	१३	४८	०	३९
३८	१०	मं	३०	१२	१७	४०	वि	४९	१८	२५	१८	सा	८	१०	८	५१	गर	३०	१२	१७	४०	15	२४	३२	९	वृ. १९।६	भ. ५९।४२ (२९।२८) से, मन्वादि तिथि	२	२८	४४	१३	३५	२६	१४	४४	१	१८
३७	११	बु	२९	१३	१७	१६	अनु	४९	२५	२५	२१	शुभ	५	३२	७	४८	वि	२९	१३	१७	१६	16	२५	श्रा.	१०	वृश्चिक	प्रदोष व्रत, हरिवासराऽभावः	२	२९	४१	२६	३५	२६	१५	४१	२	०
३५	१२	गु	२६	१०	१६	४	ज्ये	४७	३८	२४	३९	शु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	२६	१०	१६	४	17	२६	२	११	ध.२४।३९	भ. २९।१३ (१७।१६) तक, देवशयनी एकादशी व्रत (सबका), अजमेर दादामेला D	३	०	३८	३९	३६	२६	१६	३९	२	४७
३३	१३	शु	२१	२८	१४	११	मूल	४४	१२	२३	१७	ऐं	४८	१५	२४	५४	तै	२१	२८	१४	११	18	२७	३	१२	धनु	ईद उल मिलाद (बारावफात) मुहम्मद साहब का जन्म व मृत्यु दिन, मघा सिंह में E	३	१	३५	५२	३६	२५	१७	३७	३	४०
३०	१४	श	१५	१७	११	४४	पूषा	३९	२७	२१	२४	वै	४०	३	२१	३८	व	१५	१७	११	४४	19	२८	४	१३	म.२६।५२	भ. १५।१७ (११।४४) से ४१।४१ (२२।१७) तक, सत्यव्रत आषाढ़ी पूर्णिमा, F	३	२	३३	६	३७	२५	१८	३४	४	३९
२६	१५	र	८	५	८	५१	उषा	३३	५३	१९	१०	वि	३१	१०	१८	५	बव	८	५	८	५१	20	२९	५	१४	मकर	आषाढ़ी १५ गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, मेला नैमिषारण्य, सन्यासी योगियों का G	३	३	३०	२०	३७	२४	१९	२८	५	४२

A बंगाल में प्रसिद्ध, श्री जगदीश रथ यात्रा (उड़ीसा) B २४।३२ (१५।२०) C ४।० (७।१०) D प्रारम्भ, चातुर्मास्य यम नियमादि प्रारम्भ, जिनदत्तसूरीश्वर (जैन), कर्क में सूर्य प्रवेश १९।१७ (१३।१८), संक्रान्ति मु. ३०, सौर श्रावण प्रारम्भ, मनसा पूजा प्रारम्भ (बंगाल) E शुक्र २५।२३ (१५।४५), वक्री श्रवण १ में हर्शल ०।० (५।३६) F वायु परीक्षा करनी पुष्य में सूर्य प्रवेश ४८।५७ (२५।१२) G यम नियमादि चातुर्मास्य प्रारम्भ, मन्वादि तिथि

ग्र. स्प. आषाढ़ शुक्ल ८ रवि प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये १३ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	५	५	३	९	३	११	४	१०	९	९	७
२६	२७	१७	१४	२६	२३	२६	२९	२९	१३	४	९
४९	५२	३८	४७	२६	२६	११	०	०	३१	५८	१४
४७	५८	११	३०	६	१३	३९	३३	३३	४६	५२	४९
५७	३३	३१	१०५	५	७२	२	३	३	२	१	१
१३	५३	५१	३६	२४	३८	०	११	११	१८	३६	९
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

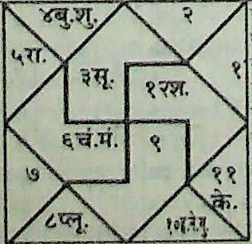

॥ फलम् ॥

इस मास में पांच शनि एवं पांच ही रविवार हैं—शनिवारा यदा पंच जायंते रवि पंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोग शोकाकुला मही॥ के अनुसार महंगाई उत्तरोत्तर बढ़ती जायेगी। धान्यादि का भाव विशेष तेज होगा। बढ़ते पापाचार नित्योत्पात से वसुन्धरा अकुलायेगी। विश्व के अनेक भागों में नित नये रोगोपद्रव होते रहने से प्राणियों में व्याकुलता व्याप्त रहेगी। शनि-भौम का समसप्तक योग अभी समाप्त नहीं हुआ है। सम सप्तक शनि-भौम हो, अथवा एक हि संग। प्रजा कष्ट औ अन्न से, जन विग्रह का रंग॥ आगामी ४ अगस्त तक का समय समस्त विश्व के लिए सानुकूल नहीं कहा जा सकता। २० जौलाई में गुरु नेपच्यून, हर्षल तथा चन्द्रमा का चतुर्ग्रही योग और भी खराब फल प्रदायक है। कहीं युद्ध के काले बादल मंडराते नजर आयेंगे। किसी देश में अराजकता फैलती जायेगी। असामान्य विषम परिस्थितियों में से गुजरती जनता कष्ट पावेगी। तेजी-मन्दी विचार—द्वितीया रविवार में नवीन चन्द्रमा के दर्शन मु. ३० और एकादशी बुधवार ता. १६ जुलाई में बैठी कर्क की संक्रान्ति मु. ३० समभाव की सूचक है। अन्य ग्रह योग महंगाई वृद्धि में सहायक हैं। महंगाई तो बढ़ेगी लेकिन अधिक नहीं। आषाढ़ कृष्णाष्टमी की हानि होकर शुक्ल ४ तिथि की वृद्धि हुई है सो यह पैदावार के लिए उत्तम है। आकाश लक्षण— आषाढ़ शुक्ल पक्षान्तर्गत ग्रह राशि नक्षत्र परिवर्तन तथा पश्चिमोदय बुध के प्रभाव से न्यूनाधिक मात्रा में वर्षा सर्वत्र होगी। सर्दी गर्मी पड़ेगी। पशु पक्षियों में रोग वृद्धि का संयोग बनेगा।

कु. पूर्णिमा सूर्योदये २० जुलाई ❖ ग्र. स्प. आषाढ़ शुक्ल १५ रवि प्रातः ५।३० बजे

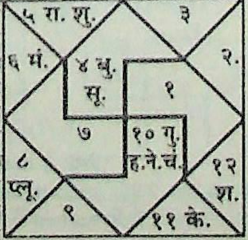

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	९	५	३	९	४	११	४	१०	९	९	७
३	१	२१	२६	२५	१	२६	२८	२८	१३	४	९
३०	३४	२४	१९	४२	५३	२३	३८	३८	१५	४७	८
२०	३४	३८	४१	३७	५९	४०	१७	१७	४०	४०	३१
५७	४८७	३३	८६	५	७२	१	३	३	२	१	०
१५	२७	०	१२	०	१८	०	११	११	२०	३८	५१
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आषाढ़ शुक्ल द्वितीयायां श्री रामस्य रथोत्सवः कार्य इति। आषाढ़ शुक्ल एकादश्यां श्रीविष्णोः शयनोत्सवः कार्यः। आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमासस्यां व्यास पूजा विधेयेति। अत्रैव निशामुखे वायु परीक्षा च कार्येति। यदि पूर्व-उत्तर-ईशान की वायु चले तो उत्तम, पश्चिम और वायव्य की मध्यम, शेष दिशाओं की वायु चले तो अच्छा नहीं होता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ श्रावण कृष्ण पक्ष-८

दिनांक २१ जुलाई से ३ अगस्त, सन् १९९७ ई. वर्षा ऋतु, रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं. टा. जालन्धर

दि.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		तारीखें				चन्द्र संचार	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है।	दै.रवि स्पष्ट				सू.उ.अ.		चन्द्रोदय			
घ.प.	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	अं. जु.	शा. आ.	प्र. श्रा.	मु. र.अ.	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	रा.	अं.	क.	वि	उ	अ	उदय		अस्त	
[illegible]	१	चं	०	२	५	३९	श्र	२७	५०	१६	४६	प्री	२१	५०	१४	२२	कौ	०	२	५	३९	21	३०	६	१५	कु.२७।३६	पंचक प्रारम्भ ५४।५५ (२७।३६), अशून्य शयन व्रत	३	४	२७	३५	[illegible]	[illegible]	२०	१९	६	४७
०	२	चं	५१	५५	२६	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	००	द्वितीया क्षयः	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०	३	मं	४३	४७	२३	१०	ध.	२१	४३	१४	२०	आ	१२	२७	१०	३८	व	१७	५०	१२	४७	22	३१	७	१६	कुम्भ	भ. १७।५० (१२।४७) से ४३।४७ (२३।१०) तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, मघा सिंहA	३	५	२४	५०	३९	२३	२१	७	७	५२
१६	४	बु	३६	५	२०	६	श.	१५	५०	१२	०	सौ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बव	९	५५	९	३८	23	श्रा	८	१७	मी. २८।२३	चतुर्थी व्रत पूर्वा प्रदेश, राष्ट्रीय श्रावण मास प्रारम्भ, मौलाद, लोकमान्य बाल B	३	६	२२	६	४०	२२	२१	४९	८	५८
१३	५	गु	२९	५	१७	१९	पूभा	१०	३०	९	५३	अति	४६	२०	२४	१३	कौ	२	३५	६	४३	24	२	९	१८	मीन	नाग पंचमी मरुस्थले (राजस्थान व बंगाल में प्रसिद्ध)	३	७	१९	२३	४१	२२	२२	३५	१०	४
११	६	शु	२३	२	१४	५४	उभा	६	७	८	८	सु	३९	३	२१	१८	व	२३	२	१४	५४	25	३	१०	१९	मीन	भ. २३।२ (१४।५४) से ५०।३० (२५।५३) तक	३	८	१६	४१	४१	२१	२३	१६	११	८
८	७	श	१७	५८	१२	५३	रे	२	४३	६	४७	धृ	३२	३५	१८	४४	बव	१७	५८	१२	५३	26	४	११	२०	मे. ६।४७	पंचक समाप्त २।४३ (६।४७)	३	९	१३	५९	४२	२१	२३	५८	१२	१०
५	८	र	१४	३	११	२०	अ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शूल	२७	५	१६	३३	कौ	१४	३	११	२०	27	५	१२	२१	मेष	कालाष्टमी व्रत,	३	१०	११	१९	४३	२१	-	-	१३	१०
३	९	चं	११	२२	१०	१६	कृ	५९	३२	२९	३२	गंड	२२	३७	१४	४६	गर	११	२२	१०	१६	28	६	१३	२२	वृ. ११।२८	भ. ४०।३८ (२१।५९) से.	३	११	८	३९	४३	२०	०	४१	१४	८
[illegible]	१०	मं	९	५५	९	४२	रो	६०	०	-	-	वृ	१९	२	१३	२१	वि	९	५५	९	४२	29	७	१४	२३	वृष	भ. ९।५५ (९।४२) तक, पूर्वा फाल्गुनी में शुक्र २९।३२ (१७।३३)	३	१२	६	०	४४	२०	१	२६	१५	६
५३	११	बु	९	४०	९	३७	रो	०	४७	६	४	ध्रु	१६	२८	१२	२०	बा	९	४०	९	३७	30	८	१५	२४	मि. १८।३४	कामिका एकादशी व्रत (सबका)	३	१३	३	२३	४५	१९	२	१३	१६	२
५०	१२	गु	१०	३७	१०	०	मृग	३	२३	७	६	व्या	१४	५०	११	४१	तै	१०	३७	१०	०	31	९	१६	२५	मिथुन	प्रदोष व्रत	३	१४	०	४६	४५	१८	३	२	१६	५३
४६	१३	शु	१२	४०	१०	५०	आ	६	५८	८	३३	ह	१४	०	११	२२	व	१२	४०	१०	५०	A	१०	१७	२६	क. २७।५५	भ. १२।४० (१०।५०) से ४४।१४ (२३।२८) तक, अगस्त मास ८ ता. ३१	३	१४	५८	११	४६	१८	३	५२	१७	४१
४२	१४	श	१५	४८	१२	६	पुन	११	३५	१०	२५	वज्र	१४	२	११	२४	श	१५	४८	१२	६	2	११	१८	२७	कर्क	आश्लेषा में सूर्य संचार ४५।४२ (२४।४), पूर्वा फाल्गुनी में बुध १७।२५ (१२।४५), C	३	१५	५५	३६	४७	१७	४	४५	१८	२५
३८	३०	र	२०	०	१३	४७	पु	१७	१७	१२	४२	सि	१५	०	११	४७	ना	२०	०	१३	४७	3	१२	१९	२८	कर्क	हरियाली ३० स्नानादि की देव पितृकार्येऽमा पुण्यम्	३	१६	५३	३	४७	१६	५	३८	१९	७

A में बुध ३३।१७ (१८।५४), सायन सिंह में सूर्य ४७।४८ (२४।४६) B गंगाधर जय., चित्रा में मंगल प्रवेश २९।० (१७।१६) C शनि वक्री ४०।५० (२२।१७)

ग्र. स्प. श्रावण कृष्ण ८ रवि प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये २७ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	०	५	४	९	४	११	४	१०	९	९	७
१०	१३	२५	६	२४	१०	२६	२८	२८	१२	४	९
११	७	१९	१	५३	१९	२९	१६	१६	५९	३६	४
१९	५७	२	५३	३७	५२	५२	२	२	८	१३	१०
५७	८१३	३४	७५	७	७२	०	३	३	२	१	०
२०	३४	८	३६	०	८	३७	११	११	२२	३८	३०
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

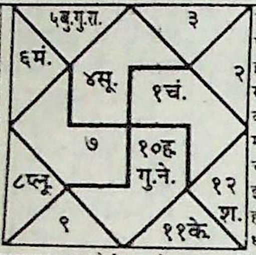

॥ फलम् ॥

कु. अमावस्या सूर्योदये ३ अगस्त ❖ ग्र. स्प. श्रावण कृ. ३० रवि प्रातः ५।३० बजे

इस वर्ष वृहस्पति के क्षेत्र मीन राशि में शनि की साढ़ेसाती भारतीय भूभाग पर वर्षा में कमी करेगी। चक्राकार प्रबल वायुवेग के कारण कृषि में क्षति होगी। पशुचारा तृण, घास फूंस की कमी अखरती रहेगी—गुरु क्षेत्रे शनौ **राहौ स्वल्प वृष्टिस्तृण क्षयः।** राजतन्त्र की राशि सिंह में बुध + राहु + शुक्र का योग अन्त्यजों, अल्पसंख्यकों के लिये विशेष फायदेमन्द है। सरकारी मशीनरी का पूरा-पूरा ध्यान उस ओर लगा रहेगा। नित नई -नई योजनायें चालू की जायेंगी। कहीं विषाद भी बढ़ता जायेगा। धार्मिक उन्माद के तहत झगड़ा सम्भव है। सरकारी तन्त्र की अकर्मण्यता वसात् राजकाज आधे अधूरे होंगे। मास में पांच सोमवारों का फल उत्तम होने से कल कारखाना, उद्योग धन्धों में उत्पादन अधिक होगा। समयोचित वस्तुयें मिलते रहने से जनता राहत महसूस करेगी। अच्छे समाज धार्मिक कृत्यों को वरीयता प्रदान करेंगे। **तेजी-मन्दी विचार**—सिंह का बुध महंगाई करेगा—सिंह राशौ बुधः स्याच्चेत् **सर्वधान्य महर्घता। सुवर्ण देवदारुश्च महर्घ प्रभवेत्तदा॥** गेहूं, जौ, चनादि, समस्त धान्य, दालें, मेवायें, अन्यान्य वस्तुएं तथा काष्ठ के दामों में वृद्धि होगी। सर्राफा तथा शेयर बाजार में दो तरफा चाल चलेगी। **आकाश लक्षण**— भारी मेघाडम्बर के साथ यत्र-तत्र भारी वर्षा की सम्भावना बनेगी। कहीं वर्षा की कमी अखरने लगेगी, चक्राकार प्रबल वायुवेग से खड़ी फसलों में क्षति होगी। भारी घुटन, सड़ी गर्मी से रोगों की वृद्धि होगी।

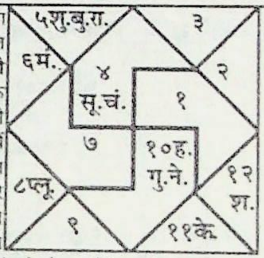

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	३	५	४	९	४	११	४	१०	९	९	७
१६	१३	२९	१४	२४	१८	२६	२७	२७	१२	४	९
५३	२	२१	९	१	४४	३२	५३	५३	४२	२५	०
३	३८	५३	४१	१४	३५	३३	४६	४६	२८	१०	५२
५७	७२४	३५	५३	७	७१	०	३	३	२	१	०
२७	१३	२५	४५	३६	५२	२४	११	११	२४	३०	२४
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.	व.
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रावणादि मास चतुष्टये वर्ज्यपदार्थ उच्चयन्ते। श्रावणे वर्जयेच्छाकं दधि भाद्रपदेत्यजेत्। आश्विने मासि दुग्धं च कार्तिके द्विदलं त्यजेदिति। आस्मिन्मास्येक भक्त व्रतं च कार्यम्। तथा विष्णु शिवाद्यभिषेकोऽप्युक्त। इहैव श्रीधर प्रीत्यर्थे प्रतिदिनं घृतादिकं देयम्। तदुक्तम्-घृतं च क्षीर कुम्भाश्च घृतपक्वफलानि च। श्रावणे श्रीधर प्रीत्यै दातव्यानि दिने-दिने।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४

शाके १९१९ श्रावण शुक्ल पक्ष-१

दि. घप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
३३/३५	१	चं	२५	१०	१५	५२	आ	२३	५२	१५	२१	व्य	१६	३२	१२	२५	बव	२५	१०	१५	५२
३२	२	मं	३१	२	१८	१४	मघा	३१	१०	१८	१७	वरि	१८	४७	१३	२०	कौ	३१	२	१८	१४
२८	३	बु	३७	३०	२०	४९	पूफा	३८	५७	२१	२४	परि	२१	२५	१४	२३	तै	४	१५	७	३१
२५	४	गु	४४	०	२३	२६	उफा	४६	५२	२४	३५	शि	२४	१५	१५	३२	व	१०	४२	१०	७
२२	५	शु	५०	१०	२५	५४	हस्त	५४	३०	२७	३८	सि	२६	५२	१६	३५	बव	१७	५	१२	४०
१८	६	श	५५	३३	२८	४	चि	६०	०	-	-	सा	२८	५७	१७	२६	कौ	२२	५०	१४	५९
१४	७	र	५९	३२	२९	४१	चि.	१	८	६	१९	शुभ	३०	१०	१७	५६	गर	२७	३०	१६	५२
१०	८	चं	६०	०	-	-	स्वा	६	२७	८	२७	शु	३०	१३	१७	५७	वि	३०	३८	१८	७
६	८	मं	१	४३	६	३४	वि	१०	०	९	५३	ब्र	२८	४०	१७	२१	बव	१	४३	६	३४
२	९	बु	१	५२	६	३९	अनु	११	३५	१०	३२	ऐं	२५	३२	१६	७	कौ	१	५२	६	३९
३२/५८	१०	गु	०	७	५	५७	ज्ये	११	१३	१०	२३	वै	२०	५३	१४	१५	गर	०	७	५	५७
०	११	गु	५६	२०	२८	२६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५४	१२	शु	५०	२८	२६	६	मूल	८	५०	९	२७	वि	१४	३५	११	४५	बव	२३	२३	१५	१६
५०	१३	श	४३	२०	२३	१५	पूषा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्री	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	१६	५२	१२	४०
४५	१४	र	३५	७	१९	५८	श्र	५३	५	२७	९	सौ	४८	३०	२५	१९	गर	९	१२	९	३६
४०	१५	चं	२६	१५	१६	२५	ध	४५	५७	२४	१८	शो	३८	२२	२१	१६	वि	०	४०	६	११

दिनांक ४ से १८ अगस्त, सन् १९९७ ई.
वर्षा ऋतु, रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले

घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।

तारीखें अं. अग.	शा. श्रा.	प्र. श्रा.	मु. र.उ.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।
4	१३	२०	२९	सिं.१५।२१	नक्त व्रतारम्भः, तुला में मंगल का प्रवेश ३।५० (७।२०), पश्चिमी भाग में चन्द्रदर्शन
5	१४	२१	र.उ.	सिंह	रवि उस्मानी मु. मास ४ प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन मु. ३०
6	१५	२२	२	क.२८।१२	हरितालिका तीज, हरितृतीया तीज, हरियालीतीज, मधुश्रवातीज सिंधारा तीज, A
7	१६	२३	३	कन्या	भ. १०।४२ (१०।७) से ४४।० (२३।२६) तक, वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत, B
8	१७	२४	४	कन्या	वक्री श्रवण ४ में गुरु १७।३० (१२।५०), नाग पंचमी देशाचारे, तक्षक पूजा C
9	१८	२५	५	तु.१७।०	क्रांति दिवस, वर्णभृयाल षष्ठी, कल्कि जयन्ती, उत्तराफाल्गुनी में शुक्र ३६।१५ (२०।२१)
10	१९	२६	६	तुला	भ. ५९।३२ (२९।४१) से, गो. श्री तुलसी दास जी जयन्ती, श्री रामचरित मानस दान,D
11	२०	२७	७	वृ.२७।३३	भ. ३०।३८ (१८।७) तक, श्री दुर्गाष्टमी सिंध, मेला नयना देवी चिन्तपूर्णी (हि.प्र.)
12	२१	२८	८	वृश्चिक	कन्या में शुक्र प्रवेश २४।० (१५।२९)
13	२२	२९	९	वृश्चिक	E प्लूटोमार्गी २९।० (१७।३०)
14	२३	३०	१०	ध.१०।२३	भ. २८।१४ (१७।१२) से ५६।२० (२८।२६) तक, पुत्रदा एकादशी व्रत स्मार्त, E
0	०	०	०	००	एकादशी क्षयः
15	२४	३१	११	धनु	पुत्रदा एकादशी व्रत वैष्णव, श्री विष्णु पवित्रार्पण, दधित्याग व्रतारम्भ, भारतीय F
16	२५	भा.	१२	म.१३।२०	शनि प्रदोष व्रत, मघासिंह में सूर्य ३९।२७ (२१।४२), संक्रान्ति मु. ४५, सौर भाद्रपद मास प्रा.
17	२६	२	१३	मकर	भ. ३५।७ (१९।५८) से,
18	२७	३	१४	कु.१३।४२	भ. ०।४० (६।११) तक, पंचक प्रारम्भ १९।२७ (१३।४२), श्री अमरनाथ दर्शन, G

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

अग.	दैरवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय घं	मि	अस्त घं	मि
4	३	१७	५०	३०	[illegible]	[illegible]	६	३१	१९	४६
5	३	१८	४७	५८	४९	१५	७	२३	२०	२२
6	३	१९	४५	२८	४९	१४	८	१५	२०	५६
7	३	२०	४२	५८	५०	१४	९	६	२१	२९
8	३	२१	४०	२८	५०	१३	९	५६	२२	५
9	३	२२	३७	५९	५१	१२	१०	४८	२२	३८
10	३	२३	३५	३२	५२	११	११	४०	२३	१६
11	३	२४	३३	५	५२	१०	१२	३३	२३	५५
12	३	२५	३०	४०	५३	९	१३	२८	-	-
13	३	२६	२८	१५	५४	८	१४	२६	०	३९
14	३	२७	२५	५०	५४	६	१५	२२	१	२९
0	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
15	३	२८	२३	२७	५५	५	१६	१८	२	२२
16	३	२९	२१	५	५५	४	१७	१३	३	२१
17	४	०	१८	४५	५५	३	१८	६	४	२४
18	४	१	१६	२५	५५	१	१८	५६	५	३२

A सुवर्ण गौरीव्रत पूजनम् B वरद चतुर्थी व्रत, श्रवण तप जैन प्रारम्भः C भित्ति चित्रित नाग पूजा, अमरनाथ यात्रारम्भ D शीतला पूजन सिन्ध प्रान्त F स्वतन्त्रता दिवस, ध्वजा रोहणम्, स्वाती में मंगल ७।१३ (८।४८), फतीहायजदहूम ग्यारहवीं शरीफ G श्रावणी उपाकर्म रक्षाबन्धन (राखी), ऋषितर्पण, श्री गायत्री जयंती, हयग्रीवोत्सव, भेटनी मन्दिर, वक्री बुध २८।२२ (१७।१६)

ग्र. स्प. श्रावण शुक्ल ८ चन्द्रे प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये ११अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	६	६	४	९	४	११	४	१०	९	९	७
२४	१८	४	२०	२२	२८	२६	२७	२७	१२	४	८
३३	२७	८	२६	५८	१८	२७	२८	२८	२३	१३	५८
५	३५	४६	४०	३८	५२	२९	१९	१९	२२	१०	४१
५७	[illegible]	३६	२४	७	७१	०	३	३	२	१	०
३५	१७	१७	३०	४३	३४	४८	११	११	१८	३०	१
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.	व.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

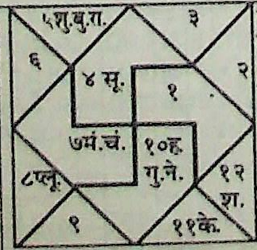

॥ फलम् ॥

मास में पांच सोमवारों का फल उत्तम है—सोमस्य पंचवारास्यु यत्र मासे भवन्ति हि। धन धान्य समृद्धिः स्यात् सुखं भवति सर्वदा॥ के अनुसार वसुन्धरा पर धन-धान्यादि की खूब वृद्धि होगी। कल कारखानों में पार्याप्त उत्पादन होने से सौख्य समृद्धि बढ़ेगी। जनता सौख्य समृद्धि का अनुभव करेगी। यत्र-तत्र धार्मिक कृत्यों में प्रदत्त सर्वहारा वर्ग में सौहार्द पूर्ण मैत्री की भावना पनपेगी। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में शान्ति के हर सम्भव उपायों पर विचार किया जायेगा। युद्धोन्मादी राष्ट्र शान्तिप्रिय देशों में अशान्ति फैलाने का घिनोना षड्यन्त्र रचेंगे। भारतीय कर्णधारों को आस्तीन के छुपे सांपों से सावधान रहना चाहिए। सीमा सुरक्षा, सैन्यबल बढ़ोत्तरी पर खूब ध्यान देना चाहिए। **तेजी-मन्दी विचार**—द्वितीया मंगलवार चन्द्र दर्शन मुहूर्त ३० साम्यार्घ कारक है। त्रयोदशी शनिवार ता. १६ अगस्त में सूती सिंह संक्रान्ति मु. ४५ होने के कारण चालू मार्कीट भावों में गिरावट आयेगी। इस पक्ष में तिथियों की ह्रास वृद्धि का फल भी उत्तम है—जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिके, महंगाई हट जाय॥ **आकाश लक्षण**— पक्षान्तर्गत ग्रह योग सामान्य वृष्टि के परिचायक हैं। उत्तम पैदावार का संयोग बनेगा। कहीं अतिवृष्टि, बाढ़ के कारण नुकसान होगा। भारत सरकार को राहत कार्यों की ओर पहले से ध्यान देना चाहिए।

कु. पूर्णिमा सूर्योदये १८ अगस्त ❖ ग्र. स्प. श्रावण शुक्ल १५ चन्द्रे प्रातः ५।३० बजे

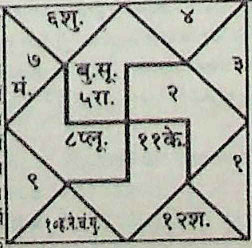

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	९	६	४	९	५	११	४	१०	९	९	७
१	२४	८	२२	२२	६	२६	२७	२७	१२	४	८
१६	४९	२६	२४	४	३८	२०	६	६	७	२	५९
२५	५९	११	४०	३९	५९	५	४	४	१६	४०	४०
५७	१०६	३७	४	७	७१	१	३	३	२	१	०
४२	४८	८	०	२७	१०	३६	११	११	१८	३०	१४
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.	मा.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्रावण शुक्ला पंचमी नागाख्या सा षष्ठी युता ग्राह्या। श्रावण शुक्ला पौर्णमास्यी मध्याह्ने ऋषीणां पूजनादि कर्तव्यमिति। यदि तद्दिने पर्व ग्रहणं संक्रांति दूषितं स्यात्तदा श्रावण सित्तपंचम्यामुपाकरणं कर्त्तव्यम्। अस्यामेव रक्षाबन्धनम् कार्यम्। भद्रा रहित काले ग्रहण संक्रांति दिनेऽपि कर्त्तव्यम्। तन्मन्त्र-येनबद्धो बलि राजा दानवेन्द्रो महाबल। तैनस्वामभिवध्नामि रक्षेमाचलमाचलेति।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ भाद्रपद कृष्ण पक्ष-१०

दिनांक १९ अगस्त से १ सितम्बर, सन् १९९७ ई. वर्षा ऋतु, रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।

दि. घप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	तारीखें अं. अग.	शा. श्रा.	प्र. भा.	मु. र.उ.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.		दै.रवि स्पष्ट ग.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय		अस्त	
[illegible]	१	मं	१७	५	१२	४६	शत	३८	५०	२१	२८	अति	२८	५	१७	१०	कौ	१७	५	१२	४६	19	२८	४	१५	कुम्भ	अशून्य शयन व्रत समाप्त	४	२	१४	७	५/५६	७/०	११	४३	६	३८
३२	२	बु	८	०	९	९	पूभा	३२	०	१८	४५	सु	१८	०	१३	९	गर	८	०	९	९	20	२९	५	१६	मी. १३।२५	भ. ३३।४१ (१९।२५) से, कज्जलि तृतीया व्रत, सातू तीज, हस्त में शुक्र ४८।२५ (२५।१९)	४	३	११	५१	५७	६/५६	२०	२८	७	४६
०	३	बु	५९	२२	२९	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	००	तृतीया क्षय: B बुध अस्त पश्चिम दिशा में १९।१० (१३।४०)	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	४	गु	५१	२७	२६	३३	उभा	२५	४७	१६	१७	धृ	८/५९	२५/१२	९/२१	२६/३१	बव	२५	२३	१६	७	21	३०	६	१७	मीन	भ. ५९।२२ (५।४२) तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, बहुला चौथ व्रत, श्रवण तप पूर्ण (जैन)	४	४	९	३५	५८	५८	२१	११	८	५२
२६	५	शु	४५	३	२४	०	रे	२०	३३	१४	१२	गंड	५१	२०	२६	३१	कौ	१८	१२	१३	१६	22	३१	७	१८	मे. १४।१२	पंचक समाप्त २०।३३ (१४।१२)	४	५	७	२०	५९	५७	२१	५४	९	५८
२२	६	श	३९	५५	२१	५७	अ	१६	४२	१२	४०	वृ	४४	४०	२३	५१	गर	१२	२७	१०	५८	23	भा.	८	१९	मेष	भ. ३९।५५ (२१।५७) से, सायन कन्या में सूर्य ४।२७ (७।४६), राष्ट्रीय भाद्रपद A	४	६	५	८	५९	५६	२२	३९	१०	५९
१८	७	र	३६	१५	२०	३०	भ	१४	१५	११	४२	ध्रु	३९	८	२१	३९	वि	८	५	९	१४	24	२	९	२०	वृ. १७।३६	भ. ८।५ (९।१४) तक, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त, दौण मेला दनकौर (यू.पी.), B	४	७	२	५७	०/०	५५	२३	२४	१२	०
१४	८	चं	३४	१२	१९	४२	कृ	१३	२५	११	२२	व्या	३४	५५	१९	५८	बा	५	१३	८	५	25	३	१०	२१	वृष	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव, कालाष्टमी, सन्त ज्ञानेश्वर जयंती, दूर्वाष्टमी व्रत, मन्वादि तिथि	४	८	०	४९	०	५४	-	-	१३	०
१०	९	मं	३३	५०	१९	३३	रो	१४	१७	११	४४	ह	३२	०	१८	४९	तै	४	०	७	३७	26	४	११	२२	मि. २४।१०	पू.फा. ४ राहु पू.भा. २ केतु १०।३५ (१०।१५), गोगा ९ नन्दोत्सव नन्दगांव व्रज प्रदेश	४	८	५८	४२	१	५३	०	१२	१३	५८
५	१०	बु	३४	५७	२०	१	मृ.	१६	३५	१२	४०	वज्र	३०	१८	१८	९	व	४	२२	७	४७	27	५	१२	२३	मिथुन	भ. ४।२२ (७।४७) से ३४।५७ (२०।१) तक	४	९	५६	३७	२	५२	१	०	१४	४९
०	११	गु	३७	३८	२१	५	आ	२०	५८	१४	२५	सि	२९	४७	१७	५७	बव	६	१७	८	३३	28	६	१३	२४	मिथुन	अजा नामक एकादशी व्रत (सबका)	४	१०	५४	३३	२	५०	१	५१	१५	३९
०१/५८	१२	शु	४१	३०	२२	३९	पुन	२५	३२	१६	१६	व्य	३०	१२	१८	८	कौ	९	३३	९	५२	29	७	१४	२५	क. ९।४७	वत्स द्वादशी, बच्छबासर सवत्सा गोपूजन	४	११	५२	३१	३	४९	२	४३	१६	२४
५२	१३	श	४६	२२	२४	३६	पुष्य	३१	४०	१८	४३	वरि	३१	३०	१८	३९	गर	१३	५५	११	३७	30	८	१५	२६	कर्क	भ. ४६।२२ (२४।३६) से, शनि प्रदोष व्रत, जैन पर्युषणपर्वारम्भ (चतुर्थी पक्ष), C	४	१२	५०	३२	३	४८	३	३४	१७	६
४८	१४	र	५१	५५	२६	५०	आ	३८	३०	२१	२८	परि	३३	१८	१९	२३	वि	१९	८	१३	४३	31	९	१६	२७	सि. २१।२८	भ. १९।८ (१३।४३) तक, अघोरा चौदस, जैन पर्युषण पर्वारम्भ (पंचमी पक्ष)	४	१३	४८	३३	४	४७	४	२६	१७	४५
४३	३०	चं	५८	१७	२९	२३	मघा	४६	५	२४	३०	शि	३५	४०	२०	२०	च	२५	७	१६	७	S	१०	१७	२८	सिंह	सितम्बर मास १ ता. ३०, सोमवती मावस, पिठौरी ३०, कुशोत्पाटिनी (ॐ हूं फट् D	४	१४	४६	३६	४	४५	५	१८	१८	२२

A मास प्रारम्भ, शरद ऋतु प्रारम्भ, चन्द्र षष्ठी, हल षष्ठी व्रत, ललही छठि, पुत्रार्थी व्रत C पू.फा. में सूर्य २९।१५ (१७।४५), कलियुगादि तिथि D स्वाहा मन्त्र से), शती पूजा, अग्रजवंशे कल्प सूत्र पाठ जैन, मेला सुथरेशाह दिल्ली, वृषभोत्सव, चित्रा में शुक्र ६।० (८।२८)

ग्र. स्प. भाद्रपद कृष्ण ८ चन्द्रे प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये २५ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१	६	४	९	५	११	४	१०	९	९	७
८	६	१२	१९	२१	१४	२६	२६	२६	११	३	९
०	४५	५०	५१	१२	५६	७	४३	४३	५२	५३	१
४९	४३	४३	२४	३८	२०	५	४८	४८	३८	१५	४८
५७	७१३	३८	३४	६	७०	२	३	३	२	१	०
५३	४८	१७	४५	५४	४८	१२	११	११	०	१७	२४
मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.	मा.
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
३	४	३	२	४	३	३	२	३	२	३	२
मघा	कृत्तिका	स्वाती	पू.फा.	श्रवण	हस्त	रेवती	उ.फा.	पू.भा.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

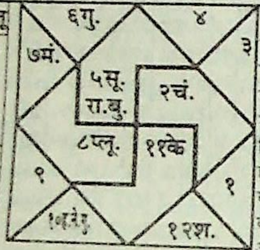

॥ फलम् ॥

भाद्रपद कृष्ण तृतीया की हानि होकर शुक्ला एकम् की वृद्धि हुई है, यह संयोग पदार्थों की वृद्धि में सहायक माना जाता है, यथा-कृष्ण पक्ष की तिथि घटे, शुक्ल पक्ष बढ़ जाय। एक चीज तो क्या बढ़े, सभी चीज बढ़ जाय॥ इस पक्ष में फल, फूल, सब्जियों की खूब बढ़ोतरी होगी। कल कारखानों में उत्पादन अधिक होने से दैनिक उपयोगी सभी चीजें सभी को समयोचित मिलती रहेंगी। सर्वहारा वर्ग को राहत मिलेगी। पांच भौमवारों का फल नेष्ट होने से विश्व के किसी देश में अराजकता फैलेगी। दंगे-फसाद भी खूब होंगे। कहीं रक्त रंजित धरा अकुलायेगी। किसी किस्म के अकल्पित कुघटना चक्र की सम्भावना जाननी चाहिए। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, रूस, अमेरिका, अरब, इजरायल तथा अन्य मुस्लिम राष्ट्रों में गृह युद्ध जैसी असामान्य विषम परिस्थितियाँ पैदा हो सकती हैं। भारतीय भू-भाग कश्मीर, पंजाब, हिमाचल तथा जम्मू आदि का क्षेत्र भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। तेजी-मन्दी विचार-तिथियों की ह्रासवृद्धि और अन्य ग्रह योग चालू मार्किट भावों में कम ही उतार चढ़ाव के सूचक हैं। आकाश लक्षण- श्री कृष्ण जन्माष्टमी के आसन्न अच्छी वर्षा के योग बन रहे हैं। दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, जम्मू तथा कश्मीर में विशेष वर्षा की सम्भावना जाननी चाहिए।

कु. अमावस्या सूर्योदये १ सितम्बर ❖ ग्र. स्प. भाद्रपद कृष्ण ३० चन्द्रे प्रातः ५।३० बजे

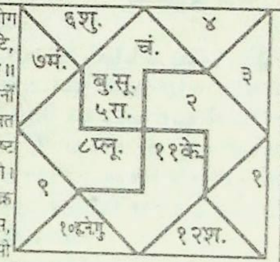

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	४	६	४	९	५	११	४	१०	९	९	७
१४	३	१७	१४	२०	२३	२५	२६	२६	११	३	९
४६	५९	२१	१२	२४	११	४६	२१	२१	३८	४४	५
३६	३१	०	२६	३८	१७	३६	३३	३३	४८	३५	३६
५८	७०८	३८	४२	६	७०	३	३	३	१	१	०
५	१५	५१	१३	०	२८	१२	११	११	४८	०	४३
मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.	व	व.	मा.
उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
२	२	४	२	४	४	३	४	२	२	३	२
पू.फा.	मघा	स्वाती	पू.फा.	श्रवण	हस्त	रेवती	उ.फा.	पू.भा.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

भाद्रपद कृष्ण षष्ठी चन्द्राख्या एषा तु चन्द्रोदय व्यापिनी ग्राह्येति। भाद्रपद कृष्ण सप्तमी शीतलाभिधा सा उदय व्यापिनी ग्राह्या। भाद्रपद कृष्णाष्टमी श्रीकृष्ण जयन्ती सा तु निशीथ व्यापिनी ग्राह्या। भाद्रपद कृष्ण द्वादश्यां गोवत्स व्रतं कार्यम्। अत्र गो पूजनेन पुत्रपौत्र सुखान्वित स्यात्। भाद्रपदाऽमायां गंगा स्नाने महत्फलं सर्वपाप प्रशमनम्।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ भाद्रपद शुक्ल पक्ष-११

दिनांक २ से १६ सितंबर, सन् १९९७ ई.
शरद् ऋतु, रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।

दि. वप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	तारीखें अं. सि.	शा. भा.	प्र. भा.	मु. रउ	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.		दै.रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय		अस्त	
[illegible]	१	मं.	६०	०	-	-	पूफा	५३	५५	२७	३९	सिद्ध	३८	२३	२१	२६	किं	३१	३२	१८	४२	2	११	१८	२९	सिंह	नक्त व्रतोद्यापन, वीर जन्मोत्सव (जैन), वक्री मघा में बुध १२।४७ (११।१२), A	४	१५	४४	४१	[illegible]	[illegible]	६	१०	१८	५७
३४	१	बु	४	५३	८	२	उफा	६०	०	-	-	सा	४१	५	२२	३१	बव	४	५३	८	२	3	१२	१९	३०	क. १०।३१	चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घ: Aअगस्त तारा उदय १३।४० (११।३३)	४	१६	४२	४८	५	४३	७	१	१९	३२
३०	२	गु	११	२२	१०	३९	उफा	२	३७	७	९	शुभ	४३	४०	२३	३४	कौ	११	२२	१०	३९	4	१३	२०	ब.अ	कन्या	जमादि उल लावल, साम श्रावणी, तेलाधार तप (जैन), रुणीचा मेला रामदेव जैसलमेर B	४	१७	४०	५६	६	४२	७	५१	२०	५
२५	३	शु	१७	३३	१३	७	ह	१	२०	९	५०	शु	४५	५०	२४	२६	गर	१७	३३	१३	७	5	१४	२१	२	तु. २३।१४	भ. ५०।१५ (२६।१२) से, मन्वादि:, हरितालिका तीज, गौरी तृतीया व्रत, शिक्षक दिवस, C	४	१८	३९	६	६	४०	८	४२	२०	४०
२१	४	श	२२	५७	१५	१८	चि	१६	१२	१२	३६	ब्र	४७	२३	२५	४	वि	२२	५७	१५	१८	6	१५	२२	३	तुला	भ. २२।५७ (१५।१८) तक, वैनायकी, श्री गणेश ४, पत्थर चौथ व्रत, D	४	१९	३७	१८	७	३९	९	३४	२१	१४
१७	५	र	२७	२५	१७	५	स्वा	२२	१५	१५	१	ऐं	४८	५	२५	२१	बा	२७	२५	१७	५	7	१६	२३	४	तुला	ऋषि पंचमी, जैन सम्वत्सरी, क्षमावाणी पर्व (पंचमी पक्ष)	४	२०	३५	३१	७	३८	१०	२७	२१	५४
१३	६	चं.	३०	३०	१८	२०	वि	२६	५५	१६	५४	वै	४७	३५	२५	१०	तै	३०	३०	१८	२०	8	१७	२४	५	वृ. १०।२७	बलदेव छठि, सूर्य षष्ठी, मेला व्रज मण्डल, पर्युषण प्रारम्भ, दिगम्बर जैन, E	४	२१	३३	४६	८	३७	११	२०	२२	३४
९	७	मं.	३२	०	१८	५६	अनु	३०	५	१८	१०	वि	४५	५०	२४	२८	गर	१	१५	६	३८	9	१८	२५	६	वृश्चिक	भ. ३२।० (१८।५६) से, पंत जयंती, सन्तान सप्तमी, मुक्ताभरण सप्तमी, अपराजिता ७	४	२२	३२	२	८	३६	१२	१५	२३	१८
५	८	बु	३१	३५	१८	४७	ज्ये	३१	२२	१८	४२	प्री	४२	३०	२३	९	वि	१	४५	६	५१	10	१९	२६	७	ध. १८।४२	भ. १।४५ (६।५१) तक, मार्गी बुध २१।१० (१४।३७), श्री राधाष्टमी, दधीचि जयंती, F	४	२३	३०	१९	९	३५	१३	१०	-	-
०	९	गु	२९	१७	१७	५२	मू	३०	४८	१८	२८	आ	३७	४०	२१	१३	बा	०	२७	६	२०	11	२०	२७	८	धनु	भूदान जयंती, श्री महालक्ष्मी व्रत पूर्ण, श्री चन्द्र नवमी, उदासीन सम्प्रदाय उत्स.	४	२४	२८	३९	९	३४	१४	५	०	८
[illegible]	१०	शु	२५	८	१६	१३	पूषा	२८	२७	१७	३३	सौ	३१	२२	१८	४३	गर	२५	८	१६	१३	12	२१	२८	९	म. २३।१०	भ. ५२।१४ (२७।४) से, दशावतार १०, नवलदुर्गे मेला रामदेव जैसलमेर राज., G	४	२५	२७	०	१०	३२	१४	५९	१	४
५०	११	श	१९	२०	१३	५५	उषा	२४	२७	१५	५८	शो	२३	४५	१५	४१	वि	१९	२०	१३	५५	13	२२	२९	१०	मकर	भ. १९।२० (१३।५५) तक, पद्मा एकादशी व्रत (सबका), श्री विष्णु परिवर्तनोत्सव, H	४	२६	२५	२२	११	३१	१५	५०	२	३
४५	१२	र	१२	१०	११	४	श्र	१९	५	१३	५०	अति	१५	३	१२	१३	बा	१२	१०	११	४	14	२३	३०	११	कु. २४।३३	पंचक प्रारम्भ ४५।५२ (२४।३३), श्री वामन द्वादशी मेला पटियाला, हरिवासर:, J	४	२७	२३	४६	१२	२९	१६	४२	३	७
४०	१३	चं.	३	५०	७	४५	ध	१२	३५	११	१५	सु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	३	५०	७	४५	15	२४	३१	१२	कुम्भ	भ. ५४।५० (२८।९), अनन्त चतुर्दशी व्रत, इन्जीनियर्स डे Fश्री महालक्ष्मी व्रतारम्भ	४	२८	२२	१२	१३	२९	१७	२८	४	१५
०	१४	चं.	५४	५०	२८	९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	००	चतुर्दशी क्षय: C वराहवतार तिथि, विशाखा में मंगल २।५५ (७।१६)	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३५	१५	मं	४५	२०	२४	२२	शत	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शूल	४५	३८	२४	२०	वि	२०	५	१४	१६	16	२५	आ	१३	मी. २४।१२	भ. २०।५ (१४।१६) तक, प्रोष्ठपदी पूर्णिमा, सत्यव्रत, श्राद्धम् महालयारम्भ:, गायत्री जयंती, निर्वाण दिवस,	४	२९	२०	४०	१४	२८	१८	१५	५	२२

Bराजस्थान, वक्री श्रवण ३ में गुरु ५९।७ (२९।४५) Dचन्द्र दर्शन निषेध, श्री गणेश जन्मोत्सवारम्भ महाराष्ट्र, तुला में शुक्र प्रवेश ४६।४७ (२४।५०) Eसाक्षरता दिवस, बुध उदय पूर्व में २४।१५ (१५।५०) Gस्वाति में शुक्र २९।२५ (१७।५६) Hडोलग्यारस (म.प्र), उ.फा. में सूर्य १३।१७ (११।३०) Jप्रदोष व्रत, श्री भुवनेश्वरी जयंती, ओनम पर्व केरला, तमिलनाडु, राष्ट्रभाषा हिन्दी दिवस Kकन्या में सूर्य प्रवेश ३८।२७ (२१।३७), संक्रांति मु. ३० साम्यार्घ, सौर आश्विन प्रारम्भ, चन्द्र ग्रहण

ग्र. स्प. भाद्रपद शुक्ल ८ बुधे प्रात: ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये १० सितम्बर

॥ फलम् ॥

कु. पूर्णिमा सूर्योदये १६ सितम्बर ❖ ग्र. स्प. भाद्रपद शुक्ल १५ भौमे प्रात: ५।३० बजे

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	७	६	४	९	६	११	४	१०	९	९	७
२३	२२	२३	८	१९	३	२५	२५	२५	११	३	९
३०	४३	१५	५२	३३	४३	१६	५२	५२	२२	३५	१२
१९	२८	४९	३३	२	३६	१३	५६	५६	३६	५९	३५
५८	७१३	३१	-	५	७०	३	३	३	१	०	१
२०	४७	४६	०	१२	०	३६	११	११	२४	५१	७
मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.	मा.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इस मास में पांच भौमवारों का फल नेष्ट है यत्र मासे यदी सुनोजायन्ते पंचवासरा: । रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत् ॥ के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय जगत में सर्वत्र अशान्ति व्याप्त रहेगी। राजमदोन्मत्त नेता समृद्ध देशों के राष्ट्रनायक अपनी विस्तारवादी नीति पर चलेंगे। शान्ति के सभी प्रयास मात्र लोक दिखावा साबित होंगे। इस पक्ष में राहु के साथ बनने वाला त्रग्रही योग सत्तारूढ़ पार्टी के लिए श्रेष्ठ नहीं है। अकल्पित उलटफेर की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। किसी राजमुकुट के धूमिल होने के योग बन रहे हैं। किसी प्रान्त में नई कानून व्यवस्था लागू हो सकती है। मीन राशि में होने वाला खग्रास चन्द्रग्रहण भी भारतीय भूभाग के लिए श्रेष्ठ फलदायक नहीं है। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र और मीन राशि वालों को शान्त्यर्थ जप दान अनुष्ठानादि करना चाहिए। यदि देश वासियों को यज्ञानुष्ठान लाभ प्राप्त हो तो इस वर्ष अति उत्तम रहेगा। तेजी-मन्दी विचार-द्वितीया बुधवार में चन्द्रदर्शन मु. ४५ और पूर्णिमा मंगलवार में कन्या संक्रांति मु. ३० के प्रभाव से किंचित घटाबढ़ी के बाद स्थिर लाईन बनेगी। जेहि पखवारे तिथि बढ़े वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकें, महंगाई हट जाय॥ आकाश लक्षण-यत्र-तत्र बादल चाल कहीं बूंदा-बांदी तो कहीं अच्छी वर्षा हो सकती है। जम्मू-कश्मीर, हिमाचल आदि प्रदेशों में अच्छी वर्षा के योग बन रहे हैं। जालन्धर शहर में अगस्त नामक तारा २ सितम्बर को उदय हो जायेगा। आगस्तोदय के बाद वर्षा प्राय: बन्द हो जाया करती है।

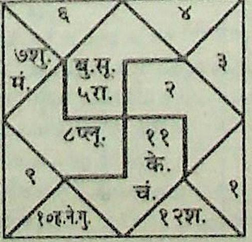

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१०	६	४	९	६	११	४	१०	९	९	७
२९	१८	२७	११	१९	१०	२४	२५	२५	११	३	९
२०	८	१७	४२	४	४१	५३	३३	३३	१४	३१	१८
४०	५३	४३	४८	१४	५३	३७	५१	५१	२	९	५३
५८	८१२	४०	४३	४	६९	४	३	३	१	०	१
२९	३६	२६	४५	३६	२६	१२	११	११	२६	३३	१८
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.	मा.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भाद्रपद शुक्ल तृतीयायां हरितालिका व्रतं सा चतुर्थी युता ग्राह्या। भाद्रपद शुक्ल पंचमी ऋषि पंचमी सा मध्याह्न व्यापिनी ग्राह्येति। भाद्रपद शुक्ल षष्ठी सूर्याख्या इहं सप्तमीयुता ग्राह्या। भाद्रपद शुक्लाष्टमी दूर्वाभिधा। भाद्रपद शुक्ल द्वादशी वामन जयंती सा उदय व्यापिनी ग्राह्या। भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी अनंताख्या सा मध्याह्न व्यापिनी ग्राह्या।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ आश्विन कृष्ण पक्ष-१२

दिनांक १७ सितम्बर से १ अक्टूबर, सन् १९९७ ई.
शरद् ऋतु, रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

दि. घप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	तारीखें अं. सि.	शा. भा.	प्र. आ.	मु. जअ	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.
३०/६०	१	बु	२६	२	२०	३९	उभा	५०	५०	२६	३४	गंड	३४	२	१९	५१	बा	१०	४०	१०	३०	17	२६	२	१४	मीन
२५	२	गु	२७	१०	१७	७	रे	४४	१०	२३	५५	वृ.	२३	५५	१५	४९	तै	१	३५	६	५३	18	२७	३	१५	मे. २३।५५
२०	३	शु	१९	१०	१३	५५	अ	३८	३२	२१	४०	ध्रु	१४	२७	१२	२	वि	१९	१०	१३	५५	19	२८	४	१६	मेष
१५	४	श	१२	२०	११	१२	भ	३४	१३	१९	५७	व्या	५/५८	५५/३५	८/२१	३८/४२	बा	१२	२०	११	१२	20	२९	५	१७	वृ. २५।४०
१०	५	र	७	३	९	५	कृ	३१	३७	१८	५५	वज्र	५२	५५	२७	२६	तै	७	३	९	५	21	३०	६	१८	वृष
५	६	चं	३	३५	७	४३	रो	३०	४८	१८	३६	सि	४८	४३	२५	४६	व	३	३५	७	४३	22	३१	७	१९	वृष
०	७	मं	२	२	७	७	मृ	३१	३०	१८	५४	व्य	४६	२	२४	४३	बव	२	२	७	७	23	आ	८	२०	मि. ६।४४
५५/५५	८	बु	२	३२	७	२०	आ	३४	५५	२०	१७	वरि	४४	५३	२४	१६	कौ	२	३२	७	२०	24	२	९	२१	मिथुन
५१	९	गु	५	३	८	२०	पुन	३९	४०	२२	११	परि	४५	०	२४	१९	गर	५	३	८	२०	25	३	१०	२२	क. १५।४१
४७	१०	शु	९	२	९	५६	पुष्य	४५	५३	२४	४०	शि	४६	१२	२४	४८	वि	९	२	९	५६	26	४	११	२३	कर्क
४३	११	श	१४	२०	१२	४	आ	५२	५०	२७	२८	सि	४८	१०	२५	३६	बा	१४	२०	१२	४	27	५	१२	२४	सिं. २७।२८
३८	१२	र	२०	२५	१४	३१	म	६०	०	-	-	सा	५०	३३	२६	३४	तै	२०	२५	१४	३१	28	६	१३	२५	सिंह
३४	१३	चं	२७	०	१७	९	म	०	२५	६	३१	शुभ	५३	१७	२७	४०	व	२७	०	१७	९	29	७	१४	२६	सिंह
३०	१४	मं	३३	३८	१९	४९	पूफा	८	२२	९	४३	शु	५५	५०	२८	४२	वि	०	१७	६	२९	30	८	१५	२७	क. १६।२९
२५	३०	बु	४०	०	२२	२२	उफा	१६	५	१२	४८	ब्र	५८	१२	२९	३९	च	६	५०	९	६	O	९	१६	२८	कन्या

तारीख	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	दै.रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय		अस्त	
17	श्री विश्वकर्मा पूजा, पू.फा. में बुध प्रवेश ४०।१५ (२२।२०), श्राद्ध में मध्याह्नकालA	५	०	१९	९	५/२४	५/२६	१८	५९	६	२९
18	भ. ५३।१० (२७।३१) से, पंचक समाप्त ४४।१० (२३।५५), द्वितीया का श्राद्ध	५	१	१७	४१	१५	२५	१९	४५	७	३७
19	भ. १९।१० (१३।५५) तक, चतुर्थी व्रत, तृतीया का श्राद्ध, वृश्चिक में मंगल ५७।२० (२९।११)	५	२	१६	१४	१५	२३	२०	३१	८	४४
20	भ. १२।२० (११।१२) तक, चतुर्थी उपरान्त पंचमी का श्राद्ध	५	३	१४	४९	१६	२२	२१	१८	९	४८
21	भ. ७।३ (९।५) तक, पंचमी का श्राद्ध उपरान्त षष्ठी का श्राद्ध करें	५	४	१३	२६	१६	२०	२२	६	१०	४९
22	भ. ३।३५ (७।४३) से ३२।४९ (१९।२५) तक, सायन तुला में रवि ५७।४७) B	५	५	१२	६	१७	१९	२२	५५	११	४९
23	महालक्ष्मी व्रत समाप्त, अष्टमी का श्राद्ध, जीवित्पुत्रिका श्राद्ध, राष्ट्रीय आश्विन्यारम्भ	५	६	१०	४७	१८	१८	२३	४६	१२	४४
24	कालाष्टमी, मातृ नवमी, सौभाग्य श्राद्धम्, अनु. में मंगल ४९।५७ (२६।२८), C	५	७	९	३१	१९	१७	-	-	१३	३६
25	भ. ३७।३ (२१।८) से, दशमी का श्राद्ध करें	५	८	८	१८	१९	१५	०	३८	१४	२३
26	भ. ९।२ (९।५६) तक, एकादशी का श्राद्ध, हस्त में सूर्य प्रवेश ५१।० (२६।४३)D	५	९	७	६	१९	१४	१	३१	१५	६
27	बुध अस्त पूर्व में ४४।४७ (२४।१५), इन्दिरा एकादशी व्रत सबका, श्री रामवरात E	५	१०	५	५७	२०	१३	२	२३	१५	४६
28	सन्यासी श्राद्धम्, प्रदोष व्रत, द्वादशी श्राद्ध, कन्या में बुध ४३।५७ (२३।५६)	५	११	४	५०	२१	१२	३	१५	१६	२४
29	भ. २७।० (१७।९) से, त्रयोदशी श्राद्धम्, कलियुगादि:	५	१२	३	४५	२१	११	४	६	१६	५९
30	भ. ०।१७ (६।२९) तक, अर्धवार्षिक लेखाबन्दी, चतुर्दशी श्राद्ध, शास्त्रादिहतानां श्राद्धं	५	१३	२	४२	२२	१०	४	५७	१७	३४
O	अक्टूबर मास १० ता. ३१, पितर विसर्जन अमावस्या श्राद्धं, सर्वपितृ ३०	५	१४	१	४१	२२	८	५	४८	१८	७

A व्यापिनी तिथि ग्राह्य, प्रतिपदा का श्राद्ध B(२९।२४), शरद सम्पात्, सूर्य का दक्षिण गोल में प्रवेश, सप्तमी का श्राद्ध Cविशाखा में शुक्र प्रवेश २।१५ (७।१३) D उ.फा. में बुध ४६।२० (२४।५१) E विशाल मेला आगरा

ग्र. स्प. आश्विन कृष्ण ८ बुधे प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये २४ सितम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	२	७	४	९	६	११	४	१०	९	९	७
७	१२	२	२२	१८	१९	२४	२५	२५	११	३	९
९	१६	४४	२	३६	५४	१९	८	८	३	२६	२९
३१	४२	३४	५३	६	५९	२५	२४	२४	३४	१७	१२
५८	७४५	४२	१८	२	६८	४	३	३	०	०	१
४७	३५	०	३९	४६	५१	२५	११	११	४३	२६	२०
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.	मा.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
३ उ.फा.	२ आर्द्रा	४ विशाखा	३ पू.फा.	३ श्रवण	४ स्वाती	३ रेवती	४ पू.फा.	२ पू.भा.	२ श्रवण	३ उ.षा.	२ अनु.

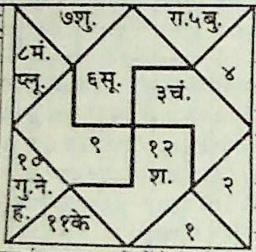

॥ फलम् ॥

इस मास में पांच गुरुवारों का फल नेष्ट तो पांच बुधवारों का फल श्रेष्ठ है, यथा- **बुधस्य पंचावारास्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च शुखसम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते।।** के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भौतिक संसाधनों का उत्तरोत्तर विकास होगा। प्रजा सौख्य समृद्धि का अहसास करेगी। दैनिक आवश्यक वस्तुएं समयोचित मिलती रहेंगी। पैदावार बढ़ने से सुभिक्ष होगा। कल कारखानों में उत्पादन अधिक होगा। शनि से भौम- यम (प्लूटो) का बनने वाला नव-पंचम योग और पांच गुरुवारों का अशुभ प्रभाव पश्चिम के देशों में कहीं राजविग्रह आन्तरिक कलह करवा सकता है। स्वदेश के संचालकों को सावधान रहना चाहिए। **तेजी-मन्दी विचार**- ता. २० सितम्बर वृश्चिक में पहुंचने पर मंगल ग्रह मूल द्रव्य विभिन्न पदार्थ, रसकश आदि में तेजी करेगा। किंवा राजाओं का कोप व्याप्त होगा। अर्थात् युद्धोन्मादी राष्ट्रनायक कुचक्र रचना में संलग्न रहेंगे-**यदा वृश्चिक राशिस्थो जायते च महीसुतः। महार्घं सर्व द्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्॥** इस पक्ष में मन्दी होने वाली वस्तुओं के संग्रह कर्ताओं को आगे चलकर लाभ मिलेगा। **आकाश लक्षण**-पक्ष के उत्तरार्ध में बुध अस्त के प्रभाव से मौसम खराब चलेगा। यदि कनागत प्रतपिदा नद जाय तो वर्षा की संभावना बनी रहती है। अतः सूर्य-शनि का समसप्तक योग किसी भी किस्म के उत्पात को जन्म दे सकता है। श्राद्ध में मध्यान्हकाल व्यापिनी तिथि ग्राह्य है।

कु. अमावस्या सूर्योदये १ अक्टूबर ❖ ग्र. स्प. आश्विन कृष्ण ३० बुधे प्रातः ५।३० बजे

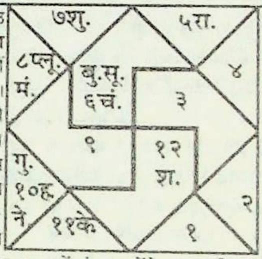

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	५	७	५	९	६	११	४	१०	९	९	७
१४	६	७	३	१८	२७	२३	२४	२४	१०	३	९
१	२३	३७	५९	२१	५३	४८	४६	४६	५८	२३	३८
४१	४३	४०	४७	१९	३४	३७	९	९	३३	४०	३३
५९	७९०	४१	१०७	१	६८	४	३	३	०	०	१
१	४३	५४	२५	१५	०	४५	११	११	२६	१५	४७
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.	मा.
उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
२ हस्त	३ उ.फा.	२ अनु.	३ उ.फा.	३ श्रवण	३ विशाखा	३ रेवती	४ पू.फा.	२ पू.भा.	२ श्रवण	३ उ.षा.	२ अनु.

पितृणां श्राद्धम् फलम्-आषाढ़ात्पंचमे पक्षे कन्या संस्थे दिवाकरे। यो वै श्राद्धम् नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे। तस्य सम्वत्सरं यावत्संतृप्ता पितरो ध्रुवं तस्य गृहे स्थिरो लक्ष्मी सन्तानम् तस्य वर्धते। **गजच्छाया**-आषाढ़ात्पंचमे पक्षे याऽष्टमी त्रयोदशी। गजच्छाया च तां पितृकर्मणि गयातुल्या उत्तम्।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ आश्विन शुक्ल पक्ष-१३

दिनांक २ से १६ अक्टूबर, सन् १९९७ ई.
शरद् ऋतु, रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।

दि.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		तारीखें				चन्द्र संचार		दै.रवि स्पष्ट				सू.उ.अ.		चन्द्रोदय			
घप	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	अं. अ.	शा. आ	प्र. आ	मु. जअ	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.		रा.	अं.	क.	वि	उ	अ	उदय		अस्त	
२०/२०	१	गु	४५	५३	२४	४४	ह	२३	२५	१५	४५	ऐं	६०	०	-	-	किं	१२	५५	११	३३	2	१०	१७	२९	तु. २९।७	शारदीय नवरात्रारम्भ, मातामह श्राद्ध, अग्रसेन जयंती, दुर्गा पूजा हेतु घटस्थापनं, A	५	१५	०	४२	६/२१	६/५	६	३९	१८	४१
१५	२	शु	५१	२	२६	४८	चि	३०	७	१८	२६	ऐं	०	५	६	२५	बा	१८	२७	१३	४६	3	११	१८	३०	तुला	चन्द्र दर्शन मुहूर्त ३० साम्यार्घ:	५	१५	५९	४६	२३	५	७	३१	१९	१६
११	३	श	५५	१३	२८	२९	स्वा	३५	५५	२०	४६	वै	१	२०	६	५६	तै	२३	५	१५	३८	4	१२	१९	जउ	तुला	जमादि उस्सानी मु. मास ६, हस्त में बुध प्रवेश १९।१० (१४।४)	५	१६	५८	४१	२४	४	८	२३	१९	५४
७	४	र	५८	१५	२९	४३	वि	४०	४५	२२	४३	वि	१	५०	७	९	व	२६	४३	१५	६	5	१३	२०	२	वृ. १६।१५	भ. २६।४३ (१७।६) से ५८।१५ (२९।४३) तक, विनायक चतुर्थी व्रत, अनु. में B	५	१७	५७	५८	२५	४	९	१६	२०	३४
३	५	चं	६०	०	-	-	अनु	४४	३०	२४	१३	प्री	१	३५	७	३	बव	२९	१२	१८	६	6	१४	२१	३	वृश्चिक	उपाङ्ग ललिता पंचमी व्रत, व. रेवती २ शनि ५७।४५	५	१८	५७	८	२५	२	१०	१०	२१	१८
२८/२८	५	मं	०	७	६	२९	ज्ये	४६	५०	२५	१०	आ	०/२८	२०/०	५/२९	३४/३८	बा	०	७	६	२९	7	१५	२२	४	ध. २५।१०	वक्री रेवती नक्षत्र, द्वितीय चरण शनि (५।३२)	५	१९	५६	१९	२६	१	११	४	२२	५
५३	६	बु	०	३८	६	४१	मूल	४७	५३	२५	३५	शो	५४	३३	२८	१५	तै	०	३८	६	४१	8	१६	२३	५	धनु	भ. ५९।४० (३०।१८) से, नवपद ओली प्रारम्भ, जैन मुनि पुष्करजी ज., C	५	२०	५५	३२	२६	[illegible]	११	५८	२२	५४
०	७	बु	५९	४०	३०	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	००	सप्तमी क्षय: H कार्तिक मास स्नानारम्भ:, मार्गी हर्शल १३।० (११।१४)	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
४८	८	गु	५७	१३	२९	१९	पूषा	४७	२०	२५	२२	अति	५०	२५	२६	३६	वि	२८	२५	१७	४८	9	१७	२४	६	धनु	भ. २८।२५ (१७।४८) तक, श्री सरस्वती देवी पूजन, गुरु मार्गी १४।३८ (११।१७)P	५	२१	५४	४६	२६	५७	१२	५१	२३	५३
४३	९	शु	५३	५	२७	४१	उषा	४५	१५	२४	३३	सु	४३	५०	२३	५९	बा	२५	७	१६	३०	10	१८	२५	७	म. ७।११	मन्वादि:, महानवमी, शस्त्र पूजा, नवरात्र समाप्त, सरस्वती बलिदानम् चित्रा में सूर्य D	५	२२	५४	२	२७	५६	१३	४२	-	-
३८	१०	श	४७	३२	२५	२९	श्र.	४१	४५	२३	१०	धृ	३६	४०	२१	८	तै	२०	१८	१४	३५	11	१९	२६	८	मकर	चित्रा में बुध १८।५० (१४।०), विजया दशमी, रावण दाह, दशहरा मेला E	५	२३	५३	२०	२८	५५	१४	३२	०	५१
३३	११	र	४०	४७	२२	४८	ध	३७	२	२१	१८	शूल	२८	३०	१७	५३	व	१४	१०	१२	९	12	२०	२७	९	कु. १०।१५	भ. १४।१० (१२।९) से ४०।४७ (२२।४८) तक, पंचक प्रारम्भ ९।२५ (१०।१५),F	५	२४	५२	४०	२९	५४	१५	१९	१	५४
२८	१२	चं	३३	०	१९	४२	श	३१	१०	१८	५८	गंड	१९	३०	१४	१८	बव	६	५२	९	१५	13	२१	२८	१०	कुम्भ	सोम प्रदोष व्रत, ज्येष्ठा में मंगल प्रवेश ४०।२७ (२२।४१)	५	२५	५२	२	३०	५३	१६	५	२	५९
२४	१३	मं	२४	३०	१६	१९	पूभा	२४	३७	१६	२२	वृ	९/५५	५५/४०	१०/३०	२५/२३	तै	२४	३०	१६	१९	14	२२	२९	११	मीन ११।१	P भद्रकाल जयंती, श्री अन्नपूर्णा परिक्रमा	५	२६	५१	२६	३१	५३	१६	४९	४	४
२०	१४	बु	१५	४२	१२	४९	उभा	१७	४५	१३	३८	व्या	४९	२७	२६	१९	व	१५	४२	१२	४९	15	२३	३०	१२	मीन	भ. १५।४२ (१२।४९) से ४१।१९ (२३।४) तक, सत्यव्रत, शरत्पूर्णिमा, कोजागरी G	५	२७	५०	५२	३२	५२	१७	३३	५	१२
१५	१५	गु	६	५५	९	१८	रे.	१०	५८	१०	५५	ह	३९	३३	२२	२१	बव	६	५५	९	१८	16	२४	३१	१३	मे. १०।५५	पंचक समाप्त १०।५८ (१०।५५), स्नानादि पूर्णिमा, महर्षि वाल्मीक जयंती, ओली पूर्ण,H	५	२८	५०	१९	३२	५०	१८	१९	६	१८

A श्री गांधी तथा लालबहादुर शास्त्री जयंती, वृश्चिक में शुक्र प्रवेश ४९।१५ (२६।५) B शुक्र प्रवेश ४७।२ (२५।१४) C श्री सरस्वती देवी आवाहनम्, वायु सेना दिवस D प्रवेश २४।२ (१६।४), नेपच्यून मार्गी २८।२७ (१७।५०) E सरस्वती विसर्जन, बौद्धावतार, अपराजिता व शमी पूजन, सीमोल्लंघन, नीलकंठ दर्शन, माधवाचार्य जयं. F पापांकुशा एकादशी व्रत (सबका), श्रीराम भरत मिलाप, अनु. ३ प्लूटो ५७।२० (२९।२५) G व्रत, आकाश दीपदान, तुला में बुध प्रवेश ४८।० (२५।४४), मेला देववन्द

ग्र. स्प. आश्विन शुक्ल ८ गुरौ प्रातः ५।३० बजे ❖ लु. अष्टमी सूर्योदये ९ अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	८	७	५	९	७	११	४	१०	९	९	७
[illegible]	१५	१३	१८	१८	६	२३	२४	२४	१०	३	९
५४	२९	१६	१२	१५	५३	१०	२०	२०	५५	२२	५२
४६	२९	३४	५४	३४	१४	४१	४३	४३	२०	३२	४५
५९	८१४	४३	१०५	०	६७	४	३	३	०	०	१
२६	१२	८	५१	२०	६	४४	११	११	१०	२	४७
मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.	व.	व.	मा.
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

॥ फलम् ॥

मास में पांच गुरुवारों का फल नेष्ट है- यत्रमासे पंचवारा जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धञ्च जायते॥ के अनुसार पश्चिम के देश अरब, इजरायल, ईरान इराक, बर्मा, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि अनेक देशों में आन्तरिक कलह जारी रहेगा। कहीं युद्धोत्पाती काले बादल मडराते नजर आयेंगे। अन्य ग्रह योगायोग के प्रभाव से अन्तर्राष्ट्रीय जगत में शान्ति परिचर्चायें चलेंगी। सुरक्षा उपायों पर सोचने के लिए प्रत्येक देश की सरकारें विवश हो जायेंगी। भारत सरकार को [illegible] के छुपे सापों से सावधान रहना चाहिए। पांच बुधवारों का फल अच्छा होने से वसुन्धरा पर चारों प्रकार के जीव मात्र प्राणियों की बढ़ोत्तरी होगी। तेजी मन्दी विचार- आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया शुक्रवार में नवीन चन्द्रमा के दर्शन मु. ३० समभाव के सूचक हैं। लेकिन पिता-पुत्र का सम सप्तक योग शनैः शनैः भावों में बढ़ोत्तरी होने का संकेत देता है। अनिश्चितता के माहौल में व्यापारी वर्ग को बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए। अपनी वित्तीय सामर्थ्यानुसार ही व्यापार में धन लगाना चाहिए। आकाश लक्षण- ग्रह राशि नक्षत्र परिवर्तन तथा मण्डल समागम होने से कभी आकाश स्वच्छ तो किंवा यत्र-तत्र बादल चाल तीव्र वायु वेग के साथ हल्की वर्षा होगी। सुदूर पर्वतीय प्रदेशों से तापमान की कमी होने लगेगी। सर्द गर्म की मिलीजुली प्रतिक्रिया होने के कारण नाना प्रकार के रोगों की वृद्धि होगी।

कु. पूर्णिमा सूर्योदये १६ अक्टूबर ❖ ग्र. स्प. आश्विन शुक्ल १५ गुरौ प्रातः ५।३० बजे

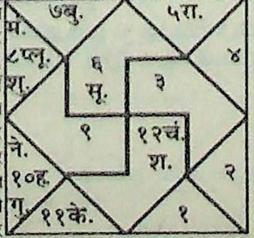

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	११	७	६	९	७	११	४	१०	९	९	७
२८	२६	१८	०	१८	१४	२२	२३	२३	१०	३	१०
५०	३७	१८	१६	२२	३७	३७	५८	५८	५४	२३	५
११	२९	३२	१०	२०	२९	३३	२७	२७	३०	३०	५६
५९	८१८	४३	१०१	१	६६	४	३	३	०	०	१
२९	९	३४	२६	१५	०	३६	११	११	३	१५	५४
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	व.	मा.	मा.
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

आश्विन शुक्ल प्रतिपदायां नवरात्रारम्भः अत्रैक घटस्थापनं दुर्गा पूजननं च कार्यम्। घटस्थापने विशेष युक्तः। वैधृतौ पुत्रनाशः स्याच्चित्रायां धन नाशनम्।
प्रातपद्याश्विने मासि भवद् वैधृति चित्रयोः। आद्यपादौ परित्यज्य प्रारम्भः नवरात्रकम्। आश्विन शुक्ल दशमी विजयाख्या एषां तु प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या।

CC-0. In Public Domain. Kurukshetra ... Nangal Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ कार्तिक कृष्ण पक्ष-१४

दिनांक १७ से ३१ अक्टूबर, सन् १९९७ ई.
शरद् ऋतु, रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले

घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

दि. वप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	तारीखें अं. अ.	शा. आ	प्र. का	मु. जउ	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	विवरण	दै.रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय		अस्त	
०	१	गु	५८	२५	२१	५४	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	००	प्रतिपदा क्षय: B चन्द्रोदय ३५।२० (२०।४३)	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२२	२	शु	५०	४७	२६	५२	अ	४/५८	२७/५७	८/३०	२०/८	वज्र	३०	१०	१८	३७	तै	२४	३५	१६	२३	17	२५	का	१४	मेष	ज्येष्ठा में शुक्र प्रवेश ४८।४५ (२६।३), अशून्य शयन व्रत, तुला में सूर्य प्रवेश ७।४० A	५	२९	४९	४८	[illegible]	[illegible]	१९	४	७	२६
७	३	श	४४	४०	२४	२६	कृ	५४	२२	२८	२३	सि	२१	४०	१५	१४	व	१७	४२	१३	३९	18	२६	२	१५	वृ. ११।४२	भ. १७।४२ (१३।३९) से ४४।४० (२४।२६) तक	६	०	४९	१९	३४	४९	१९	५३	८	३१
३	४	र	४०	०	२२	[illegible]	रो	५२	१०	२७	२७	व्य	१४	१५	१२	१७	बव	१२	१७	११	३०	19	२७	३	१६	वृष	स्वाती में बुध का प्रवेश ४६।२२ (२५।८), करक चतुर्थी, दशरथ चतुर्थी B	६	१	४८	५३	३५	४८	२०	४३	९	३३
[illegible]	५	चं	३७	१२	२१	२९	मृ	५१	३०	२७	१२	वरि	८	२३	९	५७	कौ	८	३५	१०	२	20	२८	४	१७	मि १५।१९	पद्मप्रभु जयन्ती (जैन)	६	२	४८	२९	३६	४८	२१	३६	१०	३५
५५	६	मं	३६	३०	२१	१३	आ	५२	५५	२७	४७	परि	४	०	८	१३	गर	६	५०	९	२१	21	२९	५	१८	मिथुन	भ. ३६।३० (२१।१३) से,	६	३	४८	७	३७	४७	२२	२९	११	२७
५०	७	बु	३८	५	२१	५१	पुन	५६	२३	२९	१०	शि	२	२२	७	१०	वि	७	१८	९	३२	22	३०	६	१९	क. २२।४८	भ. ७।१८ (९।३२) तक	६	४	४७	४७	३७	४५	२३	२२	१२	१८
४५	८	गु	४१	२२	२३	१०	पुष्य	६०	०	-	-	सि	०	२७	६	४८	बा	९	४५	१०	३१	23	का	७	२०	कर्क	सायन वृश्चिक में सूर्य प्रवेश २०।१८ (१४।४४), राष्ट्रीय कार्तिक प्रारम्भ, हेमन्त C	६	५	४७	३०	३७	४३	२४	१५	१३	४
४०	९	शु	४६	२३	२५	११	पुष्य	०	५२	६	५९	सा	०	५०	६	५८	तै	१३	५०	१२	१०	24	२	८	२१	कर्क	A(९।३७), संक्रांति मुहुर्ती १५ सौर कार्तिक मास प्रारम्भ	६	६	४७	१४	३८	४२	-	-	१३	४५
३५	१०	श	५२	३	[illegible]	४०	आ	८	२८	१०	२	शुभ	२	२०	७	३५	व	१९	२५	१४	२५	25	३	९	२२	सिं. १०।२	भ. १९।२५ (१४।२५) से ५२।३२ (२७।४०) तक	६	७	४१	१	३९	४१	१	७	१४	२४
३०	११	र	५९	१३	३०	२१	म	१६	३	१३	५	शु	४	३८	८	३१	बव	२५	५०	१७	०	26	४	१०	२३	सिंह	रमा एकादशी व्रत स्मार्त, गोत्रिरात्र प्रारम्भ:, नारी कर्तृकंविधि	६	८	४६	५१	४०	४०	१	५९	१४	५९
२६	१२	चं	६०	०	-	-	पूफा	२३	५५	१६	१४	ब्र	७	१५	९	३४	कौ	३२	३३	१२	४१	27	५	११	२४	क. २३।१	रमा एकादशी व्रत निम्बार्कानाम्, सवत्सा गोपूजन	६	९	४६	४२	४०	३८	२	५२	१५	३४
२२	१२	मं	५	५२	९	२	उफा	३१	३७	१९	२०	ऐं	९	४२	१०	३४	तै	५	५२	९	२	28	६	१२	२५	कन्या	भौम प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, धन्वन्तरि जयन्ती, यम प्रीतियर्थ दीपदानं, D	६	१०	४६	३६	४१	३७	३	४३	१६	७
१८	१३	बु	१२	७	११	३२	ह	३८	४५	२२	१२	वैं	११	५३	११	२७	व	१२	७	११	३३	29	७	१३	२६	कन्या	भ. १२।७ (११।३३) से ४४।४९ (२४।३८) तक, नरक चौदश, रूप १४, E	६	११	४६	३२	४२	३६	४	३४	१६	४१
१४	१४	गु	१७	३०	१३	४३	चि	४५	०	२४	४३	वि	१३	२२	१२	४	श	१७	३०	१३	४३	30	८	१४	२७	तु. ११।२९	दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजन, काल रात्रि कमला जयंती, निशीथ में महाकाली पूजा, F	६	१२	४६	३०	४३	३६	५	२५	१७	१५
१०	३०	शु	२१	५५	१५	३०	स्वा	५०	१८	२६	५१	प्री	१४	१०	१२	२४	ना	२१	५५	१५	३०	31	९	१५	२८	तुला	उदया अमापुण्यं, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, बलि पूजा, सरदार पटेल जयंती, स्वा. G	६	१३	४६	२९	४४	३५	६	१८	१७	५३

C ऋतु प्रारम्भ, कालाष्टमी, अहोई अष्टमी चन्द्रोदय ४४।५ (२४।१५), स्वाति में सूर्य प्रवेश ४९।४० (२६।२९) D गोत्रिरात्र व्रत समाप्त, विशाखा में बुध ६।१२ (९।१०), पू.फा. ३ राहु पू.भा. १ केतु २।० (७।२१) E सभ्यङ्ग स्नान, श्री हनुमान जयंती, यमदीपदानम्, यम पंचकारम्भ: F दीपदानम्, महर्षिदयानन्द बोधोत्सव, मूल धनु में शुक्र प्रवेश १७।४० (१३।४७) G रामतीर्थ व महावीर निर्वाण दि., मूल धनु में मंगल ५४।१२ (२८।२५), इन्द्राजी नि. दिवस

ग्र. स्प. कार्तिक कृष्ण ८ गुरौ प्रात: ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदय २३ अक्टूबर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	३	७	६	९	७	११	४	१०	९	९	७
५	३	२३	११	१८	२२	[illegible]	२३	२३	१०	३	१०
४७	३०	२३	४८	३७	१३	५	३६	३६	५६	२६	२०
३०	२८	३२	२८	४३	४	३३	११	११	३७	६	२
५९	[illegible]	४४	९७	३	६४	४	३	३	०	०	२
४४	५२	८	०	१२	४३	३०	११	११	२६	३३	१०
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-

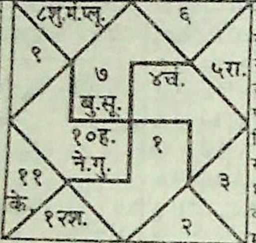

॥ फलम् ॥

इस मास में पांच शुक्रवारों का फल इस प्रकार लिखा है-शुक्रस्य पंचवारास्तु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धि: सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥ के अनुसार संसार में चारों प्रकार के प्राणियों की वृद्धि होगी। भौतिक सुख सुविधायें बढ़ेंगी। जनता राहत महसूस करेगी। सर्वहारा वर्ग में सोहार्दपूर्ण मैत्री की भावना पनपेगी। पांच गुरुवारों का फल नेष्ट होने से विश्व के किसी भाग में अराजकता फैलेगी। किंवा गृह युद्ध की सम्भावना बनेगी। भारत सरकार को पड़ौसी राष्ट्रों से सचेत रहना चाहिए। शनि को छोड़कर अन्य सभी ग्रह राहु केतु के एक ओर जनवरी १९९८ तक चलेंगे। यह एक प्रकार से काल सर्प योग तुल्य कष्टकारक योग वसुन्धरा के किसी न किसी भाग में कोई ना कोई उत्पात करता ही रहेगा। तेजी मन्दी विचार-पक्षारम्भ में तुला संक्रांति मु. १५ लगभग सभी वस्तुओं के भावों में तेजी की सूचक है। तुला राशि में सूर्य-बुध का योग समर्थकारक होने के साथ-साथ राजनैतिक पार्टियों में कलह करवाता है तो कहीं जल की अच्छी वर्षा भी होती है। यथा-वणिजस्थे सोम पुत्रे जल वर्षन्ति वारिद:। सर्वसस्य समर्घत्वं राजान: कलह: प्रिया:॥ आकाश लक्षण-इस पक्ष में आकाश प्राय: स्वच्छ रहेगा। यदि उपरोक्त योग के प्रभाव से वर्षा हो जहां-तहां मौसम खराब हो, अथवा वर्षा हो तो चल रहे सामयिक भावों में प्रतिकूल रुख बनेगा। पवन अति मन्दगति से चलेगा। धीरे-धीरे तापमान कम होने लगेगा। पर्वतीय प्रदेशों में ठंड बढ़ने लगेगी।

कु. अमावस्या सूर्योदये ३१ अक्टूबर ❖ ग्र. स्प. कार्तिक कृष्ण ३० शुक्रे प्रात: ५।३० बजे

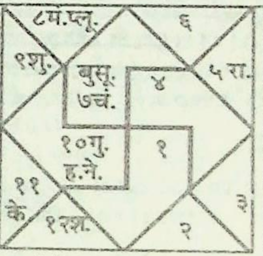

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	६	७	६	९	८	११	४	१०	९	९	७
१३	९	२९	२४	१९	०	२१	२३	२३	११	२	१०
४६	४	१७	२५	७	४१	३०	१०	१०	१	३०	३७
२९	१९	१३	५३	१९	२९	३४	४५	४५	३०	३०	२१
६०	[illegible]	४४	९३	४	६१	४	३	३	१	०	२
१	५६	४४	१७	१२	०	१२	११	११	४	५४	१
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी करक चतुर्थी सा चन्द्रोदय व्यापिनी ग्राह्येति। अष्टम्यां अहोई व्रतं विधेयम् अत्र सायंकाल व्यापिनी ग्राह्येति। कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी धनाख्या इयं तु सायंकाल व्यापिनी ग्राह्येति। चतुर्दशी नरकाभिधा सा चन्द्रोदय व्यापिनी ग्राह्या। कार्तिकामायां लक्ष्मी पूजनं दीपदानं च कार्यम्। उक्तम् च कार्तिक कृष्णामायां तु सायंकाले समागते।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ कार्तिक शुक्ल पक्ष-१५

दिनांक १ से १४ नवम्बर, सन् १९९७ ई.
हेमन्त ऋतु, रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले

दि.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		तारीखें अं.	शा.	प्र.	मु.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा.	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है।	दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर दैरवि स्पष्ट				सू.उ.अ.		चन्द्रोदय			
घप	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	नव	का.	का.	जउ	रा.घं.मि.	घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	रा.	अं.	क.	वि	उ	अ	उदय		अस्त	
२७/६	१	श	२५	१०	१६	४९	वि	५४	५७	२८	४४	आ	१४	५	१२	२३	बव	२५	१०	१६	४९	1	१०	१६	२९	वृ. २२।१६	गोसंवर्धन सप्ताह शुरू, नवम्बर मास ११ ता. ३०, द्यूत क्रीड़ा दिवस	६	१४	४६	३०	६/४४	५/३५	७	१०	१८	३०
२	२	र	२७	२३	१७	४२	अनु	५७	३८	२९	४४	सौ	१३	१०	१२	१	कौ	२७	२३	१७	४२	2	११	१७	३०	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन मु. ३०, भ्रातृ द्वितीया टीका, कालिन्दी स्नान, यम पंचक समाप्त, श्री विश्वकर्मा जयन्ती	६	१५	४६	३४	४५	३४	८	१४	१९	१४
२६/५८	३	चं	२८	३३	१८	११	ज्ये	५९	४१	३०	४०	शो	११	२७	११	२१	गर	२८	३३	१८	११	3	१२	१८	रम्ज	वृश्चिक	भ. ५८।३५ (३०।१२) से, वृश्चिक में बुध का प्रवेश ३५।० (२०।४६), रजब मु. A	६	१६	४६	३९	४६	३३	९	०	२०	०
५८	४	मं	२८	३७	१८	१४	मूल	६०	०	-	-	अति	८	५५	१०	२१	वि	२८	३७	१८	१४	4	१३	१९	२	ध. ६।४०	भ. २८।३७ (१८।१४) तक, बुध उदय पश्चिम दिशा में १।४७ (७।३०)	६	१७	४६	४६	४७	३२	९	५३	२०	५२
५४	५	बु	२७	५५	१७	५८	मूल	१	७	७	१५	सु	५	३५	९	२	बा	२७	५५	१७	५८	5	१४	२०	३	धनु	सौभाग्य पंचमी, पाण्डव ज्ञान पंचमी, अनु. में बुध प्रवेश ४८।० (२६।०)	६	१८	४६	५५	४८	३१	१०	४६	२१	४६
५०	६	गु	२५	४२	१७	६	पूषा	०	४८	७	८	धृ	१/५६	२०/३८	७/२९	२१/२८	तै	२५	४२	१७	६	6	१५	२१	४	म. १३।४	सूर्य षष्ठी डाला छटि, विशाखा में सूर्य प्रवेश ९।४० (१०।४१)	६	१९	४७	५	४९	३१	११	३६	२२	४४
४०	७	शु	२२	५०	१५	५८	उषा	०/५८	२/७	६/३०	५१/५	गंड	५०	४७	२७	९	व	२२	५०	१५	५८	7	१६	२२	५	मकर	भ. २२।५० (१५।५८) से ५०।४८ (२७।९) तक, कल्पादि: सहस्त्रार्जुन ज., B	६	२०	४७	१७	५०	३०	१२	२६	२३	४४
३६	८	श	१८	४७	१४	२२	ध.	५५	१५	२८	५७	वृ	४४	८	२४	३०	बव	१८	४७	१४	२२	8	१७	२३	६	कु. १७।३१	पंचक प्रारम्भ २६।४० (१७।३१), गोपाष्टमी, गोपूजा, यव अनादि दान	६	२१	४७	३१	५१	३०	१३	१३	-	-
३२	९	र	१३	४८	१२	२३	श	५१	२०	२७	२४	ध्रु	३६	४५	२१	३४	कौ	१३	४८	१२	२३	9	१८	२४	७	कुम्भ	कृतयुगादि: कूष्माण्ड नवमी, अक्षय नवमी, श्रवण ४ गुरु प्रवेश ४४।४० (२४।४४)	६	२२	४७	४५	५२	२९	१३	५८	०	४६
२९	१०	चं	७	५५	१०	३	पूभा	४६	३७	२५	३२	व्या	२८	४०	१८	२१	गर	७	५५	१०	३	10	१९	२५	८	मी. २०।१	भ. ३४।३६ (२०।४३) से, देव प्रबोधिनी एकादसी व्रत स्मार्त, भीष्म पंचक प्रारम्भ	६	२३	४८	१	५३	२९	१४	४०	१	५०
२५	११	मं	१	१७	७	२५	उभा	४१	२५	२३	२८	ह	२०	५	१४	५६	वि	१	१७	७	२५	11	२०	२६	९	मीन	भ. १।१७ (७।२५)) तक, प्रबोधिनी एकादशी व्रत वैष्णव, तुलसी विवाह C	६	२४	४८	१९	५४	२८	१५	२५	२	५२
०	१२	मं	५४	७	२८	३३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	००	द्वादशी क्षय: D जैन दिवाकर चौथ ज.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२२	१३	बु	४६	३२	२५	३१	रे	३५	४८	२१	१३	वज्र	११	७	११	२१	कौ	२०	२०	१५	२	12	२१	२७	१०	मे. २१।१३	पंचक समाप्त ३५।४८ (२१।१३), प्रदोष व्रत, पू.षा. में शुक्र ३६।२५ (२१।२४), D	६	२५	४८	३८	५४	२७	१६	६	३	५७
१९	१४	गु	३९	५	२२	३३	अ	३०	५	१८	५७	सि	१/५५	५५/५०	७/२८	४४/०	गर	१२	४८	१२	२	13	२२	२८	११	मेष	भ. ३९।५ (२२।३३) से, श्री वैकुण्ठ चतुर्दशी, काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस	६	२६	४८	५९	५५	२६	१६	५२	५	३
१६	१५	शु	३२	२	१९	४५	भ	२४	४७	१६	५१	वरि	४४	१५	२४	३८	वि	५	३२	९	९	14	२३	२९	१२	वृ. २२।२३	भ. ५।३२ (९।९) तक, सत्यव्रत कार्तिकी पूर्णिमा, बाल दिवस मेला दिल्ली त्रिपुरोत्सव E	६	२७	४९	२१	५६	२६	१७	३८	६	९

A मास ७ प्रारम्भ, मोईनुद्दीन चिस्ती सज्जरी अलह के मजार पर अजमेर में उर्स मेला शुरू B अष्टाह्निक जैन व्रतारम्भ: C चातुर्मास्य यमनियमादि समाप्त, त्रिरात्रि समा. E मेला पुष्करराज., रेणुका तीर्थ, गढ़ गंगा, श्रीनानक जयंती, निम्बार्काचार्य जयंती, भीष्म पंचक समाप्त, विशाल मेला सोनपुर नगर

ग्र. स्प. कार्तिक शुक्ल ८ शनौ प्रात: ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये ८ नवम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	९	८	७	९	८	११	४	१०	९	९	७
२१	२२	५	६	१९	८	२०	२२	२२	११	३	१०
४३	५९	१५	३३	४८	४७	५८	४५	४५	१०	३७	५५
३१	३७	४५	२९	४८	१६	४५	१८	१८	१६	४२	३
६०	[illegible]	[illegible]	८७	६	५८	३	३	३	१	०	२
१४	४९	८	४८	१७	४८	२६	११	११	६	५४	१३
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

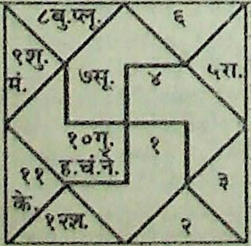

॥ फलम् ॥

इस पक्ष में बनने वाले ग्रह योग मध्यम फलदायक है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में विश्व शान्ति के उपायों पर विचार किया जायेगा। कुछ देश अपनी-अपनी धाक जमाने की चेष्टा करने में संलग्न रहेंगे। शान्तिप्रिय देश अपने प्रयास में सफल नहीं होंगे। कोई देश किसी देश को हथियार सप्लाई करेगा। जिसका विरोध भी अच्छा खासा होगा। भारतीय सत्तारूढ़ दल की नैय्या डगमगाने लगेगी। सरकारी मशीनरी अनिच्छापूर्ण कार्य करेगी। चोर, उचक्के, लफंगे, तस्कर असमाजिक तत्व बालात्कारी मन मर्जी करेंगे। उद्योग-धन्धों में हड़ताल, तोड़फोड़ के कारण उत्पादन कम होगा। कृषिकार्यों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। तेजी-मन्दी विचार-कार्तिक शुक्ल द्वितीया रविवार में नवीन चन्द्रमा के दर्शन मुहूर्त ३० होने के कारण चालू मार्किट के भावों में किंचित घटा-बढ़ी होने के बाद स्थिर लाईन बनेगी। इस मास में कृष्ण द्वादशी की वृद्धि होकर शुक्ल द्वादशी की ही हानि हुई है जिसका फल शास्त्रकारों ने ऐसा लिखा है-कृष्ण पक्ष की तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाय।एक वस्तु तो क्या बढ़े, सभी वस्तु बढ़ जाय॥ अत: संसार में भौतिक पदार्थों की बढ़ोत्तरी होगी। आकाश लक्षण— इस पक्ष में आकाश प्राय स्वच्छ रहेगा। सुदूर पर्वतीय प्रदेशों में बादल चाल, कहीं हल्की वर्षा होगी। सर्दी बढ़ती जायेगी। हिमाचल प्रदेश, जम्मू, कश्मीर, तिव्वत, नेपाल, लद्दाख में अधिक ठंड से क्षति सम्भव है।

कु. पूर्णिमा सूर्योदये १४ नवम्बर ❖ ग्र. स्प. कार्तिक शुक्ल १५ शुक्रे प्रात: ५।३० बजे

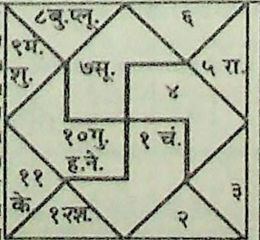

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	०	८	७	९	८	११	४	१०	९	९	७
२७	१९	९	१५	२०	१४	२०	२२	२२	११	३	११
४९	४७	४६	१७	२६	३५	३७	२६	२६	१८	४४	९
२१	४०	४३	१७	३२	१६	३३	१४	१४	५३	१६	६
६०	७१	४५	८४	७	५६	३	३	३	१	१	१
२३	३४	१७	४८	१७	२४	०	११	११	३५	१२	२४
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदि गोवर्धन-पूजा विधेया अत्रैव चौदयिकी ग्राह्येति। कार्तिक शुक्ल द्वितीया यमाभिधा सा परमयुतैव ग्राह्येति। कार्तिक शुक्लाष्टमी गोपाख्या सा प्रदोष व्यापिनी ग्राह्येति।
कार्तिक शुक्ल नवम्यां कुष्माण्ड दान कर्तव्यमिति। कार्तिक शुक्लैकादश्यां प्रभोरुत्थापन कार्यमिति। उत्तिष्ठेति गोविन्द त्यजेन्निद्रां जगत्पते:। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१६

दिनांक १५ से ३० नवम्बर सन् १९९७ ई.
हेमन्त ऋतु, रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले

घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

दि. घप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	तारीखें अं. नव	शा. का.	प्र. का.	मु. रु.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	विवरण	दै.रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय घं	मि	अस्त घं	मि
[illegible]	१	श	२५	५५	१७	१८	कृ	२०	२०	१५	४	परि	३६	२८	२१	३१	कौ	२५	५५	१७	१८	15	२४	३०	१३	वृष	ज्येष्ठा में बुध (५।२०), जन्मदिन हजरत अली	६	२८	४१	४४	[illegible]	[illegible]	१८	३०	७	१२
१०	२	र	२०	५५	१५	११	रो	१६	५५	१३	४३	शि	२१	३७	१८	४८	गर	२०	५५	१५	११	16	२५	मा.	१४	मि. २५।११	भ. ४१।३ (२६।३४) से, अशून्य शयन द्वितीया, वृश्चिक में सूर्य प्रवेश ६।१५ (९।२७), A	६	२९	५०	१०	५७	२५	१९	२२	८	१४
६	३	चं	१७	१०	१३	५०	मृ	१५	५	१३	०	सि	२४	५	१६	३६	वि	१७	१०	१३	५०	17	२६	२	१५	मिथुन	भ. १७।१० (१३।५०) तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, सौभाग्य सुन्दरी व्रत	७	०	५०	३७	५८	२४	२०	१५	९	१३
३	४	मं	१५	५७	१३	२१	आ	१५	७	१३	२	सा	२०	७	१५	१	बा	१५	५७	१३	२१	18	२७	३	१६	मिथुन	पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में मंगल ३८।५७ (२२।३३)	७	१	५१	५	५८	२३	२१	१०	१०	७
[illegible]	५	बु	१६	३०	१३	३५	पुन	१७	८	१३	५०	शुभ	११	१७	१४	४२	तै	१६	३०	१३	३५	19	२८	४	१७	क. ७।३६	इन्द्राजी ज., अनु. में सूर्य २४।३७ (१६।५०), श्रीसुविधा नाथ जयन्ती व दीक्षा दिवस जैन	७	२	५१	३७	५९	२३	२२	४	१०	५६
५४	६	गु	१९	८	१४	३९	पु	२१	१०	१५	२८	शु	१६	५०	१३	४४	व	११	८	१४	३९	20	२९	५	१८	कर्क	भ. १९।८ (१४।३९) से ५१।२० (२७।३२) तक	७	३	५२	९	[illegible]	२३	२२	५९	११	४०
५१	७	शु	२३	३३	१६	२६	आ	२६	५०	१७	४५	ब्र	१७	२३	१३	५८	बव	२३	३३	१६	२६	21	३०	६	१९	सिं. १७।४५		७	४	५२	४३	१	२३	२३	५१	१२	२०
५१	८	श	२९	१७	१८	४५	म	३३	४७	२०	३३	ऐं	१८	५५	१४	३६	कौ	२९	१७	१८	४५	22	मा	७	२०	सिंह	श्री महाकाल भैरवाष्टमी, दर्शन पूजन, अष्टकाश्राद्ध, सायन धनु में रवि १३।२ B	७	५	५३	१८	२	२२	-	-	१२	५७
४९	९	र	३५	५२	२१	२४	पूफा	४१	३०	२३	३९	वै	२१	१२	१५	३२	तै	२	३२	८	४	23	२	८	२१	सिंह		७	६	५३	५८	३	२१	०	४२	१३	३३
४६	१०	चं	४२	३८	२४	७	उफा	४९	१५	२६	४६	वि	२३	४०	१६	३२	व	९	१३	१०	४५	24	३	९	२२	क. ६।२६	भ. ९।१३ (१०।४५) से ४२।३८ (२४।७) तक, श्री महावीर स्वामी दीक्षा दिवस, C	७	७	५४	३५	४	२१	१	३२	१४	६
४३	११	मं	४८	५०	२६	३७	हस्त	५६	३०	२९	४१	प्री	२५	४८	१७	२४	बव	१५	४२	१३	२२	25	४	१०	२३	कन्या	पद्मप्रभु मोक्ष जैन, उत्पत्ति एकादशी व्रत सबका, मूल धनु में बुध (५।४५)	७	८	५५	१६	५	२१	२	२४	१४	४०
४०	१२	बु	५४	७	२८	४५	चि	६०	०	-	-	आ	२७	२३	१८	३	कौ	२१	२७	१५	४१	26	५	११	२४	तु. १८।५७		७	९	५५	५९	६	२१	३	१६	१५	१४
३८	१३	गु	५७	५८	३०	१८	चि	२	४०	८	११	सौ	२७	५७	१८	१८	गर	२६	०	१७	३१	27	६	१२	२५	तुला	भ. ५७।५८ (३०।१८) से, प्रदोष व्रत, उ.षा. में शुक्र ४५।२२ (२५।१६)	७	१०	५६	४३	७	२१	४	८	१५	५०
३५	१४	शु	६०	०	-	-	स्वा	७	३३	१०	९	शो	२७	३२	१८	९	वि	२९	१०	१८	४८	28	७	१३	२६	वृ. २९।१३	भ. २९।१० (१८।४८) तक, वक्री रेवती १ में शनि ३०।२७ (१९।१९)	७	११	५७	२९	८	२०	५	१	१६	२८
३२	१४	श	०	२५	७	१८	वि	११	१०	११	३६	अति	२६	८	१७	३५	श	०	२५	७	१८	29	८	१४	२७	वृश्चिक	मेला पुरमण्डल देविका स्नान (जम्मू-कश्मीर) श्री बालाजी जयंती, D	७	१२	५८	१६	८	२०	५	५६	१७	१०
३०	३०	र	१	३०	७	४५	अनु	१३	२२	१२	३०	सु	२३	३५	१६	३५	ना	१	३०	७	४५	30	९	१५	२८	वृश्चिक	स्नान दान पुण्यार्जन की अमावस्या ३० तिथि	७	१३	५९	२	९	२१	६	५०	१७	५६

A संक्रांति मु. ४५ समर्घ:, सौर मार्गशीर्ष मास प्रारम्भ B(१२।१५), राष्ट्रीय मार्गशीर्ष मास प्रारम्भ: C मूल धनु में बुध ५६।४२ Dकमला जयंती, शब्बे मिराज

ग्र. स्प. मार्गशीर्ष कृष्ण ८ शनौ प्रात: ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये २२ नवम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	४	८	७	९	८	११	४	१०	९	९	७
५	५	१५	२६	२१	२१	२०	२२	२२	११	३	११
५३	५३	५९	१४	२५	५२	१४	०	०	३२	५४	२८
१८	४४	८	५३	५६	२८	३३	४७	४७	२८	१३	१२
६०	७११	४५	७९	८	५०	२	३	३	२	१	२
३८	३४	५९	३६	२६	०	३०	११	११	०	२४	२२
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
१	१	१	३	४	३	३	३	१	१	३	३
अनु	मघा	पूषा	ज्येष्ठा	श्रवण	पूभा	रेवती	पूफा	पूषा	श्रवण	उषा	अनु

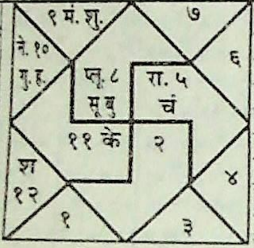

।। फलम् ।।

मास में पांच शनिवारों का फल नेष्ट है- शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भङ्गश्च वह्निदाहो महार्घता।। के अनुसार विश्व के किसी भाग में भूकम्पादि महोत्पात की आशंका जाननी चाहिए। पूर्व-उत्तर के मध्य ईशान देश में विभिन्न प्रकार की विघ्न बाधायें उपस्थित होंगी। कहीं अग्निभय व्याप्त रहेगा। कहीं सत्ताहस्तान्तरण की लड़ाई आर पार की लड़ी जायेगी। असामान्य विषमावस्था में उत्तरोत्तर मंहगाई बढ़ती जायेगी। भुखमरी, बेरोजगारी तथा बढ़ते नित्योत्पात से जनता में त्राहि-त्राहि मचेगी। आम जनता अपने को असहाय समझने लगेगी। कहीं ज्वालामुखी विस्फोट तो कहीं आतंकवादी बम विस्फोट से भय विषाद व्याप्त होगा। भारतीय सत्तारूढ़ पार्टी को देश की स्वरक्षा की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए। **तेजी-मन्दी विचार**-द्वितीयद्व रविवार में बैठी वृश्चिक की संक्रान्ति मुहुर्त ४५ होने से चालू मार्किट भावों में विशेष घटा-बढ़ी का संयोग नहीं बनेगा। विगत तुला संक्रान्ति मु. १५ थी अत: ३० मुहूर्त के अन्तर से संक्रान्तियों का बैठना अकल्पित महंगाई कारक माना जाता है। **आकाश लक्षण**—यत्र-तत्र बादल चाल तो कहीं गरज के साथ छींटे पड़ सकते हैं। वायु अति तीव्र गति से बहेगी। धीरे-धीरे ठंड बढ़ने लगेगी। कहीं बर्फ पड़ सकती है।

कु. अमावस्या सूर्योदये ३० नवम्बर ❖ ग्र. स्प. मार्गशीर्ष कृष्ण ३० रवि प्रात: ५।३० बजे

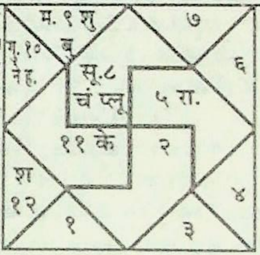

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	७	८	८	९	८	११	४	१०	९	९	७
१३	१२	२१	५	२२	२८	१९	२१	२१	११	४	११
५९	५१	५९	२१	३५	१९	५७	३५	३५	४८	५	४७
४	३८	१६	४२	२२	४८	३३	२१	२१	२८	२५	३
६०	७८१	४६	५९	९	४५	१	३	३	२	१	२
४९	५९	१७	४३	२६	४७	४६	११	११	२४	४८	२२
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
४	३	३	२	४	१	१	३	१	१	३	३
अनु	अनु	पूषा	मूल	श्रवण	उषा	रेवती	पूफा	पूषा	श्रवण	उषा	अनु

मार्गशीर्ष कृत्यम्। मार्गशीर्ष कृष्णाष्टमी काल भैरवाख्या एषातु रात्रि व्यापिनी ग्राह्येति, अस्यां कालभैरव समीपे उपवास जागरणादि कार्यम् अस्मिन्नेव मासि देविका स्नान फलमुक्तम्- चन्द्र-सूर्य ग्रहे चैव मार्गशीर्ष तथैव च। देविका स्नान मात्रेण शिवलोके वसेन्नर: इति। इह एव मुक्त व्रतं प्रद्युम्न पूजनं च कार्यम्।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१७

दिनांक १से १४ दिसम्बर सन् १९९७ ई.
हेमन्त ऋतु, रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

दि.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		तारीखें अं.	शा.	प्र.	मु.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा.	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है।	दै.रवि स्पष्ट				सू.उ.अ.		चन्द्रोदय उदय		अस्त	
घप	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	दि.	मा.	मा.	रा.	ग.घं.मि.	घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	रा.	अं.	क.	वि	उ	अ				
[illegible]	१	चं.	१	१५	७	४०	ज्ये	१४	२५	१२	५६	धृ	२०	७	१५	१३	बव	१	१५	७	४०	1	१०	१६	२९	ध. १२।५६	दिसम्बर मास १२ ता. ३१, चन्द्रदर्शन मु. ३०, रुद्रव्रत (पीड़िया व्रत)	७	१४	५९	५३	७/१०	५/२१	७	४८	१८	४६
२६	२	मं.	०	२	७	११	मू	१४	३३	१२	५९	शूल	१५	५८	१३	३३	कौ	०	२	७	११	2	११	१७	सा	धनु	ज्येष्ठा में सूर्य प्रवेश ३४।२७ (२०।५७), सावान मु. मास ८, मकर में A	७	१६	०	४४	१०	२१	८	४२	१९	४०
०	३	मं	५७	५३	३०	१९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	००	तृतीया क्षय:	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२४	४	बु	५५	५	२९	१३	पूषा	१३	४५	१२	४१	गंड	११	२	११	३६	व	२६	२७	१७	४६	3	१२	१८	२	म. १८।३४	भ. २६।२७ (१७।४६) से ५५।५ (२९।१३) तक, वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत	७	१७	१	३५	११	२१	९	३५	२०	३८
२२	५	गु	५१	३७	२७	५१	उषा	१२	२२	१२	९	वृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बव	२३	२०	१६	३२	4	१३	१९	३	मकर	नौ सेना दिवस, गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस, नाग पंचमी द. भारत, धनिष्ठा में B	७	१८	२	२७	१२	२१	१०	२५	२१	३८
२०	६	शु	४७	४७	२६	१९	श्र	१०	३०	११	२४	व्या	५३	४०	२८	४०	कौ	१९	४३	१५	५	5	१४	२०	४	कु. २२।५६	पंचक प्रा. ३९।२० (२२।५६), चम्पा षष्ठी स्कन्द षष्ठी व्रत, उ.षा. मंगल ५८।५७	७	१९	३	२०	१२	२१	११	१५	२२	४०
१८	७	श	४३	२५	२४	३५	ध	८	७	१०	२८	ह	४७	५	२६	३	गर	१५	३५	१३	२७	6	१५	२१	५	कुम्भ	भ. ४३।२५ (२४।३५) से, उ.षा. १ मंगल (६।४८), मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयंती	७	२०	४	१५	१३	२१	११	५८	२३	४२
१६	८	र	३८	३५	२२	४०	श	५	१८	९	२१	वज्र	४०	५	२३	१६	वि	१०	५८	११	३७	7	१६	२२	६	मी. २६।२५	भ. १०।५८ (११।३७) तक, झण्डा दिवस	७	२१	५	१०	१४	२१	१२	४०	-	-
१४	९	चं	३३	२८	२०	३८	पूभा	२/५८	५/३२	८/३०	५/४०	सि	३२	५५	२०	२४	बा	६	०	९	३९	8	१७	२३	७	मीन	वक्री बुध २५।३८ (१७।३०), जैन दिवाकर चौथ पुण्य: कल्पादि:	७	२२	६	५	१५	२१	१३	२०	०	४५
१२	१०	मं	२८	०	१८	२७	रे	५४	४०	२९	७	व्य	२५	२५	१७	२५	तै	०	४२	७	३२	9	१८	२४	८	मे. २९।७	भ. ५५।१० (२९।१९) से, पंचक समा. ५४।४० (१९।१७), श्री अमरनाथ जन्म व मोक्ष जैन	७	२३	७	२	१५	२१	१४	२	१	४६
१०	११	बु	२२	२०	१६	१२	अ	५०	४५	२७	३४	वरि	१७	४५	१४	२२	वि	२२	२०	१६	१२	10	१९	२५	९	मेष	भ. २२।२० (१६।१२) तक, मोक्षदा एका. व्रत (सबका), मकर में मंगल १६।२२ (१३।४९)	७	२४	७	५८	१६	२१	१४	४५	२	४८
८	१२	गु	१६	४०	१३	५७	भ	४६	४७	२६	०	परि	१०	५	११	१९	बा	१६	४०	१३	५७	11	२०	२६	१०	मेष	बुध पश्चिम में अस्त ४५।५७ (२५।४०), प्रदोष व्रत, अखण्डा द्वादशी पुण्य:	७	२५	८	५६	१७	२१	१५	३०	३	५२
७	१३	शु	११	०	११	४२	कृ.	४२	४८	२४	२५	शि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	११	०	११	४२	12	२१	२७	११	वृ. ७।३७	गुरुग्रन्थ साहिब का वार्षिक उत्सवारम्भ	७	२६	९	५४	१८	२१	१६	१८	४	५५
६	१४	श	६	१७	९	५०	रो	४०	३५	२३	३३	सा	४८	४८	२६	५०	व	६	१७	९	५०	13	२२	२८	१२	वृष	भ. ६।२७ (९।५०) से ३४।११ (२०।५९) तक, सत्यव्रत पूर्णिमा, पिशाचमोचन श्राद्ध,C	७	२७	१०	५३	१९	२१	१७	८	५	५७
५	१५	र	२	५	८	१०	मृ	३८	५०	२२	५२	शुभ	४३	१३	२४	३७	बव	२	५	८	१०	14	२३	२९	१३	मि. ११।१३	उदया पूर्णिमा पुण्यम्, श्री अन्नपूर्णा जयन्ती दर्शन पूजनार्चन	७	२८	११	५३	२०	२२	१८	०	६	५८

A शुक्र प्र. ८।२७ (१०।२९) B गुरु ४०।१० (२३।१६), श्री राम विवाहोत्सवारम्भ C श्रीत्रिपुर भैरव जयन्ती, श्रीसम्भवनाथ जयंती (जैन), श्री दत्तात्रेय जयंती

ग्र. स्प. मार्गशीर्ष शुक्ल ८ रवि प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये ७ दिसम्बर ॥ फलम् ॥ कु. पूर्णिमा सूर्योदये १४ दिसम्बर ❖ ग्र. स्प. मार्गशीर्ष शुक्ल १५ रवि प्रातः ५।३० बजे

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१०	८	८	९	९	११	४	१०	९	९	७
२१	१७	२७	९	२३	३	१९	२१	२१	१२	४	१२
५	४४	२४	२६	४२	११	४७	१३	१३	५	१८	३
१०	२०	५	२५	४८	२२	२८	५	५	१६	१	२५
६०	८४४	४६	६	१०	४०	१	३	३	२	१	२
५५	२२	३४	०	८	०	०	११	११	२४	४८	२०
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

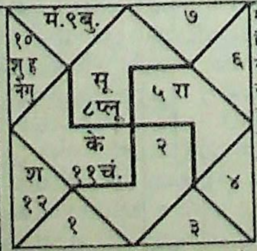

मास में पांच रवि एवं पांच शनिवारों का फल दैवज्ञों ने महोत्पातकारी लिखा है, यथा—शनिवारा यदा पंच जायन्ते रवि पंचकम्। महार्घं जायते धान्यं रोग शोकाकुला मही॥ के अनुसार धान्यादि समस्त पदार्थ दैनिक जीवनोपयोगी वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि होगी। विश्व पर्यावरण प्रदूषण, मानवजन्य दुष्कर्म पापफल स्वरूप तीनों प्रकार के नाना प्रकार के रोगों का प्रादुर्भाव होगा। शोक सन्ताप जन्य प्रजा दुःखित होगी। नितनये पापाचार से धरा अकुलायेगी, पृथ्वी के किसी भाग में किसी विशेष प्रकार की आपदा सम्भव है। चारों प्रकार के प्राणियों का ह्रास होगा। कहीं युद्धोत्पात की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है। मकर राशि में पंचग्रही योग भारत के सानुकूल नहीं है, यथा-एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः। प्लावयन्ति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा। पड़ौसी राष्ट्र सीमाओं पर सैन्य बल का निरीक्षण कर लेना चाहिए। तेजी-मन्दी विचार-प्रतिपदा सोमवार में चन्द्र दर्शन मु. ३० समभाव का सूचक है। चान्द्र गणनानुसार यह पक्ष तेरह दिन का अति नेष्ट घोर महंगाई कारक है। सूर्य के साथ प्लूटो यम का संयोग भी उपद्रवकारी माना जाता है। चालू मार्कीट रुख देखकर व्यापार करना श्रेष्ठ रहेगा। आकाश लक्षण—ग्रहयोगयोग के फलस्वरूप आकाश प्रांप स्वच्छ रहेगा। धीरे-धीरे शीत का प्रकोप बढ़ता जायेगा। सुदूर पर्वतीय प्रदेशों में हिमपात की सम्भावना जाननी चाहिए। शीत लहर चलेगी। कृषि में तुषारपात के कारण क्षति होगी।

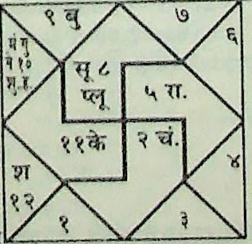

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१	९	८	९	९	११	४	१०	९	९	७
२८	२६	२	५	२४	६	१९	२०	२०	१२	४	११
११	४७	५०	३४	५५	५६	४२	५०	५०	२३	३१	४९
५३	२७	३२	५०	३२	४६	४३	५०	५०	३६	१	३७
६१	८१८	४६	५२	११	२६	०	३	३	२	१	२
१	५०	४३	२४	०	१२	८	११	११	४६	५४	१८
मा.	मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठी स्कन्दाख्या सा च पूर्वविद्धा ग्राह्या। तत्रस्कन्दं सम्पूज्य स्नानादि कुर्यादित्य क्षय फल प्राप्तिः। इयमेव योग विशेषेण चम्पा षष्ठी उक्ताऽत्र शिवलिङ्ग दर्शनम् भवेत्। उक्तम् च—मार्गशीर्षेऽमले पक्षे षष्ठायां वारेऽशुमालिनः। शततारागते चन्द्रे लिङ्गं स्याद् दृष्टि गोचरम्। मार्गशीर्ष पूर्णिमायां दत्तात्रयोत्पत्ति इहैव प्रदोष व्यापिनी ग्राह्येति।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ पौष कृष्ण पक्ष-१८

तारीखें | चन्द्र संचार | दिनांक १५ से २९ दिसम्बर, सन् १९९७ ई. हेमन्त ऋतु, रवि दक्षियाने, दक्षिण गोले | दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं. टा. जालन्धर

दि.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		अं.	शा.	प्र.	मु.	भा.स्टैं.टा.	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है।	दैनिक स्पष्ट				सू.उ.अ.		चन्द्रोदय			
घप	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	दि.	मा.	पौ.	सा.	रा.घं.मि.	घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	रा.	अं.	क.	वि	उ	अ	उदय		अस्त	
०	१	र	५९	१२	३१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	००	प्रतिपदा क्षय:	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
[illegible]	२	चं	५७	४७	३०	२८	आ	३८	२७	२२	४४	शु	३८	४०	२२	४९	तै	२८	२८	१८	४४	15	२४	१	१४	मिथुन	शब्बेरात यवनोत्सव, चन्दन शहीद बाबा मेला यवन, मूल धनु में सूर्य प्रवेश ४१।४२ A	७	२९	१२	५४	[illegible]	[illegible]	१८	५४	७	५५
३	३	मं	५८	२	३०	३५	पुन	३९	४०	२३	१३	ब्र	३५	२७	२१	३२	व	२७	५७	१८	३२	16	२५	२	१५	क. १७।५	भ. २७।५७ (१८।३२) से ५८।२ (३०।३५) तक	८	०	१३	५५	२१	२३	१९	५०	८	४६
२	४	बु	६०	०	-	-	पुष्य	४२	४५	२४	२८	ऐं	३३	४०	२०	५०	बव	२९	१०	१९	२	17	२६	३	१६	कर्क	कृष्ण चतुर्थी व्रत, शनि मार्गी ३६।४५ (२२।४)	८	१	१४	५६	२२	२४	२०	४५	९	३५
१	४	गु	०	१८	७	३०	आ	४७	२२	२६	२०	वै	३३	१०	२०	३९	बा	०	१८	७	३०	18	२७	४	१७	सिं २६।२०	वक्री ज्येष्ठा ४ वृश्चिक में बुध २६।३७ (१८।२)	८	२	१५	५९	२३	२४	२१	४०	१०	१६
[illegible]	५	शु	४	२०	९	८	मघा	५३	३३	२८	४९	वि	३३	५५	२०	५८	तै	४	२०	९	८	19	२८	५	१८	सिंह		८	३	१७	२	२४	२४	२२	३२	१०	५५
५९	६	श	९	५०	११	२०	पूफा	६०	०	-	-	प्री	३५	५५	२१	४६	व	९	५०	११	२०	20	२९	६	१९	सिंह	भ. ९।५० (११।२०) से ४३।६ (२४।३८) तक	८	४	१८	७	२४	२४	२३	२४	११	३०
[illegible]	७	र	१६	२२	१३	५८	पूफा	०	४५	७	४३	आ	३७	५५	२२	३५	बव	१६	२२	१३	५८	21	३०	७	२०	क. १४।३१	सायन मकर में सूर्य ४५।३५ (२५।३९), रवि उत्तरायणे, शिशिर ऋतु प्रारम्भ, B	८	५	१९	१२	२५	२५	-	-	१२	५
०	८	चं	२३	५	१६	४०	उफा	८	३५	१०	५२	सौ	४०	१५	२३	३२	कौ	२३	५	१६	४०	22	पौ	८	२१	कन्या	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, जिनसागर पुण्य जैन, राष्ट्रीय पौष मास प्रारम्भ	८	६	२०	१८	२६	२६	०	१५	१२	४०
१	९	मं	२९	३०	१९	१५	हस्त	१६	५	१३	५३	शो	४२	८	२४	१८	गर	२९	३०	१९	१५	23	२	९	२२	तु २७।१६	श्रवण में मंगल ४।४८ (९।२२), बुध उदय पूर्व दिशा में १०।३२ (११।४), C	८	७	२१	२५	२७	२७	१	६	१३	१२
२	१०	बु	३५	३	२१	२८	चि.	२२	४८	१६	३४	अति	४३	२०	२४	४७	व	२	२०	८	२१	24	३	१०	२३	तुला	भ. २।२० (८।२१) से ३५।३ (२१।२८) तक, श्री पार्श्वनाथ जयंती, D	८	८	२२	३२	२७	२७	१	५८	१३	४८
३	११	गु	३९	०	२३	३	स्वा	२८	१०	१८	४३	सु	४३	१७	२४	४६	बव	७	०	१०	१५	25	४	११	२४	तुला	सफला एकादशी व्रत (सबका), क्रिसमसडे, ईसा जयंती, मदन मोहन मालवीय जयंती	८	९	२३	४१	२७	२८	२	५०	१४	२५
४	१२	शु	४१	१०	२३	५५	वि	३१	५२	२०	१२	धृ	४१	५५	२४	१३	कौ	१०	५	११	२९	26	५	१२	२५	वृ. १३।५१		८	१०	२४	४९	२७	२९	३	४४	१५	५
५	१३	श	४१	३७	२४	७	अनु	३३	५७	२१	३	शूल	३९	१५	२३	१०	गर	११	२२	१२	१	27	६	१३	२६	वृश्चिक	भ. ४१।३७ (२४।७) से, शनि प्रदोष व्रत, वक्री शुक्र २५।५ (१७।३०), E	८	११	२५	५९	२८	३०	४	४०	१५	४८
६	१४	र	४०	२८	२३	३९	ज्ये	३४	३०	२१	१६	गंड	३५	२२	२१	३७	वि	११	३	११	५३	28	७	१४	२७	ध. २१।१६	भ. ११।३ (११।५३) तक, पू.षा. में सूर्य प्रवेश ४७।० (२६।१६) बुध मार्गी (६।५)	८	१२	२७	८	२८	३०	५	३५	१६	३६
७	३०	चं	३७	५७	२२	३९	मूल	३३	३७	२०	५५	वृ	३०	२३	१९	३७	च	९	१२	११	९	29	८	१५	२८	धनु	स्नानादि की देवपितृ अमावस्या, वकुला मावस उड़ीसा में प्रसिद्ध, वक्री उषा. शुक्र ४।२० (९।८)	८	१३	२८	१७	२८	३०	६	३३	१७	३०

A(२४।२). संक्रांति मु. ४५, सौर पौष मास प्रा. (धनु खरमासारम्भ) B विराज दिन एवरेय ब्राह्मणे C स्वामी श्रद्धानन्द दिवस, धनिष्ठा २ में गुरु १०।१३ (११।३२) D श्रवण में शुक्र २६।४५ (१८।९) E पद्म प्रभु जयंती जैन, बुध मार्गी ५६।३२

ग्र. स्प. पौष कृ. ८ चन्द्रे प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये २२ दिसम्बर

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	५	९	७	९	९	११	४	१०	९	९	७
६	७	९	२५	२६	९	१९	२०	२०	१२	४	१२
२०	२१	५	५८	२५	३५	४४	२५	२५	४६	४६	३७
१८	१९	२१	४६	४२	५२	१३	२३	२३	३०	३५	३६
६१	७०८	४७	६१	११	९	०	३	३	३	२	२
७	५२	०	२१	४३	३०	४४	११	११	५	५	५
मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.	मा. -	मा. -	मा. -
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

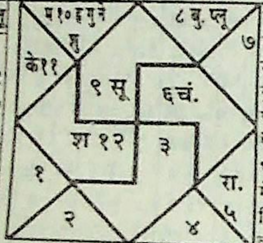

॥ फलम् ॥

मास में पांच रविवारों का फल महाभय, विनाश, विषाद, अन्यान्य आपदा का परिचायक है, यथा-यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच सन्ततम्। दुर्भिक्षं छत्रभंगः स्यात्तदास्ते च महद्भयम्॥ के अनुसार विश्व के किसी भाग पर राजनैतिक युद्धादि, उपद्रव या प्राकृतिक आपदावसात् असामान्य विषमावस्था, दुर्भिक्षजन्य परिस्थिति से गुजरना पड़ेगा। नाना प्रकार के रोगों का प्रादुर्भाव होगा। प्रदूषण फैलता जायेगा। मास में पांच सोमवारों का फल अच्छा होने से पृथ्वी के किसी भाग, देश विशेष में कृषि में पैदावार अच्छी होगी। कलकारखाना, उद्योग समूहों में उत्पादन बढ़ने से सौख्य समृद्धि बढ़ेगी। जनता समयोचित उपयोगी वस्तुएं मिलते रहने से राहत महसूस करेगी। सरकारी तौर पर बहुजनहितोपयोगी कार्यक्रमों की घोषणा की जायेगी। शान्ति के हर सम्भव उपायों पर विचार होने लगेगा। तेजी-मन्दी विचार-पक्षारम्भ दिन सोमवार ता. १५दिसम्बर में बैठी धनु की संक्रान्ति मु.-४५ के प्रभाव से चालू मार्किट भावों में नरमी का रुख बनेगा। पक्षान्तर्गत तिथियों की ह्रास वृद्धि का फल भी उत्तम लिखा है, यथा-जेहि पखवारे तिथि बढ़े, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी बिकें, महंगाई हट जाय॥ आकाश लक्षण- आकाश प्राय स्वच्छ रहेगा। पक्ष के उत्तरार्ध में पूर्वोदय बुध के प्रभाव से यत्र-तत्र भारी मेघगर्जना के साथ हल्की वर्षा सम्भव है। शीत लहर चलेगी। पर्वतीय प्रदेशों में हिमपात की सम्भावना जाननी चाहिए। जहा-तहाँ तुषार पात होगा वहाँ खडी फसलों में क्षति की सम्भावना बनेगी।

कु. अमावस्या सूर्योदये २९ दिसम्बर ❖ ग्र. स्प. पौष कृष्ण ३० चन्द्रे प्रातः ५।३० बजे

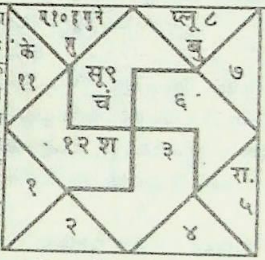

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	८	९	७	९	९	११	४	१०	९	९	७
१३	४	१४	२३	२७	१०	१९	२०	२०	१३	५	१२
२८	३४	३४	३२	४९	१	५१	३	३	८	१	५२
१७	१५	५३	४४	१९	२२	२७	८	८	८	१०	१४
६१	८१९	४७	१७	१२	७	१	३	३	३	२	२
११	२५	८	१८	१६	०	३६	११	११	६	५	५
मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.	मा. -	मा. -	मा. -
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पौस मास कृत्यम्—उत्कृष्ठ धनुः संक्रमणे सूर्ये वस्त्र इन्धनदानतः। विष्णु लोके भवेद्वाराः शिवलोके वसेच्चिरमिति। उत्तम् च उषा चम्पक कुष्टं च रोचनः पंचपत्रकम्। सुरामांसी समे स्नानं धनुः संक्रमण शुभमिति। ग्रयातो गया श्राद्ध कालो निर्णीयते। मीन मेष स्थिते सूर्ये कन्यायां सूर्यकेवटे दुर्लभं त्रिपुलोकेषु गयायां पिण्ड पातनम्॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ पौष शुक्ल पक्ष-१९

तारीखें | चन्द्र संचार | दिनांक ३० दिसम्बर से १२ जनवरी, सन् १९९८ ई. शिशिर ऋतु, रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले | दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।

दि. घप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	अं. दि.	शा. पौ.	प्र. पौ.	मु. सा.	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.		दै.रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय		अस्त	
८	१	मं	३४	७	२१	७	पूषा	३१	३७	२०	७	धु	२४	२७	१७	१५	किं	६	२	९	५३	30	९	१६	२९	धं. २५।५३	पू.फा. २ में राहु: शत. ४ में केतु (५।२५)	८	१४	२९	२८	७/२८	५/३१	७	२८	१८	२८
९	२	बु	२९	३८	१९	१९	उषा	२९	१०	१९	८	व्या	१७	५५	१४	३८	बा	१	५३	८	१३	31	१०	१७	३०	मकर	चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घ:, न्यू ईयर इव., नये साल की पूर्व रात्रि उत्सव	८	१५	३०	३८	२८	३१	८	२०	१९	२९
१०	३	गु	२४	१८	१७	११	श्र	२५	३५	१७	४२	ह	१०	५५	११	५०	गर	२४	१८	१७	११	J1	११	१८	रम	कु. २९।०	भ. ५१।४० (२८।४) से, जनवरी मास १ ता. ३१ सन् १९९८ प्रा., पंचक प्रा. A	८	१६	३१	४७	२८	३२	९	१०	२०	३०
१२	४	शु	१९	२	१५	५	ध	२२	२	१६	१७	वज्र	१/५५	३५/२५	८/२१	५४/५८	वि	१९	२	१५	५	2	१२	१९	२	कुम्भ	भ. १९।२ (१५।५) तक	८	१७	३२	५८	२८	३३	९	५६	२१	३४
१३	५	श	१३	४५	१२	५८	श	१८	२८	१४	५१	व्य	४८	५०	२७	०	बा	१३	४५	१२	५८	3	१३	२०	३	कुम्भ	रेवती के द्वितीय चरण में शनि १०।३५ (११।४२)	८	१८	३४	८	२८	३३	१०	४०	२२	३८
१४	६	र	८	२५	१०	५१	पूभा	१४	५३	१३	२६	वरि	४१	३०	२४	५	तै	८	२५	१०	५१	4	१४	२१	४	मी. ७।४७	श्री गुरु गोविन्द सिंह जी महाराज का प्रकाशोत्सव	८	१९	३५	१८	२९	३४	११	२२	२३	४०
१५	७	चं	३	१७	८	४८	उभा	११	३०	१२	५	परि	३४	२८	२४	१६	व	३	१७	८	४८	5	१५	२२	५	मीन	भ. ३।१७ (८।४८) से ३०।५२ (१९।५०) तक, श्री गुरुगोविन्द सिंह जयंती, B	८	२०	३६	२८	२९	३५	१२	३	-	-
०	८	चं	५८	२८	३०	५२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	००	अष्टमी क्षय:	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१७	९	मं	५३	५५	२१	३	रे	८	२२	१०	५०	शिव	२७	३७	१८	३२	बा	२६	१२	१७	५८	6	१६	२३	६	मे. १०।५०	पंचक समाप्त ८।२२ (१०।५०)	८	२१	३७	३७	२९	३६	१२	४५	०	४५
१८	१०	बु	४९	३०	२७	२१	अ	५	३५	९	४३	सिद्ध	२१	०	१५	५३	तै	२१	४८	१६	१२	7	१७	२४	७	मेष	शाम्बदशमी (उड़ीसा), मूल, धनु में बुध प्रवेश ७।२७ (१०।४), आचार्य जिन सागर जैन पुण्य:	८	२२	३८	४६	२९	३६	१३	२८	१	४५
२०	११	गु	४५	५८	२५	५२	भ	३	५	८	४३	सा	१४	४०	१३	२१	व	१७	५०	१४	३७	8	१८	२५	८	वृ. १४।३१	भ. १७।५० (१४।३७) से ४५।५८ (२५।५२) तक, मन्वादि: पुत्रदा एकादशी C	८	२३	३९	५६	२९	३७	१४	१२	२	४५
२२	१२	शु	४२	४७	२४	३६	कृ	२/५९	५/४२	७/३१	५५/२२	शुभ	८	४८	११	०	बव	१४	२२	१३	१४	9	१९	२६	९	वृष	पुत्रदा एकादशी व्रत निम्बार्कानाम, धनिष्ठा में मंगल १।४० (८।९)	८	२४	४१	२	२९	३८	१५	०	३	४८
२४	१३	श	४०	२२	२३	३८	मृ	५८	४५	३१	९	शु	०/५८	२३/३०	८/३०	५०/५६	कौ	११	३५	१२	७	10	२०	२७	१०	मि ११।१४	शनि प्रदोष व्रत, उ.षा. में सूर्य प्रवेश ५१।४५ (२८।११)	८	२५	५२	९	२९	३९	१५	४०	४	४५
२६	१४	र	३९	३	२३	६	आ	५९	३८	३१	२०	ऐं	५४	४२	२९	२२	गर	९	४३	११	२२	11	२१	२८	११	मिथुन	भ. ३९।३ (२३।६) से,	८	२६	४३	१७	२९	४०	१६	४५	५	४५
२८	१५	चं	३८	४८	२३	०	पुन	६०	०	-	-	वै	५१	५०	२८	१३	वि	८	५५	११	३	12	२२	२९	१२	क. २५।४९	भ. ८।५५ (११।३) तक, सत्यव्रत पूर्णिमा पुण्यम्, माघ स्नानारम्भ:, D	८	२७	४४	२४	२९	४०	१७	४०	६	३८

A ५३।५० (२९।०), श्रवण २ में हर्षल ५१।५० (२८।१२), श्री यतीन्द्र सूरीश्वर पुण्य: त्रि:स्तुति (जैन), रमजान मु. मास १ रोजा शुरू B श्री दुर्गाष्टमी, श्री राजेन्द्र सूरिश्वर जन्म-पुण्य:, त्रि: स्तुति (जैन) C व्रत स्मार्त, धनिष्ठा ३ कुम्भ में गुरु का प्रवेश १५।५२ (१३।५०) D देवी शाकुम्भरी जयंती, अनुराधा ४ प्लूटो ०।१५ (७।३५)

ग्र. स्प. पौष शुक्ल ७ चन्द्रे प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. सप्तमी सूर्योदये ५ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	११	९	७	९	९	११	४	१०	९	९	७
२०	१२	२०	२७	२९	८	२०	१९	१९	१३	५	१३
३६	४८	५	४२	१६	२१	३	४०	४०	३०	१६	६
२८	३६	२८	२२	५६	४८	४५	५२	५२	५०	२०	२६
६१	८४४	४७	६२	१२	२४	२	३	३	३	२	१
९	३१	१७	४८	५२	२९	१२	११	११	१८	१२	५९
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

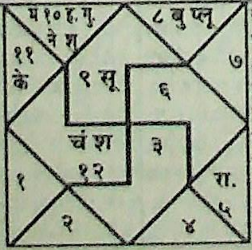

॥ फलम् ॥

कु. पूर्णिमा सूर्योदये १२ जनवरी ❖ ग्र. स्प. पौष शुक्ल १५ चन्द्रे प्रातः ५।३० बजे

मास में पांच सोमवारों का फल श्रेष्ठ है, यथा- सोमस्य पंचवारास्यु यत्र मासे भवन्ति हि। धन धान्य समृद्धिः स्यात् सुखं भवति सर्वदा॥ के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय जगत में नवीन तकनीक के माध्यम से पर्याप्त मात्रा में भौतिक विकास होगा। धनैश्वर्य वृद्धि होगी। दैनिक उपयोगी वस्तुएं समयोचित उपलब्ध रहने से जनता राहत महसूस करेगी। चारों प्रकार के प्राणियों की वृद्धि होगी। पर्याप्त मात्रा में फल फूलों की बढ़ोत्तरी होगी। मकर में बनने वाला पंच ग्रही योग और मास में पांच रविवारों का फल उत्तेजनात्मक कारक है। मन्त्रिस्तर के राजा लोग परस्पर एक दूसरे को क्रूर दृष्टि से देखने लगेंगे। अमेरिकादि उच्चाकांक्षाओं से ओत प्रोत देश अपनी विस्तारवादी नीति का प्रचार प्रसार करेंगे। शान्तिप्रिय देशों में अशान्ति फैलाने का पूरा प्रयास करेंगे। कहीं युद्ध का षड्यन्त्र रचा जायेगा। भारतीय कर्णधारों को सीमाओं पर चौकसी बर्तनी चाहिए। तेजी-मन्दी विचार-३१ दिसम्बर द्वितीया बुधवार में चन्द्र दर्शन मु. ४५ चल रहे सामयिक भावों में अभिवृद्धि कारक हैं। इस मास में कृष्ण चतुर्थी की वृद्धि होकर शुक्ला अष्टमी की हानि हुई है इस योग में सभी पदार्थों की भारी कमी होने से मंहगाई बहुत बढ़ जाती है, यथा-कृष्ण पक्ष की तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाये। एक वस्तु तो क्या घटे, सभी वस्तु घट जाये॥ आकाश लक्षण-ग्रह राशि नक्षत्र परिवर्तन के प्रभाव से यत्र-तत्र बादल चाल, पर्वतीय क्षेत्रों में कहीं कम तो कहीं अधिक वर्षा हो, हिमपात के कारण यातायात में व्यवधान पड़े। शीत लहर से उत्तर भारत प्रभावित

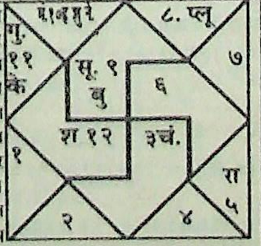

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	२	९	८	१०	९	११	४	१०	९	९	७
२७	१९	२५	५	०	५	२०	१९	१९	१३	५	१३
४४	०	३६	२६	४७	०	२१	१८	१८	५४	३१	१९
२४	१८	२८	४२	४७	१९	३	३६	३६	८	५६	४५
६१	७७१	४७	७५	१३	३६	२	३	३	३	२	१
६	५६	१७	११	९	०	३९	११	११	२४	१८	२२
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पौस मास कृत्यम्— उक्तञ्च पौषेमासे तु कौन्तेय एव भक्तनयाक्षिपेत्। शुभ गोदर्शनीयश्च यशभागो च जायते॥ प्रासाद नगरावीनि स्वगृह प्रभवानि च। नारायणस्य तुष्ट्यर्थं पौषे देयानि यत्नतः॥ आग्रहायण व्यतीत्तायां मासमेकम् दिने-दिने। पूर्ववत्पूजयेदेव घृतेन जुहुयाद्धविम्। घृतं द्विजेभ्यो दद्याच्च घृतमेव निवेदयेत्। त्रिरात्रौ पौषिति पौष्यां तु पात्रेण वै द्विजः॥

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४

शाके १९१९ माघ कृष्ण पक्ष-२०

दिनांक १३ से २८ जनवरी, सन् १९९८ ई.
शिशिर ऋतु, रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले

घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है।
घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।

दि.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		तारीखें				चन्द्र संचार
घप	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	अं. जन.	शा. पौ.	प्र. पौ.	मु. रम.	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.
[illegible]	१	मं	३९	५०	२३	२५	पुन	१	१७	८	०	वि	४९	५०	२७	२५	बा	१	२०	११	१३	13	२३	३०	१३	कर्क
३३	२	बु	४२	२२	२४	२५	पु	४	१८	९	११	प्री	४९	५	२७	६	तै	११	७	११	५५	14	२४	मा	१४	कर्क
३५	३	गु	४६	२३	२६	१	आ	८	४२	१०	५७	आ	४९	२३	२७	१३	व	१४	२२	१३	१३	15	२५	२	१५	सिं. १०।५७
३८	४	शु	५१	३७	२८	७	मघा	१४	३०	१३	१६	सौ	५०	४०	२७	४४	बव	११	०	१५	४	16	२६	३	१६	सिंह
४१	५	श	५७	५८	३०	३९	पूफा	२१	२३	१६	१	शो	५२	४०	२८	३२	कौ	२४	४८	१७	२३	17	२७	४	१७	क. २२।४५
४४	६	र	६०	०	-	-	उफा	२८	५७	१९	३	अति	५५	२	२९	२९	गर	३१	१७	१९	५९	18	२८	५	१८	कन्या
४७	६	चं	४	४०	९	२०	ह	३६	४०	२२	८	सु.	५७	२३	३०	२५	व	४	४०	९	२०	19	२९	६	१९	कन्या
४८	७	मं	११	१२	११	५७	चि	४४	०	२५	४	धृ	५९	१०	३१	८	बव	११	१२	११	५७	20	३०	७	२०	तु. ११।३७
५२	८	बु	१७	०	१४	१५	स्वा	५०	२०	२७	३५	शूल	६०	०	-	-	कौ	१७	०	१४	१५	21	मा	८	२१	तुला
५५	९	गु	२१	२३	१६	०	वि	५५	१०	२९	३१	शूल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	गर	२१	२३	१६	०	22	२	९	२२	वृ. २३।१
५८	१०	शु	२४	०	१७	२	अनु	५८	७	३०	४१	वृ	५८	५	३०	४०	वि	२४	०	१७	२	23	३	१०	२३	वृश्चिक
[illegible]	११	श	२४	४०	१७	१८	ज्ये	५९	१३	३१	७	ध्रु	५४	५२	२९	२३	बा	२४	४०	१७	१८	24	४	११	२४	वृश्चिक
४	१२	र	२३	३०	१६	४९	मूल	५८	३२	३०	५०	व्या	५०	७	२७	२८	तै	२३	३०	१६	४९	25	५	१२	२५	ध. ७।७
७	१३	चं	२०	३०	१५	३७	पूषा	५६	८	२९	५२	ह	४३	५८	२५	०	व	२०	३०	१५	३७	26	६	१३	२६	धनु
१०	१४	मं	१५	५५	१३	४७	उषा	५२	३०	२८	२५	वज्र	३६	४५	२२	७	श	१५	५५	१३	४७	27	७	१४	२७	म. ११।३०
१३	३०	बु	१०	१५	११	३०	श्र	४७	५०	२६	३२	सि	२८	४७	१८	५५	ना	१०	१५	११	३०	28	८	१५	२८	मकर

तारीख	घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर — दै.रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय		अस्त	
13	लोहड़ी उत्सव (पंजाब हरियाणा) सतीर्थोदक जल स्नानारम्भः, शुक्र ग्रह पश्चिम में A	८	२८	४५	३०	[illegible]	[illegible]	१८	३२	७	२५
14	मकर में सूर्य संचार ८।७ (१०।४३), संक्रांति मु. १५, सौर मास माघ प्रारम्भ, धनु B	८	२९	४६	३६	२८	४१	१९	२८	८	१०
15	भ. १४।२२ (१३।१३) से ४६।२३ (१६।१) तक	९	०	४७	४१	२८	४२	२०	२२	८	५०
16	संकष्टी श्री गणेश चौथ व्रत, चन्द्रोदय ३४।२७ (२१।१५), अङ्गारकी चतुर्थी व्रत	९	१	४८	४७	२८	४३	२१	१५	९	३०
17	कुम्भ में मंगल का प्रवेश २९।४० (१९।२०), पू.षा. में बुध ५९।३५	९	२	४९	५२	२८	४४	२२	६	१०	४
18	पू.षा. में बुध (७।१८)	९	३	५०	५७	२८	४६	२२	५८	१०	३८
19	भ. ४।४० (९।२०) से ३७।५६ (२३।३८) तक	९	४	५२	२	२८	४७	२३	४८	१०	३०
20	स्वामी विवेकानन्द तथा रामानन्दाचार्य जयंती, वक्री धनु में शुक्र १३।४० (१२।५६) C	९	५	५३	६	२८	४७	-	-	११	४५
21	कालाष्टमी, अन्वष्टका श्राद्ध, सहादते हजरत अली, राष्ट्रीय माघ मास प्रारम्भ	९	६	५४	१०	२७	४८	०	४०	१२	२०
22	भ. ५२।४२ (२८।३२) से,	९	७	५५	१४	२७	४९	१	३२	१२	५८
23	भ. २४।० (१७।२) तक, धनिष्ठ ४ में गुरु ११।८ (११।५३), जुमातुल विदा, श्री सुभाष ज.	९	८	५६	१८	२६	४९	२	२६	१३	४०
24	षट्तिला एकादशी व्रत (सबका), श्रवण में सूर्य प्रवेश (६।३७)	९	९	५७	२०	२६	५०	३	२०	१४	२५
25	प्रदोष व्रत, श्री सीतलनाथ जयंती (जैन)	९	१०	५८	२३	२५	५१	४	१६	१५	१६
26	भ. २०।३० (१५।३७) से ४८।१३ (२६।४२), मेरू त्रियोदशी (जैन), D	९	११	५९	२४	२५	५२	५	१२	१६	१०
27	शब-इ-कद्र, रटन्ती कालिका पूजन, उ.षा. में बुध १८।३२ (१४।५०), वक्री E	९	१३	०	२४	२५	५३	६	८	१७	१२
28	स्नानादि की मौनी मावस, स्नान का विशेष महत्व, द्वापर युगादि: F	९	१४	१	२४	२४	५३	७	०	१८	१५

A अस्त ४६।५ (२५।५५) B खरमास समा., पोंगल पर्व दक्षिण भारत, माघ विहू (आसाम), संक्रांति जन्य पुण्यकाल २४।७ (१७।७) बजे तक C शुक्र उदय पूर्व में २५।१३ (१७।३३), सायन कुम्भ में सूर्य प्रवेश ११।५२ (१२।१३)
D श्री आदिनाथ निर्वाण कल्यांणक, भारतीय गणतन्त्र दिवस, शतभिषा में मंगल (६।६) E पू.षा. में शुक्र प्रवेश (७।१६) F लाला लाजपतराय जयंती, विशाल मेला हरिद्वार

ग्र. स्प. माघ कृष्ण ८ बुधे प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदय २१ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	६	१०	८	१०	८	११	४	१०	९	९	७
६	८	२	१७	२	२९	२०	१८	१८	१४	५	१३
५४	५२	४२	२३	४८	३७	५०	४९	४९	२४	५२	३५
१०	१२	०	८	५८	१९	२१	५९	५९	५२	३६	१२
६१	७२५	४७	८३	१३	३३	४	३	३	३	२	१
४	१५	१८	९	४३	०	०	११	११	३२	१६	४३
मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.	मा. -	मा. -	मा. -
४	२	३	२	३	२	२	३	४	२	३	४
उ.षा.	स्वाती	धनिष्ठा	पू.षा.	धनिष्ठा	उ.भा.	रेवती	पू.फा.	पुन.	श्रवण	उ.भा.	अनु.

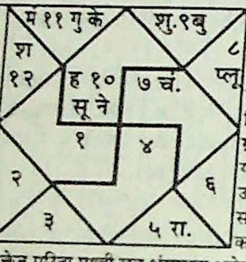

॥ फलम् ॥

कु. अमावस्या सूर्योदये २८ जनवरी ❖ ग्र. स्प. माघ कृष्ण ३० बुधे प्रातः ५।३० बजे

मास में पांच मंगलवारों का फल नेष्ट तो पांच बुधवारों का श्रेष्ठ होने से मिले जुले फल होंगे। चल रहे राजनैतिक, सामाजिक कामों में प्रगति होगी। भारत सरकार लघु उद्योग धन्धों को वरियता प्रदान करेगी। विश्व शान्ति परिचर्चायें चलेंगी। कृषि कार्यों में पर्याप्त उन्नति होगी। सूर्यासन्न ग्रहों का जमघट किसी विशेष प्रकार के घटनाचक्र को जन्म दे सकता है। यथा- आगे पीछे बहुत ग्रह, शनि हो मीनागार। राजनीति सह द्विन्द से, नैतिक पतन विचार॥ यह योग देश-विदेश तथा प्रदेशों की चल रही सामयिक राजनीति में अकल्पित उलटफेर का परिचायक है। कहीं घिनौनी राजनीति के तहत बड़ा भारी नुकसान सम्भव है। इस योग फल प्रभाव की वृद्धि में माघ मासान्तर्गत पांच भौमवारों का दुष्प्रभाव इस प्रकार लिखा है- यत्र मासे मही सूनोर्जायन्ते पंचवासरा: । रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्। अतः किसी प्रादेशिक सरकार अथवा किसी राजमुकुट के लिए समय सानुकूल नहीं कहा जा सकता। पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों में सावधानी बर्तनी चाहिए। तेजी-मन्दी विचार- १४ जनवरी बुधवार माघ कृष्ण द्वितीया में सूती मकर की संक्राति मु. १५ महंगाई कारक है। गेहूँ, जौ, चना, चीनी, गुड़, सूती, ऊनी वस्त्र, रसकश में तेजी की चाल चलेगी। नक्षत्रनाम राक्षसीं संक्रान्ति चाण्डालों को सुख प्रदान करेगी। आकाश लक्षण-इस पक्ष के आरम्भ और अन्त में मौसम खराब होगा। सुदूर दराज के क्षेत्रों में वर्षा की सम्भावना बनेगी। कहीं ओले पड़ सकते हैं।

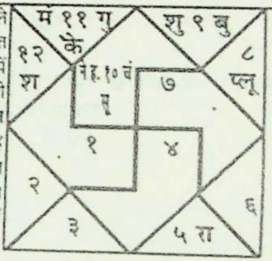

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	९	१०	८	१०	८	११	४	१०	९	९	७
१४	१०	८	२७	४	२६	२१	१८	१८	१४	६	१३
१	३९	१३	३४	२५	१६	१८	२७	२७	४९	८	४५
२४	२६	४८	२३	४०	२०	५४	४४	४४	३६	२६	४९
६०	८६७	४७	८९	१३	१६	४	३	३	३	२	१
५९	४९	२८	०	५२	४५	३४	११	११	३२	१६	२२
मा. उ.	मा. अ.	मा. उ.	मा. उ.	मा. उ.	व. उ.	मा. उ.	व. अ.	व. अ.	मा. -	मा. -	मा.
३	२	२	२	४	४	३	३	४	३	३	४
श्रवण	श्रवण	पुन.	उ.षा.	धनिष्ठा	पू.भा.	रेवती	पू.फा.	पुन.	श्रवण	उ.भा.	अनु.

अथ माघ मास कृत्यम्—तुला मकर मेषेषु प्रातः स्नायी सदा भवेत्। हविष्यं ब्रह्मचर्य च माघ स्नान महत्फलम्॥ माघ कृष्ण चतुर्थी गणेशाख्या सा च चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या। इयमेव संकट हरण चतुर्थी अस्यां व्रतं कार्यम्। नक्तं विधु पूजा कर्त्तव्येह तिथौ। इह माघा[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ माघ शुक्ल पक्ष-२१

दिनांक २९ जन. से ११ फर., सन् १९९८ ई.
शिशिर ऋतु, रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले

दि. घप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	तारीखें अं. ज.	शा. मा.	प्र. मा.	मु. रम	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.
२६/२२	१	गु	३	४३	८	५३	ध	४२	३८	२४	२७	व्य	२०	१२	१५	२१	बव	३	४३	८	५३	29	९	१६	२१	कु. १३।३१
०	२	गु	५६	३७	३०	३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	००
१९	३	शु	४९	२८	२७	१०	श	३७	२०	२२	१९	वरि	११	२३	११	५६	तै	२३	२	१६	३६	30	१०	१७	सव्व	कुम्भ
२२	४	श	४२	३२	२४	२४	पूभा	३२	५	२०	१३	परि	२/५३	३०/४०	८/२८	२३/५८	व	१६	०	१३	४७	31	११	१८	२	मी. १४।४४
२५	५	र	३६	३	२१	४७	उभा	२७	१७	१८	१७	सिद्ध	४५	३८	२५	३७	बव	९	२०	११	६	F1	१२	१९	३	मीन
२८	६	चं	३०	७	१९	२५	रे	२३	०	१६	३४	सा	३७	४५	२२	२८	कौ	३	५	८	३६	2	१३	२०	४	मे. १६।३४
३२	७	मं.	२५	०	१७	२१	अ	१९	३३	१५	१०	शुभ	३०	४२	१९	३८	व	२५	०	१७	२१	3	१४	२१	५	मेष
३६	८	बु	२०	४८	१५	४०	भ	१६	५२	१४	६	शु	२४	२३	१७	६	बव	२०	४८	१५	४०	4	१५	२२	६	वृ. १९।५६
४०	९	गु	१७	३७	१४	२३	कृ	१५	१७	१३	२७	ब्र	१८	५०	१४	५२	कौ	१७	३७	१४	२३	5	१६	२३	७	वृष
४४	१०	शु	१५	३५	१३	३३	रो	१४	५०	१३	१५	ऐं	१४	१२	१३	०	गर	१५	३५	१३	३३	6	१७	२४	८	मि. २५।२०
४८	११	श	१४	३०	१३	७	मृ	१५	१८	१३	२६	वै	१०	२०	११	२७	वि	१४	३०	१३	७	7	१८	२५	९	मिथुन
५३	१२	र	१४	३५	१३	८	आ	१६	५५	१४	४	वि	७	१८	१०	१३	बा	१४	३५	१३	८	8	१९	२६	१०	मिथुन
५६	१३	चं	१५	५२	१३	३८	पुन	१९	४०	१५	९	प्री	५	१७	९	२४	तै	१५	५२	१३	३८	9	२०	२७	११	क. ८।५०
२९/०	१४	मं	१८	५	१४	३१	पुष्य	२३	२५	१६	३९	आ	४	०	८	५३	व	१८	५	१४	३१	10	२१	२८	१२	कर्क
५	१५	बु	२१	४५	१५	५८	आ	२८	१७	१८	३५	सौ	३	४३	८	४५	बव	२१	४५	१५	५८	11	२२	२९	१३	सिं. १८।३५

तारीख	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर — दै.रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय		अस्त	
29	पंचक प्रारम्भ १५।१८ (१३।३१), चन्द्रदर्शन मु. ३०, श्री बल्लभाचार्य जयंती, A	९	१५	२	२३	७/२४	५/५४	७	५०	१९	२०
0	द्वितीया क्षय:	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
30	सव्वाल मु. मास १०, ईदुलफितर (ईद) (रमजान)	९	१६	३	२१	२३	५५	८	३५	२०	२५
31	भ. १६।० (१३।४७) से ४२।३२ (२४।२४) तक, वैनायकी चतुर्थी, तिल चतुर्थी, कुन्द ४ व्रत	९	१७	४	१८	२३	५६	९	२०	२१	३०
F1	फरवरी मास २ ता. २८, श्री पंचमी वसन्त पंचमी, श्री सरस्वती जयंती, तक्षक पूजा	९	१८	५	१३	२२	५६	१०	२	२२	३४
2	पंचक समाप्त २३।० (१६।३४), दस्तकार दिवस	९	१९	६	८	२२	५७	१०	४५	२३	३८
3	भ. २५।० (१७।२१) से ४२।५४ (२८।३१) तक, अचला ७, रथ ७, भानु ७, B	९	२०	७	१	२२	५८	११	२८	-	-
4	श्री दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी, श्रवण में बुध ५८।२०	९	२१	७	५३	२१	५९	१२	१०	०	४०
5	महानन्दा नवमी, हरसू ब्रह्मदेव पुण्य तिथि (चैनपुर रोहतास), श्रवण में बुध (६।४०)	९	२२	८	४३	२०	६/०	१२	५८	१	४०
6	भ. ४५।२ (२५।२०) से, धनिष्ठा में सूर्य ५।४७ (९।३८), शत. १ में गुरु २४।२ C	९	२३	९	३२	१९	१	१३	४६	२	३९
7	भ. १४।३० (१३।७) तक, जया ११ व्रत (सबका), भैनी एकादशी (बंगाल में प्रसिद्ध)	९	२४	१०	२०	१९	२	१४	३८	३	३६
8	प्रदोष व्रत, भीष्म द्वादशी, भीष्मोद्देश्य श्राद्ध तर्पण, तिल स्नान, तिल होम करें	९	२५	११	६	१८	३	१५	३०	४	३०
9	कल्पादि तिथि, मेला पंचखण्ड पीठ विराट नगर राजस्थान	९	२६	११	५१	१७	४	१६	२५	५	२०
10	भ. १८।५ (१४।३१) से ४९।५५ (२७।१५) तक, श्री जितेन्द्र रथयात्रा (जैन) D	९	२७	१२	३४	१७	५	१७	२०	६	६
11	सत्यव्रत माघी पूर्णिमा पुण्यं, भक्त रविदास जयंती, भैरवी जयंती, मेला बासवाड़ा, E	९	२८	१३	१५	१६	६	१८	१३	६	४८

A बाबा लाल दयाल जयंती, मकर में बुध प्रवेश ३३।२५ (२०।४६) B श्री माधवाचार्य जयंती, नर्मदा जयंती, मन्वादि:, बुध अस्त पूर्व दिशा में ९।३२ (११।१०) C (१६।५६), मार्गी शुक्र १८।१० (१४।३५) D श्री ललिता जयंती, श्री रामचरण स्नेही जयंती E पू.भा. में मंगल ५२।४० (२८।२०), उ.षा. ४ में नपच्यून ७।१५ (१०।१०)

ग्र. स्प. माघ शुक्ल ८ बुधे प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये ४ फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	०	१०	९	१०	८	११	४	१०	९	९	७
२१	२१	१३	८	६	२४	२१	१८	१८	१५	६	१३
७	४३	४४	२१	४	४५	५१	५	५	१४	२४	५४
५३	११	५८	३४	४८	२०	२९	२८	२८	१५	३	४४
६०	[illegible]	४७	९३	१४	४	५	३	३	३	२	१
५०	२७	१८	५०	१८	०	६	११	११	३०	१२	९
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

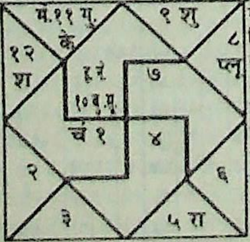

।। फलम् ।।

मास में पांच बुधवारों का फल उत्तम है, यथा- बुधस्य पंचवारा: स्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजाश्च सुख सम्पन्ना सुभिक्षं च प्रजायते॥ के अनुसार सर्वहारा वर्ग में नाना प्रकार के सुखों का प्रादुर्भाव होगा। कलकारखाना उद्योगों में उत्पादन अधिक होगा। नवीन तकनीक के माध्यम से कृषि कार्यों में तरक्की होगी। पैदावार बढ़ने से सौख्य समृद्धि बढ़ेगी। समयोचित उपयोगी वस्तुएँ प्राप्त होते रहने से जनता राहत महसूस करेगी। इस मास में यज्ञोत्सव धार्मिक कृत्यों की बढ़ोतरी होगी। वातावरण सरसता परिपूर्ण बनेगा। खेती हरी भरी सुहावनी लगेगी। पांच भौमवारों का फल राजनैतिक विक्षेप कारक होने के कारण चल रहे सामयिक राजनैतिक कामों में गतिरोध होगा। सरकारी मशीनरी की अकर्मण्यता वसात् देश में विदेशी कम्पनियों का वर्चस्व कायम होता चला जायेगा। सूर्य के आसन्न सभी ग्रहों का बनने वाला गोल योग कहीं विश्व के किसी भाग में वज्रोत्पात को जन्म दे सकता है। तेजी-मन्दी विचार- २९ जनवरी प्रतिपदा गुरुवार में चन्द्र दर्शन मुहूर्त ३० के प्रभाव से चालू मार्किट भावों में स्थिर लाईन बनेगी। इस मास अमा. पूर्णिमा में मंगलवार का अधीधिक्य योग मंहगाई कारक है, यथा माघस्यमासे रविजे कुजे वा भवेद्मा शीतकर प्रिबा। लोक: सशोक: क्षितिपाल लोक परस्परं युद्ध यति शस्त्र संधौ॥ आकाश लक्षण— अन्तरिक्ष में बनने वाले ग्रह योगायोग के कारण यत्र-तत्र बादल बाल किंवा मेघ गरज के साथ छींटे पड़ सकते हैं। पक्षारम्भ में शीत प्रकोप व्याप्त रहेगा। तुषारपात खड़ी फसलों में नुकसान पहुँचायेगा।

कु. पूर्णिमा सूर्योदये ११ फरवरी ❖ ग्र. स्प. माघ शुक्ल १५ बुधे प्रातः ५।३० बजे

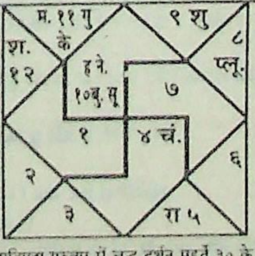

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	३	१०	९	१०	८	११	४	१०	९	९	७
२८	२३	१९	१९	७	२५	२२	१७	१७	१५	६	१४
१३	१९	१५	४४	४४	११	२७	४३	४३	३८	३९	१
१५	६	८	२४	४८	२१	४९	१२	१२	३९	२१	५१
६०	७३५	४७	१०३	१४	१२	५	३	३	३	२	०
४१	२७	८	०	१७	०	३४	११	११	२४	६	५१
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

माघ शुक्ला चतुर्थी तिलभिधा इयमेव कुन्द चतुर्थी एषा तु प्रदोष व्यापिनी ग्राह्येति। माघ शुक्ला पंचमी श्री पंचमी असौ पूर्वाह्ण व्यापिनी ग्राह्या। माघ शुक्ला सप्तमी अचलाख्या एवैव रथ सप्तमी सा चारुणोदय व्यापिनी ग्राह्येति। माघ शुक्ला अष्टमी भीष्माभिधा अस्यां भीष्म तर्पणं श्राद्ध च कार्यम्। माघ शुक्ला द्वादश्यां तिलोत्पत्तिः।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२२

दिनांक १२ से २६ फरवरी, सन् १९९८ ई.
शिशिर ऋतु, रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले

दि. घप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	तारीखें अं. फर.	शा. मा.	प्र. फा.	मु. सव	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.
[illegible]	१	गु	२६	१७	१७	४६	मघा	३४	१०	२०	५५	शो	४	७	८	५४	कौ	२६	१७	१७	४६	12	२३	१	१४	सिंह
१३	२	शु	३१	५२	१९	५९	पूफा	४०	५७	२३	३७	अति	५	२५	९	२४	गर	३१	५२	१९	५९	13	२४	२	१५	सिंह
१८	३	श	३८	१०	२२	२९	उफा	४८	२५	२६	३५	सु	७	२२	१०	१०	व	५	३	९	१४	14	२५	३	१६	क.६।२१
२२	४	र	४४	४५	२५	६	ह	५६	१०	२९	४०	धृ.	९	३८	११	३	बव	११	३०	११	४८	15	२६	४	१७	कन्या
२७	५	चं	५१	२०	२७	४३	चि	६०	०	-	-	शूल	१२	२	१२	०	कौ	१८	५	१४	२५	16	२७	५	१८	तु.१९।१२
३१	६	मं	५७	३३	३०	११	चि	३	५०	८	४२	गंड	१४	२०	१२	५४	गर	२४	२७	१६	५७	17	२८	६	१९	तुला
३५	७	बु	६०	०	-	-	स्वा	१०	५५	११	३१	वृ	१६	३	१३	३४	वि	३०	२	१९	१०	18	२९	७	२०	तुला
४०	७	गु	२	३२	८	९	वि	१६	४८	१३	५१	ध्रु	१६	५२	१३	५३	बव	२	३२	८	९	19	३०	८	२१	वृ.७।२७
४५	८	शु	६	०	९	३२	अनु	२१	१०	१५	३६	व्या	१६	२७	१३	४३	कौ	६	०	९	३२	20	फा	९	२२	वृश्चिक
५०	९	श	७	४०	१०	११	ज्ये	२३	४०	१६	३५	ह	१४	३८	१२	५८	गर	७	४०	१०	११	21	२	१०	२३	ध.१६।३५
५४	१०	र	७	१७	१०	०	मूल	२४	२३	१६	५०	वज्र	११	१५	११	३७	वि	७	१७	१०	०	22	३	११	२४	धनु
५९	११	चं	५	०	९	४	पूषा	२३	३२	१६	२९	सि	६	३०	९	४०	बा	५	०	९	४	23	४	१२	२५	म.२२।७
[illegible]	१२	मं	०	५२	७	२४	उषा	२०	५	१५	५	व्य	०/५२	१३/२८	७/२८	८/२	तै	०	५२	७	२४	24	५	१३	२६	मकर
०	१३	मं	५५	३	२९	४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०	०	०	००
७	१४	बु	४७	४५	२६	८	श्र	१५	३५	१३	१६	परि	४३	३७	२४	२९	वि	२१	२५	१५	३६	25	६	१४	२७	कु.२४।९
११	३०	गु	३९	४५	२२	५५	ध	९	५५	१०	५९	शिव	३४	८	२०	४०	च	१३	४७	१२	३२	26	७	१५	२८	कुम्भ

अं.	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर — दै.रवि स्पष्ट ग.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय		अस्त	
12	कुम्भ में सूर्य प्रवेश ४१।१३ (२३।४४), संक्रांति मु. ३०, साम्यार्घः, सौर फाल्गुन A	९	२९	१३	५६	[illegible]	[illegible]	१९	६	७	२८
13	गुरु पश्चिम में अस्त ३१।४५ (२०।४४)	१०	०	१४	३५	१४	७	१९	५९	८	२
14	भ.५।३ (९।१४) से ३८।१० (२२।२९) तक, उर्स निजामुद्दीन	१०	१	१५	१२	१३	८	२०	५०	८	३८
15	कृष्ण चतुर्थी व्रत	१०	२	१५	४८	१२	९	२१	४०	९	१०
16	कुम्भ में बुध ५४।२७ (२८।५८), उ.षा. में शुक्र ४।२० (८।५५)	१०	३	१६	२४	११	१०	२२	३२	९	४५
17	भ. ५७।३३ (३०।११) से,	१०	४	१६	५८	१०	११	२३	२५	१०	२०
18	भ. ३०।२ (१९।१०) तक, सायन मीन में सूर्य ४८।१२ (२६।२६), वसन्त ऋतु प्रारम्भ	१०	५	१७	३१	९	११	-	-	१०	५५
19	शतभिषा में सूर्य १७।४२ (१४।१३)	१०	६	१८	२	८	१२	०	१५	११	३४
20	कालाष्टमी अष्टका श्राद्ध, शत. में बुध ३६।४५ (२१।५०), शत. २ में गुरु १९।४८ B	१०	७	१८	३२	८	१४	१	८	१२	१८
21	भ. ३७।२८ (२२।६) से, समर्थ गुरु रामदास नवमी (जयन्ती)	१०	८	१९	१	७	१५	२	३	१३	२
22	भ. ७।१७ (१०।०) तक	१०	९	१९	२८	५	१५	२	५८	१३	५५
23	विजया एकादशी व्रत सर्वेषाम्, मकर में शुक्र १३।१० (१२।२०)	१०	१०	१९	५४	४	१६	३	५०	१४	५२
24	भ. ५५।३ (२९।४) से, भौम प्रदोष व्रत ऋणमोचन, मीन में मंगल ४०।२५ (२३।१३)	१०	११	२०	१९	३	१७	४	४४	१५	५५
0	त्रयोदशी क्षयः	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
25	भ. २१।२५ (१५।३६) तक, पंचक प्रारम्भ ४२।४७ (२४।९), महाशिव रात्रि व्रत, C	१०	१२	२०	४२	२	१७	५	३५	१६	५८
26	देव पितृ अमावस्या मन्वादिः, शिव खप्पर पूजा, श्री गंगा स्नान	१०	१३	२१	४	१	१८	६	२५	१८	३

Aमास प्रारम्भ, दीनबन्धु एन्ड्रयूज जयंती, सर्वोदय दिवस, मेला सौर पक्ष समा., धनिष्ठा में बुध ५६।२ (२९।४०) B(१५।३), रेवती ३, शनि ५।५७ (९।३१), राष्ट्रीय फाल्गुन प्रा., श्रीसीताष्टमी, जानकी जयंती C रुद्राभिषेक, श्री वैद्यनाथ जयंती, वासुपूज्य जयंती, ऋषि बोधोत्सव, आर्य समाज सप्ताह शुरू, स्वामी दयानन्द जयंती, कुम्भ महापर्व का स्नान हरिद्वार में।

ग्र. स्प. फाल्गुन कृष्ण ८ शुक्रे प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये २० फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	७	१०	१०	१०	८	११	४	१०	९	९	७
७	११	२६	५	९	२८	२३	१७	१७	१६	६	१४
१८	२१	१८	२६	५४	१८	१९	१४	१४	९	५८	८
३२	२८	६	२३	१७	५१	१४	३५	३५	१५	१५	५०
६०	५७	४६	१०८	१४	३०	६	३	३	३	२	०
२९	४१	५०	०	२५	१५	०	११	११	१५	०	४३
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा	मा.
उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शत.	अनु.	पूभा.	धनिष्ठा	शत.	उ.षा.	रेवती	पूफा.	शत.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

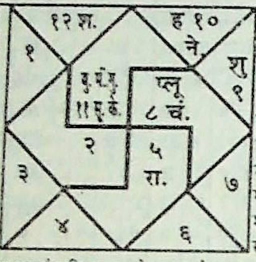

॥ फलम् ॥

मास में पांच गुरुवारों का फल नेष्ट है, यथा- यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च वृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धञ्च जायते॥ के अनुसार पश्चिमी भूभाग के देश-प्रदेश, पंजाब, जम्मू, कश्मीर, हिमाचल, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, रूस, अमेरिकादि अन्यान्य मुस्लिम राष्ट्रों में राज विग्रह, आन्तरिक कलह व्याप्त रहेगा। कहीं हस्तान्तरण की लड़ाई आरपार की लड़ी जायेगी। भारत सरकार को अपने हथियारों की धार तेज कर लेनी चाहिए। इस महीने कश्मीर का मुद्दा उभर कर सामने आयेगा। पांच शुक्रवारों का शुभ प्रभाव होने से अन्तर्राष्ट्रीय जगत में शान्ति परिचर्चायें खूब चलेंगी। लेकिन सभी मात्र लोक दिखावा के लिए होंगी। शान्ति के भुलावे में रहना मात्र धोखा समझना चाहिए। आस्तीन के छुपे सांपों से सावधान रहना चाहिए। तेजी-मन्दी विचार-मासारम्भ ता. १२ फरवरी बृहस्पतिवार में कुम्भ संक्रान्ति मु. ३० के प्रभाव से चालू मार्किट के भावों में समानता चलती रहेगी। फाल्गुन कृष्ण द्वादशी ता. २४ फरवरी मीन राशि में पहुंचने पर मंगल ग्रह पशुचारा, तृण, काष्ठ और चोपाया पशु भैंस, भेड़, बकरियां, गाय, बैल, ऊंट आदि के भावों में वृद्धि करेगा-मीन राशि कुजश्चैव तृणं काष्ठं चतुष्पदाम्। महर्घं जायते सर्वं गृह्णाते तत्र पण्डितैः॥ संग्रह कर्त्ताओं को आगे चलकर लाभ मिलेगा। आकाश लक्षण— ग्रह राशि नक्षत्र परिवर्तन तथा पश्चिमास्त गुरु के प्रभाव से मौसम खराब चलेगा। मेघ गर्जना के साथ ओले पड़ सकते हं। पर्वतीय प्रदेशों में हिमपात की आशंका जाननी चाहिए।

कु. अमावस्या सूर्योदये २६ फरवरी ❖ ग्र. स्प. फाल्गुन कृ. ३० गुरौ प्रातः ५।३० बजे

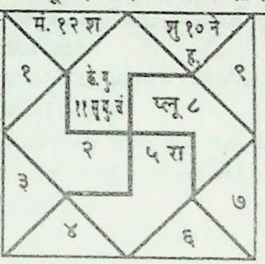

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१०	११	१०	१०	९	११	४	१०	९	९	७
१३	३	०	१६	११	१	२३	१६	१६	१६	७	१४
२१	१५	५९	५२	२०	३६	५६	५५	५५	२८	१०	१२
४	२२	१३	२२	५२	२१	२१	३१	३१	४५	१५	३१
६०	८१४	४६	११७	१४	४०	६	३	३	३	२	०
२०	४५	३६	३०	२५	११	३४	११	११	१५	०	३४
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	मा.
उ.	अ.	उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
शत.	धनिष्ठा	पूभा.	शत.	शत.	उ.षा.	रेवती	पूफा.	शत.	श्रवण	उ.षा.	अनु.

फाल्गुन कृष्णाष्टमी श्री सीता जयन्ती अस्यां श्री सीता पूजनं कार्यम्। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी शिवरात्राख्या एषां निशीथ व्यापिनी ग्राह्येति। तदुक्तम्-अर्धरात्रियुता यत्र फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी। शिवरात्रि व्रतं तत्र सोऽश्वमेध फलं लभेदिति। अस्यामेव महानदी देविकोत्पत्ति ते अस्यां देविका स्नानादिकेन शिवलोके वासः स्यात्॥

पंचांग दिवाकर

27 Feb. to 13 March, 1998

79

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

श्री विक्रम सम्वत् २०५४

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४
शाके १९१९ फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२३

दिनांक २७ फर. से १३ मार्च, सन् १९९८ ई.
वसन्त ऋतु, रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।

दि. घप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
२८/२६	१	शु	३१	१८	१९	३१	श	०/५६	३३/६०	८/२९	२०/४२
२१	२	श	२२	३७	१६	२	उभा	४९	५७	२६	५८
३०	३	र	१४	१८	१२	३९	रे	४३	५८	२४	३१
४५	४	चं	६	३०	९	३१	अ	३८	३५	२२	२१
०	५	चं.	५९	३५	३०	४५	०	०	०	०	०
४०	६	मं	५३	५५	२८	२७	भ	३४	२०	२०	३७
४५	७	बु	४९	५२	२६	४९	कृ	३१	२८	१९	२७
४५	८	गु	४७	२५	२५	४८	रो	३०	५	१८	५२
५०	९	शु	४६	३२	२५	२६	मृ	३०	२०	१८	५७
५५	१०	श	४७	०	२५	३६	आ	३२	०	१९	३६
३९/००	११	र	४९	५	२६	२४	पुन	३५	१७	२०	५३
५	१२	चं	५२	४२	२७	५०	पुष्य	३९	५०	२२	४१
१०	१३	मं	५७	७	२९	३५	आ	४५	२३	२४	५३
१५	१४	बु	६०	०	-	-	मघा	५१	४५	२७	२५
२०	१४	गु	२	३०	७	४२	पूफा	५८	५२	३०	१५
२५	१५	शु	८	३०	१०	५	उफा	६०	०	-	-

ति	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
१	सिद्ध	२४	१३	१६	४१	किं	५	३३	९	१३
२	सा	१४	८	१२	३८	कौ	२२	३७	१६	२
३	शुभ	४/५४	२०/६०	८/२८	३८/४४	गर	१४	१८	१२	३९
४	ब्र	४५	५७	२५	१८	वि	६	३०	९	३१
५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	ऐं	३८	१५	२२	११	कौ	२६	४७	१७	३६
७	वै	३१	३८	१९	३१	गर	२१	५५	१५	३८
८	वि	२६	१२	१७	१९	वि	१८	४०	१४	१८
९	प्री	२२	५	१५	३९	बा	१७	०	१३	३७
१०	आ	१९	१०	१४	२८	तै	१६	४८	१३	३१
११	सौ	१७	२७	१३	४५	व	१८	१	१४	०
१२	शो	१६	५५	१३	३१	बव	२०	५५	१५	७
१३	अति	१७	१३	१३	३७	कौ	२४	५५	१६	४२
१४	सु	१८	१२	१४	०	गर	२९	५०	१८	३९
१४	धृ	१९	५०	१४	३८	व	२	३०	७	४२
१५	शूल	२१	५५	१५		बव	८	३०	१०	५

ति	तारीखें अं. फ.	शा. फा.	प्र. फा.	मु. सद	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	
१	27	८	१६	२९	मी. २४।२३	पू.भा. में बुध ३२।८ (१९।५१)
२	28	९	१७	३०	मीन	चन्द्रदर्शन मु. ४५, फुलैरा दौज, श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती, श्री राजेन्द्र प्रसाद A
३	M1	१०	१८	जि	मे. २४।३१	भ. ४०।२४ (२३।६) से, पंचक समा. ४३।५८ (२४।३१), मार्च मास ३ ता. ३१, B
४	2	११	१९	२	मेष	भ. ६।३० (९।३१) तक, बुध उदय पश्चिम में १९।२२ (१४।४०), पू.फा. १ राहु, C
५	0	०	०	०	००	पंचमी क्षय:
६	3	१२	२०	३	वृ.२६।२०	Gसाहिब (पंजाब), चैतन्य महाप्रभु जयंती, मन्वादि:
७	4	१३	२१	४	वृष	भ. ४९।४२ (२६।४९) से, अष्टाह्निक जैन व्रतारम्भ, पू.भा. में सूर्य ३४।२ D
८	5	१४	२२	५	वृष	भ. १८।४० (१४।१८) तक, श्री अन्नपूर्णाष्टमी, दादुदयाल ज., मीन में बुध १।२७ (७।२५)
९	6	१५	२३	६	मि.६।५३	शतभिषा ३ में गुरु १२।१३ (११।४२), उ.भा. में बुध ५६।१२ (२९।१८)
१०	7	१६	२४	७	मिथुन	उ.भा. में बुध
११	8	१७	२५	८	क.१४।३३	भ. १८।५ (१४।१०) से ४९।५ (२६।२४) तक, आमला एकादशी व्रत (सबका), E
१२	9	१८	२६	९	कर्क	आमला एकादशी व्रत निम्बार्कानाम्, श्रवण में शुक्र २९।२५ (१८।३१)
१३	10	१९	२७	१०	सिं.२४।५३	भौम प्रदोष व्रत, ऋणमोचन के लिए श्रेष्ठ
१४	11	२०	२८	११	सिंह	प्लूटो (यम) वक्री १९।४५ (१४।३७)
१४	12	२१	२९	१२	सिंह	भ. २।३० (७।४२) से ३५।३० (२०।५४) तक, सत्यव्रत पूर्णिमा, होलिका F
१५	13	२२	३०	१३	क.१२।५९	उदया पूर्णिमा पुण्यं, छारेंडी, धुलैण्डी, वसन्तोत्सव मेला आनन्दपुर G

ति	दै.रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय घं	मि	अस्त घं	मि
१	१०	१४	२१	२४	६/५७	६/१८	७	१०	११	१७
२	१०	१५	२१	४२	६/५६	१८	७	५५	२०	१८
३	१०	१६	२१	५७	५६	१८	८	४०	२१	२५
४	१०	१७	२२	११	५५	१९	९	२३	२२	२८
५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	१०	१८	२२	२२	५३	१९	१०	८	२३	३२
७	१०	१९	२२	३२	५२	२०	१०	५५	-	-
८	१०	२०	२२	४३	५०	२०	११	४४	०	३५
९	१०	२१	२२	४७	४९	२१	१२	३४	१	३२
१०	१०	२२	२२	५१	४८	२२	१३	२८	२	२८
११	१०	२३	२२	५३	४६	२२	१४	२०	३	१८
१२	१०	२४	२२	५३	४५	२३	१५	१४	४	४
१३	१०	२५	२२	५१	४४	२४	१६	८	४	४८
१४	१०	२६	२२	४६	४३	२५	१७	०	५	२६
१४	१०	२७	२२	४०	४२	२६	१७	५५	६	४
१५	१०	२८	२२	३२	४१	२७	१८	४५	६	४०

Aनिर्वाण दिवस, मंगल पश्चिम में अस्त ५२।२० (२७।५५) B पं. लेखरामवीर ३, उ.भा. में मंगल (६।११), जिल्काद मु. मास ११, श्रवण ३ हर्शल ३६।२५ (२१।३०) Cशत. ३ केतु ४७।३० (२५।५५) D(२०।२९), होलाष्टक प्रारम्भ ४९। ५२ (२६।४९) E श्री राम स्नेही सम्प्रदाय शाहपुरी का फूलडोल उत्सव प्रारम्भ, महिला दिवस Fदहन भद्रोत्तर, दारुण रात्रि हुताशनी, मुनिनाथूलाल पुण्य: (जैन)

ग्र. स्प. फाल्गुन शुक्ल ८ गुरौ प्रात: ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये ५ मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१	११	१०	१०	९	११	४	१०	९	९	७
२०	१५	६	२९	१३	६	२४	१६	१६	१६	७	१४
२२	४८	२५	५१	१	२९	४२	३३	३३	५०	२२	१५
४३	४४	१३	१६	५१	५०	३९	१५	१५	१५	५५	३
६०	८०९	४६	१०९	१४	४६	६	३	३	३	१	०
३	४९	२६	०	२६	१७	४३	११	११	०	४४	१२
मा.	मा.	मा.	मा	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा	मा	मा
उ.	उ.	अ.	उ.	अ	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

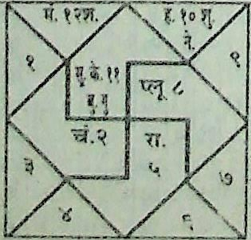

॥ फलम् ॥

मास में पांच गुरुवारों का फल नेष्ट तो पांच शुक्रवारों का फल श्रेष्ठ है, यथा- **शुक्रस्य पंचवारास्यु यत्र मासे निरन्तरम्। प्रजावृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥** के अनुसार विश्व में चारों प्रकार के प्राणियों की वृद्धि होगी। नवीन तकनीक के माध्यम से कृषि में पैदावार अधिक होगी। वृक्षों में इस मास फल फूल खूब लगेंगे। हरी सब्जियों की वृद्धि होगी। कल कारखाना उद्योग धन्धों में उत्पादन अधिक होने सौख्य समृद्धि बढ़ेगी। सभी को समयोचित वस्तुयें मिलती रहेंगी। जनता राहत महसूस करेगी। क्रूर पाप के मध्य में रवि के **केतु संग। अनहोनी होवे तभी होय किसी से जंग।** इस योग के साथ- साथ मीन राशि में दु:खों के सृजनकर्त्ता शनि के साथ युद्ध के देवता मंगल का योग श्रेष्ठ नहीं है। अन्तरिक्ष में बनने वाले सभी ग्रह योग उत्पातकारी हैं। अत: शान्ति के मध्य अशान्ति का खुला ताण्डव नृत्य होगा। सत्ता के भूखे भेड़िये नीति का परित्याग कर एक दूसरे को नीचा दिखाने में लगे रहेंगे। तेजी-मन्दी विचार-द्वितीया शनिवार में नवीन चन्द्रमा के दर्शन मु. ४५ महंगाई अभिवृद्धि में सहायक है। अन्य ग्रह योग महंगाई कारक हैं। कुछ वस्तुओं के भाव घटेंगे तो कुछ वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे। अनिश्चितता के माहौल में व्यापार सोच विचार कर करें। आकाश लक्षण — कभी आकाश स्वच्छ तो कभी मेघों से घिरा रहेगा। कहीं हल्की वर्षा भी सम्भव है। वायु अति तीव्र गति से चलेगी। नाना प्रकार के रोगों की वृद्धि होगी।

कु. पूर्णिमा सूर्योदये १३ मार्च ❖ ग्र. स्प. फाल्गुन शुक्ल १५ शुक्रे प्रात: ५।३० बजे

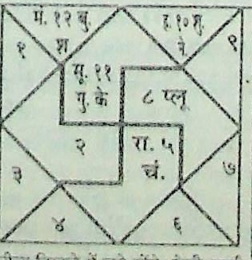

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	४	११	११	१०	९	११	४	१०	९	९	७
२८	२६	१२	१४	१४	१२	२५	१६	१६	१७	७	१४
२२	१७	३६	२०	५६	५६	३७	७	७	१३	३६	१५
३२	५१	१३	१६	१६	२६	३९	४८	४८	४२	१७	५१
५९	७११	४६	८९	१४	५१	७	३	३	२	१	०
५०	२४	०	१५	१७	४३	८	११	११	४७	३४	१२
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.
उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

फाल्गुन शुक्लाष्टम्यां होलिकारम्भ: तत्र देश भेदेन विवाहादीनां शुभ कार्याणां निषेधोक्त:। विपाशेरावती तीरे शतेन्द्रयाश्च त्रिपुष्करे। विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राक् दिनाष्टकम्। फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमायां होलिका दहन विधेयम् तत्र सायं व्यापिनी ग्राह्येति। इस दिन सायंकाल को यदि पूर्व, उत्तर और ईशान दिशा की वायु हो तो उत्तम, पश्चिम और वायव्य की मध्यम्॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री विक्रम सम्वत् २०५४

शाके १९१९ चैत्र कृष्ण पक्ष-२४

दि. घप	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	तारीखें अं. मा	शा. फा	प्र. चैत्र	मु. जि.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.
२९/३०	१	श	१४	५५	१२	३८	उफा	६	२८	९	१५	गंड	२४	१५	१६	२२	कौ	१४	५५	१	३८	14	२३	१	१४	कन्या
३५	२	र	२१	३०	१५	१४	ह	१४	१२	१२	१९	वृ.	२६	४५	१७	२०	गर	२१	३०	१५	१४	15	२४	२	१५	तु. २५।४९
४०	३	चं	२७	५२	१७	४६	चि	२१	४७	१५	२०	ध्रु	२९	२	१८	१४	वि	२७	५२	१७	४६	16	२५	३	१६	तुला
४५	४	मं	३३	५५	२०	१०	स्वा	२९	३	१८	१३	व्या	३१	५	१९	२	बव	०	५५	६	५८	17	२६	४	१७	तुला
५०	५	बु	३९	५	२२	१३	वि	३५	३२	२०	४८	ह	३२	३३	१९	३६	कौ	६	३३	९	१२	18	२७	५	१८	वृ. १४।१०
५५	६	गु	४३	७	२३	४९	अनु	४१	०	२२	५८	वज्र	३३	८	१९	४९	गर	११	७	११	१	19	२८	६	१९	वृश्चिक
५९	७	शु	४५	४३	२४	५०	ज्ये	४५	०	२४	३३	सि	३२	३८	१९	३६	दि	१४	२८	१२	२०	20	२९	७	२०	ध. २४।३३
३०/९	८	श	४६	३२	२५	९	मूल	४७	२५	२५	३०	व्य	३०	५०	१८	५२	बा	१६	१०	१३	०	21	३०	८	२१	धनु
९	९	र	४५	३३	२४	४३	पूषा	४८	०	२५	४२	वरि	२७	४०	१७	३४	तै	१६	५	१२	५६	22	चै	९	२२	धनु
१४	१०	चं	४२	३०	२३	२९	उषा	४६	४२	२५	१०	परि	२३	०	१५	४१	व	१४	०	१२	५	23	२	१०	२३	म. ७।४२
१८	११	मं	३८	३५	२१	५४	श्र	४४	१३	२४	९	शिव	१६	५०	१३	१२	बव	१०	३५	१०	४२	24	३	११	२४	मकर
२३	१२	बु	३१	२७	१९	१	ध	३८	५०	२१	५८	सिद्ध	९	२२	१०	११	कौ	५	२	८	२७	25	४	१२	२५	कु. ११।२
२८	१३	गु	२३	४५	१५	५५	श	३२	५२	१९	३४	सा	०/५०	४२/५२	६/२६	४२/४६	व	२३	४५	१५	५५	26	५	१३	२६	कुम्भ
३३	१४	शु	१५	८	१२	२७	पूभा	२६	३	१६	४९	शु	४०	३५	२२	३८	श	१५	८	१२	२७	27	६	१४	२७	मी. ११।३१
३७	३०	श	५	५५	८	४५	उभा	१८	४२	१३	५२	ब्रह्म	२९	५५	१८	२१	ना	५	५५	८	४५	28	७	१५	२८	मीन

दिनांक १४ मार्च से २८ मार्च, सन् १९९८ ई. वसन्त ऋतु, रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले

दै. सूर्य स्पष्ट स्टैं.टा. जालन्धर

तारीख	घटी-पलों के साथ-साथ भा.स्टैं टा. कोष्ठकों में घं.मि. में है। घटी-पलात्मक समय जालन्धर सूर्योदय उपरान्त है।	दै.रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि	सू.उ.अ. उ	अ	चन्द्रोदय उदय		अस्त	
14	मीन में सूर्य प्रवेश ३४।५५ (२०।३८), संक्रान्ति मु. ३०, बसंत प्रतिपदा A	१०	२९	२२	२२	६/४०	६/३८	१९	३५	७	१२
15	भ. ५४।४१ (२८।३०) से, भाई २, सन्त तुकाराम जयंती, गुरु पूर्व में उदय ५५।५ (२८।४०)	११	०	२२	९	३८	२८	२०	२८	७	५०
16	भ. २७।५२ (१७।४६) तक, सोम शीलता पूजा, चतुर्थी व्रत, कल्पादि:	११	१	२१	५५	३७	२९	२१	१८	८	२०
17	उभा. में सूर्य ५५।५० (२८।५६)	११	२	२१	४०	३६	३०	२२	१०	८	५५
18	रंगपंचमी होली मिलन, रेवती में मंगल १५।२० (१२।४३)	११	३	२१	२२	३५	३१	२३	२	९	३२
19	भ. ४३।७ (२३।४९) से, एकनाथ षष्ठीव्रत	११	४	२१	२	३४	३२	२३	५५	१०	१५
20	भ. १४।२८ (१२।२०) तक, शीतला माता पूजन, सायन मेष में रवि ४७।१८ (२५।२८), B	११	५	२०	४१	३३	३३	-	-	१०	५८
21	शीतलाष्टमी (बासोड़ा) पर्युषितान्न ग्रहण, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, ऋषभ देव ज., C	११	६	२०	१८	३२	३४	०	४८	११	४५
22	नौचण्डी मेला मेरठ प्रारम्भ, राष्ट्रीय चैत्रमास प्रारम्भ, शाके १९२० प्रारम्भ	११	७	१९	५३	३०	३४	१	४०	१२	३८
23	भ. १४।० (१२।५) से ४२।३० (२३।२९) तक, श्रीदशमाता व्रत, शहीद दिवस	११	८	१९	२६	२९	३५	२	३२	१३	३५
24	पापमोचनी एकादशी व्रत (सबका), धनि में शुक्र २३।५० (१६।०)	११	९	१८	५८	२८	३५	३	२५	१४	३६
25	पंचक प्रारम्भ ११।३० (११।२), प्रदोष व्रत	११	१०	१८	२८	२६	३५	४	१०	१५	४०
26	भ. २३।४५ (१५।५५) से ४९।२७ (२६।१२) तक	११	११	१७	५६	२५	३६	४	५८	१६	४६
27	शनि पश्चिम में अस्त १०।५० (१०।४४)	११	१२	१७	२२	२४	३७	५	४५	१७	५२
28	उदया अमापुण्यं, सम्वत् समाप्त, सम्वत्सरारंभः नवरात्र प्रारम्भः, श्री गौतम जयंती, D	११	१३	१६	४६	२३	३८	६	२९	१९	१

A होला मेला पंखा मेला झझर, सौरमास चैत्र प्रारम्भ, रेवती में बुध ३१।० (१९।४) B बसन्त सम्पात् सूर्य का उत्तर गोल में प्रवेश, शतभिषा ४ में गुरु ११।५६ C केशरिया मेला मेवाड़ (जैन), मेला केला देवी करौली (राज.), रेवती ४ शनिः ४०।३५ (२२।४६) D बुध वक्री १।५७। (७।१०), कुम्भ महापर्व का शाही स्नान

ग्र. स्प. चैत्र कृ. ८ शनौ प्रातः ५।३० बजे ❖ कु. अष्टमी सूर्योदये २१ मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	८	११	११	१०	९	११	४	१०	९	९	७
६	२	१८	२४	१६	२०	२६	१५	१५	१७	७	१४
२०	३५	४३	४१	५०	६	३४	४२	४२	३५	४८	१४
१८	१८	५४	१६	१०	४०	४९	२१	२१	३८	३२	१०
५९	[illegible]	४५	४०	१३	५५	७	३	३	३	१	०
३५	५२	५१	०	५१	५१	९	११	११	१७	१७	२४
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.
उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	-	-	-
उभा.	मूल	रेवती	रेवती	शत.	श्रवण	रेवती	पूफा.	शत.	श्रवण	उषा.	अनु.

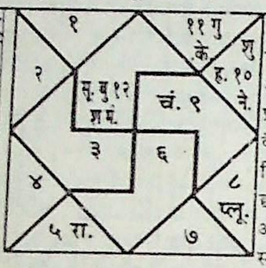

॥ फलम् ॥

मीन राशि में बुध का प्रभाव इस प्रकार लिखा है-**धने-मीने-बुधोयाति मारयति मृगान गजान्। प्रजाशाशकयोर्वैरं करोति विग्रहं तदा॥** के अनुसार इस मास में वन्य प्राणी मृग गज आदि की क्षति होगी। पर्यावरण प्रदूषण वसात् अन्यान्य प्राणियों को भारी कष्ट होगा। राजा-प्रजा में परस्पर वैमनस्य बढ़ता जायेगा। किंवा राज विग्रह, आन्तरिक कलह बढ़ेगा। राष्ट्र विरोधी असमाजिक तत्व दुराचारी, तस्कर अव्यवस्था फैलाने में कसर नहीं छोड़ेंगे। सरकार को प्रभावी कदम उठाने पड़ सकते हैं। पश्चिमी प्रदेशों में अधिक गड़बड़ी की आशंका जाननी चाहिए। अमेरिका, रुस, चीन, जापान, सऊदी अरब, इजराइल आदि किसी देश में राज विग्रह सम्भव है। तेजी-मन्दी विचार- चैत्र कृष्ण प्रतिपदा शनिवार ता. १४ मार्च में सूती मीन संक्रान्ति मु. ३० साम्यार्घ कारक है। अन्य ग्रह योगायोग के फलस्वरूप गेहूँ, जौ, चनादि अनाज, सभी दालें, चावल, चीनी, रसकश के दामों में मन्दी की चाल चलेगी। सोना, चांदी, वस्त्र, कलपुर्जे, शेयर महंगे होंगे। आकाश लक्षण- यत्र-तत्र बादल चाल तो कहीं आकाश प्राय स्वच्छ रहेगा। पक्षान्त में बूंदाबांदी सम्भव है। चैत्रमास की वर्षा आगामी फसल के लिए श्रेष्ठ नहीं होती।

कु. अनावस्या सूर्योदये २८ मार्च ❖ ग्र. स्प. चैत्र कृष्ण ३० शनौ प्रातः ५।३० बजे

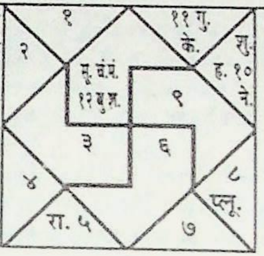

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	११	११	११	१०	९	११	४	१०	९	९	७
१३	११	२४	२७	१८	२६	२७	१५	१५	१७	७	१४
१६	२०	४	४०	२६	४९	२६	२०	२०	५२	५७	११
४६	५७	२०	१५	५८	१६	२७	६	६	४७	२७	०
५९	११५	४५	३	१३	५९	७	३	३	२	१	०
२२	२६	३४	०	४३	०	३३	११	११	२७	१६	३५
मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	मा.	मा.	व.
उ.	अ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.	-	-	-
उ.भा.	उ.भा.	रेवती	रेवती	शत.	धनिष्ठा	रेवती	पूफा.	शत.	श्रवण	उषा.	अनु.

चैत्र मास कृत्यम्— चैत्र कृष्ण प्रतिपदि वसन्तोत्सवं विधेयम् अत्रैव चौदयिकी ग्राह्येति इह आम्रपुष्प प्राशनम्। चैत्र कृष्ण त्रयोदश्यां योग विशेषेण महावारुणी संज्ञा योगो भवेत्। तदुक्तम्—शनिवार समायुक्ता सा महावारुणी स्मृता। गंगाया यदि लभ्येत कोटि सूर्य ग्रहादिका। शुभयोगसमायुक्ता शनौ शतभिषा यदि। महा महति विख्याता त्रिकोटि कुलशुद्धेरत॥

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

कुण्डली में मंगलीक योग विचार

बालारिष्ट एवं गण्डान्त नक्षत्र-विचार

ज्योतिष विद्. ने बालारिष्ट तीन प्रकार से माना है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुण्डली में मंगलीक योग विचार

लडके या लड़की की जन्म कुंडली में यदि पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में मगल पड़ जाए तो एक दूसरे के जीवन को अरिष्टकारी होते हैं। यदि बर और कन्या दोनों की कुंडलियां मंगलीक हों तो विवाह करने में कोई दोष नहीं। यद्यपि योनि, गुण नाड़ी गण इत्यादि का मिलान भी कर लेना चाहिए। कुछ अन्य दशाओं में भी मंगल दोष शान्त हो जाता है यदि —

(१) अन्य कुंडली में १, ४, ७, ८, १२ भाव में शनि हो तो उसका भौम दोष शान्त हो जाता है— यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने व हिबुके तथा ।
अष्टमे द्वादशे चैव भौम दोषो न विद्यते ॥

(२) बली गुरु शुक्र-लग्न या ७ भाव में हो तो भी भौम दोष नहीं रहता।

(३) यदि कन्या की कुं.में जहां मंगल हो, उसी स्थान पर वर की कु. में कोई प्रबल पाप ग्रह हो तो भौम दोष नहीं रहता—

शनि भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत् ।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौम दोष विनाशकृत् ।

(४) मेष राशि का मंगल लग्न में , या वृश्चिक राशि का मंगल ४ भाव में या मकर का सातवें या कर्क का आठवें या धनु राशि का मंगल १२वें हों तो भौम दोष नहीं रहता।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुज ।
शने मृगे कर्किचाष्टौ भौमं दोषो न विद्यते ॥

(५) न मगली चन्द्रे भृगु न मंगली पश्यति यस्य जीव ।
न मंगली केन्द्रगते च राहुर्न द्वितीये न मंगली मगल-राहु योगो ॥

अर्थात् यदि दूसरे भाव में चन्द्र-शुक्र हो, मगल-गुरु की युति हो या गुरु पूर्ण दृष्टि से भौम को देखता है केन्द्र भाव में राहु अथवा मंगल-राहु कहीं इकट्ठे हों। (मुहूर्त दीपक से)

(६) केन्द्र में चन्द्र या चन्द्र-मंगल की युति होने पर भी भौम दोष नहीं रहे।

(७) केन्द्र त्रिकोण में शुभ-ग्रह तथा ३, ६, ८, ११वें भाव में पाप ग्रह हों तो भी भौम दोष शान्त हो जाता है।

(८) षष्ठे च भवने भौमो राहुः सप्तम सम्भव ।
अष्टमे च यदा सौरितस्य भार्या न जीवति ॥

—अर्थात् वर की कु.में छठे भाव में मंगल सातवें में राहु, आठवें शनि हो तो उसकी पत्नी जीवित नहीं रहती। अर्थात् मंगलीक जैसा प्रभाव होता है।

(९) राशि मैत्रं यदायाति गणैक्यं वा यदा भवेत् ।
अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते ॥

—अर्थात् राशि मैत्री हो. गण भी एक हो या तीस से अधिक गुण मिलते हो तो भौम दोष का विचार नहीं करना चाहिए।

(१०) वक्री, नीच, अस्त अथवा शत्रु क्षेत्री मगल १,४,७ ८, १२वें भाव में हो तो भी भौम-दोष नहीं रहता है।

बालारिष्ट एव गण्डान्त नक्षत्र-विचार

ज्योतिष विदों ने बालारिष्ट तीन प्रकार से माना है।
१) गण्डान्तारिष्ट २) ग्रह-अरिष्ट ३) पताकी-अरिष्ट
(ग्रहारिष्ट जानने के लिए पृष्ठ २५ देखें)

गण्डारिष्ट—मघा, मूला और अश्विनी नक्षत्र के आदि की चार चार घड़ियां तथा आश्लेषा,ज्येष्ठा और रेवती नक्षत्र की अन्तिम चार घड़ियां गण्डदोष युक्त मानी जाती है। इन्हीं को गण्डमूल नक्षत्र कहते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न बालक अथवा बालिका अपने शरीर के लिए अरिष्टकारी तथा माता, पिता एवं उनके धन का नाश करने वाली होती है। यदि किन्हीं उपायों से जीवित रहे तो धन, धान्य एवं सुख से सम्पन्न होता है। गण्डमूल में उत्पन्न सन्तान को छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को देखना नहीं चाहिए। किसी विद्वान् ब्राह्मण द्वारा गण्डान्त नक्षत्र की विधिवत् शांति करवा कर मुख दर्शन करना शुभ रहता है।

मघा फलम्—प्रथम पाद में उत्पन्न हो तो माता या नानके पक्ष को हानि, द्वितीय पाद में पिता को भय, तीसरे पाद में शुभ, चतुर्थ में धन लाभ होगा।

ज्येष्ठा फलम्—प्रथम पाद में बड़े भ्राता को अरिष्टकारी, द्वितीय में लघु भ्राता का नाश, तृतीय में माता या नानी का नाश, चतुर्थ में पिता को कष्ट।

अश्विनी फल—प्रथम पाद में जन्म होने से पिता को कष्टकारी। शेष तीन चरणों में शुभ कहा गया है।

आश्लेषा फलम्—प्रथम चरण शुभ है। दूसरे में पिता के धन का नाश, तीसरे में सास या माता का नाश चतुर्थ चरण में पिता को कष्टकारी होता है।

रेवती फलम्—रेवती नक्षत्र के प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण में जन्म हो तो शुभ किन्तु चतुर्थ चरण में गृह में भय और कष्टकारी होता है।

ज्येष्ठा अथवा मूला—नक्षत्र के मध्य, दिनमें जन्म हो तो पिता को कष्ट।

मूला अथवा आश्ले—नक्षत्र के मध्य, रात्रिमें जन्म हो तो माता को कष्ट।

रेवती अथवा अश्वि—नक्षत्र के मध्य संध्या में जन्म हो तो अपने शरीर का कष्ट जानें।

तिथि विचार—दोनों पक्षों की पचमी,दशमी, पूर्णिमा और अमावस्या को अन्तिम घट्यादि में जन्म होना अरिष्टाकारी होता है। कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी (१४) के किसी भी भाग में जन्म होना भी अशुभ माना गया है।

समान नक्षत्र जन्म फल—यदि पिता पुत्र, माता-कन्या अथवा दो भाईयों का जन्म नक्षत्र एक हो तो दोनों में से एक की अवश्य मृत्यु हो जाती है। कल्याण के लिए कुल देवता की पूजा तथा महामृत्युञ्जय का पाठ करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्षफल बनाने की सारणी

वर्ष	१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	७	०१	३	४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४
घटी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०
पल	३१	०२	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	[illegible]	०६	[illegible]
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	[illegible]	[illegible]	२१
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	[illegible]	[illegible]	[illegible]
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष		४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४
	१५	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५
	३१	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४१	२१	५२	२४	५५	२७	५८
[illegible]	३०	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	[illegible]	०७	०१
	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१	२६
	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८
[illegible]	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्षफल साधन

जिस सम्वत्सर का वर्षफल निकालना हो उस सम्वत् मे जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गतवर्ष जानो। सारणी में जितने गतवर्ष हों उतने नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष का वार और इष्ट घड़ीपल हो जाते हैं इस इष्ट के अनुसार लग्न सारणी से लग्न बना लेना। वह वर्ष लग्न होगा।

मुन्था—गतवर्षों में जन्म लग्न जोड़ो १२ का भाग दें जो शेष बचे उस राशि में मुन्था लगावें।

त्रिपताकी चक्र—प्रवेश के वर्षों को ९ का भाग दें जो शेष बचे जन्मराशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें शेष ग्रहों के लिये ४ का भाग देकर जन्म कुण्डली के ग्रहों से लगाना।

दशा—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें दो घटावें ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो दशा जाननी. १ बचे तो सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मगल. ४ से राहु, ५ से गुरु. ६ से शनि, ७ से बुध. ८ से केतु, ९ से शुक्र, की दशा जानें।

दशा दिनानि—सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा ३०, मगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१. शुक्र ६० यह सब के दशा के दिन हैं।

स्थान बल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३, मगल ६, बुध १, गुरु ११वें शुक्र ५वें, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ बल देते हैं।

स्वोच्चबल—सूर्य २।५ चन्द्र २।४ म १।८।१० बुध ३।६ बृहस्पति१२।९।४ शुक्र २ ७।१२ शनि १० ११।७ इन राशियों में ५ बल देते हैं।

स्त्री पुरुष ग्रह—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७ ८।९ घर में ५ बल देते हैं और पुरुष ग्रह लग्न से ४।५।६।१०। ११।१२ घरों में ५ बल देते है। दिन में पुरुष ग्रह रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि	क.	सि	क.	तु	वृ	ध	म.	कु	मी.	राशि
सू.	शु	श.	शु	बु	चं	बु.	मं	श.	मं.	बृ	चं.	दिनपति
बृ	चं.	बु	मं	सू	शु	श	शु	श	मं.	बृ	चं	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह है वही त्रिराशिपति होगा।

दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्षमित्र	५-९	५-९	५-९	५-९	५-३	[illegible]-९	५-९
गुप्त मित्र	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११	३-११
प्रत्यक्षशत्रु	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७	१-७
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दृष्टि ज्ञान

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं। (१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवती होती है। (२) गुप्तमित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इसका फल कार्य में शीघ्र सफलता सम्बन्धियों में सुख प्रेम और लाभ इत्यादि इससे जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है उससे प्रेम उत्पन्न होता है।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त हो, परन्तु करने वाली गुप्त रूप से शत्रुता होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होती है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है किन्तु प्रत्यक्ष न होकर गुप्त भाव से सफलता का कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना बनते काम में विघ्न [illegible]

॥ वर्ष कुण्डली में लग्नादि १२ भावों के फल ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

और गुरु चन्द्रमा आठवें हो और अशुभ ग्रह की इन पर दृष्टि हो और चन्द्रमा क्षीण हो तो मृत्यु योग होता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ वर्ष कुण्डली में लग्नादि १२ भावों के फल ॥

ग्रह	लग्न १	धन २	सहज ३	सुख ४	पुत्र ५	शत्रु ६	स्त्री ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सू	क्लेशभय चिन्ता	शोक राजभय	पराक्रमी धन लाभ	हानि भय	रोगभय पुत्र हानि	सुख शत्रुनाश	स्त्री कष्ट पीड़ा भय	शोक कष्ट भय	धर्म वृद्धि राज्यपद:	सुखधन लाभ	सुख धन लाभ	उद्वेग पीड़ा
च	कफज्वर पीड़ा	नेत्र पीड़ा धन लाभ	धन लाभ सुखी	सुख शत्रु नाश	सुख सुमति	अंग पीड़ा व्यय	ज्वरादि भय	कष्ट	पुण्योदय धन लाभ	सुकर्मकर्ता जय प्राप्ति	यश धन लाभ	व्यय नेत्रपीड़ा
मं	वातार्ति व्रण	दुःखारक धन नाश	निरोग्य द्रव्य लाभ	व्यसन रोगभय	पश्चार्ति: दुर्मति:	सुख शत्रु नाश	स्त्री नाश कष्ट	ज्वर व्रण	पुण्योदय यश	राज्यसेधन प्राप्ति	सुख जय	शस्त्रभय कर्णपीड़ा
बु	सुख धन लाभ	द्रव्यप्राप्ति सुख	सुख मान	सुख द्रव्य लाभ	पुत्रधन सुख प्राप्ति	रोग भय क्लेश	धन लाभ सुख	व्यग्रता कफपीड़ा	धन लाभ कीर्ति	मौन सुख	धन पुत्र लाभ	शत्रु रोगभय
गु	सुख यश धन लाभ	कीर्ति धन लाभ	जय सुख	सुख वाहन प्राप्ति	सुख वस्त्र प्राप्ति	शत्रु रोग भय	सुख धन लाभ	कठिन रोग भय	सुख भाग्योन्नत	राज्यसेधन लाभ	क्षम धन लाभ	शोक रोगभय
शु	मान धन लाभ	धन लाभ सुख	कीर्तिवर्धन धन लाभ	सुख धन लाभ	पुत्र प्राप्ति धन लाभ	कष्ट शत्रु भय	कलत्र सौख्यम	ज्वर पीड़ा	धर्मतत्पर धन लाभ	मान जय लाभ	धन पुत्र लाभ	व्यय नेत्र पीड़ा
श	शत्रु भय वातार्ति:	पीड़ाभय विरोध	धन प्राप्ति जय	धन सुख नाश कष्ट	पुत्र हानि पीड़ा	धन प्राप्ति मतिनाश	स्त्री कष्ट क्लेश	दुःख रोग भय	भाग्यवृद्धि शत्रुनाश	धन हानि पीड़ा	पुत्र हानि लाभ	क्लेश चिन्ता
रा	शिरोर्ति: कलह	नृपाद्भीति पीड़ा	शत्रु नाश सुख	वातार्ति दुःख	बुद्धिनाश धन रहित	शत्रुनाश आरोग्य	पीड़ा भय धन हानि	धन हानि रोगभय	धन धर्म में वृद्धि	वाहन नाश भय	पुत्रप्राप्ति लाभ	व्याधि भय
के	पीड़ा भय चिन्ता	क्लेश धन हानि	आरोग्य धन लाभ	कष्ट राज्य भय	पीड़ाभय दुर्मति	सुख धन लाभ	क्लेश रोग	ज्वरपीड़ा भय	भाग्यवश धन लाभ	कीर्ति धन लाभ	पुत्रकष्ट लाभ	शोक भय
मु	मृत्यु शत्रुनाश	यश धन लाभ	कायपुष्टि धन लाभ	अंग पीड़ा दुःख	सद्बुद्धि सुख	रोग भय धन नाश	रोग भय व्यसन	दुर्व्यसन रोग भय	भाग्योदय	राज्यसुख धनी	धर्म लाभ	सुव्यय रोग

गर्भ योग

वर्ष कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो और पंचमेश वा सप्तमेश लग्न में पड़ा हो तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। शुभ ग्रह पांचवें हो और पंचमेश देखता हो तो गर्भ योग होता है। गुरु की राशि में चन्द्रमा हो और मंगल शुभ राशि में हो या शुक्र की राशि में स्थित हो और शुक्र अपनी राशि में बैठा हो तो गर्भ होता है।

मातृ-पितृ अरिष्ट योग

जन्मलग्न, राशि, वर्ष कुण्डली में आठवें हो और मुन्था उसमें [illegible] हो तो उस वर्ष में माता पिता को कष्ट होता है। जन्म राशि वर्षलग्न हो और शनि क्रूर ग्रहों के साथ चतुर्थ भाव में पड़ा हो तो माता पिता को कष्ट होता है। चौथे शनि, दशवें मंगल, और चौथे दसवें घर के स्वामी अस्त हो तो इस वर्ष में माता पिता को कष्ट होता है।

वर्ष कुण्डली में अरिष्ट योग

जन्म लग्न ही वर्ष लग्न हो तो दोजन्मा वर्ष होता है जो शुभ दायक नहीं है। यदि दो जन्मा लग्न में गुरु और चन्द्रमा शुभ स्थान में बैठे हों तो वह वर्ष अशुभ फलदायक नहीं होता यदि छटे आठवें गुरु और चन्द्रमा हों तो वह वर्ष अरिष्ट फलदायक होता है।

यदि जन्म नक्षत्र भी वर्ष में आ जाये और दोजन्मा लग्न हो

और गुरु चन्द्रमा आठवें हो और अशुभ ग्रह की इन पर दृष्टि हो और चन्द्रमा क्षीण हो तो मृत्यु योग होता है।

यदि जन्म लग्न वर्ष लग्न एक हों और गुरु आठवें हो और चन्द्रमा छटे हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

नेत्र कष्ट योग

लग्न से १२वें शुक्र सूर्य व मंगल हो तो इस वर्ष में नेत्रों को पीड़ा होती है।

दूसरे या बारहवें या लग्न में या सातवें क्रूर ग्रह हों शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो वर्ष में नेत्रों को पीड़ा हो।

तरक्की व तबदीली के योग

यदि वर्ष कुण्डली में लग्नेश वा तृतीयेश, षष्ठेश, नवमेश एक घर में हों या एक दूसरे को मित्र दृष्टि से देखते हो तो तबदीली होगी। वर्षलग्न चर हो तो शीघ्र, स्थिर हो तो न हो, अथवा देरी से हो, द्विस्वभाव हो तो जाकर फिर वापिस आए। यदि लग्नेश वक्री हो तो ग्रह से मित्र दृष्टि रखता हो तबदीली होगी।

वर्ष फल चन्द्रिका

इस पुस्तक में वर्ष फल बनाने के सुगम प्रकार दृष्टि ज्ञान और उसका फल, ग्रहों का बेध और बेधफल, त्रिपताकी चक्र और उस का फल, वृहत पंचवर्गी और उसका फल, सहम और सहमों का फल, मुन्था और मुन्थेश का फल और दशा फल तथा भावफल और योग फल दिये हुये हैं अर्थात् वर्ष बनाने तथा ठीक फलादेश कहने के लिये एक उत्तम पुस्तक है। मूल्य केवल ६) रु० है। शीघ्र ही मंगवा कर लाभ उठावें। (डाक व्यय पृथक)

मिलने का पता :—

पंचांग दिवाकर कार्यालय

बस्ती गुजां - जालन्धर-२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मन्दी-तेजी जानने का सुलभ प्रकार

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, सूर्य संक्रांति, राशि और धान्य इनके ध्रुवांकों की संख्या को जोड़ कर ७ से गुणा कर ३ का भाग देने से एक शेष बचे तो भाव उस पदार्थ का समान रहेगा । २ शेष रहे तो सस्ता और ३ अर्थात् ० शेष हो तो महंगा रहेगा ।

नक्षत्र	अश्वि	भ	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.	म.	पू. फा.	उ.फा.	ह.	चित्रा
ध्रुवा	१७	५	३२	१४	४	१३	२८	३६	३६	१५	३	३१	१८	२५
स्वाति	विशा	ऽनु.	ज्ये.	मूला.	पू. षा.	उ. षा.	श्र.	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेव		
१४	२४	२९	३७	१८	७३	३०	२५	२३	२४	९	४१	२८		
योग	विष्कु.	प्री	आ.	सौ	ऽगं	सु	धृ	शू	गं.	वृद्धि	ध्रुव.	व्या	ह.	
ध्रुवा	१३	१२	४७	५९	३६	४७	१८	४४	१३	२५	१७	२२	?५	२५
बज्र	सित.	व्यति.	वर.	परि.	शिव.	सि.	सा.	शुभ.	शुक्ल.	ब्रह्म.	ऐंद्र	वैधृ		
१४	२२	१३	३९	१५	१३	१९	१२	२५	२२	१३	२७	२६		
वस्तु	धान्य	कनक	जवार	मूं.	चणा	भोना	तोरी	तेल	घृत	खाड	गुड़	शक्कर	कपास	रुई
ध्रुवा	७७	१००	१३३	४१	३५	७५	७७	३९	९९	९९	४७	१०१	१२९	४४
कांस्य	वस्त्र	स्वर्ण	हल्दी	चदन	चांदा	मिर्च	पित्तल	जो	कस्तू.					
३७	१०९	९६	७३	१८७	८१	१८	९९	५०७	१३४					
वार	सू	च०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	+ दैनिक मन्दा तेजी की एक						
ध्रुव	२१	१५	१२	१२	१३	१४	००	मास का फास १०) रु०						
राशि	मेष	वृष	मि.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धन	मकर	कुम्भ	मीन		
ध्रुवा	३	२२	२२	२५	१९	१७	२०	१३	१६	१९	२३	१४		
तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ध्रुवा	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
सोना, दालें कंबल, गेहूं जौ, मसूर	वस्त्र, पुष्प सरसों, गेहूं यव, चावल महिष, बैल	[illegible] रुई कपास कम नकद [illegible] रा, जुवार नक्का	कला, धान जायफल, तमालपत्र दालचीनी चाय, चीनी	शाली, पट्- रस, मृगछाल गुड़, खांड	जवार बाजरा कुलथी मूंग, गेहूं अलसी
तुला	**वृश्चिक**	**धनु**	**मकर**	**कुम्भ**	**मीन**
उड़द, गेहूं नारियल सरसों मटर हरड़	गुड़, खांड नागरपान लोहा शक्कर	रस, घोड़ा लवण चित्र, वस्त्र शस्त्र कदफल	कनीर सकुट मजीठ ज़मींकन्द	रस, पोस्त रत्न, रंगदार वस्तुएं	सीप, मोती समुद्र भाग हीरा पंसा- रियों की दवाएं

षट् सप्तमगो हानि वृद्धशुक्र: करोति शेषेषु उपचयसंस्था: क्रूरा: शुभदा: शेषेषु हानिकरा: इति जिस वस्तु की तेजी या मंदा देखना हो उस वस्तु की चक्र में राशि कौन सी +

+ ऐसा प्रथम देखना । फिर उस राशि में कौनसा ग्रह कहां कहां है ऐसा देखना । जिस वस्तु की राशि से बृहस्पति ४।१०।२।११।७।९।५ इतनी राशि पर हो तो वस्तु को मंदा करता है और १।३।६।८।१२ इतनी पर गुरु हो तो तेजी करता है । ऐसा हो २।११।१०।५।८ पर बुध हो तो मंदा करता है और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों पर होवे तो तेजी करता है । शुक्र ६।७ पर सर्वदा तेजी करता है और १।२।३।४।५ ८।९।१०।११।१२ पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है । मंगल, शनि, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्रग्रह ३।६।१०।११ मंदा करते हैं और १।२।४।५।७।८।९ पर तेजी करता है । पूर्ण चन्द्रमा का फल गुरु सदृश देखना । ऐसा मंदा तेजी का फल जानना चाहिए ।

नक्षत्रों के पदार्थ—चांदी आदि धातों के कारक मंगल, सूर्य हैं । पुनर्वसु, पुष्य उ. फा. चित्रा. ज्ये. श्र. ध. पू.भा. उ.भा. नक्षत्र है । रुई—पुन. मूला. रो उभा. तेल पदार्थ—आर्द्रा. पुष्य. स्वा. कृ. शत. मघा । धान्य—(मक्की गवारा), उ.भा पूषा. श्ले. रो. कृ. स्वा. भर । गुड़—मघा ज्ये. उभा. । गवारा—पुष्य. पू. भा. मटर—श्ले. उ. फा. । सिल्क—पुन. म. । बनौला—मू. । खिल —उभा. । ऊपर नक्षत्रों मे शुभ ग्रह के गमन से नक्षत्र पदार्थों में मंदा का असर रहेगा । और अशु ग्रहों के गमन से तेजी का असर पड़ेगा ।

पार्थिव पूजन विधि

जहां शंकर जी का पूजन अभीष्ट हो, पूजन कर्ता गंगा की मिट्टी या शु मिट्टी लेकर शिव जी को बनाये । तदनन्तरशिवलिंग को बाएं हाथ पर रखकर-ओ३ शिवाय नम:, इस मंत्र से पूजनादि सब कार्य करे । किसी किसी आचार्य का मत है ।

"मृदाहरणं सर्व प्रतिष्ठाह्वानमेव च, स्नपन पूजन चैव विसर्जनमत: परम् हरो महेश्वरश्चैव महादेव इति क्रम: । अर्थात् हराय नम:, इस मन्त्र से मिट्टी लेक महेश्वरायनम:, इस मंत्र से पानी डालकर साने और गोल बनावे, बाद में शूलपाण नम: इससे प्रतिष्ठा कर पिनाकधृते नम: इस मंत्र से आवाहन कर ओ३म् नम शिवाय से स्नान तथा पशुपतये नम: से पूजन और महादेवाय नम: से विसर्जन

॥ स्वप्न देखने के शुभाशुभ फल ॥

॥ छींक का विचार ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ स्वप्न देखने के शुभाशुभ फल ॥

जो स्वप्न बिमारीको हालत या परेशानी की हालतमें आता है उसपर भरोसा नहीं करना चाहिए। जो स्वप्न दिन को देखा जाता है वह भी सचाई में कम होता है। रात्रिके पहले पहरमें स्वप्न आए तो उसका फल एक वर्षमें मालूम हो जाता है। दूसरे पहरके स्वप्न का फल छः मासमें, तीसरे पहर के स्वप्न का फल तीन मासमें और चौथेपहर का देखाहुआ स्वप्न एक मास में अपना अच्छा या बुरा फल दिखा देता है। जो स्वप्न सुबह सूर्य निकलने के समयदेखा जाए उसकाफल एक पहर में प्रकट हो जाता है।

॥ छींक का विचार ॥

गौ का छींकना मरणप्रद कहा है, किन्तु यदि छींक बाईं ओर अथवा पृष्ठ की ओर हो तो दोषकारक नहीं है दाहिनी ओर सम्मुख छींक शुभकारक नहीं होती। औषधि खाने के समय, वाहन पर सवार होने के समय, विवाद में, शयन करने के समय, भोजन करने में, विद्यारम्भ में बीज बोने के समय छींक हो तो शुभ फलदायक होती है हठ से छींकना = — पीनस द्वारा छींक का होना, बच्चे को छींक आना तथा वृद्ध की छीक निष्फल कही है। यत्न करने पर यदि छींक न रुके तो मनुष्य जिस प्रयोजन के लिए जा रहा हो उस में विघ्न अवश्य हो।

स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	स्वप्न	फल	अंगस्फुरण अंग	फल चक्र फल	छिपकली (जोड़किरली) पतन अंग	फल
अपने को मारना	दीर्घायु शुभ	तख्त देखना	तरक्की मान	मन्दिर में जाना	रोग पाना	सिर	पृथ्वी लाभ	शिर	राज्य लाभ
अनाज भरना	धन लाभ	तख्त पर बैठना	सफलता इज्जत	मुरदा रोते देखना	तरक्की व मान	माथा	स्थान लाभ	नासाग्र	कष्ट
अन्न देखना	नुकसान	तालाब स्नान	इज्जत पाना	रोटी खाना	खशखबरी	भ्रूमध्य	प्रियप्राप्ति	वामभुज	भय
आग उठाना	कष्ट	श्वेत सर्प काटना	लाभ	रीछ देखना	खुशी तरक्की	नेत्र	प्रियदर्शन	दक्षिणभुज	राज्य लाभ
आँधी देखना	सफर, चिंता	दरिया में नहाना	रोगनाश	वृक्ष काटना	फिरक, नूकसान	भृकुटियां	लक्ष्मी दर्शन	जानु	शुभ
आग देखना	धन प्राप्ति	दूध पीना	खुशी	विष खाना	फिकर चिन्ता	कपोल	स्त्री सुख	गुल्फ	बन्धन
इमारत बनाना	लाभ व तरक्की	पर्वत पर चढ़ना	तरक्की	वर्षा देखना	चिन्ता	नासा	गंध सुख	ललाट	संबंधीमिलाप
ईंट देखना	लाभ	पानी में डूबना	कष्ट पाना	वृक्ष पर चढ़ना	कार्य सफलता	ऊपर का होंठ	स्त्रीचुम्बन	दक्षिणकर्ण	दीर्घायु
ऊँचाई से गिरना	मानहानि	बंशरी बजाना	इज्जत तरक्की	शरीरमें तेल मलना	धनवान होना	कण्ठ	भूषणप्राप्ति	कण्ठे	शत्रुनाश
किला देखना	तरक्की पाना	बन्दर देखना	धनलाभ	शत्रु देखना	सफलता	ग्रीवा	शत्रुभय	जंघा	शुभ
कुत्ते का काटना	शत्रुभय	बर्फ गिरते देखना	रोग, चिन्ता	श्रेष्ठों से पूजा जाना	धनलाभ	पीठ	पराजय	वामकर्ण	लाभ
कूप में गिरना	परेशानी	बगीचा देखना	ऋणनिवृत्ति	साफा गिरते देखना	कष्ट	कन्धा	मित्रसमागम	हस्त	वस्त्रलाभ
नाव देखना	परेशानी	बारात देखना	रोग	सोना पाना	परेशानी	बाहुप्रदेश	प्रियप्राप्ति	दक्षिणपाद	सफर
खून करना	सेहत पाना	बिच्छू देखना	चिंता	सांप देखना	परेशानी भय	बाहुमध्य	धनागम:	नेत्र	धनलाभ
चित्र देखना	राज्य लाभ	बादल देखना	लाभ	सांप काटना	धन प्राप्त	कर (हाथ)	धनप्राप्ति	उदर	भूषणलाभ
चील मारना	संकट	भूषण की चोरी	सफर	स्त्रीलड़ाई देखना	दुःख पाना	छाती	विजय:	स्कन्ध	विजय
जहाज देखना	स्त्रीक्लेश	मदिरा पीना	कष्ट पाए	सांप पकड़ना	शत्रुनाश	पार्श्व	उत्तम प्रीति	हृदय	धन प्राप्ति
जहाज पर चढ़ना	तबदीली	मौत देखना	हानिकारक	सांप मारना	कष्ट से बचना	नाभी	स्थान से यात्रा	वामपाद	नाश
जवाहरात देखना	कार्य सफलता	मकान गिरते देखना	तरक्की	सिंह देखना	शत्रुनाश	उदर पेट	कोषाप्ति:	दक्षिणपाद	बुद्धिनाश
जुआ खेलना	धनकी तगी	मुंदरी पाना	परेशानी	हाथी की सवारी	लाभ तरक्की	वृष्ण	पुत्रलाभ	नाभि	लाभ
						जानु	रिपु: सन्धि	मुख	मिष्टान्नप्राप्ति
						जंघा	हानिप्रद	पादमध्य	स्त्रीभय
						चरण के ऊपर	स्थानप्राप्ति	पादान्त	मृत्यु
						चरण के नीचे	लाभप्रद:	केशान्त	मृत्यु

इन स्वप्नों और अंगस्फुरण के अतिरिक्त यदि कोई स्वप्न आवे या अंगफरके तो उसका फल जवाबीगज़सेपूछें

ऊपर चक्र का फल—पुरुष के दाहिने अंग तथा स्त्री के बाएं अंग में विचार करें और फल देख लें। पुरुष के बाएं और स्त्री के दाहिने अंग का फल विपरीत विचारें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संस्कार प्रकरण

सीमंत मुहूर्त्त विचार

यह सीमंत संस्कार गर्भाधान से छटे और आठवें महीने में होता है, उस महिने का स्वामी बलवान् होना चहिए। गर्भ से लेकर १० महिने के स्वामियों की संज्ञायें ऐसी हैं. पहिले महिने का स्वामी शुक्र, दूसरे का भौम ३ गुरु,४सूर्य ५ चंद्र, ६ शनि ७ बुध, ८वें का लग्नेश ९ चन्द्र और १०वें महिनेका स्वामी सूर्य होता है २।३।५।७।१०।११। १३।१५ इन तिथियों में तथा मृ,पुन,पुष्य, ह.मू श्र नक्षत्रों में सू,मं,बृ, वारों में २।३।५।७।९।११ लग्नों और लग्न से केन्द्र त्रि-कोण स्थान में (१।४।७।१० ९।५) में शुभग्रह तथा ३।६।११ स्थान में पापग्रह होने पर और लग्न से १।६।८।१२ इनस्थानों में चंद्रमा न हो, ८वां स्थान शुद्धहो जन्म लग्न और जन्मराशि से ९वां लग्न नहो तो यह मुहूर्त शुभ होता है। स्त्री को चन्द्रमा का बल देखना जरूरी है। गुरु शुक्र के अस्त का दोष इस में नहीं होता।

स्तनपान मुहूर्त—पंचम दिन अथवा भद्रा व्यतिपात दैधृरिक्ता तिथि को त्याग कर शुभ तिथि वार में अ मृ पुन,पुष्य,हस्तमूला रे नक्षत्रों में स्तनपान कराना शुभ है।

प्रसूति स्नान मुहूर्त—रिक्ता तिथि को छोड़ कर शुभतिथ, रवि, म, गुरुवार अश्वि रो.मृ तीनों उत्तरा हस्त, स्वा, अनु, रेव इन नक्षत्रों में वैधृति, व्यतिपात रहित दिन में प्रसूता स्नान शुभ है।

नामकर्ण मुहूर्त विचार

(नारद के वचन मे) यह नामकर्ण सूतक के अन्त में अपनी २ कुलपरम्परा के अनुसार करना चाहिए। दैववश सुतकांत में न हो सके तो गुरु शुक्र के उदय होने पर उत्तरायण में पुर्वान्ह के समय, चं.बु.बृ.शु वारों में २।३।५। ७।१०।११।१३तिथियोंमेंअश्वि.रो मृ पुन.पुष्य उत्तरा३ह. चि. स्वा.अनु श्र.ध.श.रे.नक्षत्रों में स्थिर लग्न२।५।८।११ में लग्न से १।४।७।५।९।१० स्थान में शुभ ग्रह ३।६ ११।१२ स्थान में पापग्रह तथा ८वां १२वां स्थान शुद्ध होने पर पिता बालक के दाहिने कान में धाम्य विधि द्वारा

कारण तथा भाग्य और कीर्ति का कारण होनेसे व्यतिपात वैधृति, संक्रांति और भद्रादि दोष युक्त समय को छोड़ कर शुभ होता है।

दन्तोत्पत्ति में विचार

कई बालकों के दांत पहले महिने से निकलने लगजाते है उसके प्रत्येक महिने का फल नीचे लिखे चक्र से जानलें

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	द्रव्य नाश	भ्रातृहानि	भगिनीहानि	मातृ हानि	ज्येष्ठ भ्रातृहा	मित्रजीव	पितृ जीव	पुष्टिकारक	लक्ष्मी प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	सुख प्राप्ति	सुख प्राप्ति

अन्न प्राशन का विचार

नवजात शिशु को छटे महीने से सम मास में तथा कन्या हो तो ५वें महीने से विषम मासों में, २।३।५।७। १०।१३।१५ तिथियों में चं०, बु०, बृ०, शु० वारो में अश्वि०, रो०, मृ०, पुन०, पुष्य, उत्तरा० ३, ह०, चित्रा स्वा०, अनु० श्र०, ध०, श० रे०, नक्षत्रों में २।३।४।५।६ ७।९।१०।११ लग्नों में तथा लग्न से दसवां स्थान शुद्ध होने पर और ७वां ८वां ९वां स्थान क्रम से शु०,मं० और बुध से वर्जित होने पर, ६।८ और १२वें स्थान में चद्रमा न हो; जन्म लग्न और जन्म राशि से ८वां लग्न न हो पूर्वान्ह के समय, भद्रादि दोष रहित समय में अन्न प्राशन करना शुभ होता है। इस समय बालक के आगे लेखनी पुस्तक, स्वर्ण, चांदी, पत्थर और बर्तन रखे. बालक पहले जिस वस्तु को पकड़े, उसी से बालक की आजिविका जाने

कर्णवेधः—चातुर्मास (आषाढ़ शु० ११ से कार्तिक शुदि ११ तक) चैत्र, पौष जन्म मास, जन्म तिथि नक्षत्र, क्षयतिथि तथा ४।९।१४ तिथि और सम वर्षों को त्याग कर जन्म से १२वे अथवा १६वे दिन अथवा ६ ७।८वें मास में या विषम वर्षों में, शुभ वार, अश्वि० मृ.पु पुष्य ह०चि.धनु. अभि, श्र. ध. रे नक्षत्रो में लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध होने पर बुधि [illegible]

चूड़ाकरण

यह चूड़ा करण संस्कार गर्भ से वा जन्म से ३।५।७ वर्ष और उत्तरायण में होता है। कन्या हो तो सम वर्षों में होता है। कई एक कुलाचार से प्रथम वर्ष में करते है अथवा यज्ञोपवीत के साथ ही कर लेते हैं। २।३।५।१० ।११ तिथियों में चं. बु. बृ. शु. वारों में अश्वि मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. ज्ये. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रों में २।३।४। ६।७।८।१२ लग्नों में और लग्न से ८वां स्थान शुद्ध होने पर शुक्र का लग्न से ८वें होना दोष कारक नहीं होता। जन्म लग्न और जन्म राशि से ८वां लग्न न हो, केन्द्र त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह और ३।६।११ वे पापग्रह हों ६।८।१२ वें चन्द्रमा न हो. जन्म नक्षत्र और जन्म मास न हो। भद्रा व्यतिपातादि दोष रहित समय में करने से शुभ होता है। (विशेष विचार) माता गर्भवती हो और गर्भ ५ महिने से अधिक का हो गया हो तो चूड़ाकरण न करें। यदि बालक ५ वर्ष से अधिक हो गया हो तो गर्भवती माता होने पर भी चूड़ाकरण कर लेवे। बालक जेठा हो तो जेठ के महीने में चूड़ाकरण न करे।

(वशिष्ठ के वचन से)

अक्षरारम्भः

पांचवे वर्ष में और उत्तरायण में बालक से गणेश विष्णु लक्ष्मी और सरस्वती का पूजन करवा कर २।३।५ ।६।१०।११।१२ तिथियों में चं. बु बृ. शु. वारों में, अश्वि आर्द्रा. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. रे.नक्षत्रों में २।३।७। ९।१२ लग्नों में, लग्न से आठवा स्थान शुद्ध होने पर, भद्रादि दोष रहित समय में, अक्षरारम्भ शुभ होता है।

विद्यारम्भः

उत्तरायण में २।३।४।६।१०।११ १२ तिथियों में सू. बृ. शु. वारा में, अश्वि. मृ. आर्द्रा. पुन. पुष्य आश्ले. पू. [illegible] ह. चि. स्वा. मू. श्र. ध. श. नक्षत्रों में २।३।६।९ लग्नों में लग्न से ८वा स्थान शुद्ध होने पर, व्यतिपातादि दुष्ट समय को त्याग कर शुभ समय में विद्यारम्भ करना चाहिए।

उपनयनम्

[illegible]

से मनुष्य की देह संस्कृत हो जाती है। इस कर्म में काम्य नित्य और नैमित्त काल के भेद से तीन प्रकार के कर्म कहे

शाकेश ज्ञान	वर्णेश ज्ञान

करके वाग्दान करे, ताकि नूतन दम्पति अपना जीवन सुखमय व्यतीत करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

से मनुष्य की देह संस्कृत हो जाती है। इस कर्म में काम्य नित्य और गौण काल के भेद से तीन प्रकार के काल कहे हैं। ब्राह्मणों को ५वें, ८वें १६वें वर्षों में, क्षत्रियों को ६टे, ११वें और २२वें वर्षों में, वैश्यों को ८वें, १२वें और २४वें वर्षों में काम्य नित्य और गौणकाल कहे हैं। चै., वै., ज्ये., आषा., देवशयनी से पूर्व जानें। माघ और फाल्गुन इन महीनों में, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथियों में और कृष्णपक्ष में, २।३।५ तिथि पर्यन्त, सू., चं., बु., बृ, शु., वारों में, अश्वि., मृ., रो., आर्द्रा., पुन., पुष्य., आश्ले., पू. ३ उत्तरा, ३ हस्त, चि., स्वा., अनु., मू., श्र., ध., श., रे., नक्षत्रों में, २।३।४।५।७।६।१२ लग्नों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों, ३।६।११वें पापग्रह हों चं., बृ., श., और लग्न का स्वामी ६।८ और १२वें स्थान में न हो, १।५।८वें स्थान में पापग्रह न हों वृष और कर्क राशि के बिना चन्द्रमा का लग्न में होना शुभ नहीं होता तथा रोगवान, संक्रांति, भद्रा, व्यतिपात, अनाध्याय: प्रदोष अपरान्ह काल और वैधृत्यादि दोषरहित समय में यह संस्कार करना शुभ होता है, शाकेश और वर्णेश बलवान होना चाहिये, ब्राह्मणों के लिए पुनर्वसु नक्षत्र शुभ नहीं होता। बालक को गुरु, सूर्य और चन्द्रमा का बल अवश्य देखना चाहिए।

सूर्यबल	चन्द्रबल	गुरुबल	ग्रहबल
३।६।१०।११	३।६।७।१०।११ १।२।५।६	२।५।७।६।११	शुभ
१।२।५।७।६	....	१।३।६।१०	पूज्य
४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२	निंद्य

उच्च मित्र, स्वराशि में गुरु हो तो नेष्ट गुरु भी ग्राह्य है।

सूर्य वर की राशि से दूसरे, पांचवें और नौवें हों तो १३ प्रविष्टे के उपरान्त अपूजनीय हैं क्योंकि लिखा है—

कुमारस्योपनयने विवाहेष्वपि रवि बलं ३।६।१०।११ श्रेष्ठः १।२।५।७।६ पूज्य. ४।८।१२ निंद्यः २।५।६ त्रयोदशाहात्परतः शुभः ।। अन्येष्व-अनिष्ट स्थानगे सूर्ये शुभ राशिः पुरोभवेत। त्रयोदशे दिन त्यक्त्वा शेस्यथं शुभमादिशेत् ।।

शाकेश ज्ञान				वर्णेश ज्ञान			
ऋक्	यजु	साम	अथर्व	ब्राह्मण	क्षत्री	वैश्य	शूद्र
गुरु	शुक्र	भौम	बुध	गु. शु.	सू. भौ	चन्द्र	बुध

दीक्षा मुहूर्त विचार

चै., वै. ज्ये. आषाढ़, श्रा., आश्वि., का., मार्ग. महीनों में २।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथियों में सू., चं., बुध, बृ., शु. वारों में रो., ह., चित्रा., स्वा., अनु., उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में भद्रादि दोष रहित समय में दीक्षा ग्रहण करना शुभ होता है।

अथ विवाह संस्कार

सब आश्रमों में गृहस्थाश्रम श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि ब्रह्मचर्याश्रम, वाणप्रस्थाश्रम और सन्यासाश्रम इन तीनों आश्रमों का आश्रय स्थान, यही गृहस्थाश्रम है। इसी तरह देवऋण, पितृऋण और ऋषि ऋण इन तीनों ऋणों से मुक्त करने वाली तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि देने वाला होने के कारण गृहस्थाश्रम सब आश्रमों से श्रेष्ठ माना गया है। और शेष संस्कार भी विवाह संस्कार पर ही निर्भर है, क्योंकि विवाह आदि संस्कार होने के पश्चात् ही गर्भाधान आदि समस्त संस्कार हो सकते हैं। इस कारण भी विवाह संस्कार सर्व प्रधान है। यह संस्कार योग्य समय में होने पर ही स्त्री सुख ऐश्वर्य भोग और उत्तम संतान उत्पन्न करके मनुष्य अपने पितृ ऋण से मुक्त होता है। अतः विवाह संस्कार का निर्णय हमारे ऋषि मुनियों ने अति सूक्ष्मता से किया है कि जिस के अनुसार विवाह नियत करके मनुष्य जीवन को सुखी बना सकता है। परन्तु आजकल के कई लोग बिना मुहूर्त को अच्छी तरह विचारे और कुण्डलियों तथा गुणादि का मिलान किये बिना ही विवाह नियत कर लेते हैं जो कि सर्वथा अनुचित है।

कन्या का पिता योग्य आयु के वर का निश्चय कर कन्या की कुण्डली का मिलान कर तथा गुण मिलान करके वाग्दान करे, ताकि नूतन दम्पति अपना जीवन सुखमय व्यतीत करें।

मिलान में वर का प्रसिद्ध नाम तथा कन्या का जन्म नाम व कन्या का प्रसिद्ध नाम और वर का जन्म नाम ऐसा विपरीत कदापि न लेवें यह वर कन्या के लिए हानिप्रद है। या तो दोनों का प्रसिद्ध नाम लेवें या दोनों का जन्म नाम लेवें। विशेषतः दोनों का जन्म नाम ही लेना चाहिए। क्योंकि कहा है—

जन्म राशि विचार

कुर्यात्षोडश कर्माणि जन्म राशौ बालान्विते।
अन्यानि शुभ कर्माणि नामराशौ बलान्विते।।
विवाहे सर्व मांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे।
जन्मराशे प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।।

नाम राशि विचार

काकिन्यां वर्गशुद्धौ च दानेद्युते ज्वरोदये।
मन्त्र पुनर्भूवरणे नामराशि प्रधानता।।
देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नाम राशि प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।।

विवाह में द्वादश चन्द्रमा का विचार

[काशी नाथः] अधाने संप्रदाने च विवादे राज विग्रहे। पाणि ग्रह च यात्रायां चन्द्रो द्वादशमः शुभः।

विवाह में वर्ज्य तिथि योग

वैधृति व्यति पाताख्यौ संपूर्णौ वर्जयेच्छुभ।
कृष्णा चतुर्दशी शुक्ला प्रतिपद्दर्श संज्ञिकाः। एतः शुभवे कार्येषु वर्जनीयाः प्रयत्नतः।।
तिथिना त्रितयं वारमेकं स्पृशति यत्र वै। अवमं दद्दिनं शेषंशुभ कर्म्मसु संत्यजेत।

वर कन्या की राशि मेलन विचार

वर और कन्या के जन्म नक्षत्र और जन्म राशि में वर्णकूट [१] वश्यकूट [२] ताराकूट [३] योनिकूट [४] ग्रहमैत्रीकूट [५] गणकूट [६] भकूट [७] और नाड़ीकूट [८] इन ८ कूटों द्वारा परस्पर मिलान करें, यदि दोनों का जन्मनाम मालूम न हो तो दोनों के प्रसिद्ध नाम से मिलान करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्ण ज्ञान चक्र

ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	वर्ण
१२।४।८	१।५।९	२।६।१०	३।७।११	राशि

ग्रह मैत्री चक्र

सू	चं	मं	बुध	बृ	शु	श	ग्रहाः
चं मं बृ	सू बु	सू चं बृ	सू शु	सू चं मं	बु श	शु बु	मित्राणि
बुधः	मं बृ शु श	शु श	मं बृ श	श	मं बृ	बृ	समाः
शु श	००	बु	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं	शत्रव
मे १०	वृष ३	मं २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०	उच्चांश
तु १०	वृश ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०	नीचांश

मित्र नवपंचम ज्ञानचक्र						शत्रु नवपंचम ज्ञानचक्र					
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक ज्ञानचक्र						शत्रुषडाष्टकज्ञानचक्र					
१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश ज्ञानचक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

वश्य ज्ञान चक्र

द्विपद्राशय	चतुष्पद्राशय	जलचरराशय	सरीसृपराशयः
३ ६ ७	१ ५ २	४ ११ १२	८
९ पूर्वार्धं	९ उत्तर १० पूर्व	१० उत्तरा	० ० ०

तारा ज्ञान चक्र

३।५।७।१२।१४।१६।२१।२३।२५ एतत्संख्याकास्ताराना शुभदः

नक्षत्र, योनी, नाड़ी, गणादि स्वरूप ज्ञानम्

नाम नक्षत्र	नाम अक्षराणि राशि ज्ञानं च	योनी	महावैर योनि	गण	नाडि	देवता	मुख	नेत्र	नाम संज्ञा	कितने तारे	पंचशला का वेध	सप्तशला का वेध
अश्वनी	(मेष) चू चे चो ला	अश्व	महिष	देव	आदि	दस्र	तिर्य	मन्द	क्षिप्र	३	पू फा	पू फा
भरणी	लि लु ले लो	हाथी	सिंह	नर	मध्य	यम	अधो	मध्य	उग्र	३	अनु	म
कृत्तिका	अ (वृष) इ उ ए	मेंढा	बानर	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	अधो	स्वक्ष	मिश्र	६	वि	स्वा
रोहिणी	ओ व वी वु	सर्प	नकुल	नर	,,	ब्रह्मा	ऊर्ध्व	अन्ध	ध्रुव	५	अभि	अभि
मृगशिर	वे वो (मिथुन)का कि	,,	,,	देव	मध्य	चन्द्र	तिर्य	मन्द	मृदु	३	उषा	उषा
आर्द्रा	कु घ ङ छ	श्वान	मृग	नर	आदि	शिव	ऊर्ध्व	मध्य	तीक्षण	१	पूषा	पूषा
पुनर्वसु	के को ह (कर्क) हि	बिडाल	मूषक	देव	,,	अदिति	तीर्य	स्वक्ष	चर	४	मूला	मूला
पुष्य	हु हे हो डा	मेंढा	बानर	देव	मध्य	गुरु	ऊर्ध्व	अन्ध	क्षिप्र	३	ज्ये	ज्ये
आश्लेषा	डि डु डे डो	बिडाल	मूषक	राक्षस	अन्त्य	सर्प	अधो	मन्द	तीक्षण	५	धनि	अनु
मघा	(सिंह) म मि मु मे	मूषक	बिडाल	राक्षस		पितर	अधो	मध्य	उग्र	५	श्रव	भर
पूर्वाफाल्गुनी	मो टा टि टू	,,	,,	नर	मध्य	भग	अधो	स्वक्ष	उग्र	२	अभिव	अभि
उत्तराफाल्गुन	टे (कन्या) टो प पी	गौ	व्याघ्र	नर	आदि	अर्यमा	ऊर्ध्व	अन्ध	ध्रुव	२	रेव	रे
हस्त	पू ष ण ठ	महिष	अश्व	देव	,,	सूर्य	तिर्य	मन्द	क्षिप्र	५	उभा	उभा
चित्रा	पे पो (तुला) र री	व्याघ्र	गौ	राक्षस	मध्य	त्वष्टा	तिर्य	मध्य	मृदु	१	पूभा	पूभा
स्वाती	रु रे रो ता	महिष	अश्व	देव	अन्त्य	वायु	तिर्य	स्वक्ष	चर	१	शत	शत
विशाखा	ति तु ते (वृश्चिक) तो	व्याघ्र	गौ	राक्षस	,,	इंद्राग्नि	अधो	अन्ध	मिश्र	४	कृति	धनि
अनुराधा	न नि नु ने	मृग	श्वान	देव	मध्य	मित्र	तिर्य	मन्द	मृदु	४	भर	आश्ले
ज्येष्टा	नो य यि यु	,,	,,	राक्षस	आदि	इन्द्र	तिर्य	मध्य	तीक्षण	३	पुष्य	पुष्य
मूला	(धन) ये यो भा भि	श्वान	मृग	राक्षस	,,	राक्षस	अधो	स्वक्ष	तीक्षण	११	पुन	पुन
पूर्वाषाढा	भु ध फ ढ	बानर	मेंढा	नर	मध्य	जल	अधो	अन्ध	उग्र	३	आ	आ
उत्तराषाढा	भे (मकर) भो ज जि	नकुल	सर्प	नर	अन्त्य	विश्वे	ऊर्ध्व	मन्द	ध्रुव	२	मृ	मृ
अभिजित	जु जे जो खा	,,	,,	०	०	विविध	०	मध्य	क्षिप्र	३	रो	रो
श्रवण	खि खु खे खो	बानर	मेंढा	देव	अन्त्य	विष्णु	ऊर्ध्व	स्वक्ष	चर	३	म	कृ
धनिष्ठा	ग गि (कुम्भ) गु गे	सिंह	हाथी	राक्षस	मध्य	वसु	ऊर्ध्व	अन्ध	चर	४	आश्ले	वि
शतभिषा	गो स सि सु	अश्व	महिष	राक्षस	आदि	वरुण	ऊर्ध्व	मन्द	चर	१००	स्वा	स्वा
पूर्वाभाद्रपदा	से सो द (मीन) दि	सिंह	हाथी	नर	,,	अजैक	अधो	मध्य	उग्र	२	चि	चित्रा
उत्तराभाद्रपद	दु थ झ ञ	गौ	व्याघ्र	नर	मध्य	अहिर्बु	ऊर्ध्व	स्वक्ष	ध्रुव	२	ह	ह
रेवती	दे दो च चि	हाथी	सिंह	देव	अन्त्य	पूषा	तिर्य	अन्ध	मृदु	३२	उफा	उफा

नोट — ऊपर के चक्र से जब आप अपना नक्षत्र जान लें तो उसके सामने आप योनि, नाड़ी, गण आदि देख सकते हैं। तथा पंचशलाका और सप्तशलाका वेध का भी ज्ञान होता है। जिस नक्षत्र का तारा आप आकाश में देखना चाहते हों तो इस के समीप कितने तारे हैं यह भी इस चक्र से देख सकते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, स्टैंडर्ड टाइम और चर खण्ड

जिस स्थान का अन्तर (+) चिन्ह से दिखाया गया है वह नगर ८२½ रेखा से उतने मिनट पश्चिम में है और जिस स्थान पर (—) चिन्ह दिखाया है वह स्थान उतने मिट पूर्व में है

पंजाब नाम शहर	अक्षांश	देशान्तर मि. से	चरखण्ड	पंजाब नाम शहर	अक्षांश	देशान्तर मि. से	चरखण्ड	पंजाब नाम शहर	अक्षांश	देशान्तर मि. से	चरखण्ड	यू. पी. नाम शहर	अक्षांश	देशान्तर मि. से	चरखण्ड
अम्बाला	३०।२१	+२२।३२	७०।५६।२३	नाहन स्टेट	३०। ३	+२०।३६	६९।५६।२३	रिवाड़ी	२८।१२	+२३।२०	६४।५१।२१	इलाहाबाद	२५।२५	+ २।३२	५७।४६।१९
अटक	३३।५३	+२४।५०	८०।६४।२७	नाभा	३०।२५	+२५।२४	७०।५६।२३	रोहतक	२८।५४	+२३।४८	६६।५३।२२	उन्नाव	२६।४८	+ ७। ८	६१।४९।२०
अमृतसर	३१।३९	+३०।३२	७४।५९।२५	नारनौल	२८। २	+२५। ४	६४।५१।२१	लद्दाख	३५। ०	+२६। ०	८४।६७।२८	एटा	२७।३५	+१५।२०	६६।५०।२१
इस्लामाबाद	३३।४३	+२८।५२	८०।६४।१७	नालागढ़	३१। ३	+२३।१२	७२।५८।२४	लायलपुर	३१।२५	+३७।४०	७३।५९।२४	कन्नौज	२७। ३	+१०। ८	६१।४९।२०
करनाल	२९।४२	+२१।५२	६८।६५।२३	पटियाला	३०।१७	+२४।२०	७०।५६।२३	लालामूसा	३२।४०	+३३।५६	७७।६२।२६	कानपुर	२६।२८	+ ८।३६	६०।४८।२०
कपूरथला	३१।२३	+२८।२०	७३।५९।२४	पठानकोट	३२।१७	+२७।१२	७६।६१।२५	लुधियाना	३०।५५	+२८।४०	७४।५८।२४	कासगंज	२७।४३	+१५।३२	६३।५१।२१
कांगड़ा	३२। ५	+२८।२३	७५।६०।२५	पानीपत	२९।२३	+२२। ८	६७।५४।२२	लाहौर	३१।५५	+३३।२४	७२।५७।२४	काशी	२५।२०	— २। ८	५७।४५।१९
कालाबाग	३२।५८	+३६।४३	७८।६२।२६	पुन्छ	३३।४८	+३३।४०	८०।६४।२७	शाहपुर	३२।१६	+३९।५६	७६।६१।२५	खुरजा	२८।१५	+१८।४०	६४।५२।२१
कश्मीर	३४। ०	+२२। ०	८१।६५।२७	फगवाड़ा	३१।१३	+२६।५६	७३।५८।२४	शाहदरा	३१।१०	+३३।००	७२।५८।२४	गढ़वाल	२६।१३	+१८।४०	७०।५६।२३
कैथल	२९।४८	+२४।१६	६९।५५।२३	फरीदकोट	३०।४०	+३०।१२	७१।५७।२४	शोरकोट	३०।१०	+४१।३६	७२।५७।२४	गाजीपुर	२५।३५	+ ४।२०	५७।४६।१९
कैम्बलपुर	३३।४७	+४०।२८	८०।६४।२७	फिरोजपुर	३०।५५	+३१।२०	७२।५७।२४	श्रीनगर	३४। ६	+३०।४८	७९।६३।२६	गाजियाबाद	२८।४०	+२०। ८	६६।५३।२२
खुशहालगढ़	३२।२१	+४०।२४	७६।६१।२५	बटाला	३१।४९	+२९। ४	७४।६०।२५	सरगोधा	३२। ६	+३९।२०	७५।६०।२५	गोंडा	२७। ९	+ २। ८	५१।४९।२०
खैरपुर	२९।३४	+४०।५२	६८।५५।२३	बठिंडा	३०।११	+३०।१२	७०।५६।२३	साहीवाल	३१।५८	+४०।३२	७५।६०।२५	गोरखपुर	२६।४४	— ३।३६	६०। ८।२२
गढ़शंकर	३१।१३	+२५।१६	७३।५८।२४	बहावलपुर	२८।१४	+४२।५२	६५।५२।२२	शिमला	३१। ६	+२१।२४	७२।५८।२४	चन्दौसी	२८।२७	+१४।५२	६५।५२।२२
गिलगित	३५।५५	+३२।४८	८७।६३।२९	बारामूला	३४।१०	+३२। ०	८१।६५।२७	सिरसा	२९।३२	+२९।३२	६८।५४।२३	जौनपुर	२५।४६	— ७।५६	५७।५६।१९
गुजरात	३२।३६	+३३।४२	७७।६१।२६	बिलासपुर	३१।१९	+२२।४०	७३।५८।२४	सुकेत	३१।२४	+२२। ०	७५।५९।२४	झांसी	२५।२७	+१५।४४	५८।४६।१९
गुजरांवाला	३२।१०	+३३।४०	७५।७०।२५	भज्जीस्टेट	३१।१२	+२१।१२	७२।५८।२४	सुलतानपुर	३१।५८	+२८।३२	७५।६०।२५	देवप्रयाग	२३। ९	+१'।३६	७०।५६।२३
गुड़गांव	२८।२७	+२१।४४	६५।५२।२२	भिवानी	२८।४६	+२४।४८	६६।५३।२२	स्यालकोट	३२।३५	+३१।३६	७६।६१।२५	देवबन्द	२९।४२	+१९। ८	६८।५५।२३
गुरदासपुर	३२। ३	+२८।१२	७५।६०।२५	भेरा	३२।२९	+३८।१२	७६।६१।२५	हरिपुर	३४। ०	+३८। ८	८१।६५।२७	देहरादून	३०।१९	+१७।४८	७०।५६।२३
चनाब	३२। ०	+३७। ४	७५।६०।२५	मिटगुमरी	३०।५८	+३६।३१	७२।५८।२४	हिसार	२९।१०	+२७। ८	६७।५४।२२	नगीना	२९।२७	+१६। [illegible]	६८।५४।२३
चम्बा	३२।२९	+२५।२०	७६।६१।२५	मंडी	३१।४३	+२२। ८	७४।५९।२५	होशियारपुर	३१।३२	+२६।१२	७४।५९।२५	नैनीताल	२९।२३	+१२। ०	६७।५४।[illegible]
जम्मू	३२।४४	+३०।३२	७७।६२।२६	मरी	३३। ३	+४३।४४	७८।६२।२६	यू० पी०	—	—	—	पीलीभीत	२८।३८	+१०।३७	६६।५३।२२
जालन्धर	३१।२१	+२७।४४	७३।५८।२४	मलेरकोटला	३०।३१	+२६। ४	७१।५७।२४	अमरोहा	२८।५४	+१५।५६	६६।५३।२२	प्रतापगढ़	२५।३४	+ २। ४	५३।४३।१८
झींद	२९।१९	+२४।२८	६७।५४।२२	मीरपुर	३३।१२	+३५।३६	७८।६३।२६	अमेठी	२६। ८	+ २।४०	५९।४७।२०	फतेहगढ़	२७।२३	+११।४०	६२।५०।२१
झंग	३१।२८	+४०।४४	७३।५८।२४	मुजफ्फरनगर	३०। ५	+४५। ४	६९।५६।२३	अयोध्या	२६।४८	+ १। ०	६१।४९।२०	फतेहपुर	२५।५५	+ ३।३२	५८।४७।१९
जेहलम	३२।५५	+३५। ८	७८।३२।२६	मुजफ्फरपुर	२९।५७	+१९। ४	६८। ५।२३	अल्मोड़ा	२९।३७	+११।२०	६८।५।२३	फर्रुखाबाद	२७। ३	+११।३२	६२।५०।२१
तक्षशिला	३३।४०	+३८।४०	८०।६४।३७	मुलतान	३०।१३	+४४। ४	७०।५६।२३	अलीगढ़	२७।५३	+१७।३६	६३।५१।२१	फैजाबाद	२६।४७	+ १।२८	६०।४८।२०
कुरुक्षेत्र	२९।५८	+२२।१६	६९।५५।२३	रामनगर	३२।५२	+२८।३२	७७।६३।२६	आगरा	२७।१०	+१७।५२	६२।४९।२१	बदायूं	२८। २	+१३। ०	६४।५१।२१
देहली	२८।३९	+२१। ८	६५।५२।२२	रावलपिंडी	३३।३७	+३७।४८	८०।६४।२७	आजमगढ़	२६। ३	+ २।५२	५९।४७।२०	बरेली	२८।२२	+१२।१४	६५।५२।२२
धर्मशाला	३२।१६	+२३।४८	७६।६१।२५	रियासी	३३। ५	+३०।४४	७८।६३।२६	इटावा	२६।४७	+१३।५२	५०।४८।२०	बलिया	२५।४४	— ६।४४	५८।४६।१९

नजफगढ़ 28.37N 76.59E -22.04 [illegible] 28.36N 77.8E -21.28

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बस्ती	२३।४८	— ११। ४	५३।४२।१८
बहराईच	२७।३४	+ ३।५८	६३।५०।२१
बान्दा	२५।२८	+ ८।४४	५७।४६।१९
बाराबंकी	२६।५६	+ ५।१२	६१।४९।२०
बिजनौर	२९।२३	+ १७।१६	६७।५४।२२
बुलन्दशहर	२८।२४	+ १८।२४	६५।५२।२२
मथुरा	२७।२८	+ १९।१६	६०।५०।२१
मंसूरी	३०।२७	+ १७।३६	७०।६५।२३
मिर्जापुर	२५।१०	— ०।२८	५६।४५।१९
मुगलसराय	२५।१७	+ २।४४	५७।४५।१९
मुरादाबाद	२८।५१	+ १४।४४	६६।५३।२२
मेरठ	२८।५९	+ १९।१६	६६।२३।२२
मैनपुरी	२७।१४	+ १३।४८	६२।४९।२१
रानीखेत	२९।४०	+ ११।४८	६८।५५।२३
रामपुरस्टेट	२८।४८	+ १३।४८	६६।५३।२२
रायबरेली	२६।१४	+ ४।५६	५९।४७।२०
रुड़की	२९।५२	+ १८।२८	६९।५५।२३
रुहेलखण्ड	२८।३०	+ १४। ०	६६।५३।२०
लखनऊ	२६।५१	+ ६।१६	६१।४२।२२
ललीमपुर	२७।५७	+ ६।४४	६४।५१।२०
शाहबाद	२७।३०	+ ९।४०	६२।५०।२१
शाहजहांपुर	२७।५४	+ १०।११	६३।५१।२१
श्रीनगर	३१। ९	+ १५।३६	७०।५६।२१
सहारनपुर	२९।५८	+ १९।५८	६९।५५।२३
सीतापुर	२७।३२	+ ७। ८	६२।५०।२१
हरदोई	२९।२३	+ ९।२०	६२।५०।२१
हरिद्वार	२९।५२	+ १७।२८	६९।५५।२३
हाथरस	२७।३६	+ १७।३६	६३।५०।२०
सी. पी.	—	—	—
अमरावती	२०।५५	+ १९। ०	४६।३७।१५
अकोला	२०।४२	+ २९।५२	४५।३६।१५
इटारसी	२२।३७	+ १८।५६	५०।४०।१७
इन्दौरस्टेट	२२।४४	+ २६।३६	५०।४०।१७
औरंगाबाद	१९।५२	+ २८।२८	४३।३५।१४
कटनी	२३।४७	+ ८।१२	५३।४२।१७
खण्डवा	२१।५०	+ २४।२८	४८।३८।१६

खैरगढ़	२१।५६	+ ५।५२	४७।४४।१६
गुना	२४।४०	+ २०।४०	५५।४४।२८
गवालियार	२६।१२	+ १७।२०	५९।४७।२०
चम्बलपुर	२४।४८	+ २८।४४	५५।४४।२१
चांदा	२९।५६	+ १२।३६	०३।३५।१४
छत्रपुर	२४।५४	+ ११।२८	५६।४५।१९
छिन्दवाड़ा	२२। ३	+ १४। ४	४९।४९।१६
जबलपुर	२३। ९	+ १०।१२	५१।४१।१७
जावरास्टेट	२३।३७	+ २९।२४	५२।४२।१७
टीकमगढ़	२४।५४	+ १४।३६	५५।४४।२८
दमोह	२३।५०	+ १२। ४	५३।४२।१८
दुर्ग	२१। ०	+ ४।४८	४६।३६।१५
देवगढ़	२१।५१	+ १४।४०	४८।३९।१६
बारस्टेट	२२।३६	+ २८।४०	५०।४०।१७
नरसिंह गढ़	२३।४४	+ २१।२८	५३।४२।१८
नरसिंह पुर	२२।५७	+ १३। ०	५१।४१।१७
नागपुर	२१। ९	+ १३।४०	४६।३७।१५
नांदगाव	२१। ०	+ ६।४८	४६।३७।१५
नेमवाड़ा	२२।३०	+ २२। ०	५०।४०।१७
बुदेलखण्ड	२४।१०	+ २। ०	५४।४३।१८
बालाघाट	२१।५५	+ ९। ०	४८।३[illegible]।१६
बिलासपुर	२२। ५	+ १। ८	४९।[illegible]।१६
बुन्देलखण्ड	२४।४०	+ १०। ०	५५।[illegible]।१८
ब्रह्मपुर	२०।४०	+ १०।१६	४५।३६।१६
भुसावल	२१। ३	+ २६।४८	४६।३७।१५
भोपाल	२३।१८	+ २०।१६	५१।४१।१७
माडवा	२४। ०	+ २६। ०	५२।४३।१८
रत्नपुर	२२।१७	+ १।१६	४९।३९।१६
रतलाम	२३।२०	+ २१।४८	५४।४३।१८
रायगढ़	२१।४५	+ ७।४४	४८।३९।१६
रायपुर	२१।१५	+ ३।३६	४७।३७।१५
रीवां	२४।३२	+ ४।४८	५५।४४।१८
सागर	२३।५०	+ १५। ०	५६।४५।१९
हुसंगाबाद	२२।४६	+ १९। ८	५०।४०।१७
राजपूताना	—	—	—
अजमेर	२६।२८	+ ३१।२०	६०।४८।२०
अलवर	२७।२४	+ २३।२८	६३।५०।२१

आबू	२४।२३	+ ४१।३२	५५।४४।१८
शिवनगढ़	२७।५३	+ ४६।५२	६३।५१।२१
उदयपुर	२४।३७	+ ३५। ४	५५।४४।१८
कोटा	२५। ९	+ २६।२८	६६।४५।१९
चन्देरी	२४।४२	+ १७।१६	५५।४४।१८
चुरु	२८।१९	+ ३०। ८	६५।५२।२२
जयपुर	२६।५६	+ २६।४४	६१।४९।२०
जैसलमेर	२६।५५	+ ४६।१२	६१।४९।२८
टोंकस्टेट	२६।११	+ २६।५२	५९।४७।२०
धौलपुर	२६।४०	+ १८।२८	६०।४८।२०
नाथद्वार	२४।५६	+ ३४।४४	५६।४५।१२
नवलगढ़	२७।५१	+ २८।४८	६३।५१।२१
नसीराबाद	२६।१८	+ ३०।५६	५९।४७।२०
पाली	२५।४६	+ ३६।२०	५८।४६।१९
प्रतापगढ़	२४। ६	+ ३१।२०	५३।[illegible]।१८
फतेगढ़	२८। ०	+ २९।५२	६४।५[illegible]।२१
बिसाऊ	२८।१५	+ २९।४४	६४।५२।२१
बीकानेर	२८। १	+ ३६।४८	६४।५१।२१
बून्दी	२५।२७	+ २७।३२	५७।४६।१९
भरतपुर	२७।१४	+ २०। ०	६२।५०।२१
रत्नपुर	२८। १	+ ३[illegible]।२४	६४।५१।२१
राजगढ़	२८।३९	+ २८।१६	[illegible]५।५[illegible]।२२
रामगढ़	२८।१०	+ ३०। ०	६४।५१।२१
माधोपुर	२५।५८	+ २४। ०	५८।४७।१९
सिंहगढ़	२७। ८	+ ५०।१२	६१।४९।२०
सींकर	२७।३६	+ २९। ०	६५।५०।२१
सुजानगढ़	२७।४२	+ ३२।३६	६३।५०।२१
हनुमानगढ़	२९।३५	+ ३२।३६	६९।५५।२३
बम्बई	—	—	—
अलीबाग	१८।३८	+ ३८।२२	४०।३२।१३
अहमदाबाद	१९। ७	+ ३०।४८	४१।३३।१४
अहमदनगर	२३। २	+ ३९।२६	५१।४१।१८
ईडरस्टेट	२३।५०	+ ३७।५२	५३।४२।१७
इन्दापुर	१८। ७	+ ३०। ३	३९।३१।१३
औंधस्टेट	१७।२४	+ ३०।२४	३८।३०।१३
कच्छभुज	२४। ०	+ ५०। ०	५३।४३।१८
कल्याण	१९।१३	+ ३७।२०	४२।३३।१४

कोलाब	१७।१८	+ ३३।१३	३७।३०।१५
काठियावाड़	२२। ०	+ ४९। ०	४९।३६।१६
कोल्हापुर	१६।४३	+ ३१।५६	३६।२९।१२
खानदेश	२०।४५	+ ३०। ०	४५।३६।१०
गुजरात	२३। ०	+ ३६।००	५१।४१।१७
कोंकण	१४।३२	+ ३१। ४	३१।२५।१०
चालीसगांव	२०।३३	+ २९।२०	४५।३६।१५
जंजीरा	१८।१५	+ ३८। ०	४१।३३।१३
जलगांव	२१। ०	+ २७।२०	४६।३७।१५
जामनगर	२२।२	+ ४१।३२	४९।४०।१६
जूनागढ़	२१।[illegible]	+ ४७।३६	४७।३८।१०
द्वारिका	२३।१५	+ ५४। ४	४९।३९।१६
धारवाड़	१५।२३	+ २९।५६	४३।२७।११
नडियाद	२२।४१	+ ३८।२०	५०।४०।१७
नासिक	१९।५९	+ ३४।४८	४४।३५।१५
परशुराम	१७।३३	+ ३६। ०	३८।३०।१३
पोरबन्दर	२१।३०	+ ५१।३२	४८।३८।१६
बक्सर	२२।१९	+ ४६। ८	४७।३८।१६
बड़ोदास्टेट	१६।११	+ ३७। ८	३५।२८।००
बागलकोट	१६।५०	+ २७।१०	३५।२९।१२
बीजापुर	१४।५२	+ २७। ४	३६।२९।१२
बेलगांव	१८।५८	+ ३१।५६	३४।२७।११
बम्बई	१६।५९	+ २८।४४	४१।३३।१४
रत्नागिरि	२१।१२	+ ३६।४४	३७।२९।१२
सूरत	२१।१२	+ ३८।४०	४७।३७।१५
सोमनाथ	२१। ४	+ ४८।१६	४७।३७।१५
शोलापुर	१६।४०	+ ३६।२४	३६।२९।१२
मद्रास	—	—	—
अदवानी	१७।५३	+ २०।४४	३३।३१।१३
अनन्तपुर	१४।४१	+ १९।२४	३१।२५।१०
अर्काट	१२।५८	+ २२।२४	२८।२२। ९
उटकमण्ड	११।२७	+ २१। २	२४।१९। ८
कन्याकुमारी	८। ४	+ १९।३६	२७।१४। ६
कमदम	१५।३४	+ १२।४४	३३।२७।११
कर्नूल	१५।४९	+ १७।५०	३४।३७।११
कालिकट	११।१५	+ २६।४४	२४।१९। ८
कोचीपट्टम	१२।५०	+ ३१। ०	२७।२२। ९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुन्नूर	११।२०	+२३	२६	१९	८	बिहार	२५।११	—१२	५६	४५	१९	बर्दवान	२२।३७	—२४	५०	४०	१६	अंकारा	३८।७५	+ १९८	लिनसन	३८।४४	+२१
कृष्णाकावेरी	१२।३२	+१७	२२	२१	९	भागलपुर	२५।१३	—१८	५६	४५	१९	ढाका	२३।४५	—३२	५३	४२	१८	केनिया	३७।५२	+२००	वियाना	४८।१५	+२९
कोकोनाडा	१६।५७	+ १	३५	१९	१२	मुंगेर	२५।२३	—२६	५७	५	१९	दारजिलिंग	२७।०४	—२३	६१	४९	१०	बगदाद	३३।२०	+१५२	रोम	४१।५५	+२८४
कोदरु	१४।४९	+२५	३८	२५	११	मोतीहारी	२६।४०	— ९	३०	४८	२०	दिनाजपुर	७५।३७	—२५	५५	४७	१९	मक्का	२१।२९	+१७०	बेलग्रेड	४४।४०	+२४४
चामराज	११।५६	+२२	२९	२०	८	रांची	२३।२३	—११	५२	६२	१७	नारायणगंज	२३।३७	—३२	५२	४२	१७	अदन	१२।४६	+१५०	एथेन्स	३७।३४	+२१८
चिन्तूर	१३।१३	+१३	२६	२६	९	रानीगंज	२५।५२	—२१	५८	४७	१९	पटना	२५।३३	—११	५७	४७	१९	तेहरान	३५।५१	+१२४	बुडापेस्ट	४३।२१	+२५५
ट्रावनकोर	९। ०	+२२	१३	१५	६	रामपुर	२१। ५	— ७	४६	३७	१९	पूरणीया	२४।४३	—२०	५८	४६	१९	काबुल	३४।३०	+ ५५	सोफिया	४७।४०	+ [illegible]
त्रिचनापल्ली	१०।५४	+१५	२३	१९	८	वैद्यनाथ	२४।३०	—१५	५५	४४	१८	बांकुर	२३।१४	—१८	५१	४१	१७	गजनी	३३।३४	+ ५६	वारसा	५२।१२	+२४६
त्रिवेन्द्रम	८।२९	+२३	१५	१४	६	**सीमा प्रांत**	—	—	—	—	—	मिदनापुर	२२।२५	—१९	४९	४०	१६	कंधार	३१।३७	+ ६८	स्टाकहोम	५२।२०	+२५७
नीलगीरी	११।२४	+२३	२२	१९	८	एबटाबाद	३४। ९	+३७	५१	६५	२७	मुर्शिदाबाद	२४।११	—२३	५५	४४	१८	यारकन्द	५८।२४	— २१	मास्को	५५।४५	+५८९
पाण्डीचरी	११।५६	+२६	२८	२०	८	कलात	२५।२१	+७४	५७	४५	१९	ममनसिंह	२५।४६	—३२	५५	४४	१८	पेकिंग	३९।५५	—१३६	आइसलैंड	६५।००	+२१०
बल्लारी	१५।१५	+२२	३८	२३	११	कराची	२४।५१	+६२	५५	४४	१८	**ब्रह्मा**	—	—	—	—	—	नानकिंग	३२। ७	—१४५	वाशिंगटन	३८।५५	+७०१
बंगलोर	१२।५८	+१९	२९	२२	९	काठमंडू	२६।४२	+११	६३	०	२१	मौबले	२२। ०	—५५	४८	३१	१६	हांगकांग	२२।१२	—१२७	न्यूयार्क	४०।४३	+८१४
मद्रास	१३। ६	+ ९	२४	२२	९	कोहाट	३३।३६	+४४	८०	६४	२७	रंगून	१६।४८	- ५५	३६	२१	१२	पानामा	२०।१२	— ३०	शिकागो	४२। ०	+७५९
मदनापल्ल।	१३।५४	+१५	२९	२६	१०	कोचीन	९।५८	+२५	२२	१८	७	**हैदराबाद**	—	—	—	—	—	ल्हासा	२९।४०	— ३४	ओटावा	४५।२७	+८०७
रामेश्वरम्	९।१८	+१३	२६	२६	६	कोलम्बो	६।५६	+१०	१४	१२	५	अस्मानाबाद	१८। ८	+२५	३९	३१	१३	स्याम	१६। ०	— ०५	मक्सिको	२६। ०	+७४२
विजागापट्टम	१७।४२	— ३	३८	३१	१६	गोवा	१५।२७	+३६	२३	२७	११	गुल्लबर्गा	१७।२२	+२३	३८	३०	१५	बंकाक	१३।४२	— ७२			.
विजयनगरम्	१८। ७	— ४	३९	३१	१३	दमन	३०।३५	+७६	५१	५८	२४	गोलकुण्डा	१७।४७	+ ०	३८	३१	२३	ओसाका	१२। ०	—२१९	**आस्ट्रेलिया**	(व)	
श्री रंगम्	१०।५२	+१५	२३	१८	८	नौशहरा	३४। ०	+४२	८१	३५	२७	दौलताबाद	१९।१२	+२९	४३	३५	१४	सिंगापुर	१।१७	— ८५	फिजी	१६। ०	—[illegible]
बहारउडीसा	—	—	—	—	-	पेशावर	३४। १	+४४	८१	४५	२६	रायपुर	१६।१०	+२१	३५	२८	१२	जेनसन	३९।११	—१८०	सिडनी	३३।५२	—२७५
आरा	२५।३४	— ९	५७	४६	१९	बन्नू	३३। ०	+४७	७८	५३	२७	शाहाबाद	१७।२०	+१७	३७	३०	१२	टोकियो	३५।४०	—२३५	मेलबाया	६७।५०	—२५०
बड़ीमा	२१।२२	— ८	४७	३८	१६	सक्खर	२७।४२	+४४	६३	५०	२९	हैदराबाद	१७।२०	+१६	३७	३०	१२	अण्डेमान	१२। ०	— ४१	वेलिंगटन	४१।१६	—३९९
कटक	२०।२८	+१४	४५	३६	१५	सीनोन	७। ९	+७६	१५	१२	३	**आसाम**						**योरोप**					
कोर्टा	३०।१२	+६२	४०	४३	२३	बिलोचिस्तान	२७।३०	+ ८	३२	५०	२१	आसाम	२६। ०	—४२	५८	४७	१९	ग्रीनविच	५१।५९	+३३०	**अफ्रीका**	—	—
गया	२४।४६	—१०	५४	४५	१८	**बंगाल**						कच्छार	२४।५०	—४१	५५	४४	८	लण्डन	५१।३०	+३३०	नरोबी	१।१८	+१८३
गोरखपुर	२६।१६	—१०	४२	३४	१४	आसनसोल	२३।४२	—१८	५३	४२	१८	गोलघाट	२६।३७	—४६	६०	४५	१९	मानचेस्टर	५३।२८	+३२१	ट्रांसवाल	२५। ०	+२१४
गोविन्दपुर	२३।५१	—१६	१३	४२	१८	कलकत्ता	२२।३४	—२३	४८	३९	३३	चिरापुंजी	२५।१९	—३७	५७	४८	२०	ग्लासगो	५५।५२	+३१३	केपटाऊन	३३।५६	+२५६
छपरा	२५।४७	— ९	५८	४६	१९	कूचबिहार	२६।२४	—२८	३०	४८	२०	डिब्रूगढ़	२७।२	—५०	६२	५०	२१	डब्लिन	५३।११	+३०५	लाहबोरिया	६। ०	+२५४
जगन्नाथपुरी	१९।४६	—१४	४३	३५	१४	चटगांव	२२। ९	—३८	४८	३९	१६	नौगांव	२६।२३	—४१	५९	४८	२०	ब्रूसेल्स	५०।४२	+३१३	डरबन	२९।५२	+२०६
दरभंगा	२६। ८	—१४	५९	४७	२०	चन्द्रनगर	२२।५१	—२४	५१	४१	१७	मणिपुरस्टेट	२४।४४	—४६	५५	४४	१८	कोपनहेगन	५५।४०	+२८०	करो	३०। २	+२०५
दुमका	२४।३०	—१९	५५	४४	१८	चांदपुर	२३।१२	—३३	५१	४१	१७	शिलांग	२५।६३	—३८	५७	४६	१९	बर्लिन	५२।६२	+२७५	अलग्जेंड्रिया	३१।१२	+२१०
बांकीपुर	२५।४०	—११	५८	४६	१९	चौबीसपरगना	२२।३०	—२४	५०	४०	१७	सिलहट	२४।५३	—३८	५६	४६	१९	हेमबर्ग	५३।३५	+२९०	स्वेज	३०। ०	—२००

विदेशों के स्टैं. टा. का भारत के स्टैं. टा. से अंतर घंटा मिटों में लिखा है। धन चिन्ह भारत से पश्चिम दिशा जानना धनचिन्ह(+)है। दूसरा चिन्ह ऋण (–) का है। पूर्व दिशा ऋण अर्थात् पहले जानना।

अफगानिस्तान +१ –०। बर्मा—१—०। मलाया —२—०। मिश्र +३ – ३०। इंगलैंड +५ – ३०। टर्की +३—३०। इराक +२ – ३०। ईरान +२— ००ईटली +४— ३०
अमरीका +१० — ३०। फ्रांस +५ २०। जनेवा +५— ००। सिंगापुर –१ —२५। केनेडा +१२ —३०। ब्राजील +९— ००। जापान — ३ — ००। केनिया +३—००
फ्रांस + — ३०। पूर्व जर्मनी +४ – ३०। रूस +२ – ३०। चीन —२ – ३०। नेरोबी +३—३। यूगेण्डा +३—२०। वाशिंगटन +१० —४०।न्यूयार्क +१० — ३०।मास्को +३ — ००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दशम लग्न [illegible] लंकोदय ([illegible])

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
मेष	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
१	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
वृष	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
२	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३
मिथुन	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
३	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९
कर्क	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
४	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
सिंह	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	५९	९	१८	२७	३७	४६
५	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८
कन्या	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१८	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४
६	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३
तुला	३३	४२	५२	१	१०	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
७	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८
वृश्चिक	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४
८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३
धनु	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४१	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७
९	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९
मकर	८	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
१०	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३
कुम्भ	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६
११	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८
मीन	५५	४	१३	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५६	५	१५	२४

ग्रहों के छः प्रकार के फल

स्थान, बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृग्बल यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**—जो ग्रह उच्च, मित्र गृह, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बुध को सर्वदा कालबली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य, चन्द्रमा और मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृग्बल**—शुभ ग्रहों से दुष्ट ग्रह दृग्बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। पाठकों को राशि स्वभाव और ग्रह स्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिए।

[illegible] स्पष्ट तथा द्वादश भाव साधन प्रकार

इष्ट युत दिन अंकों को अपने लग्न स्पष्ट के लिए अपनी लग्न सारणी में जिस कोष्ठक में देखा है वही अंक उसी तरह दशम लग्न सारणी में भी न्यून कोष्ठक में देखो वह दशम स्पष्ट होता है। शेष विधि लग्न स्पष्ट की तरह करें।

उदाहरण—उस लग्न सारणं के साथ लग्न स्पष्ट के उदाहरण में इष्ट १०।१५ में लग्न सारणी से प्राप्त अंक १२।१५ युक्त किया तो २२।३० घट्यादि को दशम सारणी में देखा तो मेष राशि के २४ अंश के नीचे है। अतएव दशम लग्न स्पष्ट ०।४ हुआ। दशम भाव में ६ राशि युक्त करने से चतुर्थभाव और लग्न में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव होता है चतुर्थ भाव में लग्न को हीन करें तब जो शेष बचे उसमें ६ से भाग दें लब्ध राश्यादि षष्ठांश को लग्न में युक्त करें तो लग्न और धन की सन्धि होगी। लग्न व धन की सन्धि युक्त करने से धन भाव होगा, धन भाव में युक्त करने से धन और तृतीय की सन्धि होगी। धन तृतीय की सन्धि में युक्त करने से तृतीय भाव होगा तृतीय में षष्ठांश युक्त करने से तृतीय और चतुर्थ की सन्धि होगी। तृतीय चतुर्थ की सन्धि में एक राशि युक्त करने से चतुर्थ पंचम की सन्धि होगी, तृतीय में दो राशि युक्त करने से पंचम भाव, द्वितीय तृतीय की सन्धि में तीन राशि युक्त करने से पंचम और षष्ठम भाव की सन्धि, द्वितीय भाव में ४ राशि युक्त करने से षष्ठ होगा। प्रथम द्वितीय की सन्धि में ५ राशि युक्त करने भाव से षष्ठ सप्तम की सन्धि, फिर प्रथम में ६ राशि युक्त करने से सप्तम सब में क्रमपूर्वक ६ राशि सन्धि सहित करने से शेष भाव व सन्धियां बन जावेंगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की दशान्तर्दशा का ज्ञान चक्र

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें, जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान—जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर इसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुण दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को १२ से गुणा कर भभोग से भाग दो. लब्ध मास आवेंगे, शेष को ३० से गुणा कर भभोग का भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को ६० से गुणा कर भभोग का भाग दो लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को ६० से गुणा कर भभोग का भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जावेगा।

सूर्यदशावर्ष ६			
कृ.उ.फा.उ.षा.			
अन्तर्दशादि १८			
ग्र.	व.	मा	दि
सू.	०	३	१८
चं.	०	६	०
मं.	०	४	६
रा	०	१०	२४
गु.	०	९	१८
श.	०	११	१२
बु.	०	१०	६
के.	०	४	६
शु.	१	०	०

चन्द्रदशावर्ष १०			
रोहि. ह. श्रवण.			
अन्तर्दशादि ३०			
ग्र.	व.	मा	दि
चं.	०	१०	०
मं.	०	७	०
रा.	१	६	०
बृ.	१	४	०
श.	१	७	०
बु.	१	५	०
के.	०	७	०
शु.	१	८	०
सू.	०	६	०

भौमदशावर्ष ७			
मृ. चि. ध.			
अन्तर्दशादि २१			
ग्र.	व.	मा	दि
मं.	०	४	२७
रा.	१	०	१८
बृ.	०	११	६
श.	१	१	९
बु.	०	११	२७
के.	०	४	२७
शु.	१	२	०
सू.	०	४	६
चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८			
आर्द्रा.स्वा. शत.			
अन्तर्दशादि ५४			
ग्र.	व.	मा	दि
रा	२	८	१२
बृ.	२	४	२४
श.	२	१०	६
बु.	२	६	१८
के.	१	०	१८
शु.	३	०	०
सू.	०	१०	२४
चं.	१	६	०
मं.	१	०	१८

गुरुदशावर्ष १६			
पुन.वि.पू.भा.			
अन्तर्दशादि ४८			
ग्र.	व.	मा.	दि
बृ.	२	१	१८
श.	२	६	१२
बु.	२	३	६
के.	०	११	६
शु.	२	८	०
सू.	०	९	१८
चं.	१	४	०
मं.	०	११	६
रा	२	४	२४

शनिदशावर्ष १९			
पुष्य.अनु.उ. भा.			
अन्तर्दशादि ५७			
ग्र.	व.	मा	दि
श.	३	०	३
बु.	२	८	९
के.	१	१	९
शु.	३	२	०
सू.	०	११	१२
चं.	१	७	०
मं.	१	१	९
रा	२	१०	६
बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७			
आश्ले.ज्ये.रेवती			
अन्तर्दशादि ५१			
ग्र.	व.	मा.	दि
बु.	२	४	२७
के.	०	११	२७
शु.	२	१०	०
सू.	०	१०	६
चं.	१	५	०
मं.	०	११	२७
रा	२	६	१८
बृ.	२	३	६
श.	२	८	९

केतुदशावर्ष ७			
मघा.मू.अश्वि			
अन्तर्दशादि २१			
ग्र.	व.	मा	दि
के.	०	४	२७
शु.	१	२	०
सू.	०	४	६
चं.	०	७	०
मं.	०	४	२७
रा	१	०	१८
बृ.	०	११	६
श.	१	१	९
बु.	०	११	२७

शुक्रदशावर्ष २०			
पू.फा.पू.षा.भर			
अन्तर्दशादि ६०			
ग्र.	व.	मा.	दि.
शु.	३	४	०
सू.	१	०	०
चं.	१	८	०
मं.	१	२	०
रा	३	०	०
बृ.	२	८	०
श.	३	२	०
बु.	२	१०	०
के.	१	२	०

विंशोत्तरी दशा चक्र

अष्टोत्तरी दशा चक्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	दशा
६	१५	८	१७	१०	१९	१२	२१	वर्ष
आ.पुन पुष्य श्ले	मघा पूफा. उफा.	ह. चि. स्वा.वि	अनु ज्ये. मूल	पूषा. उषा. श्रव	धनि. शत पूभा.	उभा.रे. अ. भ.	कृ. रो. मृ.	नक्षत्र

अन्तर्दशा निकालने की रीति

जब किसी ग्रह की अन्तर्दशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक् २ हर एक ग्रह को दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दे (विंशोत्तरी १२०)(अष्टोत्तरी १०८) योगिनी ३६)भाग देने से जो लब्धि आवे अन्तर्दशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

चरदशा—मेष, सिंह, मिथुन, तुला, धन, कुम्भ, ओजराशि हैं। वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन समराशि हैं। ओज राशियों की क्रमगणना और समराशियों की विपरीत गणना होती है। राशि का स्वामी जहां बैठा हो वहां तक की जितनी संख्या हो उतने वर्ष दशा के जानो। अपनी राशि में हो तो १२ वर्ष लेने, जहां उच्च का हो उस गणना में एक और जोड़ना, नीच में एक कम करना, वृश्चिक राशि का, मंगल और केतु दोनों स्वामी हैं। कुम्भ राशि के शनि और राहु दोनों स्वामी हैं। इनमें जो अधिक बली हो उसको लेना चाहिए।

योगिनीदशान्तर्दशाज्ञान के लिये चक्र

मंगला १	पिंगला २	धान्या ३	भ्रामरी ४	भद्रिका ५	उल्का ६	सिद्धा ७	सकटा ८	दशा तथा वर्ष
मा १२ च.	मा. २४ सू.	मा. ३६ बृ.	भा. ४८ मं.	मा. ६० बु.	मा. ७२ श.	मा. ८४ शु.	मा. ९६ के.	दशेशग्रहाः
म. ० १०	पि. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	
पि. ० २०	धा. २ ०	भ्रा ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पि. ५ १०	
भ्रा १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पि. ४ २०	धा. ८ ०	
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पि. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा १० २०	
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पि. ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पि. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पि. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	
अं. आर्द्रा चित्रा	च पुनर्वसु स्वाती	श. पुष्य. विशा.	अश्वि. श्लेष अनु. पू. भा.	भर. मघा. ज्ये उ भा.	कृ. पू. फा. मू. रे.	रो. उ. फा. पू. षा.	मृग. हस्त. उ. षा.	जन्म नक्षत्र

अन्तर्दशामासादि

भुक्तदशा—म. मा. व. दि.

भोग्यदशा—पि. मा. व. दि.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

आयुर्दाय विचार बोधक चक्र

दीर्घ	मध्य	अल्प
चर चर	चर स्थिर	चर द्विस्वभाव
स्थिर द्विस्वभाव	द्विस्वभाव द्विस्वभाव	स्थिर स्थिर

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु विचार सारणी

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	१	१	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	०	१	२	२	४	४	६	७	७	७	८	९	१	१
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

जैमिनीय सूत्रोक्तायु साधन कला ज्ञान सारणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१८	२४	१	७	१४	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	२	९	१५	२२	२८	४	११	१७	२४
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनीय सूत्रोक्तायु साधन विकला फल सारणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घड़ी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घड़ी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३५	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७	२०
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

उपरोक्त चक्र मे आयु का विचार तीन प्रकार से करें (१) लग्नेश अष्टमेश से (२) शनि चन्द्रमा से (३) लग्न वा होरा लग्न से—जैसे लग्न चर में है और अष्टमेश भी चर मे हो तो दीर्घ, लग्न स्थिर में हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घ. लग्न द्विस्वभाव में हो और होरा लग्न स्थिर में हो तो दीर्घ आयु।

यदि तीनों प्रकार से आयु भिन्न २ आये, और चन्द्रमा लग्न और सप्तम में न हो तो लग्न वा होरा लग्न से जो आयु आये उसे ग्रहण करें, यदि लग्न से या सप्तम में चन्द्रमा हो तो शनि और चन्द्रमा से जो आयु आये उसे ग्रहण करे।

होरा लग्न—इष्ट घड़ी को १२ अंशों से गुणा कर जो फल अंशादि आयेगा उसको राश्यादि करके स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होगा।

उपरोक्त तीनों प्रकार से दीर्घायु आये तो १२० वर्ष, तथा तीनों प्रकार से मध्यमायु ८० वर्ष है दो प्रकार से ७२ और एक प्रकार से ६४ वर्ष होती है। एवं तीनों प्रकार से अल्पायु ३२ वर्ष, दो प्रकार से २६ और एक प्रकार से अल्पायु २० वर्ष होती है।

उपरोक्त तीनों प्रकार से आयु निर्णय करने पर जिस २ प्रकारों से आयु का निर्णय हो अर्थात् लग्नेश अष्टमेश से हानि चन्द्रमा, लग्न व होरा से यदि इन तीनों प्रकार से एक ही प्रकार की आयु आये तो तीनों का अर्थात् लग्नेश वा अष्टमेष शनि चन्द्रमा का लग्न वा होरा लग्न के स्पष्ट की राशिको छोड़ कर शेष अंश कलादि फल को युक्त कर ६ से भाग दे जो अंश कला विकला आये ऊपर लिखी सारणी में अंश फल सारणी में अंशों के नीचे का फल, कला फल सारणी में कला का फल, विकला फल सारणी में विकला का फल लेकर तीनों को युक्त करो तो यह युक्तफल वर्ष आदि आएंगे। इन को ऊपर कही आयु में घटाने से स्पष्ट आयु आ जायेगी। दो प्रकार की आयु आने पर उनके अंशादि के योग में ४ का भाग देना और एक प्रकार से २ का भाग देना।

उदाहरण-जैसे लग्न सिंह और लग्न का स्वामी चर राशि में पड़ा है और अष्टमेश गुरु भी चर राशि में है दीर्घायु। (२) शनि चन्द्रमा स्थिर मे हो तो अल्पायु लग्न और होरा लग्न स्थिर में हो तो अल्पायु होती है यह दो प्रकार से अल्पायु है।

अतः शनि चन्द्रमा होरा लग्न को राशि को छोड़ कर शेष अंशादि को युक्त करके ४ का भाग देने से जो अंश कला विकला आएं उनका फल ऊपर लिखी सारणी से लेकर उसको २६ वर्ष में से घटावें तो स्पष्ट आयु आ जायेगी।

अष्टमञ्च तृतीयं च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तम स्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिद् स्वेगश व्ययेश-अष्टमेश दशास्वपि मारकसम्भवः। परस्पर षष्ठाष्टमेश्यो दशन्ति रञ्च न शोभनम्। मारके मारकातरम शोभनम् व्यय द्वितीयेश वद्ग्रहाः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽतिष्टे सम्बन्ध रहिता न मारककारिणी पापदशात्वदनिष्टदेति।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं—

यदि किसी स्त्री के भौहों के मध्य भाग में तिल चिन्ह हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिन्ह हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्र्य कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, वह सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री के दोनों भौहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस में किसी ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर श्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्याभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, वैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिन्ह सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पृष्ट भाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दुःख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिन्ह हो तथा उस यव (जौ) चिन्ह के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीना होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं ओर अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिन्ह हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिन्ह हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दुःख देता है। स्त्री के हाथ और पांव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियां को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सकल साधारणोपयोगी प्रश्न चक्र

नीचे लिखे हुए इन सात चक्रों में विवाह सम्बन्धी, सन्तान आदि ७ प्रकार के प्रश्न कहे हैं। जिस प्रश्न की कामना हो उस चक्र पर. अपने दाहिने हाथ की अनामिका उंगली किसी कोष्ठ पर रखें जिस कोष्ठक में जो अंक और जो अक्षर होगा, उसी प्रश्न फल चक्र में उतने अंक के उस अक्षर के आगे उस प्रश्न का फल लिखा होगा, वही फल प्रश्नकर्ता को प्राप्त होगा। जैसे—किसी ने विवाह चक्र के अक्षर ३ कोष्ठक के ऊपर उंगली को रखा तो विवाह फल चक्र में ३ अंक के सामने उसका फल लिखा है: तुम्हारा विवाह जल्दी होने वाला है सो यही फल प्रश्नकर्त्ता को मिलेगा। इसी तरह अन्य प्रश्नों में भी शुभाशुभ विचार जान लेना चाहिए।

विवाह परीक्षा चक्रम्

ए	ऋ	ओ	क	ख	ग	अ	ई	उ	ऋ	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

सन्तान परीक्षा चक्रम्

ऋ	ए	लृ	आ	क	ख	ग	अ	इ	उ	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

रोग परीक्षा चक्रम्

ज	झ	उ	ट	ठ	ड	त	घ	च	छ	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

विद्या परीक्षा चक्रम्

लृ	ओ	क	ख	ग	आ	इ	उ	ऋ	ए	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

रोजगार परीक्षा चक्रम्

छ	ज	झ	ठ	ट	ढ	ड	त	थ	च	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

व्यापार परीक्षा चक्रम्

क	ख	ग	अ	इ	ऊ	ऋ	ए	लृ	ओ	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

नष्ट द्रव्य परीक्षा चक्रम्

य	म	भ	प	ध	न	घ	द	फ	ब	प्रश्नाक्षर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	कोष्ठकाणि

विवाह विचार फलम्—१ए—तुम्हारे मकान के दक्षिण की ओर विवाह होगा, देर है। २ऋ—कुछ देर है विवाह मकान के दक्षिण में होगा। ३ओ—विवाह बहुत जल्दी होगा, ऐसा जाना जाता है। ४क—मकान से पूर्व दिशा में विवाह होने वाला है। ५ख—विवाह तुम्हारा होगा परन्तु अभी देर है। ६ग—अभी विवाह नहीं होगा, ऐसा जाना जाता है। ७अ—मकान के पूर्व दिशा से विवाह होने वाला है। ८ई—तुम्हारा विवाह मकान के उत्तर की ओर होगा। ९उ—विवाह मकान के उत्तर दिशा में कुछ देर से होगा। १०ऋ—तुम्हारा विवाह पश्चिम दिशा में जल्दी होगा।

सन्तान विचार फलम्—१ऋ—तुम्हारे सन्तान होगी परन्तु देरी है। २ए—तुम्हारे जल्दी ही कन्या होने का योग है। ३लृ—बहुत यत्न करने से कभी पुत्र की उत्पत्ति होगी। ४आ—कुछ समय के बाद आपके पुत्र उत्पन्न होगा। ५क—तुम्हारे घर में शीघ्र कन्या उत्पन्न होने वाली है। ६ख—पुत्र प्राप्ति का योग है परन्तु कुछ देरी है। ७ग—सुन्दर बालक होगा ऐसा जानने में आता है। ८अ—अभी तुम्हारे भाग्य में संतान नहीं है चिंता मत करो। ९इ—तीन सन्तान तुम्हारे घर में होंगी ऐसा योग है। १०उ—आपके कन्या सन्तान होगी ऐसा योग है।

रोग विचार फलम्—१ज—पित्त के विकार से रोग हुआ है, जल्दी ठीक होगा। २झ—नाड़ी में कफ का विकार है अच्छा हो जावेगा। ३उ—गर्मी का विकार है अच्छा होगा ऐसा निश्चय है। ४ट—कफ विकार से बहुत कष्ट है अच्छा होगा। ५ठ—पित्त के विकार से शरीर दूषित है अच्छा हो जायेगा। ६ड—वात और पित्त की व्याधि है, कष्ट दूर होने वाला है। ७त—इड़ा नाम की नाड़ी में रोग हुआ है देर से आराम होगा। ८घ—गर्मी और धातु का विकार है देर से अच्छा होगा। ९च—गर्मी अधिक होने से कष्ट है अच्छा होगा। १०छ—शरीर में जो रोग है, देर से अच्छा होगा।

विद्या विचार फलम्—१लृ—बहुत परिश्रम करने से विद्या प्राप्त होगी। २ओ—तुम्हारे भाग्य में विद्या बहुत है, सफलता के योग हैं। ३क—जो विद्या पढ़ोगे वह ही जल्दी से आ जावेगी। ४ख—विद्या बहुत फलदायक है इसको पढ़ते जाओ। ५ग—विद्या पढ़ो देर से इसका फल मिल जावेगा। ६आ—विद्या नहीं आवेगी, कोई और काम करो। ७इ—विद्या पढ़ो अनेक प्रकार की विद्या प्राप्त होगी। ८उ—विद्या भाग्य में नहीं है परिश्रम से प्राप्त होगी। ९ऋ—विद्या कष्ट से प्राप्त होगी ऐसा योग है। १०ए—विद्या मध्यम दरजे की है ऐसा जाना जाता है।

रोजगार विचार फलम्—१छ—उद्यम करो रोजगार लग जावेगा कुछ देर है। २ज—देर से रोजगार लगेगा भजन किया करो। ३झ—रोजगार बहुत अच्छा लगेगा, थोड़ी देर है। ४ठ—तुम्हारा रोजगार बहुत अच्छा लग जावेगा। ५ट—चिन्ता मत करो कारोबार बनने वाला है। ६ढ—रोजगार अच्छा बनेगा, कुछ बिलम्ब से होगा। ७ड—तुम्हारा रोजगार परदेश में होगा ऐसा योग है। ८त—रोजगार बनकर बिगड़ गया है फिर होगा। ९थ—तुम्हारा रोजगार नहीं लगेगा कुछ नुकसान होगा। १०च—रोजगार लगने वाला है इसकी चिन्ता मत करो।

व्यापार विचार फलम्—१क—तुमको मूल द्रव्य के व्यापार से लाभ होगा। २ख—इस व्यापार से लाभ होगा चिन्ता मत करो। ३ग—तुमको जीव वस्तु के व्यापार से लाभ होगा। ४अ—व्यापार मत करो इसमें तुम्हारा धन नष्ट होगा। ५इ—तुम व्यापार करो इससे बहुत लाभ होगा। ६उ—तुम व्यापार मत करो इससे नुकसान होगा। ७ऋ—तुम मन में व्यापार की इच्छा करते हो ठीक नहीं। ८ए—तुमको मूल और जीव वस्तु का व्यापार लाभकारी है। ९लृ—व्यापार करने से अपने धन का भी नुकसान है। १०ओ—व्यापार करो निश्चय ही तुमको बहुत लाभ होगा।

नष्ट द्रव्य फलम्—१य—जो वस्तु खो गई है, बड़े कष्ट से मिलेगी। २म—मूल सहित धातु खो गया है वह घर में है। ३भ—जो द्रव्य खो गया है मिलेगा चिन्ता न करें। ४प—जो द्रव्य धातु खो गया है कठिनता से मिलेगा। ५ध—मकान के पश्चिम उत्तर में खोई हुई वस्तु मिलेगी। ६न—यह गई वस्तु तुमको कठिनता से प्राप्त होगी। ७घ—धातु द्रव्य खो गया है सो मित्र के पास है। ८द—तुम्हारी खोई हुई वस्तु देर से मिलेगी। ९फ—धातु द्रव्य खो गया है, खोजने से मिल जावेगा! १०ब—मूल सहित धातु द्रव्य खो गया है घर में मिलेगा।

एक दिन का वेतन या किराया निकालने का नक्शा

मासिक वेतन रु.	२६ दिन रु० पै०	२८ दिन रु० पै०	२९ दिन रु० पै०	३० दिन रु० पै०	३१ दिन रु० पै०
१	०-०४	०-०४	०-०४	०-०३	०-०३
२	०-०८	०-०७	०-०७	०-०७	०-०६
३	०-१२	०-११	०-१०	०-१०	०-१०
४	०-१५	०-१४	०-१४	०-१४	०-१३
५	०-१९	०-१८	०-१७	०-१७	०-१६
६	०-२३	०-२१	०-२१	०-२०	०-१९
७	०-२६	०-२५	०-२४	०-२३	०-२२
८	०-३१	०-२९	०-२८	०-२७	०-२६
९	०-३४	०-३२	०-३१	०-३०	०-२९
१०	०-३८	०-३६	०-३४	०-३३	०-३२
२०	०-७७	०-७१	०-६९	०-६७	०-६५
३०	१-१५	१-०७	१-०४	१-००	०-९७
४०	१-५४	१-४३	१-३७	१-३३	१-२९
५०	१-९२	१-७९	१-७२	१-६७	१-६१
६०	२-३१	२-१४	२-०६	२-००	१-९४
७५	२-८८	२-६७	२-५८	२-५०	२-४२
१००	३-८५	३-५८	३-४५	३-३३	३-२२
१५०	५-७७	५-३६	५-१७	५-००	४-८५
२००	७-७०	७-१४	६-९०	६-६७	६-४५
५००	१९-२३	१७-८६	१७-२४	१६-६७	१६-१३
१०००	३८-४६	३५-७१	३४-४८	३३-३३	३२-२६

गण्डान्त नक्षत्र

अश्लेषा पाद फल

अश्लेषा के प्रथम चरण शुभ दूसरे में धन-नाश, तीसरे में मातृ नाश और चौथे

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गराडान्त नक्षत्र

अश्विनी, अश्लेषा मघा, ज्येष्टा, मूला, और रेवती यह छे गण्डान्त नक्षत्र है यदि बालक का जन्म गण्डान्त नक्षत्रों में हो तो जीना कठिन होता है, माता को क्लेश और कुल का नाश करता है, गण्डान्त में उत्पन्न हुआ बालक जीवित रहे तो हाथी घोड़ा इत्यादि से युक्त राजा के समान होता है ।

मूलपाद फलम्

मूला नक्षत्र के प्रथम पाद में उत्पन्न हो तो पिता के लिए, दूसरे पाद में माता के लिए तीसरे पाद में धन के लिए हानि कारक होता हैं और चौथा पाद शुभ कहा हैं ।

मूल वृक्ष चक्र

मूला नक्षत्र की पहली ४ घड़ी मूल, फिर ७ घड़ी स्तम्भ, फिर ८ घड़ी त्वचा फिर ९ घड़ी शाखा, फिर अगली १० घड़ी पत्र ऐसे नीचे लिखे चक्र से जाने ।

मूला	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
४	७	८	९	१०	५	६	११
मूल	धर्म	भ्रात	मातुल	राज्य	राज	धन	चिर
नाश	हानि	हानि	हानि	प्राप्ति	मन्त्री	लाभ	जीवी

मूल वास फल

मार्गशीर्ष, फाल्गुन, वैशाख और ज्येष्ट मास में मूल का वास पाताल लोक में होता है। माघ, अश्विन, भाद्रपद और आषाढ महीने में स्वर्ग में वास, इसी प्रकार पौष, श्रावण चैत्र और कातिक महिनों में पृथ्वी पर मूल का वास होता है। स्वर्ग में हो तो राज्य प्राप्ति, पाताल में धन प्राप्ति और मृत्यु लोक में मूल का वास हो, तो अनेक प्रकार के विघ्न होते है ।

मूल का पुरुष के स्थान पर घटी विन्यास का फल

शिर	भुज	स्कंध	बाहु	हस्त	हृदय	वस्ति	गुदा	जानु	पाद
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६
राज्य	पित्रो:	धन	महा	सुकर्म	राज	बहु	अनि	महा	मति
प्राप्ति	क्षय:	प्राप्ति	बल	कर्ता	मन्त्री	वित	काम	मति	मान

ज्येष्ठा की ६. ६ घड़ी का फल तथा चक्र

ज्येष्ठा नक्षत्र की पहली ६ घड़ी में जन्म हो तो मातामहि (नानी) की हानि अगली ६ घड़ी में नाना की हानि, इत्यादि नीचे लिखे चक्र से जाने ।

ज्येष्ठा चक्र विन्यास

६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
माता	माता	मातुल	मात	आत्म	गोत्र	कुल	ज्येष्ठ	श्वसुर	सर्व
महा	मह	हानि	हानि	हानि	क्षय:	हानि	भ्रातृ	नाश	वस्तु
हानि	हानि						हानि		हानि

अश्लेषा पाद फल

अश्लेषा के प्रथम चरण शुभ दूसरे में धन-नाश, तीसरे में मातृ नाश और चौथे चरण में पिता का नाश कहा है ।

मघा नक्षत्र—पहले पाद में मातृ कष्ट दूसरे में पिता कष्ट तीसरा वा चतुर्थ पाद शुभ होता है ।

अश्विनी रेवती पाद फल

रेवती के प्रथम चरण में राजा समान, दूसरे पाद में मन्त्री समान, तीसरे पाद में बहुत सुख, चौथे पाद में भय तथा कष्ट होता है । अश्विनी के पहले चरण में भय कष्ट शेष, तीन चरण शुभ होते है । प चूनी लाल पंचांग कर्ता

कृष्ण चतुर्दशी में जन्म फल

कृष्ण-चतुर्दशी के ६ भाग करो, पहले भाग में जन्म होना शुभ, दूसरे में पितृ-हानि, तीसरे भ्रातृहानि, चतुर्थ में मातुल हानि पंचम मे वंश नाश और छटे भाग मे जन्म हो तो सर्वस्व नाश होता है । कल्याण की इच्छा वाला प्रत्येक नक्षत्र की अशान्ति को अवश्य करे ।

गवादि प्रसव मे विघ्न

वैशाख मे ऊँटनी या घोडी का, ज्येष्ठ मे बिल्ली का, श्रावण मे घोडी वा गधी का, भाद्रों में गौ का, माघ में भैंस का, और कातिक मे स्त्री का प्रसूत हो तो अनेक प्रकार के विघ्नों का करता कहा है ।

एक नक्षत्र में जन्म का फल

पिता पुत्र का व दोनो भाईयों का एक नक्षत्र मे जन्म होना एक की मृत्यु के लिए कहा है । तीन लड़को के बाद लड़की या तीन लड़कीयों के बाद लड़का होना शुभ नही होता त्रिबल पूजन करें

तिथि कष्टावली

तिथि	देवता	कष्टदिन	बलिदान	तिथि	देवता	कष्ट दिन	बलिदान
०१	अग्नि	८	घृतशर्करा	०९	दुर्गा	१८	मिष्ठान्न
०२	ब्रह्मा	१६	पायसान्न	१०	यम	०५	कृशरान्न
०३	गौरी	०९	घृतान्नबलि	११	विश्वे	०३	यवमोदक
०४	गणेश	१६	मोदकान्न	१२	विष्णु	१२	मोदकान्न
०५	सर्प	२१	पायसान्न	१३	काम	०८	दधिशक्कर
०६	स्कंद	१२	मोदकान्न	१४	रुद्र	०२	मिष्टान्न
७	सूर्य	०८	पायसान्न	१५	चन्द्र	१६	दध्योदन्न
०८	शिव	१३	अनेकान्न	३०	पितर	१८	पूरीकान्न

वारकष्टावली

वार	देवता	कष्ट दिन	बलिदान	वार	देवता	कष्ट दिन	बलिदानम्
रवि	रुद्र	७	पायसान्न	गुरु	ब्रह्म	१५	शर्करान्न
चन्द्र	सावित	९	विविधान्न	शुक्र	इन्द्र	११	तिलयवान्न
भौम	स्कद	१८	मोदकान्न	शनि	यम	२	पायसान्न
बुध	विष्णु	७	मुदगान्नबलि	इति	कष्टावली	समाप्तम्	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कृष्ण चतुर्दशी जन्मफलम्

१	२	३	४	५	६	भाग
शुभ	पितृहानि	मातृहानि	मातुल हानि	कुलनष्ट	धनहानि	फल

चतुर्दशी की घड़ियों के छः भाग कर देखें कि जन्म किस भाग में है। तदनुसार फल जानें, अशुभ हो शान्ति करें। **अमावस्या जन्मफलम्**—जिसके घर सिनीवाली अमावस्या के दिन स्त्री, पशु, गौ, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूति होवे तो धनहानि, अपयश आदि भय होता है, कुहू अमावस्या में प्रसूति होवे। सिनीवाली—जिस अमावस्या में चन्द्र के कलांश शेष हों, कुहू—जिस में चन्द्र की पूर्ण कला नष्ट हो।

ग्रहण व्यतिपातादि जन्मफल—व्यतिपात में जन्म हो तो अंगहानि, वैधृति में पितृ कष्ट या दारिद्रय, सूर्यग्रहण में जन्म हो तो व्याधि, पीड़ा, कलह हो; धनहानि, जप, होम शान्ति कराने से कल्याण हो।

त्रिखल जन्मफल—यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या से माता को, लड़कों से पिता को भय, धनहानि आदि कष्ट होते है. कृपणता छोड़कर त्रिखल शांति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (चांदी, सोना, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति फल

बालक को जन्मते ही दांत निकले हो तो माता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत सयुक्त जन्मे तो अधिक अरिष्ट। प्रथम ऊपर की पंक्ति में दांत निकलें तो मातापक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। एक मास में दांत निकलें तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पांचवें में ज्येष्ठ बन्धु नष्ट, छठे में बहु भोग, ७वें में पितृ सुख, ८वें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में भुख, १२वें में धनी। **एकनक्षत्रजननफलम्**—वृद्धगर्ग जी कहते है कि यदि माताओं वा पिता पुत्र माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है स्वर्णदान से कल्याण होता है।

भद्रा सुख—चतुर्थ्याः पंचम प्रहर आदिभूतः पंच घटयो अष्टम्यां द्वितीय प्रहरे, एकादस्यां सप्तमप्रहरे, पौर्णमास्याः चतुर्थ प्रहरे, सप्तम्याः तृतीय प्रहरे चतुर्दस्याः प्रथम प्रहरे पंच घट्य भद्रा-मुखम्—भद्रा पुच्छम्—४ अष्टम प्रहरे ३ घटि। ८ प्रथम प्रहरे, ११ ज्येष्ठ प्रहर, पूर्णिमा तृतीय प्रहर, ३ सप्तम प्रहर, ७ द्वितीय प्रहर १० पंचम प्रहर के अन्त्य की ३ घटि भद्रा पुच्छम्। कुम्भ, मीन, कर्क, सिंह मृत्यु लोक। कन्या, धनु, तुला, मकर स्वर्गलोक। मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक-पाताल लोक।

भाग्य देखने का चक्र

आप किसी को कहें कि वह ३१ के अन्दर का कोई अंक दिल में सोच ले और हमें बतलाये कि वह अंक किस नम्बर के खाने में है। जिस नम्बर के खाने में वह अंक सोचा हुआ बताये उन के ऊपर के दाएँ कोने के (हिन्दसों) अंकों को जमा कर लो बस उस ही सोचा हुआ अंक निकल आयेगा और इस चक्र पर उसके भाग्य का हाल बता दो।

उदाहरण :—किसी मनुष्य ने अपने दिल में ३१ का अंक सोचा है। अब देखो कि वह ३१ का अंक खाना नं० १, २, ३, ४, ५ में मिलता है। अब इन खानों के ऊपर के दाएँ कोने के अंको १, २, ४, ८, १६ को जोड़ो तो ३१ का अंक बनता है अतः प्रश्नकर्ता ने ३१ का अंक सोचा है और इसके अनुसार देख लो तो लिखा है, कि मत ख्याल करो कि तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं होगी, तुम अपना पुरुषार्थ रखो सफलता के चिह्न पाये जाते हैं।

नं० १

७	५	३	१
१५	१३	११	९
१७	१९	२१	२३
२५	२७	२९	३१

नं० २

७	६	३	२
१५	१४	११	१०
२३	२२	१९	१८
३१	३०	२७	२६

नं० ३

३०	२९	२८	४
२२	२१	२०	२३
१५	१३	१२	१४
५	६	७	३१

नं० ४

३०	१०	२८	८
२९	२५	२४	३१
१४	१३	[illegible]	२७
[illegible]	९	११	१५

नं० ५

२९	३०	३१	१६
२१	२५	२४	२०
१७	२२	२३	२६
२७	१८	१९	२८

(१) तुम्हारे मन की मुराद उस समय पूरी होगी, जब तुम को इसका ख्याल भी न होगा। (२) भाग्य उदय होने वाला है। (३) किसी जगह से तुम्हारी उम्मीद पूरी होगी जिसका तुमको ख्याल भी नहीं! (४) जिस बात के लिए परेशान है अब उसकी सफलता में देर न होगी। (५) तुम्हारे लिए खुशी का समय आने वाला है। (६) घबराओ नहीं तुम्हारी बेहतरी का जरिया निकलेगा। (७) तुम्हारी मुश्किल जल्द ठीक हो जायेगी। (८) तुम्हारे भाग्य में रुपया लिखा है किंतु देर से मिलेगा। (९) तुम्हारे सामने थोड़े दिनों में एक तजवीज रखी जायेगी इसे मान लेने से पहले आपको अच्छी तरह सोच लेना होगा। (१०) इस समय तुम्हारा वक्त गड़बड़ में है, जल्दी समय ठीक हो जाएगा। (११) तुम्हारे फिकर और गम का समय गुजर गया है अब तुमको आराम और खुशी मिलेगी! (१२) तुम्हारा लाभ नियत समय पर ठीक हो जायेगा अतः दूसरों की सलाह मत लो। (१३) तुम्हारी मुश्किल किसी तरीके से हल हो जाएगी। (१४) जिस काम के लिए हैरान हो रहे हो उसकी सफलता में कई रुकावटें पैदा होगी। (१५) भाग्य की ठोकर तुम्हारे ख्याल को बदल देगी। (१६) सब्र करो अभी कुछ दिन और बाकी है। (१७) जो समय तुम पर बीत रहा है आगे इस में बेहतरी होगी विश्वास रखो। (१८) परेशानी को दूर कर दो अब समय आ गया है कि तुमको आराम व खुशी मिलेगी। (१९) पुरुषार्थ करते रहो लाभ अवश्य होगा। (२०) तुम्हें यह जानकर खुश होना चाहिए तुम्हारे हालात किसी जरिये से ठीक होने वाले हैं। (२१) तुम्हारे हालात अजीब चक्र में हैं वह तकरीबन एक मास तक ठीक हो जायेंगे। (२२) तुमको जल्द खबर मिलेगी जो तुम्हारे हक में होगी। (२३) तुम देर से परेशान हो तुम्हारा कारोबार थोड़े दिनों में बनेगा जिससे तुम को लाभ होगा। (२४) समय आने वाला है तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी। (२५) किसी भी जरिए तुम्हारा काम ठीक हो जायेगा। (२६) फिजूल बातों पर अपना समय और दिमाग खर्च न करो, इज्जत व खुशी तुम्हारे साथ है। (२७) भाग्य का सितारा अच्छा है जिन हालातों से तुम डरते हो वह पैदा नहीं होंगे। (२८) तुम अपने काम में लगे रहो जिन कामों से तुम को दखल नहीं उनसे दखल न दो खुद ठीक हो जायेंगे। (२९) तुम को यह पता है कि तुम्हारे दिन गरदिश में हैं तो तुम उस मार्ग पर क्यों चल रहे हो जिसमें तुमको नुकसान हो। (३०) जब तुम जानते हो कि तुम ठीक रास्ते पर हो तो ख्यालात पर पक्के रहो घबराओ नहीं। (३१) यह मत ख्याल करो कि तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं होगी अथवा पुरुषार्थ जारी रखो सफलता के चिह्न पाये जाते हैं।

९९

लग्न सारणी (देहली) चरखंड ६५।५२।२२

लग्न सारणी बनाने की विधि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoF-IKS

लग्न सारणी (देहली) चरखंड ६५।५२।२२

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
००	४३	५०	५७	५	१२	१९	२७	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१७	२५	३६
वृष	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
०१	४२	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मिथुन	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
०२	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	१९	३०	४२	५४
कर्क	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
०३	६	१७	२९	४१	५२	६	१६	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	००	१२	२४	३६	४७	५८	९	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३
सिंह	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
०४	५५	७	१८	३०	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	२	१४	२५	३७	४९	००	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४४	५५	६	१८	२९
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
०५	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	००	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
०६	२४	३५	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	१	१३	२५	३७	४८	००	१२	२४	३६	४८	००
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
०७	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५१	२	१३	२४	३६	४७
धनु	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
०८	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०	३०	४०	५०	००
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
०९	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०	१९	२८	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१४	२२	३०	३९	४७	५६	५	१३	२१
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	२९	३७	४५	५४	२	११	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
११	१०	१८	२५	३२	३९	४७	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४६	५६	०	७	१५	२२	२९	३६

अथ देवी पूजा विधि—कुर्याद्दुर्व्यस्ति मन्त्रै पूजां क्षीरपूनादिभिः । जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते ॥ अनेनैव तु मन्त्रेण जपहोम् तु कारयेत् ॥ ओम दुर्गेदुर्गे रक्षिणि स्वाहा—इति नवाक्षर मंत्रः प्रतिपदि प्रातरभ्यंगकृत्वा देशकालौ संकीर्त्यममहजन्मनि दुर्गा प्रीतिद्वारा सर्वापच्छान्ति पूर्वक दीर्घायुर्विपुल धनपुत्रपौत्राद्यन-वच्छिन्न सन्ततिवृद्धि स्थिरलक्ष्मी कीर्तिलाभशत्रुपराजय सदभिष्टसिद्ध यर्थंशारद नवरात्रप्रतिपादि विहित कलशस्थापन दुर्गापूजा कुमारी पूजादि करिष्ये इति संकल्प्य 'महीद्यौः' इतिभूमि स्पृष्ट्वा 'औषधयःसम' इति यथान्निनक्षिप्य 'आकलशेषु' इति कुम्भं संस्थाप्य 'इम मे गंग' इति जलेनापूर्य 'गन्धद्वाराम' इति गन्ध' या औषधी: इति सर्वौषधी: 'काण्डात् इति दूर्वा: 'अश्वत्येवः' इति पंचपल्लवान्. 'स्योनापृथिवि' इति सप्तमृदः 'या फलिनि इति फलं सप्तरत्नानि' इति पंचरत्नानि हिरण्यं च क्षिप्त्वा 'युवासुवासः इति वस्त्रेणावेष्टय 'पूर्णादर्वि' इति पूर्णपात्रं निधाय तत्र वरुणं संपूज्य दुर्गामावाह्य पूजयेत् ।

लग्न सारणी बनाने की विधि

पाठक गण—हमने 'पंचांग दिवाकर' के पाठकों के लिये प्रत्येक शहर के चरखंड दे दिये हैं, ताकि आप अपने शहर की लग्नसारणी बनाकर शुद्ध लग्न बना लें।

फिर मेषादि राशियों के लंकोदय जोकि पंचांग दिवाकर में दशम सारणी के साथ दिये हुए हैं उनमें पहली ३ राशियों के लंकोदय में क्रमशः चरखंडों को हीन करो, फिर अगली ३ राशियों के लंकोदय में उत्क्रम से चरखंडों को युक्त करो तब मेषादि ३ राशियों के स्वोदय आ जायेंगे । उन मेषादि ६ राशियों के स्वोदयों का उत्क्रम से स्थापित करें, तब तुलादि ६ राशियों के स्वोदय होते हैं । स्वोदय से लग्न सारणी बनाओ—मेष के स्वोदयों को ३० से भाग दो जो लब्धि आये उसको लग्न सारणी का ढांचा बना कर मीन के सामने सात अंश पर ०।० लिख कर ८ अंश में लब्धि को मीन से मेष के ८ अंश तक जोड़ते चले जाओ, इसी प्रकार वृष के स्वोदयों को ३० से भाग देकर आगे वृष के ८ अंश तक लब्धि को जोड़ते चले जाओ, इसी प्रकार १२ राशियों के स्वोदयों को भाग देकर क्रमशः जोड़ते चले जाओ तो अभीष्ट ग्राम की लग्न सारणी बन जायेगी । इससे शुद्ध लग्न बनाओ ।

उदाहरण—जैसे किसी ने लाहौर की लग्न सारणी बनानी है तो पंचांग दिवाकर से लहौर के चरखंड ७४।५९। २५ लिये, इनको क्रमोत्क्रमस्थ रख कर अर्थात् ७४।५९। २५।२५।५९।७४ इस प्रकार रखकर मेषादि ६ राशियों के लंकोदय २७८।२९९।३२३।३२३।२९९।२७८ में हीन तथा युक्त किया तो २०४।२४०।२९८।३४८।३५८।३५२ में मेषादि ६ राशियों के लाहौर के स्वोदय हुए और इस को उत्क्रम से स्थापित किया तो ३५२।३५८।३४८।२९८।२४०। २०४ यह तुलादि ६ राशियों के स्वोदय हुए फिर इन से लग्न सारणी बना लो अथवा लग्न स्पष्ट करलो ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारणी जालन्धर

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
मेष	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४
००	३७	४४	५१	५८	५	११	१८	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२१
वृष		६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
०१	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२७	३६	४६	५६	५	१६	२६	३६
मिथुन	१	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
०२	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३४	४५
कर्क	१८	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९
०३	५१	२	१४	२६	३७	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६
सिंह	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५
०४	४७	५९	२	१०	३४	४६	५८	९	२१	३३	४५	५६	८	२०	३२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१
०५	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	००	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७
०६	३०	४१	५३	५	१७	२९	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१५
वृश्चिक	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३
०७	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३४	४६	५७	८
धनु	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८
०८	१५	२६	३८	५०	२	१२	२३	३४	४५	५५	५	१५	२५	३५	४५
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३
०९	२३	३३	४३	५४	४	१४	२४	३३	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७
१०	३८	४५	५३	१	९	१७	२६	३४	४१	४९	५५	२	९	१६	२२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०
११	१२	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१३	२०	२७	३४	४१	४८

अंश	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६
००	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१३	२२
वृष	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
०१	४५	५५	५	१५	२५	३५	४५	५५	५	१५	२५	३५	४५	५५	५
मिथुन	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
०२	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५३	४	१६	२७	३९
कर्क	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२
०३	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
सिंह	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
०४	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५३	४	१५	२६
कन्या	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
०५	३४	४६	५८	९	२१	३३	४५	५६	८	२०	३२	४३	५५	७	१९
तुला	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
०६	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	२	१३
वृश्चिक	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
०७	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३	५५	६	१७	२९	४१	५२	३
धनु	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
०८	५५	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५५	४	१३
मकर	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
०९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	५	१४	२२	३०
कुम्भ	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१०	२९	३६	४३	४९	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	५
मीन	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२
११	५५	२	९	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२४	३०

लग्न सारणी से देखने की रीति

जिस समय इस लग्न सारणी से लग्न देखने की आवश्यकता हो तो उस समय का इष्ट बना कर उसमें उस दिन का सूर्य स्पष्ट जो कि 'पंचांग दिवाकर' में प्रतिदिन का सूर्य स्पष्ट लिखा रहता है। जिस राशि के जितने अंश पर हो लग्न सारणी के उस राशि के सामने और उतने अंशों के कोष्ठक के नीचे जो घड़ी पल हों उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ देने से लग्न के घड़ी पल हो जाते हैं तो यह घड़ी पल लग्न सारणी में जिस राशि के सामने और जितने कोष्ठक के नीचे मिलेंगे वह स्पष्ट लग्न राशि अंशादि होगा।

उदाहरण—सं० २०२५ आषाढ़ प्र० ८ को इष्ट घट्यादि १०।५ पर क्या लग्न होगा। इस दिन 'पंचांग दिवाकर' में सूर्य स्पष्ट राश्यादि २।६।५९।३८ है। लग्न सारणी में २ राशि के सामने और ७ अंश के नीचे के घट्यादि १२।२५ में इष्ट घट्यादि १०।५ जोड़ दिया तो २२।३० घट्यादि हुए, लग्न सारणी में इससे स्पष्ट कोष्ठक देखो तो ३ राशि २८ अंश के नीचे घट्यादि २२।२३ और इष्ट युक्त घट्यादि २२।३० अन्तर ७ पल तो अल्प कोष्ठ और अगले कोष्ठ का अन्तर १२ पल हैं। मालूम किया कि १२ पल का अन्तर ६० कला में तो ७ पल का अन्तर कितने में हो तो $\frac{६० \times ७}{१२}$ कला ३५ हुआ तो उस समय स्पष्ट लग्न राशि २८ अंश ३५ कला हुआ अर्थात् कर्क लग्न होगा।

जन्मपत्री मृतक की है या जीवित की

१. इस प्रश्न में जन्म लग्न, अष्टम स्थान की राशि और प्रश्न लग्न इन तीन की संख्या को जोड़कर जन्मकुण्डली के अष्टमेश की राशि और प्रश्न लग्न इन तीनों को जोड़ कर जन्मकुण्डली के अष्टमेष की राशि संख्या से गुणा कर लग्नेश की राशि संख्या से भाग देने पर विषम अंक १।३।५।७।९।११ शेष रहें तो जीवित की, सम अंक २।४।६।८।१०।१२ शेष रहें तो मृतक की पत्री होती है। २. जन्म लग्न, प्रश्न लग्न और जन्मकुण्डली के अष्टमेष की राशि इन तीनों को जोड़ने से जो योगफल आये उसे अष्टमेष की राशि से गुणा करना चाहिए और गुणनफल मे प्रश्न समय में सूर्य जिस नक्षत्र में हो उसकी संख्या से भाग देना चाहिए। सम शेष में मृतक की और विषम शेष में जीवित की जन्मपत्री होगी।

पुरुष-स्त्री की जन्मपत्री का विचार

१. राहु और सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि की अंक संख्या तथा लग्नांक संख्या को जोड़ कर ३ का भाग देने से ० और १ शेष में स्त्री की और २ शेष में पुरुष की

नीबू और तंत्र क्रियायें

[डॉ० लक्ष्मी चन्द्र गुप्ता, पीलीभीत (उ० प्र०)]

टोना-टूटका

[डॉ० लक्ष्मी चन्द्र गुप्ता, पीलीभीत (उ० प्र०)]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

नीबू और तंत्र क्रियायें

[डॉ० लक्ष्मी चन्द्र गुप्ता, पीलीभीत (उ० प्र०)]

पाठकों के लाभार्थ साधुओं द्वारा प्रदत्त कुछ सरल तांत्रिक क्रियायें प्रस्तुत हैं, जिनके द्वारा पाठक गण अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

वशीकरण—किसी को वश में करने के लिये बुधवार को एक नीबू लेकर उसे गंगाजल में डाल देवें। फिर साधक अपने बायें पैर के अंगूठे का नाखून लेकर उससे भोजपत्र पर २१ बार उस व्यक्ति का नाम (जिसे वशीभूत करना हो) लिखें, इसके बाद नीबू को गंगाजल में से निकाल कर अपने ऊपर से उतार देवें और उसके चार टुकड़े करके शराब में डाल देवें। फिर नाखून और भोजपत्र को आग में जला के उसकी राख बना लेवें, इस राख को वशीभूत होने वाले व्यक्ति को फेंक कर मार दें या पान में रखकर खिला देवें तो वशीकरण होवे। इसको करते समय काल भैरव का मन्त्र जपते रहें।

संकट/तकलीफ पहुँचाने हेतु—यदि किसी व्यक्ति को संकट ग्रस्त करना हो तो एक नीबू लेकर उसमें सात सुईयां घुरस देवें, फिर चाकू लेकर उसे शराब में डुबोकर नीबू में सात जगह घुरसें इसके बाद नीबू को चौराहे पर रखकर 'व्यक्ति' का नाम लेकर नीबू पर शराब चढ़ावें। इस क्रिया से ३ दिन बाद व्यक्ति संकट ग्रस्त हो जाता है। क्रिया करते समय काल भैरव का मन्त्र जपते रहें।

संकट दूर करने के लिए—किसी भी प्रकार का संकट दूर करने के लिए मंगल, शनिवार को किसी चौराहे पर नीबू ले जाकर उसमें कलावा लपेटें और सिन्दूर से तिलक करें फिर पूरब/उत्तर को मुह करके चाकू से एक ही झटके में उसके दो टुकड़े कर देवें। फिर दोनों टुकड़ों को चित्त रखकर काल भैरव का मन्त्र पढ़ते हुए शराब की धार देवें तो संकट टल जावे।

आय वृद्धि हेतु—शनिवार को छोड़कर किसी भी दिन नीबू लेकर उसके दो टुकड़े कर उन पर दूध की धार चढ़ावें फिर काल भैरव का मन्त्र पढ़ते हुए उन्हें बहते जल में छोड़ दें। इस क्रिया से आमदनी बढ़ जाती है।

किया कराया दूर करने के लिये—किसी के द्वारा किया/कराया दूर करने के लिए शनिवार को सूर्यास्त के बाद तीन नीबू लेकर श्मशान/कब्रिस्तान जावें। वहां एक नीबू के चार टुकड़े कर चारों दिशाओं में फेंक देवें, फिर दूसरे नीबू के दो टुकड़े कर उन्हें चित्त रखें और उनके ऊपर मीठा दूध व लस्सी की धार चढ़ावें। इसके बाद तीसरे नीबू को सम्बन्धित व्यक्ति का नाम लेकर जल में छोड़ देवें। इस क्रिया को करते समय काल भैरव का मंत्र पढ़ते रहें। इससे कैसा भी किया कराया हुआ हो दूर हो जाता है और करने वाले पर ही लौट जाता है।

टोना-टूटका

[डॉ० लक्ष्मी चन्द्र गुप्ता, पीलीभीत (उ० प्र०)]

पाठकों के लाभार्थ अनुभूत एवं प्रदत्त कुछ टोने-टूटके प्रस्तुत हैं जिनके द्वारा पाठकगण अपनी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

रोग निवारण हेतु—एक गोला लेकर पुष्य नक्षत्र में उसके दो बराबर टुकड़े कर लेवें। फिर दोनों टुकड़ों में शराब भर देवें और रात्रि में चौराहे पर बैठकर लौंग, धूप, हवन सामग्री चढ़ाकर अज्ञारी करें फिर शराब से भरे दोनों टुकड़ों को अज्ञारी पर पलटकर चढ़ा देवें। इस क्रिया से रोगी का कठिन से कठिन रोग दूर होवे।

भूत बाधा दूर करने हेतु—भूत बाधा, ऊपरी हवा का चक्कर होने पर एक सेब लेकर उसके बराबर-२ चार टुकड़े कर लेवें और हर टुकड़े पर अष्टगन्ध से रोगी का नाम लिखें। फिर गुग्गल व लोबान से चौराहे पर हवन करें और हवन कुण्ड के चारों कोने पर एक-एक सेब का टुकड़ा रख देवें। इस क्रिया से रोगी के ऊपर की हवा अपने आप चिल्लाने लगेगी और रोगी को छोड़ देगी।

मुकद्दमा/शत्रु पर विजय हेतु—अश्लेषा नक्षत्र में एक नारियल लेकर उसमें बर्मे से सुराख करें फिर नारियल पर चन्दन से शत्रु/प्रतिवादी का नाम लिख देवें, उसके बाद घी, कपूर, लौंग, बंसलोचन व भोजपत्र उसमें भर देवें। फिर नदी के किनारे गड्ढा खोदकर उसमें सीधा नारियल गाड़ देवें और चारों ओर आम की लकड़ियां लगाकर हवन करें। इस क्रिया से मुकद्दमा में जीत होगी, शत्रुओं का दमन होगा।

वशीकरण हेतु—अगर किसी का वशीकरण करना हो तो एक कुमेड़ा लेकर भरणी नक्षत्र में रात्रि में चौराहे पर बैठ कर कुमेड़े पर अष्टगन्ध से व्यक्ति का पाँच जगह नाम लिख कर कुमेड़े का सिन्दूर से तिलक करें और बाद में उसके दो टुकड़े (एक छोटा एक बड़ा) करें। दोनों टुकड़ों को चित्त रखकर उस पर सिन्दूर मल देवें। जैसे-२ कुमेड़ा सूखेगा वैसे-२ ही मनुष्य आकर्षित होगा।

जगह परिवर्तन हेतु—यदि किसी का तबादला करना हो तो हवन सामग्री में लौंग, कपूर, सफेद इलायची, काले तिल, घी मिला लेवें फिर रोहिणी नक्षत्र में पूरीशाम (सांयकाल) को मकान में बैठकर माँ दुर्गा का हवन करें और तीन माला जाप करें तो एक सप्ताह में तबादला होवे।

सर्वग्रह शांति हेतु—एक गोला लेकर उसकी पेंदी काटकर उसमें एक हिस्सा शक्कर एक हिस्सा कसार भर देवें फिर उसे नीम या पीपल के पेड़ के नीचे गड्ढा खोदकर सुराख में लकड़ी लगाकर गाड़ देवें। उसकी मिट्टी दबाने के बाद सुराख से लकड़ी निकाल कर उसमें चीनी भर देवें। इस क्रिया का प्रभाव ६ माह तक रहेगा और सर्वग्रह शांत होंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हिमाचल प्रदेश एवं भारत के कुछ प्रसिद्ध शहरों के सूर्योदयास्त

जालन्धर के सूर्योदयास्त में से २ मिनट घटाने से होश्यारपुर का एवं १-१/२ मिनट जमा करने से अमृतसर का सूर्योदयास्त निकलेगा। कुल्लू-मण्डी के सूर्योदयास्त में ३ मिनट जमा करने से नंगल ऊना इत्यादि स्थानों का, १-१/२ मिनट जमा करने से जोगिन्द्रनगर का, और २ मिनट जमा करने से हमीरपुर का सूर्योदयास्त होगा। कांगड़ा के सूर्योदयास्त में २ मिनट जोड़ने से डलहौजी का और १ मिनट कम करने से पालमपुर का सूर्योदयास्त होगा। शिमला के सूर्योदयास्त में डेढ मिनट कम करने से कोट खाई का और साढ़े तीन मिनट जमा करने से नालागढ़ का सूर्योदयास्त होगा।

ता	देहली		जम्मू उधपुर		शिमला सोलन		कांगडा धर्म		मंडी कुल्लू		बंबई	ता	देहली		जम्मू उधपुर		शिमला सो०		कांगड़ा धर्मशा		मंडी-कुल्लू		बंबई
अप्रै	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	जुल	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद
१अ	६।१४	१८।३८	६।२२	१८।[illegible]	६।११	१८।३०	६।१५	१८।३७	६।११	१८।४०	६।३५	२३	५।३९	१९।१४	५।४२	१९।३०	५।३२	१९।२२	५।३३	१९।२४	५।३३	१९।२४	६।११
५	६।१०	१८।३८	६।१६	१८।५१	६। ६	१८।४२	६।१०	१८।४०	६। ६	१८।४३	६।३१	२७	५।४१	१९।१२	५।४५	१९।२७	५।३४	१९।२०	५।३५	१९।२२	५।३४	१९।२२	६।१२
९	६। ६	१८।३९	६।११	१८।५४	६। १	१८।४५	६। ६	१८।४३	६। २	१८।४६	६।२७	३१	५।४३	१९।१०	५।४७	१९।२५	५।३७	१९।१९	५।३८	१९।२५	५।३७	१९।२१	६।१३
१३	६। १	१८।४१	६। ८	१८।५६	५।५७	१८।५७	६। २	१८।४७	५।५८	१८।४८	६।२४	४अ	५।४५	१९। ७	५।४९	१९।२३	५।४०	१९।१२	५।४१	१९।१६	५।४१	१९।१४	६।१४
१७	५।५७	१८।४३	६। ४	१८।५८	५।५३	१८।४९	५।५१	१८।५१	५।५४	१८।५०	६।२१	८	५।४७	१९। ४	५।५२	१९।१८	५।४१	१९। ७	५।४२	१९।१३	५।४३	१९। ९	६।१५
२१	५।५१	१८।४७	५।५९	१९। ०	५।४९	१८।५२	५।५५	१८।५५	५।४९	१९।५३	६।१८	१२	५।४९	१९। ०	५।५५	१९।१५	५।४५	१९। ४	५।४६	१९। ९	५।४५	१९। ६	६।१७
२५	५।४७	१८।४८	५।५४	१९। ४	५।४४	१८।५५	५।५१	१८।५८	५।४५	१८।४६	६।१५	१६	५।५२	१८।५६	५।५८	१९।१०	५।४९	१८।५४	५।५०	१९। ५	५।५०	१८।५९	६।१८
२९	५।४४	१९।५०	५।५०	१९। ७	५।४१	१८।५८	५।४६	१९। २	५।४२	१८।५१	६।१३	२०	५।५४	१८।५३	६। २	१९।०६	५।५३	१८।५८	५।५४	१९। १	५।५३	१८।५६	६।१९
३म	५।४१	१८।५३	५।४६	१९। ९	५।३७	१९।००	५।४०	१९। ५	५।३८	१९। १	६।१०	२४	५।५६	१८।४९	६। ४	१९।०२	५।५६	१८।४०	५।५८	१८।५६	५।५७	१८।५१	६।२०
७	५।३१	१८।५५	५।४४	१९।१०	५।३३	१९। ३	५।३५	१९। ७	५।३४	१९। ५	६। ८	२८	६।५८	१८।४५	६। ७	१८।५८	५।५९	१८।४५	६। १	१८।५२	६। ०	१८।४५	६।२१
११	५।३७	१८।५८	५।४०	१९।१३	५।३०	१९। ६	५।३३	१९।११	५।३१	१९। ८	६। ७	सि	६। १	१८।४१	३।१०	१८।५३	६। २	१८।४२	६। ५	१८।४८	६। ३	१८।४४	६।२२
१५	५।३२	१९। ०	५।३७	१९।१५	५।२७	१९। ८	५।३१	१९।११	५।२८	१९।१०	६। ५	५	६। २	१८।३८	६।१२	१८।४९	६।०५	१८।३८	६। ८	१८।४४	६। ६	१८।४०	६।२३
१९	५।३१	१९। ३	५।३४	१९।१८	५।२४	१९।११	५।२९	१९।१३	५।२५	१९।१३	६। ३	९	६। ५	१८।३२	६।१५	१८।४४	६।०६	१८।३४	६।१०	१८।४०	६। ८	१८।३५	६।२४
२३	५।२७	१९। ५	५।३१	१९।२२	५।२३	१९।१३	६।२६	१९।१६	५।२३	१९।१५	६। २	१३	६। ४	१८।२७	६।१७	१८।३९	६।०९	१८।२८	६।१३	१८।३५	६।११	१८।२६	६।२५
२७	५।२६	१९। ७	५।२९	१९।२५	५।२०	१९।१५	५।२४	१९।१६	५।२०	१९।१७	६। १	१७	६। ९	१८।२२	६।१९	१८।३३	६।१३	१८।२३	६।१७	१८।३०	६।१५	१८।२४	६।२६
३१	५।२५	१९। ८	५।२७	१९।२८	५।१९	१९।१८	५।२१	१९।२२	५।१९	१९।२०	६। १	२१	६।११	१८।१७	६।२१	१८।२८	६।१५	१८।१८	६।१९	१८।२६	६।१७	१८।२०	६।२७
४जू	५।२४	१९।११	५।२६	१९।३०	५।१८	१९।२१	५।२०	१९।२४	५।१९	१९।२३	६। १	२५	६।१३	१८।१२	६।२३	१८।२२	६।१६	१८।१४	६।२०	१८।२२	६।१८	१८।१६	६।२८
९	५।२५	१९।१५	५।२६	१९।३२	५।१८	१९।२२	५।१९	१९।२५	५।१८	१९।२३	६। १	२९	६।१५	१८। ७	६।२५	१८।१७	६।१८	१८।१०	६।२२	१८।१७	६।२०	१८।१२	६।२९
१३	५।२४	१९।१६	५।२६	१९।३४	५।१८	१९।२४	५।१९	१९।२६	५।१८	१९।२६	६। १	३अ	६।१७	१८। ३	६।२८	१८।१२	६।१६	१८। ३	६।२३	१८।१३	६।२०	१८। ५	६।३०
१७	५।२४	१९।१७	५।२६	१९।३५	५।१८	१९।२६	५।१८	१९।२६	६।१९	१९।२८	६। १	७	६।१९	१७।५८	६।३०	१८।०७	६।२०	१७।५७	६।२४	१७। ६	६।२१	१७।५९	६।३१
२१	५।२५	१९।१८	५।२५	१९।३६	५।१९	१९।२७	५।१९	१९।२८	५।१९	१९।२९	६। २	११	६।२२	१७।५४	६।३३	१८। २	६।२२	१७।५४	६।२६	१८। ४	६।२३	१७।५६	६।३२
२५	५।२५	१९।१८	५।२७	१९।३७	५।१९	१९।२८	५।२०	१९।३०	५।२०	१९।३०	६। ३	१५	६।२४	१७।४९	६।३५	१७।५७	६।२५	१७।५०	६।२९	१७।५५	६।२६	१७।५२	६।३३
२९	५।२६	१९।१८	५।२९	१९।३७	५।२०	१९।२१	५।२२	१९।३०	५।२१	१९।३१	६। ४	१९	६।२६	१७।४५	६।३८	१७।५३	६।३०	१७।४५	६।३४	१७।५०	६।३१	१७।४७	६।३४
३ज	५।२९	१९।२०	५।३१	१९।३७	५।२२	१९।२९	५।२३	१९।२९	५।२५	१९।३१	६। ५	२३	६।२८	१७।४१	६।४१	१७।४९	६।३२	१७।४०	६।३६	१७।४७	६।३३	१७।४२	६।३५
७	५।३०	१९।११	५।३३	१९।३५	५।२४	१९।२८	५।२४	१९।२८	५।२४	१९।३०	६। ६	२७	६।३०	१७।३८	६।४४	१७।४५	६।३४	१७।३२	६।३९	१७।४२	६।३५	१७।३३	६।३७
११	५।३२	१९।१७	५।३४	१९।३६	५।२६	१९।२६	५।२६	१९।२७	५।२६	१९।२८	६। ७	३१	६।३३	१७।३४	६।४७	१७।५१	६।३९	१७।२७	६।४३	१७।३७	६।४०	१७।२९	६।३८
१५	५।३५	१९।१६	५।३६	१९।३५	५।२८	१९।२५	५।२८	१९।२६	५।२८	१९।२७	६। ९	४न	६।३६	१७।३१	६।५०	१७।३७	६।४२	१७।२२	६।४६	१७।३३	६।४२	१७।२६	६।४०
१९	५।३७	१९।१५	५।३९	१९।३३	५।३०	१९।२४	५।३०	१९।२५	५।३१	१९।२६	६।१०	८	६।३९	१७।२८	६।५४	१७।३४	६।४४	१७।२१	६।४६	१७।३०	६।४५	१७।२२	६।४२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हिमाचलप्रदेश एव भारत के कुछ प्रसिद्ध शहरो के सूर्योदयास्त

ता	देहली		जम्मू		शिमला मो कांगड़ा		धर्म		मंडी कुल्लू		बम्बई
तब	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद	अस्त	उद
१२	६।४३	१७।२५	६।५८	१७।३१	६।४८	१७।२०	६।५३	१७।२७	६।४९	१७।२२	६।४४
१६	६।४६	१७।२७	७। २	१७।२८	६।५१	१७।१९	६।५७	१७।२४	६।५३	१७।२१	६।४६
२०	६।४९	१७।२५	७। ६	१७।२८	६।५४	१७।१९	७।००	१७।२३	६।५६	१७।२१	६।४८
२४	६।५२	१७।२४	७। ९	१७।२८	६।५६	१७।१८	७। ४	१७।२२	६।५९	१७।२०	६।५१
२८	६।५५	१७।२३	७।१२	१७।२८	७। ०	१७।२८	७। ७	१७।२१	७। ३	१७।२०	६।५३
२द	६।५७	१७।२३	७।१५	१७।२७	७। ३	१७।१७	७।१०	१७।२०	७। ६	१७।१९	६।५५
६	७। [illegible]	१७।२४	७।१८	१७।२७	७। ६	१७।१७	७।१२	१७।२०	७। ९	१७।१९	६।५८
१०	७। ४	१७।२०	७।२०	१७।२६	७। ९	१७।१६	७।१५	१७।१९	७।११	१७।१८	७। १
१४	७। ३	१७।२१	७।२४	१७।२७	७।१३	१७।१८	७।१९	१७।१९	७।१५	१७।१९	७। ३
१८	७।१०	१७।२२	७।२६	१७।२८	७।१५	१७।२०	७।२१	१७।२०	७।१७	१७।२२	७। ५
२२	७।१२	१७।२३	७।२३	१७।३०	७।१६	१७।२३	७।२२	१७।२३	७।१८	१७।२३	७। ६
२६	७।१३	१७।२६	७।२९	१७।३२	७।१[illegible]	१७।२४	७।२३	१७।२६	७।१९	१७।२५	७। ८
३०	७।१४	१७।२८	७।२८	१७।३४	७।२०	१७।२७	७।२६	१७।२९	७।२२	१७।२७	७।११
३ज	७।१६	१७।३१	७।२९	१७।३६	७।२१	१७।३०	७।२७	१७।३२	७।२३	१७।३०	७।१२
७	७।१८	१७।३४	७।३३	१७।३८	७।२०	१७।३३	७।२७	१७।३५	७।२२	१७।३२	७।१३
११	७।१६	१७।३७	७।३३	१७।४२	७।२०	१७।३७	७।२९	१७।३९	७।२२	१७।३६	७।१४
१५	७।१६	१७।४१	७।३३	१७।४६	७।२०	१७।४०	७।२६	१७।४३	७।२३	१७।४१	७।१५
१९	७।१५	१७।४४	७।३२	१७।५०	७।२०	१७।४३	७।२६	१७।४९	७।२३	१७।४४	७।१४
२३	७।१४	१७।४७	७।३१	१७।५४	७।१९	१७।४८	७।२५	१७।५०	७।२२	१७।५१	७।१४
२७	७।१०	१७।५१	७।३०	१७।५८	७।१७	१७।५१	७।३३	१७।५३	७।१९	१७।५२	७।१३
३१	७।१२	१७।५३	७।२७	१८।००	७।१५	१७।५३	७।२१	१७।५७	७।१६	१७।५४	७।१२
४फ	७। ९	१७।५८	७।२४	१८।०४	७।१३	१७।५७	७।२८	१८।०१	७।१४	१७।५८	७।११
८	७। ७	१८।०१	७।२०	१८।०९	७।१०	१८।००	७।२५	१८। ५	७।११	१८।०१	७।१९
१२	७। ३	१८।०४	७।१७	१८।१२	७। ७	१८। ३	७।१२	१८।०९	७।०८	१८।०५	७। ७
१६	७। ०	१८।०७	७।१३	१८।१५	७। ५	१८। ७	७।१०	१८।१३	७।०६	१८।०९	७। ४
२०	६।५६	१८।१०	७।१०	१८।१६	७।०	१८।१२	७।०५	१८।१७	७।०१	१८।१३	७। २
२४	६।५२	१८।१२	७।०३	१८।२३	६।५५	१८।१६	७।००	१८।२०	६।५७	१८।१५	७। ०
२८	६।४९	१८।१५	७।०१	१८।२७	६।४९	१८।२०	६।५३	१८।२१	६।५०	१८।२०	६। ७
४म	६।४४	१८।१७	६।५६	१८।३०	६।४३	१८।२३	६।४७	१८।२३	६।४४	१८।२३	६।५५
८	६।४०	१८।२०	६।५१	१८।२२	६।३८	१८।२३	६।४३	१८।२४	६।४१	१८।२८	६।५३
१२	६।३४	१८।२३	६।४७	१८।३५	६।२[illegible]	१८।२९	६।३८	१८।२५	६।३७	१८।३०	६।५०
१६	६।३२	१८।२५	६।४३	१८।३८	६।२८	१८।३१	६।३२	१८।२६	६।२९	१८।३२	६।४७
२०	६।-८	१८।२७	६।३९	१८।४०	६।२६	१८।३६	६।२८	१८।२७	६।२७	१८।३३	६।४४
२३	६।२४	१८।२८	६।३४	१९।४३	६।२३	१८।३४	६।२५	१८।२८	६।२४	१८।३४	६।३१

विश्व के प्रमुख शहरों के सूर्योदय

ति.	कलकत्ता	बनारस	लण्डन	न्यूयार्क	ति.	कलकत्ता	बनारस	लंडन	न्यूयार्क
जन.	सू.उ.	सू.उ.	सू.उ.	सू.उ.	३०	४।५९	५।१४	३।४५	४।२५
१	६।१९	६।४६	८।६	७।२१	जु५	५।१	५।१७	३।५०	४।३०
५	६।२१	६।४८	८।६	७।२१	१०	५।३	५।१९	३।५५	४।३३
१०	६।२२	६।४९	८।४	७।२१	१५	५।४	५।२१	४।००	४।३६
१५	६।२३	६।५०	८।१	७।२०	२०	५।७	५।२३	४।६	४।४०
२०	६।२२	६।४९	७।५७	७।१८	२५	५।९	५।२६	४।१३	४।४४
२५	६।२१	६।४७	७।५०	७।१५	३०	५।११	५।२९	४।२०	४।५०
३०	६।१९	६।४५	७।४३	७।१०	अ५	५।१४	५।३२	४।२७	४।५५
फ५	६।१७	६।४३	७।३५	७।४	१०	५।१५	५।३३	४।३६	५।००
१०	६।१५	६।४१	७ २६	६।५९	१५	५।१७	५।३७	४।४४	५।५
१५	६।१२	६।३८	७।१७	६।५[illegible]	२०	५।१९	५।३९	४।५२	५।१०
२०	६। .	६।३४	७।७	६।४२	२५	५।२१	५।४०	५।००	५।१४
२५	६।५	६।३०	६।५८	६।३८	३०	५।२२	५।४१	५।०८	५।२०
मा५	६।१	६।२६	६।३८	६।२५	सि५	५।२४	५।४५	५।१८	५।२६
१०	५।५७	६।२१	६।२७	६।१७	१०	५।२७	५।४६	५।२६	५।३१
१५	५।५०	६।१७	६।१५	६।८	१५	५।२७	५।४८	५।३१	५।३६
२०	५।४६	६।१०	६।४	६।००	२०	५।२८	५।५०	५।४२	५।४१
२५	५।४०	६।२	५।५२	५।५२	२५	५।३०	५।५२	५।५०	५।४६
३०	५।३४	५।५६	५।४१	५।४४	३०	५।३२	५।५४	५।५८	५।५१
अ५	५।२९	५।४९	५।२७	५।३५	५अक्	५।३३	५।५७	६।७	५।५६
१०	५।२३	५।४२	५।१५	५।२६	१०	५।३५	५।५८	६।१४	६।२
१५	५।२०	५।३८	५।५	५ १८	१५	५।३७	५।५९	६।२३	६।७
२०	५।१६	५।३४	४।५४	५।१२	२०	५।४०	६।०१	६।३२	६।१२
२५	५।११	५।३०	४।४३	५।४	२५	५।४२	६।०४	६।४१	६।१८
३०	५।८	५।२६	४।३४	४।५६	३०	५।४४	६।०८	६।४९	६।२३
५मई	५।४	५।२१	४।२५	४।४९	नवं५	५।४६	६।११	७।००	६।३०
१०	५।१	५।१९	४।१७	४।४३	१०	५।४९	६।१५	७।०९	६।३७
१५	४।५९	५।१५	४।७	४।३८	१५	५।५२	६।१८	७।१८	६।४३
२०	४।५७	५।१३	४।००	४।३४	२०	५।५५	६।२१	७।२६	६।५०
२५	४।५५	५।११	३।५५	४।३०	२५	५।५८	६।२४	७।३४	६।५४
३०	४।५४	५।१०	[illegible]	४।२६	३०	६।०१	६।२८	७।४२	७।००
जू५	४।५२	५।९	३।४६	४।२५	दि५	६।०४	६।३१	७।४९	७।५
१०	४।५२	५।९	३।४३	४।२४	१०	६।०८	६।३४	७।५५	७।१०
१५	४।५३	५।१०	३।४२	४।२३	१५	६।११	६।३८	८।००	७।१४
२०	४।५४	५।११	३।४२	४।२४	२०	६।१४	६।४१	८।३	७।१८
२५	४।५६	५।१२	३।४३	४।२५	२५	६।१७	६।४४	८।५	७।२०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी स्टैण्डर्ड टाईम घण्टा मिनट लग्न समाप्ति काल—जालन्धर

प्रविष्टे वैशाख (१३ अप्रैल से १३ मई तक)

अप्रैल	वैशाख प्रविष्टे	१ मेष घं. मि.	२ वृष घं. मि.	३ मिथुन घं. मि.	४ कर्क घं. मि.	५ सिंह घं. मि.	६ कन्या घं. मि.	७ तुला घं. मि.	८ वृश्चिक घं. मि.	९ धनु घं. मि.	१० मकर घं. मि.	११ कुम्भ घं. मि.	१२ मीन घं. मि.
१३	१	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १३	१६ ३३	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३	६ ४
१४	२	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ९	१६ २९	१८ ४६	२१ ८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ०
१५	३	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ५	१६ २५	१८ ४२	२१ ४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
१६	४	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ १	१६ २१	१८ ३९	२१ ०	२३ २०	१ २५	३ ६	४ ३१	५ ५२
१७	५	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३५	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ २	४ २७	५ ४८
१८	६	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
१९	७	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ९	१८ २७	२० ४८	२३ ८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
२०	८	७ १३	९ ८	११ २२	१३ ४५	१६ ५	१८ २३	२० ४४	२३ ४	१ ९	२ ५०	४ १५	५ ३६
२१	९	७ ९	९ ४	११ १८	१३ ४१	१६ १	१८ १९	२० ४०	२३ १	१ ५	२ ४६	४ ११	५ ३३
२२	१०	७ ५	९ ०	११ १४	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ १	२ ४२	४ ७	५ २९
२३	११	७ १	८ ५६	११ १०	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	० ५७	२ ३८	४ ३	५ २५
२४	१२	६ ५७	८ ५२	११ ६	१३ २९	१५ ४९	१८ ७	२० २९	२२ ४९	० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
२५	१३	६ ५३	८ ४८	११ २	१३ २५	१५ ४५	१८ ३	२० २५	२२ ४५	० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
२६	१४	६ ४९	८ ४४	१० ५८	१३ २२	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	० ४५	२ २६	३ ५१	५ १३
२७	१५	६ ४६	८ ४०	१० ५४	१३ १८	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	० ४१	२ २२	३ ४८	५ ९
२८	१६	६ ४२	८ ३६	१० ५०	१३ १४	१५ ३४	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	० ३८	२ १९	३ ४४	५ ५
२९	१७	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३०	१७ ४७	२० ९	२२ २९	० ३४	२ १५	३ ४०	५ १
३०	१८	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ६	१५ २६	१७ ४३	२० ५	२२ २५	० ३०	२ ११	३ ३६	४ ५७
मई १	१९	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ २	१५ २२	१७ ४०	२० १	२२ २१	० २६	२ ७	३ ३२	४ ५३
२	२०	६ २६	८ २१	१० ३५	१२ ५८	१५ १८	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	० २२	२ ३	३ २८	४ ४९
३	२१	६ २२	८ १७	१० ३१	१२ ५४	१५ १४	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	० १८	१ ५९	३ २४	४ ४५
४	२२	६ १८	८ १३	१० २७	१२ ५०	१५ १०	१७ २८	१९ ४९	२२ ९	० १४	१ ५५	३ २०	४ ४१
५	२३	६ १४	८ ९	१० २३	१२ ४६	१५ ६	१७ २४	१९ ४५	२२ ५	० १०	१ ५१	३ १६	४ ३७
६	२४	६ १०	८ ५	१० १९	१२ ४२	१५ २	१७ २०	१९ ४१	२२ २	० ६	१ ४७	३ १२	४ ३४
७	२५	६ ६	८ १	१० १५	१२ ३८	१४ ५८	१७ १६	१९ ३८	२१ ५८	२४ २	१ ४३	३ ८	४ ३०
८	२६	६ २	७ ५७	१० ११	१२ ३४	१४ ५४	१७ १२	१९ ३४	२१ ५४	२३ ५८	१ ३९	३ ४	४ २६
९	२७	५ ५८	७ ५३	१० ७	१२ ३०	१४ ५०	१७ ८	१९ ३०	२१ ५०	२३ ५४	१ ३५	३ ०	४ २२
१०	२८	५ ५४	७ ४९	१० ३	१२ २६	१४ ४६	१७ ४	१९ २६	२१ ४६	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
११	२९	५ ५१	७ ४५	९ ५९	१२ २३	१४ ४२	१७ ०	१९ २२	२१ ४२	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
१२	३०	५ ४७	७ ४१	९ ५५	१२ १९	१४ ३९	१६ ५६	१९ १८	२१ ३८	२३ ४३	१ २४	२ ४९	४ १०
१३	३१	५ ४३	७ ३७	९ ५१	१२ १५	१४ ३५	१६ ५२	१९ १४	२१ ३४	२३ ३९	१ २०	२ ४५	४ ६

१४ ज्ये' ५ ३९

प्रविष्टे ज्येष्ठ (१४ मई से १३ जून तक)

मई	ज्येष्ठ प्रविष्टे	२ वृष घं. मि.	३ मिथुन घं. मि.	४ कर्क घं. मि.	५ सिंह घं. मि.	६ कन्या घं. मि.	७ तुला घं. मि.	८ वृश्चिक घं. मि.	९ धनु घं. मि.	१० मकर घं. मि.	११ कुम्भ घं. मि.	१२ मीन घं. मि.	१ मेष घं. मि.
१४	१	७ ३३	९ ४८	१२ ११	१४ ३१	१६ ४८	१९ १०	२१ ३०	२३ ३५	१ १६	२ ४१	४ २	५ ३५
१५	२	७ २९	९ ४४	१२ ७	१४ २७	१६ ४५	१९ ६	२१ २६	२३ ३१	१ १२	२ ३७	३ ५८	५ ३१
१६	३	७ २५	९ ४०	१२ ३	१४ २३	१६ ४१	१९ २	२१ २२	२३ २७	१ ८	२ ३३	३ ५४	५ २७
१७	४	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २३	१ ४	२ २९	३ ५०	५ २३
१८	५	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १९	१ ०	२ २५	३ ४६	५ १९
१९	६	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	० ५६	२ २१	३ ४२	५ १५
२०	७	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ७	१६ २५	१८ ४६	२१ ७	२३ ११	० ५२	२ १७	३ ३९	५ ११
२१	८	७ ६	९ २०	११ ४३	१४ ३	१६ २१	१८ ४२	२१ ३	२३ ७	० ४८	२ १३	३ ३५	५ ७
२२	९	७ २	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३९	२० ५९	२३ ३	० ४४	२ ९	३ ३१	५ ३
२३	१०	६ ५८	९ १२	११ ३५	१३ ५५	१६ १३	१८ ३५	२० ५५	२२ ५९	० ४०	२ ५	३ २७	४ ५९
२४	११	६ ५४	९ ८	११ ३१	१३ ५१	१६ ९	१८ ३१	२० ५१	२२ ५५	० ३६	२ १	३ २३	४ ५५
२५	१२	६ ५०	९ ४	११ २८	१३ ४७	१६ ५	१८ २७	२० ४७	२२ ५१	० ३२	१ ५७	३ १९	४ ५२
२६	१३	६ ४६	९ ०	११ २४	१३ ४४	१६ १	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	० २८	१ ५४	३ १५	४ ४८
२७	१४	६ ४२	८ ५६	११ २०	१३ [illegible]	१५ ५७	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
२८	१५	६ ३८	८ ५२	११ १६	१३ ३६	१५ ५३	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	० २१	१ ४६	३ ७	४ ४०
२९	१६	६ ३४	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ४९	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	० १७	१ ४२	३ ३	४ ३६
३०	१७	६ ३०	८ ४५	११ ८	१३ २८	१५ ४६	१८ ७	२० २७	२२ ३२	० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
३१	१८	६ २७	८ ४१	११ ४	१३ २४	१५ ४२	१८ ३	२० २३	२२ २८	० ९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून १	१९	६ २३	८ ३७	११ ०	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	२४ ५	१ ३०	२ ५१	४ २४
२	२०	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	२४ १	१ २६	२ ४७	४ २०
३	२१	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
४	२२	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ८	१५ २६	१७ ४७	२० ८	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ४०	४ १२
५	२३	६ ७	८ २१	१० ४४	१३ ४	१५ २२	१७ ४३	२० ४	२२ ८	२३ ४९	१ १४	२ ३६	४ ८
६	२४	६ ३	८ १७	१० ४०	१३ ०	१५ १८	१७ ४०	२० ०	२२ ४	२३ ४५	१ १०	२ ३२	४ ४
७	२५	५ ५९	८ १३	१० ३६	१२ ५६	१५ १४	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०	२३ ४१	१ ६	२ २८	४ ०
८	२६	५ ५५	८ ९	१० ३२	१२ ५२	१५ १०	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५६	२३ ३७	१ २	२ २४	३ ५६
९	२७	५ ५१	८ ५	१० २९	१२ ४९	१५ ६	१७ २८	१९ ४८	२१ ५२	२३ ३३	० ५८	२ २०	३ ५३
१०	२८	५ ४७	८ १	१० २५	१२ ४५	१५ २	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ २९	० ५५	२ १६	३ ४९
११	२९	५ ४३	७ ५७	१० २१	१२ ४१	१४ ५८	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	० ५१	२ १२	३ ४५
१२	३०	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५४	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	० ४७	२ ८	३ ४१
१३	३१	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	० ४३	२ ४	३ ३७

१४ आ' ५ ३१

स्पष्टीकरण : उपरोक्त अंग्रेजी दिनांक सूर्योदय कालिक है। रात्रि बारह बजे के बाद सूर्योदय तक के लग्न समाप्ति काल भी क्रमानुसार उसी दिनांक के सामने दिये हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दैनिक लग्न सारणी स्टैण्डर्ड टाईम घण्टा मिनट लग्न समाप्ति काल–जालन्धर

प्रविष्टे आषाढ़ (१४ जून से १५ जुलाई तक)

जून	आषाढ़ प्रविष्टे	३ मिथुन घं. मि.	४ कर्क घं. मि.	५ सिंह घं. मि.	६ कन्या घं. मि.	७ तुला घं. मि.	८ वृश्चिक घं. मि.	९ धनु घं. मि.	१० मकर घं. मि.	११ कुम्भ घं. मि.	१२ मीन घं. मि.	१ मेष घं. मि.	२ वृष घं. मि.
१४	१	७ ४६	१० ९	१२ २९	१४ ४७	१७ ८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	० ३९	२ ०	३ ३३	५ २८
१५	२	७ ४२	१० ५	१२ २५	१४ ४३	१७ ४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
१६	३	७ ३८	१० १	१२ २१	१४ ३९	१७ ०	१९ २०	२१ २५	२३ ६	० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
१७	४	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ २	० २७	१ ४८	३ २१	५ १६
१८	५	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
१९	६	७ २६	९ ४९	१२ ९	१४ २७	१६ ४८	१९ ८	२१ १३	२२ ५४	० १९	१ ४१	३ १३	५ ८
२०	७	७ २२	९ ४५	१२ ५	१४ २३	१६ ४४	१९ ५	२१ ९	२२ ५०	० १५	१ ३७	३ ९	५ ४
२१	८	७ १८	९ ४१	१२ १	१४ १९	१६ ४१	१९ १	२१ ५	२२ ४६	० ११	१ ३३	३ ५	५ ०
२२	९	७ १४	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १	२२ ४२	० ७	१ २९	३ १	४ ५६
२३	१०	७ १०	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२० ५७	२२ ३८	० ३	१ २५	२ ५८	४ ५२
२४	११	७ ६	९ ३०	११ ५०	१४ ७	१६ २९	१८ ४९	२० ५४	२२ ३४	२४ ०	१ २१	२ ५४	४ ४८
२५	१२	७ २	९ २६	११ ४६	१४ ३	१६ २५	१८ ४५	२० ५०	२२ ३१	२३ ५६	१ १७	२ ५०	४ ४४
२६	१३	६ ५८	९ २२	११ ४२	१३ ५९	१६ २१	१८ ४१	२० ४६	२२ २७	२३ ५२	१ १३	२ ४६	४ ४०
२७	१४	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५५	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ९	२ ४२	४ ३६
२८	१५	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ५	२ ३८	४ ३२
२९	१६	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ १	२ ३४	४ २९
३०	१७	६ ४३	९ ६	११ २६	१३ ४४	१६ ५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	० ५७	२ ३०	४ २५
जु.	१८	६ ३९	९ २	११ २२	१३ ४०	१६ १	१८ २१	२० २६	२२ ७	२३ ३२	० ५३	२ २६	४ २१
२	१९	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ३	२३ २८	० ४९	२ २२	४ १७
३	२०	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १४	२० १८	२१ ५९	२३ २४	० ४६	२ १८	४ १३
४	२१	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ १०	२० १४	२१ ५५	२३ २०	० ४२	२ १४	४ ९
५	२२	६ २३	८ ४६	११ ६	१३ २४	१५ ४६	१८ ६	२० १०	२१ ५१	२३ १६	० ३८	२ १०	४ ५
६	२३	६ १९	८ ४२	११ २	१३ २०	१५ ४२	१८ २	२० ६	२१ ४७	२३ १२	० ३४	२ ६	४ १
७	२४	६ १५	८ ३८	१० ५८	१३ १६	१५ ३८	१७ ५८	२० २	२१ ४३	२३ ८	० ३०	२ २	३ ५७
८	२५	६ ११	८ ३५	१० ५५	१३ १२	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५८	२१ ३९	२३ ४	० २६	१ ५९	३ ५३
९	२६	६ ७	८ ३१	१० ५१	१३ ८	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३५	२३ १	० २२	१ ५५	३ ४९
१०	२७	६ ३	८ २७	१० ४७	१३ ४	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	० १८	१ ५१	३ ४५
११	२८	६ ०	८ २३	१० ४३	१३ ०	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	० १४	१ ४७	३ ४१
१२	२९	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५६	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	० १०	१ ४३	३ ३७
१३	३०	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	० ६	१ ३९	३ ३४
१४	३१	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	० २	१ ३५	३ ३०
१५	३२	५ ४४	८ ७	१० २७	१२ ४५	१५ ६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५८	१ ३१	३ २६

१६ श्रा' ५ ४०

प्रविष्टे श्रावण (१६ जुलाई से १५ अगस्त तक)

जुलाई	श्रावण प्रविष्टे	४ कर्क घं. मि.	५ सिंह घं. मि.	६ कन्या घं. मि.	७ तुला घं. मि.	८ वृश्चिक घं. मि.	९ धनु घं. मि.	१० मकर घं. मि.	११ कुम्भ घं. मि.	१२ मीन घं. मि.	१ मेष घं. मि.	२ वृष घं. मि.	३ मिथुन घं. मि.
१६	१	८ ३	१० २३	१२ ४१	१५ २	१७ २२	१९ २७	२१ ८	२२ ३३	२३ ५४	१ २७	३ २२	५ ३६
१७	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ४	२२ २९	२३ ५०	१ २३	३ १८	५ ३२
१८	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १५	१९ १९	२१ ०	२२ २५	२३ ४६	१ १९	३ १४	५ २८
१९	४	७ ५१	१० ११	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ १५	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १५	३ १०	५ २४
२०	५	७ ४७	१० ७	१२ २५	१४ ४७	१७ ७	१९ ११	२० ५२	२२ १७	२३ ३९	१ ११	३ ६	५ २०
२१	६	७ ४३	१० ३	१२ २१	१४ ४३	१७ ३	१९ ७	२० ४८	२२ १३	२३ ३५	१ ७	३ २	५ १६
२२	७	७ ३९	९ ५९	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ ३	२० ४४	२२ ९	२३ ३१	० ३	२ ५८	५ १२
२३	८	७ ३५	९ ५५	१२ १३	१४ ३५	१६ ५५	१८ ५९	२० ४०	२२ ५	२३ २७	१ ०	२ ५४	५ ८
२४	९	७ ३२	९ ५२	१२ ९	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ २	२३ २३	० ५६	२ ५०	५ ४
२५	१०	७ २८	९ ४८	१२ ५	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३३	२१ ५८	२३ १९	० ५२	२ ४६	५ १
२६	११	७ २४	९ ४४	१२ १	१४ २३	१६ ४३	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १५	० ४८	२ ४२	४ ५७
२७	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ १९	१६ ३९	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ ११	० ४४	२ ३८	४ ५३
२८	१३	७ १६	९ ३६	११ ५४	१४ १५	१६ ३५	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ७	० ४०	२ ३५	४ ४९
२९	१४	७ १२	९ ३२	११ ५०	१४ ११	१६ ३१	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ३	० ३६	२ ३१	४ ४५
३०	१५	७ ८	९ २८	११ ४६	१४ ७	१६ २७	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२२ ५९	० ३२	२ २७	४ ४१
३१	१६	७ ४	९ २४	११ ४२	१४ ३	१६ २३	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५५	० २८	२ २३	४ ३७
अग	१७	७ ०	९ २०	११ ३८	१३ ५९	१६ १९	१८ २४	२० ५	२१ ३०	२२ ५२	० २४	२ १९	४ ३३
२	१८	६ ५६	९ १६	११ ३४	१३ ५५	१६ १६	१८ २०	२० १	२१ २६	२२ ४८	० २०	२ १५	४ २९
३	१९	६ ५२	९ १२	११ ३०	१३ ५२	१६ १२	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १६	२ ११	४ २५
४	२०	६ ४८	९ ८	११ २६	१३ ४८	१६ ८	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४०	० १२	२ ७	४ २१
५	२१	६ ४४	९ ४	११ २२	१३ ४४	१६ ४	१८ ८	१९ ४९	२१ १४	२२ ३६	० ८	२ ३	४ १७
६	२२	६ ४०	९ ०	११ १८	१३ ४०	१६ ०	१८ ४	१९ ४५	२१ १०	२२ ३२	० ५	१ ५९	४ १३
७	२३	६ ३७	८ ५७	११ १४	१३ ३६	१५ ५६	१८ १	१९ ४१	२१ ७	२२ २८	० १	१ ५५	४ ९
८	२४	६ ३३	८ ५३	११ १०	१३ ३२	१५ ५२	१७ ५७	१९ ३८	२१ ३	२२ २४	२३ ५७	१ ५१	४ ५
९	२५	६ २९	८ ४९	११ ६	१३ २८	१५ ४८	१७ ५३	१९ ३४	२० ५९	२२ २०	२३ ५३	१ ४७	४ २
१०	२६	६ २५	८ ४५	११ २	१३ २४	१५ ४४	१७ ४९	१९ ३०	२० ५५	२२ १६	२३ ४९	१ ४३	३ ५८
११	२७	६ २१	८ ४१	१० ५९	१३ २०	१५ ४०	१७ ४५	१९ २६	२० ५१	२२ १२	२३ ४५	१ ३९	३ ५४
१२	२८	६ १७	८ ३७	१० ५५	१३ १६	१५ ३६	१७ ४१	१९ २२	२० ४७	२२ ८	२३ ४१	१ ३६	३ ५०
१३	२९	६ १३	८ ३३	१० ५१	१३ १२	१५ ३२	१७ ३७	१९ १८	२० ४३	२२ ४	२३ ३७	१ ३२	३ ४६
१४	३०	६ ९	८ २९	१० ४७	१३ ८	१५ २८	१७ ३३	१९ १४	२० ३९	२२ ०	२३ ३३	१ २८	३ ४२
१५	३१	६ ५	८ २५	१० ४३	१३ ४	१५ २४	१७ २९	१९ १०	२० ३५	२१ ५६	२३ २९	१ २४	३ ३८

१६ श्रा' ६ १

स्पष्टीकरण : उपरोक्त अंग्रेजी दिनांक सूर्योदय कालिक है। रात्रि बारह बजे के बाद सूर्योदय तक के लग्न समाप्ति काल भी क्रमानुसार उसी दिनांक के सामने दिये हैं।

दैनिक लग्न सारणी स्टैंण्डर्ड टाईम घण्टा मिनट लग्नसमाप्ति काल–जालन्धर

प्रविष्टे भाद्रपद (१६ अगस्त से १५ सितम्बर तक)

अगस्त	भाद्रपद प्रविष्टे	५ सिंह घं. मि.	६ कन्या घं. मि.	७ तुला घं. मि.	८ वृश्चिक घं. मि.	९ धनु घं. मि.	१० मकर घं. मि.	११ कुम्भ घं. मि.	१२ मीन घं. मि.	१ मेष घं. मि.	२ वृष घं. मि.	३ मिथुन घं. मि.	४ कर्क घं. मि.
१६	१	८ २१	१० ३६	१३ ०	१५ २१	१७ २५	१९ ६	२० ३१	२१ ५३	२३ २५	१ २०	३ ३४	५ ५७
१७	२	८ १७	१० ३५	१२ ५६	१५ १७	१७ २१	१९ २	२० २७	२१ ४९	२३ २१	१ १६	३ ३०	५ ५३
१८	३	८ १३	१० ३१	१२ ५३	१५ १३	१७ १७	१८ ५८	२० २३	२१ ४५	२३ १७	१ १२	३ २६	५ ४९
१९	४	८ ९	१० २७	१२ ४९	१५ ९	१७ १३	१८ ५४	२० १९	२१ ४१	२३ १३	१ ८	३ २३	५ ४५
२०	५	८ ५	१० २३	१२ ४५	१५ ५	१७ ९	१८ ५०	२० १५	२१ ३७	२३ ९	१ ४	३ १८	५ ४२
२१	६	८ २	१० १९	१२ ४१	१५ १	१७ ५	१८ ४६	२० ११	२१ ३३	२३ ६	१ ०	३ १४	५ ३८
२२	७	७ ५८	१० १५	१२ ३७	१४ ५७	१७ २	१८ ४२	२० ८	२१ २९	२३ २	० ५६	३ १०	५ ३४
२३	८	७ ५४	१० ११	१२ ३३	१४ ५३	१६ ५८	१८ ३९	२० ४	२१ २५	२२ ५८	० ५२	३ ७	५ ३०
२४	९	७ ५०	१० ७	१२ २९	१४ ४९	१६ ५४	१८ ३५	२० ०	२१ २१	२२ ५४	० ४८	३ ३	५ २६
२५	१०	७ ४६	१० ३	१२ २५	१४ ४५	१६ ५०	१८ ३१	१९ ५६	२१ १७	२२ ५०	० ४४	२ ५९	५ २२
२६	११	७ ४२	१० ०	१२ २१	१४ ४१	१६ ४६	१८ २७	१९ ५२	२१ १३	२२ ४६	० ३१	२ ५५	५ १८
२७	१२	७ ३८	९ ५६	१२ १७	१४ ३७	१६ ४२	१८ २३	१९ ४८	२१ ९	२२ ४३	० ३७	२ ५१	५ १४
२८	१३	७ ३४	९ ५२	१२ १३	१४ ३३	१६ ३८	१८ १९	१९ ४४	२१ ५	२२ ३८	० ३३	२ ४७	५ १०
२९	१४	७ ३०	९ ४८	१२ ९	१४ २९	१६ ३४	१८ १५	१९ ४०	२१ १	२२ ३४	० २९	२ ४३	५ ६
३०	१५	७ २६	९ ४४	१२ ५	१४ २५	१६ ३०	१८ ११	१९ ३६	२० ५७	२२ ३०	० २५	२ ३९	५ २
३१	१६	७ २२	९ ४०	१२ १	१४ २२	१६ २६	१८ ७	१९ ३२	२० ५४	२२ २६	० २१	२ ३५	४ ५८
सि. १	१७	७ १८	९ ३६	११ ५८	१४ १८	१६ २२	१८ ३	१९ २८	२० ५०	२२ २३	० १७	२ ३१	४ ५४
२	१८	७ १४	९ ३२	११ ५४	१४ १४	१६ १८	१७ ५९	१९ २४	२० ४६	२२ १८	० १३	२ २७	४ ५०
३	१९	७ १०	९ २८	११ ५०	१४ १०	१६ १४	१७ ५५	१९ २०	२० ४२	२२ १४	० ९	२ २३	४ ४६
४	२०	७ ६	९ २४	११ ४६	१४ ६	१६ १०	१७ ५१	१९ १६	२० ३८	२२ ११	० ५	२ १९	४ ४३
५	२१	७ २	९ २०	११ ४२	१४ २	१६ ६	१७ ४७	१९ १२	२० ३४	२२ ७	० १	२ १५	४ ३९
६	२२	६ ५९	९ १६	११ ३८	१३ ५८	१६ ३	१७ ४४	१९ ९	२० ३०	२२ ३	२३ ५७	२ ११	४ ३५
७	२३	६ ५५	९ १२	११ ३४	१३ ५४	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २६	२१ ५९	२३ ५३	२ ८	४ ३१
८	२४	६ ५१	९ ८	११ ३०	१३ ५०	१५ ५५	१७ ३६	१९ १	२० २३	२१ ५५	२३ ४९	२ ४	४ २७
९	२५	६ ४७	९ ५	११ २६	१३ ४६	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५१	२३ ४५	१ ०	४ २३
१०	२६	६ ४३	९ १	११ २२	१३ ४२	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १४	२१ ४७	२३ ४२	१ ५६	४ १९
११	२७	६ ३९	८ ५७	११ १८	१३ ३८	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० १०	२१ ४३	२३ ३८	१ ५२	४ १५
१२	२८	६ ३५	८ ५३	११ १४	१३ ३४	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ६	२१ ३९	२३ ३४	१ ४८	४ ११
१३	२९	६ ३१	८ ४९	११ १०	१३ ३०	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० २	२१ ३५	२३ ३०	१ ४४	४ ७
१४	३०	६ २७	८ ४५	११ ६	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३१	२३ २६	१ ४०	४ ३
१५	३१	६ २३	८ ४१	११ २	१३ २३	१५ २७	१७ ८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २७	२३ २२	१ ३६	३ ५८

१६ आ' ६ १६

प्रविष्टे आश्विन (१६ सितम्बर से १५ अक्टूबर तक)

सितम्बर	आश्विन प्रविष्टे	६ कन्या घं. मि.	७ तुला घं. मि.	८ वृश्चिक घं. मि.	९ धनु घं. मि.	१० मकर घं. मि.	११ कुम्भ घं. मि.	१२ मीन घं. मि.	१ मेष घं. मि.	२ वृष घं. मि.	३ मिथुन घं. मि.	४ कर्क घं. मि.	५ सिंह घं. मि.
१६	१	८ ३७	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ४	१८ २९	१९ ५१	२१ २३	२३ १८	१ ३२	३ ५५	६ १५
१७	२	८ ३३	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ०	१८ २५	१९ ४७	२१ १९	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
१८	३	८ २९	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १५	२३ १०	१ २४	३ ४८	६ ७
१९	४	८ २५	१० ४७	१३ ७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ६	१ २०	३ ४४	६ ४
२०	५	८ २१	१० ४३	१३ ३	१५ ८	१६ ४८	१८ १४	१९ ३५	२१ ८	२२ ५२	१ १६	३ ४०	६ ०
२१	६	८ १७	१० ३९	१२ ५९	१५ ४	१६ ४५	१८ १०	१९ ३१	२१ ४	२२ ५८	१ १२	३ ३६	५ ५६
२२	७	८ १३	१० ३५	१२ ५५	१५ ०	१६ ४१	१८ ६	१९ २७	२१ ०	२२ ५४	१ ९	३ ३२	५ ५२
२३	८	८ ९	१० ३१	१२ ५१	१४ ५६	१६ ३७	१८ २	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ५	३ २८	५ ४८
२४	९	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५२	१६ ३३	१७ ५८	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ १	३ २४	५ ४४
२५	१०	८ २	१० २३	१२ ४३	१४ ४८	१६ २९	१७ ५४	१९ १५	२० ४८	२२ ४३	० ५७	३ २०	५ ४०
२६	११	७ ५८	१० १९	१२ ३९	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ ११	२० ४४	२२ ३९	० ५३	३ १६	५ ३६
२७	१२	७ ५४	१० १५	१२ ३५	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ७	२० ४०	२२ ३५	० ४९	३ १२	५ ३२
२८	१३	७ ५०	१० ११	१२ ३१	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ३	२० ३६	२२ ३१	० ४५	३ ८	५ २८
२९	१४	७ ४६	१० ७	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ०	२० ३२	२२ २७	० ४१	३ ४	५ २४
३०	१५	७ ४२	१० ३	१२ २४	१४ २८	१६ ९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	० ३७	३ ०	५ २०
अव	१७	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	० ३३	२ ५६	५ १६
२	१८	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ १	१७ २६	१८ ४८	२० २०	२२ १५	० २९	२ ५२	५ १२
३	१९	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १६	२२ ११	० २५	२ ४९	५ ९
४	२०	७ २६	९ ४८	१२ ८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ७	० २१	२ ४५	५ ५
५	२१	७ २२	९ ४४	१२ ४	१४ ९	१५ ४९	१७ १५	१८ ३६	२० ९	२२ ३	० १७	२ ४१	५ १
६	२२	७ १८	९ ४०	१२ ०	१४ ५	१५ ४६	१७ ११	१८ ३२	२० ५	२१ ५९	० १३	२ ३७	४ ५७
७	२३	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ १	१५ ४२	१७ ७	१८ २८	२० १	२१ ५५	० १०	२ ३३	४ ५२
८	२४	७ ११	९ ३२	११ ५२	१३ ५७	१५ ३८	१७ ३	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	० ६	२ २९	४ ४९
९	२५	७ ७	९ २८	११ ४८	१३ ५३	१५ ३४	१६ ५९	१८ २०	१९ ५३	२१ ४८	० २	२ २५	४ ४५
१०	२६	७ ३	९ २४	११ ४४	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १६	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
११	२७	६ ५९	९ २०	११ ४०	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १२	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
१२	२८	६ ५५	९ १६	११ ३६	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ८	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
१३	२९	६ ५१	९ १२	११ ३२	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ४	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ९	४ २९
१४	३०	६ ४७	९ ८	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ५	४ २५
१५	३१	६ ४३	९ ५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ १	४ २१

१६ का' ६ ३९

स्पष्टीकरण : उपरोक्त अंग्रेजी दिनांक सूर्योदय कालिक है। रात्रि बारह बजे के बाद सूर्योदय तक के लग्न समाप्ति काल भी क्रमानुसार उसी दिनांक के सामने दिये हैं।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी स्टैण्डर्ड टाईम घण्टा मिनट लग्नसमाप्ति काल–जालन्धर

प्रविष्टे कार्तिक (१६ अक्टूबर से १४ नवम्बर तक)

अक्टूबर	कार्तिक प्रविष्टे	७ तुला घं. मि.	८ वृश्चिक घं. मि.	९ धनु घं. मि.	१० मकर घं. मि.	११ कुम्भ घं. मि.	१२ मीन घं. मि.	१ मेष घं. मि.	२ वृष घं. मि.	३ मिथुन घं. मि.	४ कर्क घं. मि.	५ सिंह घं. मि.	६ कन्या घं. मि.
१६	१	९ १	११ २१	१३ २५	१५ ६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७	६ ३५
१७	२	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ २	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
१८	३	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १८	२१ १२	२३ २६	१ ५०	४ १०	६ २७
१९	४	८ ४९	११ ९	१३ १४	१४ ५४	१६ २०	१७ ४१	१९ १४	२१ ८	२३ २२	१ ४६	४ ६	६ २३
२०	५	८ ४५	११ ५	१३ १०	१४ ५१	१६ १६	१७ ३७	१९ १०	२१ ४	२३ १८	१ ४२	४ २	६ १९
२१	६	८ ४१	११ १	१३ ६	१४ ४७	१६ १२	१७ ३३	१९ ६	२१ ०	२३ १४	१ ३८	३ ५८	६ १५
२२	७	८ ३७	१० ५७	१३ २	१४ ४३	१६ ८	१७ २९	१९ २	२० ५६	२३ ११	१ ३४	३ ५४	६ १२
२३	८	८ ३३	१० ५३	१२ ५८	१४ ३९	१६ ४	१७ २५	१८ ५८	२० ५२	२३ ७	१ ३०	३ ५०	६ ८
२४	९	८ २९	१० ४९	१२ ५४	१४ ३५	१६ ०	१७ २१	१८ ५४	२० ४९	२३ ३	१ २६	३ ४६	६ ४
२५	१०	८ २५	१० ४५	१२ ५०	१४ ३१	१५ ५६	१७ १७	१८ ५०	२० ४५	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ०
२६	११	८ २१	१० ४१	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १३	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३८	५ ५६
२७	१२	८ १७	१० ३७	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ ९	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३४	५ ५२
२८	१३	८ १५	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३०	५ ४८
२९	१४	८ ९	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ २	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ६	३ २६	५ ४४
३०	१५	८ ५	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ २	३ २२	५ ४०
३१	१६	८ २	१० २२	१२ २६	१४ ७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १८	५ ३६
नवं १	१७	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३२
२	१८	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५१	३ ११	५ २८
३	१९	७ ५०	१० १०	१२ १५	१३ ५५	१५ २१	१६ ४२	१८ १४	२० ९	२२ २३	० ४७	३ ७	५ २४
४	२०	७ ४६	१० ६	१२ ११	१३ ५२	१५ १७	१६ ३८	१८ ११	२० ५	२२ २०	० ४३	३ ३	५ २०
५	२१	७ ४२	१० २	१२ ७	१३ ४८	१५ १३	१६ ३४	१८ ७	२० १	२२ १६	० ३९	२ ५९	५ १६
६	२२	७ ३८	९ ५८	१२ ३	१३ ४४	१५ ९	१६ ३०	१८ ३	१९ ५७	२२ १२	० ३५	२ ५५	५ १३
७	२३	७ ३४	९ ५४	११ ५९	१३ ४०	१५ ५	१६ २६	१७ ५९	१९ ५४	२२ ८	० ३१	२ ५१	५ ९
८	२४	७ ३०	९ ५०	११ ५५	१३ ३६	१५ १	१६ २२	१७ ५५	१९ ५०	२२ ४	० २७	२ ४७	५ ५
९	२५	७ २६	९ ४६	११ ५१	१३ ३२	१४ ५७	१६ १८	१७ ५१	१९ ४६	२२ ०	० २३	२ ४३	५ १
१०	२६	७ २२	९ ४२	११ ४७	१३ २८	१४ ५३	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १९	२ ३९	४ ५७
११	२७	७ १८	९ ३८	११ ४३	१३ २४	१४ ४९	१६ १०	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १५	२ ३५	४ ५३
१२	२८	७ १४	९ ३५	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
१३	२९	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ७	२ २७	४ ४५
१४	३०	७ ७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ३	२ २३	४ ४१

१५ मा' ७ ३

प्रविष्टे मार्गशीर्ष (१५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक)

नवम्बर	मार्ग. प्रविष्टे	८ वृश्चिक घं. मि.	९ धनु घं. मि.	१० मकर घं. मि.	११ कुम्भ घं. मि.	१२ मीन घं. मि.	१ मेष घं. मि.	२ वृष घं. मि.	३ मिथुन घं. मि.	४ कर्क घं. मि.	५ सिंह घं. मि.	६ कन्या घं. मि.	७ तुला घं. मि.
१५	१	९ २३	११ २७	१३ ८	१४ ३३	[illegible]	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३६
१६	२	९ १९	११ २३	१३ ४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५६	२ १६	४ ३३	६ ५५
१७	३	९ १५	११ १९	१३ ०	१४ २५	१५ ४७	१७ २०	१९ १४	२१ २८	२३ ५२	२ १२	४ २९	६ ५१
१८	४	९ ११	११ १६	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १६	१९ १०	२१ २४	२३ ४८	२ ८	४ २५	६ ४७
१९	५	९ ७	११ १२	१२ ५३	१४ १८	१५ ३९	१७ १२	१९ ६	२१ २१	२३ ४४	२ ४	४ २१	६ ४३
२०	६	९ ३	११ ८	१२ ४९	१४ १४	१५ ३५	१७ ८	१९ २	२१ १७	२३ ४०	२ ०	४ १८	६ ३९
२१	७	८ ५९	११ ४	१२ ४५	१४ १०	१५ ३१	१७ ४	१८ ५८	२१ १३	२३ ३६	१ ५६	४ १४	६ ३५
२२	८	८ ५५	११ ०	१२ ४१	१४ ६	१५ २७	१७ ०	१८ ५५	२१ ९	२३ ३२	१ ५२	४ १०	६ ३१
२३	९	८ ५१	१० ५६	१२ ३७	१४ २	१५ २४	१६ ५६	१८ ५१	२१ ५	२३ २८	१ ४८	४ ६	६ २७
२४	१०	८ ४७	१० ५२	१२ ३३	१३ ५८	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ १	२३ २४	१ ४४	४ २	६ २३
२५	११	८ ४३	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १५	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ २०	१ ४०	३ ५८	६ १९
२६	१२	८ ३९	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३[illegible]	३ ५४	६ १५
२७	१३	८ ३[illegible]	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ १०	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
२८	१४	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ८	१ २८	३ ४६	६ ८
२९	१५	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ०	१६ ३२	१८ २७	२० ४१	२३ ४	१ २४	३ ४२	६ ४
३०	१६	८ २४	१० २८	१२ ९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २८	१८ २३	२० ३७	२३ ०	१ २०	३ ३८	६ ०
दि. १	१७	८ २०	१० २४	१२ ५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३४	५ ५६
२	१८	८ १६	१० २१	१२ १	१३ २७	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३०	५ ५२
३	१९	८ १२	१० १७	११ ५८	१३ २३	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ९	३ २६	५ ४८
४	२०	८ ८	१० १३	११ ५४	१३ १९	१४ ४०	१६ १३	१८ ७	२० २२	२२ ४५	१ ५	३ २२	५ ४४
५	२१	८ ४	१० ९	११ ५०	१३ १५	१४ ३६	१६ ९	१८ ३	२० १८	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
६	२२	८ ०	१० ५	११ ४६	१३ ११	१४ ३२	१६ ५	१७ ५९	२० १४	२२ ३७	० ५७	३ १५	५ ३६
७	२३	७ ५६	१० १	११ ४२	१३ ७	१४ २८	१६ १	१७ ५६	२० १०	२२ ३३	० ५३	३ ११	५ ३२
८	२४	७ ५२	९ ५७	११ ३८	१३ ३	१४ २४	१५ ५७	१७ ५२	२० ६	२२ २९	० ४९	३ ७	५ २८
९	२५	७ ४८	९ ५३	११ ३४	१२ ५९	१४ २०	१५ ५३	१७ ४८	२० २	२२ २५	० ४५	३ ३	५ २४
१०	२६	७ ४४	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १६	१५ ४९	१७ ४४	१९ ५८	२२ २१	० ४१	२ ५९	५ २०
११	२७	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४५	१७ ४०	१९ ५४	२२ १७	० ३७	२ ५५	५ १६
१२	२८	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ९	१५ ४१	१७ ३६	१९ ५०	२२ १३	० ३३	२ ५१	५ १३
१३	२९	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ५	१५ ३७	१७ ३२	१९ ४६	२२ ०९	० २९	२ ४७	५ ९
१४	३०	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ १	१५ ३३	१७ २८	१९ ४२	२२ ५	० २५	२ ४३	५ ५

१५ पौ' ७ २५

स्पष्टीकरण : उपरोक्त अंग्रेजी दिनांक सूर्योदय कालिक हैं। रात्रि बारह बजे के बाद सूर्योदय तक के लग्न समाप्ति काल भी क्रमानुसार उसी दिनांक के सामने दिये हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी स्टैण्डर्ड टाईम घण्टा मिनट लग्नसमाप्ति काल—जालन्धर

प्रविष्टे पौष (१५ दिसम्बर से १२ जनवरी तक)

दिसम्बर	पौष प्रविष्टे	९ धनु घं. मि.	१० मकर घं. मि.	११ कुम्भ घं. मि.	१२ मीन घं. मि.	१ मेष घं. मि.	२ वृष घं. मि.	३ मिथुन घं. मि.	४ कर्क घं. मि.	५ सिंह घं. मि.	६ कन्या घं. मि.	७ तुला घं. मि.	८ वृश्चिक घं. मि.
१५	१	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ २९	१७ २४	१९ ३८	२२ २	० २२	२ ३९	५ १	७ २१
१६	२	९ २५	११ ६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	० १८	२ ३५	४ ५७	७ १७
१७	३	९ २२	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	० १४	२ ३१	४ ५३	७ १३
१८	४	९ १८	१० ५९	१२ ४२	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २७	२१ ५०	० १०	२ २७	४ ४९	७ ९
१९	५	९ १४	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २३	२१ ४६	० ६	२ २३	४ ४५	७ ५
२०	६	९ १०	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १९	२१ ४२	२४ २	२ २०	४ ४१	७ १
२१	७	९ ६	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ १	१९ १५	२१ ३८	२३ ५८	२ १६	४ ३७	६ ५७
२२	८	९ २	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५७	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १२	४ ३३	६ ५३
२३	९	८ ५८	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५४	१९ ७	२१ ३०	२३ ५०	२ ८	४ २९	६ ४९
२४	१०	८ ५४	१० ३५	१२ ०	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ४	४ २५	६ ४५
२५	११	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ ०	४ २१	६ ४२
२६	१२	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५६	४ १८	६ ३८
२७	१३	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४२	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५२	४ १४	६ ३४
२८	१४	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३८	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४८	४ १०	६ ३०
२९	१५	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३४	१६ २९	१८ ४३	२१ ६	२३ २६	१ ४४	४ ६	६ २६
३०	१६	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ३	२३ २३	१ ४०	४ २	६ २२
३१	१७	८ २६	१० ७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५९	२३ १९	१ ३६	३ ५८	६ १८
जन	१८	८ २२	१० ३	११ २८	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५४	२३ १४	१ ३१	३ ५३	६ १३
२	१९	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४५	१४ १८	१६ १२	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २७	३ ४९	६ ९
३	२०	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४१	१४ १४	१६ ८	१८ २३	२० ४६	२३ ६	१ २३	३ ४५	६ ५
४	२१	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३७	१४ १०	१६ ४	१८ १९	२० ४२	२३ २	१ २०	३ ४१	६ १
५	२२	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३३	१४ ६	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १६	३ ३७	५ ५७
६	२३	८ २	९ ४३	११ ८	१२ २९	१४ २	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १२	३ ३३	५ ५३
७	२४	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २५	१३ ५८	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ८	३ २९	५ ४९
८	२५	७ ५४	९ ३५	११ ०	१२ २१	१३ ५४	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ४	३ २५	५ ४५
९	२६	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५०	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०	३ २१	५ ४२
१०	२७	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४६	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	० ५६	३ १८	५ ३८
११	२८	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४२	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	० ५२	३ १४	५ ३४
१२	२९	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ६	१३ ३८	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	० ४८	३ १०	५ ३०

१३ मा' ७ ३४

प्रविष्टे माघ (१३ जनवरी से ११ फरवरी तक)

जनवरी	माघ प्रविष्टे	१० मकर घं. मि.	११ कुम्भ घं. मि.	१२ मीन घं. मि.	१ मेष घं. मि.	२ वृष घं. मि.	३ मिथुन घं. मि.	४ कर्क घं. मि.	५ सिंह घं. मि.	६ कन्या घं. मि.	७ तुला घं. मि.	८ वृश्चिक घं. मि.	९ धनु घं. मि.
१३	१	९ १५	१० ४०	१२ २	१३ ३४	१५ २९	१७ ४३	२० ६	२२ २६	० ४४	३ ६	५ २६	७ ३०
१४	२	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० २	२२ २३	० ४०	३ २	५ २२	७ २६
१५	३	९ ७	१० ३३	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५९	२२ १९	० ३६	२ ५८	५ १८	७ २३
१६	४	९ ४	१० २९	११ ५०	१३ २३	१५ १७	१७ ३१	१९ ५४	२२ १५	० ३२	२ ५४	५ १४	७ १९
१७	५	९ ०	१० २५	११ ४६	१३ १९	१५ १३	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	० २८	२ ५०	५ १०	७ १५
१८	६	८ ५६	१० २१	११ ४२	१३ १५	१५ ९	१७ २४	१९ ४७	२२ ७	० २५	२ ४६	५ ६	७ ११
१९	७	८ ५२	१० १७	११ ३८	१३ ११	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ३	० २१	२ ४२	५ २	७ ७
२०	८	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ७	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	० १७	२ ३८	४ ५८	७ ३
२१	९	८ ४४	१० ९	११ ३०	१३ ३	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	० १३	२ ३४	४ ५४	६ ५९
२२	१०	८ ४०	१० ५	११ २६	१२ ५९	१४ ५४	१७ ८	१९ ३१	२१ ५१	० ९	२ ३०	४ ५०	६ ५५
२३	११	८ ३६	१० १	११ २२	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	२४ ५	२ २६	४ ४७	६ ५[illegible]
२४	१२	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५१	१४ ४६	१७ ०	१९ २३	२१ ४३	२४ १	२ २२	४ ४३	६ ४[illegible]
२५	१३	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४७	१४ ४२	१६ ५६	१९ १९	२१ ३९	२३ ५७	२ १९	४ ३९	६ ४३
२६	१४	८ २४	९ ४९	११ ११	१२ ४३	१४ ३८	१६ ५२	१९ १५	२१ ३५	२३ ५३	२ १५	४ ३५	६ ३९
२७	१५	८ २०	९ ४५	११ ७	१२ ३९	१४ ३४	१६ ४८	१९ ११	२१ ३१	२३ ४९	२ ११	४ ३१	६ ३५
२८	१६	८ १६	९ ४१	११ ३	१२ ३५	१४ ३०	१६ ४४	१९ ८	२१ २८	२३ ४५	२ ७	४ २७	६ ३[illegible]
२९	१७	८ १२	९ ३७	१० ५९	१२ ३२	१४ २६	१६ ४०	१९ ४	२१ २४	२३ ४१	२ ३	४ २३	६ २[illegible]
३०	१८	८ ८	९ ३४	१० ५५	१२ २८	१४ २२	१६ ३६	१९ ०	२१ २०	२३ ३७	१ ५९	४ १९	६ २[illegible]
३१	१९	८ ५	९ ३०	१० ५१	१२ २४	१४ १८	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३३	१ ५५	४ १५	६ २[illegible]
फर	२०	८ १	९ २६	१० ४७	१२ २०	१४ १४	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ १[illegible]
२	२१	७ ५७	९ २२	१० ४३	१२ १६	१४ १०	१६ २६	१८ ४८	२१ ८	२३ २६	१ ४७	४ ७	६ १[illegible]
३	२२	७ ५३	९ १८	१० ३९	१२ १२	१४ ७	१६ २१	१८ ४४	२१ ४	२३ २२	१ ४३	४ ३	६ [illegible]
४	२३	७ ४९	९ १४	१० ३५	१२ ८	१४ ३	१६ १७	१८ ४०	२१ ०	२३ १८	१ ३९	३ ५९	६ [illegible]
५	२४	७ ४५	९ १०	१० ३१	१२ ४	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५६	२३ १४	१ ३५	३ ५५	५ [illegible]
६	२५	७ ४१	९ ६	१० २७	१२ ०	१३ ५५	१६ ९	१८ ३२	२० ५२	२३ १०	१ ३१	३ ५१	५ ५[illegible]
७	२६	७ ३७	९ २	१० २४	११ ५६	१३ ५१	१६ ५	१८ २८	२० ४८	२२ ६	१ २७	३ ४८	५ ५[illegible]
८	२७	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५२	१३ ४७	१६ १	१८ २४	२० ४४	२३ २	१ २३	३ ४४	५ ४[illegible]
९	२८	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४८	१३ ४३	१५ ५७	१८ २०	२० ४०	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ४[illegible]
१०	२९	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४४	१३ ३९	१५ ५३	१८ १६	२० ३६	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ४[illegible]
११	३०	७ २१	८ ४६	१० ८	११ ४०	१३ ३५	१५ ४९	१८ १२	२० ३२	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ३[illegible]

१२ फा' ७ १७

स्पष्टीकरण : उपरोक्त अंग्रेजी दिनांक सूर्योदय कालिक हैं। रात्रि बारह बजे के बाद सूर्योदय तक के लग्न समाप्ति काल भी क्रमानुसार उसी दिनांक के सामने दिये हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारणी स्टैण्डर्ड टाईम घण्टा मिनट लग्नसमाप्ति काल–जालन्धर

प्रविष्टे फाल्गुन (१२ फरवरी से १३ मार्च तक)

फरवरी	फाल्गुन प्रविष्टे	११ कुम्भ घं. मि.	१२ मीन घं. मि.	१ मेष घं. मि.	२ वृष घं. मि.	३ मिथुन घं. मि.	४ कर्क घं. मि.	५ सिंह घं. मि.	६ कन्या घं. मि.	७ तुला घं. मि.	८ वृश्चिक घं. मि.	९ धनु घं. मि.	१० मकर घं. मि.
१२	१	८ ४२	१० ४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ९	२० २८	२२ ४६	१ ८	३ २८	५ ३२	७ १३
१३	२	८ ३९	१० ०	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ५	२० २४	२२ ४२	१ ४	३ २४	५ २९	७ १०
१४	३	८ १५	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ १	२० २१	२२ ३८	१ ०	३ २०	५ २५	७ ६
१५	४	८ ३१	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३४	१७ ५७	२० १७	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ २१	७ २
१६	५	८ २७	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ ३०	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १७	६ ५८
१७	६	८ २३	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २६	१७ ४९	२० ९	२२ २७	० ४८	३ ८	५ १३	६ ५४
१८	७	८ १९	९ ४०	११ १३	१३ ८	१५ २२	१७ ४५	२० ५	२२ २३	० ४४	३ ४	५ ९	६ ५०
१९	८	८ १५	९ ३७	११ ९	१३ ४	१५ १८	१७ ४१	२० १	२२ १९	० ४०	३ ०	५ ५	६ ४६
२०	९	८ ११	९ ३२	११ ५	१३ ०	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ १	६ ४२
२१	१०	८ ७	९ २८	११ १	१२ ५६	१५ १०	१७ ३२	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५२	४ ५७	६ ३८
२२	११	८ ३	९ २५	१० ५७	१२ ५२	१५ ६	१७ २९	१९ ४९	२२ ७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
२३	१२	७ ५९	९ २१	१० ५३	१२ ४८	१५ २	१७ २५	१९ ४५	२२ ३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
२४	१३	७ ५५	९ १७	१० ४९	१२ ४४	१४ ५८	१७ २१	१९ ४१	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ४५	६ २६
२५	१४	७ ५१	९ १३	१० ४५	१२ ४०	१४ ५४	१७ १७	१९ ३७	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ४१	६ २२
२६	१५	७ ४७	९ ९	१० ४१	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३७	६ १८
२७	१६	७ ४३	९ ५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ १०	१९ ३०	२१ ४७	० ९	२ २९	४ ३४	६ १४
२८	१७	७ ४०	९ १	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ६	१९ २६	२१ ४३	० ५	२ २५	४ ३०	६ ११
मा.	१८	७ ३६	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ २	१९ २२	२१ ३९	० १	२ २१	४ २६	६ ७
२	१९	७ ३२	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३५	१६ ५८	१९ १८	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २२	६ ३
३	२०	७ २८	८ ४९	१० २२	१२ १६	१४ ३१	१६ ५४	१९ १४	२१ ३२	२३ ५३	२ १३	४ १८	५ ५९
४	२१	७ २४	८ ४५	१० १८	१२ १३	१४ २७	१६ ५०	१९ १०	२१ २८	२३ ४९	२ ९	४ १४	५ ५५
५	२२	७ २०	८ ४१	१० १४	१२ ९	१४ २३	१६ ४५	१९ ६	२१ २४	२३ ४५	२ ५	४ १०	५ ५१
६	२३	७ १६	८ ३८	१० १०	१२ ५	१४ १९	१६ ४१	१९ २	२१ २०	२३ ४१	२ १	४ ६	५ ४७
७	२४	७ १२	८ ३३	१० ६	१२ १	१४ १५	१६ ३८	१८ ५८	२१ १६	२३ ३७	१ ५७	४ २	५ ४३
८	२५	७ ८	८ २९	१० २	११ ५७	१४ ११	१६ ३४	१८ ५४	२१ १२	२३ ३३	१ ५४	३ ५८	५ ३९
९	२६	७ ४	८ २६	९ ५८	११ ५३	१४ ७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ८	२३ २९	१ ५०	३ ५४	५ ३५
१०	२७	७ ०	८ २२	९ ५४	११ ४९	१४ ३	१६ २६	१८ ४६	२१ ४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
११	२८	६ ५६	८ १८	९ ५०	११ ४५	१३ ५९	१६ २२	१८ ४२	२१ ०	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
१२	२९	६ ५२	८ १४	९ ४६	११ ४१	१३ ५५	१६ १८	१८ ३८	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ४२	५ २३
१३	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५३	२३ १४	१ ३४	३ ३८	५ १९
१४ फं'	६ ४४												

प्रविष्टे चैत्र (१४ मार्च से १२ अप्रैल तक)

मार्च	चैत्र प्रविष्टे	१२ मीन घं. मि.	१ मेष घं. मि.	२ वृष घं. मि.	३ मिथुन घं. मि.	४ कर्क घं. मि.	५ सिंह घं. मि.	६ कन्या घं. मि.	७ तुला घं. मि.	८ वृश्चिक घं. मि.	९ धनु घं. मि.	१० मकर घं. मि.	११ कुम्भ घं. मि.
१४	१	८ ६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ३५	५ १५	६ ४१
१५	२	८ २	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ७	१८ २७	२० ४४	२३ ६	१ २६	३ ३१	५ १२	६ ३७
१६	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ४०	१६ ३	१८ २३	२० ४०	२३ २	१ २२	३ २७	५ ८	६ ३३
१७	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३६	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ २३	५ ४	६ २९
१८	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३२	१५ ५५	१८ १५	२० ३३	२२ ५४	१ १४	३ १९	५ ०	६ २५
१९	६	७ ४६	९ १९	११ १४	१३ २८	१५ ५०	१ ११	२० २९	२२ ५०	१ १०	३ १५	४ ५६	६ २१
२०	७	७ ४२	९ १५	११ १०	१३ २४	१५ ४	१ ७	२० २५	२२ ४६	१ ६	३ ११	४ ५२	६ १७
२१	८	७ ३८	९ ११	११ ६	१३ २०	१५ ४३	०३	२० २१	२२ ४२	१ २	३ ७	४ ४८	६ १३
२२	९	७ ३४	९ ७	११ २	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३८	० ५८	३ ३	४ ४४	६ ९
२३	१०	७ ३०	९ ३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १३	२२ ३४	० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ५
२४	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ९	२२ ३१	० ५१	२ ५५	४ ३६	६ १
२५	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ५	२२ २७	० ४७	२ ५१	४ ३२	५ ५७
२६	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० १	२२ २३	० ४३	२ ४७	४ २८	५ ५३
२७	१४	७ १५	८ ४७	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ४३	४ २४	५ ४९
२८	१५	७ ११	८ ४३	१० ३८	१२ ५२	१५ १६	१७ ३६	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ३९	४ २०	५ ४५
२९	१६	७ ७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ १२	१७ ३२	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ३६	४ १६	५ ४२
३०	१७	७ ३	८ ३६	१० ३०	१२ ४४	१५ ८	१७ २८	१९ ४६	२२ ७	० २७	२ ३२	४ १३	५ ३८
३१	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ४	१७ २४	१९ ४२	२२ ३	० २३	२ २८	४ ९	५ ३४
अप्र	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१५ ०	१७ २०	१९ ३८	२१ ५९	० १९	२ २४	४ ५	५ ३०
२	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५६	१७ १६	१९ ३४	२१ ५५	० १५	२ २०	४ १	५ २६
३	२१	६ ४७	८ २०	१० १५	१२ २९	१४ ५२	१७ १२	१९ ३०	२१ ५१	० ११	२ १६	३ ७	५ २२
४	२२	६ ४५	८ १६	१० ११	१२ २५	१४ ४८	१७ ८	१९ २६	२१ ४७	० ७	२ १२	३ ५३	५ १८
५	२३	६ ३९	८ १२	१० ७	१२ २१	१४ ४४	१७ ४	१९ २२	२१ ४३	२४ ३	२ ८	३ ५९	५ १४
६	२४	६ ३५	८ ८	१० ३	१२ १७	१४ ४०	१७ ०	१९ १८	२१ ३९	२३ ५९	२ ४	३ ४५	५ १०
७	२५	६ ३२	८ ४	९ ५९	१२ १३	१४ ३६	१६ ५६	१९ १४	२१ ३५	२३ ५६	२ ०	३ ४१ ४	५ ६
८	२६	६ २८	८ ०	९ ५५	१२ ९	१४ ३२	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ १
९	२७	६ २४	७ ५६	९ ५१	१२ ५	१४ २८	१६ ४८	१९ ६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
१०	२८	६ २०	७ ५२	९ ४७	१२ १	१४ २४	१६ ४४	१९ २	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
११	२९	६ १६	७ ४८	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
१२	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १७	१६ ३७	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४७
१३ चै.'	६ ८												

स्पष्टीकरण : उपरोक्त अंग्रेजी दिनांक सूर्योदय कालिक हैं। रात्रि बारह बजे के बाद सूर्योदय तक के लग्न समाप्ति काल भी क्रमानुसार उसी दिनांक के सामने दिये हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

षट्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' को जो वर्तमान राशि के सामने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्टक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने जो राशि अपने अपने वर्ग की लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को गृहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० हैं। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ गृहादि वर्गों की वर्तमान राशि हैं इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अतः सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिंशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारुढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्तिरहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कर्मरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषिकर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान्, धनिक, सन्तानवान्, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुःखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुषग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं। और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है। और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभ ग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली, सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होता है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल-स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, शृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से क्रोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचारिणी कुटिला, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्रत्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख दुःख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थानों में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्रराशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

सर्वाङ्कसिद्धियोगः—शुक्लादि तिथि बार की संख्या के जोड़ को तीन जगह रख क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धन क्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अंक आने से सौख्य, जय, लाभ हो। विजयादशमी को बिना पत्रांकादि मुहूर्तों के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैरृत को मत जाओ, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो कदापि न जावें क्योंकि मुहूर्त शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

षट्वर्ग सारिणी चक्र

	भाग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	अंशादि	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	रा. चक्र	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
	दो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
०	दे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	दा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	दो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
१	दे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स.	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	दा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	दो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
२	दे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	दा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	दो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
३	दे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	दा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	दो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
४	दे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सि.	दा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	दो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
५	दे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	दा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४१	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४६	०	०	०	५१	०	०	०
	दो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
६	दे.	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु.	दा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	दो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४		४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
७	दे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
वृ.	दा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रि.	२	२	२	२	२	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	दो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
८	दे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध.	दा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	दो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
९	दे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म.	दा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	दो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
१०	दे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कुं.	दा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	दो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
११	दे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
मी.	दा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंचांग दिवाकर से प्रत्येक स्थान का सूर्योदय ज्ञान

विश्व में प्रत्येक स्थान पर एक समय पर सूर्योदय नहीं होता अतः किसी स्थान का लग्न व इष्ट्यादि बताने के लिए वहाँ का सूर्योदय का ज्ञान अति आवश्यक है। प्रायः बहुत से लोग अभीष्ट स्थान का सूर्योदय निकालते समय पंचांग में मुद्रित जालन्धर के सूर्योदय काल में केवल रेखान्तर संस्कार करके ही वहाँ का सूर्योदय काल निकाल लेते हैं, जो कि प्रायः अशुद्ध रहता हो। अतः पाठकों की सुविधा के लिए पंचांग दिवाकर में भिन्न अक्षांशों का मध्यम स्थानीय सूर्योदय काल (लोकल मीन टाईम) दिया जा रहा है इस में चरान्तरादि सभी संस्कार किए हुए हैं। इस में केवल अभीष्ट स्थान का देशान्तर संस्कार (पृष्ठ ८९ पर) ही युक्त-वियुक्त करने से उस अक्षांश (स्थान) का सूर्योदय काल स्टैण्डर्ड टाईम से निकल आएगा।

जिस शहर का आपको सूर्योदय काल निकालना है। पंचांग दिवाकर पृष्ठ ८९ से ९१ पर उस शहर का अक्षांश देखो फिर पंचांग दिवाकर पृष्ठ ९ से १४ पर अभीष्ट अक्षांश के नीचे और जिस अंग्रेजी तारीख का आपको सूर्योदय निकालना हो उस तारीख के सामने अभीष्ट शहर का माध्यम सूर्योदय काल दिया हुआ है। फिर उस शहर का देशान्तर संस्कार जो कि पंचांग दिवाकर पृष्ठ ८९ से ९१ पर दिया हुआ है। उसे + चिन्ह हो तो धन और — चिन्ह हो तो ऋण करने से अभीष्ट शहर का सूर्योदय काल स्टैण्डर्ड टाईम में आ जाएगा।

उदाहरण—जैसे आपको देहली में ८ मार्च का सूर्योदय निकालना है। पंचांग के पृष्ठ ८९ पर देहली का अक्षांश २८।३९ दिया हुआ है। अतः पृष्ठ ११ पर ८ मार्च के सामने और ३०° के नीचे ६।१९ मध्यकालीन सूर्योदय दिया हुआ है। चूंकि देहली का अक्षांश ३०° से लगभग डेढ़ अंश कम है अतः इसी तारीख को यदि १० अंश पर ४ मिनट का अन्तर पड़ा है तो डेढ़ अंश के होने पर केवल ३६ सैकिण्ड का अन्तर रहेगा, जो कि ६।१९ से कम करने पर ६।१८।२४ होगा इसमें पृष्ठ ८९ पर ही लिखे देहली के देशान्तर +२१'।८" होने से मध्यम सूर्यकाल में जमा करने से कुल ६ घण्टे ३९ मिनट ३२ सैकिण्ड अर्थात्—६ बजकर ४० मिनट पर सूर्योदय निकल आएगा, (३० से अधिक सैकिण्ड होने पर १ मिनट बढ़ा लेना चाहिए)। इसी प्रकार अन्य शहरों का सूर्योदय टाईम निकाल सकते हैं।

विदेशों का सूर्योदय काल जानने के लिए वहाँ का भारत के स्टैण्डर्ड टाईम से अन्तर का ज्ञान होना आवश्यक है इसके लिए पृष्ठ ९१ देखें।

नोट—पाठकों की सुविधा के लिए इस वर्ष से उत्तरी भारत (हिमाचल प्रदेश व जम्मू इत्यादि) के कुछ प्रसिद्ध नगरों के सूर्योदयास्त (अन्तिम पृष्ठों पर) भी दे दिए गए हैं।

नवग्रह और बारह राशियों के लिए उपयोगी रत्न

अपनी जन्म कुण्डली अथवा जन्म या नाम राशि के आधार पर उपयुक्त ग्रह-रत्नों को धारण कर मनुष्य चमत्कारिक रूप से लाभ उठा सकता है। शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि करने और क्रूर-ग्रहों के अनिष्ट प्रभाव को दूर करने में ग्रह-रत्न निश्चित रूप से अत्यन्त लाभकारी सिद्ध हुए हैं। इनको धारण करते समय उपयुक्त रत्नों का चुनाव, विधि और शुभ मुहूर्त का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। किसी विद्वान् ज्योतिषी से परामर्श करना उचित रहेगा।

नाम राशि	सम्बद्धग्रह	रत्न	नाम राशि	सम्बद्धग्रह	रत्न
मेष	मंगल	मूंगा	तुला	शुक्र	हीरा
वृष	शुक्र	हीरा	वृश्चिक	मंगल	मूंगा
मिथुन	बुध	पन्ना	धनु	गुरु	पुखराज
कर्क	चन्द्रमा	मोती	मकर	शनि	नीलम
सिंह	सूर्य	माणक्य	कुम्भ	शनि	नीलम
कन्या	बुध	पन्ना	मीन	गुरु	पुखराज

ग्रह-रत्न धारण करने की विधि

(१) **माणिक्य**—सूर्य की शान्ति के लिए इसको सोने की अंगूठी में रविवार को जब कृत्तिका पुष्य उ.षा. या उ.फा. नक्षत्र हो सूर्य पूजा के पश्चात् पहिनना चाहिए। १५ अगस्त से १४ सितम्बर तक उत्पन्न व्यक्तियों को माणिक्य धारण करना विशेष शुभ है। पित्त, ज्वर, क्षय, शिर पीड़ा व नेत्र आदि रोगों में लाभ पहुंचाता है।

(२) **मोती** (Moon Stone)—क्षीण चन्द्रमा को बल प्रदान करता है। १६ जुलाई से १४ अगस्त तक उत्पन्न व्यक्तियों को श्रेयस्कर है इसे शुक्ल पक्ष के सोमवार को चाँदी की अंगूठी में जड़वा कर धारण करें। यह विचारों को शक्ति प्रदान करता है। प्रमेह, वायु और मस्तिष्क रोगों में लाभ करता है।

(३) **मूंगा**—मंगल ग्रह के प्रभाव को शुभत्व प्रदान करता है। १५ अप्रैल से १४ मई तक व १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर तक उत्पन्न व्यक्तियों को धारण करना उचित है। इसकी मंगलवार पूजा करके सोने की अंगूठी में शुभ मुहूर्त में धारण करें। रक्त विकार, हृदय की दुर्बलता व चर्म रोगों को लाभ करता है।

(४) **पन्ना**—बुध रत्न है। १५ जून से १४ जुलाई तक और १५ सितम्बर से १४ अक्टूबर तक जन्मे व्यक्तियों को शुभ मुहूर्त में धारण करना उपयोगी है। यह बुद्धिवर्धक और शीत पित्त, मूर्छा, रोगों में शुभ।

(५) **पुखराज**—जिनका जन्म १५ दिसम्बर से १४ जनवरी तक हो, उन्हें शुभ मुहूर्त में वीरवार के दिन धारण करना चाहिए। इसका वजन ४ रत्ती से कम न होवे। आंतड़ी और कफ-जन्य रोगों में गुणकारी, बल बुद्धि, विद्या व सन्तान में वृद्धि करता है। स्त्रियों के सुखमय विवाह के लिए विशेष शुभ।

(६) **हीरा**—१५ मई से १४ जून तक और १५ अक्टूबर से १४ नवम्बर तक जन्मे व्यक्तियों के लिए उपयोगी है। शुक्रवार को भरणी, पू.षा. आदि शुभ नक्षत्रों में सोने या चाँदी की अंगूठी में पहनने से श्वेत प्रदर, स्वरभंग काम-जन्य रोगों की शांति होती है। यह सुखमय विवाह के लिए शुभ। इसकी बदल श्वेत गोमेद है।

(७) **नीलम**—१५ जनवरी से १४ फरवरी तक उत्पन्न व्यक्तियों को उपयुक्त रहेगा। पंचधातु या लोहे की अंगूठी में धारण करने से दिल और दिमाग के रोगों की शांति और नौकरी या व्यापारादि में तरक्की करता है।

(८) **गोमेद**—राहु के अनिष्ट कुप्रभाव को दूर करता मन और मस्तिष्क को बल प्रदान करता है। जिनका जन्म १५ फरवरी से १४ मार्च तक है, वे यह रत्न किसी शुभ मुहूर्त में धारण करें।

(९) **लहसुनिया**—१५ मार्च से १४ अप्रैल तक उत्पन्न व्यक्ति पहन सकते हैं। यह केतु-रत्न है। यह रत्न धातु की अंगूठी में अश्विनी मघा मूला इत्यादि नक्षत्रों के शुभ मुहूर्त में डालें। यह वायु रोगों में उत्तम है।

अधिक जानकारी के लिए हमें स्वयं मिलें या पत्र लिखें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्म समय द्वादश लग्न फलम्

मेष लग्न—कृश, भूरी आंख, बाल अधिक, गोल चेहरा, सुन्दर, उष्ण प्रकृति, बात विकार, कठोर भाषण, मन की अनिश्चित स्थिति, क्रोधी, छोटा कद, माता का मुख पूर्व की ओर, मकान पुराना, स्त्रियां १, ५ व ७ पास में हों, माता का वस्त्र लाल रंग का हो, पहले मीठा भोजन किया हो और बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

वृष लग्न—गौर वर्ण, स्थूल शरीर, काले नेत्र, निष्कपटी, स्थिर व शान्त स्वभाव, गम्भीर, शील प्रकृति, लम्बा, माता का शिर दक्षिण की ओर, मकान नया, ड्योढ़ी का दरवाजा दक्षिण की ओर, माता का वस्त्र सफेद और चांदी के भूषण, पहले शाकादि भोजन किया हो, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

मिथुन लग्न—कृश शरीर, बात-श्लेष्म प्रकृति, भूरे नेत्र, अल्प बाल, लम्बा चेहरा, तीक्ष्ण विचार, शूर, अभिमानी, द्रव्यवान्, रोग-युक्त नेत्र, चंचल स्वभावी, स्त्रियां ३ व ५ पास में हों, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध थोड़ा, पित्त पीड़ा, माता के दाहिने अंग में लसन, पहले नमकीन भोजन लिया हो, वस्त्र पुराना, मकान का दरवाजा पश्चिम की ओर, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो।

कर्क लग्न—स्थूल शरीर, गोल मुख, गौर वर्ण, बहुत बाल, लिखने में प्रवीण, दूरदर्शी, निःस्वार्थी, लेखक, परिश्रमी, लोकनायक व हितवादी, कद लम्बा, कोमल शरीर, बात श्लेष्म प्रकृति, नेत्र चंचल, माता-पिता को कष्ट, माता का मुख उत्तर की ओर, पुराने वस्त्र, पहले कुछ थोड़ा भोजन किया हो, सोने का आभूषण हाथ में, स्त्रियां ३, ५ व ७ हों, बालक ने शब्द देर से किया हो।

सिंह लग्न—रक्त वर्ण, गोल व लाल नेत्र, केश बहुत, चौड़ा चेहरा, अस्थिर, मन कठोर, कद छोटा, माता का मुख दक्षिण की ओर, रक्त वस्त्र, सोने के आभूषण, कसैला खट्टा भोजन किया हो, स्त्रियां ३, ५ व ७, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और दीर्घ शब्द से रोये।

कन्या लग्न—स्थूल व मध्य देह, ऊंचा मस्तक, गौर वर्ण, गोल चेहरा, चंचल वृत्ति, थोड़े बाल, स्वार्थी, पाप बुद्धि, स्त्री प्रिय, कठ और जंघा में चिन्ह हों, माता का मुख उत्तर की ओर, स्त्रियां ४, ५, माता लाल वस्त्र से युक्त हो, पिता घर से बाहर, बालक थोड़े शब्द से रोया हो।

तुला लग्न—साधारण प्रकृति, गौर वर्ण, लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, तीक्ष्ण बुद्धि, रोगी, स्त्री अभिलाषी, व्यापार में निपुण, द्रव्य सम्पन्न, दुबला शरीर, माता कष्ट में, लड़ाई झगड़ा, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्त्रियां ३ व ७, एक क्वारी कन्या भी हो, कषाय भोजन किया हो, पुराना वस्त्र, बालक दीर्घ शब्द से रोये।

वृश्चिक लग्न—ऊंचा कृश शरीर परन्तु मजबूत, भूरे नेत्र, कपटी, स्वार्थ के लिए दूसरे का नुकसान चाहने वाला, व्यवहार कुशल, स्वतन्त्र विचार, कपिल वर्ण, केश लम्बे, माता ने भूषण पहने हों, स्त्रियां ४ व ५, माता का शिर पूर्व को, माता-पिता क्लेश में, पुराना रक्त वस्त्र, घर का दरवाजा उत्तर को, बालक की पीठ पर चिन्ह, कंठ में पीड़ा, बालक देर से शब्द करे।

धनु लग्न—स्थूल शरीर, गोल चेहरा, लम्बा नाक, लाल गौर वर्ण, स्थिर व शांत स्वभाव, द्रव्य अभाव का दुःख, विद्वान्, वेदान्त विषय प्रिय, आलसी, स्थिर बुद्धि, डरपोक, ऊंचा मस्तक, विशाल नेत्र, माता का मुख उत्तर की ओर, रक्त वस्त्र, चांदी के भूषण, स्त्रियां ४ व ५, नया मकान, दरवाजा दक्षिण की ओर, पक्वान्न भोजन किया हो, बालक के हृदय पर चिन्ह और दीर्घ शब्द से रोया हो।

मकर लग्न—कृश शरीर, बहुत केश, मोटा नाक, ऊंचा मस्तक, द्वेषी, आलसी, लोभी, विचार हीन, बात विकार, माता का शिर दक्षिण की ओर, पुराना वस्त्र, कषैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३, ४ व ६, पुराना घर, घर का दरवाजा उत्तर की ओर, बालक ने थोड़ा शब्द किया हो।

कुम्भ लग्न—कृश शरीर, बहुत केश, मोटा नाक, ऊंचा मस्तक, द्वेषी, आलसी, लोभी, विचार हीन, बात विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना वस्त्र, कषैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३, ४ व ६, पुराना भोजन किया हो, पिता घर में न हो और बालक ने थोड़ा रुदन किया हो।

मीन लग्न—स्थूल शरीर, गौर वर्ण, चपटी नाक, ऊंचा मस्तक, कजराले नेत्र, श्लेष्म प्रकृति, परोपकारी व दयालु, धर्म प्रिय, गम्भीर, द्रव्याभिलाषी, कीर्तिमान, माता का मुख उत्तर की ओर, पिता घर में, पहले २ स्त्रियां हों बाद में ३ व ५ स्त्रियां आई हों, पलंग का पाया टूटा हुआ हो, बालक देर में रोये।

पितृ परोक्ष ज्ञान

बालक के जन्म समय यदि लग्न को चन्द्रमा देखता हो और सूर्य जन्म लग्न से अष्टम, नवम, एकादश तथा द्वादश स्थान पर चर राशि का हो कर पड़ा हो और चन्द्रमा लग्न को न देखता हो तो, पिता बालक के जन्म समय दूसरे देश में था। इन्हीं उपरोक्त स्थानों में सूर्य स्थिर राशि का हो तो पिता घर में नहीं था परन्तु देश में ही है। इसी प्रकार सूर्य के द्विस्वभाव में होने पर मार्ग में कहें, परन्तु इन योगों में चन्द्रमा लग्न को न देखता हो।

सुख और दुःख के कारण ग्रह

गुरु-शुक्र से सांपत्तिक स्थिति व द्रव्य लाभ का विचार, शुक्र से पैतृक सुख का, सूर्य चन्द्रमा से शारीरिक या मानसिक सुख का, गुरु से बुद्धि, विद्या व संगीत का, सूर्य, गुरु और शनि से नौकरी, अधिकार, राज सम्मान का विचार, बुध, शुक्र से व्यापार का, लेन-देन के धन्धे का और मंगल से साहस, पराक्रम व यश का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के रोग निदान ज्ञान

जिन ग्रहों से रोग होते हैं, नीचे लिखे अनुसार जानना, गुरु-चन्द्र से कफ रोग, शुक्र, चन्द्रमा से बात कफात्मक, शनि-राहु-केतु से बात रोग, बुध से त्रिदोष, सूर्य-मंगल से पित्त रोग।

अंग पीड़ा ज्ञान

कुण्डली के द्वादश भावों से शरीर के किसी भाग में पीड़ा या रोग होना निश्चित है। प्रथम भाव से मुख, दांत, दाढ़, गला, जीभ, मस्तक में पीड़ा व रोग होता है। द्वितीय भाव से दाहिने नेत्र में, तृतीय भाव से दाहिना कान, गर्दन, हाथ में, चतुर्थ से पेट, गुदा, पंचम से कमर के ऊपर का भाग, षष्ठ से गुप्त स्थान, दाहिना पांव, सप्तम से पेट का मध्य भाग नाभी, अष्टम से गुह्य स्थान, बायां पांव, नवम से कमर के ऊपर का भाग, दशम से पेट, गुदा, एकादश से बांया हाथ, कान, गर्दन व द्वादश भाव से बांई आंख व पैर के तलवे में रोग हो।

जन्म कुण्डली में विचारणीय योग

बालक जन्म के समय मृत्यु योग—लग्न में व सप्तम में पापी ग्रह हों और चन्द्रमा पापी ग्रहों के साथ वहां स्थित हो उस चन्द्रमा को सौम्य ग्रह न देखते हों तो उत्पन्न हुआ बालक शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

चन्द्रमा पापी ग्रह से युक्त हुआ लग्न द्वादश, सप्तम, अष्टम इनमें से किसी स्थान में हो, शुभ ग्रह केन्द्रों में न हों, चन्द्रमा भी शुभ ग्रहों की दृष्टि से वर्जित हो तो जन्मने वाले की मृत्यु को देने वाला होता है। क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो, केन्द्रों में व आठवें घर पापी ग्रह हों तो इस योग में उत्पन्न हुआ बालक मृत्यु को प्राप्त होता है। इसी तरह पापी ग्रहों के मध्य चन्द्रमा शुभ लग्न में हो और सातवें, आठवें पापी ग्रह हों यदि बलवान् शुभ ग्रह से चन्द्रमा दृष्ट न हो तो बालक माता-पिता के साथ मृत्यु को प्राप्त होता है। यदि बलवान् शुभ ग्रह करके चन्द्रमा देखा जाता हो तो माता की मृत्यु नहीं होती। द्वादश स्थान में शनि हो, सूर्य नवम में हो, चन्द्रमा लग्न में मंगल अष्टम स्थान में हो, यह सब ग्रह यदि बलवान् गुरु से दृष्ट न हों तो [illegible] बालक की शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है। यदि बलवान् गुरु किसी [illegible] देखे किसी को न देखे और बलहीन गुरु सब को देखे तो शीघ्र मृत्यु नहीं होती। यदि गुरु सब को देखता हो तो यह फल नहीं होता। पापी ग्रह से युक्त चन्द्रमा पंचम, सप्तम, नवम, द्वादश, लग्न और अष्टम स्थानों में हो, बलवान् बुध, गुरु और शुक्र इनमें से किसी एक से भी युक्त दृष्ट न हो तो यह योग नहीं होता।

चन्द्रमा जन्म लग्न से आठवें स्थान में हो और पापी ग्रहों से दृष्ट हो तो शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है। इस चन्द्रमा को पापी ग्रह न देखते हों, शुभ ग्रह देखते हों तो आठ वर्ष तक जीवित रहता है। पापी ग्रह और शुभ ग्रह तीनों देखते हों तो चार वर्ष जीता है। शुभ या पापी ग्रह कोई नहीं देखता हो तो यह योग नहीं होता। शुभ ग्रह से युक्त और शुभ क्षेत्र में छठे स्थान में चन्द्रमा हो तो मृत्यु को नहीं देता। कृष्ण पक्ष में जिन का जन्म हो, शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तो भी छठे, आठवें स्थान में शुभ व पापी ग्रह से दृष्ट हों तो भी मृत्यु का देने वाला नहीं होता। छठे, आठवें स्थान में शुभ ग्रह व बलवान् पापी ग्रह देखते हों तो बालक महीना भर जीता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माता-पिता का अरिष्ट योग—पिता के लिए सूर्य तथा दशम, माता के लिए चन्द्रमा तथा ४थे स्थान से विचार करना चाहिए। यदि बालक की जन्म-कुण्डली में सूर्य के साथ दशम स्थान में पापी ग्रह बैठे हों या देखते हों या सूर्य पाप ग्रहों के मध्य पड़ा हो तो बालक के जन्म समय पिता को कष्ट जानना चाहिए। यदि सूर्य से ४।६।८ स्थान में पापी ग्रह हो, शुभ न हों, नवांश में स्थित शुभ ग्रह देखे जा सकते हों तो भी पिता को कष्ट जानें। इस प्रकार चन्द्रमा तथा चतुर्थ भाव से माता का विचार करें। चन्द्रमा के साथ २।१२वें तथा ४।६।८ स्थान में पापी ग्रह हों, शुभ न हों तो माता को कष्ट जानें।

अरिष्ट भंग योग—अति बलवान् गुरु लग्न में विराजमान हुआ अनेक प्रकार के अरिष्टों को दूर करता है। लग्नपति अति बलवान् केन्द्र स्थित शुभ ग्रहों करके देखा हुआ दीर्घ आयु देता है। पापी ग्रहों के वर्गों में स्थित हों तो अरिष्टों को दूर करते हैं।

नेत्र विकार योग—तनु १ धन २ व्यय १२ पति युत भृगु आय बसे त्रिक ३।८।१२ धाम। राशीश धन २ रवि युत माहि नेत्र को हान॥ शुक्र सूर्य तनुनाथ युत जाय बसे त्रिक धाम, जन्म अन्ध का योग है भाषत बुध गुण ग्राम॥ मात, तात, भ्रात, पुत्र वानी नारी ग्रह नाथ। सूर्ययुत शुक्र त्रिक धाम बसे तिनके नेत्र नहीं माथ॥ चन्द्र भौम जो द्वादश धाम नेत्र का हान। भौम राहु दाहिनी नयन बुध जन कहत बखान॥

मूक योग—छठे घर का स्वामी बुध के साथ लग्न में बैठा हो तो जबान तोतली या गूंगा होता है। चन्द्रमा लग्न में हो और छठे घर की राशि मिथुन या कन्या हो अथवा दूसरे घर का स्वामी गुरु के साथ ६।८वें या १२वें घर में हो अथवा शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा मंगल के साथ लग्न में हो तो तोतली जबान और गूंगा होता है।

ऋणी मनुष्य का योग—धन स्थान में पापी ग्रह हों, लग्नेश द्वादश स्थान में स्थित हो और नवमेश लाभेश से दृष्ट व युक्त हो तो ऋणी हो। धनेश अस्तगत नीच राशि गत हो, धन व अष्टम भाव पाप युक्त हो तो मनुष्य ऋण से दबा रहे। लाभेश की राशि जिस नवांशक में हो उसका स्वामी दुष्ट भाव में पाप युक्त हो तथा क्रूर षष्ठांश में हो तो मनुष्य ऋण ग्रस्त होता है।

संन्यास योग—लग्नेश पर केवल शनि की दृष्टि हो अन्य की नहीं अथवा शनि को लग्नेश देखे और लग्नेश को शनि देखे, बल रहित हो तो संन्यास योग होता है।

कर्ण दोष—षष्ठेश बुध चौथे हो उसे शनि चतुर्थ दृष्टि (शत्रु दृष्टि से) देखे अथवा छठे भाव में बुध शनि से दृष्ट हो तो बधिर योग होता है कानों से नहीं सुनता। बुध छठे सुक्रूर दशम हो और रात्रि का जन्म हो तो कान से नहीं सुनता।

जिह्वा दोष—बुध ३।८।१२ राशि में किसी में हो, सूर्य चौथे भाव में चन्द्रमा से दृष्ट हो, षष्ठेश पापी ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य गूंगे स्वर वाला होता है। शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा लग्न में मंगल युक्त हो तो जीभ नष्ट हो। बुध १।११ राशि का गुरु से पूर्ण दृष्ट हो तो सत्यवाणी मनुष्य की हो।

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवें और छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिरने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है। पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छटे महीने में गर्भपात हो तो क्रम में ५ व ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे—ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को १ मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन, कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने से जातकर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौचे दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छटे, दसवें दिन दान प्रतिग्रह का दोष नहीं है, केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक, पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाय तो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है, पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए सातवें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को एक दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक, सगाई हो जाने के बाद और बिवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाय व प्रसूता हो तो माता-पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का, चाचा आदिकों को १ दिन का, परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता-पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का पातक होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी के मरने पर १॥ दिन का पातक होता है, यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ-मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाय तो जामात्रि पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने में १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव, पिता की भूआ, मासी व मामी के पुत्रों को पितृबांधव और माता की भूआ, मासी व मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का, इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

अशौच-संपात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के साथ शुद्धि हो जाती है, ५ दिन के बाद ६ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्ध हो जाती है। यदि दसवें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो २ दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृताशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि-महातीर्थस्य गमनमुपवासव्रतानि च अब्द-मध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। 'प्रभोतो पितरीयस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्रद्ध निषेध उक्तः—तीर्थं श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमन्य्च पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहागुरु बिपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्यास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षणः अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्यांगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुर-गुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शुक्रे तथैव चाधिमास के। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाभ्यन्तरे न दोष।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं। एक शुभ, दूसरा अशुभ।

शुभ ग्रह दशा फल—आरोग्य, धन वृद्धि, शत्रु का पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल—लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिये।

१. ग्रह किस भाव या राशि में है, उच्च, नीच, शुभ अथवा अशुभ भाव में है। २. ग्रह शुभ या अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट है अथवा नहीं। ३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं या अशुभ। ४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ।

महादशा और अन्तर्दशा के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है। इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग, व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा- अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना भी सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों तो अशुभ फल अधिक बढ़ेगा। इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुण्डली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११, यह त्रिषडाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं। कई आचार्यों के मत से-४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपर के कहे हैं। दशाफल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिये। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ—सू. मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु-केतु सहचर्य से फलप्रद है। और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है। त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषड़ाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है। इससे सिद्ध होता है कि स्वभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ यदि त्रिकोणपति हो तो अत्यन्त शुभ दायक होता है। इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप फलदायक होता है तथा स्वभाविक पाप ग्रह त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभाव अनुसार पाप फल नहीं देते। अतः केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पाप ग्रह में शुभत्व आ जाता है। इससे यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप शुभ और अशुभ फल नहीं देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेश दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। सिद्ध है कि व्ययेश और धनेश स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते है, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा-दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था वाले ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान् होता है। शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष, बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेश यदि त्रिकोण पति हो तो शुभ फलदायक और त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा। इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक-पापत्व मात्र नष्ट होता है अतः केन्द्र पति होकर यदि त्रिकोण पति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषडायपति हो तो पापकारक हो जाता है। प्रबल होने पर भी राहु-केतु जिस भाव में जिस-२ भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। जैसे कहा है—

यद्यद्भावगतौ वाऽपि यद्यद्भावेश संयुतौ।
तत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शिततामौ ग्रहौ॥

योग—केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो, अन्य भाव के स्वामी से सहवास न हो तो विशेष कर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्च राशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शांत, नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल—दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कीर्तिमान, बुद्धिमान्, तीर्थों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। स्वस्थ अवस्था—विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। हर्षित अवस्था—धर्मात्मा, सदाचारी। शांत अवस्था—तेजस्वी, शांत बांधवयुक्त। दीन अवस्था—बुद्धिहीन, परस्त्री आशक्त। पीड़ित अवस्था—चिन्तायुक्त, मानसिक दुःख रोगी। शक्त अवस्था—निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। लुप्त अवस्था—अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट—जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दुःख मिलता है।

अष्टक वर्ग सिद्ध जन्म पत्रिका

[लेखक—विष्णु दत्त शर्मा]

[सिद्ध ज्योतिष कार्यालय, श्रीहरि भवन, जौहरी नगर, बहादुरगढ़]

श्री शर्मा ने अष्टक वर्ग पर शोध कार्य किया है, सर्वत्र उसकी प्रशंसा हो रही है। हमारे दैवज्ञ अष्टक वर्ग का महत्त्व जानते हुए भी उसे प्रयोग करने में संकोच करते आये हैं कि वर्ग साधन-शोधन कुछ जटिल है और समय अधिक लगता है। परन्तु श्री शर्मा ने ऐसी तालिका का विकास किया है जिससे केवल पांच मिनटों में एक वर्ग का साधन-शोधन, ग्रह चाल, राशि मान, योग पिण्ड तथा वर्ग आयु तैयार हो जाते हैं। ४ दिन का काम ४ घण्टे में सम्भव हो गया।

श्री शर्मा ने एक ऐसी सारणी का विकास किया है जिससे प्रत्येक ग्रह का जन्म-कुण्डली में वास्तविक योगदान स्पष्ट हो जाता है। इस सारणी में अष्टक वर्ग रेखा प्रत्येक ग्रह की अपनी है। आठ वर्गों का साधन किए बिना आपका ग्रह सर्वाष्टक केवल दो मिनटों में तैयार हो जाता है। इससे जीवन का एक विशेष चित्र उभर कर सामने आ जाता है। श्री शर्मा ने नक्षत्र विज्ञान को जिस कुशलता से प्रयोग किया है कि आप ग्रह के स्पष्ट अंशों से उसका नक्षत्र व स्पष्ट अंश कम्प्यूटर के समान सामने आ जाता है। कृष्णा मूर्ति पद्धति का ऐसा सरल प्रयोग किया है जिससे हर विद्वान् लाभ उठा सकता है। ज्योतिष का सामान्य ज्ञान रखने वाला पाठक ५००) रु० की जन्म पत्रिका स्वयं तैयार कर सकता है, अपने भाग्य का स्वयं निर्णय कर सकता है।

इतनी बड़ी जन्म पत्रिका आज तक नहीं बनी है। यह पहला अवसर है कि हम जन्म पत्रिका के साथ सिद्धान्त खण्ड भी छाप रहे हैं। इन सारणियों से लगभग ५० पृष्ठ की जन्म पत्रिका सरलता से तैयार हो जाती है। विशेष जन्म पत्रिकाओं में इसे प्रयोग करके धन और यश दोनों ही अर्जित कर सकते हैं। जन्म पत्रिका साधन में हम नये युग का शुभारम्भ कर रहे हैं, अपनी प्रतियां पहले से सुरक्षित कर लें। पत्रिका शीघ्र छप रही है।

मंगाने का पता—

धर्मसन प्रकाशन

२५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंक-विद्या [Numerology] और आपका भाग्य

आजकल पाश्चात्य में तथा भारत में भी अंक विद्या की लोक-प्रियता बहुत बढ़ रही है। यद्यपि भारत मे इस का प्रचलन अति प्राचीन काल से रहा है किन्तु भारतीय पद्धति वर्णमाला पर आधारित होनेके कारण शीघ्र-बोधगम्य नहीं। अंकों के आधार पर हम मनुष्य-स्वभाव की चारित्रिक विशेषताओं का आश्चर्य जनक रूप से विवेचन कर सकते हैं। हमारे मतानुसार भविष्यवाणी करना कठिन है। यहाँ पर पाश्चात्य मतानुसार अंग्रेजी मास की जन्म तारीख को आधार मान कर ९ तक की तारीख मे मूल अंकों की कल्पना की गई है तथा सूर्यादि नव ग्रहों को इन मूल अंकों का प्रतिनिधि माना गया है। ९ के बाद की तारीखों को मूल अंक बनाने की विधि इस प्रकार है—

१०=१+०=१	॥	१३=१+३=४
११=१+१=२	॥	१४=१+४=५
१२=१+२=३	॥	१५=१+५=६

क्रमश: इसी प्रकार तारीख के दोनों अंकों की इकाइयों को जोड़ कर मूल अंक बनाएं अथवा किसी भी अभीष्ट संख्या को ९ से भाग देकर जो शेष बचे, वही मूल अंक होगा।

मूल अंक १ वाले व्यक्ति—ऐसे व्यक्ति स्थिर प्रकृति वाले क्रियात्मक स्वतन्त्र विचार धारा वाले तथा स्वाभिमानी होते है। अधिकार प्रदर्शन की भावना भी रहती है। किसी अन्य व्यक्ति का प्रभाव व अनुशासन सहन नहीं करते। अंक १ वालों को रविवार तथा सोमवार शुभ होते हैं। पीला व सुनहरी रंग विशेष अनुकूल होता है। जीवन के १३, १९, २२, २८, ३९, ४९, ५८, वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण होते हैं। इस अंक का प्रतीक सूर्यग्रह है। ऐसे व्यक्तियों को नेत्र, कण्ठ, रक्त, पित्त विकारादि का भय रहता है। माणिक्य धारण करना शुभ है।

मूल अंक २ वाले व्यक्ति—इस अंक का प्रतीक चन्द्रग्रह है। ये १ अंक वाले व्यक्तियों की अपेक्षा शान्त स्वभाव के होते हैं। कल्पना, साहित्य प्रेमी, चंचल प्रवृत्ति, कला व सौंदर्य प्रेमी, लेखन कार्य करने में रुचि इनके स्वाभाविक गुणहै। सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार शुभ है। ये निश्चयी कम होते है। जीवन के १५, ३१, ३४, ३७, ४३ वें वर्ष विशेष-महत्त्वपूर्ण। श्वेत रंग अनुकूल हैं।

अंक ३ वाले व्यक्ति – अनुशासन प्रिय, महत्त्वाकांक्षी, विद्या-अध्ययनी तथा परिश्रमी होते हैं। नेतृत्व करन में कुशल हैं। बृहस्पति प्रतिनिधि ग्रह हैं। इनके लिए मंगलवार, शुक्रवार तथा बीरवार और पीला रंग शुभ है। जीवनके ९ १२, ३०, ३८, ३५, वर्ष भाग्योन्नति कारक होते है। त्वचा रोगों से बचना चाहिए।

अंक ४ वाले व्यक्ति प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। ये व्यक्ति नवीन खोज करने में दक्ष, प्रगतिशील कठिन परिश्रमी, उग्रस्वभाव वाले तथा संघर्षप्रिय होते हैं तीव्र-स्वभाव वाले तथा गम्भीर होते हैं। धन-संग्रह अधिक नहीं कर पाते। ४ १३, २२, ४०, ५९, ५८ वां वर्ष भाग्योन्नोति कारक रहेगा। शनिवार, रविवार तथा सोमवार शुभ दिन तथा नीलमणि विशेष अनुकूल है। मूंगा धारण करना शुभ।

अंक ५ वाले व्यक्ति—का अधिष्ठाता बुध ग्रह है। ये फुर्ती से काम करने वाले, जल्दबाज शीघ्र निर्णय लेने वाले व्यापारादि व्यवसाय में उन्नति करने तथा चंचल वृत्ति. के होते हैं। प्रत्येक प्रकार की स्थिति में ढल जाते हैं। महत्त्वपूर्ण वर्ष १५, २५, ३२, ४१, ५१, ५७वां वर्ष होते हैं। बुधवार, शुक्रवार तथा श्वेत व हरित रंग विशेष शुभ है। पन्ना धारण करना शुभ है।

मूल अंक ६ वाले व्यक्ति—संगीत फ़ोटोग्राफी, चित्रकला व सौंदर्य प्रेमी आदर्शवादी तथा कल्पनाशील होते हैं। किसी अन्य की अधीनता इन्हें कभी स्वीकार नहीं होती। मंगल, बीर और शुक्रवार दिन तथा नीला व गुलाबी रंग शुभ हैं। अपनी योग्यता से धनोपार्जन करना पसन्द करते हैं। जीवन के १५, २४, ३३, ४२, ५१वें वर्ष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मूल अंक ७ वाले व्यक्ति के प्रतिनिधि—ग्रह चन्द्रमा तथा नैपचून हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक, परिवर्तनशील तथा नए-नए स्थानों पर भ्रमण करने में रुचि रखते हैं। तन्त्र विद्या, स्वतन्त्र विचार, स्वाभिमानी व सौंदर्य प्रिय होते हैं। प्राय: आर्थिक संकट बना रहता है। सोमवार, रविवार तथा हरा रंग शुभ है। १६ २६, ५४, ५२, ५१, ६१वें वर्ष भाग्योन्नति कारक है। श्वेत गोमेध धारण करें।

मूल अंक ८ वाले व्यक्ति—का प्रतिनिधि ग्रह शनि है। ऐसे व्यक्ति अन्तर्मुखी, कठिन परिश्रमी तथा दृढ़ निश्चयी होते है। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक सम्भव साधन (उचित व अनुचित का ध्यान किए बिना अपनाते)है। संघर्षमय दूरदर्शी तथा गूढ़ विद्याओं में रुचि रखने वाले होते हैं। वायु रोग से पीडित रहते हैं। चन्द्रवार शनिवार रविवार तथा गहरा नीला व स्लेटी रंग विशेष अनुकूल होता है। जीवन के २६, ३३, ३५, ४४, ५३ वर्ष भाग्योन्नति कारक होते है। नीलम धारण करना शुभ रहेगा।

मूल अंक ९ वाले व्यक्ति—का प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। ये लोग स्पष्टवादी स्वाभिमानी, कठिन परिश्रमी उग्र प्रकृति किन्तु दयालु स्वभाव के होते हैं। समस्त जीवन संघर्षों में व्यतीत होता हैं। रक्त विकार का भय रहता है। शुक्रवार मंगलवार व बीरवार तथा लाल एवं गुलाबी रंग विशेष अनुकूल तांत्रिक विद्या मे भी रुचि रखते हैं। जीवन के १८, २७, ३१ ३६, ४५; ५४, ३३ वें वर्ष विशेष महत्वपर्ण होते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

एषां परिहारवाक्यानि

न वर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशके नैव षडाष्टके वा ।
तारा विरुद्धे नवपंचमे वा राशीश मैत्री शुभदा विवाहे ॥

नाडीदोषस्च विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम् ।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषश्च पादजाम् ॥

एकनक्षत्र जातानां नाडी दोषो न विद्यते ।
अन्यर्क्षपर्तिवर्षेषु विवाहो वर्जितः सदा ॥

रोहिण्याद्री मृगेन्द्राग्नि पुष्य श्रवण पौष्णभम् ।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते ॥

धर्मे-पितृ भ्रातृश्च संग्राह्यो नैव पंचमे ।
अग्रजं पश्चकं कन्या कन्याया नवमो वरः ।

वर और कन्या की राशियों के स्वामी एक ही व दोनों के स्वामियों की परस्पर मित्रता हो तो वर्णादि ७ कूटों का दोष नहीं रहता। इसी तरह नाड़ी दोष में यदि वर और कन्या का नक्षत्र भिन्न-२ हो किन्तु राशि एक हो अथवा दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि भिन्न-२ हो तो नाडी दोष नहीं होता। यदि दोनों की एक राशि और एक ही नक्षत्र हो तो विवाह शुभ नहीं होता, किन्तु एक नक्षत्र मे भिन्न-२ चरण होने से अत्यावश्यक में शुभ हो जाता है।

ग्रह मेलापक विचार

वर और कन्या की कुण्डली में मिलान उत्तम होना आवश्यक है, क्योंकि उत्तम मिलान से द्रव्य, पुत्र, पति, पत्नी का सुख प्राप्त होगा। वर की कुण्डली में जन्म लग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक होता है। यदि कन्या के जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर नाशक है। जैसे—लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। वरः पत्नी विनाशाय कन्या पति विनाशिनी ॥

परिहार—यदि वर की कुण्डली में पूर्वोक्त स्थानों पर मंगल हो और कन्या की जन्म कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। इसी प्रकार एक की कुण्डली में मंगल हो और दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ा हो तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है।

अतः फिर भी वर-कन्या के लग्न, लग्नेश, सप्तम, सप्तमेश, अष्टम, अष्टमेश, पंचम भाव तथा स्त्री कारक शुक्र इनके योगों को देखकर सूक्ष्म रीति से परिहार दोनों का विचार कर ज्योतिषी-कुण्डली का मिलान करें।

वर वरण में मुहूर्त्त विचार

(चंडेश्वर) कृ. पूर्वा ३. और विवाह नक्षत्र, शुभ तिथि, शुभ वार भद्रादि दोष रहित शुभ समय में वर का वरण कन्या के भ्राता से अथवा ब्राह्मण द्वारा करना चाहिए।

कन्या वरण में मुहूर्त्त विचार

(चिंतामणी) कन्या का वरण अश्वि., कृत्ति., पूर्वा ३ अनु., उषा., श्रवण, धनि. और विवाह के नक्षत्रों में तथा शुभ तिथि, शुभ वार और शुभ समय में वस्त्र, आभूषण, फल और मिष्ठान्नादि से कन्या का वरण करना शुभ होता है।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाह संस्कार में पूर्वाचार्यों ने यद्यपि वैशा., ज्ये., आषा., मार्ग., माघ, फाल्गुन के महीनों को ग्रहण किया है, किन्तु कई एक आचार्यों ने चैत्र और पौष इन दोनों महीनों को त्याग कर शेष १० महीनों को ग्रहण किया है। इसलिए (मद्रदेश) पंजाब में अति प्राचीन काल से श्रावण, भाद्र, आश्विन महीनों में विवाह करने की प्रथा चली आई है। पर्वतीय प्रदेशों में कार्तिक महीने में भी विवाह होते हैं। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तक की तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में सूर्य, चं., बु., गु., शु. वारों में म., शनिवार मध्यम कहे हैं। रो., मृ., मघा, उत्तरा ३, हस्त, स्वा., अनु., मूल, रेव. इन नक्षत्रों में वर को सूर्य और चन्द्रमा का बल देखकर विषम वर्षों में और कन्या को गुरु और चन्द्रमा का बल देखकर सम वर्षों में विवाह संस्कार करना शुभ कहा है। कन्या की अवस्था यदि १० वर्ष से अधिक हो तो गुरु का बल देखना जरूरी नहीं। (वशिष्ठ)

पहले गर्भ के लिए जन्म मासादिकों का निषेध

(नारदः) न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा आद्यगर्भे सुतस्यार्थं दुहितुर्वा करग्रहः। जन्मदिन से लेकर ३० दिन तक जन्म-मास कहलाता है। जन्ममास, तिथि और जन्म नक्षत्र में पहले गर्भ के पुत्र वा कन्या का विवाह न करें। अत्यावश्यक में विवाह करना हो तो वशिष्ठ जी के मत से जन्म दिन छोड़ दें, अत्रि जी के मत से जन्म दिन से ३ दिन छोड़कर जन्ममास में विवाह कर लेवें। गर्ग जी के मत से ५ दिन छोड़ें और भागुरि जी के मत से जन्म मास में पक्ष भर छोड़कर विवाह कर लेवें।

ज्येष्ठ महीने में विवाह का विचार

जहां पर लड़का जेठा हो, कन्या जेठी हो और ज्येष्ठ का महीना हो, इसको तीन जेठ कहते हैं। यह तीन जेठ विवाह में सर्वथा वर्जित कहे हैं और जहां पर जेठा लड़का और ज्येष्ठ का महीना अथवा जेठी लड़की और ज्येष्ठ का महीना हो, इसको दो ज्येष्ठ कहते हैं, यह दो ज्येष्ठ विवाह में मध्यम कहे हैं, जहां लड़का और लड़की जेठे न हों केवल जेठ का महीना हो तो यह एक विवाह जेठ में उत्तम कहा है। इसी तरह लड़का और लड़की जेठे हों और ज्येष्ठ का महीना हो तो दोनों का विवाह न करें। (वराह) द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तावेको ज्येष्ठ शुभावहः। ज्येष्ठत्रय न कुर्वीत विवाहे सर्वसम्मतम्।

(गर्गः) ज्येष्ठायाः कन्यकायाश्च ज्येष्ठ पुत्रस्य वै मिथः विवाहो नैवकर्त्तव्यो यदि स्यान्तिधनं तयोः। जब तक कृतिका नक्षत्र में सूर्य है, तब तक ज्येष्ठ महीने का निषेध होता है। ज्येष्ठ के महीने की तरह मार्गशीर्ष महीने में भी आद्य गर्भ का विवाह न करें। (भारद्वाजः)

विवाह में विशेष विषयों पर विचार

पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या या अपने त्रिपुरुष कुल की कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें अर्थात् लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। इसी तरह विवाह के पीछे मुण्डन या यज्ञोपवीत ६ महीने तक न करें। (नारदः) दो सगे भाइयों का विवाह दो सगी बहिनों से न करें तथा एक वर के साथ दो सगी बहिनों का विवाह न करें (वशिष्ठ)। पुत्रिका द्वयमेकस्मै न दद्यात् कदाचन। जिस वर को अपनी कन्या देवें, उनको बहिन के साथ अपने लड़के का विवाह न करें (नारदः)। उद्वाहोनैव कार्यो नैकस्मै दुहितृद्वयम्। दो सगे भाइयों का विवाह ६ महीने के भीतर न करें (वशिष्ठ)। विवाहस्त्वेकजन्यानां षण्मासाभ्यन्तरे यदि। असंशयं त्रिभिर्वर्षैस्तत्रैका विधवा भवेत् ॥ दो सगे भाइयों का और दो सगी बहिनों का एक संस्कार ६ महीने में न करें, (वृद्धमनुः)। भिन्न माता के उदर से उत्पन्न हुए दो अथवा यमल भाई या बहिनों का एक कर्म द्वारभेद और मंडपभेद आचार्यभेद से हो सकता है। इसी तरह भेद के हो जाने से ६ महीने के भीतर हो सकता है। मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृ कर्म न करें, अथवा वर्ष जैसे माघ, फाल्गुन में विवाह किया हो तो वैशाख में मुण्डन व यज्ञोपवीत करने से दोष नहीं होता, बड़े मंगल कर्म के उपरान्त लघु मंगल कर्म न करें। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी के पुरुषों के लिए ही कहा है, चौथी पीढ़ी के पुरुषों को दोष नहीं होता।

विवाह में त्रिविक्रममल् से लग्न का विचार

(त्रिविक्रमसंहितायां) त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदःषष्टे शुक्रेन्दु-लग्नपाः। रन्ध्रे चंद्रोदयः पंच सर्वेऽस्तेऽब्जगुरु समौ ॥ विवाह लग्न का निश्चय करना हो तो लग्न में श., सू., मं., चं. न हो तथा लग्न से छठे स्थान में शु., चं. और लग्न का स्वामी न हो, लग्न से आठवें च., मं., बु., गु., शु. नहीं होने चाहिए और लग्न से सातवें स्थान में कोई ग्रह न हो तो विवाह लग्न शुद्ध होता है. किन्तु चन्द्र और गुरु सातवें होने से समान फल करते हैं।

छठे शुक्र तथा अष्टम मंगल का विचार

विवाह लग्न से छठे स्थान में शुक्र तथा आठवें स्थान में मंगल यदि शत्रु राशिगत या नीच राशिगत हो तथा मंगल अस्तंगत हो तो

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भौम दोष नहीं होता। (कश्यपः) नीचराशिगते शुक्रं शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा भृगुषट् कोस्थितो दोषो नास्त्यत्र न संशयः ॥ अस्तगे नीचगेभौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा। कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते ॥ इसी तरह ६, ८ और १२वें स्थानगत चन्द्रमा का नीच और नीचांशक में होने से दोष नहीं होता।

नीचानीचांशगश्चन्द्रोनाशुभोष्टारि रिष्फगः ॥

लग्न में कर्तरी दोष का विचार

लग्न से १२वें स्थान में मार्गी क्रूर ग्रह हो और लग्न से दूसरे स्थान में वक्री ग्रह हो तो कर्तरी दोष होता है। कर्तरी दोष युक्त लग्न को सर्वथा त्याग देवें, किन्तु कर्तरी ग्रह यदि शत्रु राशि या नीच राशि गत तथा अस्तंगत हो तो कर्तरी दोष नहीं होता, (उक्तंच) ऽपयोः कर्तरीकर्त्रोः शत्रु नीचगृहस्थयोः यदा चास्तंगयोर्वापि कर्तरी नैव दोषद ॥ क्रूरः कर्तरी संयुक्त लग्न चन्द्र च न त्यजेत् केन्द्र त्रिकोण सस्येषु गुरु भार्यवनचिन्तयेत् ॥ शुभैः धनस्थैरथवांत्यगे गुरौ न कर्तरी स्यादिति भार्गवो विदुः।

गोधूलि लग्न में ग्रहों का विचार

जिस दिन गोधूलि लग्न का विचार करना हो उस दिन गोधूलि लग्न से २, ३ और ११वें स्थान में चन्द्रमा होना चाहिए तथा गोधूलि लग्न से आठवें स्थान में श., बु., गु. और शु. नहीं होने चाहिए, इसी तरह छठे स्थान में चन्द्रमा भी न हो गोधूलि लग्न शुद्ध होता है।

गोधूलि लग्न विचार

मार्ग., पौष, माघ और फाल्गुन महीनों में संध्या के समय सूर्य गोलक के समान दृष्टिगोचर होने पर जो लग्न होता है वह गोधूलि लग्न होता है। इसी प्रकार चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ महीनों में सूर्य आधा अस्त हो जाने पर जो लग्न हो उसको गोधूलि लग्न कहते हैं। वैसे ही श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक महीनों में सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाने पर जो लग्न होगा वह गोधूलि लग्न कहलाता है।

कुल देवता स्थापन मुहूर्त—अश्वि., रो., पुष्य, उफा., ह., चि., स्वा., अनु., उषा., उभा., रे. इन नक्षत्रों में च., बु., गु., शुक्र वारों में और शुभ तिथियों में और स्थिर लग्न में भद्रादि दोष रहित समय में शुभ होता है।

विवाह तैल संख्या चक्रम्

वर और कन्या की राशि द्वारा नीचे लिखे चक्र से तैल संख्या जानें।

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल संख्या	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

वधु प्रवेश मुहूर्त्त विचार

विवाह दिन से २।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१४।१६ इन दिनों में और स्थिर लग्न में वधु प्रवेश शुभ होता है। उपरोक्त दिनों में तिथि और नक्षत्रादियों का नियम नहीं होता, यदि ऊपर कहे हुए दिनों में वधु प्रवेश न कर सके तो विषम दिनों में, विषम महीनों में, विषम वर्ष में, अश्वि., रो., मृ., पुष्य, ह., चि., स्वा., अनु., मू., उत्तरा ३, श्र., ध., रे. इन नक्षत्रों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में, २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, ५।८।११ लग्नों में लग्न से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर भद्रा, व्यतिपातादि दोष रहित समय में और रात्रि के समय वधु प्रवेश शुभ कहा है।

द्विरागमनम्

विवाह से विषम महीनों-वर्षों में, वै., मार्ग., फा. महीनों में, अश्वि., रो., मृ., पुन., पुष्य, ह., चि., स्वा., उत्तरा ३, अनु., मू., श्र., ध., श. रे. नक्षत्रों में, चं., गु., शु. वारों में शुभ होता है, बु. श. मध्यम हैं, रिक्ता रहित तिथियों में और २।३।५।११ लग्नों में भद्रादि दोष रहित समय में शुभ कहा है, सन्मुख और दाहिने शुक्र का इसमें दोष होता है, रेवती नक्षत्र से मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा रहने से सन्मुख और दाहिने शुक्र का दोष नहीं होता, विवाहादि उत्सव में, तीर्थ यात्रा में अथवा दुर्भिक्षादि उपद्रव में प्रति शुक्र का दोष नहीं होता।

शुक्रास्ते वर्ज्यं कर्माणि

बावली, बगाचा, तालाब, कूप, मकान इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा व्रतारम्भ, व्रतोद्यापन, महादान सोमयोग, अष्टकाश्राद्ध, गोदान, नवौन्मैष्टि, प्याऊ, प्रथम श्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग जात-कर्म, नामकर्म, मुण्डन संस्कार, देवता स्थापन, दीक्षा-यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्व देवदर्शन, सन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्यप्रयोग, कर्णवेध, विद्यारंभ, नृपदर्शन, इन कर्मों को शुक्र के अस्त में, गुरु के अस्त में और मलमास में नहीं करना चाहिए।

नगर निवासे शुभ विचार

७ नक्षत्र मस्तक पर, ७ नक्षत्र पृष्ठ पर, फिर ७ नक्षत्र हृदय पर और ७ नक्षत्र पादों पर धरें। यदि अपना नक्षत्र मस्तक पर पड़े तो धनी मानो, पीठ पर पड़ने से हीनता और धन हानि, हृदय पर सुख-सम्पत्ति तथा पादों पर पड़े तो भ्रमणशील रहता है।

भूमे शुभाशुभ विचार—नींव खोदते समय यदि काली ईंट देखने में आवे तो शुभ जानें, हड्डी अथवा केशादि तथा कोयलादि देखने में आवे तो शुभ नहीं होता है।

॥ काल गणना ॥

भारतीय काल गणना-पद्धति बहुत प्राचीन है। भारतीय शास्त्रों में काल ज्ञान का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन है। किसी भी धार्मिक कार्य करने के पूर्व संकल्प करने का विधान है। संकल्प में कल्प, मन्वन्तर, युगादि से लेकर संवत्, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, ग्रह और नक्षत्रादि सबका उच्चारण आवश्यक माना गया है। यथा-प्रथा सूचित करती है कि अनादि काल से भारत वर्ष में समय का सूक्ष्म ज्ञान था। भारतीय काल एवं ग्रह और नक्षत्रादि की गति से पूर्ण परिचित रहते थे। अहोरात्र को चौबीस भागों में विभाजित करने पर प्रत्येक भाग को होरा (घण्टा) कहते हैं।

मुहूर्त—मुहूर्त्त तीन प्रकार के होते हैं। (१) पौराणिक, (२) वैदिक, (३) नक्षत्र दो घटी (४८ मिनट) के समय का एक मुहूर्त्त के १।१५ भाग या ८ पल का एक सूक्ष्म मुहूर्त्त होता है। मुहूर्त्त का आरम्भ प्रातः वार प्रवृत्ति के समय में और रात्रि के मुहूर्त्त का आरम्भ सायंकाल से होता है।

अहोरात्र या दिन

अहोरात्र सूर्य और चन्द्रमा की गति के अनुसार चार प्रकार का होता है—(१, मध्यम सावन दिन=२४ होरा ३ विहोरा ५७ प्रति विहोरा का। (२) नक्षत्र दिन=२३ होरा ५६ विहोरा ४ प्रति विहोरा का। (३) चन्द्र दिन जिसको तिथि कहते हैं, यह २३ होरा १२ विहोरा का होता है।

मास गणना—मास गणना के भी चार भेद हैं। (१) सौर, (२) चान्द्र, (३) नक्षत्र, (४) सावन। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भिन्न-२ प्रकार के मासों का व्यवहार होता है। सौर मास कम से कम २९ दिन का तथा अधिक से अधिक ३२ दिन का होता है। चान्द्र मास २९ दिन ३१ घड़ी ५० पल ७ विपल १० प्रति विपल। सावन मास ३० दिन का और नाक्षत्र मास २७ दिन १९ घड़ी १७ पल ५८ विपल ४५ प्रति विपल का होता है।

सौर मास का सम्बन्ध खगोल तथा भूगोल दोनों से है। चान्द्र मास सूर्य और चन्द्रमा का अन्तर चान्द्रमास है। नक्षत्र मास चन्द्रमा द्वारा २७ नक्षत्रों को पार करने के काल को नक्षत्र मास कहते हैं। नक्षत्र मास से चन्द्र मास २ दिन १३ घटी से कुछ अधिक बड़ा है। परन्तु चान्द्र मास १२ मासों में १२ और नक्षत्र मास १२ मासों में १३ चक्कर करके फिर एक स्थान में हो जाते हैं।

ऋतु—भारतीय काल गणना में ऋतुकाल भी बहुत प्राचीन है, वेदों में एक संवत्सर में पहले पांच ही ऋतुएं मानी जाती थीं अर्थात् वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद ये चार और हेमन्त तथा शिशिर इन दोनों को एक ही मानकर कुल पांच ही ऋतु मानी जाती थीं। तत्पश्चात् छः ऋतु सौर (सावन) मासों के द्वारा इस प्रकार मानी गई है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मन्त्रों-यन्त्रों द्वारा इष्ट-सिद्धि

प्राचीन काल में जो कार्य भौतिक साधनों द्वारा न सम्पन्न होता था उसको हमारे ऋषि-मुनि मन्त्रों द्वारा सिद्ध कर लिया करते थे। स्वयं में निहित शक्ति-युक्त वर्णों के समूह का नाम मन्त्र है। व्यष्टि और समष्टि मन की विराट एवं अव्यक्त शक्तियों को क्रियात्मक रूप प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य आर्ष-प्रदत्त मन्त्र करते हैं। मन्त्रज्ञों एवं विद्वानों ने मन्त्रों के अनुष्ठान तथा उनकी सिद्धि के लिए विभिन्न प्रकार के नियमों का पालन करने का निर्देश दिया, जिनमें मुख्य ये हैं—(१) मन्त्रों की सिद्धि के लिए शुभ संकल्प, दृढ़ निश्चय, अटूट श्रद्धा एवं अगाध विश्वास की परमावश्यकता है। (२) दूसरे साफ, पवित्र तथा एकान्त स्थान होना चाहिए। (३) मन्त्र किसी प्रकार भी हो उसे गुप्त रखना चाहिए। (४) एकाग्रचित्तता नितान्त आवश्यक है। सिवाय अपने उद्देश्य के अन्य कोई भी विचार मन में न लाने चाहिए। (५) अनुष्ठान के दिनों सात्विक भोजन करें, आलस्य प्रमाद, भोग, मैथुनादि को त्याग कर ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करना चाहिए। (६) मन में किसी प्रकार का संशय न लायें और संभव हो तो किसी योग्य तांत्रिक अथवा विद्वान से अवश्य परामर्श कर लेवें।

अधिक जानकारी के लिए हमारी पुस्तक मन्त्र शक्ति रहस्य मंगवाकर पढ़ें, मूल्य ५) रु० पेशगी भेजें।

भागे हुए व्यक्ति को वापस बुलाना :—

एक कोरा घड़ा और कसोरा ले आयें। उस पर कोई चिन्ह न हो। घड़े के बाहर और कसोरे के बीच में नीचे लिखा मन्त्र लिखें। एक कागज पर लिखकर उसे घड़े के भीतर डाल दें और साथ में पूरे चार तांबे के पैसे भी डाल दें। घड़े को कसोरे से ढककर बांई ओर घड़े को सात बार घुमाते हुए ये मन्त्र पढ़ें—'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे—

ॐ

ऐं	ह्रीं	क्लीं
चा	मुं	ड
यै	वि	च्चे
यहां भागे हुए का नाम लिखें		

ऐसा पृथक-२ स्थानों पर सात दिन पर्यन्त करने से भागा हुआ व्यक्ति (चाहे स्त्री हो या पुरुष) अपने स्थान से अवश्य चल पड़ेगा या अपना पता भेज देगा।

गर्भ रक्षा मन्त्र

रविवार और मंगलवार की संध्या को गाय के गोबर की कण्डी जलाकर माँ कामाक्षी के सम्मुख धूप जलावें और उस जली हुई कण्डी से भस्म झारकर उसे तीन बार नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर अभिमंत्रित करें, तत्पश्चात् उस भस्म को गर्भवती के शरीर पर छिड़क दें तो गर्भ स्थिर रहेगा।

ॐ प्रकृति रूपिणी शक्ति स्वरूपिणी।
माँ कामक्षा देव्यै नमः। ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा॥

मन्त्र धारण करने की विधि :—

रविवार को प्रातः उषाकालीन बासी मुख चिरचिरि की जड़ उखाड़ लावें और उसे "ओं नमः कामाक्षाय गर्भस्य सन्तान रक्षा कुरू कुरू फट् स्वाहा"—इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करें। इसके पश्चात् तांबे के जन्त्र में उसको डालकर रेशम की काली डोरी में पिरोकर गर्भवती स्त्री के गले में धारण करवा दें। जब तक सन्तान प्राप्ति न हो तब तक धारण किए रहें। ईश्वर की अनुकम्पा से अवश्य इष्ट सिद्धि होगी।

सब तरह के भय से मुक्ति के लिए—'ओं ह्रिं पवननन्दनाय स्वाहा।' यह महावीर जी का मूल मन्त्र है। इसको सिद्ध करने की विधि यह है कि सूर्योदय से पूर्व उठकर नदी पर जाकर स्नान करके खड़े होकर इस मन्त्र का आह्वान करें, फिर आठ बार मूल मन्त्र का जप कर बारह बार जल से शिर पर मार्जन करें, फिर दूसरे कपड़े पहनकर गंगा या नदी के किनारे बैठकर अगन्यास करें, इसका छः हजार जप दैनिक करें, सातवें दिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक जप करें, रात्रि को महावीर जी का रुद्र रूप प्रत्यक्ष होकर निर्भयवर प्रदान करेगा।

व्यापार एवं कारोबार में लाभ के लिए—ओं नमः भायाय, ओं नमः कामाक्षाय, ओं अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं ३ श्री फट् स्वाहा।

दीपावली की रात को एकान्त कमरे में आसन लगाकर सामने दीपमालिका सजाकर उपर्युक्त मन्त्र का १०८ बार जाप करें, तो मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। व्यापार या कारोबार शुरू करने से पूर्व सात बार इस मन्त्र का जप कर लें, व्यापार में सदा वृद्धि होगी।

१. भूत-प्रेत से ग्रस्त रोगी के लिए मन्त्र-तन्त्र—ओं पवन-पुत्राय नमः, ओं नमः कामाक्षाय ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं श्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को सरसों लेकर हाथ उलटा करके पढ़ें और भूत-प्रेत ग्रस्त रोगी (स्त्री अथवा पुरुष) के शरीर पर सरसों फेंकें। तीन बार मन्त्र पढ़कर सरसों फेंकें तो भूतादि का साया तुरन्त भाग जाएगा।

२. भूत-प्रेत भगाने का एक तन्त्र—यदि किसी स्त्री को भूत सताता हो तो पूरी सतर्कता से उसके पास जाकर उससे कुछ हटकर आसन लगावें। इसके पश्चात् गुग्गल, घोड़े का नख और सूखी लाल मिरचें जलती हुई आग में डालकर भूत खेलने वाली स्त्री की नाक के सामने रख दें। यदि फिर भी भूत न जाए तो बेंत की पतली छड़ी को "ओं नमः रुद्राय हुं हुं फट्" मन्त्र से तीन बार आमन्त्रित करके भूत-ग्रस्त स्त्री की पीठ पर तीन बेंत मारें, भूत अवश्य भाग जाएगा।

नौकरी प्राप्ति के लिये मन्त्र—"ओं नमः भगवती पद्मावती ऋद्धि-सिद्धि दायिनी दुःख दरिद्रय हारिणी श्रीं श्रीं ओं नमः कामाक्षाय ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।"

शनिवार को शनिदेव की विधिवत् पूजा करें, इसके उपरान्त उपर्युक्त मन्त्र का एक हजार जप पूरा करें, तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। रोजी ढूंढने के लिए जाने से पहले सात बार इस मन्त्र का जाप करें और चलते समय कपिला गाय को आटा और गुड़ चटाकर आगे जायें तो निश्चय ही रोजी प्राप्त होगी।

३. नौकरी प्राप्ति के लिए एक तन्त्र—कुत्ते का नख तांबे के यन्त्र में रखकर रेशमी लाल धागे से पुरुष दाईं भुजा तथा युवती बाईं भुजा में बांधकर जहां नौकरी के लिए खाली जगह हो, वहां पहुंचकर अधिकारी अथवा मालिक के पास जाएं तो तुरन्त काम बने।

धन प्राप्ति के लिए मन्त्र—"ओं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ओं महालक्ष्म्यै नमः।"

इस मन्त्र को वैशाख मास में स्वाती नक्षत्र कालीन आरम्भ करके एक लाख बीस हजार की संख्या में जप करें तो मन्त्र सिद्धि अवश्य होगी तथा धन का अभाव जाता रहेगा।

सन्तान प्राप्ति के लिए मन्त्र—"देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणंगता।" इस मन्त्र का एक लाख जाप करें, फिर तिल, शहद आदि से हवन करें। कम से कम एक माला प्रतिदिन अवश्य करनी चाहिए। पति-पत्नी दोनों ब्रह्मचर्यादि व्रत का पालन करें। सात्विक भोजन करें, झूठ, निन्दा, चुगली आदि से बचें। पृथ्वी पर सोयें, पुरुष अपने केश (बाल) न कटवाएं। एक लाख संख्या का मन्त्र जप हो जाने के उपरान्त दसवां भाग जप का हवन करें तथा चार ब्राह्मणों को मिष्ठान्नादि से युक्त भोजन करवा दें, मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी।

आयु विचार

१. जन्म-कुण्डली में लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम भाव के अंकों में प्रत्येक को ३ से गुणा करके जोड़िये, उसमें से (यदि उक्त स्थानों में राहु और भौम पड़ें हों) राहु और भौम की राशि-संख्या को निकाल देना चाहिए। जो शेष बचे उतने वर्ष आयु समझिये।

२. लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम की राशि संख्या एकत्र करना यदि इन स्थानों में राहु, केतु, मंगल और शनि हों तो उक्त संख्याओं को जोड़कर पूर्वोक्त संख्या में घटाकर, शेष को तिगुना करना; वही आयु की वर्ष संख्या होगी।

३. अष्टमेश (१) यदि बलहीन होकर लग्न से षष्ठ या बारहवें हों। (२) अष्टमेश लग्नेश के साथ होकर उक्त स्थानों में दुर्बल रहे। (३) लग्नेश, चन्द्रमा और सूर्य या पाप ग्रह के साथ दुर्बल रहे। (४) लग्न या लग्नेश पर कर्त्तरी हो तो बालक हीनायु होता है।

४. लग्नेश अष्टमेश और कर्मेश ये तीनों बली हों, शुभ स्थान में बैठे हों तो दीर्घायु, दो बली हों और शुभ स्थान में बैठे हों तो मध्यायु, एक बली हो और शुभ स्थान में बैठा हो तो हीनायु होती है। अष्टमेश शनि अष्टम में; लग्नेश लग्न में हों तो दीर्घायु होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंक-विद्या [Numerology] और आपका भाग्य

आजकल पाश्चात्य में तथा भारत में भी अंक विद्या की लोक-प्रियता बहुत बढ़ रही है। यद्यपि भारत मे इस का प्रचलन अति प्राचीन काल से रहा है किन्तु भारतीय पद्धति वर्णमाला पर आधारित होनेके कारण शीघ्र-बोधगम्य नहीं। अंकों के आधार पर हम मनुष्य-स्वभाव की चारित्रिक विशेषताओं का आश्चर्य जनक रूप से विवेचन कर सकते हैं। हमारे मतानुसार भविष्यवाणी करना कठिन है। यहाँ पर पाश्चात्य मतानुसार अंग्रेजी मास की जन्म तारीख को आधार मान कर ९ तक की तारीख मे मूल अंकों की कल्पना की गई है तथा सूर्यादि नव ग्रहों को इन मूल अंकों का प्रतिनिधि माना गया है। ९ के बाद की तारीखों को मूल अंक बनाने की विधि इस प्रकार है—

१०=१+०=१	॥	१३=१+३=४
११=१+१=२	॥	१४=१+४=५
१२=१+२=३	॥	१५=१+५=६

क्रमश: इसी प्रकार तारीख के दोनों अंकों की इकाइयों को जोड़ कर मूल अंक बनाएं अथवा किसी भी अभीष्ट संख्या को ९ से भाग देकर जो शेष बचे, वही मूल अंक होगा।

मूल अंक १ वाले व्यक्ति—ऐसे व्यक्ति स्थिर प्रकृति वाले क्रियात्मक स्वतन्त्र विचार धारा वाले तथा स्वाभिमानी होते है। अधिकार प्रदर्शन की भावना भी रहती है। किसी अन्य व्यक्ति का प्रभाव व अनुशासन सहन नहीं करते। अंक १ वालों को रविवार तथा सोमवार शुभ होते हैं। पीला व सुनहरी रंग विशेष अनुकूल होता है। जीवन के १३, १९, २२, २८, ३९, ४९, ५८, वर्ष विशेष महत्त्वपूर्ण होते हैं। इस अंक का प्रतीक सूर्यग्रह है। ऐसे व्यक्तियों को नेत्र, कण्ठ, रक्त, पित्त विकारादि का भय रहता है। माणिक्य धारण करना शुभ है।

मूल अंक २ वाले व्यक्ति—इस अंक का प्रतीक चन्द्रग्रह है। ये १ अंक वाले व्यक्तियों की अपेक्षा शान्त स्वभाव के होते हैं। कल्पना, साहित्य प्रेमी, चंचल प्रवृत्ति, कला व सौंदर्य प्रेमी, लेखन कार्य करने में रुचि इनके स्वाभाविक गुणहै। सोमवार, शुक्रवार तथा रविवार शुभ है। ये निश्चयी कम होते है। जीवन के १५, २१, २४, ३७, ४३ वें वर्ष विशेष-महत्त्वपूर्ण। श्वेत रंग अनुकूल हैं।

अंक ३ वाले व्यक्ति – अनुशासन प्रिय, महत्त्वाकांक्षी, विद्या-अध्ययनी तथा परिश्रमी होते हैं। नेतृत्व करन में कुशल हैं। बृहस्पति प्रतिनिधि ग्रह हैं। इनके लिए मंगलवार, शुक्रवार तथा वीरवार और पीला रंग शुभ है। जीवनके ९ १२, ३०, ३८, ३५, वर्ष भाग्योन्नति कारक होते है। त्वचा रोगों से बचना चाहिए।

अंक ४ वाले व्यक्ति प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। ये व्यक्ति नवीन खोज करने में दक्ष, प्रगतिशील कठिन परिश्रमी, उग्रस्वभाव वाले तथा संघर्षप्रिय होते हैं तीव्र-स्वभाव वाले तथा गम्भीर होते हैं। धन-संग्रह अधिक नहीं कर पाते। ४ १३, २२, ४०, ५९, ५८ वां वर्ष भाग्योन्नोति कारक रहेगा। शनिवार, रविवार तथा सोमवार शुभ दिन तथा नीलमणि विशेष अनुकूल है। मूंगा धारण करना शुभ।

अंक ५ वाले व्यक्ति—का अधिष्ठाता बुध ग्रह है। ये फुर्ती से काम करने वाले, जल्दबाज शीघ्र निर्णय लेने वाले व्यापारादि व्यवसाय में उन्नति करने तथा चंचल वृत्ति. के होते हैं। प्रत्येक प्रकार की स्थिति में ढल जाते हैं। महत्त्वपूर्ण वर्ष १५, २५, ३२, ४१, ५१, ५७वां वर्ष होते हैं। बुधवार, शुक्रवार तथा श्वेत व हरित रंग विशेष शुभ है। पन्ना धारण करना शुभ है।

मूल अंक ६ वाले व्यक्ति—संगीत फ़ोटोग्राफी, चित्रकला व सौंदर्य प्रेमी आदर्शवादी तथा कल्पनाशील होते हैं। किसी अन्य की अधीनता इन्हें कभी स्वीकार नहीं होती। मंगल, वीर और शुक्रवार दिन तथा नीला व गुलाबी रंग शुभ हैं। अपनी योग्यता से धनोपार्जन करना पसन्द करते हैं। जीवन के १५, २४, ३३, ४२, ५१वें वर्ष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मूल अंक ७ वाले व्यक्ति के प्रतिनिधि—ग्रह चन्द्रमा तथा नैपचून हैं। ऐसे व्यक्ति भावुक, परिवर्तनशील तथा नए-नए स्थानों पर भ्रमण करने में रुचि रखते हैं। तन्त्र विद्या, स्वतन्त्र विचार, स्वाभिमानी व सौंदर्य प्रिय होते हैं। प्रायः आर्थिक संकट बना रहता है। सोमवार, रविवार तथा हरा रंग शुभ है। १६ २६, ५४, ५२, ५१, ६१वें वर्ष भाग्योन्नति कारक है। श्वेत गोमेध धारण करें।

मूल अंक ८ वाले व्यक्ति—का प्रतिनिधि ग्रह शनि है। ऐसे व्यक्ति अन्तर्मुखी, कठिन परिश्रमी तथा दृढ़ निश्चयी होते हैं। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रत्येक सम्भव साधन (उचित व अनुचित का ध्यान किए बिना अपनाते)है। संघर्षमय दूरदर्शी तथा गूढ विद्याओं में रुचि रखने वाले होते हैं। वायु रोग से पीडित रहते हैं। चन्द्रवार शनिवार रविवार तथा गहरा नीला व स्लेटी रंग विशेष अनुकूल होता है। जीवन के २६, ३३, ३५, ४४, ५३ वर्ष भाग्योन्नति कारक होते है। नीलम धारण करना शुभ रहेगा।

मूल अंक ९ वाले व्यक्ति—का प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। ये लोग स्पष्टवादी स्वाभिमानी, कठिन परिश्रमी उग्र प्रकृति किन्तु दयालु स्वभाव के होते हैं। समस्त जीवन संघर्षों में व्यतीत होता है। रक्त विकार का भय रहता है। शुक्रवार मंगलवार व वीरवार तथा लाल एवं गुलाबी रंग विशेष अनुकूल तांत्रिक विद्या मे भी रुचि रखते हैं। जीवन के १८, २७, ३१ ३६, ४५; ५४, ३३ वें वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

एषां परिहारवाक्यानि

न वर्णो न गणो न योनिर्द्विर्द्वादशके नैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नवपंचमे वा राशीश मैत्री शुभदा विवाहे॥

नाडीदोषश्च विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्।
गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषश्च पादजाम्॥

एकनक्षत्र जातानां नाडी दोषो न विद्यते।
अन्यर्क्षपतिवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नि पुष्ये श्रवण पौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते॥

मरणे-पितृ मातृश्च संवाद्यो नैव पंचमे।
वरस्य पंचमे कन्या कन्याया नवमो वरः।

वर और कन्या की राशियों के स्वामी एक हों व दोनों के स्वामियों की परस्पर मित्रता हो तो वर्णादि ७ कूटों का दोष नहीं रहता। इसी तरह नाड़ी दोष में यदि वर और कन्या का नक्षत्र भिन्न-२ हो किन्तु राशि एक हो अथवा दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि भिन्न-२ हो तो नाड़ी दोष नहीं होता। यदि दोनों की एक राशि और एक ही नक्षत्र हो तो विवाह शुभ नहीं होता, किन्तु एक नक्षत्र में भिन्न-२ चरण होने से अत्यावश्यक में शुभ हो जाता है।

ग्रह मेलापक विचार

वर और कन्या की कुण्डली में मिलान उत्तम होना आवश्यक है, क्योंकि उत्तम मिलान से द्रव्य, पुत्र, पति, पत्नी का सुख प्राप्त होता। वर की कुण्डली में जन्म लग्न, चन्द्रमा तथा शुक्र से यदि १।४।७।८।१२ इन स्थानों में मंगल पड़ा हो तो कन्या का नाशक होता है। यदि कन्या के जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से १।४।७।८।१२ स्थानों में मंगल हो तो वर नाशक है। जैसे—लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुजे। वरः पत्नी विनाशाय कन्या पति विनाशिनी॥

परिहार—यदि वर की कुण्डली में पूर्वोक्त स्थानों पर मंगल हो और कन्या की जन्म कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में मंगल पड़ा हो तो उसका दोष नहीं होता। इसी प्रकार एक की कुण्डली में मंगल हो और दूसरे की कुण्डली में उन स्थानों में से किसी स्थान में शनि पड़ा हो तो भी मंगल का दोष दूर हो जाता है।

अतः फिर भी वर-कन्या के लग्न, लग्नेश, सप्तम, सप्तमेश, अष्टम, अष्टमेश, पंचम भाव तथा स्त्री कारक शुक्र इनके योगों को देखकर सूक्ष्म रीति से परिहार दोनों का विचार कर ज्योतिषी-कुण्डली का मिलान करें।

वर वरण में मुहूर्त्त विचार

(चंडेश्वर) कृ. पूर्वा ३. और विवाह नक्षत्र, शुभ तिथि, शुभ वार भद्रादि दोष रहित शुभ समय में वर का वरण कन्या के भ्राता से अथवा ब्राह्मण द्वारा करना चाहिए।

कन्या वरण में मुहूर्त्त विचार

(चिंतामणी) कन्या का वरण अश्वि., कृत्ति., पूर्वा ३ अनु., उषा., श्रवण, धनि. और विवाह के नक्षत्रों में तथा शुभ तिथि, शुभ वार और शुभ समय में वस्त्र, आभूषण, फल और मिष्ठान्नादि से कन्या का वरण करना शुभ होता है।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाह संस्कार में पूर्वाचार्यों ने यद्यपि वैशा., ज्ये., आषा., मार्ग., माघ, फाल्गुन के महीनों को ग्रहण किया है, किन्तु कई एक आचार्यों ने चैत्र और पौष इन दोनों महीनों को त्याग कर शेष १० महीनों को ग्रहण किया है। इसलिए (मद्रदेश) पंजाब में अति प्राचीन काल से श्रावण, भाद्र, आश्विन महीनों में विवाह करने की प्रथा चली आई है। पर्वतीय प्रदेशों में कार्तिक महीने में भी विवाह होते हैं। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तक की तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में सूर्य, चं., बु., गु., शु. वारों में मं., शनिवार मध्यम कहे हैं। रो., मृ., मघा, उत्तरा ३, हस्त, स्वा., अनु., मूल, रेव. इन नक्षत्रों में वर को सूर्य और चन्द्रमा का बल देखकर विषम वर्षों में और कन्या को गुरु और चन्द्रमा का बल देखकर सम वर्षों में विवाह संस्कार करना शुभ कहा है। कन्या की अवस्था यदि १० वर्ष से अधिक हो तो गुरु का बल देखना जरूरी नहीं। (वशिष्ठ)

पहले गर्भ के लिए जन्म मासादिकों का निषेध

(नारदः) न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा आद्यगर्भसुतस्यार्थ दुहितुर्नो करग्रहः। जन्मदिन से लेकर ३० दिन तक जन्म-मास कहलाता है। जन्ममास, तिथि और जन्म नक्षत्र में पहले गर्भ के पुत्र वा कन्या का विवाह न करें। अत्यावश्यक में विवाह करना हो तो वशिष्ठ जी के मत से जन्म दिन छोड़ दें, अत्रि जी के मत से जन्म दिन से ३ दिन छोड़कर जन्ममास में विवाह कर लेवें। गर्ग जी के मत से ५ दिन छोड़ें और भागुरि जी के मत से जन्म मास मे पक्ष भर छोड़कर विवाह कर लेवें।

ज्येष्ठ महीने में विवाह का विचार

जहां पर लड़का जेठा हो, कन्या जेठी हो और ज्येष्ठ का महीना हो, इसको तीन जेठ कहते हैं। यह तीन जेठ विवाह में सर्वथा वर्जित कहे हैं और जहां पर जेठा लड़का और ज्येष्ठ का महीना अथवा जेठी लड़की और ज्येष्ठ का महीना हो, इसको दो ज्येष्ठ कहते हैं, यह दो ज्येष्ठ विवाह में मध्यम कहे हैं, जहां लड़का और लड़की जेठे न हों केवल जेठ का महीना हो तो यह एक विवाह जेठ में उत्तम कहा है। इसी तरह लड़का और लड़की जेठे हों और ज्येष्ठ का महीना हो तो दोनों का विवाह न करें। (वराह) द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तावेको ज्येष्ठ शुभा .ह। ज्येष्ठत्रय न कुर्वीत विवाहे सर्वसम्मतम्।

(गर्गः) ज्येष्ठायाः कन्यकायाश्च ज्येष्ठ पुत्रस्य वै मिथः विवाहो नैवकर्त्तव्यो यदि स्यान्तिधनं तयोः। जब तक कृतिका नक्षत्र में सूर्य है, तब तक ज्येष्ठ महीने का निषेध होता है। ज्येष्ठ के महीने की तरह मार्गशीर्ष महीने में भी आद्य गर्भ का विवाह न करें। (भारद्वाजः)

विवाह में विशेष विषयों पर विचार

पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या या अपने त्रिपुरुष कुल की कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें अर्थात् लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। इसी तरह विवाह के पीछे मुण्डन या यज्ञोपवीत ६ महीने तक न करें। (नारदः) दो सगे भाइयों का विवाह दो सगी बहिनों से न करें तथा एक वर के साथ दो सगी बहिनों का विवाह न करें (वशिष्ठ)। पुत्रिका द्वयमेकस्मै न दद्यात् कदाचन। जिस वर को अपनी कन्या देवें, उनकी बहिन के साथ अपने लड़के का विवाह न करें (नारदः)। उद्वाहोनैव कार्यौ नैकस्मै दुहितृद्वयम्। दो सगे भाइयों का विवाह ६ महीने के भीतर न करें (वशिष्ठ)। विवाहस्त्वेकजन्यानां षण्मासाभ्यन्तरे यदि। असंशयं त्रिभिर्वर्षैस्तत्रैका विधवा भवेत्॥ दो सगे भाइयों का और दो सगी बहिनों का एक संस्कार ६ महीने में न करें, (वृद्धमनुः)। भिन्न माता के उदर से उत्पन्न हुए दो अथवा यमल भाई या बहिनों का एक कर्म द्वारभेद और मंडपभेद आचार्यभेद से हो सकता है। इसी तरह भेद के हो जाने से ६ महीने के भीतर हो सकता है। मंगल संस्कार से ६ महीने तक पितृ कर्म न करें, अथवा वर्ष जैसे माघ, फाल्गुन में विवाह किया हो तो वैशाख में मुण्डन व यज्ञोपवीत करने से दोष नहीं होता, बड़े मंगल कर्म के उपरान्त लघु मंगल कर्म न करें। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी के पुरुषों के लिए ही कहा है, चौथी पीढ़ी के पुरुषों को दोष नहीं होता।

विवाह में त्रिविक्रममत् से लग्न का विचार

(त्रिविक्रमसंहितायां) त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदःषष्टे शुक्रेन्दुलग्नपा। रध्रे चंद्रोदयः पंच सर्वेऽस्तोऽब्जगुरु समौ॥ विवाह लग्न का निश्चय करना हो तो लग्न में श., सू., मं., चं. न हो तथा लग्न से छठे स्थान में शु., चं. और लग्न का स्वामी न हो, लग्न से आठवें च., मं., बु., गु., शु. नहीं होने चाहिए और लग्न से सातवें स्थान में कोई ग्रह न हो तो विवाह लग्न शुद्ध होता है. किन्तु चन्द्र और गुरु सातवें होने से समान फल करते हैं।

छठे शुक्र तथा अष्टम मंगल का विचार

विवाह लग्न से छठे स्थान में शुक्र तथा आठवें स्थान में मंगल यदि शत्रु राशिगत या नीच राशिगत हो तथा मंगल अस्तंगत हो तो

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भौम दोष नहीं होता। (कश्यपः) नीचराशिगते शुक्रं शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा भृगुवद् कोस्थितो दोषो नास्त्यत्र न संशयः ॥ अस्तगे नीचगेभौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा। कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते ॥ इसी तरह ६, ८ और १२वें स्थानगत चन्द्रमा का नीच और नीचांशक में होने से दोष नहीं होता।

नीचानीचांशगश्चन्द्रोनाशुभोष्टारि रिष्फगः ॥

लग्न में कर्तरी दोष का विचार

लग्न से १२वें स्थान में मार्गी क्रूर ग्रह हो और लग्न से दूसरे स्थान में वक्री ग्रह हो तो कर्तरी दोष होता है। कर्तरी दोष युक्त लग्न को सर्वथा त्याग देवें, किन्तु कर्तरी ग्रह यदि शत्रु राशि या नीच राशि गत तथा अस्तंगत हो तो कर्तरी दोष नहीं होता, (उक्तंच) ग्पयोः कर्तरीकर्त्रोः शत्रु नीचगृहस्थयोः यदा वास्तंगयोर्वापि कर्तरी नैव दोषद ॥ क्रूरः कर्तरी संयुक्त लग्न चन्द्र च न त्यजेत् केन्द्र त्रिकोण सस्थेषु गुरु भार्गवनचिन्तयेत् ॥ शुभैः धनस्थैरथवांस्यगे गुरौ न कर्तरी स्यादिति भार्गवो विदुः।

गोधूलि लग्न में ग्रहों का विचार

जिस दिन गोधूलि लग्न का विचार करना हो उस दिन गोधूलि लग्न से २, ३ और ११वें स्थान में चन्द्रमा होना चाहिए तथा गोधूलि लग्न से आठवें स्थान में श., बु., गु. और शु. नहीं होने चाहिए, इसी तरह छठे स्थान में चन्द्रमा भी न हो गोधूलि लग्न शुद्ध होता है।

गोधूलि लग्न विचार

मार्ग., पोष, माघ और फाल्गुन महीनों में संध्या के समय सूर्य गोलक के समान दृष्टिगोचर होने पर जो लग्न होता है वह गोधूलि लग्न होता है। इसी प्रकार चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ महीनों में सूर्य आधा अस्त हो जाने पर जो लग्न हो उसको गोधूलि लग्न कहते हैं। वैसे ही श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक महीनों में सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाने पर जो लग्न होगा वह गोधूलि लग्न कहलाता है।

कुल देवता स्थापन मुहूर्त—अश्वि., रो., पुष्य, उफा., ह., चि., स्वा., अनु., उषा., उभा., रे. इन नक्षत्रों में चं., बु., गु., शुक्र वारों में और शुभ तिथियों में और स्थिर लग्न में भद्रादि दोष रहित समय में शुभ होता है।

विवाह तैल संख्या चक्रम्

वर और कन्या की राशि द्वारा नीचे लिखे चक्र से तैल संख्या जानें।

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल संख्या	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

वधु प्रवेश मुहूर्त विचार

विवाह दिन से २।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१४।१६ इन दिनों में और स्थिर लग्न में वधु प्रवेश शुभ होता है। उपरोक्त दिनों में तिथि और नक्षत्रादियों का नियम नहीं होता, यदि ऊपर कहे हुए दिनों में वधु प्रवेश न कर सके तो विषम दिनों में, विषम महीनों में, विषम वर्ष में, अश्वि., रो., मृ., पुष्य, ह., चि., स्वा., अनु., मू., उत्तरा ३, श्र., ध., रे. इन नक्षत्रों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में, २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, ५।८।११ लग्नों में लग्न से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर भद्रा, व्यतिपातादि दोष रहित समय में और रात्रि के समय वधु प्रवेश शुभ कहा है।

द्विरागमनम्

विवाह से विषम महीनों-वर्षों में, वै., मार्ग., फा. महीनों में, अश्वि., रो., मृ., पुन., पुष्य, ह., चि., स्वा., उत्तरा ३, अनु., मू., श्र., ध., श. रे. नक्षत्रों में, चं., गु., शु. वारों में शुभ होता है, बु. श. मध्यम हैं, रिक्ता रहित तिथियों में और २।३।५।११ लग्नों में भद्रादि दोष रहित समय में शुभ कहा है, सन्मुख और दाहिने शुक्र का इसमें दोष होता है, रेवती नक्षत्र से मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा रहने से सन्मुख और दाहिने शुक्र का दोष नहीं होता, विवाहादि उत्सव में, तीर्थ यात्रा में अथवा दुर्भिक्षादि उपद्रव में प्रति शुक्र का दोष नहीं होता।

शुक्रास्ते वर्ज्यं कर्माणि

बावली, बगाचा, तालाब, कूप, मकान इनका आरम्भ और इनकी प्रतिष्ठा व्रतारम्भ, व्रतोद्यापन, महादान सोमयोग, अष्टकाश्राद्ध, गोदान, नवोन्मेष्टि, प्याऊ, प्रथम श्रावणीकर्म, नीलवृषभत्याग जातकर्म, नामकर्म, मुण्डन संस्कार, देवता स्थापन, दीक्षा-यज्ञोपवीत, विवाह, अपूर्व देवदर्शन, सन्यास, अग्निहोत्र, अभिषेक, समावर्तन, चातुर्मास्यप्रयोग, कर्णवेध, विद्यारंभ, नृपदर्शन, इन कर्मों को शुक्र के अस्त में, गुरु के अस्त में और मलमास में नहीं करना चाहिए।

नगर निवासे शुभ विचार

७ नक्षत्र मस्तक पर, ७ नक्षत्र पृष्ठ पर, फिर ७ नक्षत्र हृदय पर और ७ नक्षत्र पादों पर धरें। यदि अपना नक्षत्र मस्तक पर पड़े तो धनी मानो, पीठ पर पड़ने से हीनता और धन हानि, हृदय पर सुख-सम्पत्ति तथा पादों पर पड़े तो भ्रमणशील रहता है।

भूमे शुभाशुभ विचार—नींव खोदते समय यदि काली ईंट देखने में आवे तो शुभ जानें, हड्डी अथवा केशादि तथा कोयलादि देखने में आवे तो शुभ नहीं होता है।

॥ काल गणना ॥

भारतीय काल गणना-पद्धति बहुत प्राचीन है। भारतीय शास्त्रों में काल ज्ञान का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन है। किसी भी धार्मिक कार्य करने के पूर्व संकल्प करने का विधान है। संकल्प में कल्प, मन्वन्तर, युगादि से लेकर संवत्, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, ग्रह और नक्षत्रादि सबका उच्चारण आवश्यक माना गया है। यथा-प्रथा सूचित करती है कि अनादि काल से भारत वर्ष में समय का सूक्ष्म ज्ञान था। भारतीय काल एवं ग्रह और नक्षत्रादि की गति से पूर्ण परिचित रहते थे। अहोरात्र को चौबीस भागों में विभाजित करने पर प्रत्येक भाग को होरा (घण्टा) कहते हैं।

मुहूर्त—मुहूर्त तीन प्रकार के होते हैं। (१) पौराणक, (२) वैदिक, (३) नक्षत्र दो घटी (४८ मिनट) के समय का एक मुहूर्त के १।१५ भाग या ८ पल का एक सूक्ष्म मुहूर्त होता है। मुहूर्त का आरम्भ प्रातः वार प्रवृत्ति के समय में और रात्रि के मुहूर्त का आरम्भ सायंकाल से होता है।

अहोरात्र या दिन

अहोरात्र सूर्य और चन्द्रमा की गति के अनुसार चार प्रकार का होता है—(१, मध्यम सावन दिन=२४ होरा ३ विहोरा ५७ प्रति विहोरा का। (२) नक्षत्र दिन=२३ होरा ५६ विहोरा ४ प्रति विहोरा का। (३) चन्द्र दिन जिसको तिथि कहते हैं, यह २३ होरा १२ विहोरा का होता है।

मास गणना—मास गणना के भी चार भेद हैं। (१) सौर, (२) चान्द्र, (३) नक्षत्र, (४) सावन। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार भिन्न-२ प्रकार के मासों का व्यवहार होता है। सौर मास कम से कम २९ दिन का तथा अधिक से अधिक ३२ दिन का होता है। चान्द्र मास २९ दिन ३१ घड़ी ५० पल ७ विपल १० प्रति विपल। सावन मास ३० दिन का और नाक्षत्र मास २७ दिन १९ घड़ी १७ पल ५८ विपल ४५ प्रति विपल का होता है।

सौर मास का सम्बन्ध खगोल तथा भूगोल दोनों से है। चान्द्र मास सूर्य और चन्द्रमा का अन्तर चान्द्रमास है। नक्षत्र मास चन्द्रमा द्वारा २७ नक्षत्रों को पार करने के काल को नक्षत्र मास कहते हैं। नक्षत्र मास से चन्द्र मास २ दिन १३ घटी से कुछ अधिक बड़ा है। परन्तु चान्द्र मास १२ मासों में १२ और नक्षत्र मास १२ मासों में १३ चक्कर करके फिर एक स्थान में हो जाते है।

ऋतु—भारतीय काल गणना में ऋतुकाल भी बहुत प्राचीन है, वेदों में एक संवत्सर में पहले पांच ही ऋतुएं मानी जाती थीं अर्थात् वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद ये चार और हेमन्त तथा शिशिर इन दोनों को एक ही मानकर कुल पांच ही ऋतु मानी जाती थीं। तत्पश्चात् छः ऋतु सौर (सावन) मासों के द्वारा इस प्रकार मानी गई है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मन्त्रों-यन्त्रों द्वारा इष्ट-सिद्धि

प्राचीन काल में जो कार्य भौतिक साधनों द्वारा न सम्पन्न होता था उसको हमारे ऋषि-मुनि मन्त्रों द्वारा सिद्ध कर लिया करते थे। स्वयं में निहित शक्ति-युक्त वर्णों के समूह का नाम मन्त्र है। व्यष्टि और समष्टि मन की विराट एवं अव्यक्त शक्तियों को क्रियात्मक रूप प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य आर्ष-प्रदत्त मन्त्र करते हैं। मन्त्रज्ञों एवं विद्वानों ने मन्त्रों के अनुष्ठान तथा उनकी सिद्धि के लिए विभिन्न प्रकार के नियमों का पालन करने का निर्देश दिया, जिनमें मुख्य ये हैं—(१) मन्त्रों की सिद्धि के लिए शुभ संकल्प, दृढ़ निश्चय, अटूट श्रद्धा एवं अगाध विश्वास की परमावश्यकता है। (२) दूसरे साफ, पवित्र तथा एकान्त स्थान होना चाहिए। (३) मन्त्र किसी प्रकार भी हो उसे गुप्त रखना चाहिए। (४) एकाग्रचित्तता नितान्त आवश्यक है। सिवाय अपने उद्देश्य के अन्य कोई भी विचार मन में न लाने चाहिए। (५) अनुष्ठान के दिनों सात्विक भोजन करें, आलस्य प्रमाद, भोग, मैथुनादि को त्याग कर ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करना चाहिए। (६) मन में किसी प्रकार का संशय न लायें और संभव हो तो किसी योग्य तान्त्रिक अथवा विद्वान से अवश्य परामर्श कर लेवें।

अधिक जानकारी के लिए हमारी पुस्तक मन्त्र शक्ति रहस्य मंगवाकर पढ़ें, मूल्य ५) रु० पेशगी भेजें।

भागे हुए व्यक्ति को वापस बुलाना :—

एक कोरा घड़ा और कसोरा ले आयें। उस पर कोई चिन्ह न हो। घड़े के बाहर और कसोरे के बीच में नीचे लिखा मन्त्र लिखें। एक कागज पर लिखकर उसे घड़े के भीतर डाल दें और साथ में पूरे चार तांबे के पैसे भी डाल दें। घड़े को कसोरे से ढककर बांध दें और घड़े को सात बार घुमाते हुए ये मन्त्र पढ़ें—'ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे—

ॐ

ऐं	ह्रीं	क्लीं
डा	मुं	च
यै	च	च्चे
यहां भागे हुए का नाम लिखें		

ऐसा पृथक-२ स्थानों पर सात दिन पर्यन्त करने से भागा हुआ व्यक्ति (चाहे स्त्री हो या पुरुष) अपने स्थान से अवश्य चल पड़ेगा या अपना पता भेज देगा।

गर्भ रक्षा मन्त्र

रविवार और मंगलवार की संध्या को गाय के गोबर की कण्डी जलाकर माँ कामाक्षी के सम्मुख धूप जलावें और उस जली हुई कण्डी से भस्म भारकर उसे तीन बार नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर अभिमंत्रित करें, तत्पश्चात् उस भस्म को गर्भवती के शरीर पर छिड़क दें तो गर्भ स्थिर रहेगा।

ओं प्रकृति रूपिणी शक्ति स्वरूपिणी।
माँ कामक्षा देव्यै नमः। ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा॥

यन्त्र धारण करने की विधि :—

रविवार को प्रातः उषाकालीन बासी मुख चिरचिरि की जड़ उखाड़ लावें और उसे "ओं नमः कामाक्षाय गर्भस्थ सन्तान रक्षा कुरु कुरु फट् स्वाहा"—इस मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करें। इसके पश्चात् तांबे के जन्त्र में उसको डालकर रेशम की काली डोरी में पिरोकर गर्भवती स्त्री के गले में धारण करवा दें। जब तक सन्तान प्राप्ति न हो तब तक धारण किए रहें। ईश्वर की अनुकम्पा से अवश्य इष्ट सिद्धि होगी।

सब तरह के भय से मुक्ति के लिए—'ओं ह्रिं पवननन्दनाय स्वाहा।' यह महावीर जी का मूल मन्त्र है। इसको सिद्ध करने की विधि यह है कि सूर्योदय से पूर्व उठकर नदी पर जाकर स्नान करके खड़े होकर इस मन्त्र का आह्वान करें, फिर आठ बार मूल मन्त्र का जप कर बारह बार जल से शिर पर मार्जन करें, फिर दूसरे कपड़े पहनकर गंगा या नदी के किनारे बैठकर अगन्यास करें, इसका छः हजार जप दैनिक करें, सातवें दिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक जप करें, रात्रि को महावीर जी का रुद्र रूप प्रत्यक्ष होकर निर्भयवर प्रदान करेगा।

व्यापार एवं कारोबार में लाभ के लिए—ओं नमः मायाय, ओं नमः कामाक्षाय, ओं अं कं चं टं तं पं यं शं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं श्री फट् स्वाहा।

दीपावली की रात को एकान्त कमरे में आसन लगाकर सामने दीपमालिका सजाकर उपर्युक्त मन्त्र का १०८ बार जाप करें, तो मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। व्यापार या कारोबार शुरू करने से पूर्व सात बार इस मन्त्र का जप कर लें, व्यापार में सदा वृद्धि होगी।

१. भूत-प्रेत से ग्रस्त रोगी के लिए मन्त्र-तन्त्र—ओं पवन-पुत्राय नमः, ओं नमः कामाक्षाय ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं श्रीं श्रीं फट् स्वाहा।

इस मन्त्र को सरसों लेकर हाथ उलटा करके पढ़ें और भूत-प्रेत ग्रस्त रोगी (स्त्री अथवा पुरुष) के शरीर पर सरसों फैंकें। तीन बार मन्त्र पढ़कर सरसों फैंकें तो भूतादि का साया तुरन्त भाग जाएगा।

२. भूत-प्रेत भगाने का एक तन्त्र—यदि किसी स्त्री को भूत सताता हो तो पूरी सतर्कता से उसके पास जाकर उससे कुछ हटकर आसन लगावें। इसके पश्चात् गुग्गल, घोड़े का नख और सूखी लाल मिरचें जलती हुई आग में डालकर भूत खेलने वाली स्त्री की नाक के सामने रख दें। यदि फिर भी भूत न जाए तो बेंत की पतली छड़ी को "ओं नमः रुद्राय हुं हुं फट्" मन्त्र से तीन बार आमन्त्रित करके भूत-ग्रस्त स्त्री की पीठ पर तीन बेंत मारें, भूत अवश्य भाग जाएगा।

नौकरी प्राप्ति के लिये मन्त्र—"ओं नमः भगवती पद्मावती ऋद्धि-सिद्धि दायिनी दुःख दरिद्रय हारिणी श्रीं श्रीं ओं नमः कामाक्षाय ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।"

शनिवार को शनिदेव की विधिवत् पूजा करें, इसके उपरान्त उपर्युक्त मन्त्र का एक हजार जप पूरा करें, तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। रोजी ढूंढने के लिए जाने से पहले सात बार इस मन्त्र का जाप करें और चलते समय कपिला गाय को आटा और गुड़ चटाकर आगे जायें तो निश्चय ही रोजी प्राप्त होगी।

३. नौकरी प्राप्ति के लिए एक तन्त्र—कुत्ते का नख तांबे के यन्त्र में रखकर रेशमी लाल धागे से पुरुष दाईं भुजा तथा युवती बाईं भुजा में बांधकर जहां नौकरी के लिए खाली जगह हो, वहां पहुंचकर अधिकारी अथवा मालिक के पास जाएं तो तुरन्त काम बने।

धन प्राप्ति के लिए मन्त्र—"ओं श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ओं महालक्ष्म्यै नमः।"

इस मन्त्र को वैशाख मास में स्वाती नक्षत्र कालीन आरम्भ करके एक लाख बीस हजार की संख्या में जप करें तो मन्त्र सिद्धि अवश्य होगी तथा धन का अभाव जाता रहेगा।

सन्तान प्राप्ति के लिए मन्त्र—"देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणंगता।" इस मन्त्र का एक लाख जाप करें, फिर तिल, शहद आदि से हवन करें। कम से कम एक माला प्रतिदिन अवश्य करनी चाहिए। पति-पत्नी दोनों ब्रह्मचर्यादि व्रत का पालन करें। सात्विक भोजन करें, झूठ, निन्दा, चुगली आदि से बचें। पृथ्वी पर सोयें, पुरुष अपने केश (बाल) न कटवाएं। एक लाख संख्या का मन्त्र जप हो जाने के उपरान्त दसवां भाग जप का हवन करें तथा चार ब्राह्मणों को मिष्ठान्नादि से युक्त भोजन करवा दें, मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी।

आयु विचार

१. जन्म-कुण्डली में लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम भाव के अंकों में प्रत्येक को ३ से गुणा करके जोड़िये, उसमें से (यदि उक्त स्थानों में राहु और भौम पड़े हों) राहु और भौम की राशि-संख्या को निकाल देना चाहिए। जो शेष बचे उतने वर्ष आयु समझिये।

२. लग्न चतुर्थ सप्तम और दशम की राशि संख्या एकत्र करना यदि इन स्थानों में राहु, केतु, मंगल और शनि हों तो उक्त संख्याओं को जोड़कर पूर्वोक्त संख्या में घटाकर, शेष को तिगुना करना; वही आयु की वर्ष संख्या होगी।

३. अष्टमेश (१) यदि बलहीन होकर लग्न से षष्ठ या बारहवें हों। (२) अष्टमेश लग्नेश के साथ होकर उक्त स्थानों में दुर्बल रहे। (३) लग्नेश, चन्द्रमा और सूर्य या पाप ग्रह के साथ दुर्बल रहे। (४) लग्न या लग्नेश पर कर्त्तरी हो तो बालक हीनायु होता है।

४. लग्नेश अष्टमेश और कर्मेश ये तीनों बली हों, शुभ स्थान में बैठे हों तो दीर्घायु, दो बली हों और शुभ स्थान में बैठे हों तो मध्यायु, एक बली हो और शुभ स्थान में बैठा हो तो हीनायु होती है। अष्टमेश शनि अष्टम में; लग्नेश लग्न में हों तो दीर्घायु होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

—: काल होरा ज्ञान चक्र और उसका फल :—

समय	रवि	चं	मं	बु	वृ	शु	श
२॥	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श
५	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ
७॥	बु	वृ	शु	श	सू	चं	मं
१०	चं	मं	बु	वृ	शु	श	सू
१२॥	श	सू	चं	मं	बु	वृ	शु
१५	गु	शु	श	सू	चं	मं	बु
१७॥	मं	बु	वृ	शु	श	सू	चं
२०	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श
२२॥	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ
२५	बु	वृ	शु	श	सू	चं	मं
२७॥	चं	मं	बु	वृ	शु	श	सू
३०	श	सू	चं	मं	बु	वृ	शु
३२॥	गु	शु	श	सू	चं	मं	बु
३५	मं	बु	वृ	शु	श	सू	चं
३७॥	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श
४०	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ
४२॥	बु	वृ	शु	श	सू	चं	मं
४५	चं	मं	बु	वृ	शु	श	सू
४७॥	श	सू	चं	मं	बु	वृ	शु
५०	गु	शु	श	सू	चं	मं	बु
५२॥	मं	बु	वृ	शु	श	सू	चं
५५	सू	चं	मं	बु	वृ	शु	श
५७॥	शु	श	सू	चं	मं	बु	वृ
६०	बु	वृ	शु	श	सू	चं	मं

जिस दिन और जिस समय की काल होरा देखनी हो तो काल होराज्ञान चक्र से देख लें। जैसे रविवार को पहली काल होरा सूर्य का ढाई घड़ी तक होता है, उसके बाद ५ घड़ी तक शुक्र की काल होरा होती है। इस प्रकार सब ग्रहों की कालहोरा जान लेनी चाहिए। ऋषियों ने होरा को क्षणवार कहा है। बार से भी क्षणवार में ही प्रधानता मानी गई है। इस लिए वार और क्षणवार दोनों अनुकूल हों। तभी किसी कार्य को करना चाहिये। आवश्यक में यदि वार अनुकूल नहीं हो तो क्षण वार (होरा) की अनुकूलता देखकर कार्य करना चाहिए। जैसे पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता होतो वारके अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इस लिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है।

होरा फल

सूर्य की होरा—टेण्डर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्र की होरा**—सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**—युद्ध यात्रा, कर्ज देना, सभा सोसाईटी में जाना आना और मुकदमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**—विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार नवीनलेख, पुस्तक प्रकाशन प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा** विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसग्रह, नवीन काव्यलेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**—यात्रा, भूषण, नवीन शस्त्र धारण, सौभाग्य वर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**—भूमि मकान नींव नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिलन कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

—•—•—•अथ केरल प्रश्न चक्रम् •—•—•—

प्रातः काले वदेत्पुष्पं मध्यान्हे तु फलं वदेत ।। सायंकाले वदेन्नद्यः रात्रौतु देवलां वेदेत् ।।१।।

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खर	गज	ध्वांक्ष	ध्वजादि अष्टक वर्गा.
अ इ उ ए	क ख ग घ	च छ ज झ	ट ठ ड ढ	त थ द ध	प फ ब भ	य र ल	श ष स	उच्चारित प्रश्नाक्षराणि
ओ	ङ	ञ	ण	न	म	व	ह	
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	मस्त्यासत्य प्रश्न निर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	धातुमूल जीव ज्ञान
कुशल	रोग	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी सुख दुःख
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी चर स्थिरादिज्ञानम्
समीप	समीप	दूरस्थ	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासी गमागम ज्ञानम्
स्वल्प	सप्त	एकविंश	एकमास	४५ दिन	दो मास	दोमास	एक वर्ष	प्रवासी स्वतावधि ज्ञानम्
पत्र	अस्थि	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्ठि प्रश्ने द्रव्यं ज्ञानम्
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणक	गुड़	यव	गोधूमादि धान्य ज्ञानम्
कुसुम्भ	श्वेताः	लोहित	पांडु	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्ठि प्रश्ने वर्णं ज्ञानम्
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्ने सुख दि ज्ञानम्
४५ दिन	दो मास	४५ दिन	१ मास	१५ दिन	१ मास	७ दिन	२ मास	कष्ट दिनादि ज्ञानम्
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभालाभ ज्ञानम्
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	नष्ट वस्तुदिक ज्ञानम्
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धनिक	नौकर	नीच	भाई	चौर जाति प्रश्न ज्ञानम
उखल	अग्निगृहे	अरण्य	अन्तरिक्ष	भांडगते	काष्ठगते	गृहे	भूमिस्थे	चोरित द्रव्य स्थानम
भैरव	दुर्गा	सूर्य	हनुमन्त	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितर	देव पूजा उपासनादि
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रु गमागम प्रश्न ज्ञानम्
जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय	हानि	जय गति प्रश्न ज्ञानम्
न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षणं	न मोक्ष	मोक्षण	बन्दी मोक्ष मोक्ष ज्ञानम्
७ दिन	१ वर्ष	१५ दिन	६ मास	१ मास	६ मास	३ मास	१ वर्ष	बन्दी मोक्ष अवधि
स्थिर	न सिद्धि	कलह	दीर्घकाल	त्वरित	दीर्घकाल	स्थिर	नसिद्धि	कार्यसिद्धि भविष्यति नवा
शुभः	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	विवाह प्रश्न शुभाशुभम्
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र व कन्या प्राप्ति ज्ञानम्
१००वर्ष	१ वर्ष	१००वर्ष	२० वर्ष	६० वर्ष	१२ वर्ष	८५ वर्ष	६ वर्ष	आयु प्रश्न आयु ज्ञानम्
लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	धनलाभ प्रश्न लाभ लाभ
विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	वर्षा प्रश्न भविष्यति नवा
७ दिन	७ दिन	३० दिन	२० दिन	१० मास	२ मास	२ मास	२मास	वर्षा वर्षण दिन दि

40-45 वर्ष के बाद जीवन कैसे बितायें 15.00
हम स्वस्थ कैसे रहें पृ० 264 10.50
ब्रह्मचर्य साधन 2.00
न्यू लेडीज स्लिमिंग कोर्स 15.00
अपना कद बढ़ाइए (पूरा कोर्स) 15.00
मोटापा घटाइए (पूरा कोर्स) 15.00
दक्षिणी देश के अद्भुत चमत्कार 8.00 | जापान, चीन, बर्मा, आसाम

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रश्न-फल विचार

फलित ज्योतिष के चार मुख्य विभाग हैं। जन्म कुण्डली विचार, वर्ष फल, प्रश्न-फल तथा गोचर-फल। जन्म कुण्डली के पश्चात् प्रश्न-फल विचार को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, क्योंकि इसमें वर्तमान कालिक गोचर-ग्रहों का भी स्पष्ट विवेचन रहता है। जन्म कुण्डली की भांति प्रश्न कुण्डली का लग्न ज्ञात करने के लिए भी प्रश्नकर्ता द्वारा किए गए प्रश्न पूछने के समय को इस पंचांग में दी गई मासिक दैनिक लग्न सारिणी से लग्न देख लें तथा उसी तारीख के ग्रह स्पष्टों में दिए ग्रहों की स्थापना कर लेवें। प्रश्न फल का विचार करने से पूर्व नीचे दिए कुछ महत्त्वपूर्ण नियमों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए, जैसे—

१. (i) यदि कोई कुतूहलवश अथवा घमण्डवश प्रश्नोत्तर लेना चाहें तो ज्योतिषी को उसके प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहिए। शुद्ध भाव से जिज्ञासा वश किए गए प्रश्न का ही विचार करना चाहिए। यदि लग्न में चन्द्रमा, केन्द्र (१,४,७,१०) में शनि, बुधास्त हो या चन्द्रमा को मंगल, बुध पूर्ण दृष्टि से देख रहे हों तो प्रश्नकर्ता दुष्ट मन वाला होगा।

(ii) इसके विपरीत यदि लग्न में शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह लग्न को देख रहे हों अथवा सप्तम भाव में शुभ ग्रह या वह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो प्रश्नकर्ता शुभ भाव से प्रश्न पूछने आया है।

२. ज्योतिषी जी को स्वयं दूरदर्शी, सरस्वती देवी अथवा अपने इष्ट देव का उपासक, स्वस्थ मन और निरोगी होना चाहिए।

३. एक से अधिक प्रश्नों का उत्तर नहीं देना चाहिए, यदि आवश्यक हो तो लग्न से पहला प्रश्न, चन्द्रमा से दूसरा, सूर्य से तीसरा, बृहस्पति से चौथे प्रश्न इत्यादि का विचार करें।

१२ भाव सम्बन्धी विचार प्रायः जन्म लग्न की भांति ही होते हैं, जो-जो अन्तर होगा प्रसंगवश विचार किया जाएगा।

४. ज्योतिषी को ग्रहों के स्वरूप और उनके लक्षण ग्रहों की दीप्तादि अवस्थाएं ग्रहों का बलाबल, किस भाव से क्या विचारना इत्यादि विषयों का विशेष ज्ञान रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त उनका ज्योतिष सम्बन्धी निजी अनुभव महत्वपूर्ण सहयोग देता है।

५. प्रश्न लग्न अथवा जन्म लग्न दोनों के सम्बन्ध में विद्वानों ने एक अन्य महत्वपूर्ण नियम प्रतिपादित किया है कि—

यो यो भाव स्वामी दृष्टो युतोवा सौम्यैर्वा स्यात्तस्य तस्याऽस्ति वृद्धि।
पापैरेवंतस्य भावस्यहानि निर्देष्टव्या पृच्छता जन्मतो वा।

अर्थात् जो-जो भाव अपने स्वामी से युक्त या दृष्ट हो या शुभ ग्रह उसमें बैठे हों या उनकी दृष्टि हो तो उस-२ भाव की वृद्धि होगी। तथा पाप ग्रहों से दृष्ट या युक्त हों तो उस भाव की हानि।

६. प्रश्न कुण्डली में लग्न लग्नेश तथा चन्द्रमा—इनका विशेष महत्व है। फल कथन से पूर्व इनका बलाबल आंकना अत्यावश्यक है।

चोरी हुई वस्तु मिलेगी या नहीं

१. यदि प्रश्न लग्न में पूर्ण चन्द्रमा हो और उस पर गुरु या शुक्रादि शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो गुम हुई वस्तु शीघ्र मिल जाएगी। २. अति बलवान् (स्थानादि बल युक्त) शुभ ग्रह ११वें भाव में हों तो भी नष्ट वस्तु शीघ्र प्राप्त होगी। (चन्द्रमा शुक्ल पक्ष की दशमी से कृष्ण पक्ष की ५वीं तक पूर्ण कहलाता है।) ३. यदि प्रश्नकाल में लग्नेश सप्तम भाव में और सप्तमेश लग्न में हो या चन्द्रमा और सप्तमेश दोनों अस्तगत हों तो चोर धन सहित पकड़ा जाता है। ४. यदि स्थिर राशि का लग्न हो अथवा किसी भी लग्न में स्थिर नवांश हो अथवा लग्न में वर्गोत्तम नवांश हो तो गुम हुई वस्तु उसी स्थान में है और वह अपने घर के आदमी (सेवक) ने ली है। ५. यदि मेष, सिंह, धनु लग्न हो अथवा केन्द्र में सूर्य हो तो नष्ट वस्तु पूर्व दिशा में है। वृष, कन्या, मकर प्रश्न लग्न हो या मंगल केन्द्रगत हो तो वस्तु दक्षिण दिशा में, यदि कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न या बुध केन्द्र में हो तो उत्तर दिशा में तथा मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न हो या शनि बली अथवा केन्द्रगत हो तो पश्चिम दिशा में होगी। यदि एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें जो बली होगा वही दिशा जानना। ६. प्रश्न लग्न में चार राशियां (मेष, कर्क, तुला, मकर) हों तो नष्ट चीज दूर चली गई समझें। यदि स्थिर राशि हो तो अभी गांव, मकानादि में ही मानें। यदि सप्तमेश या सप्तम भाव में राहु, केतु, शनि आदि नीच ग्रह हों तो चोरी करने वाला कोई नीच जाति का, कृष्ण वर्ण का, निर्जन स्थान में रहने वाला, दाढ़ी, मूंछ व केश-धारी होता है। सप्तमेश वक्री होने पर या अष्टम में सूर्य मंगल होने पर भी नष्ट चीज नहीं मिलती है। इसके अतिरिक्त रोहि., पुष्य, उषा., विशा., पूषा., शत., अश्वि. इन नक्षत्रों में खोई चीज शीघ्र मिलती है। मृग., अश्ले., हस्त, अनु., उभा., पूभा. नक्षत्रों में खोई चीज कष्ट से मिलती है। आर्द्रा, ज्येष्ठा आदि मध्य लोचन नक्षत्रों में खोई कभी नहीं मिलती।

खोए हुए पशु का विचार

जब कोई प्रश्न करे कि मेरा खोया पशु मिलेगा या नहीं तो पंचांग में देखें कि गुम होने के दिन सूर्य किस नक्षत्र पर था। सूर्य नक्षत्र से ९ नक्षत्र तथा खोया पशु वन में होता है। १० से १५ तक खोया पशु मार्ग में आ रहा है। १६ से २२ तक खोया पशु शीघ्र ही घर पर आना चाहता है। २२ से २७ नक्षत्र तक खोया पशु कभी वापस नहीं मिलेगा।

विवाह सम्बन्धी प्रश्न

१. यदि प्रश्न कुण्डली में भाग्येश सप्तम स्थान में और सप्तमेश भाग्य स्थान में हो अथवा सप्तमेश शुक्र भाग्य स्थान में हो या भाग्येश शुक्र सप्तम, दूसरे, चतुर्थ या लग्न में निर्दोष होकर बैठा हो तो शादी अवश्य होती है। २. प्रश्न लग्न से सम स्थान (२, ४, ६, ८, १०, १२) में शनि हो तो वर को लाभ नहीं होगा। इसके विपरीत विषम स्थान में शनि हो तो स्त्री को वर लाभ होगा। ३. यदि प्रश्न लग्न से ३रे, ५वें, ६ठे, ७वें, ११वें भाव में चन्द्रमा हो और उसके ऊपर गुरु सूर्य या बुध की दृष्टि हो तो शादी अवश्य होगी। ४. ५वें, ९वें और केन्द्र स्थानों में शुभ ग्रह हों तो भी शादी अवश्य होगी। ५. यदि प्रश्न कुण्डली में शुक्र चन्द्रमा पापी ग्रहों से युक्त होकर सप्तम भाव में शनि से दृष्ट हों, सप्तमेश नीचस्थ हो या चन्द्रमा पाप युक्त १, ४, ५, ८, ९, १२वें भाव में बैठा हो तो शादी नहीं होती अथवा अनेक बाधाओं के पश्चात होती है।

गर्भ से लड़का होगा या लड़की

१. प्रश्नकाल में यदि शनि लग्न को छोड़कर विषम स्थान (३, ५,७,९,११) में बली होकर स्थित हो तो गर्भवती स्त्री के पुत्र उत्पन्न होगा और निर्बली होकर समस्थान (२, ४, ८, १०) में स्थित हो तो कन्या उत्पन्न होती है। २. प्रश्न कुण्डली में यदि (१,३,५,७,९वें) स्थान पर पुरुष ग्रह बलवान होकर स्थित हो तो पुत्र लाभ और स्त्री ग्रहों के बलवान होने पर कन्या का जन्म होता है। इन स्थानों में शनि विशेषतः पुत्र-दायक होता है। ३. लग्नेश व पंचमेश, पुरुष राशियों पर पुत्र कारक और स्त्री राशियों पर कन्या दायक होते हैं। यदि लग्नेश पुरुष ग्रह पुरुष राशि में बैठ कर पंचम भाव को देखता हो या पंचमस्थ राहु को मंगल पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो भी गर्भवती के पुत्रोत्पन्न होता है।

नौकरी अथवा सर्विस का प्रश्न

१. प्रश्न कुण्डली में नौकरी के प्रश्न, पदोन्नति, धन, मान, तरक्की इत्यादि का विचार ६वें और १०वें भावों से करना चाहिए। २. यदि भाग्येश दशम भाव में और दशमेश भाग्य स्थान में हो या एक दूसरे के भाव को मित्रपूर्ण दृष्टि से देखते हों तो बहुत अच्छी नौकरी मिलती है।

दूध के साथ वर्जित वस्तु

१. खरबूजा खाने के बाद गर्म दूध पीना हानिकारक है।

२. नींबू, नारंगी, प्याज, लहसुन खाने के बाद दूध नहीं पीना चाहिए।

३. खट्टे फलों के साथ दूध नहीं पीना चाहिए। यदि दूध में तुलसी की पत्तियां डालकर उबाल लें तो पीने में कोई नुकसान नहीं है।

४. दूध के साथ ऐठे की वस्तु खाना हानिकारक है।

५. शराब के साथ दूध पीने से मृत्यु हो जाती है।

६. मांस या मांस की बनी चीजें दूध के साथ नहीं खानी चाहिए।

७. दूध पीने के बाद पान नहीं खाना चाहिए।

८. कुल्फा या बथुआ का साग खाकर दूध नहीं पीना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(विवाह आदि के लिए वर कन्या मेलापक सारणी)

कन्या राशि	वर नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	मेष अ.	मेष भ.	मेष कृ. १	वृष कृ. ३	वृष रो	वृष मृ. २	मिथुन मृ. २	मिथुन आ	मिथुन पुन ३	कर्क पुन. १	कर्क पुष्य	कर्क श्ले	सिंह म.	सिंह पू.	सिंह उफा १	कन्या उफा ३	कन्या ह	कन्या चि २
मेष	अ	२८ ८	३३	२८	१८ १	२३॥ २	२२॥ २	२६ =	१६॥ ८	११॥ ८	२२॥	३०॥	२७	२२ ९	२४ ९	२५ ८९	१०॥ ७८	१० ४७८	१३ ७
	भ	३३	२८ ८	२६ १	१८ २६	२६॥ २	१४॥ २८	१७॥ =	२६	२६	२०॥	२३॥ ८	२४॥ ६	१९ ६९	१७ ८९	२४ ९	१९ ७	१९ ७	८ ६७८
	कृ १	२६॥	२८ ६	२८ ८	१८ २८	१० ६८२	१६॥ २	१६॥	१९॥ ६	१९॥	२४॥	२६॥	२२॥ ८	२७॥ ८२	१९ ६९	२० ६९	१५ ६७	१५ ७	१८॥ ७
वृष	कृ ३	१६ २	१९ २६	१९ २८	२८ =	१८॥ ६४	२६॥	१७ २	१७ २६	१७ २	२१	२३	१० ८	१९ ८	२२ ६	२२ ६	२० ६९	१८ ९	२१ ९
	रो	२३॥ २	२३॥ २	११ २६८	२० ६८	२८ ८	३६	२६॥ २	२३ २	२२ २	२६	२५	१३ ६८	१०॥ ६८	२४॥	२७	२४॥ ९	२४॥ ९	१८॥ ५४
	मृ २	२३॥ २	१४॥ २८	१८॥	२७	३५	२८॥ ८	१८॥ २८	२३॥ २	२२॥ २	२६	१९ ८	२१	१९॥	१५॥ ८	२४॥	२३ ९	२५॥ ९	११॥ ८९
मिथुन	मृ २	२७	१८ ८	२१	१८॥ २	२५॥ २	२० २८	२८ =	३३	३१॥	१९॥	१०॥ २८	१४॥ २	२६	२०॥ ८	२८॥	२०॥	३४	२० ८
	आ	१८॥ ८	२६॥	२१॥ ६	१६ २६	२४॥ २	२५॥ २	३४	२८ ८	२५ ८	१२ २८	२०॥ २	१२॥ २६	२१॥ ६	२७॥	२०॥ ८	२४॥ ६	२४॥ ८	२७ ६
	पुन ३	१८॥ ८	२५॥	२१॥	१६ २	२२ २	२३ २	३१॥	२४ ८	२८ ८	१४ २८	२१ ९	१५॥ २	२१॥ ४	२५॥ ४	१९॥ ८	२३॥ ८	२४॥ ८	२६॥
कर्क	पु १	२१॥ =	२८॥	२४॥	२१	२४	२५	१७॥ २	१० २८	१३ २८	२८ ८	३४	२८॥	१६॥ २४	२०॥ ४२	१४॥ २८	१६॥	१७॥ ८	१९॥
	पुष्य	२१॥	२०॥ =	२६॥	२३	२५	१८ ८	२०॥ २८	१८॥ २	२४ २	३४	२८ ८	२९	१८॥ २	१४॥ २८	२३॥ २	२५॥	२५॥	११॥ =
	श्ले	२५	२३ ६	२१॥ ८	१९ =	१२ ६८	२१	१३ २	१२ २६	१५ २	२८॥	२८॥	२८ ८	१५ २४८	१५॥ २४६	१७॥ २६	२०॥ ६	२०	२६
सिंह	म	१६ ९	१९ ६६	१५॥ ८९	१६॥ =	१६ ६=	१७॥	२०॥	२०॥ ६	१९॥ ४	१६॥ २४	१८॥ २	१६ २४८	२८ ८	३० ६	२६॥	१४॥ २६	१४॥ २	१९॥ २
	पूफा	२५ ९	१७ ८६	१९ ६९	२० ६	२३॥	१५॥ =	१८॥ ८	२६॥	२५॥ ४	२९॥ २४	१६॥ २८	१६॥ २४६	३० ६	२८ ८	३४	२४ २	२०॥ २	५॥ २६८
	उ १	१८॥ ८९	२७ ६	२२ ६६	२३ ६	२७	२५॥	२८॥	२१॥ ८	२१॥ ८	१६॥ २८	२५॥ २	१८॥ २६	२६॥ ६	३६	२८ ८	१८ २८	१६॥ २८	१४॥ २४६
कन्या	उ ३	११ ८७	२१ ७	१६ ६७	२०॥ ६६	२५॥ ९	२४ ६	३१॥	२१॥ ८	२३॥ ८	१७॥ ८	२०॥	२०॥ ६	१५॥ २६	२३ २	१७ २८	२८ ८	२७ ८	२४॥ ४६
	ह	११ ६७८	१८॥ ७	१६ ७	२०॥ ९	२३॥ ९	२४॥ ९	३२	२८॥ ८	२३॥ ८	१८ ८	२६॥	२१॥	१६ २	२०॥ २	१५ २८	२६ ८	२८ =	२८
	चि	१२॥	६॥ ६७८	१८॥ ७	२३ ६	१८॥ ६९	१०॥ ८९	१८ =	२६ ६	२४॥	१९॥	११॥ ८	२५॥	२० २	६॥ २६८	१३॥ २४६	२४॥ ४६	२७	२८ =

कन्या राशि	वर नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	तुला चि २	तुला स्वा	तुला वि ३	वृश्चिक वि १	वृश्चिक अनु	वृश्चिक ज्ये	धन मू	धन पू	धन उषा १	मकर उषा ३	मकर श्र.	मकर ध २	कुम्भ ध. २	कुम्भ श	कुम्भ पूभा ३	मीन पूभा १	मीन उभा	मीन रे
मेष	अ	२२॥	२६॥ ४	२२	१८॥ ७	२६॥ ७	१५ ७८	१३ ८९	१८॥ ९	२७ ९	२५	२६	२१	२१	१५ ८	१६ ८	१४॥ २८	२१॥ २	२६ २
	भ	१४॥ ६८	२८	२१ ६	१८॥ ६७	१७॥ ७८	१६॥ ६७	२० ६०	१७॥ ८७	२५॥ ९	२७॥	२६	१० ४६७८	९॥ ६७८	२० ६	२४ ४	२२॥ २४	१६॥ २८	२४॥ २
	कृ १	२७॥	१८ ८	१९ ८	१६॥ ७८	१९॥ ७	२५॥ ७	२५ ९	१६ ४६९	११॥ ६७९	१३॥ ६८	१६ ४८	२५	१८॥	२४॥	१८ ६	१७॥ २६	१९॥ २६	११ ७८
वृष	कृ ३	२२ ७	६ ७८	१४ ७८	२१॥ ८	२४॥	२०॥	२३ ७	१५ ४६७	७ ६७८	१२ ६८९	१७॥ ४८९	२४॥ ६	[illegible]	[illegible]	२३ ६	२५ ६	२८ ६	१३ ८
	रो	१३॥ ६७	१५ ७८	८ ६७८	१४॥	२०॥	२३॥ ६	१३॥ ६७	१९॥ ७	११ ४७८	१६ ४८९	१८ ८९	१९ ६६	२४॥ ६	२४ ६	२९	२४	२७	११ ८
	मृ २	१०॥ ७८	२४॥ ७	१७ ७	२३॥	२१॥ =	२४॥	१४॥ ७	१०॥ ७८	१६॥ ४७	२१॥ ४९	२६ ९	१२ ८९	१३॥ ८	२६	२८	२५	१८ ८	२७
मिथुन	मृ २	१३ ८६	२७ ६	१६॥ ९	१३ ७	१३ ७८	१४ ७	२३	१९ ८	२५ ४	१९॥ १६७	२४ ७	१० ७८	१२ ८६	२१ ९	२२॥ ९	२४	१७ ८	२६
	आ	२० ६६	२७ ९	२० १९	१३॥ ६७	१९ ४७	५ ६७८	१५ ६८	२८	२७	२१॥ ७	२२॥ ७	१७ ६७	१९ ६९	१२ ६८९	१७ ८९	१८॥ ८	२६	२६
	पुन ३	१६॥ ६	२७ ६	२१ ९	१४॥ ७	२०॥ ७	६ ७८	१४ =	२७	१७	२१॥ ७	२२॥ ७	१६॥ ७	१८॥ ६	१३ ८९	१६ ८९	१७॥ ८	२६॥	२६
कर्क	पु १	१९ ६	२६॥	२०॥	१९ ६	२५ ९	१०॥ ९	७॥ ७८	२०॥ ७	२०॥ ७	२६	२७	२१	१७ ७	५॥ ७८	९॥ ७८	१६ ८९	२५ ९	२४॥ ६
	पुष्य	११ =	२५	२०॥	१६ ६	१७ ४९	२०॥ ९	१७॥ ७	१२॥ ४७८	२०॥ ७	२६	२७ ४	१३ ८	४ ७८	१३ ७	१३॥ ७	२६ ९	१८ ८९	२६ ९
	श्ले	२५॥	११॥ ८	१६॥ ८	१५॥ ८९	२० ६	२६ ९	२२॥ ७	१६ ६७	७॥ ६७८	१३ ६८	१३ ८	२६	१७ ७	१८ ७	११ ६७	१३॥ ६९	२० ६९	१२ ८६
सिंह	म	२३॥	१०॥ =	१५॥ =	२५॥ =	२४॥	३२	२४ ९	१९ ६९	८॥ ६८९	३॥ ६७८	४॥ ७८	१७॥ ७	२३॥	२४॥	१७॥ ६	१७॥ ६७	१८॥ ६७	१२ ७८
	पूफा	६॥ ६८	२४॥	१७॥ ६	२३॥ ६	२२॥ =	२४॥ ६	२० ६९	१७ ८६	२४ ९	१९ ७	१८॥ ७	५॥ ६७८	९॥ ६८	१०॥ ६	२३॥	२३॥ ७	१६॥ ७८	२४॥ ७
	उ १	१७॥ ४६	२६॥	१७॥ ४६	२४॥ ४६	२३॥	१६॥ ६८	९ ६८९	२५ ९	२५ ६	२० ७	२० ७	११॥ ६७	१७॥ ६	१०॥ ६८	१५॥ ८	१५॥ ७८	२६॥ ७	२४॥ ७
कन्या	उ ३	१६॥ २४६	२५॥ २	१६॥ २४६	१८ ४६	२६	१२ ६८	१४ ६८	२५॥	२९॥	२४ ९	२४ ९	१५॥ ६९	१६॥ ६७	९॥ ७८	१४॥ ७८	१७ ८	२८	२६
	ह	२० २	१६॥ २	१८॥ २	२०	२६	१९॥ =	१४ ८	२७	२८॥	२३ ९	२४ ९	१८ ९	१६ ७	१७॥ ४७८	१३॥ ७८	१६ ८	२६	२६
	चि	११ २४	१२ २	२५॥ २	२७	११ =	२५	२७	१३ ६८	२२ ६	१५॥ ६९	१७ ९	१५ ८९	१६ ७८	२४ ७	१६॥ ६७	१६ ६	१० ४६८	१९

मेलापक सारणी देखने की रीति—ऊपर वर कन्या मेलापक सारणी दी जाती है। कन्या के नक्षत्र बाईं ओर हैं और वर के नक्षत्र ऊपर दिये हुए हैं। वर के नक्षत्र के नीचे और कन्या के नक्षत्र के सामने जो कोष्टक है वहाँ गुणों की संख्या दी हुई है। बस यही गण दोनों के मिलापक सारणी के है। गुणों वाली संख्या के नीचे जो (कोष्टक) में प्रायः कोई संख्या भी है। विवरण नीचे लिखे अनुसार जान लेना। (१) [illegible] दोष की जगह (२) योनिवैर की जगह (४) गण दोष की जगह (६) भकूट [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

[illegible] की जगह (७) नाड़ी दोष की जगह (८) और नव पंचम की जगह (९) यह अंक दिये हुये हैं। जिस कोष्टक में गुणों के नीचे आप को इन में से कोनसा अंक मिले वह

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दोष की जगह (७) नाड़ी दोष की जगह (८) और नवपंचम की जगह (९) यह अंक दिये हुये हैं। जिस कोष्टक में गुणों के नीचे आप को इन में से जौनसा अंक मिले वह दोष उस मेलापक में है। जिन गुणों के नीचे कोई अंक न हो वह निर्दोष उदाहरण :—जैसे वर का नाम वृश्चिक राशि विशाखा नक्षत्र के ४ थे चरण में है और कन्या का नाम मेषराशि भरणी नक्षत्र में हो तो भरणी के सामने और विशाखा के ४ थे चरण के नीचे १८॥ गुण हैं और इन के नीचे ६, ७ दो दोष दिए हुए हैं अर्थात् गुण दोष और भकूट षडाष्टकदोष है। यदि भकूट दोष न हो तो, २० गुण मिलने पर मध्यम और इन से अधिक मिले तो श्रेष्ठ हैं। परन्तु दुष्ट भकूट में २५ गुण तक मध्यम और इस के ऊपर श्रेष्ठ समझना चाहिए शुभ भकूट में १६ गुण से कम न हो और दुष्ट भकूट में २० गुण से कम हो तो, विवाह के लिए विचार न करना चाहिए। क्योंकि अशुभ है एक नक्षत्र में पाद भेद हो तो नाड़ी दोष नहीं माना जाता। १८ गुण से कम हो तो मिलान उत्तम नहीं है १८ से २७ तक मध्यम और २० से ऊपर उत्तमोतम समझना चाहिए।

		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
वधू नक्षत्र		अ	भ	कृ १	कृ ३	रो	मृ २	मृ २	आ	पुन ३	पुन १	पुष्य	श्ले	म	पू	उफा १	उफा ३	ह	चि २	चि २	स्वा	वि ३	वि १	अनु	ज्ये	मू	पू	उषा १	उषा ३	श्र	ध २	ध २	श	पूभा ३	पूभा १	उभा	रे
तुला	चि २	२२	१४ ६८	२८	२३ ७	१८॥ ६७	१०॥ ६८	१२ ६६	२० ६९	१८॥ ९	१०	११ ८	२५	२४॥	१०॥ ६८	१३॥ ६६	१३॥ २४६	२० २	२० २८	२८ ८	२७	३१॥	२२॥ २	६॥ २८	२०॥ २	२७	१३ ६८	२१ ६	२३॥ ६	२५	२६ ८	१८ ८६	२६ ६	१८॥ ६१	१२ १७	३	१२ ७
	स्वा	२७॥ ४	२६॥	१७॥ ८	२२॥ ७८	१६॥ १८	२७	२७	२६ ९	२६॥ ९	२८	२८	१५॥ ८	१३॥ ८	२५॥	२५॥ २	२५॥ २	२७॥	२१ २	२८	२८ ८	२० ७	१० ६८	२३॥ २	१८॥ २	२३	२७	१९॥ ८	२१॥ ८	२३॥ ८	२६	२१ ६	२२ ६	२५ ६	१८॥ ७	११ ७	११ ७८
	वि ३	२१	२२ ६	२० ८	१५ ७८	६ ६७८	१७ ७	१८॥ ६	२० ६९	२० ९	२०॥	२०॥	१७ ८	१६॥ ८	१८॥ ६	१३॥ ४६	१३॥ २४६	१८॥ २	२६ २	३१॥	१९ ८	२८ ८	१६ २८	१५ २	२१॥ २	२३॥	२२	२३ ६८	१४॥ ६८	१४॥ ८	२६॥	२४ ६	२६ ६	२० ६६	१३॥ ६७४६	१२॥ ७	४ ७८
वृश्चिक	वि १	१६॥ १७	१६॥ ६७	१७॥ ७८	१६॥ ८	१३॥ ६८	२१॥	११ ७	१२॥ ६७	१२॥ ७	१८ ९	१८ ९	१४॥ ८९	२४॥ ८	२२॥ ६	२३॥ ६	१७ ४६	१८	२६	२१॥ ८	७ २८	१५ २८	२८ ८	२७	३१॥ ७	२३॥ २	१५॥ २६	७॥ ६८	१३ ६८	११ ८	[illegible]	२४	२५॥	१९॥ ६	१६ ६६	१८ ६६	९॥ ४८९
	अनु	२३॥ ७	१४॥ ६८	१८॥ ७	२३॥	२७॥	१०॥ ८	१० ६८	१५ ४७	१९॥ ७	२५ ९	१७ ८९	२० ९	२४॥	२०॥	२८॥	२४	२५	११ ८	६॥ २८	२०॥ २	१६ २	२८	२८ ८	३१	१५॥ २४	१३॥ २८	२१॥ २	२५	२६ ८	१२ ८	११	२०	२४॥	२४ ६	१७ ८६	२६ ९
	ज्ये	१० ७८	१३॥ ६७	२१ ७	१८॥	२२॥ ६	२१॥	१२ ७	२ ४६७	४ ७८	९॥ ८९	२० ९	२५ ९	११	२३॥ ६	१४॥ ६८	११ ६८	११ ८	२४	१९॥ २	१४॥ २	१६ २	११॥	१०	२८ ८	१४ २४८	१६॥ २६	१६॥ २६	२० ६	२०	२५	२८॥	१७ ८	१० ६८	६॥ ६८	२० ६९	२० ६
धन	मू	१२॥ ६६	१६ ६६	२५ ६	२८॥ ७	१७॥ ६७	१३॥ ७	२१	१४ ६८	१२ ८	७॥ ७८	१७॥ ७	२३ ७	२४ ९	१८ ६९	१९॥ ६८९	१३	१३ ८	२६	२६	२१	२६	२३॥ २	१६॥ २४	११ २४८	२८ ८	२८ ६	१४॥ ६	१६॥ २६	१४॥ २	१६॥ २	२८॥	२१॥ ८	१४॥ ६६	१६॥ ६६	१८॥ ६	२८
	पू	२६ ६	१६ ६६	१८ ६४८	१९॥ ४६७	१६ ७	११ ७८	११ ८	२७	२०	२२॥ ७	१४॥ ४७८	१६॥ ६७	१९ ६९	१७ ६९	२५	२८॥	२७	१२ ६८	१२ ६८	२७	२० ६	१६॥ २६	१४॥ २८	१७॥ २६	२७ ६	२८ ८	३४	२२ २	२२॥ २	४॥ २६६	१४॥ ६८	२३॥ ३	२८॥	२९॥	२२॥ ८	३०॥
	उषा १	२४ ६	२५॥ ६	२१॥ ६	६ १८	१० ४७८	१६॥ ४७	२५ ४	२६	२७	२२॥ ७	२२॥ ७	८॥ ६७८	८॥ ६८९	२४ ९	२५ ९	२८॥	२८॥	२० ६	२० ६	१९ ८	१२ ६८	८॥ २६६	२३॥ २	१७॥ २६	२५ ६६	३४	३६	२२ २८	२२॥ २८	५॥ २६	१४॥ ६	२३॥ ६	२८॥	२४॥	३०॥	२२॥ ८
मकर	उषा ३	२७ ६	२८॥	१८॥ ६८	१२ ६६६	१९ ७८६	२३॥ ६६	१६ ४७	२४॥ ७	२३॥ ७	२८	२६	१४ ६८६	४॥ ७८	२० ७	२१ ७	२४ ९	२४ ९	१५॥ ६९	२३॥ ६	२३॥ ८	१४॥ ६८	१२ ६८	२७ ६	२१ ६	१४॥ २६	[illegible] २	१७ २८	२८ ८	२७ ८	२४॥ ६	१४॥ २६	१६॥ २६	२१॥ २	२१॥	१७॥	२३॥ ८
	श्र	२८	२७	१४॥ ४८	१२ ४६६	१७ ६६	२६ ६	२३ ७	१६॥ ७	२१॥ ७	२८	२८ ४	१४ ८	५॥ ७८	१८॥ ७	२० ७	२१ ९	२४ ९	१७ ९	२४	२१॥ ८	१४॥ ८	१२ ८	२७	२१	१४ ४	२३॥ २	१४ २८	२६ ८	२८ ८	२७	१७	१७॥ २	२०॥ २	२८॥	२२॥	२२॥ ८
	ध २	२० २	११ ४६८	२६	२३॥ ६	१६ ६६	११ ६६	८ ७८	१६ ६७	१४॥ ७	२१	१३ ८	२७	१८॥ ७	४॥ ६७८	१०॥ ६७८	१४॥ ९	१७ ९	१५ ८९	२९ ८	२४	२८॥	२६ ८	१२	२६	२०॥ २	६॥ २६८	१४॥ २६	२४॥ ६	२७	२८ ८	१७ २६	२६ २	१७॥ २६	२४॥ ६	१९ ६८	२२॥ ४
कुम्भ	ध २	१६॥ २	१०॥ ४७८	२५	३०	१५॥ ६	१७॥ ८	११ ८९	१८ ६९	१७ ९	१२ ७	४ ७८	१८ ७	२४॥	१७॥ ६८	१८॥ ६	१७॥ ६७	१९ ७	१७ ७८	१८ ८९	२० ९	२४॥ ९	२५	११ ८	२५	२०॥	१५॥ ६८	२३॥ ६	१९॥ २६	१८ २	१८ २८	२८ ८	१३	२०॥	१६॥ २६	६॥ २६८	१४॥ २४
	श	१४॥ ८	२०॥ ६	२६॥	२१	२५ ६	२६॥	२० ९	१२ ६८९	१२ ६८	६॥ ७८	१७ ७	१९ ७	२५॥	१६॥ ६८	१९॥ ६७८	१०॥ ७	१०॥ ७	२४ ९	२६ ९	२१ ९	२६	२६॥	२० ८	१८ ८	२७॥ ८	२४॥ ६	२४॥ ६	१७ २६	१३॥ २	२४	२३	१८ ८	२६ ६८	८ २६८	१४॥ २६	१४॥ २
	पूभा ३	१७॥ ८	२४॥ ४	१६॥ ६	२८ ६	३०	२०	२३॥ ७	१३ ६९	१३ ६९	११॥ ६८	१६॥ ७	११ ६७	१८॥ ६	२४॥	१६॥ ८	१४॥ ७८	१४॥ ७८	१७॥ ६९	१८॥ ६९	२६ ९	२० ६६	२०॥ ६	२६॥	११ ६८	१४ ६८	२६॥	२८॥	२२॥ २	२२॥ २	१६ २६	२७ ६	१६ ६८	२८ ८	१६ २६	२२ २	१९॥ २४
मीन	पूभा १	१४॥ १२८	२१ २८	१६॥ २६	१६ ६	२६	२१	२८	१७॥ ८	१७॥ ८	१३ ६९	२५ ९	१७॥ ६९६७	१६॥	२२॥ ७	१४॥ ७८	१६ ८	१६ ८	१८ ६	१९ ६७	१८॥ ७	१२॥ ६७	१९ ६७	२५ ६९	९॥ ६६८९	१६ ६८	२८॥	२८॥	२८॥	२२॥ ६	२४॥	१४॥ २६६८	७	१५ २८	२८ ८	११	१०॥ ४
	उभा	२३॥ २	१५॥ २८	१८॥ २६	२१ ६	२६	१८ ८	१७ ८	२५	२६॥	२६ ६	१९ ८९	२० ६६७	१७॥ ६६७	१५ ७८	२५॥ ७	२७	२६	९ ४६८	२ ३६	१९ ७	१९॥ ४६७	१५ ४६०	१८ ६०	२०॥ ६६	२३॥ ६	२१॥ ८	२१॥	२६॥	२६॥	१४॥	५॥ १८६८	१४॥ २६	२१ २	३३	२० ८	१३
	रे	२४ २	२६॥ २	१०॥ २८	१३ ८	१७ ८	२६	२५	२४	२५	२४॥ ९	२६ ९	१६	१२ ६९६८	२२॥ ७	२२॥ ७	२४	२५	१९	१२ ७	१० ६८	४ ७८	१०॥ ६९	२६ ९	२१ ९	२६	२८॥	२०॥	२२॥ ८	२१॥ ८	२२॥ ८	१३॥ ६	१५॥ ४२	१७॥ २	२९ २४	१६ ४	२८ ८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवरत्न अंगूठी बनाने की विधि

ईशान पन्ना	पूर्व हीरा	अग्नि मोती
उत्तर पुखराज	माणिक	दक्षिण मूंगा
वायव्य लहसुनिया	नीलम पश्चिम	नैऋत्य गोमेद

शनिस्तोत्र

पिप्पलाद उवाच—नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोस्तुते। नमस्ते विष्णुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते कालकायजे। नमस्ते यमसंज्ञाय शनैश्चर नमास्तु ते। प्रसाद कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च। इस स्तोत्र का नित्य सबेरे पाठ करने से शनि का अनिष्ट नहीं होता।

यज्ञोपवीत धारण करने की विधि

'शास्त्रीय ग्रन्थों में वर्णित' यज्ञोपवीत को दाहिने हाथ से ही धारण करना चाहिए। लघु-शंका के समय दाहिने कर्ण पर, मलत्याग के समय वाम-कर्ण पर रहना चाहिए। यज्ञोपवीत वाम कन्धे पर दाहिनी भुजा की ओर लटकना चाहिए।

शनि का वास्तविक विचार

शनि जिस नक्षत्र पर हो उससे अपने नक्षत्र तक गिनिये। यदि वही नक्षत्र हो तो ३ मास १० दिन तक अनेक प्रकार की हानियां होंगी। दूसरे से पांचवें नक्षत्र तक १३⅓ मास की अवधि में युद्ध में विजय होगी। ततः ६ से ११वें नक्षत्र तक १ वर्ष ८ मास का समय वायु-रोग, देशान्तर में भ्रमण करायेगा। ततः १२ से १५वें नक्षत्र तक १३ मास १० दिन तक कष्टकारक समय बीतेगा। ततः १६ से १८ नक्षत्र तक १० मास का समय उत्तम राज-यश कारक होगा। ततः १९-२०वां नक्षत्र का समय ६⅔ मास सुखदायक रहेगा। ततः २१-२२वां नक्षत्र ६ मास २० दिन महाकष्ट, वायु-विकार होगा। २३ से २७वां नक्षत्र १६ मास २० दिन तक अनुचित ढंग से धन-धान्य का लाभ होगा।

॥ चक्र ॥

शनि नक्षत्र	समय	फल
१	३ मास १० दिन	अनेक हानियां
४	१३ मास १० दिन	विजय, साफल्य
६	२० मास	व्यर्थ भ्रमण
४	१३ मास १० दिन	कष्ट, भुजा-व्यथा
३	१० मास	सम्मान, यश, सुख
२	६ मास २० दिन	उन्नति, सुख
२	६ मास २० दिन	महादुःख, वायु-विकार, आमाशय
५	१६ मास २० दिन	धन-धान्य का लाभ

अन्य प्रकार

जिस दिन शनि राशि-संक्रमण करे, उस दिन का चन्द्र नक्षत्र की राशि बनावें। यदि वह राशि अपनी राशि से १-६-११वीं पड़े तो लाभ, शुभ, २-५-९वीं पड़े तो साधारण लाभ, शुभ, ३-७-१०वीं पड़े तो साधारण, ४-८-१२वीं पड़े तो अनिष्ट समझें। परन्तु पंचांगों में भेद के कारण यह फल नहीं मिलता। शनि के नक्षत्र-संक्रमण में भी इसका विचार किया जा सकता है।

मुख्य बातें

शनि एक राशि में २॥ वर्ष रहता है। जन्मराशि से बारहवें, जन्मराशि का तथा दूसरे; इन तीन राशियों को मिलाकर ७॥ वर्ष हुआ। इसी को साढ़ेसाती शनि कहते हैं। जन्मराशि से जब शनि चौथे या आठवें हो तो अढ़ैया कहा जाता है जो कष्टप्रद है। जब शनि जन्म राशि से बारहवें आता है, तो व्ययाधिक्य अवश्य होता है। जन्मराशि का होने पर यात्रा, चर्म-वायुरोग अवश्य होता है, दूसरे होने पर परिवार में किसी की मृत्यु तथा धन-हानि होती ही है। चौथे शनि में मित्रों से सम्बन्ध-विच्छेद, विवाद, मुकद्मा, आठवें में व्यय, हानि, रोग होता है।

इसकी शांति

नीलम धारण करना चाहिए। छायादान, शनैश्चर का जप करना चाहिए। काले घोड़े के नाल की अंगूठी बिना कटी हुई, बिना जुड़ी हुई धारण करनी चाहिए। शनिवार को भुना हुआ चना खाना चाहिए। काला वस्त्र धारण, काले तिल का तेल लगाना चाहिए।

नीलम किन-किन राशि वालों को लाभप्रद होता है—

तुला, कुम्भ—को अत्यन्त लाभप्रद।
मकर, वृष—को साधारण लाभप्रद।
मिथुन, कन्या—को साधारण शुभ।
धनु, मीन—को कभी अच्छा तो कभी साधारण बुरा।
मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक—को कभी भी अच्छा नहीं होता जब तक कुण्डली में शनि बहुत अच्छा न हो।

शनि के स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। हनुमान बाहुक या हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। जहां पर हनुमान जी की मूर्ति दक्षिण मुख की हो वहां पर हनुमान बाहुक, बजरंग बाण या और किसी हनुमान के मन्त्र या स्तोत्र से ४० बार परिक्रमा करनी चाहिए। ततः पीपल में जल देकर ७ परिक्रमा करनी चाहिए।

इस प्रकार शनि की बाधा दूर हो जायगी। जीवन में प्रायः साढ़ेसाती शनि ३ बार या किसी-किसी को ४ बार आता है। पहली बार तो कोई प्रभाव नहीं रहता है। दूसरी बार जीवन-भवन की नींव हिला देता है, तीसरी बार उस भवन को उखाड़ फेंकता है और चौथी बार जला देता है।

आपके जीवन में क्या होने वाला है ?

घर बैठे ही अपना भविष्य जानें

जन्म कुण्डली टेवा—संक्षिप्त रूप में अपना भविष्य जानने के लिए अपनी जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र लिख भेजें। आपकी सेवा में फलादेश सहित टेवा बनाकर वी.पी.पी. द्वारा भेज दिया जायेगा। जिसकी फीस ३१)७५, विदेश में पैदा होने वाले सज्जनों के लिए फीस ५१)७५ होगी।

वर्ष फल—आपके लिए यह वर्ष कैसा रहेगा? यह जानने के लिए जन्म-कुण्डली की नकल अवश्य भेजें। यदि जन्म-कुण्डली नहीं है तो पत्र लिखने का समय, अंग्रेजी तारीख, स्थान तथा मन पसन्द फूल का नाम लिख भेजें। संक्षिप्त फलादेश के लिए फीस ३१)७५ और विस्तार पूर्वक फलादेश के लिए फीस ५१)७५ होगी।

जन्म पत्री—इसमें आपके जीवन में होने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं, नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से विवरण दिया जायेगा। जिसकी फीस ५१) से १५१) होगी। जन्म पत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता का नाम, दादा का नाम लिख भेजें।

मन्दा तेजी विचार

हमारे कार्यालय से जिस वस्तु की मन्दा-तेजी के सम्बन्ध में जानना चाहते हैं, उसके लिए विशेष चास की फीस ३१) है। मासिक प्रति दिन की हर वस्तु की मन्दी-तेजी के विचार की फीस १०१) है।

परेशानियों से छुटकारा पाइए !

साढ़ेसती नाशक यन्त्र—जिन बन्धुओं पर शनि की साढ़ेसति अथवा ढैय्या चल रही हो। वे हमारे कार्यालय द्वारा विधि पूर्वक तैयार किए इस यन्त्र को धारण करें तो अत्यन्त लाभ दायक सिद्ध होगा। ४० दिन में शनि के कुप्रभाव से राहत मिलेगी।

नवग्रह शांति यन्त्र—यह यन्त्र नवग्रहों की शांति के लिए तत्काल प्रभावी सिद्ध होगा। इसको धारण करने से सब परेशानियों से छुटकारा मिलेगा। इस यन्त्र की फीस ५१) है।

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र—इसके धारण करने से मुकद्मा, परीक्षा, व्यापार, नौकरी आदि सब कार्यों में आशातीत सफलता प्राप्त होती है। फीस १०१) है।

लक्ष्मी सिद्ध यन्त्र—इस यन्त्र के धारण करने से व्यापार में सफलता, नौकरी में उन्नति, धन की कमी दूर होती है। फीस ३१) है।

नोट—कृपया मन्दा-तेजी के हालात जानने और यन्त्र मंगवाने वाले हमें पूरी राशि अग्रिम भेजें अन्यथा उत्तर नहीं दिया जायेगा।

कार्यालय मुफीद आलम जन्त्री

डब्ल्यू. एम. १५१, बस्ती गुजां, जालन्धर शहर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लत्ता दोष

सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु
१२	७	३	२२	६	२४	८	९
धन हानि	शुभ	मृत्यु	शुभ	बंधु-नाश	कार्य-नाश	कुल-क्षय	मरण

जैसे सूर्य स्थित नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र यदि १२वां हो तो सूर्य की लत्ता, एवं पूर्ण चन्द्र के स्थित नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र ७ वां हो तो चन्द्रमा की लत्ता जाने ॥

पात दोष गुरु जांगल, कलिंग बंग और मगध में अतिनिन्दित है।

अश्वि	भर	कृति	रोहि	मृग	आर्द्रा	पुन	विशा	अनु	ज्येष्ठ	उष	श्रव	धनि	शत	पूभा
मघा	हस्त	स्वा	मूल	मघा	रोहि	रोहि	उफा	उषा	मृग	उष	स्वा	मृग	रोहि	उफा
धनु	उफा	उफ	००	हस्त	मृग	उषा	उषा	००	मघा	अनु	००	स्वा	हस्त	हस्त
रेव	उभा	००	००	मृग	उफा	००	००	००	मूल	००	००	मूल	उषा	अनु
००	००	००	००	००	धनु	००	००	००	रेव	००	००	रेव	उभा	००

ऊपर के नक्षत्रों में सूर्य हो तो नीचे के नक्षत्रों को पात लगता है हर्षण, वैधृति साध्य, व्यतिपात, शूल, गंड, इन योगों के अन्त में विवाह का नक्षत्र हो तो पात लगता है।

युति दोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो और उसी नक्षत्र पर यदि शुभ वा पाप ग्रह हो तो युति दोष होता है, अथवा चन्द्रमा की राशि में कोई ग्रह हो तो युति दोष होता है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है यह गौड़ देश में अतिनिन्दित है।

❀वेध दोष❀

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्व	धनु	मूल	उषा	उभा	रेव
अभि	उषा	श्रव	रेव	उभा	शत	भर	पुन	मृग	हस्त	उफा

ऊपर के नक्षत्रों में से कोई विवाह का नक्षत्र हो और उसके नीचे के नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का वेध होता है। यह सर्वत्र वर्जित है।

❀विवाह नक्षत्र से सातवें ग्रह हो तो जामित्र❀

रोहि	मृग	मघा	उफा	हस्त	स्वाती	अनु	मूला	उषा	उभा	रेव
धनु	ज्ये	धनि	पूभा	उभा	अश्वि	कृति	मृग	पुन	उफा	हस्त

ऊपर के नक्षत्रों में विवाह का नक्षत्र हो और नीचे के नक्षत्रों पर कोई ग्रह हो तो उस ग्रह का जामित्र दोष होता है सो पाप ग्रह का जामित्र विवाह में वर्जित कहा है यह यमुना प्रांत में अतिनिंद्य है।

❀बुध पञ्चक दोष❀

रोगपं	अग्निपं	राजपं	चौरपं	मृत्युपं	बाण
८।१७ २६	२।११ २०।२९	४ १३।२२	६।१५ २४	१।१० १९।२८	पंचि.
व्रते रवौ रात्रौ	गृहकार्ये भौमे दिवा	सेवाया शनौ दिवा	यात्रा भौमे रात्रौ	विवाह बुधे संध्यायां	कार्येषु बाणे समर्थे

एकार्गल दोष

वि.	[illegible]	शू	गं	व्या	व	ह	प	वै	यो

सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित सहित गणना करने से यदि विषम हो और इन निरुद्ध योगों में से कोई भी योग हो तो एकार्गल दोष होता है। यह काश्मीर में विशेष वर्जित है।

उप ग्रह दोष

सूर्य के नक्षत्र से, ५ वें ७ वें १० वें, १४ वें, १५ वें, ८ वें, १९ वें, २१वें २२ वें. २४ वें, २८ वें, नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

क्रांति साम्य दोष

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला	सूर्य	चं
सिंह	मकर	धन	वृश्चि	मीन	कुम्भ	चंद्र	सू

ऊपर व नीचे की राशि पर सूर्य व चन्द्रमा हो तो क्रान्ति-साम्य दोष जाने सो विवाह में सर्वथा वर्जित है।

दग्धा तिथि दोष

वैशा	ज्येष्ठ	अषाढ़	मार्ग	कार्ति	पौष	मास
श्रा	फाल्गुण	आश्वि	भाद्र	माघ	चैत्र	मास
६	४	८	१०	१२	२	तिथय:

इन २ मासों में ये २ दग्ध होती हैं सो विवाह में वर्जित कहीं है मध्य देश में त्याज्य है।

लत्तादि दोषाणां परिहारवाक्यानि-लत्ता मालवके (उज्जैनादि) वेधं पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्र बांगर) जांगले (फिरोजपुर इत्यादी)। एकार्गले च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत् उपग्रहर्क्षे कुरु बाल्हिकेषु (आगरा आदि) कलिंगवंगेषु (जगन्नाथपुरी, बंगाल, अयोध्या च पातिते भम् ॥ सौराष्ट्र (काठियावाड़) शाल्वे: लत्तांभं त्यजेत् विद्धकिल सर्वदेशे युतिदोषो भवेद् गौड़े (बंगाल) जामित्रस्य च यामुने (यमुना के प्रांत)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जित:। युतिपरिहार-स्वक्षंस्थ: स्वोच्चगश्चंद्रो मित्रक्षेत्रगतोपिवा। गुरुश्च स्वीयवर्गस्थो बली केन्द्रगतो विधु:। लत्तापातं उपग्रह परिहार:-यत्संख्यं चरणं खेट स्तत्संख्यं चरणं त्यजेत्। लत्तोपग्रहदानेषु त्याज्या नैवाऽन्ययंपरे। परिहार-लत्तोपग्रहजामित्रयांतैकार्गलकर्तरी। एते दोषा विनश्यंति लग्नेऽर्के दुर्बलान्विते ॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भूमी सुप्तज्ञानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमें ९ जोय। दश १० इक्कीस २१ चौबीसवें पट दिन पृथ्वी सोय।

आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमेवाण ५ षट्यास्त्वसप्तमेरुद्र ११ संज्ञका। नवमे ऋषव७रचैवदशमे वषट् ६ नाड़िका: एक विशेयम१४श्चैव चतुर्विशेदश १० नाड़िकाघटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसको द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर ८ का भाग दें तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जान कर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

गृहारम्भ मुहूर्त विचार

वै. श्रा. मार्ग. माघ, फाल्गुन महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कातिक मास मध्यम है २।३।५।१०।११। १२।१३ इन तिथियों में से चं.बु.शु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध.श.रे. नक्षत्रों में २।३। ५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निबाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों से पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

सूर्यभात वृषवास्तु चक्र

अग्रपादेपृष्ठपाद			पृष्ठे	द.कु.	पुच्छे	वामकुक्षौ	मुखे
३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	नाश	स्थिर	श्री	लाभ	नाश	नेष्ट	पीड़ा

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्तः

अश्वि.रो.मृ. पुष्य.हस्त.स्वा.श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली [दलीज] स्थापन करना शुभ है।

सूर्य भात् देहली चक्र

शिरसि	कोण	शाखाया	देहल्यां	मध्य	स्थानानि
४	८	८	३	४	नक्षत्राणि
लक्ष्मी	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्यु	सौख्य	फलम्

जलाशय देवालय प्रतिष्ठां

अश्वि. मृग. पु. पुष्य. चि. स्वा. अनु. अभि. श्रव. ध. श. रेव. एषुभेषु. २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु. चन्द्र, शुक्र दृश्ये: शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामीनक्षत्रे तिथि-मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने। कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्रः। सिंहे सूर्यः मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्यः। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

कूप चक्र—नक्षत्र वारो तिथि संयुक्ता वेदाहृतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टं च जलंहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलंच स्वर्गे। त्रिशून्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः।

इशान्ये पुष्टि:	पूर्वे ऐश्वर्यम्	अग्नेये पुत्रनाश:
उत्तरे सुखम्	मध्येऽर्थनाश:	दक्षिणे स्त्रीनाश
वायव्ये शत्रुभयम्	पश्चिमे धनलाभ:	नैऋत्ये स्वामीनाश

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

सूर्यभात्कूप जल विचारः

३	३	३	३	३	३	३	३	३
स्वादु जल	खंडित जल	स्वादु जल	क्षय जल	स्वादु जल	क्षार जल	शिक्षा	मिष्ठ जल	क्षार जल

राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन-२ राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश से ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन-२ राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उस में खात करना शुभ है

खात चक्रम्

इशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नेये	राहोर्मुखम्
१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११	देवालये
५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४	गेहविधौ
१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९	जलाशये
आग्नेये	ईशाने	वायव्ये	नैऋत्ये	कोणाः
खातः शुभ	खातः शुभ	खातः शुभ	खातः शुभ	खातः शुभ

नूतनग्रह प्रवेश

वै. ज्ये. माघ फाल्गुन महीनों में रा. रे, ति, अनु. उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१५ तिथियों में चं., बु., बृ., शु., श. वारों में अपने जन्म लग्न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचया ३।६।१०।११, स्थिर लग्न में लग्न से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में लग्न से १।२।५।७।९।१० स्थानों में शुभ और ३।६।११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होता है पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह, अश्वि, पुष्य मृ, श्र, ध, एषु-भेषु चापि शुभः। आवश्यके गुरु शुक्रास्तं न विचारणीयम्।

सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदे	कंठे
१	४	४	४	४	४	३	३
अग्निदाह	उद्वेग	लाभ	कीर्ति.	कलह	नाश	स्थिर	स्थिर

विपणि मुहूर्त

अ रो, मृ. पुष्य-उत्तरा ३. ह. चि. ऽनु. रेव, एषु भेषु, लग्न चन्द्रसिते व्ययाष्टरहिते पापै: २।१११।१० स्थितैः

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शुभैः स्थिरलग्नं भौमवारं च बिना रिक्ता रहित तिथौहट स्थित्वा क्रय विक्रयारम्भः प्रशस्तः । हट्टचक्रः—नीचे लिखे चक्र द्वारा उस दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उसे दुकान खोलने के नक्षत्र तक गिनकर चक्र से शुभाशुभ फल जानें

हट्ट चक्र

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
फल	सौख्य	विक्रयनाश	धननाश	सुख	श्रेष्ठ	क्षोभ	हानि	शुभ

नौकरी का मुहूर्त—अ. मृ. पुष्य. ह. चि. ऽनु. रे. एषु मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सु. बु. वृ. शु. वारेषुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवक की राशीन और योनि से मित्रता हो ।

बहीपत्रारम्भः मुहूर्त—अ. रो. मृ. पुन. पुष्य उत्तरा ३. ह. चि. ऽनु. श्र. रे. एषु. मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्ययाष्ट रहित पापैः केन्द्र कोणगैं शुभ. स्यात् ।

हलप्रवाहनम्—अ. रोहि. मृग. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. हस्त. चित्रा स्वा. वि. अनु. मूल. श्र. धनि. श. रे. एषुमेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र, बुध, वृह. शुक्रवारेषु २।३।१।८।६।१२ लग्नेषु व्यतिपात पूर्वे रहित काले शुभंस्यात् ।

सूर्य भात हलचक्रम

३	३	३	५	३	५	३	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	ऽशुभ	शुभ	अशु	शुभ	अशु	शुभ	फलम

अथ बीज बीजने का मुहूर्त—अ. रो. मृ. पुन. पुष्य म, उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. ऽनु. मूल. धनि. रे. एषुमेषु चन्द्र, बुध, वृह, शुक्र वा रेषु २।३।५।७।१०।११।१३ एषु तिथिषु शुभेलग्ने शुभंस्यात् ।

राहु भात् बीज वापन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशु.	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	शुभ	अशु.	फलम्

अथ खेती काटने का मुहूर्त—भ, कृ, मृ, आर्द्रा पुष्य श्ले, म, पूर्वा, ३. उत्तरा ३ ह. चि, स्वा ज्ये, मूला श्र धनि एषुमेषु, शुभवासरे, शुभलग्ने शुभं स्वात् ।

अथ खेतों से अन्न निकालने का मुहूर्त

रो. म. पूफा. उफा. अनु. ज्ये. मू. श्र. ऐषुमेषु चन्द्र बुध, वृह, शुक्र, वारेषु २।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु शुभलग्ने करण मर्दनं स्यात् ।

अथ अन्न घर लाने का मुहूर्त

अश्वि, रो. मृ. पुष्य. म. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. रे. एषुमेषु चं. बु. वृ. शु. वारेषु २।३।५।७।१०। ११।१३।१५ तिथिषु शुभेलग्ने शुभंस्यात् ।

अथ नवान्न भक्षणम्

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. एषुमेषु शुभवारेषु १।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु शुभलग्ने शुभंस्यात् ।

अथ अन्न बेचने का मुहूर्त

कृ.रो. उत्तरा ३. चि. वि. अनु. ज्ये. मू. एषुमेषु २।३।५।६। ७।१०।११।१२।१३ तिथिषु, शुभवासरे शुभस्यलग्ने शुभंस्यात् ।

अथ अन्न खरीदने का मुहूर्त

रो. ब. श. उत्तरा ३. एषुमेषु चन्द्र बु. वृ, शु. वारेषु २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु शुभे लग्ने शुभंस्यात ।

अथ बीज संग्रह मुहूर्त

ह. चि. स्वा. पुन. रो. मृ. श्र. ध. एषुमेषु २।३।५।६।७।१०।११। १२।१३।१५ ए.षु तिथिषु चं.बु.वृ.शु. वारेषुशुभेलग्नेषुशुभंस्यात् ।

अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त

अश्वि. रो. मृ. आर्द्रा. पुष्य. मघा. उ. ३ह. चि. वि. एषुमेषु. चं. बु. वृ. शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात् ।

अथ अर्जी देने का मुहूर्त

भर. मृ. आर्द्रा श्ले. मं. ज्ये. एषुमेषु श. मं. वारौ ४।६।१४ तिथौ क्रूर चन्द्रे सति शुभंस्यात् ।

अथ होलाष्टकम्

शुक्ला ऽष्टमी समारम्य फालगुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्य त्रिपुष्करे ।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम् ॥

अथ होम अग्निवासः

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भाग दो यदि ३ या चार बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होम में प्राण और धन का नाश करता है ।

अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, इसी तरह सब ग्रहों के मुख में आहुति जाननी ।

सु	बु	शु	श	च	मं	वृ	रा	केतु	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	ऽशुभ	शुभ	ऽशुभ	शुभ	ऽशुभ	ऽशुभ	फल

अथ ग्रहयां होमयेंसमिधः । अर्कःपलाशः खदिरस्त्वपामर्गो ऽर्थपिप्पलः ॥ औदुम्बरः शमी दूर्वाकुशाञ्चसमिधः क्रमादिति ॥ सन्तानप्रदमंत्रौ । देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते । देही मे तनयं कृष्णत्वामहं शरणंगतः । कौशल्याशुशुभेतेन पुत्रेणा-मिततेजसा । यथावरेहणदेवाननामदितर्वज्रपाणिना ॥ सपाद-लक्ष जपः । तिल पायसघृतंदशांशहवनं । तद्द शांशतर्पणम् । दद्दशांश ब्राह्मण भोजनम् ।

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम् आद्यचन्द्रःश्रियं कुर्याद्द्वितीये धनधान्यदः । तृतीये राजसन्मानं चतुर्थेकलहा गमः । १ ॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा ॥ सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्यष्टम मरणं भवेत् (कष्टं वा)-।६वें भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसवः । एकादशे सर्वलाभोद्वादश चाशुभावहः ॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्या निष्ट-चन्द्र दानत् । दधि तण्डुलश्वेताम्बृतरजतमुक्तादयः ॥

कदा द्वादशस्वस्थश्चन्द्रमाशुभवः ॥ आधाने-सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रह ॥ पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः । अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु । यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः ।

अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालविभागः पूर्वाह्णदैविकं श्राद्मप-रान्हे तु पार्वणम् । एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातर्वृद्धिनिमि-त्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षणः ॥ कृष्णपक्षेऽ-पराह्णं च रौहणं न तुलङ्घयेत् ॥ क्षयाहे विशेष; । न ज्ञायते मृताहश्चेत्यमीते प्रोषिते सति । मासश्चैत्प्रतिविज्ञातस्तच्छ-शस्यान्मतेऽहनि । श्राद्धविघ्ननिर्णयः । श्राद्धविघ्नं समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मृतेऽहनि । एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः ॥ इति ॥

गयाश्राद्धकालः ॥ मीने मेषेस्थिते सूर्यं कन्यायां कार्मं के घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम् । मकरे वर्तमानेच ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः दुर्लभत्रि० । गयायासर्वकालेषु-पिण्डं दद्याद्विचक्षणः । अधिमासे जन्मदिने अस्ते चगुरु-शुक्रयोः ॥ न त्यक्तव्यं गया श्राद्ध सिंहस्थे च वृहस्पतौ ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ यात्रा-मुहूर्त विचार ॥

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २।३।५।७।१०।११।१३इन तिथियों में अश्वि, मृ. पुन, पुष्य,, अनु, ह. श्र. ध. रे इन नक्षत्रों में तथा चौर,वाण, भद्रा, वैधृति. व्यतिपात और मासांत दिनादि दोषरहित समय में. यात्रा करे यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिये।

दिक्शूल ज्ञानचक्र

ईशाने बु	पूर्वे श. चं	आग्नेये चं बृ.
उत्तरे बु मं	दिक्शूल	दक्षिणे बृ
वायव्ये बु. सू	पश्चिमे शु. सू	नैर्ऋत्ये श. बृह

योगिनीवास ज्ञानचक्र

ईशाने ८।३०	पूर्वे १।६	आग्नेये ३।११
उत्तरे २।१०	योगिनी	दक्षिणे ५।१३
वायव्ये ७।१५	पश्चिमे ६।१४	नैर्ऋत्ये ४।१२

कालपाश ज्ञानचक्र

ईशाने	पूर्वे शनि	आग्नेये शक्
उत्तरे सूर्य	कालपाश	दक्षिणे गुरु
वायव्ये चन्द्र	पश्चिमे मङ्गल	नैर्ऋत्ये बुध

चन्द्रवास ज्ञानचक्र

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि	उत्तरे
मेष	वृष	मिथु.	कर्क
सिंह	क	तुला	वृ.
धन	मकर	कुम्भ	मीन

यात्रासमय दिक्शूल विचार

जिस दिशा मे दिक्शूल हो उस दिशा में यात्रा न करे। यदि अवश्य जाना हो तो उस वार के पदार्थ को भक्षन कर यात्रा करने से दिक्शूल दोष दूर हो जाता है सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्र वारे पयस्तथा। गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। दधि प्राश्यं शुक्रवारे गुरुवारे यवानपि। माषान् भुक्त्वा मंदवारे गच्छेच्छूलं न दोषभाक्।

योगिनीवास विचार

प्रतिपदादि तिथियों से चक्र में योगिनी का वास जाने और जाने वाली दिशा मे यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ योगिनी हो तो अर्थसिद्धि और सुख प्राप्त होता है, यदि संमुख और दाहिनी तरफ योगिनी हो जाये तो कष्ट-प्राप्ति और धन की हानि होती है।

कालपाश विचार

सूर्यादिवारों मे जिस दिशा में काल का वास हो उसकी समुख वाली दिशा में पाश रहता है किंतु रात में काल का वास दिन की दिशा से विपरीत दिशा में होता है (चिंतामणी) जानेवाली दिशा से काल का दाहिनी तरफ और पाश का बाईं तरफ होना शुभदायक होता है

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास संमुख और दाहनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथव बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

भद्राफल—विवादे शस्त्रसंहारे भयार्ते राजदर्शने। रोगर्ते वंधगमने भद्रा श्रेष्टतम स्मृता ॥ **सूर्यवास फल** एक पहर रात के रहने से लेकर पहर दिन चढ़े तक सूर्य का वास पूर्व में होता है, फिर दोपहर तक दक्षिण में होता है। इसके पीछे एक पहर दिन रहने में पहर रात गई तक सूर्य का वाप पश्चिम में रहता है, फिर एक पहर रात रहने तक उत्तर में वास होता है। यात्रा के समय दाहिना और बायां सूर्य शुभ होता है। प्रवेशमें सम्मुख और पीछे सूर्य रहे तो शुभ होता है।

दिशा में विशेष समय का विचार

(वसिष्ट) पूर्वाह्णेप्युत्तरां गच्छेत्प्राचीमध्यं दिनं तथा। दक्षिणां चापरन्हे तु पश्चिमामर्धरात्रके ॥ न तत्रांगारको ऽग्निष्टिव्यतिपातो न वधृतिः। सिध्यन्ति सर्वकार्याणि यात्रायां दक्षिण रविः ॥

दिन में चतुर्घटिका

रवि	चन्द्र	मङ्गला	बुध	बृह	शुक्र	शनि	घटी
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	०३।४५
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	०७।३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	११।१५
[illegible]	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५।००
[illegible]	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८।४५
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२।३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।१५
उ[illegible]	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०।००

रात्रि में चतुर्घटिका

रवि	चन्द्र.	मङ्गल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	घटी शु.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	०३।४५
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	०७।३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	११।१५
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१५।००
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८।४५
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	२२।३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	२६।१५
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	३०।००

समय शूल ज्ञान—उषा काल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्ध रात्रि में उत्तर को और मध्यान्ह काल में दक्षिण को नही जाना चाहिये।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल—करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष संक्रांतिदोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु केतु के दाव को सम्मुख चन्दमा दूर करता है।

यात्रा म सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठा कर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े यात्रा सफल होगी।

पंचक वर्जित कर्म—पंचकों में खाट बनाना, प्रेत का दाह, प्रेत क्रिया, काष्ठ, घास आदि का लेना. दक्षिण दिशा में गमन इत्यादि कार्य नहीं करने चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सूर्य उदय ज्ञान—नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है, इसमें अभीष्ट स्थान के रेखान्तर टाईम को युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट अक्षांश का स्टैंडर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आएगा।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अं.	०°	१०°	२०°	३०°	३५	४०°	४५	५०°	५२	५४	५६	५८°	६०
जन	५।५९	६।१७	६।३५	६।५६	७।०८	७।०२	७।३९	७।५९	८।०८	८।२०	८।३२	८।४६	९।०३
२	६। ०	६।१७	६।३५	६।५६	७।०८	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।१९	८।३२	८।४६	९।०३
३	६। ०	६।१८	६।३६	६।५६	७।०८	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।१९	८।३१	८।४६	९।०२
४	६। १	६।१८	६।३६	६।५७	७।०९	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।१९	८।३१	८।४५	९।०२
५	६। १	६।१८	६।३६	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५९	८।०८	८।१९	८।३१	८।४५	९।०१
६	६। २	६।१९	६।३६	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०८	८।१८	८।३१	८।४४	९।००
७	६। २	६।१९	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०७	८।१८	८।३१	८।४३	८।५९
८	६। ३	६।१९	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०७	८।१७	८।३०	८।४३	८।५८
९	६। ३	६।२०	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०६	८।१७	८।३०	८।४३	८।५७
१०	६। ४	६।२०	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५७	८।०६	८।१६	८।२९	८।४१	८।५६
११	६। ४	६।२०	६।३८	६।५७	७।०९	७।२२	७।३७	७।५७	८।०५	८।१५	८।२७	८।४०	८।५५
१२	६। ४	६।२१	६।३८	६।५७	७।०९	७।२२	७।३७	७।५६	८।०५	८।१५	८।२६	८।३९	८।५४
१३	६। ५	६।२१	६।३८	६।५७	७।०८	७।२१	७।३७	७।५६	८।०४	८।१४	८।२५	८।३९	८।५३
१४	६। ५	६।२१	६।३८	६।५७	७।०८	७।२१	७।३६	७।५५	८।०३	८।१३	८।२४	८।३६	८।५१
१५	६। ६	६।२२	६।३८	६।५७	७।०८	७।२१	७।३६	७।५५	८।०३	८।१२	८।२३	८।३५	८।५०
१६	६। ६	६।२२	६।३८	६।५७	७।०८	७।२०	७।३५	७।५४	८।०२	८।११	८।२२	८।३४	८।४९
१७	६। ६	६।२२	६।३८	६।५७	७।०८	७।२०	७।३५	७।५४	८।०१	८।१०	८।२१	८।३३	८।४७
१८	६। ७	६।२२	६।३८	६।५६	७।०७	७।१९	७।३४	७।५३	८।००	८।०९	८।२०	८।३१	८।४५
१९	६। ७	६।२२	६।३८	६।५६	७।०७	७।१९	७।३३	७।५२	७।५९	८।०८	८।१८	८।३१	८।४४
२०	६। ७	६।२३	६।३८	६।५६	७।०७	७।१८	७।३३	७।५१	७।५८	८।०७	८।१७	८।२९	८।४२
२१	६। ८	६।२३	६।३८	६।५६	७।०६	७।१८	७।३२	७।५०	७।५७	८।०६	८।१५	८।२७	८।४०
२२	६। ८	६।२३	६।३८	६।५६	७।०६	७।१७	७।३१	७।४९	७।५६	८।०५	८।१४	८।२६	८।३८
२३	६। ८	६।२३	६।३८	६।५५	७।०५	७।१७	७।३०	७।४८	७।५४	८।०४	८।१३	८।२३	८।३६
२४	६। ८	६।२३	६।३८	६।५५	७।०५	७।१६	७।३०	७।४६	७।५३	८।०२	८।११	८।२२	८।३४
२५	६। ९	६।२३	६।३७	६।५५	७।०४	७।१६	७।२९	७।४५	७।५२	८।००	८।१०	८।२०	८।३२
२६	६। ९	६।२३	६।३७	६।५४	७।०४	७।१५	७।२८	७।४३	७।५१	७।५९	८।०८	८।१९	८।३०
२७	६। ९	६।२३	६।३७	६।५४	७।०३	७।१४	७।२७	७।४२	७।४९	७।५७	८।०६	८।१६	८।२८
२८	६। ९	६।२३	६।३७	६।५३	७।०३	७।१३	७।२६	७।४१	७।४८	७।५६	८।०५	८।१४	८।२६
२९	६।१०	६।२३	६।३७	६।५३	७।०२	७।१३	७।२५	७।४०	७।४७	७।५४	८।०३	८।१३	८।२४
३०	६।१०	६।२३	६।३७	६।५२	७।०१	७।१२	७।२४	७।३८	७।४५	७।५३	८।०१	८।११	८।२२
३१	६।१०	६।२३	६।३७	६।५२	७।०१	७।११	७।२३	७।३७	७।४४	७।५१	७।५९	८।०९	८।२०
फर	६।१०	६।२३	६।३६	६।५१	७।००	७।१०	७।२२	७।३६	७।४२	७।४९	७।५८	८।०७	८।१७
२	६।१०	६।२३	६।३६	६।५१	६।५९	७।०९	७।२१	७।३४	७।४१	७।४८	७।५६	८।०५	८।१५
३	६।१०	६।२२	६।३५	६।५०	६।५९	७।०८	७।१९	७।३३	७।३९	७।४६	७।५४	८।०३	८।१३
४	६।१०	६।२२	६।३५	६।५०	६।५८	७।०७	७।१८	७।३२	७।३८	७।४४	७।५२	८।०१	८।१०
५	६।१०	६।२२	६।३५	६।४९	६।५७	७।०६	७।१७	७।३०	७।३६	७।४२	७।५०	७।५८	८।०८
६	६।१०	६।२२	६।३४	६।४८	६।५६	७।०५	७।१६	७।२८	७।३४	७।४१	७।४८	७।५६	८।०५

अं.	०°	१०°	२०°	३०	३५°	४०	४५	५०	५२	५४	५६	५८	६०
७	६।११	६।२२	६।३४	६।४७	६।५५	७।०४	७।१४	७।२७	७।३३	७।३९	७।४६	७।५३	८।०३
८	६।११	६।२२	६।३४	६।४७	६।५४	७।०३	७।१३	७।२५	७।३१	७।३७	७।४४	७।५२	८।००
९	६।११	६।२१	६।३३	६।४६	६।५३	७।०२	७।१२	७।२४	७।२९	७।३४	७।४२	७।४९	७।५८
१०	६।११	६।२१	६।३३	६।४४	६।५२	७।०१	७।१०	७।२२	७।२७	७।३३	७।४०	७।४६	७।५५
११	६।११	६।२१	६।३२	६।४४	६।५१	७।००	७।०९	७।२०	७।२५	७।३१	७।३७	७।४५	७।५३
१२	६।११	६।२१	६।३२	६।४४	६।५०	६।५८	७।०८	७।१८	७।२४	७।२९	७।३५	७।४२	७।५०
१३	६।११	६।२०	६।३१	६।४३	६।४९	६।५७	७।०६	७।१७	७।२२	७।२७	७।३५	७।४०	७।४७
१४	६।११	६।२०	६।३१	६।४२	६।४८	६।५६	७।०५	७।१५	७।२०	७।२५	७।३३	७।३८	७।४५
१५	६।११	६।२०	६।३०	६।४१	६।४७	६।५५	७।०३	७।१३	७।१८	७।२३	७।३१	७।३५	७।४२
१६	६।११	६।२०	६।३०	६।४०	६।४६	६।५३	७।०२	७।११	७।१६	७।२१	७।२९	७।३२	७।३९
१७	६।११	६।१९	६।२९	६।३९	६।४४	६।५२	७।००	७।१०	७।१४	७।१९	७।२६	७।३०	७।३७
१८	६।११	६।१९	६।२८	६।३९	६।४३	६।५१	६।५८	७।०८	७।१२	७।१७	७।२२	७।२७	७।३४
१९	६।११	६।१९	६।२८	६।३८	६।४२	६।५०	६।५७	७।०६	७।१०	७।१४	७।२०	७।२५	७।३१
२०	६।१०	६।१९	६।२७	६।३७	६।४१	६।४८	६।५५	७।०४	७।०८	७।१२	७।१७	७।२२	७।२८
२१	६।१०	६।१८	६।२६	६।३६	६।४०	६।४७	६।५४	७।०२	७।०६	७।१०	७।१५	७।२०	७।२६
२२	६।१०	६।१८	६।२६	६।३५	६।३९	६।४५	६।५२	७।००	७।०४	७।०८	७।१२	७।१७	७।२३
२३	६।१०	६।१७	६।२५	६।३४	६।३८	६।४४	६।५१	६।५८	७।०२	७।०६	७।१०	७।१५	७।२०
२४	६।१०	६।१७	६।२४	६।३३	६।३६	६।४३	६।४९	६।५६	७।००	७।०३	७।०८	७।१२	७।१७
२५	६।१०	६।१६	६।२४	६।३२	६।३५	६।४१	६।४७	६।५४	६।५८	७।०१	७।०५	७।०९	७।१४
२६	६।१०	६।१६	६।२३	६।३१	६।३४	६।४०	६।४६	६।५२	६।५५	६।५९	७।०३	७।०७	७।११
२७	६।१०	६।१६	६।२२	६।३०	६।३३	६।३८	६।४४	६।५०	६।५३	६।५६	७।००	७।०४	७।०८
२८	६।१०	६।१५	६।२२	६.२९	६।३२	६।३६	६।४२	६।४८	६।५१	६।५४	६।५७	७।०४	७।०५
मा.	६।०९	६।१५	६।२०	६।२६	६।३०	६।३४	६।३९	६।४४	६।४७	६।५०	६।५३	६।५६	
२	६।०९	६।१४	६।१९	६।२५	६।२९	६।३३	६।३७	६।४२	६।४५	६।४७	६।५०	६।५३	
३	६।०९	६।१४	६।१९	६।२४	६।२८	६।३१	६।३५	६।४०	६।४२	६।४५	६।४८	६।५०	
४	६।०९	६।१३	६।१८	६।२३	६।२६	६।३०	६।३४	६।३८	६।४०	६।४२	६।४५	६।४८	
५	६।०८	६।१३	६।१७	६।२२	६।२५	६।२८	६।३२	६।३६	६।३८	६।४०	६।४२	६।४५	
६	६।०८	६।१२	६।१६	६।२१	६।२४	६।२६	६।३०	६।३४	६।३६	६।३८	६।४०	६।४२	
७	६।०८	६।१२	६।१५	६।२०	६।२२	६।२५	६।२८	६।३२	६।३३	६।३५	६।३७	६।४०	
८	६।०८	६।११	६।१५	६।१९	६।२१	६।२३	६।२७	६।३०	६।३१	६।३३	६।३५	६।३७	
९	६।०७	६।११	६।१४	६।१८	६।२०	६।२२	६।२६	६।२८	६।२९	६।३०	६।३२	६।३४	
१०	६।०७	६।१०	६।१३	६।१६	६।१८	६।२०	६।२४	६।२५	६।२७	६।२८	६।३०	६।३१	
११	६।०७	६।१०	६।१२	६।१५	६।१७	६।१९	६।२१	६।२३	६।२४	६।२६	६।२७	६।२८	
१२	६।०७	६।०९	६।११	६।१४	६।१६	६।१७	६।१९	६।२१	६।२२	६।२२	६।२४	६।२७	
१३	६।०६	६।०८	६।१०	६।१३	६।१४	६।१६	६।१७	६।१९	६।२०	६।२१	६।२२	६।२३	
१४	६।०६	६।०८	६।१०	६।१२	६।१३	६।१४	६।१५	६।१७	६।१७	६।१८	६।१९	६।२०	
१५	६।०६	६।०७	६।०९	६।१०	६।११	६।१२	६।१३	६।१५	६।१५	६।१६	६।१७	६।१७	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ यात्रा-मुहूर्त विचार ॥

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २।३।५।७।१०।११।१३ इन तिथियों में अश्वि, मृ. पुन, पुष्य,, अनु, ह. श्र. ध. रे इन नक्षत्रों में तथा चौर,वाण, भद्रा, वैधृति. व्यतिपात और मासांत दिनादि दोषरहित समय में, यात्रा करे यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिये।

दिक्शूल ज्ञानचक्र

ईशाने बु	पूर्वे श. चं	आग्नेये चं बृ.
उत्तरे बु मं	दिक्शुल	दक्षिणे बृ
वायव्ये बु. मू	पश्चिमे श. मू	नैऋत्ये श. बृह

योगिनीवास ज्ञानचक्र

ईशाने ८।३०	पूर्वे १।६	आग्नेये ३।११
उत्तरे २।१०	योगिनी	दक्षिणे ५।१३
वायव्ये ७।१५	पश्चिमे ६।१४	नैऋत्ये ४।१२

कालपाश ज्ञानचक्र

ईशाने	पूर्वे शनि	आग्नेये शक्र
उत्तरे सूर्य	कालपाश	दक्षिणे गुरु
वायव्ये चन्द्र	पश्चिमे मङ्गल	नैऋत्ये बुध

चन्द्रवास ज्ञानचक्र

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि	उत्तरे
मेष	वृष	मिथु.	कर्क
सिंह	क.	तुला	वृ.
धन	मकर	कुम्भ	मीन

यात्रासमय दिक्शूल विचार

जिस दिशा में दिक्शूल हो उस दिशा में यात्रा न करे। यदि अवश्य जाना हो तो उस वार के पदार्थ को भक्षन कर यात्रा करने से दिक्शूल दोष दूर हो जाता है सूर्यवारे घृतं प्राश्यं चन्द्र वारे पयस्तथा। गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। दधि प्राश्यं शुक्रवारे गुरुवारे यवानपि। माषान् भुक्त्वा मंदवारे गच्छेच्छूलं न दोषभाक्।

योगिनीवास विचार

प्रतिपदादि तिथियों से चक्र में योगिनी का वास जाने और जाने वाली दिशा से यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ योगिनी हो तो अर्थसिद्धि और सुख प्राप्त होता है, यदि संमुख और दाहिनी तरफ योगिनी हो जाये तो कष्ट-प्राप्ति और धन की हानि होती है।

कालपाश विचार

सूर्यादिवारों में जिस दिशा में काल का वास हो उसकी समुख वाली दिशा में पाश रहता है किंतु रात में काल का वास दिन की दिशा से विपरीत दिशा में होता है (चिंतामणी) जानेवाली दिशा से काल का दाहिनी तरफ और पाश का बाईं तरफ होना शुभदायक होता है

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास संमुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथव बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

भद्राफल—विवादे शस्त्रसंहारे भयार्ते राजदर्शने। रोगर्ते वैद्यगमने भद्रा श्रेष्टतम स्मृता ॥ **सूर्यवास फल** एक पहर रात के रहने से लेकर पहर दिन चढ़े तक सूर्य का वास पूर्व में होता है, फिर दोपहर तक दक्षिण में होता है। इसके पीछे एक पहर दिन रहने में पहर रात गई तक सूर्य का वाप पश्चिम में रहता है, फिर एक पहर रात रहने तक उत्तर में वास होता है। यात्रा के समय दाहिना और बायां सूर्य शुभ होता है। प्रवेशमें सम्मुख और पीछे सूर्य रहे तो शुभ होता है।

दिशा में विशेष समय का विचार

(वसिष्ट) पूर्वाह्णेप्युत्तरां गच्छेत्प्राचीमध्यं दिनं तथा। दक्षिणां चापरन्हे तु पश्चिमामर्धरात्रके ॥ न तत्रांगारको दृष्टिर्व्यतिपातो न वधृतिः। सिध्यन्ति सर्वकार्याणि यात्रायां दक्षिण रविः ॥

दिन में चतुर्घटिका

रवि	चन्द्र	मङ्गला	बुध	बृह	शुक्र	शनि	घटी
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	०३।४५
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	०७।३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	११।१५
[illegible]	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१५।००
[illegible]	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८।४५
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२२।३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२६।१५
उ[illegible]	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	३०।००

रात्रि में चतुर्घटिका

रवि	चन्द्र.	मङ्गल	बुध	बृह.	शुक्र	शनि	घटी शु.
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	०३।४५
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	०७।३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	११।१५
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१५।००
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१८।४५
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	२२।३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	२६।१५
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	३०।००

समय शूल ज्ञान—उषा काल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्ध रात्रि में उत्तर को और मध्यान्ह काल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिये।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल—करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष संक्रांतिदोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठा कर चले इसी तरह सवारी पर चढ़े यात्रा सफल होगी।

पंचक वर्जित कर्म—पंचकों में खाट बनाना, प्रेत का दाह, प्रेत क्रिया, काष्ठ, घास आदि का लेना, दक्षिण दिशा में गमन इत्यादि कार्य नहीं करने चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य उदय ज्ञान—नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है, इसमें अभीष्ट स्थान के रेखान्तर टाईम को युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट अक्षांश का स्टैंडर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आएगा।

अं.	t०°	t१०°	t२०°	t३०°	t३५	t४०°	t४५	t५०°	t५२	t५४	t५६	t५८°	t६०	अं.	t०°	t१०°	t२०°	t३०	t३५°	t४०	t४५	t५०	t५२	t५४	t५६	t५८°	t६०
जन	५।५९	६।१७	६।३५	६।५६	७।०८	७।०२	७।३९	७।५९	८।०८	८।२०	८।३२	८।४६	९।०३	७	६।११	६।२२	६।३४	६।४७	६।५५	७।०४	७।१४	७।२७	७।३३	७।३९	७।४६	७।५३	८।०३
२	६। ०	६।१७	६।३५	६।५६	७।०८	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।१९	८।३२	८।४६	९।०३	८	६।११	६।२२	६।३४	६।४७	६।५४	७।०३	७।१३	७।२५	७।३१	७।३७	७।४४	७।५२	८।००
३	६। ०	६।१८	६।३६	६।५६	७।०८	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।१९	८।३१	८।४६	९।०२	९	६।११	६।२१	६।३३	६।४६	६।५३	७।०२	७।१२	७।२४	७।२९	७।३४	७।४२	७।४९	७।५८
४	६। १	६।१८	६।३६	६।५७	७।०९	७।२२	७।३९	७।५९	८।०८	८।१९	८।३१	८।४५	९।०२	१०	६।११	६।२१	६।३३	६।४४	६।५२	७।०१	७।१०	७।२२	७।२७	७।३३	७।४०	७।४६	७।५५
५	६। १	६।१८	६।३६	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५९	८।०८	८।१९	८।३१	८।४५	९।०१	११	६।११	६।२१	६।३२	६।४४	६।५१	७।००	७।०९	७।२०	७।२५	७।३१	७।३७	७।४५	७।५३
६	६। २	६।१९	६।३६	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०८	८।१८	८।३१	८।४४	९।००	१२	६।११	६।२१	६।३२	६।४४	६।५०	६।५८	७।०८	७।१८	७।२४	७।२९	७।३५	७।४२	७।५०
७	६। २	६।१९	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०७	८।१८	८।३१	८।४३	८।५९	१३	६।११	६।२०	६।३१	६।४३	६।४९	६।५७	७।०६	७।१७	७।२२	७।२७	७।३५	७।४०	७।४७
८	६। ३	६।१९	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०७	८।१७	८।३०	८।४३	८।५८	१४	६।११	६।२०	६।३१	६।४२	६।४८	६।५६	७।०५	७।१५	७।२०	७।२५	७।३३	७।३८	७।४५
९	६। ३	६।२०	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५८	८।०६	८।१७	८।३०	८।४३	८।५७	१५	६।११	६।२०	६।३०	६।४१	६।४७	६।५५	७।०३	७।१३	७।१८	७।२३	७।३१	७।३५	७।४२
१०	६। ४	६।२०	६।३७	६।५७	७।०९	७।२२	७।३८	७।५७	८।०६	८।१६	८।२९	८।४१	८।५६	१६	६।११	६।२०	६।३०	६।४०	६।४६	६।५३	७।०२	७।११	७।१६	७।२१	७।२९	७।३२	७।३९
११	६। ४	६।२०	६।३८	६।५७	७।०९	७।२२	७।३७	७।५७	८।०५	८।१५	८।२७	८।४०	८।५५	१७	६।११	६।१९	६।२९	६।३९	६।४४	६।५२	७।००	७।१०	७।१४	७।१९	७।२६	७।३०	७।३७
१२	६। ४	६।२१	६।३८	६।५७	७।०९	७।२२	७।३७	७।५६	८।०५	८।१५	८।२६	८।३९	८।५४	१८	६।११	६।१९	६।२८	६।३९	६।४३	६।५१	७।५८	७।०८	७।१२	७।१७	७।२२	७।२७	७।३४
१३	६। ५	६।२१	६।३८	६।५७	७।०८	७।२१	७।३७	७।५६	८।०४	८।१४	८।२५	८।३९	८।५३	१९	६।११	६।१९	६।२८	६।३८	६।४२	६।५०	६।५७	७।०६	७।१०	७।१४	७।२०	७।२५	७।३१
१४	६। ५	६।२१	६।३८	६।५७	७।०८	७।२१	७।३६	७।५५	८।०३	८।१३	८।२४	८।३६	८।५१	२०	६।१०	६।१९	६।२७	६।३७	६।४१	६।४८	६।५५	७।०४	७।०८	७।१२	७।१७	७।२२	७।२८
१५	६। ६	६।२२	६।३८	६।५७	७।०८	७।२१	७।३६	७।५५	८।०३	८।१२	८।२३	८।३५	८।५०	२१	६।१०	६।१८	६।२६	६।३६	६।४०	६।४७	६।५४	७।०२	७।०६	७।१०	७।१५	७।२०	७।२६
१६	६। ६	६।२२	६।३८	६।५७	७।०८	७।२०	७।३५	७।५४	८।०२	८।११	८।२२	८।३४	८।४९	२२	६।१०	६।१८	६।२६	६।३५	६।३९	६।४५	६।५२	७।००	७।०४	७।०८	७।१२	७।१७	७।२३
१७	६। ६	६।२२	६।३८	६।५७	७।०८	७।२०	७।३५	७।५४	८।०१	८।१०	८।२१	८।३३	८।४७	२३	६।१०	६।१७	६।२५	६।३४	६।३८	६।४४	६।५१	६।५८	७।०२	७।०६	७।१०	७।१५	७।२०
१८	६। ७	६।२२	६।३८	६।५६	७।०७	७।१९	७।३४	७।५३	८।००	८।०९	८।२०	८।३१	८।४५	२४	६।१०	६।१७	६।२४	६।३३	६।३६	६।४३	६।४९	६।५६	७।००	७।०३	७।०८	७।१२	७।१७
१९	६। ७	६।२२	६।३८	६।५६	७।०७	७।१९	७।३३	७।५२	७।५९	८।०८	८।१८	८।३१	८।४४	२५	६।१०	६।१६	६।२४	६।३२	६।३५	६।४१	६।४७	६।५४	६।५८	७।०१	७।०५	७।०९	७।१४
२०	६। ७	६।२३	६।३८	६।५६	७।०७	७।१८	७।३३	७।५१	७।५८	८।०७	८।१७	८।२९	८।४२	२६	६।१०	६।१६	६।२३	६।३१	६।३४	६।४०	६।४६	६।५२	६।५५	६।५९	७।०३	७।०७	७।११
२१	६। ८	६।२३	६।३८	६।५६	७।०६	७।१८	७।३२	७।५०	७।५७	८।०६	८।१५	८।२७	८।४०	२७	६।१०	६।१६	६।२२	६।३०	६।३३	६।३८	६।४४	६।५०	६।५३	६।५६	७।००	७।०४	७।०८
२२	६। ८	६।२३	६।३८	६।५६	७।०६	७।१७	७।३१	७।४९	७।५६	८।०५	८।१४	८।२६	८।३८	२८	६।१०	६।१५	६।२२	६।२९	६।३२	६।३६	६।४२	६।४८	६।५१	६।५४	६।५७	७।०४	७।०५
२३	६। ८	६।२३	६।३८	६।५५	७।०५	७।१७	७।३०	७।४८	७।५४	८।०४	८।१३	८।२३	८।३६	मा.	६।०९	६।१५	६।२०	६।२६	६।३०	६।३४	७।३९	६।४४	६।४७	६।५०	६।५३	६।५६	
२४	६। ८	६।२३	६।३८	६।५५	७।०५	७।१६	७।३०	७।४६	७।५३	८।०२	८।११	८।२२	८।३४	२	६।०९	६।१४	६।१९	६।२५	६।२९	६।३३	६।३७	६।४२	६।४५	६।४७	६।५०	६।५३	
२५	६। ९	६।२३	६।३७	६।५५	७।०४	७।१६	७।२९	७।४५	७।५२	८।००	८।१०	८।२०	८।३२	३	६।०९	६।१४	६।१९	६।२४	६।२८	६।३१	६।३५	६।४०	६।४२	६।४५	६।४८	६।५०	
२६	६। ९	६।२३	६।३७	६।५४	७।०४	७।१५	७।२८	७।४३	७।५१	७।५९	८।०८	८।१९	८।३०	४	६।०९	६।१३	६।१८	६।२३	६।२६	६।३०	६।३४	६।३८	६।४०	६।४२	६।४५	६।४८	
२७	६। ९	६।२३	६।३७	६।५४	७।०३	७।१४	७।२७	७।४२	७।४९	७।५७	८।०६	८।१६	८।२८	५	६।०८	६।१३	६।१७	६।२२	६।२५	६।२८	६।३२	६।३६	६।३८	६।४०	६।४२	६।४५	
२८	६। ९	६।२३	६।३७	६।५३	७।०३	७।१३	७।२६	७।४१	७।४८	७।५६	८।०५	८।१४	८।२६	६	६।०८	६।१२	६।१६	६।२१	६।२४	६।२६	६।३०	६।३४	६।३६	६।३८	६।४०	६।४२	
२९	६।१०	६।२३	६।३७	६।५३	७।०२	७।१३	७।२५	७।४०	७।४७	७।५४	८।०३	८।१३	८।२४	७	६।०८	६।१२	६।१५	६।२०	६।२२	६।२५	६।२८	६।३२	६।३३	६।३५	६।३७	६।४०	
३०	६।१०	६।२३	६।३७	६।५२	७।०१	७।१२	७।२४	७।३८	७।४५	७।५३	८।०१	८।११	८।२२	८	६।०८	६।११	६।१५	६।१९	६।२१	६।२३	६।२७	६।३०	६।३१	६।३३	६।३५	६।३७	
३१	६।१०	६।२३	६।३७	६।५२	७।०१	७।११	७।२३	७।३७	७।४४	७।५१	७।५९	८।०९	८।२०	९	६।०७	६।११	६।१४	६।१८	६।२०	६।२२	६।२६	६।२८	६।२९	६।३०	६।३२	६।३४	
फर	६।१०	६।२३	६।३६	६।५१	७।००	७।१०	७।२२	७।३६	७।४२	७।४९	७।५८	८।०७	८।१७	१०	६।०७	६।१०	६।१३	६।१६	६।१८	६।२०	६।२४	६।२५	६।२७	६।२८	६।३०	६।३१	
२	६।१०	६।२३	६।३६	६।५१	६।५९	७।०९	७।२१	७।३४	७।४१	७।४८	७।५६	८।०५	८।१५	११	६।०७	६।१०	६।१२	६।१५	६।१७	६।१९	६।२१	६।२३	६।२४	६।२६	६।२७	६।२८	
३	६।१०	६।२२	६।३५	६।५०	६।५९	७।०८	७।१९	७।३३	७।३९	७।४६	७।५४	८।०३	८।१३	१२	६।०७	६।०९	६।११	६।१४	६।१६	६।१७	६।१९	६।२१	६।२२	६।२२	६।२४	६।२७	
४	६।१०	६।२२	६।३५	६।५०	६।५८	७।०७	७।१८	७।३२	७।३८	७।४५	७।५२	८।०१	८।१०	१३	६।०६	६।०८	६।१०	६।१३	६।१४	६।१६	६।१७	६।१९	६।२०	६।२१	६।२२	६।२३	
५	६।१०	६।२२	६।३५	६।४९	६।५७	७।०६	७।१७	७।३०	७।३६	७।४२	७।५०	७।५८	८।०८	१४	६।०६	६।०८	६।१०	६।१२	६।१३	६।१४	६।१५	६।१७	६।१७	६।१८	६।१९	६।२०	
६	६।१०	६।२२	६।३४	६।४८	६।५६	७।०५	७।१६	७।२८	७।३४	७।४१	७।४८	७।५६	८।०५	१५	६।०६	६।०७	६।०९	६।१०	६।११	६।१२	६।१३	६।१५	६।१५	६।१६	६।१७	६।१७	

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य उदय ज्ञान—नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है, इसमें अभीष्ट स्थान के रेखान्तर टाईम को युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट अक्षांश का स्टैंडर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आएगा।

मास	ता.	t०°	t१०°	t२०°	t३०°	t३५°	t४०°	t४५°	t५०°	t५२°	t५४°	t५६°	t५८°
मार्च	१६	६।५	६।७	६।८	६।९	६।१०	६।११	६।१२	६।१२	६।१३	६।१३	६।१४	६।१४
	१७	६।५	६।६	६।७	६।८	६।९	६।९	६।१०	६।१०	६।११	६।१२	६।११	६।१२
	१८	६।५	६।६	६।६	६।७	६।८	६।८	६।८	६।८	६।८	६।८	६।९	६।९
	१९	६।५	६।५	६।५	६।६	६।६	६।६	६।६	६।६	६।६	६।६	६।६	६।६
	२०	६।४	६।४	६।४	६।४	६।४	६।४	६।४	६।४	६।४	६।३	६।३	६।३
	२१	६।४	६।४	६।४	६।३	६।२	६।२	६।२	६।२	६।१	६।१	६।१	६।०
	२२	६।४	६।३	६।३	६।२	६।०	६।०	५।५९	५।५९	५।५९	५।५८	५।५८	५।५८
	२३	६।३	६।३	६।२	६।१	५।५९	५।५९	५।५८	५।५७	५।५७	५।५६	५।५५	५।५५
	२४	६।३	६।२	६।१	६।०	५।५८	५।५८	५।५७	५।५५	५।५४	५।५३	५।५३	५।५२
	२५	६।३	६।२	६।०	५।५८	५।५६	५।५६	५।५५	५।५३	५।५२	५।५१	५।५१	५।४९
	२६	६।२	६।१	५।५९	५।५७	५।५५	५।५५	५।५३	५।५१	५।५०	५।४९	५।४७	५।४६
	२७	६।२	६।०	५।५८	५।५६	५।५३	५।५३	५।५१	५।४८	५।४७	५।४६	५।४५	५।४३
	२८	६।२	५।५९	५।५७	५।५५	५।५१	५।५१	५।४९	५।४६	५।४५	५।४४	५।४२	५।४०
	२९	६।२	५।५९	५।५७	५।५३	५।५०	५।५०	५।४७	५।४४	५।४३	५।४१	५।३९	५।३८
	३०	६।१	५।५९	५।५६	५।५२	५।४७	५।४८	५।४५	५।४२	५।४१	५।३८	५।३७	५।३५
	३१	६।१	५।५८	५।५५	५।५१	५।४६	५।४६	५।४३	५।४२	५।३९	५।३४	५।३४	५।३२
अप्रैल	१	६।१	५।५८	५।५४	५।५०	५।४८	५।४४	५।४२	५।३८	५।३६	५।३४	५।३३	५।२९
	२	६।०	५।५७	५।५३	५।४९	५।४६	५।४३	५।४०	५।३६	५।३४	५।३१	५।२९	५।२६
	३	६।०	५।५६	५।५२	५।४७	५।४५	५।४२	५।३८	५।३३	५।३१	५।२९	५।२६	५।२४
	४	६।०	५।५६	५।५१	५।४६	५।४३	५।४०	५।३६	५।३१	५।२९	५।२६	५।२४	५।२१
	५	५।५९	५।५५	५।५१	५।४५	५।४२	५।३८	५।३४	५।२९	५।२७	५।२४	५।२१	५।१९
	६	५।५९	५।५५	५।५०	५।४४	५।४१	५।३७	५।३२	५।२७	५।२६	५।२२	५।१९	५।१५
	७	५।५९	५।५४	५।४८	५।४२	५।३९	५।३५	५।३०	५।२५	५।२२	५।१९	५।१६	५।१२
	८	५।५९	५।५४	५।४८	५।४२	५।३८	५।३४	५।२९	५।२३	५।१९	५।१७	५।१३	५।१०
	९	५।५८	५।५३	५।४७	५।४०	५।३७	५।३२	५।२७	५।२०	५।१६	५।१४	५।११	५।७
	१०	५।५८	५।५२	५।४६	५।३९	५।३५	५।३१	५।२५	५।१८	५।१४	५।१२	५।८	५।४
	११	५।५८	५।५२	५।४५	५।३८	५।३४	५।२९	५।२३	५।१६	५।१३	५।१०	५।६	५।१
	१२	५।५७	५।५१	५।४५	५।३७	५।३३	५।२८	५।२१	५।१४	५।११	५।७	५।०	४।५८
	१३	५।५७	५।५१	५।४४	५।३५	५।३१	५।२६	५।२०	५।१२	५।९	५।४	५।८	४।५६
	१४	५।५७	५।५०	५।४३	५।३५	५।३०	५।२४	५।१८	५।१०	५।६	५।२	४।५५	४।५३
	१५	५।५७	५।५०	५।४२	५।३४	५।२९	५।२३	५।१९	५।८	५।४	५।०	४।५३	४।५०
	१६	५।५६	५।४९	५।४१	५।३३	५।२७	५।२१	५।१४	५।६	५।२	४।५८	४।५०	४।४७
	१७	५।५६	५।४९	५।४१	५।३१	५।२६	५।२०	५।१३	५।४	५।०	४।५५	४।४८	४।४४
	१८	५।५६	५।४८	५।४०	५।३०	५।२५	५।१८	५।१२	५।२	४।५८	४।५३	४।४५	४।४२
	१९	५।५६	५।४८	५।३९	५।२९	५।२४	५।१७	५।९	५।०	४।५६	४।५१	४।४३	४।४०
	२०	५।५६	५।४७	५।३९	५।२८	५।२२	५।१६	५।८	४।५८	४।५३	४।४८	४।४०	४।३७
	२१	५।५५	५।४७	५।३८	५।२७	५।२१	५।१५	५।५	४।५६	४।५१	४।४६	४।३९	४।३४

मास	ता.	t०°	t१०°	t२०°	t३०°	t३५°	t४०°	t४५	t५०	t५२°	t५४°	t५६°	t५८°
अप्रैल	२२	५।५५	५।४६	५।३७	५।२६	५।२०	५।१३	५।४	४।५४	४।४९	४।४४	४।३६	४।३१
	२३	५।५५	५।४६	५।३६	५।२५	५।१९	५।११	५।२	४।५२	४।४७	४।४२	४।३३	४।२९
	२४	५।५५	५।४५	५।३६	५।२४	५।१७	५।१०	५।१	४।५०	४।४५	४।३९	४।३०	४।२६
	२५	५।५५	५।४५	५।३५	५।२३	५।१६	५।९	४।५९	४।४८	४।४३	४।३७	४।२८	४।२४
	२६	५।५४	५।४५	५।३४	५।२२	५।१४	५।८	४।५८	४।४६	४।४१	४।३५	४।२५	४।२१
	२७	५।५४	५।४४	६।३४	५।२१	५।१४	५।५	४।५६	४।४४	४।३९	४।३३	४।२३	४।१८
	२८	५।५४	५।४४	५।३३	५।२०	५।१३	५।४	४।५४	४।४२	४।३७	४।३१	४।२०	४।१६
	२९	५।५४	५।४४	५।३२	५।१९	५।१२	५।३	४।५३	४।४१	४।३५	४।२९	४।२०	४।१३
	३०	५।५४	५।४३	५।३२	५।१८	५।११	५।२	४।५१	४।३९	४।३३	४।२६	४।१९	४।११
मई	१	५।५४	५।४३	५।३१	५।१८	५।१०	५।०	४।५०	४।३७	४।३१	४।२४	४।१७	४।८
	२	५।५४	५।४२	५।३०	५।१६	५।९	४।५९	४।४८	४।३५	४।२९	४।२२	४।१४	४।६
	३	५।५३	५।४२	५।३०	५।१६	५।८	४।५८	४।४७	४।३४	४।२७	४।२०	४।१२	४।४
	४	५।५३	५।४२	५।२९	५।१५	५।७	४।५७	४।४५	४।३२	४।२५	४।१८	४।१०	४।१
	५	५।५३	५।४१	५।२९	५।१४	५।६	४।५६	४।४४	४।३०	४।२४	४।१६	४।८	३।५९
	६	५।५३	५।४१	५।२८	५।१३	५।५	४।५४	४।४३	४।२८	४।२२	४।१४	४।६	३।५६
	७	५।५३	५।४१	५।२८	५।१२	५।४	४।५३	४।४१	४।२७	४।२०	४।१२	४।४	३।५४
	८	५।५३	५।४०	५।२७	५।१२	५।३	४।५२	४।४०	४।२५	४।१८	४।१०	४।१	३।५२
	९	५।५३	५।४०	५।२७	५।११	५।२	४।५१	४।३९	४।२३	४।१६	४।८	३।५८	३।४९
	१०	५।५३	५।४०	५।२६	५।११	५।१	४।५०	४।३७	४।२२	४।१५	४।६	३।५७	३।४७
	११	५।५३	५।४०	५।२६	५।९	५।०	४।४९	४।३६	४।२०	४।१३	४।५	३।५५	३।४५
	१२	५।५३	५।४०	५।२५	५।९	४।५९	४।४८	४।३५	४।१९	४।११	४।३	३।५३	३।४३
	१३	५।५३	५।३९	५।२५	५।८	४।५८	४।४७	४।३४	४।१७	४।१०	४।१	३।५१	३।४०
	१४	५।५३	५।३९	५।२४	५।७	४।५७	४।४६	४।३२	४।१६	४।८	३।५९	३।५०	३।३८
	१५	५।५३	५।३९	५।२४	५।७	४।५७	४।४५	४।३१	४।१४	४।६	३।५८	३।४८	३।३६
	१६	५।५३	५।३९	५।२४	५।६	४।५६	४।४४	४।३०	४।१३	४।५	३।५६	३।४६	३।३४
	१७	५।५३	५।३९	५।२३	५।६	४।५५	४।४३	४।२९	४।१२	४।३	३।५४	३।४४	३।३२
	१८	५।५३	५।३८	५।२३	५।५	४।५४	४।४२	४।२८	४।१०	४।२	३।५३	३।४२	३।३०
	१९	५।५३	५।३८	५।२३	५।४	४।५४	४।४२	४।२७	४।९	४।१	३।५१	३।४०	३।२८
	२०	५।५३	५।३८	५।२२	५।४	४।५३	४।४१	४।२६	४।८	३।५९	३।५०	३।३९	३।२६
	२१	५।५३	५।३८	५।२२	५।३	४।५२	४।४०	४।२५	४।७	३।५८	३।४८	३।३७	३।२४
	२२	५।५३	५।३८	५।२२	५।३	४।५२	४।३९	४।२४	४।६	३।५७	३।४७	३।३६	३।२३
	२३	५।५३	५।३८	५।२१	५।२	४।५१	४।३८	४।२३	४।४	३।५५	३।४५	३।३४	३।२१
	२४	५।५३	५।३८	५।२१	५।२	४।५१	४।३८	४।२२	४।३	३।५४	३।४४	३।३२	३।१९
	२५	५।५३	५।३८	५।२१	५।२	४।५०	४।३७	४।२१	४।२	३।५३	३।४३	३।३१	३।१७
	२६	५।५३	५।३८	५।२१	५।१	४।५०	४।३६	४।२१	४।१	३।५२	३।४२	३।३०	३।१६
	२७	५।५३	५।३८	५।२१	५।१	४।४९	४।३६	४।२०	४।०	३।५१	३।४०	३।२८	३।१४
	२८	५।५४	५।३८	५।२०	५।०	४।४९	४।३५	४।१९	३।५९	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३

सूर्य उदय ज्ञान—नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है, इसमें अभीष्ट स्थान के रेखान्तर टाईम को युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट अक्षांश का स्टैंडर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आएगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य उदय ज्ञान--नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है, इसमें अभीष्ट स्थान के रेखान्तिर टाइम को युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट अक्षांश का स्टंडड टाइम में सूर्योदय निकल आएगा।

मास	ता.	t०°	t१०°	t२०°	t३०°	t३५°	t४०°	t४५°	t५०°	t५२°	t५४°	t५६°	t५८°	मास	ता.	t०°	t१०°	t२०°	t३०°	t३५°	t४०°	t४५°	t५०°	t५२°	t५४°	t५६°	t५८°
मई	२९	५।५४	५।३८	५।२०	५। ०	४।४८	४।३५	४।१८	३।५८	३।४६	३।३८	३।२६	३।११	जुला.	५	६। १	५।४४	५।२५	५। ४	४।५१	४।३७	४।१९	३।५८	३।४७	३।३५	३।२१	३। ६
	३०	५।५४	५।३८	५।२०	५। ०	४।४८	४।३४	४।१८	३।५८	३।४८	३।३७	३।२४	३।१०		६	६। १	५।४४	५।२५	५। ४	४।५१	४।३७	४।२०	३।५९	३।४८	३।३६	३।२२	३। ७
	३१	५।५४	५।३८	५।२०	५। ०	४।४८	४।३४	४।१७	३।५७	३।४७	३।३६	३।२३	३। ८		७	६। १	५।४४	५।२६	५। ५	४।५२	४।३८	४।२०	४। ०	३।४९	३।३७	३।२४	३। ८
जून	१	५।५४	५।३८	५।२०	४।५९	४।४७	४।३३	४।१७	३।५६	३।४६	३।३५	३।२२	३। ७		८	६। १	५।४४	५।२६	५। ५	४।५३	४।३८	४।२१	४। १	३।५०	३।३८	३।२५	३। ९
	२	५।५४	५।३८	५।२०	४।५९	४।४७	४।३३	४।१६	३।५५	३।४५	३।३४	३।२१	३। ६		९	६। १	५।४५	५।२७	५। ६	४।५३	४।३९	४।२२	४। २	३।५१	३।३९	३।२६	३।११
	३	५।५४	५।३८	५।२०	४।५९	४।४७	४।३२	४।१६	३।५५	३।४४	३।३३	३।२०	३। ५		१०	६। १	५।४५	५।२७	५। ६	४।५४	४।४०	४।२३	४। ३	३।५२	३।४०	३।२७	३।१३
	४	५।५४	५।३८	५।२०	४।५९	४।४६	४।३२	४।१५	३।५४	३।४४	३।३२	३।१९	३। ४		११	६। २	५।४५	५।२७	५। ७	४।५४	४।४०	४।२४	४। ४	३।५३	३।४१	३।२८	३।१५
	५	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४६	४।३२	४।१५	३।५३	३।४४	३।३२	३।१९	३। ३		१२	६। २	५।४५	५।२८	५। ७	४।५५	४।४१	४।२४	४। ५	३।५४	३।४१	३।३०	३।१६
	६	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४६	४।३१	४।१४	३।५३	३।४३	३।३१	३।१७	३। २		१३	६। २	५।४६	५।२८	५। ८	४।५६	४।४२	४।२५	४। ६	३।५५	३।४४	३।३१	३।१८
	७	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४६	४।३१	४।१४	३।५२	३।४२	३।३०	३।१७	३। १		१४	६। २	५।४६	५।२८	५। ८	४।५६	४।४२	४।२६	४। ७	३।५६	३।४५	३।३३	३।२०
	८	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४६	४।३१	४।१४	३।५२	३।४२	३।३०	३।१६	३। ०		१५	६। २	५।४६	५।२९	५। ९	४।५७	४।४३	४।२७	४। ८	३।५७	३।४६	३।३४	३।२१
	९	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४५	४।३१	४।१३	३।५१	३।४१	३।२९	३।१५	२।५९		१६	६। २	५।४६	५।२९	५। ९	४।५७	४।४४	४।२८	४। ९	३।५८	३।४८	३।३६	३।२३
	१०	५।५५	५।३८	५।२०	४।५८	४।४५	४।३१	४।१३	३।५१	३।४१	३।२९	३।१५	२।५८		१७	६। २	५।४७	५।२९	५।१०	४।५८	४।४५	४।२९	४।१०	४। ०	३।४९	३।३७	३।२५
	११	५।५६	५।३८	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१३	३।५१	३।४०	३।२८	३।१४	२।५८		१८	६। २	५।४७	५।३०	५।१०	४।५९	४।४५	४।३०	४।११	४। १	३।५०	३।३९	३।२६
	१२	५।५६	५।३९	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१३	३।५०	३।४०	३।२८	३।१४	२।५७		१९	६। ३	५।४७	५।३०	५।११	४।५९	४।४६	४।३१	४।१२	४। २	३।५२	३।४०	३।२७
	१३	५।५६	५।३९	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१३	३।५०	३।४०	३।२७	३।१३	२।५७		२०	६। ३	५।४७	५।३१	५।११	५। ०	४।४७	४।३२	४।१३	४। ३	३।५३	३।४२	३।२८
	१४	५।५६	५।३९	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१३	३।५०	३।४०	३।२७	३।१३	२।५६		२१	६। ३	५।४७	५।३१	५।१२	५। १	४।४८	४।३३	४।१४	४। ५	३।५५	३।४३	३।३०
	१५	५।५७	५।३९	५।२०	४।५८	४।४५	४।३०	४।१२	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५६		२२	६। ३	५।४७	५।३१	५।१३	५। २	४।४९	४।३४	४।१५	४। ६	३।५६	३।४५	३।३२
	१६	५।५७	५।३९	५।२०	४।५९	४।४५	४।३०	४।१२	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५६		२३	६। ३	५।४७	५।३२	५।१३	५। २	४।५०	४।३५	४।१६	४। ८	३।५९	३।४७	३।३४
	१७	५।५७	५।३९	५।२०	४।५९	४।४५	४।३०	४।१२	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५६		२४	६। ३	५।४८	५।३२	५।१४	५। ३	४।५१	४।३६	४।१८	४। ९	३।५९	३।४८	३।३६
	१८	५।५७	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३०	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५६		२५	६। ३	५।४८	५।३२	५।१४	५। ४	४।५१	४।३७	४।१९	४।१०	४। १	३।५०	३।३८
	१९	५।५७	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३१	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५७		२६	६। ३	५।४८	५।३३	५।१५	५। ४	४।५२	४।३८	४।२०	४।१२	४। ३	३।५२	३।४०
	२०	५।५८	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३१	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५७		२७	६। ३	५।४८	५।३३	५।१५	५। ५	४।५३	४।३९	४।२२	४।१३	४। ४	३।५४	३।४२
	२१	५।५८	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३१	४।१३	३।५०	३।३९	३।२७	३।१३	२।५७		२८	६। ३	५।४८	५।३४	५।१६	५। ६	४।५४	४।४०	४।२३	४।१५	४। ६	३।५५	३।४४
	२२	५।५८	५।४०	५।२१	४।५९	४।४६	४।३१	४।१३	३।५१	३।४०	३।२७	३।१३	२।५७		२९	६। ३	५।४९	५।३४	५।१७	५। ७	४।५५	४।४१	४।२५	४।१७	४। ८	३।५६	३।४६
	२३	५।५८	५।४१	५।२२	५। ०	४।४७	४।३१	४।१३	३।५१	३।४०	३।२७	३।१३	२।५७		३०	६। ३	५।४९	५।३४	५।१७	५। ७	४।५६	४।४२	४।२६	४।१८	४। ९	३।५९	३।४८
	२४	५।५८	५।४१	५।२२	५। ०	४।४७	४।३२	४।१४	३।५१	३।४१	३।२८	३।१४	२।५७		३१	६। ३	५।४९	५।३५	५।१७	५। ८	४।५७	४।४३	४।२७	४।१९	४।११	४। १	३।५०
	२५	५।५९	५।४१	५।२२	५। ०	४।४७	४।३२	४।१४	३।५२	३।४१	३।२८	३।१४	२।५७	अग.	१	६। ३	५।४९	५।३५	५।१८	५। ९	४।५८	४।४५	४।२८	४।२१	४।१२	४। ३	३।५२
	२६	५।५९	५।४१	५।२२	५। ०	४।४७	४।३२	४।१४	३।५२	३।४१	३।२९	३।१४	२।५८		२	६। ३	५।५०	५।३५	५।१९	५। ९	४।५९	४।४६	४।३०	४।२२	४।१४	४। ५	३।५४
	२७	५।५९	५।४२	५।२३	५। १	४।४८	४।३३	४।१५	३।५३	३।४२	३।२९	३।१५	२।५८		३	६। ३	५।५०	५।३६	५।२०	५।१०	५। ०	४।४७	४।३१	४।२४	६	४। ७	३।५६
	२८	५।५९	५।४२	५।२३	५। १	४।४८	४।३३	४।१५	३।५३	३।४२	३।३०	३।१६	२।५८		४	६। २	५।५०	५।३६	५।२०	५।११	५। ०	४।४८	४।३३	४।२५	४।१७	४। ८	३।५८
	२९	५।५९	५।४२	५।२३	५। १	४।४८	४।३४	४।१६	३।५४	३।४२	३।३०	३।१६	३। ०		५	६। २	५।५०	५।३६	५।२१	५।१२	५। १	४।४९	४।३४	४।२६	४।१९	४।१०	४। ०
	३०	६। ०	५।४२	५।२३	५। २	४।४९	४।३४	४।१६	३।५४	३।४३	३।३१	३।१७	३। ०		६	६। २	५।५०	५।३६	५।२२	५।१२	५। २	४।५०	४।३६	४।२८	४।२१	४।११	४। ३
जुला.	१	६। ०	५।४२	५।२४	५। ०	४।४९	४।३४	४।१७	३।५४	३।४४	३।३२	३।१८	३। १		७	६। २	५।५०	५।३७	५।२३	५।१३	५। ३	४।५१	४।३७	४।३०	४।२३	४।१४	४। ५
	२	६। ०	५।४३	५।२४	५। २	४।५०	४।३५	४।१७	३।५५	३।४४	३।३२	३।१९	३। २		८	६। २	५।५०	५।३७	५।२३	५।१४	५। ४	४।५३	४।३८	४।३२	४।२४	४।१६	४। ७
	३	६। ०	५।४३	५।२४	५। ३	४।५०	४।३५	४।१८	३।५६	३।४५	३।३३	३।२०	३। ३		९	६। २	५।५०	५।३८	५।२४	५।१५	५। ५	४।५४	४।४०	४।३३	४।२६	४।१८	४। ९
	४	६। ०	५।४३	५।२४	५। ३	४।५१	४।३६	४।१८	३।५७	३।४६	३।३४	३।२०	३। ४		१०	६। २	५।५०	५।३८	५।२५	५।१६	५। ६	४।५५	४।४२	४।३५	४।२८	४।२०	४।११

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य उदय ज्ञान--नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है, इसमें अभीष्ट स्थान के रेखान्तर टाईम को युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट अक्षांश का स्टैंडर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आएगा।

मास	ता.	t०°	t१०°	t२०°	t३०°	t३५°	t४०°	t४५°	t५०°	t५२°	t५४°	t५६°	t५८°
अग.	११	६। १	५।५१	५।३८	५।२५	५।१६	५। ७	४।५६	४।४३	४।३७	४।३०	४।२२	४।१३
	१२	६। १	५।५१	५।३९	५।२६	५।१७	५। ८	४।५७	४।४४	४।३८	४।३२	४।२४	४।१५
	१३	६। १	५।५१	५।३९	५।२६	५।१८	५। ९	४।५९	४।४६	४।४०	४।३३	४।२६	४।१८
	१४	६। १	५।५१	५।३९	५।२७	५।१९	५।१०	५। ०	४।४७	४।४२	४।३५	४।२८	४।२०
	१५	६। १	५।५१	५।४०	५।२८	५।१९	५।११	५। १	४।४९	४।४३	४।३७	४।३०	४।२२
	१६	६। १	५।५१	५।४०	५।२८	५।२०	५।१२	५। २	४।५०	४।४५	४।३९	४।३२	४।२४
	१७	६। १	५।५१	५।४०	५।२९	५।२१	५।१३	५। ३	४।५२	४।४६	४।४०	४।३४	४।२६
	१८	६। ०	५।५१	५।४१	५।२९	५।२२	५।१४	५। ४	४।५३	४।४८	४।४२	४।३६	४।२९
	१९	६। ०	५।५१	५।४१	५।३०	५।२२	५।१५	५। ६	४।५५	४।५०	४।४४	४।३८	४।३१
	२०	६। ०	५।५१	५।४१	५।३०	५।२३	५।१६	५। ७	४।५६	४।५१	४।४६	४।४०	४।३३
	२१	६। ०	५।५१	५।४१	५।३१	५।२४	५।१७	५। ८	४।५८	४।५३	४।४८	४।४२	४।३५
	२२	५।५९	५।५१	५।४२	५।३२	५।२५	५।१८	५। ९	४।५९	४।५५	४।४९	४।४४	४।३७
	२३	५।५९	५।५१	५।४२	५।३२	५।२५	५।१९	५।१०	५। १	४।५६	४।५१	४।४६	४।३९
	२४	५।५९	५।५१	५।४२	५।३३	५।२६	५।१९	५।१२	५। २	४।५८	४।५३	४।४७	४।४१
	२५	५।५९	५।५१	५।४२	५।३३	५।२७	५।२०	५।१३	५। ४	४।५९	४।५५	४।४९	४।४४
	२६	५।५८	५।५१	५।४३	५।३४	५।२८	५।२१	५।१४	५। ५	५। १	४।५७	४।५१	४।४५
	२७	५।५८	५।५१	५।४३	५।३४	५।२८	५।२२	५।१५	५। ७	५। ३	४।५८	४।५३	४।४८
	२८	५।५८	५।५१	५।४३	५।३५	५।२९	५।२३	५।१६	५। ८	५। ४	५। ०	४।५५	४।५०
	२९	५।५८	५।५१	५।४३	५।३५	५।३०	५।२४	५।१८	५। ९	५। ६	५। २	४।५७	४।५२
	३०	५।५७	५।५१	५।४४	५।३६	५।३१	५।२५	५।१९	५।११	५। ८	५। ४	४।५९	४।५४
	३१	५।५७	५।५१	५।४४	५।३६	५।३१	५।२६	५।२०	५।१३	५। ९	५। ५	५। १	४।५७
सितं.	१	५।५७	५।५१	५।४४	५।३७	५।३२	५।२७	५।२१	५।१४	५।११	५। ७	५। २	४।५९
	२	५।५६	५।५१	५।४४	५।३७	५।३३	५।२८	५।२२	५।१५	५।१२	५। ९	५। ५	५। १
	३	५।५६	५।५१	५।४५	५।३८	५।३४	५।२९	५।२४	५।१६	५।१४	५।११	५। ७	५। ३
	४	५।५६	५।५०	५।४५	५।३८	५।३४	५।३०	५।२५	५।१९	५।१६	५।१३	५। ९	५। ५
	५	५।५५	५।५०	५।४५	५।३९	५।३५	५।३१	५।२६	५।२०	५।१७	५।१४	५।११	५। ७
	६	५।५५	५।५०	५।४५	५।३९	५।३६	५।३२	५।२७	५।२२	५।१९	५।१६	५।१३	५। ९
	७	५।५५	५।५०	५।४६	५।४०	५।३७	५।३३	५।२८	५।२३	५।२१	५।१८	५।१५	५।१२
	८	५।५४	५।५०	५।४६	५।४०	५।३७	५।३४	५।३०	५।२४	५।२२	५।२०	५।१७	५।१४
	९	५।५४	५।५०	५।४६	५।४१	५।३८	५।३५	५।३१	५।२६	५।२४	५।२२	५।१९	५।१६
	१०	५।५४	५।५०	५।४६	५।४२	५।३९	५।३६	५।३२	५।२८	५।२६	५।२३	५।२१	५।१८
	११	५।५३	५।५०	५।४६	५।४२	५।३९	५।३७	५।३३	५।२९	५।२७	५।२५	५।२३	५।२०
	१२	५।५३	५।५०	५।४७	५।४३	५।४०	५।३८	५।३४	५।३१	५।२९	५।२७	५।२५	५।२२
	१३	५।५३	५।५०	५।४७	५।४३	५।४१	५।३८	५।३५	५।३२	५।३०	५।२९	५।२७	५।२४
	१४	५।५२	५।५०	५।४७	५।४४	५।४२	५।३९	५।३७	५।३३	५।३२	५।३०	५।२९	५।२७
	१५	५।५२	५।५०	५।४७	५।४४	५।४२	५।४०	५।३८	५।३५	५।३४	५।३२	५।३१	५।२९
	१६	५।५२	५।५०	५।४७	५।४५	५।४३	५।४१	५।३९	५।३६	५।३५	५।३४	५।३३	५।३१

मास	ता.	t०°	t१०°	t२०°	t३०°	t३५°	t४०°	t४५°	t५०°	t५२°	t५४°	t५६°	t५८°
सितं.	१७	५।५१	५।५०	५।४८	५।४५	५।४४	५।४२	५।४०	५।३८	५।३७	५।३६	५।३५	५।३३
	१८	५।५१	५।५०	५।४८	५।४६	५।४५	५।४३	५।४२	५।३९	५।३९	५।३८	५।३६	५।३५
	१९	५।५१	५।४९	५।४८	५।४६	५।४५	५।४४	५।४३	५।४१	५।४१	५।४०	५।३८	५।३७
	२०	५।५०	५।४९	५।४८	५।४७	५।४६	५।४५	५।४४	५।४३	५।४२	५।४१	५।४०	५।३९
	२१	५।५०	५।४९	५।४८	५।४७	५।४७	५।४६	५।४५	५।४४	५।४४	५।४३	५।४२	५।४२
	२२	५।५०	५।४९	५।४९	५।४८	५।४८	५।४७	५।४६	५।४६	५।४५	५।४५	५।४४	५।४४
	२३	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४८	५।४८	५।४८	५।४७	५।४७	५।४७	५।४६	५।४६
	२४	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४९	५।४८	५।४८	५।४८	५।४८
	२५	५।४८	५।४९	५।४९	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०	५।५०
	२६	५।४८	५।४९	५।५०	५।५०	५।५०	५।५१	५।५१	५।५२	५।५२	५।५२	५।५२	५।५२
	२७	५।४८	५।४९	५।५०	५।५१	५।५१	५।५२	५।५२	५।५३	५।५३	५।५४	५।५४	५।५५
	२८	५।४७	५।४९	५।५०	५।५१	५।५२	५।५३	५।५४	५।५५	५।५५	५।५६	५।५६	५।५७
	२९	५।४७	५।४९	५।५१	५।५२	५।५३	५।५४	५।५५	५।५७	५।५७	५।५७	५।५८	५।५९
	३०	५।४७	५।४९	५।५१	५।५३	५।५४	५।५५	५।५६	५।५८	५।५८	५।५९	६। ०	६। १
अक्टू	१	५।४६	५।४९	५।५१	५।५३	५।५४	५।५६	५।५७	५।५९	६। ०	६। १	६। २	६। ३
	२	५।४६	५।४९	५।५१	५।५४	५।५५	५।५७	५।५९	६। १	६। २	६। ३	६। ४	६। ५
	३	५।४६	५।४९	५।५१	५।५४	५।५६	५।५८	६। ०	६। २	६। ३	६। ५	६। ६	६। ८
	४	५।४६	५।४८	५।५२	५।५५	५।५७	५।५९	६। १	६। ४	६। ५	६। ७	६। ८	६।१०
	५	५।४६	५।४८	५।५२	५।५५	५।५७	६। ०	६। २	६। ६	६। ७	६। ८	६।१०	६।१२
	६	५।४६	५।४८	५।५२	५।५६	५।५८	६। १	६। ४	६। ७	६। ८	६।१०	६।१२	६।१४
	७	५।४६	५।४८	५।५२	५।५७	५।५९	६। २	६। ५	६। ९	६।१०	६।१२	६।१४	६।१६
	८	५।४५	५।४८	५।५३	५।५७	६। ०	६। ३	६। ६	६।१०	६।१२	६।१३	६।१६	६।१८
	९	५।४५	५।४८	५।५३	५।५८	६। १	६। ४	६। ७	६।१२	६।१४	६।१६	६।१८	६।२१
	१०	५।४५	५।४८	५।५३	५।५८	६। १	६। ५	६। ९	६।१३	६।१५	६।१८	६।२०	६।२३
	११	५।४४	५।४८	५।५३	५।५९	६। २	६। ६	६।१०	६।१५	६।१७	६।२०	६।२२	६।२५
	१२	५।४४	५।४८	५।५४	६। ०	६। ३	६। ७	६।११	६।१७	६।१९	६।२१	६।२४	६।२७
	१३	५।४४	५।४८	५।५४	६। ०	६। ४	६। ८	६।१२	६।१८	६।२१	६।२३	६।२६	६।३०
	१४	५।४३	५।४९	५।५४	६। १	६। ५	६। ९	६।१३	६।२०	६।२२	६।२५	६।२८	६।३३
	१५	५।४३	५।४९	५।५५	६। २	६। ६	६।१०	६।१५	६।२१	६।२४	६।२७	६।३०	६।३४
	१६	५।४३	५।४९	५।५५	६। २	६। ६	६।११	६।१६	६।२३	६।२६	६।२९	६।३२	६।३६
	१७	५।४२	५।४९	५।५५	६। ३	६। ७	६।१२	६।१८	६।२४	६।२८	६।३१	६।३५	६।३९
	१८	५।४२	५।४९	५।५६	६। ४	६। ८	६।१३	६।१९	६।२६	६।२९	६।३३	६।३७	६।४१
	१९	५।४२	५।४९	५।५६	६। ४	६। ९	६।१४	६।२०	६।२८	६।३१	६।३५	६।३९	६।४३
	२०	५।४२	५।४९	५।५६	६। ५	६।१०	६।१५	६।२२	६।२९	६।३३	६।३७	६।४१	६।४५
	२१	५।४२	५।४९	५।५७	६। ६	६।११	६।१६	६।२३	६।३१	६।३५	६।३९	६।४३	६।४८
	२२	५।४२	५।४९	५।५७	६। ६	६।१२	६।१७	६।२४	६।३३	६।३६	६।४०	६।४५	६।५०
	२३	५।४१	५।४९	५।५८	६। ७	६।१२	६।१८	६।२६	६।३५	६।३८	६।४२	६।४७	६।५२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

सूर्य उदय ज्ञान—नीचे उत्तरी अक्षांशों का लोकल (स्वदेशीय) समय अनुसार सूर्योदय दिया गया है, इसमें अभीष्ट स्थान के रेखान्तर टाईम को युक्त-वियुक्त करने से अभीष्ट अक्षांश का स्टैंडर्ड टाईम में सूर्योदय निकल आएगा।

मास	ता.	१०°	११०°	१२०°	१३०°	१३५	१४०°	१४५°	१५०°	१५२°	१५४°	१५६°	१५८°
अक्टू.	२४	५।४१	५।४९	५।५८	६। ८	६।१३	६।१९	६।२७	६।३६	६।४०	६।४४	६।४९	६।५५
	२५	५।४१	५।४९	५।५८	६। ८	६।१४	६।२०	६।२८	६।३८	६।४२	६।४६	६।५१	६।५७
	२६	५।४१	५।४९	५।५९	६। ९	६।१५	६।२१	६।३०	६।३९	६।४३	६।४८	६।५३	६।५९
	२७	५।४१	५।५०	५।५९	६।१०	६।१६	६।२२	६।३१	६।४२	६।४६	६।५०	६।५६	७। २
	२८	५।४१	५।५०	६। ०	६।११	६।१७	६।२३	६।३३	६।४३	६।४७	६।५२	६।५८	७। ४
	२९	५।४०	५।५०	६। ०	६।११	६।१८	६।२४	६।३४	६।४५	६।४९	६।५४	७। १	७। ६
	३०	५।४०	५।५०	६। ०	६।१२	६।१९	६।२५	६।३५	६।४६	६।५०	६।५६	७। २	७। ९
	३१	५।४०	५।५०	६। ०	६।१३	६।२०	६।२७	६।३७	६।४७	६।५२	६।५८	७। ४	७।११
नव.	१	५।४०	५।५१	६। १	६।१४	६।२१	६।२९	६।३८	६।४९	६।५५	७। ०	७। ६	७।१३
	२	५।४०	५।५१	६। २	६।१४	६।२२	६।३०	६।३९	६।५१	६।५६	७। २	७। ८	७।१५
	३	५।४०	५।५१	६। २	६।१५	६।२२	६।३१	६।४१	६।५२	६।५८	७। ४	७।१०	७।१८
	४	५।४०	५।५१	६। ३	६।१६	६।२३	६।३२	६।४२	६।५४	७। ०	७। ६	७।१२	७।२०
	५	५।४०	५।५१	६। ३	६।१७	६।२४	६।३३	६।४३	६।५६	७। १	७। ८	७।१५	७।२३
	६	५।४०	५।५२	६। ४	६।१८	६।२५	६।३४	६।४५	६।५७	७। ३	७।१०	७।१७	७।२५
	७	५।४०	५।५२	६। ४	६।१८	६।२६	६।३६	६।४६	६।५९	७। ५	७।१२	७।१९	७।२७
	८	५।४०	५।५२	६। ५	६।१९	६।२७	६।३७	६।४८	७। १	७। ७	७।१४	७।२१	७।३०
	९	५।४१	५।५३	६। ५	६।२०	६।२८	६।३८	६।४९	७। २	७। ९	७।१५	७।२३	७।३२
	१०	५।४१	५।५३	६। ६	६।२१	६।२९	६।३९	६।५०	७। ४	७।१०	७।१७	७।२६	७।३४
	११	५।४१	५।५३	६। ७	६।२२	६।३०	६।४०	६।५२	७। ६	७।१२	७।१९	७।२७	७।३७
	१२	५।४१	५।५४	६। ७	६।२२	६।३१	६।४१	६।५३	७। ७	७।१४	७।२१	७।३०	७।३९
	१३	५।४१	५।५४	६। ८	६।२३	६।३२	६।४२	६।५४	७। ९	७।१६	७।२३	७।३२	७।४१
	१४	५।४१	५।५४	६। ८	६।२४	६।३३	६।४४	६।५६	७।११	७।१८	७।२५	७।३४	७।४३
	१५	५।४१	५।५५	६। ९	६।२५	६।३४	६।४५	६।५७	७।१२	७।१९	७।२७	७।३६	७।४६
	१६	५।४१	५।५५	६। ९	६।२६	६।३५	६।४६	६।५९	७।१४	७।२१	७।२९	७।३८	७।४८
	१७	५।४२	५।५५	६।१०	६।२७	६।३६	६।४७	७। ०	७।१६	७।२३	७।३१	७।४०	७।५०
	१८	५।४२	५।५६	६।११	६।२७	६।३७	६।४८	७। १	७।१७	७।२५	७।३३	७।४२	७।५२
	१९	५।४२	५।५६	६।११	६।२८	६।३८	६।४९	७। ३	७।१९	७।२६	७।३५	७।४४	७।५५
	२०	५।४२	५।५७	६।१२	६।२९	६।३९	६।५१	७। ४	७।२०	७।२८	७।३६	७।४६	७।५७
	२१	५।४२	५।५७	६।१२	६।३०	६।४०	६।५२	७। ५	७।२२	७।३०	७।३८	७।४८	७।५९
	२२	५।४३	५।५८	६।१३	६।३१	६।४१	६।५३	७। ७	७।२३	७।३१	७।४०	७।५०	८। १
	२३	५।४३	५।५८	६।१४	६।३२	६।४२	६।५४	७। ८	७।२५	७।३३	७।४२	७।५२	८। २
	२४	५।४३	५।५८	६।१४	६।३२	६।४३	६।५५	७। ९	७।२६	७।३५	७।४४	७।५४	८। ५
	२५	५।४३	५।५९	६।१५	६।३३	६।४४	६।५६	७।१०	७।२८	७।३६	७।४५	७।५६	८। ८
	२६	५।४३	५।५९	६।१५	६।३४	६।४५	६।५७	७।१२	७।२९	७।३८	७।४७	७।५७	८।१०
	२७	५।४४	६। ०	६।१६	६।३५	६।४६	६।५८	७।१३	७।३१	७।३९	७।४९	७।५९	८।१२
	२८	५।४४	६। ०	६।१७	६।३६	६।४७	६।५९	७।१४	७।३२	७।४१	७।५०	८। १	८।१४
	२९	५।४५	६। १	६।१७	६।३६	६।४८	७। ०	७।१५	७।३४	७।४२	७।५२	८। ३	८।१५

मास	ता.	१०°	११०°	१२०°	१३०°	१३५°	१४०°	१४५°	१५०°	१५२°	१५४°	१५६°	१५८
नव.	३०	५।४५	६। १	६।१८	६।३७	६।४८	७। १	७।१७	७।३५	७।४४	७।५४	८। ५	८।१७
दिसं.	१	५।४५	६। २	६।१९	६।३८	६।४९	७। २	७।१८	७।३६	७।४५	७।५५	८। ६	८।१९
	२	५।४६	६। २	६।१९	६।३९	६।५०	७। ३	७।१९	७।३८	७।४७	७।५७	८। ८	८।२१
	३	५।४६	६। ३	६।२०	६।४०	६।५१	७। ४	७।२०	७।३९	७।४८	७।५९	८।१०	८।२३
	४	५।४७	६। ३	६।२१	६।४१	६।५२	७। ५	७।२१	७।४०	७।४९	८। १	८।११	८।२५
	५	५।४७	६। ४	६।२१	६।४१	६।५३	७। ६	७।२२	७।४१	७।५१	८। २	८।१३	८।२६
	६	५।४७	६। ४	६।२२	६।४२	६।५४	७। ७	७।२३	७।४३	७।५२	८। ४	८।१४	८।२८
	७	५।४८	६। ५	६।२२	६।४३	६।५५	७। ८	७।२४	७।४४	७।५३	८। ५	८।१६	८।२९
	८	५।४८	६। ५	६।२३	६।४४	६।५५	७। ९	७।२५	७।४५	७।५४	८। ६	८।१७	८।३०
	९	५।४९	६। ६	६।२४	६।४४	६।५६	७।१०	७।२६	७।४६	७।५६	८। ७	८।१८	८।३१
	१०	५।४९	६। ६	६।२४	६।४५	६।५७	७।११	७।२७	७।४७	७।५७	८। ९	८।२०	८।३२
	११	५।५०	६। ७	६।२५	६।४६	६।५८	७।१२	७।२८	७।४८	७।५८	८।१०	८।२१	८।३४
	१२	५।५०	६। ७	६।२५	६।४६	६।५८	७।१२	७।२९	७।४९	७।५९	८।११	८।२२	८।३५
	१३	५।५१	६। ८	६।२६	६।४७	६।५९	७।१३	७।३०	७।५०	८। ०	८।१२	८।२३	८।३६
	१४	५।५१	६। ८	६।२७	६।४८	७। ०	७।१४	७।३१	७।५१	८। १	८।१३	८।२४	८।३८
	१५	५।५२	६। ९	६।२७	६।४८	७। १	७।१५	७।३१	७।५२	८। २	८।१३	८।२५	८।३९
	१६	५।५२	६। ९	६।२८	६।४९	७। १	७।१५	७।३२	७।५३	८। ३	८।१४	८।२६	८।४०
	१७	५।५२	६।१०	६।२८	६।५०	७। २	७।१६	७।३३	७।५३	८। ३	८।१५	८।२७	८।४१
	१८	५।५३	६।१०	६।२९	६।५०	७। २	७।१७	७।३३	७।५४	८। ४	८।१६	८।२८	८।४२
	१९	५।५३	६।११	६।२९	६।५१	७। ३	७।१७	७।३४	७।५५	८। ५	८।१६	८।२९	८।४३
	२०	५।५४	६।११	६।३०	६।५१	७। ४	७।१८	७।३५	७।५५	८। ५	८।१७	८।३०	८।४३
	२१	५।५४	६।१२	६।३०	६।५२	७। ४	७।१८	७।३५	७।५६	८। ६	८।१८	८।३१	८।४४
	२२	५।५५	६।१३	६।३१	६।५२	७। ५	७।१९	७।३६	७।५६	८। ६	८।१८	८।३१	८।४५
	२३	५।५५	६।१३	६।३१	६।५३	७। ५	७।१९	७।३६	७।५७	८। ७	८।१९	८।३१	८।४६
	२४	५।५६	६।१३	६।३२	६।५३	७। ६	७।२०	७।३७	७।५७	८। ७	८।१९	८।३२	८।४६
	२५	५।५६	६।१४	६।३२	६।५४	७। ६	७।२०	७।३७	७।५८	८। ८	८।१९	८।३२	८।४६
	२६	५।५७	६।१४	६।३३	६।५४	७। ६	७।२१	७।३७	७।५८	८। ८	८।१९	८।३२	८।४६
	२७	५।५७	६।१५	६।३३	६।५४	७। ७	७।२१	७।३८	७।५८	८। ८	८।१९	८।३२	८।४७
	२८	५।५८	६।१५	६।३४	६।५५	७। ७	७।२१	७।३८	७।५८	८। ८	८।१९	८।३२	८।४७
	२९	५।५८	६।१६	६।३४	६।५५	७। ७	७।२१	७।३८	७।५९	८। ८	८।१९	८।३२	८।४७
	३०	५।५९	६।१६	६।३४	६।५६	७। ८	७।२२	७।३८	७।५९	८। ८	८।१९	८।३२	८।४७
	३१	५।५९	६।१७	६।३४	६।५६	७। ८	७।२२	७।३८	७।५९	८। ८	८।१९	८।३२	८।४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मंत्र प्रयोग द्वारा कामना सिद्धि

श्री महामृत्युञ्जय मन्त्र

अकाल मृत्यु को हरने वाला तथा सर्व प्रकार के कष्टों को निवारण करने वाला यह अमोघ सिद्धि मन्त्र है। इसका सवा लाख जाप करने से सर्व प्रकार की आधि-व्याधियों का नाश होकर अकाल मृत्यु का भय जाता रहता है।

ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् भूर्भुवः स्वः रौं जूं सः हौं ॐ।।"

श्री बगुलामुखी मन्त्र

जब शत्रु आपको अन्याय पूर्वक तंग करता हो, मुकद्दमे झगड़े आदि में आप स्वयं को असहाय अनुभव करते हो तो निम्न मंत्र का पाठ पीत वस्त्र धारण करके करना चाहिए। एकान्त कमरे में बगुलामुखी देवी के चित्र पर पीले पुष्प चढ़ाकर धूप दीपादि जला दें। प्रतिदिन ११ माला करते हुए २१ दिन तक जाप करने से अभिष्ट सिद्धि हो जाती है। मन्त्र इस प्रकार है— **ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदम्।**
स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धि नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।।

मन पसन्द पति प्राप्ति के लिए

मनोऽनुकूल एवं सुयोग्य पति को प्राप्त करने की इच्छा रखने वाली कन्याओं को इस मंत्र का जाप करना चाहिए। प्रतिदिन कम से कम एकमाला मन्त्र का जाप करना चाहिए तथा प्रातः स्नानोपरान्त पार्वती देवी की प्रतिमा के सम्मुख दीप जलाकर लाल पुष्प चढ़ावें, तो इच्छानुकूल वर प्राप्ति अवश्य होगी। इसके अतिरिक्त जिन स्त्रियों की पति से अनबन रहती है वह भी इस मन्त्र का पाठ करें।

हे गौरि शंकरार्धाङ्गि यथा त्वं शंकरप्रिया।
तथा मां कुरु कल्याणि कान्तकान्ता सुदुर्लभाम्।।

इक्कीस दिन तक श्री दुर्गा देवी की मूर्ति के आगे रक्त पुष्प मौली, पीले चावलादि चढ़ाकर धूपदीपादि जलाकर १०८ बार जाप करने से कार्यों में बाधायें समाप्त हो जाती हैं और शत्रु का नाश होता है।

रोग नाश के लिए देवी मन्त्र

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयांति।।

यह मंत्र भी उपरोक्त विधि अनुसार दुर्गा माता की प्रतिमा के आगे २१ दिन करें। मंत्र करने से पूर्व शुद्ध जल का बर्तन व मेवादि का प्रसाद भी रख लेना चाहिये।

सर्व कार्य सिद्धि तथा विपत्ति नाश के लिए

शरणागतदीनार्त परित्राण परायणे।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।"

उपरोक्त विधि अनुसार एक लाख मंत्र का जाप करने से सर्व प्रकार के दुःखों से छुटकारा मिल जाता है।

धन प्राप्ति के लिये

'ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं नमः':—एकान्त में बैठकर इस मंत्र को २१ हजार बार पढ़ें, २१ [illegible]

सन्तान प्राप्ति के लिए

देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।"

जिस दम्पत्ति के सन्तान न होती हो उन्हें इस मन्त्र का एक लाख जाप करना करना चाहिए। कम से कम एक माला प्रतिदिन करें। पृथ्वी पर सोयें, झूठ, शराब, कपट से बचें, सात्विक भोजन करें। बाल न कटवायें। एक लाख जाप होने पर दशमांस जप का हवन तिल, शहदादि द्वारा करके ब्राह्मणों को भोजन करवा दें।

कर्णपिशाचिनी सिद्धि मन्त्र

ॐ नमों देवी भगवते त्रिलोचनं त्रिपुरं महोदवी,
कर्णपिशाचिनी में वशं कुरु कुरु स्वाहा।"

किसी पवित्र स्थान पर एक लाख मंत्र का जाप ११ से १४ दिन के भीतर करें। पूजन के समय ब्रह्मचर्य व्रत का पालन तथा सत्यभाषण करते हुए भूमि पर सोवें। स्वयं पकाया हुआ भोजन ही ग्रहण करें। साधनाकाल में एक स्थान पर ही निवास करें। जपोरान्त दशमांश पाठ का हवन करें। कर्ण पिशाचिनी सिद्ध हो जाएगी।

वशीकरण मन्त्र

ॐ नमः सर्वलोक वशीकराय कुरु कुरु स्वाहा।"

इस मंत्र को १०८ बार पढ़कर भोजपत्र पर अनार की कलम से, अष्टगंध से लिखकर दायें बाजू में बांध लेने से जिस किसी पुरुष के सामने जावेंगे वो वश में हो जायेगा। इस मंत्र का एक लाख पाठ करने से सिद्ध हो जाता है।

स्त्री जातक विचार

* यदि कन्या की जन्म कुण्डली में सप्तमेश ग्रह के साथ शनि स्थित हो तो ऐसी कन्या का विवाह बड़ी आयु में होता है।

* यदि सूर्य, मंगल, बुध लग्न में हो और गुरु द्वादश भाव में स्थित हों, तो भी उस कन्या का विवाह दीर्घकाल में ही होता है।

* जिस स्त्री के जन्मकाल में सप्तम भाव में शुभ, अशुभ—दोनों प्रकार के ग्रह होते हैं, उसके दो विवाहों का योग बनता है।

* यदि किसी स्त्री के सप्तम भाव में सूर्य हो अथवा अन्य कोई पाप ग्रह उस भाव में स्थित हो, तो ऐसी स्त्री को वैवाहिक—सुख कम मिलता है।

* यदि सप्तम भाव में बुध तथा शनि की युति हो, तो ऐसी स्त्री का पति नपुंसक होता है।

* आठवें भाव में बुध गया हो ऐसी स्त्री काक—बन्ध्या होती है अर्थात् एक बार सन्तान होकर पुनः सन्तान होने में बाधा होती है।

विष कन्या योग

* शनिवार, अश्लेषा नक्षत्र और द्वितीया तिथि—में तीनों जिस दिन मिले उस दिन जन्मी कन्या विष कन्या होती है।

* मंगलवार, विशाखा नक्षत्र और द्वादशी तिथि—ये तीनों जिस दिन मिलें, उस दिन जन्मी कन्या विष कन्या होती है।

* यदि पंचम भाव में धन अथवा मीन राशि हो तथा गुरु पंचम भाव में स्थित हो [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नालवेष्टित अंग ज्ञान

यदि सूर्य चतुष्पद राशि में हो शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभाव राशिगत हों तो दो बालक एक जरायु से वेष्टित उत्पन्न होते हैं। यदि मेष वृष सिंह लग्न में शनि वा मंगल स्थित हो तो लग्न का जो नवांश उदय होता है सो राशि कालपुरुष के जिस अंग में होय उस अंग में नाल वेष्टित बालक उत्पन्न होता है।

काल पुरुष

कालपुरुष के शिर में मेष राशि मुख में वृष वक्षस्थल में मिथुन हृदयमें कर्क उदर में सिंह कटि में कन्या इत्यादि काल पुरुष

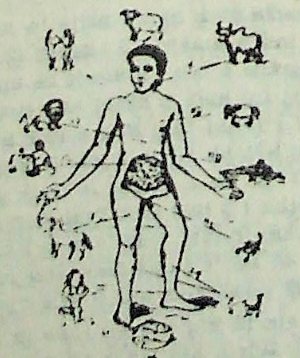

के शरीर की राशि जानें। जिस लग्न में बालक जन्मे वह शिर जानना अन्य सब राशिक्रम से अंग होते हैं।

उपसूतिका ज्ञानम्—लग्न अथवा लग्नेश के साथ और इनके दूसरे तथा बारहवें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका कहना। अन्य प्रकार-लग्न और चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका जानना।

यदि चतुर्थ दशम स्थान में शुभ ग्रह हों तो सुख से प्रसव होता है। यदि नवम पंचम सप्तम में पापी ग्रह हों तो माता को प्रसवकाल में बहुत कष्ट होता है।

आकृति ज्ञान—जन्म लग्न का जो नवांश हो उसका जो स्वामी हो उसके सदृश शरीर की आकृति होती है। चन्द्र राशि के नवांश के स्वामी के समान वर्ण होता है।

शिर पाद जात ज्ञानम्—शीर्षोदय राशि ३।५।६।७।८।११ जन्म समय इन राशियों का नवांश लग्न में हो तो शिर से पृष्ठोदय राशि १।२।४।९।१० इन राशियों का नवांश जन्म समय में हो तो पाद से जन्म जानना। यदि मीन का नवांश हो तो हाथ से जानना लग्नेश दशम में राहु लग्न में हो तो बालक पैरों से उत्पन्न हो।

सूतिका गृह द्वार ज्ञानम्—केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा में सूतिका गृह का द्वार जानना। यदि केन्द्र में बहुत ग्रह पड़े हों तो उन में जो अधिक बली हो उसकी दिशा कहनी। यदि केन्द्र में कोई ग्रह न हो तो लग्न की दिशा में गृह का द्वार कहना।

खट्वा विचार—लग्न और द्वितीय राशि सेरू, तीसरी राशिदक्षिण पाया, चतुर्थ पंचम दक्षिण बाहि, छटा दक्षिण पाया, सप्तम अष्टम वाम सेरू, नवम वाम पाया, दशम एकादश वाम बाहि, द्वादश वाम पाया होता है, (फल) जिस अंग में पापी ग्रह अथवा द्विस्वभाव राशि हो वहां से फूटा होता है। अथवा क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो भी फूटा हुआ हो। अर्थात शनि हो तो लोहे से युक्त, मङ्गल हो तो फूटा हुआ, सूर्य हो तो फटा जानना। यदि उनका स्वामी वा शुभ ग्रह देखे तो फूटा नहीं होता।

दीपादि ज्ञानम्—यदि जन्म काल में चन्द्रमा १०. अंश तक हो तो दीपक तेल से पूर्ण हो १० से २० अंश तक हो तो आधा २० से ३० अंश तक हो तो तेल बहुत थोड़ा हो। बत्ती लग्न से होती है, जितना लग्न भुक्त हो गया हो उतनी दग्ध जानना। यदि सूर्य जन्म काल में चर राशी में हो तो दीपक इधर उधर ले जाया गया हो। स्थिर राशि में स्थित और द्विस्वभाव राशि में एक स्थान से उठाये दूसरे स्थान पर स्थित होता है। कई आचार्यों का मत है कि जिस राशि में सूर्य हो उस राशि की दिशा में दीपक कहें।

जन्म स्थान विचार—जन्म लग्न और चन्द्रमा जलचर राशि में हो अथवा पूर्ण चन्द्रमा लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखे अथवा चन्द्रमा जलचर राशि का दशवें, चौथे और लग्न में हो तो बालक का जन्म जलके ऊपर अथवा जल के समीप स्थानमें हुआ जानना। पूर्ण चन्द्रमा कर्क राशि में हो, बुध लग्न में हो, गुरु चतुर्थ स्थान में हो अथवा लग्न में जल चर राशि हो, चन्द्रमा सातवें हो तो बालक का जन्म नौका में, जहाज में अथवा नदी के सान्निध्य में हुआ ऐसा जानना। लग्न और चन्द्रमा से १२वें स्थान में शनि हो उसे पापी ग्रह देखते हों और बालक का जन्म कारागार में वा एकांत में हुआ जानना। चर राशि गत शनि लग्न में हो और शुक्र चन्द्रमा देखते हों तो सुन्दर घर में जन्म कहना।

जातक चिन्ह ज्ञान

लग्न में मंगल, सातवें बृहस्पति या शुक्र हो तो उसके शिर में चोट या (व्रण) आदि से चिन्ह हों। लग्न में मंगल शुक्र चंद्रमा के साथ होने से दूसरे या छटे वर्ष शिर में चिन्ह होता है। मंगल से व्रणादि, चन्द्र शुक्र से तिल (मशक) लहसन जाने। सातवें घर में गुरु या लग्न में राहु के साथ गुरु हो आठवें घर पापी ग्रह हों या लग्न में शुक्र या सातवें राहु होवे तो माथे में या वाम कान में चिन्ह होवे। लग्न से ३।६।११वें स्थान में मंगल या बारहवें घर में मंगल शुक्र एक साथ हों तो बायें बगल की ओर व्रण का चिन्ह होवे। लग्न में मंगल हो और त्रिकोण ५।९ में शनि हो इस को शुक्र देखे तो गुदा (मल द्वार) या लिङ्ग के समीप तिल का चिन्ह होगा। लग्न से ५।९वें शुक्र आठवें बुध गुरु लग्न में या चतुर्थ घर में शनि होने से पेट पर चिन्ह होता है। दूसरे घर शुक्र व तीसरे मंगल शनि हो लग्न में या आठवें सूर्य हो तो कमर में चिन्ह होगा। चतुर्थ घर शुक्र राहु हो लग्न में मंगल या शनि हो पादमेल में वा वाम पैर पर चिन्ह होगा। बारहवें गुरु ९वें चंद्रमा ३।६।११वें बुध होने से गुदा के समीप चिन्ह या व्रणादि होते हैं। छटे घर का स्वामी पापी ग्रह के साथ लग्न वा सातवें घर में हो तो शरीर में व्रणादि चिन्ह होते हैं। योग कर्ता सूर्य हो तो शिर में चद्रमा से मुख में मगल गले में बुध से हृदय में बृहस्पति से नाभी मूल में, शुक्र से आंख या पीठ पर और शनि राहु केतु से पैर या अधर (होठ) पर या दांतों पर चिन्ह जानने चाहिये।

चिन्ह ज्ञान

षट ६ त्रिकोण ९।५ लग्न १ रवि बुधभावे धरिध्यान
वाम भाग में लहसन कहे गर्ग वचन परमाण।
भानु तथा सौरितनु १ धन २कुटकंटक १।४।७।१० चन्द।
बालक के षट् अंगुली भाषत कवि कुल बृन्द॥
तनु १ स्थान में शुक्र जो अष्टम जापे राहु।
वाम कर्ण वा मस्तक के चिन्ह कहे तन माहु॥
भाव जो ८वे में पड़े शुक्र राहु और भौम।
शनि लग्न में जो पड़े चिन्ह होवे वाम पाव॥
पंचम नवमें भृगु बसे लग्न वा चौथे [illegible]।
आठवें बुध गुरु जो बसे उदरे चिन्ह [illegible]॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सिद्धि अनुभूत वशीकरण मन्त्र

[लेखक :—लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी०ए०, प्रभाकर, साहित्यरत्न, ज्योतिष वाचस्पति]

वशीकरण एक मन्त्र है तज दे वचन कठोर। सबसे अच्छा वशीकरण मन्त्र तो यही है कि सबसे मीठा बोलो ! संसार में रहते हुये अक्सर दूसरों को अपने अनुकूल बना कर अपना कार्य साधन करने की जरूरत पड़ती है ऐसे अवसरों पर आत्मिक शक्ति से बहुत काम निकाला जा सकता है। मन बहुत चंचल है। इसमें हजार हाथियों का बल है। जितने भी साधन अभ्यास हैं वे इसी को वश में करने के लिए है। जैसे आतशी शीशे द्वारा सूर्य की बिखरी हुई किरणों को एक जगह केन्द्रित करने से कपड़े में आग लग जाती है उसी प्रकार मन की बिखरी हुई वृत्तियों को एकत्रित करने से बहुत बड़ी आत्मिकशक्ति अर्जित की जा सकती है। मन्त्रशास्त्र में कुछ शक्तिशाली बीजाक्षरों का चुनाव किया गया है। आपने बरगद का पेड़ देखा होगा कितना विशाल होता है। परन्तु उसका बीज कितना छोटा होता है। इसी प्रकार छोटे से बीजाक्षरों में तत्सम्बन्धी देवी देवताओं की अपार शक्ति का भंडार निहित होता है। मन्त्रों में यही बीजाक्षर होते हैं और इनका बार-बार उच्चारण करने से जो ध्वनि अन्दर और बाहर पैदा होती है उससे अपार आत्मिकशक्ति पैदा होती है। लाख सवा लाख जप के बाद मन्त्र में शक्ति पैदा हो जाती है और तब समझा जाता है कि मन्त्र सिद्ध हो गया। जब मन्त्र सिद्ध हो जाय तब उसको प्रयोग किया जा सकता है।

मन्त्र सिद्ध करने के लिए स्थान एकान्त हो और वातावरण शान्त हो। रात का समय इनके लिए सबसे अच्छा होता है। जब सब सो जायें तब घर में भी कर सकते हो। सूर्य या चन्द्र ग्रहण के समय, होली, दिवाली, शिवरात्रि की रात्रि में और कुछ विशेष योगों में जप करने से जल्दी सिद्धि प्राप्त होती है। अशोक, पीपल, बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर, देवी या भैरव के मन्दिर में और डर न लगे तो श्मशान में (दिन में या रात में) बैठकर जप करने से भी जल्दी लाभ होता है। जप पहले जिव्हा से, फिर कण्ठ से उसके बाद प्राणों से, फिर सुरति से करने से शीघ्र सिद्धि मिलती है। नैनन की करि कोठरी पलकनि की चिक डारि। पुतली पलंग बिछाय के पीतम लेउ निसार॥ यह राजयोग का बहुत सरल प्राणायाम व सुरति का अभ्यास है। तन्त्र में श्रीकृष्ण व महाकाली को एक ही माना गया है और उनका एक ही बीजाक्षर है। भगवान श्रीकृष्ण जिस महामन्त्र को मुरली में बजाकर सारे चराचर विश्व को मोहित कर देते थे वह महामन्त्र इस प्रकार है :—

ॐ क्लीं क्लीं नमः

इसमें क्, ल्, इ, न् तथा अनुस्वार की मिली हुई ध्वनि है। इसका पुरश्चरण सवा-लाख जप का है जिसे ज्यादा से ज्यादा ४०-४१ दिन में पूरा कर लेना चाहिए। देवी देवता का ध्यान अंगन्यास करन्यास षोडसोपचार पूजन हवन तर्पण सहित पूरी पुरश्चरण विधि हमारी मन्त्र तन्त्र साधना पुस्तक में दी हुई है। यहां स्थानाभाव से पूरी विधि नहीं दी जा सकी है। इस मन्त्र का केवल जाप करने से ही दूसरों पर प्रभाव डालने वाली आकर्षण शक्ति प्राप्त होती है। बुद्धि निर्मल होती है, इन्टरव्यू साक्षात्कार में सफलता मिलती है, मुकदमे, वाद-विवाद में, प्रतिस्पर्धा कम्पटीशन में विजय प्राप्त होती है। पति-पत्नी में, शत्रुओं में, दो व्यक्तियों में मेल कराया जा सकता है, हाकिम अफसर को अपने ऊपर कृपालु किया जा सकता है तथा अपना कार्य सिद्ध किया जा सकता है। मन्त्र सिद्ध करने के बाद जब इसका प्रयोग करो तो इसका स्वरूप इस प्रकार होगा। मान लो रूपकिशोर नाम के किसी व्यक्ति को आप अपने अनुकूल करना चाहते हैं तो इसका जप इस प्रकार किया जायेगा। ॐ क्लीं क्लीं रूपकिशोर मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा। यदि किसी दूसरे के लिए करते तो भिन्न प्रकार से होगा। मान लो रूपकिशोर को शान्तिबाई के प्रति अनुरक्त करना है तो मन्त्र जप इस प्रकार से होगा।...ॐ क्लीं क्लीं रूपकिशोर शान्तिबाई वश्यं कुरु कुरु स्वाहा; यदि शान्तिबाई को रूपकिशोर के प्रति अनुरक्त करना है तो "ॐ क्लीं क्लीं शान्तिबाई रूपकिशोर वश्यं कुरु कुरु स्वाहा" मन्त्र जपते समय आप शान्तिबाई तथा रूपकिशोर के चित्र सामने रखकर त्राटक कर सकते हैं, ध्यान कर सकते हैं। यदि आपने दोनों को देखा है तो चित्र की जरूरत नहीं है वैसे ही ध्यान त्राटक किया जा सकता है। कोई बालक, युवा, स्त्री, पुरुष घर से भाग गया है तो उसके पहने हुए वस्त्र में इस मन्त्र को भोजपत्र या सफेद कागज पर लिखकर किसी भारी पदार्थ के नीचे दबा कर रख देने से वह व्यक्ति यदि स्वस्थ्य है, बंधन में नहीं है, मुक्त आजाद है तो तुरन्त वापिस आ जाता है। और भी अनेक अनुभूत प्रयोग इस महामन्त्र के द्वारा किए जा सकते हैं।

गोचर फल में ग्रहों का वेध

ग्रहों का गोचर (दैनिक गति का प्रभाव) फल देखने के लिए जन्म कुण्डली से चन्द्रमा की राशि को लग्न मानकर जिस दिन का भविष्य देखना हो उस दिन के ग्रह स्पष्ट से कुण्डली में ग्रहों को स्थित करने पर उस दिन की गोचर कुण्डली बन जाती है।

गोचर कुण्डली में कभी-कभी एक ग्रह अपनी विशिष्ट स्थिति से दूसरे ग्रह का वेध कर देता है। वेध होने पर ग्रह के शुभ या अशुभ फल का प्रभाव नहीं रहता।

ग्रहों के वेध स्थान इस प्रकार हैं—

सूर्य :	3	6	10	11					
	9	12	4	5					
चन्द्र :	1	3	6	7	10	11			
	5	9	12	2	4	8			
मंगल :	3	6	11						
	12	9	5						
बृहस्पति :	2	5	7	9	11				
	12	4	3	10	8				
शनि :	3	6	11						
	12	9	5						
बुध :	2	4	6	8	10	11			
	5	3	9	1	7	12			
शुक्र :	1	2	3	4	5	8	9	11	12
	8	7	1	10	9	5	11	6	3

उपरोक्त पंक्तियों में प्रत्येक ग्रह के सामने दो पंक्तियां अंकों की हैं जो एक दूसरे के ऊपर नीचे दी गई हैं। इनमें प्रत्येक ऊपर के अंक के नीचे एक अंक है। इस प्रकार सभी ग्रहों के सामने कुछ अंकों के जोड़े लिखे हैं। प्रत्येक जोड़ा एक वेध दर्शाता है। उदाहरण के लिए सूर्य के तीसरे भाव में होने पर नवें भाव में स्थिति ग्रह तथा सूर्य के नवें भाव में होने पर तीसरे भाव में स्थित ग्रह सूर्य का वेध कर देता है। सभी ग्रहों के विषय में इसी प्रकार देखा जाएगा।

नोट—इस विषय में ध्यान रहे कि सूर्य व शनि तथा बुध और चन्द्र आपस में एक दूसरे का वेध नहीं करते।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्योतिष सम्बन्धी लाल किताब के कुछ अनुभूत योग

ज्योतिष की लाल किताब के अनुसार केवल एक ही ग्रह अथवा रेखा को देखकर किया हुआ निर्णय कोई सम्पूर्ण निर्णय नहीं होता बल्कि कई बार इससे संदेह उत्पन्न होने की सम्भावना भी बनी रहती है। प्राचीन प्रचलित ज्योतिष में लग्नगत एवं अन्य भाव राशियों के अनुसार ही ग्रहों की स्थापना की जाती है। जबकि लाल किताब में राशियों एवं ग्रहों के पक्के (स्थिर) घर निर्धारित किये गए है। अर्थात् लाल किताब में प्रथम द्वितीयादि भावों में स्थित ग्रहों की स्थिति एवं दृष्टि अनुसार ही फलादेश का वर्णन किया गया है। "संक्षिप्त लाल किताब" हेतु हमारे यहां से "भृगु ज्योतिष" नामक पुस्तक मंगवा ले जो चार भागों मे उपलब्ध है जिनका मूल्य १००) रुपये।

शुभ एवं अशुभ ग्रह

लाल किताब में फलादेश और उपायों का आधार मुख्यतः शुभ एवं अशुभ ग्रहों को माना गया है। जो ग्रह सर्वोच्च, मूलत्रिकोण स्वराशि या मित्र राशि में शुभ ग्रहों से युक्त अथवा शुभ ग्रहों द्वारा (३, ५, ७वें) दृष्ट हों, वह ग्रह जन्म कुण्डली में शुभ माने जाते है। ग्रह कुण्डली में नीच या शत्रु राशि में स्थित हों अथवा अशुभ स्थानों (६, ८, १२वें) स्वामी होकर पापी ग्रहों से युक्त अथवा पापी ग्रहों द्वारा (३ या ८वीं दृष्टि से) दृष्ट हों, वह अशुभ कहे जायेंगे।

जन्म कुण्डली में स्थित शुभ अथवा अशुभ ग्रह अपनी स्थिति भावेश एवं कारकत्व अनुसार ही अपना शुभ-अशुभ फल प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त कुण्डली में स्थित ग्रहों की दशा अन्तर्दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव वश भी कुण्डली स्थित ग्रहों के शुभत्व एवं अशुभत्व में न्यूनाधिकता आती रहती है। जन्म कुण्डली या वर्ष कुण्डली में शुभ ग्रहों के फल में वृद्धि तथा अशुभ ग्रहों के सम्भावित अनिष्ट फल की निवृत्ति के लिए 'लाल किताब' में कुछ अपने ही ढंग के अपूर्व उपायों का उल्लेख किया है। आगे हम ग्रहों के प्रत्येक भाव में शुभाशुभ फल उपाय सहित वर्णन करते हैं। ध्यान रहे 'लाल पुस्तक' में वर्णित ज्योतिष की ग्रामर व फलादेश सम्बन्धी अन्य नियमों का सामूहिक रूप से अनुशीलन करने के पश्चात् ही फलादेश सम्बन्धी अन्तिम निर्णय पर पहुंचा जा सकता है।

बृहस्पति

प्रथम भाव—प्रथम भाव में यदि शुभ होकर स्थित हो, तो जातक का भाग्य अपनी बौद्धिक शक्ति के प्रयोग पर निर्भर या सरकारी अफसरों के सहयोग से उन्नति होगी। बृहस्पति के पदार्थों जैसे सोना, पीतल, पुखराज, चने, हल्दी, धार्मिक कार्य कुल पुरोहित (पिता आदि) के सम्बन्ध से भाग्य चमकेगा। सन्तान सुख केतु की स्थिति पर निर्भर करता है। स्त्री का सुख शुक्र की स्थिति एवं राज दरबार (सरकारी कार्य सम्बन्धी) से लाभ सूर्य की स्थिति पर निर्भर करेगा। इसके अतिरिक्त जातक स्वस्थ शरीर, बुद्धिमान, दूरदर्शी, सम्मानित, पिता के भाग्य में वृद्धि कारक, अच्छा वकील, अकाउन्टेंट, डाक्टर, सम्पादक, भूमि सुख युक्त एवं उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

अशुभ होने पर अधूरी शिक्षा वाला, पिता से मनमुटाव, ऋणी, रक्त विकारी, अल्प धनी होता हुआ भी मान-प्रतिष्ठा पाने वाला होता है।

उपाय—किसी से दान न लेना तथा पूर्णिमा के दिन कुरूक्षेत्र, हरिद्वार आदि पर स्नान करना।

२. **द्वितीय भाव में शुभ** बृहस्पति हो, तो जातक उच्च शिक्षित, विद्या संस्थान, बैंक, अध्यापन, धनी सुन्दर स्त्री युक्त सफल व्यापारी, स्वतन्त्र विचारक, धार्मिक, लाटरी द्वारा अकस्मात धन प्राप्त करने वाला होता है।

अशुभ स्थिति में होने से माता-पिता को कष्ट देने वाला, स्त्री (या पति) से परेशान, चिन्तित मन वाला, कृतघ्न, कुलनाशक, अल्पधनी और राजदण्ड भोगने वाला होता है।

उपाय—(क) अपने मकान में कोई कच्चा मिट्टी का हिस्सा बनवाना। (ख) स्वयं केसर या हल्दी का तिलक करना शुभ है।

३. **तृतीय भाव** में शुभ बृहस्पति दयालु, बहुत भाइयों वाला, बहन-भाइयों एवं सम्बन्धियों के लिए शुभ, दूरदर्शी, ससुराल के लिए भाग्य कारक, उत्तम सन्तान, लेखक या विज्ञापनादि से धन लाभ, यात्राओं से लाभ प्राप्त करने वाला एवं दीर्घायु होता है।

तृतीय भावस्थ अशुभ बृहस्पति की स्थिति में जातक अपने स्वार्थ हेतु हर प्रकार के नैतिक एवं अनैतिक साधन अपनाने वाला, सन्तान से दुःखी, बहन भाइयों को दुःखी करने वाला, मित्र से धोखा करने वाला एवं बूढ़ों का निरादर करने वाला होता है।

उपाय—(च) अशुभ प्रभाव के निवारण हेतु केसर या हल्दी का तिलक करना एवं (छ) श्री दुर्गा पूजन व कन्याओं को मीठा भोजन देकर आशीर्वाद ग्रहण करना।

४. **चतुर्थ भाव** में शुभ बृहस्पति हो तो जातक उच्च शिक्षित, मकान, भूमि, वाहनादि से युक्त, पालतु पशु रखने वाला, उत्तम व्यापारी, वकील, जज या नेतृत्व करने वाला, माता-पिता के लिए शुभ, लाटरी आदि से अचानक धन प्राप्त करने वाला होता है।

चतुर्थ भाव में अशुभ होने की स्थिति में जातक मांस, शराबादि का व्यसनी, बिगड़े कामों का खुद जिम्मेदार, परस्त्री गामी, वाहनादि से दुर्घटना का भय तथा इसे गृहस्थ सुख कम मिलता है।

उपाय—(अ) स्वयं लाल बनियान पहनना या बनियान पर लाल रंग के चिन्ह लगा लेना, अपना शरीर नंगा न रखना एवं किसी के सामने न नहाना। धर्म मन्दिर में पूजा-पाठ करना तथा कुल पुरोहित का आशीर्वाद लेना तथा पीपल के वृक्ष को पानी देना कल्याणकारी होगा।

५. **पंचम भाव** में शुभ बृहस्पति हो, तो जातक बुद्धिमान, सम्मानित, उत्तम सन्तान से युक्त, व्यापारी अथवा सेना में उच्चाधिकारी, धनी कुल में उत्पन्न, भाग्यवान, लाटरी आदि से अकस्मात धन प्राप्त करने वाला होता है।

यदि बृहस्पति अशुभ हो, तो जीवन में बड़े उतार-चढ़ाव देखे, सन्तान सम्बन्धी दुःखी कुटुम्ब में निन्दित, घर में किसी की अल्प मृत्यु हो तथा जीवन के अन्तिम समय भयंकर यंत्रणा भोगनी पड़े, सन्तान के कारण धन नाश तथा जुए सट्टे में हानि होती है।

उपाय—अशुभ बृहस्पति के अनिष्ट निवारण हेतु गुरुवार को किसी धर्मस्थान पर लड्डू या बूंदी का प्रसाद चढ़ाना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों का द्वादश भावों में गोचर फल

भाव	लग्न	धन	सहज	सुख	सुत	रिपु	स्त्री	मृत्यु	भाग्य	कर्म	लाभ	व्यय
सूर्य	स्थान हानि	भय	धन प्राप्ति	मान नाश	दीनता	शत्रु नाश	यात्रा	पीड़ा	पुण्य नाश	अभीष्ट सिद्धि	लाभ	व्यय
चन्द्र	उत्तम भोजन	धन क्षय	धन लाभ	कुक्षि में पीड़ा	कार्यनाश	लाभ	धनप्राप्ति	रोग बढ़	राजा से भय	सुख	लाभ	शोक
मंगल	भय	हानि	सुख	शत्रु वृद्धि	द्रव्यनाश	धन हानि	शस्त्र घात	रोग	शोक	लाभ	द्रव्य प्राप्ति	व्यय
बुध	बन्धन	धन लाभ	शत्रु भय	द्रव्य प्राप्ति	मान	बुरी स्थिति	पीड़ा	धनप्राप्ति	चित्त में खेद	सुख	लाभ	धन हानि
गुरु	भय	धन लाभ	पीड़ा	शत्रु वृद्धि	सुख	शोक	राजमान	रोग वृद्धि	सुख	दीनता	प्रतिष्ठा	पीड़ा
शुक्र	शत्रु नाश	धन लाभ	प्रसन्न	धन लाभ	पुत्र सुख	शत्रुवृद्धि	शोक	धनलाभ	श्रेष्ठ	पीड़ा	वन वृद्धि	लाभ
शनि	बुद्धि भ्रम	क्लेश	सुख प्राप्ति	शत्रुवृद्धि	पुत्र कष्ट	सुखप्राप्ति	कलह	रोग	सुख	निर्धन	द्रव्य प्राप्ति	धन हानि
रा. के.	हानि	निर्धन	धन लाभ	वर	शोक	लाभ	कलह	पीड़ा	पाप कर्म	वैर	सुख	द्रव्य हानि

अथ जन्म कुण्डल्यां तन्वादि भावस्थ फलानि

ग्रह	१ तनु	२ धन	३ सहज	४ सुख	५ पुत्र	६ रिपु	७ स्त्री	८ मृत्यु	९ भाग्य	१० कर्म	११ लाभ	१२ व्यय
सूर्य	शूरवीर	नष्टधन	सुमति	पीड़ा	असुता	बलवान्	पराजित	अल्पायु	पुत्रवान्	दैन्य	बहुधन	पतित
चन्द्र	जड	कुटुम्ब	हिंसक	सुख	पुत्रवान्	अल्पाय	कामी	रोगी	सौभाग्य	धनी	धनी	अंगहीन
मंगल	व्रणी	कुटुम्ब	सुमति	असुखी	असुता	मूर्खा	पराजित	अल्पायु	पापी	सुखी	धनी	मतिभंग
बुध	व्रणी	धनी	खल	पीड़ा	मन्त्री	अशत्रु	गुणवान्	नीच	तपस्वी	सधन	लाभ	दुर्जन
गुरु	विद्वान्	सुवाक्या	कृपण	सुखी	धीमान्	अशत्रु	गुणवान्	नीच	तपस्वी	सधन	लाभ	खल
शुक्र	कामी	कुल प्रीत	कृपण	सुखी	सुखी	अशत्रु	कलह	नीच	तपस्वी	सधन	लाभ	खल
शनि	कामी	बहुधन	बुद्धिमान्	असुखी	कुपत्र	बली	पराजित	अल्पायु	अधर्म	सुखी	बहुधन	पतित
राहु	कामी	धन हानि	पराक्रम	असुखी	कर्मात	गतल	प्रमेही	रोगी	अधर्म	सुखी	बहुधन	पतित
केतु	सकाम	धन हानि	पराक्रम	असुखी	कुमति	अधर्मी	प्रमेही	रोगी	अधर्म	सुखी	बहुधन	खल

अथ सर्वघातचक्रम् रोगार्त्ते गमने रणे नीमंगलेषु

राशय:	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
सू. घा	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	६
चं. घा	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
भौ. घा	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	७
बु. घा	२	३	१०	३	७	११	३	८	५	९	१२	१
गु. घा	६	१०	२	७	११	३	८	१६	९	१	४	५
शु. घा	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श. घा	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	२०	१	२
रा. घा	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के. घा	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	२	१२	९
मा. घा	का	मा	पौ.	मा.	फा	वै०	वै०	ज्ये.	आ	श्रा	भा	आ
तिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घात	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
	११	१५	१२	१३	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५
वा. घा	सू०	श०	चं०	बु०	श०	श०	गु०	शु०	शु०	मं०	गु०	शु०
न. घा	म०	ह०	स्व	ऽनु	मू०	श्र०	श०	रे०	भ०	रो.	आ	श्ले
यो. घा	वि	शु०	प	धृ०	प्री	शु०	शु०	व०	वै०	ग०	व्या	व०
ल. घा	१	२	४	८	१०	१२	६	८	९	११	३	५
प्र. घा	मं	श०	बृ०	चं०	सू०	बु०	शू०	मं०	गु०	श०	श०	गु०
ब. घा	क्ष	वं	शु०	वि	स.	व०	शु०	वि	अ.	१व	शु०	वि.
ब. घा	र०	द्वे	ह०	पा	धृ०	चि	कु०	क०	पी	कृ०	मव	कुवं
स्त्री	मे०	वृ	दी	क०	सि	क०	तु०	दृ०	ध०	मं०	कु०	मी
चं घा	१	८	७	९	६	६	४	२	१०	११	५	१२

राशी घातक चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घातक चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न, चन्द्रमा घातक हैं। अतः मनुष्य को चाहिए कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय व महूर्त पर आरम्भ न करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि—समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्टादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया भी गुड़ के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके ॐ **ह्रां ह्रीं ह्रौं** सः सूर्याय नमः बीजमंत्र का पाठ पांच माला करें। **फिर रविवार कथा पढ़ें**। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नमः सहस्त्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे**॥ फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाए अन्तिम रविवार हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन करा-कर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर "ॐ नमः शिवाय"—आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन, पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र बर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए '**ॐ क्रां क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः**', की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र का दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि—बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री ... के लिए बीजमंत्र ॐ **ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय** ...

का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन घी मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

बृहस्पति (गुरु वार) के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम वीरवार का अनुराधा नक्षत्र हो तो और भी अच्छा है। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखे, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय खावें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शांति के लिए ॐ **ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः** मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि—यह व्रत धन विवाह संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए ॐ **द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः** की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चांदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोगों, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और ॐ **शं शनैश्चराय नमः** मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दे। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्तोत्र का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तेल निर्मित पदार्थों का सेवन करें। **राहु की शान्ति** के लिए भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधिअनुसार करें और दान में नारियल भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है। **केतु ग्रह की शान्ति हेतु**—केतु के बीज मंत्र ॐ **स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य(सतनजा)—१. काले माश(उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्ट गंध— ... , कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों का द्वादश भावों में गोचर फल

भाव	लग्न	धन	सहज	सुख	सुत	रिपु	स्त्री	मृत्यु	भाग्य	कर्म	लाभ	व्यय
सूर्य	स्थान हानि	भय	धन प्राप्ति	मान नाश	दीनता	शत्रु नाश	यात्रा	पीड़ा	पुण्य नाश	अभीष्ट सिद्धि	लाभ	व्यय
चन्द्र	उत्तम भोजन	धन क्षय	धन लाभ	कुक्षि में पीड़ा	कार्यनाश	लाभ	धनप्राप्ति	रोग बढ़	राजा से भय	सुख	लाभ	शोक
मंगल	भय	हानि	सुख	शत्रु वृद्धि	द्रव्यनाश	धन हानि	शस्त्र घात	रोग	शोक	लाभ	द्रव्य प्राप्ति	व्यय
बुध	बन्धन	धन लाभ	शत्रु भय	द्रव्य प्राप्ति	मान	बुरी स्थिति	पीड़ा	धनप्राप्ति	चित्त में खेद	सुख	लाभ	धन हानि
गुरु	भय	धन लाभ	पीड़ा	शत्रु वृद्धि	सुख	शोक	राजमान	रोग वृद्धि	सुख	दीनता	प्रतिष्ठा	पीड़ा
शुक्र	शत्रु नाश	धन लाभ	प्रसन्न	धन लाभ	पुत्र सुख	शत्रुवृद्धि	शोक	धनलाभ	श्रेष्ठ	पीड़ा	धन वृद्धि	लाभ
शनि	बुद्धि भ्रम	क्लेश	सुख प्राप्ति	शत्रुवृद्धि	पुत्र कष्ट	सुखप्राप्ति	कलह	रोग	सुख	निर्धन	द्रव्य प्राप्ति	धन हानि
रा. के.	हानि	निर्धन	धन लाभ	वैर	शोक	लाभ	कलह	पीड़ा	पाप कर्म	वैर	सुख	द्रव्य हानि

अथ जन्म कुण्डल्यां तन्वादि भावस्थ फलानि

ग्रह	१ तनु	२ धन	३ सहज	४ सुख	५ पुत्र	६ रिपु	७ स्त्री	८ मृत्यु	९ भाग्य	१० कर्म	११ लाभ	१२ व्यय
सूर्य	सूरवीर	नष्टधन	सुमति	पीड़ा	असुता	बलवान्	पराजित	अल्पायु	पुत्रवान्	दैन्य	बहुधन	पतित
चन्द्र	जड़	कुटुम्ब	हिंसक	सुख	पुत्रवान्	अल्पाय	कामी	रोगी	सौभाग्य	धनी	धनी	अंगहीन
मंगल	व्रणी	कुटुम्ब	सुमति	असुखी	असुता	मूर्खी	पराजित	अल्पायु	पापी	सुखी	धनी	मतिभंग
बुध	व्रणी	धनी	खल	पीड़ा	मन्त्री	अशत्रु	गुणवान्	नीच	तपस्वी	सधन	लाभ	दुर्जन
गुरु	विद्वान्	सुवाक्या	कृपण	मूर्खी	धीमान्	अशत्रु	गुणवान्	नीच	तपस्वी	सधन	लाभ	खल
शुक्र	कामी	कुल प्रीत	कृपण	सुखी	सुखी	अशत्रु	कलह	नीच	तपस्वी	सधन	लाभ	खल
शनि	कामी	बहुधन	बुद्धिमान्	असुखी	कुपुत्र	बली	पराजित	अल्पायु	अधर्म	सुखी	बहुधन	पतित
राहु	कामी	धन हानि	पराक्रम	असुखी	कमति	मतल	प्रमेही	रोगी	अधर्म	सुखी	बहुधन	पतित
केतु	सकाम	धन हानि	पराक्रम	असुखी	कुमति	अधर्मी	प्रमेही	रोगी	अधर्म	सुखी	बहुधन	खल

अथ सर्वघातचक्रम् [illegible] नीमंगलेषु

राशय:	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध	म.	कु.	मी.
सू. घा	४	८	१२	५	९	१	६	१०	७	११	२	६
चं. घा	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	२१
भौ. घा	५	९	१	६	१०	२	७	११	८	१२	३	७
बु. घा	२	३	१०	३	७	११	३	८	५	९	१२	१
गु. घा	६	१०	२	७	११	३	८	१६	९	१	४	५
शु. घा	७	१०	३	८	१२	४	९	१	१०	२	५	६
श. घा	३	७	११	४	८	१२	५	९	६	२०	१	२
रा. घा	८	७	६	४	५	१०	१२	१	२	९	११	३
के. घा	८	७	१०	१	११	५	६	४	२	२	१२	९
मा. घा	का	मा	पौ.	मा.	फ	चै०	वै०	ज्ये.	आ	श्रा	भा	आ
तिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घात	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
	११	१५	१२	१३	१३	१५	१४	११	१३	१४	१३	१५
वा. घा	सू०	श०	चं०	बु०	श०	श०	गु०	शु०	शु०	मं०	गु०	शु०
न. घा	म०	ह०	स्व	अनु	मू०	श्र०	श०	रे०	भ०	रो.	आ	श्ले
यो. घा	वि	शु०	प	धृ०	प्री	शु०	शु०	ब०	वै०	ग०	व्या	व०
ल. घा	१	२	४	८	१०	१२	६	८	९	११	३	५
प्र. घा	मं	श०	बु०	चं०	सू०	बु०	सू०	मं०	गु०	श०	श०	गु०
ब. घा	क्ष	वं	शु०	वि	क्ष.	व०	शु०	वि	अ.	१व	शु०	वि.
व. घा	र०	स्व	ह०	पा	धृ०	चि	कृ०	क०	पी	कृ०	मधू	कुवं
स्त्री	मे०	वृ	वी	क०	सि	क०	तु०	वृ०	ध०	मं०	कु०	मी
चं घा	१	८	७	९	६	६	४	२	१०	११	५	१२

राशी घातक चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घातक चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न, चन्द्रमा घातक हैं। अत: मनुष्य को चाहिए कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय व महूर्त पर आरम्भ न करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि—समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्टादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके **ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं** स: सूर्याय **नम:** बीजमंत्र का पाठ पांच माला करें। **फिर रविवार कथा पढ़ें।** तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नम: सहस्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाए अन्तिम रविवार हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक धारण करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष माहात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानानन्तर "ॐ नम: शिवाय"—आदि शिव मंत्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयकर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन, पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र बर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए '**ॐ क्रां क्रीं, क्रौं स: भौमाय नम:**, की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र का दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि—बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि होती है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रनाम [illegible] तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय** [illegible] का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन घी मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

बृहस्पति (गुरु वार) के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम वीरवार का अनुराधा नक्षत्र हो तो और भी अच्छा है। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखे, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय खावें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शांति के लिए **ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम:** मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि—यह व्रत धन विवाह संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए **ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:** की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चांदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि—यह व्रत शनिग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोगों, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है और धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और **ॐ शं शनैश्चराय नम:** मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दे। तत्पश्चात् शिवोपासना करे। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्तोत्र का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें। **राहु की** शान्ति के लिए भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें और दान में नारियल भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मन्त्र का पाठ करना श्रेयकर होता है। **केतु ग्रह की शान्ति हेतु**—केतु के बीज मंत्र **ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम:** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य(सतनजा)—१. काले माश(उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्ट गंध—अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों के नाम, दृष्टि, रंग, गुण, वर्ण, उच्च-नीच, मित्र-शत्रु, राशि, नक्षत्र आदि चक्र

रवि सन आफताब	चन्द्र मून कमर	मंगल मार्स मिरीख	बुध मर्करी अतारु	गुरु जुपीटर मशतरी	शुक्र वीनस ज़ोहरा	शनि सेटर्न जुहल	राहु ड्गोन्स रास	केतु ड्रेगोन्स जनब	ग्रह के हिन्दी नाम प्लेनेट्स अंग्रेजी नाम सय्यारे उर्दू नाम
३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	३।१०	०	३।१०	३।१०	ग्रहाणां एक पाद दृष्टि
५।९	५।९	५।९	५।९	०	५।९	५।९	५।९	५।९	द्विपाद दृष्टि
४।८	४।८	०	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	४।८	त्रिपाद दृष्टि
७	७	४।७।८	७	५।७।९	७	३।७।१०	७	७	सम्पूर्णा दृष्टि
२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४२	ग्रहाणा वर्षाणि
हरिवंश श्रवण	त्रिपर जप	रुद्री जय	कांस्य दान	अमावस्या व्रत	गोरक्षा	मृत्युञ्जय जप	ध्वजा दान	ध्वजा दान	नेष्टगतव्य वर्षे दान प्रसाधनानि
कृ.उ.फ. उ.भ.	रो. ह. श्र.	मृ. चि. श्र.	आश्लेषा ज्ये रे.	पुन. वि. पू. भा.	मू. पू फा. पू. षा.	पुष्य अ. उ. भा.	आर्द्रा स्वा श.	म. म. अश्वि.	विंशोत्तरी नक्षत्राणि
६	१०	७	१७	१६	२०	१९	१८	७	विंशोत्तरी वर्षाणि
चं. मं. बृ.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बृ.	मित्र-ग्रहा
बृ.	मं. श. बृ. श.	शु. श.	मं. श. गु.	रा. श	मं. गु.	गु.	गु.	०	सम-ग्रहा
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. च. मं.	०	शत्रु-ग्रहा
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचारांश
सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन क.	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुम्भ	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्ण
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष स्त्री नपुंसक
चतुरस्र	प स्वक	चतुष्की	व्रत	वृत	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ	आकार
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपरा	अपरा	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्य	नैऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लोह	लोह	लोह	धातु
चतुरस्र	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्या
सत्व	सत्व	तम	रज	सत्व	रज	तम	तम	मत	गुण
स्थिर	चर	चर	दिस्वा	स्थिर	चर	पक्षिस्थिर	पक्षी	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जल भूमि	दुष्ट	श्मशान	वाणी	लल भूमि	उत्कट	ऊपर	ऊपर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	सम धातु	सम धातु	कफ शुक्र	वायु	वायु	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्धि	युवा	पति वृद्धि	वृद्धि	वृद्धि	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	वरु	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	घात	घात	धात्वादि
वन	जब	वव	माग	गाम	गाम	सन्धि	बिबर	बिवर	स्थान

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जालन्धर से भारत के अन्य शहरों का लग्न समाप्तिकाल

पंचांग दिवाकर के गत पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्नसारणी का समाप्तिकाल जालन्धर शहर के अक्षांश (३१।१९) पर आधारित है। किसी भी अन्येतर मेषादिलग्न का आरम्भ एवं समाप्तिकाल को जानने के लिये वहां के स्थानीय सूर्योदयकाल एवं उस स्थान के अक्षांश पर आधारित लग्नसारणी वांछित होती है। परन्तु यहां पर पाठकों की सुविधा के लिए स्थूल रूप से भारत के विभिन्न शहरों के लग्न समाप्तिकाल जानने के लिए संस्कार तालिका दी जा रही है। इसकी सहायता से आप अभीष्ट शहर का लग्नारम्भ या समाप्तिकाल जान सकते हैं। जैसे यदि आप देहली में १३ अप्रैल को वृश्चिक लग्न का समाप्तिकाल जानना चाहते हैं, तो आप देहली के आगे और वृश्चिक राशि के नीचे —११ मिनट लिखा है। आप १३ अप्रैल जालन्धर के लग्न समाप्तिकाल २३ घं. ३१ मि. में ११ मि. हीन करने पर १३ अप्रैल को देहली में रात्रि ११ बजकर २० मिनट पर वृश्चिक लग्न समाप्तिकाल ज्ञात हो जाएगा। अधिकांशतः नगरों के लग्नों का स्वोदयमान वहां पर के अक्षांशानुसार ही आंकलन किया गया है। परन्तु कुछ शहरों के लग्नमान का निर्धारण एकरूपता की दृष्टि से पोजीशनल अस्ट्रालोजी सैंटर कलकत्ता द्वारा प्रदत्त स्वीकृति प्राप्त संस्कार तालिका के आधार पर किया गया है।

नाम शहर अक्षांश	मेष मिनट	वृष मिनट	मिथुन मिनट	कर्क मिनट	सिंह मिनट	कन्या मिनट	तुला मिनट	वृश्चिक मिनट	धन मिनट	मकर मिनट	कुम्भ मिनट	मीन मिनट
अमृतसर (३१°३८')	+ २	+ ३	+ २	+ ३	+ ४	+ ६	+ ५	+ ५	+ ५	+ ५	+ ५	+ ६
अम्बाला (३०°२१')	— ६	— ६	— ४	४	— ६	— ५	— ५	— ५	— ५	— ४	— ३	— ३
अनन्तनाग (३३°४३')	६	६	३	± ०	+ ३	+ ५	+ ८	+ ६	+ ८	+ ७	४	± ०
अजमेर (२६°२७')	+ १२	+ १५	+ १५	+ १२	८	२	— १	— ३	— २	२	+ ७	+ ११
अबोहर (३०°०८')	५	५	५	५	५	३	+ ३	+ २	+ २	४	६	६
अहमदाबाद (२३°०२')	२६	३०	३१	२४	१६	१५	— २	— ६	— ४	२	११	१८
अलाहाबाद (२५°२८')	— १४	— १६	— १२	— १५	— २१	— २६	३४	३७	३५	— ३१	— २५	— २०
अलीगढ़ (२७°२४')	५	३	३	४	६	१०	१०	१२	१२	१०	७	४
अयोध्या (२६°४८')	१३	१५	१५	१७	२०	२५	२८	३०	२६	२५	२०	१६
अकोला (२०°४२')	+ १३	+ १६	+ १७	+ १०	+ १	१५	१६	२३	२३	१६	५	+ ३
अलवर (२७°३४')	३	५	५	३	± ०	४	६	८	७	४	+ १	४
आगरा (२७°१०')	— ३	— १	— १	— ३	— ६	११	१४	१६	१५	११	— ८	— ४
इंदौर (२२°४४')	+ १४	+ १८	+ १६	+ ११	+ ३	८	१४	१६	१७	१०	१	+ ७
उज्जैन (२३°१९')	१४	१८	१७	१२	५	४	१०	१२	१३	७	+ २	६
ऊना (३१°३२')	— ४	— ४	— ४	— २	— २	२	२	२	२	२	— २	— ३
ऊधमपुर (३२°५५')	२	२	२	± ०	+ ३	+ ४	+ ७	+ ७	+ ७	+ ६	+ ५	+ २
कोटखाई (३१°२८')	८	८	७	— ७	— ७	८	— ७	— ७	— ७	— ६	— ६	— ७
करनाल (२९°४२')	५	४	४	४	४	६	६	७	७	५	३	२
कालका (३०°४०')	५	५	५	४	४	६	५	५	५	३	४	५
कुरुक्षेत्र (२९°५९')	४	४	४	४	४	६	६	७	७	५	३	२
करतारपुर (३१°२७')	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
कपूरथला (३१°२३')	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
काठमाण्डू (२७°४२')	३२	३०	३०	२९	३४	३८	४०	४२	४२	४०	३६	३२
कटक (२०°२८')	२४	१७	१९	२५	३६	४८	५८	६३	६०	५३	४२	२८
कानपुर (२६°२८')	११	८	९	१२	१६	२२	२६	२८	२७	२२	१७	१३
कांगड़ा (३२°०५')	५	५	५	४	३	३	१	१	१	१	१	३
कुल्लू (३१°५८')	८	८	८	७	६	६	८	४	४	४	४	५
कठुआ (३१°४९')	३	३	३	२	१	०	+ २	+ ३	+ २	+ २	+ २	+ १
खन्ना (३०°४२')	३	३	३	२	२	३	— ३	— ३	— ३	— २	— २	— ३
ग्वालियर (२६°१४')	२	+ १	+ १	२	६	१३	१७	१९	१८	१४	९	५
गुरदासपुर (३२°०३')	२	— २	— २	१	± ०	± ०	+ २	+ २	+ २	+ २	+ २	+ १
गोरखपुर (२६°४५')	२५	२३	२३	२५	— २८	— ३३	— ३६	— ३८	— ३७	— ३३	— २८	— २५
गुड़गांव (२८°२७')	± ०	+ १	+ १	± ०	२	६	८	१०	९	७	४	२
गोहाटी (२६°११')	— ५५	— ४८	— ५३	— ५५	६१	६८	७२	७५	७३	६६	६४	६०

नाम शहर अक्षांश	मेष मिनट	वृष मिनट	मिथुन मिनट	कर्क मिनट	सिंह मिनट	कन्या मिनट	तुला मिनट	वृश्चिक मिनट	धन मिनट	मकर मिनट	कुम्भ मिनट	मीन मिनट
गाजियाबाद (२८°४०')	— २	— १	— १	— २	— ४	— ८	— १०	— १२	— ११	— ९	— ६	— १
गंगानगर (३०°४९')	+ ७	+ ७	+ ७	+ ८	+ ८	+ ७	+ ७	+ ७	+ ७	+ ८	+ ८	+ ७
गया (२४°५०')	— २६	— १८	— २३	— २७	— ३३	— ४२	— ४७	— ५१	— ४९	— ४४	— ३७	— ३२
चण्डीगढ़ (३०°४४')	५	५	५	४	४	५	५	५	५	४	४	५
जयपुर (२६°५५')	+ ७	+ ८	+ ८	+ ६	+ ३	३	७	९	८	४	१	+ ३
जम्मू (३२°४३')	— १	१	०	२	२	+ ६	+ ६	+ ६	+ ५	+ ४	+ २	१
जोधपुर (२६°१८')	+ २०	२२	२२	१९	१५	८	४	२	३	७	१२	१६
दिल्ली (२८°३९')	— १	± ०	± ०	— १	— ३	— ७	— ९	— ११	— १०	— ८	— ५	— ३
देहरादून (३०°१९')	९	— ८	— ८	९	९	११	१२	१२	१३	११	९	९
धर्मशाला (३२°२९')	५	५	५	४	३	३	१	१	१	१	१	२
नाहन (३०°२३')	७	७	७	६	६	७	७	७	७	६	६	७
नंगल (३०°२३')	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
नैनीताल (२९°२३')	१२	११	११	१२	१४	१८	१९	२१	२०	१७	१४	११
नवलगढ़ (२७°४५')	+ ७	+ ९	+ ९	+ ८	+ ६	+ ३	+ १	+ २	३	०	+ ४	+ ४
नवांशहर (३१°१७')	— ३	— ३	— ३	— २	— ३	— २	— ३	— ३	३	२	— ३	— ३
नागपुर (२१°९')	+ ३	+ ८	+ ८	+ १	८	१९	२०	३२	३१	२२	१२	२
पटियाला (३०°२०')	— २	— २	— २	— २	२	३	३	४	४	३	२	२
पानीपत (२९°२३')	२	१	१	२	४	९	१०	१२	११	८	५	२
पठानकोट (३२°१७')	३	३	३	२	१	१	+ १	+ १	+ १	+ १	+ १	१
पूना (१८°३१')	+ २९	+ ३९	+ ३३	+ २५	+ १२	२	— ११	— १६	— १६	— ७	५	+ १७
पटना (२५°३७')	— २६	— २५	— २६	— २६	— ३४	४१	४५	४७	४६	४१	— ३६	— ३२
पालमपुर (३२°६')	६	६	६	५	४	४	२	२	२	२	२	४
फगवाड़ा (३१°१३')	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
फाजिल्का (३०°२५')	+ ६	+ ६	+ ६	+ ६	+ ६	+ ५	+ ५	+ ५	+ ५	+ ७	+ ७	+ ७
फिरोजपुर (३०°५५')	४	४	४	५	५	४	५	५	५	६	६	५
बठिण्डा (३०°११')	३	३	३	३	३	२	२	२	२	४	५	५
बटाला (३१°४९')	± ०	± ०	०	१	२	— २	३	३	३	३	३	२
वाराणसी (२५°२०')	— १८	— १३	— १५	— १९	— २५	३३	— ३८	— ४१	— ४०	— ३५	— २८	— २५
बिलासपुर (३१°१९')	५	५	५	४	४	+ ५	४	४	४	३	३	४
बम्बई (१८°५८')	+ ३२	+ ३८	+ ३५	+ २८	+ १७	३	८	१४	११	२	+ १०	+ २१
बंगलौर (१२°५८')	२२	३०	२८	१९	— १	— २१	३६	४४	४०	२७	— १०	५
बरेली (२८°२२')	— ११	— ९	— ९	— १०	१२	+ १६	१८	२०	२०	१८	१४	— ११
बीकानेर (२८°१')	+ १५	+ १६	+ १६	+ १५	+ १३	९	+ ८	+ ६	+ ६	+ ८	+ १२	+ १५
बड़ोदा (२२°१८')	२६	३०	२९	२३	१९	७	२	— ५	— ५	१	११	२१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

नाम शहर अक्षांश	मेष मिनट	वृष मिनट	मिथुन मिनट	कर्क मिनट	सिंह मिनट	कन्या मिनट	तुला मिनट	वृश्चि. मिनट	धन मिनट	मकर मिनट	कुम्भ मिनट	मीन मिनट
भुवनेश्वर (२०°।१५′)	—२२	—१७	—१८	—२५	—३६	—४९	—५८	—६३	—६१	—५३	—४२	—३२
भोपाल (२३°।१६′)	+ ७	+११	+१०	+ ५	३	१३	१६	२५	२१	१६	८	१
मेरठ (२९°।१′)	— ५	— ४	— ४	— ५	७	११	१३	१५	१४	११	८	५
मुरादाबाद (२८°।५१′)	९	८	८	९	११	१५	१७	१९	१८	१५	१२	९
मण्डी (३१°।४३′)	८	८	८	८	७	७	५	५	५	५	५	६
मोगा (३०°।४८′)	+ १	+ १	+ १	+ २	+ २	+ १	+ १	+ १	+ १	+ २	+ २	+ १
मथुरा (२७°।२८′)	— २	± ०	± ०	— १	— ४	— ९	—१२	—१४	—१४	—१२	— ७	— ४
मद्रास (१३°।०४′)	+११	+१९	+१७	+ ५	१२	३१	४६	५४	५१	३८	२१	५
मैसूर (२°।१८′)	२७	३९	३२	२८	+ २	१७	३३	३२	२८	२४	७	+१०
रोपड़ (३०°।५७′)	— ४	— ४	— ४	— ३	— ३	४	३	३	३	२	२	— ३
रांची (२३°।२३′)	२५	२१	२३	२८	३६	४६	५२	५७	५५	४८	३९	३१
लुधियाना (३०°।५५′)	२	२	२	१	१	२	२	२	२	१	१	२
लाहौर (३१°।३२′)	+ ४	+ ४	+ ४	+ ४	+ ४	+ ४	+ ४	+ ४	+ ४	+ ४	+ ३	+ ३
लखनऊ (२६°।५५′)	—१४	—१२	—१२	—१४	—१८	—२४	—२८	—३०	—२९	—२५	—२०	—१७
शिलांग (२५°।३४′)	५५	४९	५२	५५	६१	६९	७४	७६	७५	७१	६५	६१
श्रीनगर (३४°।०६′)	२	२	१	+ २	+ ५	+ ७	+१०	+११	+१०	+ ९	+ ६	+ २
शिमला (३१°।०६′)	६	६	६	— ५	— ४	— ५	— ५	— ५	— ५	— ५	— ५	— ६
सोनीपत (२९°।०३′)	२	१	१	२	४	८	१०	१२	११	९	६	४
सुन्दरनगर (३१°।३२′)	६	६	६	५	४	४	४	४	४	४	४	५
सूरत (२१°।१२′)	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+ ४	४	९	८	+ १	+१२	+२१
सहारनपुर (२९°।५८′)	— ५	— ५	— ५	— ५	— ५	— ७	८	९	९	— ७	— ५	— ५
हमीरपुर (३१°।४२′)	६	६	५	५	४	४	२	२	२	२	२	४
हैदराबाद (१७°।२०′)	+१२	+१८	+१६	+ ७	६	२१	४०	३९	३६	२५	१२	१
होशियारपुर (३१°।३६′)	— ३	— ३	— ३	— २	१	१	१	१	१	१	१	२
हांसी (२९°।०६′)	+ २	+ ३	+ ३	+ २	+ ०	४	६	८	७	४	१	+ २
हिसार (२९°।१०′)	३	४	४	३	१	३	५	७	६	३	± ०	३
हरिद्वार (२९°।५०′)	— ८	— ८	— ७	— ८	— ८	१०	११	११	१२	१०	८	— ८

विशेष नोट—पृथ्वी पर प्रत्येक स्थान पर सूर्योदयकाल में अन्तर के साथ-साथ उस स्थान के लग्नमान में भी न्यूनाधिक रूपेण अन्तर पड़ता है। पृथ्वी की प्रतिवर्ष अयनांशादि गति में परिवर्तन के कारण उपरोक्त लग्नों के समाप्तिकाल में प्रतिवर्ष थोड़ी स्थूलता की सम्भावन हो जाती है। इसको अधिक सूक्ष्म बनाने के लिए प्रतिवर्ष एक दो मिनट के वार्षिक संस्कार कर लेने चाहिए। जैसे—मेषादि सभी लग्नों के समा. काल में सन् १९८७ ई. में +१ मिनट का संस्कार, १९८८ में +२ मिनट का, १९८९ में +३ मिनट का, १९९० ई. में —१ मिनट के संस्कार की आवश्यकता रहेगी। इसके अतिरिक्त लीप साल(जब फरवरी २९ दिन का होता है) के संस्कार में एकाध मिनट का और अन्तर पड़ेगा।

उपरोक्त नगरों के अतिरिक्त यदि कोई सज्जन किसी भी अन्य नगर का जालंधर से लग्न-समाप्तिकाल ज्ञात करना चाहे तो जबाबी पत्र भेजकर जानकारी प्राप्त कर सकता है।

ग्रहों के फल देने का समय

राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ।
मध्ये सदा शशिसुतऽश्वरमेऽब्जमन्दौ॥

सूर्य, मंगल—ये राशि के आदि भाग में फल देते हैं। गुरु, शुक्र राशि के मध्य भाग में(अर्थात् ११ से २० अंश तक) फल देते हैं। बुध सम्पूर्ण राशि में फल देता है। चन्द्रमा, शनि राशि के अन्तिम भाग में (अर्थात् २१ से ३० अंश तक) फल देते हैं।

ग्रहों का गोचर में विशेष फल

सूर्यारसौम्यास्फुजितोऽक्षनाग,
सप्ताविधसाग्विधुरग्निनाडी।
तमोयमेज्यात्रिरसाश्विमासान्,
गन्तव्यराशेः फलदाः पुरस्तात्॥

गन्तव्य राशि(आगे की राशि)में जाने के दिन से पहले सूर्य ५ दिन, मंगल ८ दिन, बुध ७ दिन, शुक्र ७ दिन, चन्द्रमा ३ घटी, राहु-केतु ३ मास, शनि ६ मास, गुरु २ मास पहले ही फल को देने लगते हैं।

जन्म दशा जानने की सरल विधि

कृत्तिका नक्षत्र से इष्टकालिक जन्म नक्षत्र तक गिनकर जो संख्या आवे, उसे ९ का भाग देने पर एकादि शेष बचने पर क्रम से सूर्य, चन्द्र, मंगल, राहु, बृहस्पति, शनि, बुध, केतु और शुक्र की दशा होती है। उदाहरणार्थ किसी व्यक्ति का जन्म नक्षत्र चित्रा है। कृत्तिका से प्रारम्भ करके गिनने से चित्रा नक्षत्र का संख्या क्रम १२ आया। इसको ९ से भाग देने पर शेष ३ बचे। उपरोक्त क्रम से सूर्य से शुरू करके ३ की संख्या तक गिनने से मंगल की दशा हुई। अतः चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न होने वाले बालक को जन्मकालीन मंगल की दशा लगेगी। जन्म समय दशा का आरम्भ एवं समाप्तिकाल जानने के लिए नक्षत्र की प्रभात एवं भभोग प्रणाली का प्रणयन करना चाहिए। इसके लिए हमारे कार्यालय से 'दशाफल दर्पण' मंगवा कर पढ़ें।

पंचांग दिवाकर कार्यालय, मुल्तानी बिल्डिंग, रोशना रोड, दिल्ली-७

माला योग—यदि कु. में बुध, गुरु और शुक्र ४, ७, १०वें स्थानों में स्थित हों, और शेष ग्रह इनसे भिन्न भावों में पड़े हों, तो माला योग होता है। इस योग के होने से जातक धनवान वस्त्राभूषणों से युक्त, एक से अधिक स्त्रियों से प्रेम सम्बन्ध रखने वाला, एवं उच्च अधिकारी होता है। चुनाव, कम्पटीशन आदि में प्रायः सफल रहता है।

शकट योग—जन्म कुण्डली में यदि लग्न और सप्तम भाव में समस्त ग्रह पड़े हों तो शकट योग होता है। इस योग वाला व्यक्ति स्वार्थी, चतुर, रोगी, दुष्ट, अल्प-विद्या, ड्राईवरी एवं संचालनादि कार्यों में सफल होता है। धन की उसे प्रायः कमी रहती है। बन्धुओं का सुख भी नहीं होता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

घर बैठे सर्वोपयोगी पुस्तकें वी० पी० पी० द्वारा मंगाकर लाभ उठावें

धार्मिक

वाल्मीकि रामायण रफ	७०)००
ग्लेज	८०)००
,, ,,	८५)००
तुलसी रामायण	६०)००
योग वशिष्ट पहला भाग	६०)००
,, ,, दूसरा ,,	१२०)००
,, ,, सम्पूर्ण ,,	७०)००
शिव पुराण	६०)००
महाभारत	४०)००
बलजं राधे श्याम	
,,	७०)००
सुख सागर	३०)००
प्रेम सागर	२०)००
श्रीमद्भगवद् गीता	३०)००
कपड़ा जिल्द बड़ी	
,,	१५)००
श्रीदुर्गा सप्तशति भाषा	२०)००
भा. टी.	
,,	२५)००
हनुमान उपासना	२५)००
राम ,,	२५)००
दुर्गा ,,	२५)००
शिव ,,	२५)००
काली ,,	२५)००
लक्ष्मी ,,	२५)००
कबीर ,,	२५)००
भैरव ,,	२५)००
गणेश ,,	२५)००
भक्ति सागर बड़ा	३०)००
बारह मास महात्म्य	२८)००
गायत्री शक्ति	१५)००
वर्ष भर के व्रत व त्यौहार	
महात्म्य सभी मेल (लगभग १४ मेल) प्रति	१५)००

ज्योतिष

भृगु संहिता	२५१)००
हस्त रेखा ज्ञान	७०)००
ज्योतिष सर्व संग्रह	१६)००
सरल ज्योतिष	३१)००
केरल ज्योतिष शास्त्र	६१)००
स्वर ,, ,,	४०)५०
अखंड त्रिकालज्ञ ज्योतिष	२२)००
शीघ्र बोध	१८)००
हनुमान ज्योतिष	१८)००
भृगु मूक प्रश्नदीपिका	२८)००
भृगु प्रश्न शिरोमणि	२८)००
सच्चा फालनामा	२८)००
अंक विद्या	२८)००
भारतीय ज्योतिष व लाटरी	४५)००
हस्त सामुद्रिक ज्योतिष	२८)००
शरीर लक्षण विज्ञान	२८)००
विशाल सामुद्रिक विज्ञान	२८१)००
स्त्री सामुद्रिक	३०)००
व्यापार अर्घ मार्तण्ड	२८)००
वृहद्ध होड़ा चक्र	२८)००
शिवस्वरोदय	२८)००
उड्डीश तन्त्र	२५)००

जन्त्र-तन्त्र-मन्त्र

हिप्नोटिज्म मैस्मरेजम	२८)००
मोहिनी मन्त्र	२८)००
यन्त्र सिद्धि	२८)००
मन्त्र ,,	२८)००
तन्त्र ,,	२८)००
वशीकरण सिद्धि	२८)००
यक्षणी भैरव सिद्धि	२८)००
देवी-देवता सिद्धि	२८)००
मनोकामना सिद्धि	२८)००
काला जादू	२८)००
पंच पक्षी तन्त्र	३८)००
सेवड़े का जादू	१८)००
महा इन्द्रजाल	२८१)००
इन्द्रजाल	३०)००
हस्त लिखित इन्द्रजाल	२५)००
उल्लू तन्त्र	१८)००
कौआ तन्त्र	१८)००

कर्मकाण्ड, ज्योतिष

महामृत्युञ्जय जप विधि	२०)००
विवाह पद्धति	२०)००
हवन पद्धति	२०)००
मूल शान्ति सटीक	२०)००
एकादशी सपिण्डी	२०)००
पंच नारायण बलि	२०)००
स्त्री भाव प्रकाश	२०)००
सुत भाव ,,	२०)००
तनु भाव ,,	२०)००
वर्षफल चन्द्रिका	२०)००
पंचांग सं. १९७१ से ८०	१५०)००
,, ,, १९८१ से ९०	१५०)००
,, ,, १९९१ से २००४	१५०)००
,, ,, २००५ से २०१०	१५०)००
,, ,, २०११ से २०१५	१५०)००
टेवा फार्म रंगीन छपे हुए	३५) सै.
,, ,, सादा	३५) ,,
,, ,, गणेश वाले	३५) ,,
विवाह लग्न (साहे चिट्ठी)	५५) ,,
जन्माक्षर छोटी कापी	२००) ,,
जन्मपत्री बड़ी कापी	४५०) ,,

स्वास्थ्योपयोगी

सदा जवान रहो	३०)००
४०-४५ वर्ष के बाद जीवन कैसे बितायें	३०)००
स्वस्थ कैसे रहें	३०)००
योगासन	१८)००
ब्रह्मचर्य ही जीवन है	२२)००
व्यायाम शिक्षा	२२)००

स्त्री उपयोगी

आधुनिक नारी सुबोधिनी	३५)००
भारतीय नृत्य शिक्षा	३५)००
२०१ लेटेस्ट हेयर स्टाइल	३०)००
मनचाही सन्तान	२२)००
हारमोनियम पुष्पान्जली	२२)००
म्यूजिक डांस टीचर	२२)००
पाक विज्ञान	३१)००
बुनाई के पचास नमूने	३१)००
बुनाई शिक्षा	२८)००
दर्जी मास्टर	३०)००
शाक रत्नाकार	२८)००
अचार, चटनी, मुरब्बे बनाना	२८)००
शर्बत विज्ञान	२८)००
कढ़ाई शिक्षा	३५)००
बंगाली मिठाई और पकवान	१८)००

संगीत सम्बन्धी

हारमोनियम गाईड	२५)००
गिटार शिक्षा	२५)००
तबला गाईड	२५)००
सितारा ,,	२५)००
बांसुरी ,,	२५)००
शास्त्रीय कण्ठ संगीत	२५)००

नोट :—प्रत्येक पुस्तक का डाक व्यय पृथक होगा। आधी राशि अग्रिम मिलने पर ही आर्डर पर विचार किया जायेगा।

कार्यालय मुफीद आलम जन्त्री

डब्ल्यू. एम. १५१, बस्ती गुजां, जालन्धर शहर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

घर बैठे सर्वोपयोगी पुस्तकें वी० पी० पी० द्वारा मंगवाकर लाभ उठावें

यौनि विज्ञान

सैक्स गाईड	३०)००
१५१ प्रेम भरे पत्र	२२)००
शादी की २१ रातें	१४)५०
बर्थ कन्ट्रोल	१५)००
स्त्री के गुप्त भेद	१४)५०
सचित्र कोक शास्त्र	२०)००
,, सुहागरात	१४)५०

भाषा ज्ञानोपयोगी

हिन्दी इंग्लिश टीचर	२०)००
इंग्लिश मैट्रिक गाईड	२८)००
हिन्दी इंग्लिश लैटर राइटिंग	१८)००
चौदह भषायें सीखिए	१८)००

पशु पालन

हैण्ड बुक आफ पोल्ट्री फार्मिंग	२८)००
कमर्शियल पोल्ट्री	२५)५०
पोल्ट्री फार्मिंग	१६)००
,, सर्जन	१६)००
पशुओं का घरेलू तथा डा. इलाज	२८)००

विविध इण्डस्ट्रियल

बूट पालिश इण्डस्ट्री	२२)००
माडर्न कम्पलीट फोटोग्राफी	२५)००
मैटल पालिश इण्डस्ट्री	२२)००
फिनायल ,,	१६)००
मेल आर्डर बिजनस	१८)२५
आपके लिए १००१ नौकरियां	२२)००
मोमबत्ती का व्यापार	१८)००
पेन्टरी का काम	१८)००
बुक बाईडिंग	२२)००
साबुन शिक्षा	२५)५०
साबुन तेल शिक्षा	३०)००
नेल पालिश	१५)००
फेस क्रीम और फेस पाउडर	१५)००
हेयर आयल	१५)००
बेकरी इण्डस्ट्री	३०)००
कुकरी बुक	१८)२५
रबड़ की मोहरें बनाना	१५)००
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज	४६)००
धन कमाने की २५० स्कीमें	२५)००
धूप अगरबत्ती	२२)००
सोप मेकर्स गाईड	२५)५०

विविध टैक्निकल

सर्विसिंग ट्रांजिस्टर रेडियो	३५)५०
ट्रांजिस्टर डेटा व सर्किट	२८)००
,, गाईड	४६)००
,, सर्किट्स	२५)५०
वायरलैस रेडियो गाईड	२२)००
रेडियो सर्विसिंग	२५)५०
रेडियो और ट्रांजिस्टर गाईड	५१)००
टैलीविजन सर्विसिंग	२८)००
इलैक्ट्रिक गाइड	२८)००
,, वायरिंग	१८)२५
,, मोटर्स	२२)००
,, बैट्रीज	२६)००
,, मोटर्स	२५)००
खराद शिक्षा	२०)५०
वर्कशाप गाईड	२०)५०
खराद तथा वर्कशाप ज्ञान	४०)५०
मशीनिस्ट गाईड	३०)००
इलैक्ट्रिक वैल्डिंग	२०)२५
गैस ,,	२२)००
इलैक्ट्रिक तथा गैस वैल्डिंग	४०)५०
न्यू मोटर कार गाईड	४०)५०
डीजल इन्जन ,,	२५)५०
आयल इन्जन गाईड	४०)५०
एयर कण्डीशनिंग सर्विसिंग	४०)५०
घड़ी साजी	१८)००
प्रैक्टिकल फोटोग्राफी	४०)००
मोटर साईकिल गाईड	१८)००
स्कूटर ओटोरिक्शा गाईड	१८)००
कारपेन्ट्री मास्टर	२२)००
,, गाईड	२५)००
विश्वकर्मा प्रकाश	२८)००
राजगीरी शिक्षा	१८)२५
माडर्न फर्नीचर बुक	७२)००
रंग साजी	१४)५०
लाण्ड्री इण्डस्ट्री	१८)२५
मोटर मैकेनिक टीचर	३५)००
,, ड्राइविंग एण्ड मरम्मत	४४)५०
मोटर कार सर्विसिंग	३१)००

आयुर्वेदिक

आयुर्वेद गाईड	६०)००
देहाती जड़ी बूटियां	२५)००
घर का वैद्य बड़ा	३८)००
लेडी डाक्टर	१४)५०
घरेलू ,,	१४)५०
नाड़ी ज्ञान तरंगिणी	१४)५०
इलाजुलगुर्बा	२५)००
स्त्री रोग विज्ञान	१८)२५

विविध ज्योतिष

फल दीपिका	५०)००
मानसागरी भा. टी.	५०)००
ताजिक नीलकण्ठी भा. टी.	३६)००
भाव कुतूहल भा. टी.	३५)००
जातका भरण भा. टी.	२५)००
मुहूर्त्त चिन्तामणि भा. टी.	३७)००
लग्न चन्द्रिका भा. टी.	१७)००
जातकालंकार भा. टी.	१५)००
हस्तरेखा विज्ञान	४०)००
बृहद्द ज्योतिसार	२८)००
कर्म विपाक भा. टी.	३०)००
रत्न परिचय	३६)००
पाश्चात्य ज्योतिष	२२)००
उत्तरकालामृत	२२)००
सुगम ज्योतिष प्रवेशिका	२२)००
ज्योतिष की प्रथम पुस्तक	१०)००
भारतीय ज्योतिष	६०)००
त्रिकालज्ञ ज्योतिष	२०)००
कर्मकाण्ड भास्कर	५१)००
संस्कार पद्धति	१५)००
सत्यनारायण व्रत कथा भा. टी.	१०)००
पार्वण श्राद्ध पद्धति	६)००
गरुण पुराण भाषा	१५)००
मनु स्मृति भा. टी.	३०)००
सर्व देव पूजा पद्धति	१०)००
महाशिवरात्रि व्रत	१०)००
कृष्ण जन्माष्टमी व्रत	१०)००
कार्तिक महात्म्य मासे	१७)००
लघुपाराशरी भा. टी.	१०)००
बृहद्धपाराशरी भा. टी.	७५)००
बृहद्ध होड़ा चक्र	३१)००
बृहद्धज्जातक भा. टी.	३०)००
सट्टे का कल्पवृक्ष	५५)००
दुर्गा सप्तशति (देवीदयाल)	३०)००
विवाह पद्धति	३१)००

नोट—प्रत्येक पुस्तक का डाक व्यय पृथक होगा। आधी राशि अग्रिम मिलने पर ही आर्डर पर विचार किया जावेगा।

कार्यालय मुफीद आलम जन्त्री

डब्ल्यू एम. १५१, बस्ती गुजां, जालन्धर शहर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय गणित

अब हम आप को सूर्योदय निकालने का एक और आसान तरीका बताते हैं। इसकी सहायता से आप किसी भी स्थान का सूर्योदय सरलता से निकाल सकते है। इसके लिए आपको वेलान्तर सारिणी, रवि क्रान्ति सारिणी तथा चर सारिणी की आवश्यकता पड़ेगी। प्रथम दो सारिणियां पृष्ठ ११४ पर तथा चर सारिणी पृष्ठ १६४ पर दी गई है। यह चर सारिणी पृष्ठ ११० पर दी गई चरान्तर सारिणी से भिन्न है।

इस विधि में पहले स्थानीय मध्याह्न निकाला जाता है। भारतीय स्टैंडर्ड समय के अनुसार दोपहर १२ बजे का समय मध्याह्न का होता है। परन्तु प्रत्येक स्थान पर यह ठीक १२ बजे नहीं होता। मध्याह्न के समय किसी भी वस्तु की छाया पृथ्वी पर सबसे छोटी हो जाती है किसी भी स्थान का ठीक मध्याह्न का समय निकालने के लिये १२ में वेलान्तर के मिनटों को धन या ऋण करना होता है।

उदाहरण (१)—मानलो आपको नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालना है। नागपुर का पूर्व रेखांश ७९।६ स्टैंडर्ड अन्तर ऋण १३।३६ तथा उत्तर अक्षांश २१।९ है। १२ अक्टूबर की रवि क्रान्ति ७।१२ दक्षिण है और वेलान्तर १३ मिनट ऋण है। २१।९ अक्षांश के लिए २१ अक्षांश के चर अंकों से गणित किया जा सकता है।

८ क्रान्त्यंश के चर	=	१२-२४
६ ,,	=	९-१२
२ ,, का अन्तर		३-१२
१ ,, ,,		१-३६
०-१२ ,,		०-१९
(९६ × १२ ÷ ६०)		
		१-५५
१-१२ क्रान्त्यंश के चर		९-१२
६-०० ,, ,,		११-०७
७-१२ ,, ,,		

	घं.	मि.	सै.
मध्याह्न काल	१२	०	००
१२ अक्टूबर का वेलान्तर घटाया	०	१३	००
१२ ,, का स्पष्ट मध्याह्न	११	४७	००
	६	०	००
दक्षिण क्रान्ति है अतएव ६-० में से चर अंक घटाये	०	११	०७
	५	४८	५३

सूर्योदय गणित

	११	४७	००
—	५	४८	५३
	५	५८	०७
+	०	१३	३६
सूर्योदय	६	११	४३

स्थानीय समय स्टैंडर्ड अन्तर ऋण है अतः धन किया भा. स्टैं. टाइम

सूर्यास्त गणित

	११	४७	००
+	५	४८	५३
	१७	३५	५३
+	०	१३	३६
सूर्यास्त	१७	४९	२९

रवि क्रान्ति २१ मार्च से २३ सितम्बर तक उत्तरा होती है और शेष समय में २३ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण होती है। उत्तर क्रान्ति हो तो चर अंको को ६ में धन करते हैं और दक्षिण क्रान्ति हो तो चर अंकों को ६ में से ऋण करते हैं। १२ अक्टूबर की क्रान्ति दक्षिण है अतएव चर अंकों को ६ में से घटाया गया है। इस गणित में वेलान्तर धन हो तो धन किया जाता है और ऋण हो तो ऋण किया जाता है। स्टैंडर्ड अन्तर ऋण हो तो धन किया जाता है और धन हो तो ऋण किया जाता है।

सूर्योदय तथा सूर्यास्त निकालने के बाद आप दिनमान भी निकाल सकते हैं। सूर्यास्त में से सूर्योदय घटाकर ढाई गुना करने से घटी पल में दिनमान आ जाता है।

सूर्यास्त	१७	४९	२९
सूर्योदय	—६	११	४३
	११	३७	४६
	११	३७	४६
	५	४८	३८
दिनमान	२९	०४	१०
रात्रिमान	३०	५५	५०
	६०	००	००

घटी पल

२९ ०४ दिनमान

३० ५६ रात्रिमान

उदाहरण (२)—२० जून को मद्रास का सूर्योदय निकालना है, मद्रास उत्तर अक्षांश १३।५ पूर्व रेखांश ८०।१७ पर स्थित है। स्टैंडर्ड अन्तर ८।५२ ऋण है। रविक्राति २३।२६ उत्तरा है, वेलान्तर १ मिनट धन है। चर सारिणी में नीचे की पंक्तियों में १३।४ के चर दिये हुए है।

२४ क्रान्त्यंश के चर	२३	४२
२२ ,, ,,	२१	३०
२ ,, का अन्तर	२	१२
१ ,, ,,	१	०६
०-२९ ,, ,,	०	२९
१ २६ ,, के चर	१	३५
२२ ०० ,, ,,	२१	३०
२३ २६ ,, ,,	२३	०५

		६	०	००
चर (उत्तर क्रान्ति में धन किये)	+	०	२३	०५
		६	२३	०५
	+	१२	१	००
		१८	२४	०५
	+	०	८	५२
सूर्यास्त(भा.स्टै टा.)		१८	३२	५७

मध्याह्न		१२	०	००
वेलान्तर	+	०	१	००
		१२	१	००
	—	६	२३	०५
		५	३७	५५
स्टैंडर्ड अन्तर धन	+		८	५२
सूर्योदय(भा.स्टै टा.)		५	४६	४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उदाहरण (३)—मानलो आपको २३ नवम्बर का बम्बई का सूर्योदय निकालना है। बम्बई का उत्तर अक्षांश १८।५५ पूर्व रेखांश ७२।५० तथा स्टैंडर्ड अन्तर ३८।४० ऋण है। २३ नवं. की रविक्रान्ति २०।१४ दक्षिण है तथा वेलान्तर १४ मिनट ऋण है। चर सारिणी में १८।५८ अक्षांश के क्रान्त्यंश नीचे की पंक्तियों में अलग से दिये हैं।

१८ ५८ उत्तर अक्षांश	२२ क्रान्त्यंश के चर	३१ ५४
,, ,,	२० ,, ,,	२८ ४२
,, ,,	२ ,, का अन्तर	३ १२
	१ ,, ,,	१ ३६
(९६ × १४ ÷ ६०)	० १४ ,, ,,	० २२
	२० ० ,, के चर	२८ ४२
	२० १४ ,, ,,	२९ ०४

६ ० ००		१२ ० ००
—० २९ ०४ चर घटाये	वेलान्तर घटाया	— ० १४ ००
५ ३० ५६		११ ४६ ००
		— ५ ३० ५६
		६ १५ ०४
	स्टैंडर्ड अन्तर जोड़ा	+ ० ३८ ४०
	सूर्योदय बम्बई भा. स्टै. टा. में	६ ५३ ४४

उदाहरण (४)—१६ सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय निकालते है और देखते है कि इस गणित से निकाला गया सूर्योदय पंचांग में दिये सूर्योदय से ठीक मिलता है या नहीं?

दिल्ली उत्तर अक्षांश २८।३८, पूर्व रेखांश ७७।१४. स्टैंडर्ड अन्तर ऋण २१ मिनट ४ सैकिण्ड, १६ सितम्बर की रवि क्रांति उत्तरा २-५२. वेलान्तर १६ सितम्बर ५ मिनट का ऋण है। चर सारिणी से २८।३८ उत्तर अक्षांश के चर निकाले। चर सारिणी में २८।३८ उत्तर अक्षांश के चर अलग से निकाले हुए हैं। सबसे नीचे की पंक्ति मे देखा।

२८।३८ उत्तर अक्षांश ४ क्रान्त्यंश के चर		८ ४२
,, ,, २ ,,		४ २४
,, २ ,, का अन्तर		४ १८
,, १ ,, ,,		२ ०९
(१२९ × ५२ ÷ ६०) ५२ ,, ,,		१ ५२
२ क्रान्त्यंश के चर		४ २४
०.५२ ,, ,,		१ ५२
	चर अंक	६ १६
१६ सितम्बर का मध्याह्न		१२ ० ००
	वेलान्तर	— ० ५ ००
१६ सितम्बर का स्पष्ट मध्याह्न		११ ५५ ००

उत्तरा क्रांति है. इसलिये ६ में चर अंकों को जोड़ा ६-०-० + ०-६-१६ = ६-६-१६

११ ५५ ०० में से
— ६ ६ १६ घटाया
५ ४८ ४४ सूर्योदय स्थानीय समय
+ २१ ०४ स्टैंडर्ड अन्तर धन किया
६ ९ ४८ सूर्योदय IST में दिल्ली का ६-१०

उदाहरण (५)—२४ दिसम्बर को कलकत्ता का सूर्योदय निकालो। कलकत्ता उत्तर अक्षांश २२।३५ पूर्व रेखांश ८८।२४ स्टैंडर्ड अन्तर + २३।२६, रविक्रांति २३।२६ (दक्षिण) वेलान्तर १ मिनट ऋण है। चर सारिणी से २२।३५ उत्तर अक्षांश तथा २३।२६ क्रान्त्यंश के चर निकाले।

हमें २३।२६ क्रान्त्यंश के चर चाहिए। २२ व २४ क्रान्त्यंश के साथ अनुपात किया तो २३।२६ के चर आए २२।३५ उत्तर अक्षांश के चर अलग से चर सारणी में नीचे दिये गये है।

२४ क्रान्त्यंश के चर		४२-४२
२२ ,, ,,		३८-४२
२ ,, में अन्तर		४- ०
१ ,,		२- ०
०-२६		०-५२
१-२६		२-५२
२२-००		३८-४२
२३-२६	के चर	४१-३४

२४ दिसम्बर का मध्याह्न स्पष्ट किया		१२ ० ०
२४ ,, वेलान्तर धन किया		+ ० १ ०
२४ ,, स्पष्ट मध्याह्न		—१२ १ ०
सूर्योदय	६ ० ०	
चर घटाया	—० ४१ ३४	
	५ १८ २६	१२ १ ०
		— ५ १८ २६
सूर्योदय स्थानीय समय		६ ४२ ३४
स्टैंडर्ड अन्तर ऋण		— २३ २६
कलकत्ता का सूर्योदय भा. स्टै. समय में		६ १९ १२

उदाहरण (६)—१२ अक्टू. को लन्दन का सूर्योदय ज्ञात करना है, लन्दन का उत्तर अक्षांश ५१।३२ तथा पश्चिम रेखांश ०।५ है, (देखें पृष्ठ १०५) स्टैंडर्ड अन्तर २० सेकिण्ड ऋण है। १२ अक्टूबर की रवि क्रांति ७।१२ दक्षिण तथा वेलान्तर १३ मिनट ऋण है। ५१।३२ उत्तर अक्षांश के चर निकाले। (देखें अगले पृष्ठ पर)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

		५० अक्षांश मि. से.	५१ अक्षांश मि. से.
८	क्रान्त्यंश के चर	३९ ००	४६ ००
६	" "	२९ ००	३५ ००
२	" का अन्तर	१० ००	११ ००
१	" "	५ ००	५ ३०
० १२	" "	१ ००	१ ०६
१ १२	" "	६ ००	६ ३६
६ ००	" के चर	२९ ००	३५ ००
७ १२	" "	३५ ००	४१ ३६

		मि. से.
५१ अक्षांश	७ १२ क्रान्त्यंश के चर	४१ ३६
५० "	७ १२ " "	३५ ००
१ "	पर अन्तर	६ ३६
१ "	"	१ १९
० ३२	" (७९ × ३२ ÷ ६०)	० ४२
१ ३२ के चर		२ ०१
५० ०० "		३५ ००
५१ ३२ अक्षांश	७ १२ क्रान्त्यश के चर	३७ ०१

१२ अक्टूबर का मध्याह्न ज्ञात किया		१२ ० ००
वेलान्तर घटाया	—	० १३ ००
मध्याह्न		११ ४७ ००
		६ ० ००
दक्षिण क्रान्ति है अतः चर अंक ६ में से घटाये जायेंगे चर घटाये	—	० ३७ ०१
		५ २२ ५९
		११ ४७ ००
सूर्योदय ज्ञात करने के लिए मध्याह्न में से घटाया	—	५ २२ ५९
सूर्योदय स्थानीय समय में		६ २४ ०१
स्टैंडर्ड अन्तर जोड़ा	+	२०
		६ २४ २१
समर टाइम जोड़ा		१ ० ००
सूर्योदय ग्रीनविच टाइम	—	७ २४ २१

इंगलैंड में मार्च के तीसरे शनिवार की रात्रि के २ बजे से अक्टूबर के चौथे रविवार २ बजे रात्रि तक ग्रीष्म काल एक घण्टा बढ़ाकर समय निर्धारण किया जाता है। ग्रीनविच टाईम के अनुसार सूर्योदय ७।२४ पर होगा। यदि किसी का जन्म लन्दन ग्रीष्मकाल में हुआ हो तो स्थानीय समय निकालने के लिए १ घण्टा समर टाईम (ग्रीष्म समय) कम होगा और २० सेकिण्ड ग्रीनविच से लन्दन का अन्तर कम होगा, तब इष्ट काल बना कर लग्न निकाला जायगा। इसके लिए निरयण लग्न सारिणी में ५१ या ५२ उत्तर अक्षांश की लग्न सारिणी से लग्न देखी जायेगी। १२ अक्टू. को सूर्य सूर्योदय के समय कन्या के २५ अंश पर होता है। अतः लन्दन समय ६।२४ प्रातः पर कन्या लग्न के २५ अंश उदित होंगे। ग्रह स्पष्ट भारतीय पंचांग से भारतीय समय अनुसार जन्म समय में ५½ घण्टा जमा करके करना होगा।

उदाहरण (७)—न्यूयार्क नगर का २१ मई का सूर्योदय निकालना है। न्यूयार्क उत्तर अक्षांश ४०।४३ पश्चिम रेखांश ७४।०० स्टैंडर्ड अन्तर ४ मिनट है। २१ मई की उत्तरा क्रान्ति २०।४ वेलान्तर ४ मिनट ऋण है।

				मि. से.
४५	अक्षांश पर	२०	क्रान्त्यंश के चर	८५ ००
४०	"	२०	" "	७१ ००
५	"	अन्तर		१४ ००
१	"	"		२ ४८
० ४३	"	"		२ ००
४० ००	"	के चर		७१ ००
४० ४३	"	"		७३ ००

	१२ ० ००			६ ० ००
वेलान्तर ऋण	— ० ४ ००	चर जोड़े	+	१ १३ ००
	११ ५६ ००			७ १३ ००
	— ७ १३ ००			
सूर्योदय	= ४ ४३ ००	सूर्यास्त		११ ५६ ००
स्टैंडर्ड अन्तर ऋण	— ० ४ ००		+	७ १३ ००
	४ ३९ ००			१९ ९ ००
ग्रीष्म समय	१ ० ००		—	० ४ ००
सूर्योदय क्षेत्रीय	५ ३९ ००			१९ ५ ००
स्टैंडर्ड समयानुसार			+	१ ० ००
		क्षे. स्टै. टाईम		२० ५ ००

ग्रीष्म समय अप्रैल के अन्तिम रविवार २ बजे रात्रि से अक्टूबर के अन्तिम रविवार २ बजे रात्रि तक एक घण्टा बढ़ा कर निर्धारित किया जाता है। इस अवधि में जन्म हो तो इष्ट काल बनाते समय ग्रीष्म समय का एक घण्टा कम करके स्टैंडर्ड अन्तर कम या ज्यादा करके स्थानीय समय निकालना चाहिए। २१ मई को सूर्य वृष राशि के ७ अंश के लगभग होता है। सूर्योदय के समय वृष लग्न ७ अंश पर उदित होगी। ग्रह स्पष्ट भारतीय पंचांग से स्थानीय समय में १०½ या ९½ घण्टा जोड़ कर भारतीय समय अनुसार किये जायेंगे।

न्यूयार्क की लग्न निकालने के लिये ४१ उत्तर अक्षांश की लग्न सारिणी से गणित करके लग्न निकाली जायगी। ग्रह स्पष्ट ग्रीष्म काल में ग्रीष्म समय का एक घण्टा कम करके उसमें १०½ घण्टे जोड़कर जो समय आये भारतीय पंचांगों से उस समय के ग्रह स्पष्ट किये जायेंगे। न्यूयार्क भारत से १०½ घण्टे के अन्तर पर है। ग्रीष्म काल में यह बढ़े हुये समय से ९½ रह जाता है। इसी प्रकार लन्दन ५½ घण्टे के अन्तर पर है। ग्रीष्म काल में यह अन्तर ४½ घण्टे रह जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

—: चर सारिणी :—

क्रान्त्यंश → अक्षांश ↓	२ मि. सै.	४ मि. सै.	६ मि. सै.	८ मि. सै.	१० मि. सै.	१२ मि. सै.	१४ मि. सै.	१६ मि. सै.	१८ मि. सै.	२० मि. सै.	२२ मि. सै.	२४ मि. सै.	← क्रान्त्यंश अक्षांश ↓
२	० १८	० ३०	० ५४	१ ६	१ २४	१ ४२	२ ०	२ १८	२ २४	२ ५४	३ १२	[illegible] ३६	२
४	० ३०	१ ६	१ ४२	२ १२	२ ४८	३ २४	४ ०	४ २४	५ १२	५ ४८	६ ३०	७ ६	४
६	० ५४	१ ४२	२ ३०	३ २४	४ १२	५ ६	६ ०	६ ५४	७ ४८	८ ४८	९ [illegible]२	१० ४२	६
८	१ ६	२ १२	३ २४	४ ३०	५ ४२	६ ४८	८ ०	९ १२	१० ३०	११ ४२	१३ ००	१४ १८	८
९	१ १८	२ ३०	३ ४८	५ ६	६ २४	७ ४२	९ ०	१० २४	११ ४८	१३ १२	१४ ४२	१६ १२	९
१०	१ २४	२ ४८	४ १२	५ ४२	७ ६	८ ३६	१० ६	११ ३६	१३ ६	१४ ४२	१६ १८	१८ ००	१०
११	१ ३०	३ ६	४ ४२	६ १८	७ ४८	९ २४	११ ६	१२ ४८	१४ ३०	१६ १२	१८ ००	१९ ५४	११
१२	१ ४२	३ २४	५ ६	६ ४८	८ ३६	१० १८	१२ ६	१४ ००	१५ ४८	१७ ४२	१९ ४२	२१ ४२	१२
१३	१ ४८	३ ४२	५ ३६	७ २४	९ १८	११ १२	१३ १२	१५ १२	१७ १२	१९ १८	२१ २४	२३ ३६	१३
१४	२ ००	४ ००	६ ००	८ ००	१० ६	१२ ६	१४ १२	१६ २४	१८ ३६	२० ४८	२३ ६	२५ ३०	१४
१५	२ ६	४ १८	६ २४	८ ३६	१० ४८	१६ ६	१५ १८	१७ ३६	२० ००	२२ २४	२४ ५४	२७ २४	१५
१६	२ १८	४ ३६	६ ५४	९ १२	११ ३६	१४ ००	१६ २४	१८ ५४	२१ २४	२४ ००	२६ ३६	२९ १८	१६
१७	२ २४	४ ५४	७ १८	९ ४८	१२ २४	१४ ५४	१७ ३०	२० ६	२२ ४८	२५ ३०	२८ २४	३१ १८	१७
१८	२ ३६	५ १२	७ ४८	१० ३०	१३ ०६	१५ ४८	१८ ३६	२१ २४	२४ १२	२७ १२	३० १२	३३ १८	१८
१९	२ ४२	५ ३६	८ १८	११ ६	१३ ५४	१६ ४८	१९ ४२	२२ ४२	२५ ४२	२८ ४८	३२ ००	३५ १८	१९
२०	२ ५४	५ ४८	८ ४८	११ ४२	१४ ४२	१७ ४२	२० ४८	२४ ००	२७ १[illegible]	३० २४	३३ ४८	[illegible] १८	२०
२१	३ ०६	६ ०६	९ १२	१२ २४	१५ ३०	१८ ४२	२२ ००	२५ १८	२८ ४२	३२ [illegible]	३५ ४२	३९ २४	२१
२२	३ १२	६ ३०	९ ४२	१३ ००	१६ १८	१९ ४२	२६ ६	२६ ३६	३० १२	३३ ४८	३७ ३६	४१ २४	२२
२३	३ २४	६ ४८	१० १२	१३ ४२	१७ १२	२० ४२	२४ १८	२८ ००	३१ ४२	३५ ३०	३९ ३०	४३ ३६	२३
२४	३ ३६	७ ०६	१० ४२	१४ १८	१८ ००	२१ ४२	२५ ३०	२९ १८	३३ १८	३७ १८	४१ २४	४५ ४२	२४
२५	३ ४२	७ ३०	११ १२	१५ ००	१८ ५४	२२ ४२	२६ ४२	३० ४२	३४ ४८	३९ ०६	४३ २४	४७ ५४	२५
२६	३ ५४	७ ४८	११ ४२	१५ ४२	१९ ४२	२३ ४८	२७ ५४	३२ ०६	३६ ३०	४० ५४	४५ ३०	५० १२	२६
२७	४ ६	८ १२	१२ १८	१६ ४८	२० ३६	२४ ५४	२९ १२	३३ ३६	३८ ०६	४२ ४२	४७ ३०	५२ २४	२७
२८	४ १८	८ ३०	१२ ४८	१७ ०५	२१.३०	२५ ५४	३० ३०	३५ ०६	३९ ४८	४४ ५४	४९ ३६	५४ ४८	२८
२९	४ २४	८ ५४	१३ २४	१७ ५४	२२ २४	२७ ०६	३१ ४८	३६ ३६	४१ ३०	४६ ३०	५१ ४८	५७ ०६	२९
३०	४ ३६	९ १८	१३ ५४	१८ ३६	२३ २४	२८ १२	३३ ०६	३८ ०६	४३ १२	४८ ३०	५३ ५४	५९ ३६	३०
३१	४ ४८	९ ३६	१४ ३०	१९ २४	२४ १८	२९ १८	३४ ३०	३९ ४२	४५ ००	५० ३०	५६ १२	६२ ०६	३१
३३	५ १२	१० २४	१५ ३६	२० ५४	२६ १८	३१ ४२	३७ १८	४२ ५४	४८ ४२	५४ ४२	६० ४८	६७ १२	३३
३५	५ ३६	११ १२	१६ ५४	२२ ३६	२८ २४	३४ १२	४० १२	४६ १८	५२ ३६	५९ ०६	६५ ४२	७२ ३६	३५
४०	७ ००	१३ ००	२० ००	२७ ००	३४ ००	४१ ००	४८ ००	५६ ००	६३ ००	७१ ००	७६ ००	८८ ००	४०
४५	८ ००	१६ ००	२४ ००	३२ ००	४१ ००	४९ ००	५८ ००	६७ ००	७६ ००	८५ ००	९५ ००	१०६ ००	४५
५०	१० ००	१९ ००	२९ ००	३९ ००	४९ ००	५९ ००	६९ ००	८० ००	९१ ००	१०३ ००	११५ ००	१२८ ००	५०
५५	११ ००	२३ ००	३५ ००	४६ ००	५८ ००	७१ ००	८४ ००	९७ ००	१११ ००	१२५ ००	१४१ ००	१५६ ००	५५
१३°४′	१ ४८	३ ४२	५ ३६	७ ३०	९ २४	११ १८	१३ १८	१५ १८	१७ १८	१९ २४	२१ ३०	२३ ४२	१३°४′
१८°५८′	२ ४२	५ ३०	८ १८	११ ०६	१३ ५४	१६ ४२	१९ ४२	२२ ३६	२५ ३६	२८ ४२	३१ ५४	३५ १२	१८°५८′
२२°३५′	३ १८	६ ४२	१० ००	१३ २४	१[illegible] ४८	२० १८	२३ ४८	२७ २४	३१ ०६	३६ ४८	३८ ४२	४२ ४२	२२°३५′
२८°३८′	४ २४	८ ४२	१३ १२	१७ ३६	२२ ०६	२६ ४२	३१ १८	३६ ००	४० ८४	४५ ५४	५१ ००	५६ १८	२८°३८′
क्रान्त्यंश →	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	← क्रान्त्यंश

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद ,जगन्नाथ पुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५५	४	१३	२२
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०
३	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२३
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५६	७	१७	२८	३८	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
वृश्चिक	४६	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०
८	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१४	२४
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५१	०
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित)

(अजन्ता, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	२	१०	१९	२८	३७	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२१	३०	३९	४८	५६	५	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	२३	३१	४०	४९	५७	६	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५०	२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२२	३३	४४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२६	३७	४७	५८	९
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	५३	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४२
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१५	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५	५४	२	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	६
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१५	२२	३०	३८	४६	५३	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	४२	५०	५८	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२१	२९	३७	४४	५२	०	८	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

(उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसबाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, रांची, नाडियाद, जामनगर, बड़ौदरा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

ग. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	३ २	३ १०	३ १८	३ २५	३ ३३	३ ४०	३ ४८	३ ५७	४ ५	४ १४	४ २२	४ ३१	४ ४०	४ ४८	४ ५७	५ ५	५ १४	५ २२	५ ३१	५ ४०	५ ४८	५ ५७	६ ६	६ १४	६ २३	६ ३१	६ ४०	६ ४९	६ ५७	७ ६
१ वृष	७ १४	७ २३	७ ३२	७ ४०	७ ४९	७ ५७	८ ६	८ १६	८ २६	८ ३६	८ ४७	८ ५७	९ ७	९ १७	९ २७	९ ३७	९ ४८	९ ५८	१० ८	१० १८	१० २८	१० ३८	१० ४८	१० ५८	११ ८	११ १८	११ २८	११ ३९	११ ५०	१२ ०
२ मिथुन	१२ १०	१२ २०	१२ ३०	१२ ४०	१२ ५०	१३ ०	१३ ११	१३ २२	१३ ३४	१३ ४५	१३ ५६	१४ ७	१४ १८	१४ ३०	१४ ४१	१४ ५३	१५ ४	१५ १५	१५ २६	१५ ३८	१५ ४९	१६ ०	१६ १२	१६ २३	१६ ३४	१६ ४६	१६ ५७	१७ ८	१७ २०	१७ ३१
३ कर्क	१७ ४२	१७ ५३	१८ ५	१८ १६	१८ २७	१८ ३९	१८ ५०	१९ १	१९ १३	१९ २४	१९ ३५	१९ ४७	१९ ५८	२० ९	२० २१	२० ३२	२० ४३	२० ५५	२१ ६	२१ १७	२१ २९	२१ ४०	२१ ५१	२२ ३	२२ १४	२२ २५	२२ ३७	२२ ४८	२२ ५९	२३ ११
४ सिंह	२३ २२	२३ ३३	२३ ४५	२३ ५६	२४ ७	२४ १९	२४ ३०	२४ ४१	२४ ५२	२५ ३	२५ १४	२५ २५	२५ ३६	२५ ४७	२५ ५८	२६ ९	२६ २०	२६ ३१	२६ ४२	२६ ५३	२७ ४	२७ १५	२७ २६	२७ ३७	२७ ४८	२७ ५९	२८ १०	२८ २१	२८ ३२	२८ ४३
५ कन्या	२८ ५४	२९ ५	२९ १६	२९ २७	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३३	३० ४४	३० ५५	३१ ६	३१ १७	३१ २८	३१ ३९	३१ ५०	३२ ०	३२ १२	३२ २३	३२ ३४	३२ ४५	३२ ५६	३३ ७	३३ १८	३३ २९	३३ ४०	३३ ५१	३४ २	३४ १३
६ तुला	३४ २४	३४ ३५	३४ ४६	३४ ५७	३५ ८	३५ १९	३५ ३०	३५ ४१	३५ ५३	३६ ४	३६ १५	३६ २७	३६ ३८	३६ ४९	३७ ०	३७ ११	३७ २२	३७ ३३	३७ ४५	३७ ५६	३८ ८	३८ २०	३८ ३१	३८ ४३	३८ ५४	३९ ५	३९ १७	३९ २८	३९ ३९	३९ ५१
७ वृश्चि.	४० २	४० १३	४० २५	४० ३६	४० ४७	४० ५९	४१ १०	४१ २१	४१ ३२	४१ ४४	४१ ५५	४२ ६	४२ १८	४२ २९	४२ ४०	४२ ५२	४३ ३	४३ १४	४३ २५	४३ ३७	४३ ४८	४३ ५९	४४ ११	४४ २२	४४ ३३	४४ ४५	४४ ५६	४५ ७	४५ १८	४५ ३०
८ धनु	४५ ४१	४५ ५२	४६ ४	४६ १५	४६ २६	४६ ३८	४६ ४९	४६ ५९	४७ ९	४७ १९	४७ ३०	४७ ४०	४७ ५०	४८ ०	४८ १०	४८ २०	४८ ३०	४८ ४०	४८ ५१	४९ १	४९ ११	४९ २१	४९ ३१	४९ ४२	४९ ५२	५० २	५० १२	५० २२	५० ३२	५० ४३
९ मकर	५० ५३	५१ ३	५१ १३	५१ २३	५१ ३४	५१ ४४	५१ ५४	५२ ३	५२ १२	५२ २०	५२ २८	५२ ३७	५२ ४५	५२ ५४	५३ ३	५३ ११	५३ २०	५३ २८	५३ ३७	५३ ४६	५३ ५४	५४ ३	५४ ११	५४ २०	५४ २८	५४ ३७	५४ ४६	५४ ५५	५५ ३	५५ १२
१० कुम्भ	५५ २०	५५ २८	५५ ३७	५५ ४६	५५ ५५	५६ ३	५६ १२	५६ २१	५६ २९	५६ ३८	५६ ४७	५६ ५६	५७ ५	५७ १३	५७ २०	५७ २८	५७ ३५	५७ ४३	५७ ५१	५७ ५८	५८ ६	५८ १३	५८ २१	५८ २९	५८ ३६	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५८	५९ ६	[illegible]
११ मीन	५९ १४	५९ २२	५९ २९	५९ ३७	५९ ४५	५९ ५२	० ०	० ७	० १५	० २३	० ३०	० ३८	० ४५	० ५३	१ १	१ ८	१ १६	१ २३	१ ३१	१ ३९	१ ४६	१ ५४	२ १	२ ९	२ १७	२ २४	२ ३२	२ ३९	२ ४७	२ ५५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तौडगढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादड़ी, छतरपुर, गया, मणिपुर, इलाहाबाद, ओरछा, काशी, गाजीपुर, अम्बाजी, झांसी, पटना, शिलांग, चित्रकूट आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ५८	३ ६	३ १३	३ २१	३ २८	३ ३६	३ ४३	३ ५१	४ ०	४ ८	४ १७	४ २५	४ ३४	४ ४२	४ ५१	४ ५९	५ ८	५ १६	५ २५	५ ३३	५ ४२	५ ५०	५ ५८	६ ७	६ १५	६ २४	६ ३२	६ ४१	६ ४९	६ ५८
१ वृष	७ ६	७ १५	७ २३	७ ३२	७ ४०	७ ४८	७ ५७	८ ७	८ १७	८ २७	८ ३७	८ ४७	८ ५७	९ ७	९ १८	९ २८	९ ३८	९ ४८	९ ५८	१० ८	१० १८	१० २८	१० ३८	१० ४८	१० ५८	११ ८	११ १८	११ २८	११ ३८	११ ४९
२ मिथुन	११ ५९	१२ ८	१२ १९	१२ ३०	१२ ४०	१२ ५०	१३ ०	१३ ११	१३ २३	१३ ३४	१३ ४५	१३ ५७	१४ ८	१४ १९	१४ ३१	१४ ४२	१४ ५४	१५ ५	१५ १६	१५ २८	१५ ३९	१५ ५०	१६ १	१६ १३	१६ २४	१६ ३६	१६ ४७	१६ ५८	१७ ९	१७ २१
३ कर्क	१७ ३३	१७ ४४	१७ ५५	१८ ७	१८ १८	१८ ३०	१८ ४१	१८ ५२	१९ ४	१९ १५	१९ २७	१९ ३८	१९ ५०	२० १	२० १३	२० २४	२० ३६	२० ४७	२० ५९	२१ १०	२१ २२	२१ ३३	२१ ४५	२१ ५६	२२ ७	२२ १९	२२ ३०	२२ ४२	२२ ५३	२३ ५
४ सिंह	२३ १६	२३ २८	२३ ३९	२३ ५१	२४ २	२४ १३	२४ २५	२४ ३६	२४ ४७	२४ ५८	२५ १०	२५ २१	२५ ३२	२५ ४३	२५ ५४	२६ ५	२६ १७	२६ २८	२६ ३९	२६ ५०	२७ १	२७ १२	२७ २४	२७ ३५	२७ ४६	२७ ५७	२८ ८	२८ १९	२८ ३१	२८ ४२
५ कन्या	२८ ५३	२९ ४	२९ १५	२९ २६	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४५	३० ५६	३१ ७	३१ १८	३१ २९	३१ ४०	३१ ५१	३२ ३	३२ १४	३२ २५	३२ ३६	३२ ४७	३२ ५८	३३ ९	३३ २०	३३ ३१	३३ ४२	३३ ५३	३४ ६	३४ १७
६ तुला	३४ २८	३४ ३९	३४ ५०	३५ १	३५ १३	३५ २४	३५ ३५	३५ ४६	३५ ५८	३६ ९	३६ २१	३६ ३२	३६ ४४	३६ ५५	३७ ७	३७ १८	३७ ३०	३७ ४१	३७ ५३	३८ ४	३८ १६	३८ २७	३८ ३९	३८ ५०	३९ १	३९ १३	३९ २४	३९ ३६	३९ ४७	३९ ५८
७ वृश्चि.	४० १०	४० २२	४० ३३	४० ४४	४० ५६	४१ ७	४१ १८	४१ ३०	४१ ४१	४१ ५३	४२ ४	४२ १६	४२ २७	४२ ३९	४२ ५०	४३ १	४३ १३	४३ २४	४३ ३५	४३ ४६	४३ ५८	४४ ९	४४ २१	४४ ३२	४४ ४४	४४ ५५	४५ ६	४५ १८	४५ २९	४५ ४०
८ धनु	४५ ५२	४६ ३	४६ १४	४६ २६	४६ ३७	४६ ४८	४७ ०	४७ १०	४७ २०	४७ ३०	४७ ४०	४७ ५०	४८ ०	४८ ११	४८ २१	४८ ३१	४८ ४१	४८ ५१	४९ १	४९ ११	४९ २१	४९ ३१	४९ ४१	४९ ५१	५० १	५० १२	५० २२	५० ३२	५० ४२	५० ५२
९ मकर	५१ २	५१ १२	५१ २२	५१ ३३	५१ ४३	५१ ५३	५२ ३	५२ १२	५२ २०	५२ २८	५२ ३६	५२ ४५	५२ ५४	५३ ३	५३ ११	५३ १९	५३ २८	५३ ३६	५३ ४५	५३ ५४	५४ ३	५४ १०	५४ २०	५४ २९	५४ ३७	५४ ४६	५४ ५४	५५ ३	[illegible]	[illegible]
१० कुम्भ	५५ २६	५५ ३४	५५ ४३	५५ ५२	५६ ०	५६ ८	५६ १७	५६ २६	५६ ३४	५६ ४३	५६ ५२	५७ २	५७ १०	५७ १९	५७ २७	५७ ३६	५७ ४४	५७ ५२	५८ ०	५८ ८	५८ १६	५८ २५	५८ ३३	५८ ४१	५८ ५०	५८ ५८	५९ ६	५९ १४	५९ [illegible]	५९ १८
११ मीन	५९ १५	५९ २३	५९ ३०	५९ ३७	५९ ४५	५९ ५३	० ०	० ७	० १५	० २२	० ३०	० ३७	० ४५	० ५२	० ५९	१ ७	१ १४	१ २२	१ २९	१ ३७	१ ४४	१ ५२	२ ०	२ ७	२ १४	२ २१	२ २९	२ ३६	२ ४४	२ ५१

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्णिया, दरभंगा, शिलांग, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	२	९	१६	२३	३१	३९	४६	५५	३	११	२०	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४१	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
वृष	५८	६	१५	२३	३१	४०	४८	५७	५	१३	२१	३०	३८	४६	५५	३	१२	२०	२८	३६	४५	५३	२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	१०	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४५	५६	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३	५४	६	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४०	५२
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१५	२७	३९	५१	०	११	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३२	४३	५५	६	१७	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	८	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०
८	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	०	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	०	९	१९	२८	३८	४७	५७
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९
कुम्भ	३२	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	३९	४७	५५	३	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२५	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सीकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५३	५९	६	१३	२१	२८	३५	४३	५१	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४५
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१४	२४	३४	४४	५५	४	१४	२४	३४
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५५	५	१६	२७	३८	४९	०	१२	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१४	२५	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	०	११
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	०	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	७
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२५	३५	४३	५२	०	८	१६	२४	३२	३९	४७	५४	०	७	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१७	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२१	२८	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	२	९	१६	२३	३०	३८	४५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जीन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १२	३ १९	३ २६	३ ३३	३ ४१	३ ४९	३ ५७	४ ६	४ १४	४ २२	४ ३०	४ ३८	४ ४७	४ ५५	५ ३	५ ११	५ १९	५ २८	५ ३६	५ ४५	५ ५४	६ ३	६ १२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१ वृष	६ ५०	६ ५८	७ ६	७ १४	७ २२	७ ३१	७ ३९	७ ४८	७ ५६	८ ६	८ १६	८ २६	८ ३६	८ ४६	८ ५६	९ ६	९ १६	९ २६	९ ३६	९ ४६	९ ५६	१० ६	१० १६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२ मिथुन	११ ३९	११ ४९	११ ५९	१२ ९	१२ १९	१२ २९	१२ ३९	१२ ५०	१३ ०	१३ १३	१३ २५	१३ ३६	१३ ४८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
३ कर्क	१७ १४	१७ २५	१७ ३७	१७ ४८	१८ ०	१८ ११	१८ २३	१८ ३५	१८ ४६	१८ ५८	१९ १०	१९ २१	१९ ३३	१९ ४५	१९ ५७	२० ८	२० २०	२० ३२	२० ४४	२० ५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
४ सिंह	२३ ४	२३ १६	२३ २८	२३ ४०	२३ ५२	२४ ३	२४ १५	२४ २७	२४ ३८	२४ ४९	२५ १	२५ १२	२५ २४	२५ ३६	२५ ४७	२५ ५८	२६ १०	२६ २२	२६ ३३	२६ ४४	२६ ५६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
५ कन्या	२८ ५१	२९ २	२९ १४	२९ २५	२९ ३७	२९ ४८	३० ०	३० ११	३० २३	३० ३४	३० ४६	३० ५७	३१ ८	३१ २०	३१ ३२	३१ ४३	३१ ५५	३२ ६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
६ तुला	३४ ३६	३४ ४७	३४ ५९	३५ १०	३५ २२	३५ ३३	३५ ४५	३५ ५७	३६ ८	३६ २०	३६ ३२	३६ ४४	३६ ५५	३७ ७	३७ १९	३७ ३०	३७ ४२	३७ ५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
७ वृश्चि.	४० २६	४० ३८	४० ५०	४१ २	४१ १३	४१ २५	४१ ३७	४१ ४८	४२ ०	४२ ११	४२ २३	४२ ३४	४२ ४६	४२ ५७	४३ ९	४३ २०	४३ ३२	४३ ४३	४३ ५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
८ धनु	४६ १२	४६ २३	४६ ३४	४६ ४६	४६ ५७	४७ ८	४७ १९	४७ ३०	४७ ४१	४७ ५१	४८ १	४८ ११	४८ २१	४८ ३१	४८ ४१	४८ ५१	४९ १	४९ ११	४९ २१	४९ ३१	४९ ४१	४९ ५१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९ मकर	५१ २१	५१ ३१	५१ ४१	५१ ५१	५२ १	५२ ११	५२ २१	५२ २९	५२ ३७	५२ ४५	५२ ५३	५३ २	५३ १०	५३ १८	५३ २६	५३ ३४	५३ ४३	५३ ५१	५३ ५९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१० कुम्भ	५५ ३८	५५ ४६	५५ ५४	५६ २	५६ १०	५६ १९	५६ २७	५६ ३४	५६ ४१	५६ ४८	५६ ५५	५७ २	५७ ९	५७ १७	५७ २४	५७ ३१	५७ ३८	५७ ४५	५७ ५२	५७ ५९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११ मीन	५९ १७	५९ २४	५९ ३१	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २८	० ३५	० ४२	० ५०	० ५७	१ ४	१ ११	१ १८	१ २५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ४८	२ ५५	३ २	३ ९	३ १६	३ २३	३ ३०	३ ३८	३ ४६	३ ५४	४ ३	४ ११	४ १९	४ २७	४ ३५	४ ४३	४ ५१	४ ५९	५ ८	५ १६	५ २४	५ ३२	५ ४०	५ ४८	५ ५६	६ ५	६ १३	६ २१	६ २९	६ ३७
१ वृष	६ ४५	६ ५३	७ १	७ १०	७ १८	७ २६	७ ३४	७ ४४	७ ५४	८ ४	८ १४	८ २४	८ ३४	८ ४४	८ ५४	९ ४	९ १४	९ २४	९ ३४	९ ४४	९ ५४	१० ४	१० १४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२ मिथुन	११ ३३	११ ४३	११ ५३	१२ ३	१२ १३	१२ २३	१२ ३३	१२ ४४	१२ ५६	१३ ७	१३ १९	१३ ३०	१३ ४२	१३ ५३	१४ ५	१४ १६	१४ २८	१४ ३९	१४ ५१	१५ २	१५ १४	१५ २५	१५ ३७	१५ ४८	१६ ०	१६ ११	१६ २३	१६ ३४	१६ ४६	१६ ५७
३ कर्क	१७ ९	१७ २०	१७ ३२	१७ ४३	१७ ५५	१८ ६	१८ १८	१८ ३०	१८ ४२	१८ ५४	१९ ५	१९ १७	१९ २९	१९ ४१	१९ ५२	२० ४	२० १६	२० २८	२० ४०	२० ५१	२१ ३	२१ १५	२१ २७	२१ ३९	२१ ५०	२२ २	२२ १४	२२ २६	२२ ३८	२२ ५०
४ सिंह	२३ १	२३ १३	२३ २५	२३ ३७	२३ ४८	२४ ०	२४ १२	२४ २४	२४ ३५	२४ ४७	२४ ५८	२५ १०	२५ २२	२५ ३३	२५ ४५	२५ ५६	२६ ८	२६ २०	२६ ३१	२६ ४३	२६ ५४	२७ ६	२७ १८	२७ २९	२७ ४१	२७ ५२	२८ ४	२८ १५	२८ २७	२८ ३८
५ कन्या	२८ ५०	२९ २	२९ १४	२९ २५	२९ ३७	२९ ४८	३० ०	३० १२	३० २३	३० ३५	३० ४६	३० ५८	३१ १०	३१ २१	३१ ३३	३१ ४४	३१ ५६	३२ ८	३२ १९	३२ ३१	३२ ४२	३२ ५४	३३ ६	३३ १७	३३ २९	३३ ४१	३३ ५२	३४ ४	३४ १५	३४ २७
६ तुला	३४ ३८	३४ ५०	३५ २	३५ १३	३५ २५	३५ ३६	३५ ४८	३६ ०	३६ १२	३६ २३	३६ ३५	३६ ४७	३६ ५९	३७ ११	३७ २२	३७ ३४	३७ ४६	३७ ५८	३८ १०	३८ २१	३८ ३३	३८ ४५	३८ ५७	३९ ९	३९ २०	३९ ३२	३९ ४४	३९ ५६	४० ८	४० १९
७ वृश्चि.	४० ३१	४० ४३	४० ५५	४१ ७	४१ १८	४१ ३०	४१ ४२	४१ ५४	४२ ५	४२ १७	४२ २८	४२ ४०	४२ ५१	४३ ३	४३ १४	४३ २५	४३ ३७	४३ ४८	४४ ०	४४ ११	४४ २३	४४ ३४	४४ ४६	४४ ५७	४५ ८	४५ २०	४५ ३१	४५ ४२	४५ ५४	[illegible]
८ धनु	४६ १८	४६ ३०	४६ ४१	४६ ५३	४७ ४	४७ १६	४७ २७	४७ ३७	४७ ४७	४७ ५७	४८ ७	४८ १७	४८ २७	४८ ३७	४८ ४७	४८ ५७	४९ ७	४९ १७	४९ २७	४९ ३७	४९ ४७	४९ ५७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
९ मकर	५१ २६	५१ ३६	५१ ४६	५१ ५६	५२ ६	५२ १६	५२ २६	५२ ३४	५२ ४२	५२ ५०	५२ ५८	५३ ७	५३ १५	५३ २३	५३ ३१	५३ ३९	५३ ४७	५३ ५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१० कुम्भ	५५ ४१	५५ ४९	५५ ५७	५६ ६	५६ १४	५६ २२	५६ ३०	५६ ३७	५६ ४४	५६ ५१	५६ ५८	५७ ५	५७ १२	५७ १९	५७ २६	५७ ३३	५७ ४०	५७ ४७	५७ ५४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
११ मीन	५९ १८	५९ २५	५९ ३२	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २८	० ३५	० ४२	० ४९	० ५६	१ ३	१ १०	१ १७	१ २४	१ ३१	१ ३८	१ ४५	१ ५२	१ ५९	२ ६	२ १३	२ २०	२ २७	२ ३४	२ ४१

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३१-३० से ३२-३० तक स्थित)

(कांगड़ा, चम्बा, डलहौजी, धरमशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ४३	२ ५०	२ ५७	३ ३	३ १०	३ १७	३ २४	३ ३२	३ ४०	३ ४८	३ ५६	४ ४	४ १२	४ २०	४ २८	४ ३६	४ ४४	४ ५२	४ ५९	५ ७	५ १५	५ २३	५ ३१	५ ३९	५ ४७	५ ५५	६ ३	६ ११	६ १९	६ २७
१ वृष	६ ३५	६ ४३	६ ५१	६ ५९	७ ७	७ १५	७ २३	७ ३३	७ ४३	७ ५३	८ ३	८ १३	८ २३	८ ३२	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० १	१० ११	१० २१	१० ३१	१० ४१	१० ५१	११ १	११ ११
२ मिथुन	११ २०	११ ३०	११ ४०	११ ५०	१२ ०	१२ १०	१२ २०	१२ ३१	१२ ४३	१२ ५५	१३ ६	१३ १८	१३ २९	१३ ४१	१३ ५३	१४ ४	१४ १६	१४ २७	१४ ३९	१४ ५०	१५ २	१५ १३	१५ २५	१५ ३७	१५ ४८	१६ ०	१६ ११	१६ २३	१६ ३४	१६ ४६
३ कर्क	१६ ५८	१७ ९	१७ २१	१७ ३२	१७ ४४	१७ ५५	१८ ७	१८ १९	१८ ३१	१८ ४३	१८ ५५	१९ ७	१९ १९	१९ ३१	१९ ४३	१९ ५५	२० ७	२० १९	२० ३१	२० ४३	२० ५५	२१ ७	२१ १८	२१ ३०	२१ ४२	२१ ५४	२२ ६	२२ १८	२२ ३०	२२ ४२
४ सिंह	२२ ५४	२३ ६	२३ १८	२३ ३०	२३ ४२	२३ ५४	२४ ६	२४ १८	२४ ३०	२४ ४१	२४ ५३	२५ ५	२५ १७	२५ २८	२५ ४०	२५ ५२	२६ ४	२६ १६	२६ २७	२६ ३९	२६ ५१	२७ ३	२७ १५	२७ २७	२७ ३९	२७ ५०	२८ २	२८ १४	२८ २५	२८ ३७
५ कन्या	२८ ४९	२९ १	२९ १३	२९ २४	२९ ३६	२९ ४८	३० ०	३० १२	३० २४	३० ३५	३० ४७	३० ५९	३१ ११	३१ २२	३१ ३४	३१ ४६	३१ ५८	३२ १०	३२ २१	३२ ३३	३२ ४५	३२ ५७	३३ ९	३३ २०	३३ ३२	३३ ४४	३३ ५६	३४ ८	३४ १९	३४ ३१
६ तुला	३४ ४३	३४ ५५	३५ ७	३५ १९	३५ ३०	३५ ४२	३५ ५४	३६ ६	३६ १८	३६ ३०	३६ ४२	३६ ५४	३७ ६	३७ १८	३७ ३०	३७ ४२	३७ ५४	३८ ६	३८ १८	३८ ३०	३८ ४२	३८ ५४	३९ ५	३९ १७	३९ २९	३९ ४१	३९ ५३	४० ५	४० १७	४० २९
७ वृश्चिक	४० ४१	४० ५३	४१ ५	४१ १७	४१ २९	४१ ४१	४१ ५३	४२ ५	४२ १६	४२ २८	४२ ३९	४२ ५१	४३ २	४३ १४	४३ २६	४३ ३७	४३ ४९	४४ ०	४४ १२	४४ २३	४४ ३५	४४ ४७	४४ ५८	४५ १०	४५ २१	४५ ३३	४५ ४४	४५ ५६	४६ ७	४६ १९
८ धनु	४६ ३१	४६ ४२	४६ ५४	४७ ५	४७ १७	४७ २८	४७ ४०	४७ ५०	४८ ०	४८ १०	४८ २०	४८ २९	४८ ३९	४८ ४९	४८ ५९	४९ ९	४९ १९	४९ २९	४९ ३९	४९ ४९	४९ ५९	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४८	५० ५८	५१ ८	५१ १८	५१ २८
९ मकर	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५७	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४५	५२ ५३	५३ १	५३ ९	५३ १७	५३ २५	५३ ३३	५३ ४१	५३ ४९	५३ ५७	५४ ५	५४ १२	५४ २०	५४ २८	५४ ३६	५४ ४४	५४ ५२	५५ ०	५५ ८	५५ १६	५५ २४	५५ ३२	५५ ४०
१० कुम्भ	५५ ४८	५५ ५६	५६ ४	५६ १२	५६ २०	५६ २८	५६ ३६	५६ ४३	५६ ५०	५६ ५७	५७ ३	५७ १०	५७ १७	५७ २३	५७ ३०	५७ ३७	५७ ४४	५७ ५१	५७ ५८	५८ ४	५८ ११	५८ १८	५८ २५	५८ ३२	५८ ३८	५८ ४५	५८ ५२	५८ ५९	५९ ५	५९ १२
११ मीन	५९ १९	५९ २६	५९ ३३	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १३	० २०	० २७	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २१	१ २८	१ ३५	१ ४२	१ ४९	१ ५५	२ २	२ ९	२ १६	२ २३	२ २९	२ ३६

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	२ ४६	२ ५३	२ ५९	३ ६	३ १३	३ २०	३ २७	३ ३५	३ ४३	३ ५१	३ ५९	४ ७	४ १५	४ २३	४ ३१	४ ३९	४ ४७	४ ५५	५ ३	५ ११	५ १९	५ २७	५ ३५	५ ४४	५ ५२	६ ०	६ ८	६ १६	६ २४	६ ३२
१ वृष	६ ४०	६ ४८	६ ५६	७ ४	७ १२	७ २०	७ २८	७ ३८	७ ४८	७ ५८	८ ८	८ १८	८ २८	८ ३८	८ ४७	८ ५७	९ ७	९ १७	९ २७	९ ३७	९ ४७	९ ५७	१० ७	१० १७	१० २७	१० ३७	१० ४७	१० ५७	११ ६	११ १६
२ मिथुन	११ २६	११ ३६	११ ४६	११ ५६	१२ ६	१२ १६	१२ २६	१२ ३७	१२ ४९	१३ १	१३ १२	१३ २४	१३ ३५	१३ ४७	१३ ५८	१४ १०	१४ २१	१४ ३३	१४ ४४	१४ ५६	१५ ७	१५ १९	१५ ३१	१५ ४२	१५ ५४	१६ ५	१६ १७	१६ २८	१६ ४०	१६ ५१
३ कर्क	१७ ३	१७ १४	१७ २६	१७ ३७	१७ ४९	१८ ०	१८ १२	१८ २४	१८ ३६	१८ ४८	१९ ०	१९ ११	१९ २३	१९ ३५	१९ ४७	१९ ५९	२० ११	२० २३	२० ३५	२० ४७	२० ५९	२१ १०	२१ २२	२१ ३४	२१ ४६	२१ ५८	२२ १०	२२ २२	२२ ३४	२२ ४६
४ सिंह	२२ ५८	२३ ९	२३ २१	२३ ३३	२३ ४५	२३ ५७	२४ ९	२४ २१	२४ ३२	२४ ४४	२४ ५६	२५ ७	२५ १९	२५ ३१	२५ ४३	२५ ५४	२६ ६	२६ १८	२६ २९	२६ ४१	२६ ५३	२७ ४	२७ १६	२७ २८	२७ ४०	२७ ५१	२८ ३	२८ १५	२८ २६	२८ ३८
५ कन्या	२८ ५०	२९ २	२९ १३	२९ २५	२९ ३७	२९ ४८	३० ०	३० १२	३० २३	३० ३५	३० ४७	३० ५९	३१ १०	३१ २२	३१ ३४	३१ ४५	३१ ५७	३२ ९	३२ २०	३२ ३२	३२ ४४	३२ ५६	३३ ७	३३ १९	३३ ३१	३३ ४२	३३ ५४	३४ ६	३४ १७	३४ २९
६ तुला	३४ ४१	३४ ५३	३५ ४	३५ १६	३५ २८	३५ ३९	३५ ५१	३६ ३	३६ १५	३६ २७	३६ ३९	३६ ५१	३७ २	३७ १४	३७ २६	३७ ३८	३७ ५०	३८ २	३८ १४	३८ २६	३८ ३८	३८ ५०	३९ १	३९ १३	३९ २५	३९ ३७	३९ ४९	४० १	४० १३	४० २५
७ वृश्चिक	४० ३७	४० ४९	४१ १	४१ १२	४१ २४	४१ ३६	४१ ४८	४१ ५९	४२ ११	४२ २३	४२ ३४	४२ ४६	४२ ५७	४३ ९	४३ २०	४३ ३२	४३ ४३	४३ ५५	४४ ६	४४ १८	४४ २९	४४ ४१	४४ ५३	४५ ४	४५ १६	४५ २७	४५ ३९	४५ ५०	४६ २	४६ १३
८ धनु	४६ २५	४६ ३६	४६ ४८	४६ ५९	४७ ११	४७ २२	४७ ३४	४७ ४४	४७ ५४	४८ ४	४८ १४	४८ २४	४८ ३४	४८ ४४	४८ ५३	४९ ३	४९ १३	४९ २३	४९ ३३	४९ ४३	४९ ५३	५० ३	५० १३	५० २३	५० ३३	५० ४३	५० ५३	५१ ३	५१ १२	५१ २२
९ मकर	५१ ३२	५१ ४२	५१ ५२	५२ २	५२ १२	५२ २२	५२ ३२	५२ ४०	५२ ४८	५२ ५६	५३ ४	५३ १२	५३ २०	५३ २८	५३ ३६	५३ ४४	५३ ५२	५४ ०	५४ ८	५४ १६	५४ २४	५४ ३२	५४ ४०	५४ ४८	५४ ५६	५५ ५	५५ १३	५५ २१	५५ २९	५५ ३७
१० कुम्भ	५५ ४५	५५ ५३	५६ १	५६ ९	५६ १७	५६ २५	५६ ३३	५६ ४०	५६ ४७	५६ ५४	५७ १	५७ ८	५७ १४	५७ २१	५७ २८	५७ ३५	५७ ४२	५७ ४९	५७ ५६	५८ ३	५८ १०	५८ १६	५८ २३	५८ ३०	५८ ३७	५८ ४४	५८ ५१	५८ ५८	५९ ५	५९ १२
११ मीन	५९ १८	५९ २५	५९ ३२	५९ ३९	५९ ४६	५९ ५३	० ०	० ७	० १४	० २१	० २८	० ३५	० ४१	० ४८	० ५५	१ २	१ ९	१ १६	१ २३	१ ३०	१ ३७	१ ४३	१ ५०	१ ५७	२ ४	२ ११	२ १८	२ २५	२ ३२	२ ३९

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बालक के जन्म-समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो तथा अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हों, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशीश पाप ग्रह से प्रयुक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धूम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २–३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हो तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा।

जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हों तो भी माता को अरिष्टकर होता है। इसी भांति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हों या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६ ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हों तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि(वृष) में हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हों तो 'पुष्कल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्—भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्य-वादी होता है।

वाहन—सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश—ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्याहरवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है. इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितना अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा यह गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते है। पंचागों में नक्षत्र का मान घडी पलों में दिया रहता है और पंचाग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घडी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि पृष्ठ ११७ पर दी गई है।

आजकल स्तरीय पंचाग चित्रा पक्षीय केतकी दृक् गणित पद्धति से बनाये जाते है। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है. परन्तु अभी भी कुछ पंचाग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए है। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्रायः सभी पंचाग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते है। आजकल कुछ पंचागों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैंडर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घडी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घडी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचाग परिवर्तन पद्धति इस पंचाग में पृष्ठ ११० पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचाग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्य काल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किए जाते हैं। यही ५-३० प्रातःकाल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते है। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढे पांच घंटे का है। भारत के प्रायः सभी स्तरीय पंचागों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्रायः सभी प्रौढ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने में सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचाग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहायता से गणित शीघ्रता व सरलता से हो जाता है, इसको उदाहरण देकर समझाते हैं।

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों का जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचाग में प्रतिदिन का प्रातः ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रातः ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके है, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोडकर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते है। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रातः से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घ. १५ मि. अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रातः के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रातः	६	२१	५४
१५ ,, ,, ,,	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति— ७१२ कला

तो ९७५ ,, ,, ,, $\frac{७१२ \times ९७५}{१४४०}$

=६६४२००÷१४४०=४८२कला=८ अंश २ कला

१५ तारीख ५-३० प्रातः का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रातः ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

२४ घण्टे की गति	०	११	५२
१२ ,, ,, (२ से भाग किया)	०	५	५६
४ ,, ,, (३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ ,, (१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ ,,	०	८	०२
+	६	१०	०२
	६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घण्टे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रातः ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही अन्तर लेकर दैनिक गति ज्ञात करनी चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्र स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का मुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	५	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२९		१८	९	४
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		—	१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		—	९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		—	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९		—	७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		—	१	२		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	०		२	९	१८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		—	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		—	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		—	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	३०	केतु	२	—	५	सूर्य	—	२	२१	राहु	१४	२	३	शनि	१०	२	१६
९	४०		१	११	३		—	१	२८		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—
१०	१०		१	७	२६		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	०		१	२	२१		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	९	—		२	४	१५
१५	१०		१७	३	—		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१५	२०	शुक्र	१७	—	—	चन्द्र	६	—	—	राहु	६	३	१८	शनि	१	१०	२४
१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	.०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
१६	५०		१४	९	—		४	१०	१		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४·१०	
१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	—		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७
२१	०		८	६	—		१	९	—		१४	९	१८		११	५	२१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष सिंह धनु				चन्द्रमा राशि वृष कन्या मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन तुला कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क वृश्चिक मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	१०	शुक्र	८	३	—	चन्द्र	१	७	१५	गुरु	१४	७	६	बुध	११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	—	—		५	३	—		८	—	—		४	३	—
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	—	१३
२७	०	सूर्य	५	१०	६	मंगल	५	—	२७	गुरु	७	७	६	बुध	३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक-पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष		शुक्र २० वर्ष		सूर्य ६ वर्ष		चन्द्रमा १० वर्ष		मंगल ७ वर्ष		राहु १८ वर्ष		गुरु १६ वर्ष		शनि १९ वर्ष		बुध १७ वर्ष	
	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन	मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२[illegible]	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	९
१०	१	१	३	०	०	२७	१	१५	१	१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है. विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार से विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है उस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिये हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इसका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी आता है। परन्तु हमने घटियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इसे दिन तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टा मिनटों सेकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है।

जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौनसी अन्तर दशा का कौनसा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १५४ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०	वर्ष

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य अन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	१	वर्ष
३	६	४	१०	९	११	१०	४	०	मास
१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०	दिन

सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८	दिन
२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०	घ.

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	१	०	मास
१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घ.

सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०	दिन
२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०	घ.

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
१	१	१	१	०	१	०	०	०	मास
१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८	दिन
३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४	घ.

सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३	दिन
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	घ.

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	ग्रह
१	१	०	१	०	०	०	१	१	मास
२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५	दिन
९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६	घ.

सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८	दिन
२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७	घ.

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	दिन
२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	घ.

सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
२	०	१	०	१	१	१	१	०	मास
०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा

च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
०	०	१	१	१	१	०	१	०	वर्ष
१०	७	६	४	७	५	७	८	६	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
०	०	१	१	१	१	०	१	०	मास
२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	घ.

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	१	०	१	०	०	१	०	०	मास
१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७	दिन
१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०	घ.

चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
२	२	२	२	१	३	०	१	१	मास
२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१	दिन
०	०	३०	३०	३०	०	०	०	३०	घ.

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
२	२	२	०	२	०	१	०	२	मास
४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	ग्रह
३	२	१	३	०	१	१	२	२	मास
०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	दिन
१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	घ.

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
२	०	२	०	१	०	२	२	२	मास
१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०	दिन
१५	४५	०	३०	३०	४५	३०	०	४५	घ.

चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	१	०	०	०	१	०	१	०	मास
१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९	दिन
१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५	घ.

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
३	१	१	१	३	२	३	२	१	मास
१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	घ.

चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	१	मास
९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	दिन
०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	घ.

भौम(मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	१	०	१	०	०	१	०	०	वर्ष
४	०	११	१	११	४	२	४	७	मास
२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०	दिन

भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	दिन
३५	३	३६	१६	५०	३५	३०	२१	१५	घ.

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
१	१	१	१	०	२	०	१	०	मास
२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	घ.

भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	घ.

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	ग्रह
२	१	०	२	०	१	०	१	१	मास
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	दिन
१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	घ.

भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	दिन
३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	घ.

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	दिन
३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९	घ.

भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	ग्रह
२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	घ.

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	घ.

भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	ग्रह
०	०	१	०	१	०	०	१	०	मास
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	घ.

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
२	२	२	२	१	३	०	१	१	वर्ष
८	४	१०	६	०	०	१०	६	०	मास
१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८	दिन

राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	ग्रह
४	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६	दिन
४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२	घ.

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	ग्रह
३	४	४	१	४	१	२	१	४	मास
२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९	दिन
१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६	घ.

राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	ग्रह
५	४	१	५	१	२	१	५	४	मास
१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६	दिन
२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	घ.

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु.	के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	ग्रह
४	१	५	१	२	१	४	४	४	मास
१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५	दिन
३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१	घ.

राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

के.	शु.	सू.	च.	म.	रा.	बृ.	श.	बु.	ग्रह
०	२	०	१	०	१	१	१	१	मास
२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३	दिन
३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	घ.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	ग्रह
६	१	३	२	५	४	५	५	२	मास
०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४	दिन
१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०	प.

राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	ग्रह
१	१	२	२	२	२	१	३	०	मास
१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	दिन
०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	प.

राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	ग्रह
०	१	१	१	१	०	२	०	१	मास
२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	दिन
३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	प.

गुरु(बृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

गुरु अन्तर दशा

गु	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	ग्रह
२	२	२	०	२	०	१	०	२	वर्ष
१	६	३	११	८	९	४	११	४	मास
१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४	दिन

गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	ग्रह
३	४	३	१	४	१	२	१	३	मास
१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५	दिन
२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२	प.

गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	ग्रह
४	४	१	५	१	२	१	४	४	मास
२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१	दिन
२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६	प.

गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	ग्रह
३	१	४	१	२	१	४	३	४	मास
२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९	दिन
३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	प.

गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	ग्रह
०	१	०	०	०	१	१	१	१	मास
१९	२६	१६	२८	१९	२०	१४	२३	१७	दिन
३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६	प.

गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	ग्रह
५	१	२	१	४	४	५	४	१	मास
१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८	दिन
२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०	प.

गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	ह
१	०	२	२	२	२	०	२	०	मास
१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	ग्रह
०	१	१	१	१	०	१	०	०	मास
१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	दिन
३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	प.

गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म	ग्रह
४	३	४	४	१	४	१	२	१	मास
९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	दिन
३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	प.

शनि महादशा १९ वर्ष

शनि अन्तर दशा

श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	ग्रह
३	२	१	३	०	१	१	२	२	वर्ष
०	८	१	२	११	७	१	१०	६	मास
३	९	९	०	१२	०	९	६	१२	दिन

शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	ग्रह
५	५	२	६	१	३	२	५	४	मास
२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४	दिन
२८	२५	११	३०	९	१५	११	२७	२४	प.

शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	ग्रह
४	१	५	१	२	१	४	४	५	मास
१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३	दिन
१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	२५	प.

शनि-केतु प्रत्यन्तर दशा

के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	ग्रह
०	२	०	१	०	१	१	२	१	मास
२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६	दिन
१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	१०	३१	प.

शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	ग्रह
६	१	३	२	५	५	६	५	२	मास
१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	प.

शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७	दिन
६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०	प.

शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	ग्रह
१	१	२	२	३	२	१	३	०	मास
१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	प.

शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	ग्रह
०	१	१	२	१	०	२	०	१	मास
२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३	दिन
१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५	प.

शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म	ग्रह
५	४	५	४	१	५	१	२	१	मास
३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	दिन
५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	प.

शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	ग्रह
४	४	४	१	५	१	२	१	४	मास
१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	दिन
३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	प.

बुध महादशा १७ वर्ष

बुध अन्तर दशा

बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	ग्रह
२	०	२	०	१	०	२	२	२	वर्ष
४	११	१०	१०	५	११	६	३	८	मास
२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	दिन

बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	ग्रह
४	१	४	१	२	१	४	३	४	मास
२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७	दिन
४९	३४	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	प.

बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	ग्रह
०	१	०	०	०	१	१	१	१	मास
२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०	दिन
५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४	प.

बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	ग्रह
५	१	२	१	५	४	५	४	१	मास
२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	प

बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	ग्रह
०	०	०	१	१	१	१	०	१	मास
१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१	दिन
१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०	प.

बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	ग्रह
१	०	२	२	२	२	०	२	०	मास
१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५	दिन
३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०	प.

बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	ग्रह
०	१	१	१	१	०	१	०	०	मास
२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९	दिन
५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५	प.

बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म	ग्रह
४	४	४	४	१	५	१	२	१	मास
१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३	दिन
४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३	प.

बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	ग्रह
३	४	३	१	४	१	२	१	४	मास
१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	प.

बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	ग्रह
५	४	१	५	१	२	१	४	४	मास
३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	दिन
२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	प.

केतु महादशा ७ वर्ष

केतु अन्तर दशा

के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	ग्रह
०	१	०	०	०	१	०	१	०	वर्ष
४	२	४	७	४	०	११	१	११	मास
२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७	दिन

केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०	दिन
३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९	प.

केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	ग्रह
२	०	१	०	२	१	२	१	०	मास
१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४	दिन
०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	प.

केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	दिन
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	प.

केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	ग्रह
०	०	१	०	१	०	०	१	०	मास
१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	दिन
३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	प.

केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	ग्रह
०	०	०	०	०	०	०	०	०	मास
८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२	दिन
३५	३	३६	१६	४९	३५	३०	२१	१५	प.

केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म	ग्रह
१	१	१	१	०	२	०	१	०	मास
२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२	दिन
४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३	प.

केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	ग्रह
१	१	१	०	१	०	०	०	१	मास
१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०	दिन
४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	प.

केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	ग्रह
२	१	०	२	०	१	०	१	१	मास
३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	दिन
१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	प.

केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	ग्रह
१	०	१	०	०	०	१	१	१	मास
२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	दिन
३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	प.

शुक्र महादशा २० वर्ष

शुक्र अन्तर दशा

शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	ग्रह
३	१	१	१	३	२	३	२	१	वर्ष
४	०	८	२	०	८	२	१०	२	मास
०	०	०	०	०	०	०	०	०	दिन

शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	ग्रह
६	२	३	२	६	५	६	५	२	मास
२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

सू	च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	ग्रह
०	१	०	१	१	१	१	०	२	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

च	म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	ग्रह
१	१	३	२	३	२	१	३	१	मास
२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

म	रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	ग्रह
०	२	१	२	१	०	२	०	१	मास
२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५	दिन
३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०	प.

शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

रा	बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म	ग्रह
५	४	५	५	२	६	१	३	२	मास
१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

बृ	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	ग्रह
४	५	४	१	५	१	२	१	४	मास
८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४	दिन
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प.

शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	ग्रह
६	५	२	६	१	३	२	५	५	मास
०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२	दिन
३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	प.

शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

बु	के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	ग्रह
४	१	५	१	२	१	५	४	५	मास
२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	दिन
३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	प.

शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

के	शु	सू	च	म	रा	बृ	श	बु	ग्रह
०	२	०	१	०	२	१	२	१	मास
२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	दिन
३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	प.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और
जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान,
दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृति के कारण
किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान खोजने में लगा रहता है। भारतीय
दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन
को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन,
नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़
तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसी लिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह
छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन
में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही समान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी
को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह
विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक
श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सब से बड़ी विडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के
लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे हैं कि सभी कुछ उन्हें
स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी
भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते
हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता
कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती
है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उन को भले
ही लाभ हो लेकिन इस से ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे
अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली
मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथ. कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी
जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा
जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम् एवं द्वादश भावों को लिया
जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल,
शनि, सूर्य, राहु, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने
में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्राय:
सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों
की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु
राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल
कर सकता है इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर
मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं ही है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का
निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली
दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे। कन्याभर्तु-विनाशाय, भर्तु कन्या विनाशक:॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का
नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह
से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता
तो विवाह पश्चात् बनेगी। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अत: यह स्वत:
प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्थ श्लोकों को मान्यता
देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी
आघात पहुंचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इस विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के
प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध
कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है, अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखें हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो।
२. सप्तमेश पर वृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है।
३. सप्तम भाव को बली शुक्र या वृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है।
४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेडा जातक में एक श्लोक आता है:

त्यक्तार्के विधवाऽत्र पापेक्ष्यार्को चिरा प्रिया। सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थै: क्रूरै: रण्डा च मिश्रितै:॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूं मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ३० वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह प्रभाव उत्पन्न हो गया है उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आईये जन्मपत्रिका बनायें

इष्टकाल-लग्न-समय एक अखंड एवं अविभाजित आयाम है, किन्तु हमने अपनी सुविधा के लिए तथा प्रकृति की स्थूल गति और परिमाणों को जानने के लिए उसे विभाजित कर लिया है। उन विभाजित खंडों का रात-दिन घण्टा-मिनट आदि नामकरण कर लिया है। दिन-रात के चौबीस भाग करके उन्हें घण्टा कहने लगे हैं और इन घण्टों की गिनती घड़ी द्वारा करने लगे हैं। प्रकृति के पास वैसी घड़ी नहीं है। वह समय नहीं देखती, बल्कि उन्मुक्त भाव से अपनी लीला में लीन है। हम यहां उस लोक की बात नहीं कर रहे, जहां समय का कोई माप नहीं है। हम यहां धरती की बात करेंगे, जहां समय को वर्ष-मास-सप्ताह-दिन-रात, घण्टा-मिनट एवं सैकिंडों में नापा जाता है। समय बलवान है, अजर है, अमर है, वह किसी के लिए रुकता नहीं है, निर्बाध गति से चलता ही रहता है। समय का व्यक्ति विशेष पर क्या प्रभाव पड़ेगा इस पर हम आगे विचार करेंगे जो कि ग्रहों द्वारा व्यक्ति विशेष के बारे में विशुद्ध जानकारी देता है।

जिस समय बालक जन्म लेता है तो हर व्यक्ति उसका जन्म समय घड़ी देखकर नोट कर लेता है। घड़ी के समय को स्टैंडर्ड टाइम कहते हैं। हमने अपनी सुविधा के लिए सारे देश के लिए एक समय निश्चित कर लिया है। असम में जब घड़ी में पांच बजते हैं तो सारे भारत की घड़ियों में भी पांच बजते हैं। भारत के पूर्वी भाग के सूर्योदय एवं पश्चिमी भाग के सूर्योदय में लगभग पौने दो घंटे का अंतर रहता है। घड़ियों में यदि यही अंतर रखा जाये तो बड़ी विसंगति प्रतीत होगी। प्रकृति सूर्य की घड़ी को ठीक मानती है। ग्रह भी सूर्य को केन्द्र मानकर चलते हैं, इसलिए जन्म लेने वाले बालक का जन्मपत्र बनाने के लिए स्थानीय सूर्योदय काल से ही बच्चे के जन्म समय का निर्धारण किया जाता है। सारे देश में सूर्योदय का समय भिन्न-भिन्न रहने से भिन्न-भिन्न स्थानों में जन्मे बालकों के समय में अंतर रहना स्वाभाविक है। मान लें कि असम में एक बालक का जन्म पांच बजे होता है और दूसरा बालक भी पांच बजे दिल्ली में जन्म लेता है तो स्टैंडर्ड समय तो एक ही रहेगा, लेकिन सूर्योदय का समय भिन्न-भिन्न होने से इष्टकाल भिन्न-भिन्न ही होगा। हमने अपनी सुविधा के लिए सारी पृथ्वी के पिंड को पूर्व से पश्चिम तक एक रेखा कल्पित करके दो भागों में विभाजित कर लिया है। एक भाग को हम उत्तरी गोलार्ध एवं दूसरे भाग को दक्षिणी गोलार्ध कहते हैं। इसी प्रकार हमने सारे भूमंडल को पूर्व से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण तक रेखायें कल्पित करके छोटे-छोटे भागों में बांट लिया है। जो रेखायें पूर्व से पश्चिम को मानी जाती हैं उन्हें अक्षांश कहते हैं तथा जो रेखायें उत्तर से दक्षिण को मानी जाती हैं, उन्हें देशान्तर कहते हैं। इन रेखाओं की सहायता से हम किसी भी प्रदेश की जलवायु का ज्ञान आसानी से कर सकते हैं। अक्षांश रेखाओं से हम किसी भी देश और स्थान की स्थिति का ज्ञान प्राप्त करते हैं। पृथ्वी के गोलक को हमने १८० अक्षांश मान लिया है। दूसरे शब्दों में मध्य रेखा के ऊपर ९० अक्षांश और नीचे ९० अक्षांश मान लिये हैं। यह रेखायें वास्तव में हमें किसी देश की कोणात्मक दूरी बताती हैं। देशान्तर रेखायें उत्तर से दक्षिण को चलती हैं और इन पर पड़ने वाले स्थानों की भौगोलिक स्थिति में काफी अन्तर रहता है, जबकि एक ही अक्षांश अर्थात् पूर्व से पश्चिम की ओर जाने वाली रेखा पर पड़ने वाले स्थानों की जलवायु में कोई अन्तर नहीं रहता।

एक वृत्त को हमने ३६० भागों में बांट रखा है। पृथ्वी को अपनी धुरी पर घूमकर पुन: उसी बिन्दु पर आने के लिए २४ घण्टे का समय लगता है। इस प्रकार हमने गणित करके यह जान लिया है कि एक देशान्तर रेखा की दूरी तय करने में ४ मिनट का अंतर आता है। विश्व का मानक समय ग्रीनविच नामक शहर-जो कि भूमध्य रेखा पर स्थित है-को केन्द्रक बिन्दु मानकर निर्धारित किया गया है। हमारे देश का मानक समय आई.एस.टी. वाराणसी से गुजरने वाली (८२ अक्षांश) अक्षांश रेखा के अनुसार ५ घण्टे और ३० मिनट आगे है। इसी गणित को मानकर चलें तो वाराणसी से पूर्व में पड़ने वाले प्रत्येक अक्षांश वाले शहर के स्थानीय समय में चार मिनट कम करने होंगे तथा पश्चिम में प्रत्येक अक्षांश पर पड़ने वाले शहर के स्थानीय समय में चार मिनट बढाने होंगे। मान लें कि वाराणसी में किसी दिन सूर्योदय प्रात: पांच बजकर ३० मिनट पर होता है तो पूर्व रेखांश (८१.३०) पर चार मिनट पहले अर्थात् पांच बजकर २६ मिनट पर होगा और पश्चिम में पड़ने रेखांश पर ४ मिनट बाद अर्थात् पांच बजकर ३४ मिनट पर होगा।

नक्षत्रमंडल के सारे ग्रह-पिंड प्रतिक्षण गतिशील हैं। इष्टकाल का अर्थ उन क्षणों से है जब बालक मां के गर्भ से बाहर धरती पर आ जाता है। मोटे तौर पर बनने वाली लग्न कुण्डली, जिसे टेवा या जन्माक्षर भी कहते हैं, पूरी राशि के उदयकाल से लेकर अस्तकाल तक अर्थात् दूसरी राशि के उदयकाल तक बनाई जाती है और यह स्थूल होती है, क्योंकि एक राशि में ३० अंश यानि १८०० कलायें होती हैं और आकाश में प्रतिक्षण परिवर्तन होते रहते हैं, अत: सूक्ष्म जानकारी के लिए इष्टकाल बनाकर और लग्नकाल के लघुतम समय तक पहुंचने के लिए नवांश से लेकर शतांश कुण्डली तक बनाई जाती है। भारत में जन्मे बालक का जन्म समय जोकि आई.एस.टी. होता है को स्थानीय समय बनाने के लिए संस्कार करने अनिवार्य होते हैं, पहला देशान्तर और दूसरा वेलान्तर। देशान्तर संस्कार इसलिए करना पड़ता है क्योंकि हर स्थान का सूर्योदय काल भिन्न होता है। उदाहरणार्थ २८ फरवरी के दिन दिल्ली में सूर्योदय ७ बजकर १७ मिनट पर था तो बम्बई में ७ बजकर ३ मिनट, मद्रास में ६ बजकर २९ मिनट और जयपुर में ६ बजकर ५६ मिनट पर था। ऐसा सब देशान्तर रेखाओं के कारण होता है। सारणी में दिये गये अंतर को ऋण या धन करके (चिह्नानुसार) से स्थानीय समय आ जाता है। इसी प्रकार वेलान्तर संस्कार भी करना पड़ता है। चूंकि सूर्य और पृथ्वी की गति में समानता नहीं है, अत: इनकी गति में सामंजस्य बिठाने के लिए वेलान्तर संस्कार किया जाता है। ऊपर से नीचे दिनांक और बांये से दायें महीने दिये गये हैं। दिनांक के सामने और महीने के नीचे धन या ऋण के चिह्न के साथ मिनट सैकिण्ड दिये गये हैं। अभीष्ट तारीख के स्थानीय टाईम में चिह्नानुसार ऋण तथा धन करने से वेलान्तर संस्कार हो जाता है। जन्म कुण्डली बनाने के लिए हमें निम्नलिखित तथ्यों की आवश्यकता पड़ती है:

१. बच्चे का जन्म समय, २. जन्म की तारीखादि, ३. जन्म स्थान, ४. सूर्योदय-सूर्यास्त

सर्व प्रथम लग्न सारिणी की सहायता से सूर्योदय एवं सूर्यास्त की विधि पर विचार करते हैं। एक बच्चे ने १५ अप्रैल १९९५ को बम्बई में सांय ४ बजे (आई.एस.टी.) जन्म लिया, हमारे पास दिल्ली के अक्षांश पर बना आर्यभट्ट पंचांग हैं, इसी पञ्चांग से बम्बई में जन्मे बच्चे की जन्म पत्रिका बनाते हैं। बम्बई का अक्षांश १८/५८ रेखांश ७२/५० है यहां का सूर्योदय एवं सूर्यास्त ज्ञात करते हैं। आर्यभट्ट पंचाग में १९° अक्षांश की लग्न सारिणी दे रखी है। दैनिक ग्रह स्पष्ट दे रखे हैं। १५ अप्रैल १९९५ का प्रात: ५.३० आई.एस.टी. का सूर्य स्पष्ट है ०.०° ४६'.२१'' अर्थात् मेष राशि शून्य अंश ४६ कला और २१ विकला।

सर्वप्रथम हम बम्बई का दिनमान निकालते हैं-

हमने १९° अक्षांश की सारिणी में प्रात: सूर्य स्पष्ट का फल देखा ० राशि ० अंश के नीचे संख्या मिली = ३/१०

अब प्रात: सूर्यस्पष्ट से सातवीं राशि का फल सारिणी में देखा तो संख्या मिली = ३४/१५

दूसरी संख्या में से प्रथम संख्या घटाई = ३४.१५ - ३.१० = ३०.५। ३० घटी ५ पल १५ अप्रैल १९९५ का बम्बई का दिनमान आया।

$$\text{सूर्यास्त} = \frac{\text{दिनमान (घड़ी-पल)}}{५} = \frac{३०.५}{५} = ६.१ \text{ घं. मि.}$$

सूर्योदय = १२ - सूर्यास्त = ५.५९ घं.मि.

दिनमान = सूर्यास्त - सूर्योदय = १८.१ - ५.५९ = १२.२×२.५ = ३०.५

यह सूर्योदय बम्बई का स्थानीय समय एल.टी. है इसे स्थानीय मध्यम काल एल.एम.टी. बनाने के लिए इसमें देशान्तर जोड़ना या घटाना पड़ेगा और मानक समय आई.एस.टी. बनाने के लिए वेलान्तर जोड़ना या घटाना होगा।

एल.एम.टी.=एल.टी.+देशान्तर = ५.५९ + ०३८.४० = घं. ६ मि. ३७ सैं. ४०

आई.एस.टी.=एल.एम.टी.+वेलान्तर = ६.३७.४० + ०.०० = ६.३७.४० आई.एस.टी.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शाबर मन्त्र

शाबर मन्त्र-तन्त्र की ग्राम्य शाखा के मन्त्र हैं। तन्त्र मार्ग के प्रवर्तक भगवान् शंकर माने गये हैं किन्तु शाबर मन्त्रों के प्रवर्तक भगवान् शंकर प्रत्यक्ष रूप में नहीं है, लेकिन जिन सिद्ध पुरुषों ने इनको आविर्भूत किया वे सभी तन्त्र मार्ग के साधक और शिवानुरागी अवश्य थे। इन मन्त्रों का भले ही कोई शास्त्रीय आधार नहीं है किन्तु लाभकारिता की दृष्टि से या उपयोगिता में ये अशास्त्रीय प्रयोग भी किसी प्रकार कम नहीं है।

कुछ विद्वानों का मत है कि साबरमती के तटीय क्षेत्रों पर बसी जाति के सिद्धों ने ये मन्त्र प्रचारित किये इसलिए इन्हें साबर या शाबर मन्त्र कहा जाता है। शाबर मंत्र की शुरूआत कब से हुई और कौन इनके प्रवर्तक थे इस बारे में कई मत हैं, किन्तु यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इस मार्ग को प्रामाणिक स्वरूप प्रदान किया नाथ सम्प्रदाय के आदि गुरु मत्स्येन्द्र नाथ और गोरखनाथ ने। नाथ सम्प्रदाय के इन सिद्धों का यह समाज पर बहुत बड़ा अहसान है कि उन्होंने मन्त्र विज्ञान जैसे जटिल विषय के गूढ़ रहस्यों को साधारण जनों के लिए उपयोगी बना दिया सर्व सुलभ कर दिया। साबर का अर्थ होता है अपरिष्कृत, यह तो माना जा सकता है कि साबर तन्त्र से न तो हमें अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है न ही इनके द्वारा हम मुक्ति मार्ग को पा सकते हैं, किन्तु इस विद्या में जितने भी प्रयोग हैं वे सब काम्य प्रयोग हैं। आज हमें यह विदित नहीं है कि इनमें कुछ तथ्य है या हम प्रमादवश इनको उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, किन्तु इस विद्या में अचूक मन्त्र और तन्त्र प्रयोग हैं जो हमारे जीवन में आये विघ्न-बाधाओं को समूल नष्ट करने, सामान्य आकांक्षाओं को पूर्ण करने और एक सीमा तक रोगों से छुटकारा दिलाने के लिए ग्राम्य अंचलों में आज भी प्रयोग किये जा रहे हैं। जहां इस विद्या के जानकार सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाते हैं वहीं उनमें से कुछ अल्पज्ञानी अपने अहं और लोभ से प्रेरित होकर जनता को हानि भी पहुंचाते हैं। कई बार ऐसे लोग प्राकृत रोग-दोषों को भी झाड़-फूंक से दूर करने का ढोंग रचा कर रोगी का अहित कर डालते हैं। इसमें मुख्य कारण है ऐसे लोगों का विद्याव्यसनी न होना और निरक्षर व्यक्ति अहं और भ्रान्ति का शिकार हो जाये तो क्या आश्चर्य, दूसरे इनका जीवन जिस विश्वास और वातावरण में चलता है वहां सुविधा और सम्पर्क की बात थोड़ी रहती है। शाबर मंत्रों में आम बोल चाल की भाषा रहती है। इसमें न्यास, ध्यान, तर्पण हवन-मार्जन आदि शास्त्रीय मर्यादाओं को पालने का बन्धन नहीं है। जहां शास्त्रीय मन्त्र तुरन्त कोई विश्वस्त कार्य नहीं कर सकते वहां साबर मन्त्र पूर्णतया लाभप्रद रहते हैं। रोग, भूत बाधा से मुक्ति दिलाने एवं चौकी बैठाने (अभिचार कर्म) में इनसे चमत्कारिक रूप में कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। शाबर मन्त्रों में आन, शाप, श्रद्धा और धमकी का प्रयोग ही किया जाता है, और साधक का कार्य सम्पन्न हो जाता है। साबर मंत्रों का रूप विचित्रता और विविधता लिए हुए मिलता है। शुद्ध बीज मंत्रों को लेकर ग्रामीण भाषा की शब्दावली को वाक्य रूप दे दिया जाता है जिससे इन मन्त्रों में विचित्रता का आभास होता है, एक ही मंत्र में कई शैलियों के सम्मिश्रण के कारण इनमें विविधता आ जाती है। साबर मंत्रों में कुछ मंत्र तो ऐसे हैं जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है क्योंकि उनका वाक्यगत कोई अर्थ नहीं निकलता जैसे सिर दर्द दूर करने का मन्त्र है:-

''हजार घर घाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।''

प्रत्यक्ष में इस शब्दावली को निरर्थक कहा जा सकता है किन्तु इसका प्रभाव असाधारण रूप से पड़ता ही है। शाबर मन्त्र प्रायः संस्कृत, प्राकृत और क्षेत्रीय भाषाओं में रचे गये हैं। कुछ-एक मंत्रों में कई भाषाओं का समावेश कर दिया गया है। तो कई-एक मंत्रों में ठेठ क्षेत्रीय भाषा तथा ग्राम्य लहजा, शैली और कल्पना भी। अधिक मन्त्र हिन्दी भाषा में मिलते हैं चूंकि हिन्दी एक बड़े भू-भाग की बोलचाल की भाषा प्राचीन काल से रही है। एक बात और भी है कि जहां शास्त्रीय मन्त्रों में षड्ांग (ऋषि, देवता, बीज, शक्ति-छन्द-कीलक) की आवश्यकता रहती है वहां साबर मंत्रों में इनकी कोई आवश्यकता नहीं है मन्त्र ही अपने आप में पूर्ण है। साबर मन्त्रों में श्रद्धा ही प्राण है, इसी के दृढ़ और विस्तार हो जाने पर शाबर मन्त्र अपना प्रभाव और फल दे देते हैं। साबर मन्त्रों में दूसरा प्रभाव सौगन्ध के रूप में देखने को मिलता है। यह सौगन्ध आन के रूप में दिलाई जाती है जिसमें गाली, शाप जैसी स्थितियों का उल्लेख होता है जैसे:-

''हे अमुक देव ! तू मेरा कार्य कर अगर मेरा कहा नहीं करेगा तो अपनी माता की शैय्या पर पग धरे, चमार के कुंड में गिरे, धोबी की नांद में कंकर बनकर पड़े इत्यादि।''

इस प्रकार का व्यवहार समाज के दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता, किन्तु शाबर मन्त्र के साधक का व्यवहार वैसे ही क्षम्य है जैसे किसी अबोध बच्चे कि की गई अभद्रता को माता-पिता अपने वात्सल्य और बच्चे की अवस्था के कारण क्षमा कर देते हैं। बच्चा चूंकि छल-कपट से दूर होता है उसे अपनी जिद के आगे कुछ सूझता नहीं और वह कहनी-अनकहनी कह जाता है, ठीक यही हाल शाबर मन्त्र साधक का होता है, वह भी बाल सुलभ सरलता के कारण और श्रद्धा और विश्वास के बल पर मन्त्र साधना का अधिकार और सिद्धी प्राप्त कर लेता है।

शाबर मन्त्रों में सबसे बड़ी खूबी यह है कि इनमें अधिक झंझट नहीं है ये सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। साबर मंत्रों में गुरु की भी इतनी आवश्यकता इसलिए नहीं रहती क्योंकि इस विद्या के प्रवर्तक स्वयं सिद्ध गुरु गोरखनाथ हैं। इतने पर भी किसी निष्ठावान साधक को गुरु बना लेना लाभ ही देगा क्योंकि साधना में आने वाले विघ्नों में वह बचा लेगा शाबर मन्त्रों की साधना करते समय ब्रह्मचर्य और व्रतोपवास का पालन किया जा सके तो अधिक अच्छा रहे अन्यथा साधना करते समय शुद्ध होकर बैठना चाहिये। परोपकार पुण्य है और पर-पीड़न पाप। यदि हम इस दृष्टिकोण से सोचें तो दैहिक, मानसिक रोगों को शमन करने वाले मन्त्रों को सिद्ध करना चाहिये। इससे हमें दोहरा लाभ मिलेगा, एक तो हम परोपकार का पुण्य अर्जित करेंगे दूसरे अपने पूर्वजों की धरोहर को सहेजेंगे भी।

नीचे कुछ शाबर मन्त्र दिये जा रहे हैं। मन्त्र व्यवहारिक विषय है। धैर्य और विश्वास से अपना लेने पर सिद्धि मिलेगी ही। असफलताएं और विघ्न हर क्षेत्र में आते हैं, परन्तु इनसे घबराने से काम नहीं चलेगा। साधना करते समय गुठली को प्रतिपल उखाड़ कर देखने की (कि उगी या नहीं) बाल सुलभ चंचलता मत रखिये, आतुर मत होईये। एक निष्ठ होकर करते रहिये।

प्रेत बाधा निवारण के लिए:- ''ॐ नमो दीप मोहे दीप जागे पवन चले पानी चले शाकिनी चले डाकिनी चले, भूत चले, प्रेत चले, नो सौ निन्यानवे नदी चले हनुमान बीर की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।'' किसी मंगलवार से किसी हनुमान मन्दिर में तैल का दीपक जलाकर इस मन्त्र का एक लाख पच्चीस हजार जप करें तो यह सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से रोगी को सामने बिठाकर मोर पंख से १०८ बार मन्त्र बोलकर झाड़ा देना चाहिये।

पीला निवारण के लिए:- ''ॐ नमो वीर वेताल असराल, नार करे तू देव खादी तू बादी, पीलिया कूं भिदाती कारै झारै पीलिया रहे न एक निशान, जो कहीं रह जाय तो हनुमन्त की आन, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।'' ग्रहण काल में इस मन्त्र को जप कर सिद्ध कर लें। पीलिया के रोगी को सामने बिठा कर उसके सिर पर कांसे के बरतन में तिल्ली का तेल डालकर रखें और मन्त्र का जप करते हुए उसे कुशा (डांभ) से चलाते रहें ऐसा तीन दिन करें तो तेल पीला पड़ जायेगा और रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।

घर की रक्षा के लिए:- ''या अल्लाह पाक इस आंगन को मैं करता हूं आज बन्द, हजरत सुलेमान की बरकत से बन्द, हजरत मूसा के हुकुम से बन्द, हजरत अली की शमशीर से बन्द, हजरत अहमद के कलाम से बन्द, या रहमान की रहमत से बन्द, या करीम के करम से बन्द या खालिक की बरकत से बन्द या मालिक की रहमत से बन्द या अल्लाह पाक मालिक रब्बुलगफूर, हमारी इस दुआ को तू करले कबूल, ला इलाहाइल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलल्लाह।'' नौचन्दी की जुमेरात को इस मन्त्र को जाप कर सिद्ध कर लेने के पश्चात सोते समय वजु कर के मन्त्र का उच्चारण कर लोटे के पानी में फूंक मारें यह क्रिया पांच बार करें, पानी को घर में छिड़क दें और ताली बजा कर ... रहें।

गणपति सिद्धि मन्त्र:- ॐ गणपति गणपति बसे मसान, जो फल मांगूं देते आन। पंजे लड्डू सेर सन्दूर भर आन आन आनन्दपूर। न द्वैतीभान फूल फलन्त जागे भरल्यावे तो एक फूले हाथी जो तू मोड़न रहे मूवा बाल साथ करी जाऊं तो मुट्ठी करो।

भाद्रपद की गणेश चतुर्थी से इस मन्त्र को नित्य १०८ बार जपें यह क्रम १०८ दिन तक चलना चाहिये। इस से गणपति प्रसन्न हो कर मन की इच्छा पूर्ण करते हैं।

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति-वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्त्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में पृथ्वी तत्त्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूर्दर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं। वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्त्व अत्याधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृति-वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्त्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित, सहृदय, स्वप्नदर्शी, मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष के दूर भागते हैं जिनके चेहरे पर जल तत्त्व का अत्याधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं। गोल चेहरे वाली औरतें श्रृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्त्व का अत्याधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति-सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्त्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्टवक्ता, अभिमानी, नेतृत्त्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्त्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक में अत्यन्त क्रोधी हिंसात्मक एवं पाश्विक वृति वाला होगा। सूच्याकार मुखाकृति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति-अंडाकार मुखाकृति वायु तत्त्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार मुड़ो उतार होते हैं। जातक सामान्य कद के पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वछन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं। यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंग्य प्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्त्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है। अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति-ऐसे जातक को देख कर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्त्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कांति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग अवाग हृदय, महत्त्वाकांक्षी स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रकृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं। अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:-

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं मानसिक इच्छाओं का सूचक है। जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यावहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है। जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी वासनायुक्त, असभ्य, मंदबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, द्रुतगामी, स्पष्टवक्ता, मनमौजी, संरक्षक एवं न्यायप्रिय होगा।

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्न लिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है- (१) लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो। (२) लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो। (३) यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों। (४) लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों के लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखें तो कार्य की सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए। यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृष्टि न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो। लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा?- (१) लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है। (२) यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्नः- (१) यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा। (२) यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है। (३) यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों, तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है। (४) प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्नः-यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो, ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्नः--पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है। ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी। लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तथा बृहस्पति का बलवान होना भी सन्तति कारक योग बनता है। शुभ ग्रह दृष्ट लग्रेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है। यदि पांचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी। यदि पांचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी। यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पांचवें भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है। यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी। यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है। यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न:-(१) यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बंटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है। (२) यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है। (३) यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर भूमि की प्राप्ति होती है। (४) यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि मकान खेत आदि प्राप्त करता है। (५) यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है;

मुकद्दमें में जीत हार:- (१) यदि प्रश्न में पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात उसकी हार होगी। (२) यदि सप्तम भाव में बाल पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो। (३) यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकद्दमा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा-प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी।

विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न:-अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुंचा, बंधा हुआ है या मर गया है? (१) यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात् कुशल से है, ऐसा कहना। (२) प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना। यदि प्रश्न काल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुंच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमन:-(१) प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पांचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पांचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना। (२) सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचार:-(१) यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोनों तरफ यदि पाप ग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है। (२) लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है। अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार:-(१) दूसरे बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा। (२) चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्यु दण्ड का सूचक है। (३) यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठे हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा। (४) यदि लग्नेश और अष्टेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा?-(१) प्रश्न लग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होता। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

अमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगी?-प्रश्न काल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान् हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने से लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी:-(१) ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है। (२) यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? जितने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा। (३) क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान् हो तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान् होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गड़ा धन है या नहीं?-(१) प्रश्न कुण्डली में चतुर्थ भाव का स्वामी चौथे स्थान को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी। (२) चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न-प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायु गत हुई शोक जानो।

नष्ट वस्तु परिज्ञान

नक्षत्री की संज्ञा	नक्षत्र	दिशा	अवधि प्राप्ति या नहीं
अन्धलोचन	रो., पु., उ. फा., वि.,पू. षा., ध., रे.	पूर्व	शीघ्र मिले प्रयत्न से
मंदलोचन	मृ., अश्वि., ह., अनु., उषा., श., अ.	दक्षिण	३ दिन में मिले प्रयत्न से
मध्यलोचन	आ., म., चि., ज्ये., अभि., पुष्य., भ.	पश्चिम	६४ दिन में मिले प्रयत्न से
सुलोचन	पुन., पूफा., स्वा., मू., श्र., उभा., कृ.	उत्तर	नहीं मिले

चोर ज्ञानम्-प्रश्न लग्न की कुण्डली बनाकर देखिए, सप्तम स्थान में स्त्री राशि है या पुरुष राशि। स्त्री राशि हो तो स्त्री चोर, पुरुष राशि हो तो पुरुष चोर है, ऐसा जानो।

सर्पदंश सम्बन्धी प्रश्न-मूल, कृतिका, मघा, विशाखा, आश्लेषा, रेवती आर्द्रा नक्षत्रों में सर्प ने काटा है तो यदि गरुड़ भी रक्षा करें तो भी प्राण नहीं बच सकते।

ऋणी-धनी प्रश्न-अपने वर्ग को दूनाकर दूसरे का वर्ग जोड़ना फिर आठ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके अपना वर्ग जोड़ना उपरान्त आठ का भाग देना। जिसका अधिक शेषांक बचे तो ऋणी तथा कम बचने वाले को धनी जाना।

पशु विषयक प्रश्न-सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र नवम तक हो तो पशु वन में है आगे से छः नक्षत्र में हो तो पशु घर को शीघ्र आएगा। आगे के दो नक्षत्र में मिलेगा नहीं, आगे की तीन नक्षत्र में मृत्यु को प्राप्त हुआ ऐसा जाने।

आयु निर्णय चक्र:

दीर्घायु	मध्यायु	अल्पायु
चर में लग्नेश/चर में अष्टमेश	चर में लग्नेश/स्थिर में अष्टमेश	चर में लग्नेश/द्विस्व. अष्टमेश
स्थिर में लग्नेश/द्विस्व. अष्टमेश	स्थिर में लग्नेश/चर में अष्टमेश	स्थिर में लग्नेश/स्थिर में अष्टमेश
द्विस्व. लग्नेश/स्थिर में अष्टमेश	द्विस्व. लग्नेश/द्विस्व. अष्टमेश	द्विस्व. लग्नेश/चर में अष्टमेश

आयु निर्णय-(१) जन्म कुण्डली में देखें लग्नेश एवं अष्टमेश-चर, स्थिर, द्विस्वभाव किस राशि में पड़ा है। पश्चात् ऊपर दिये गये चक्र से जातक की दीर्घायु मध्यायु एवं अल्पायु निश्चित करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न विचार

मेष लग्न:-मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुंआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, रक्त गोल नेत्र, मुख पर चिन्ह, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी उधमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतन्त्र विचार वाला प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली स्वच्छन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं। तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए [illegible] शुभ होता है। शनि बुध शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्राय: शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२ २८, ३२, ३६ वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न:-जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्षाल, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरणशक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्टमैटिक्स, भवन निर्माण, जवाहरात विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कन्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते है। इनका भाग्योदय २५, २८ ३६ एवं ४२ वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न:-जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित, चपल, तीक्ष्ण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रूचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्टस, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३४, ३६, ४२ वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ चन्द्रमा अशुभ मंगल, सूर्य अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न:-जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय कल्पनाशील, परिश्रमी भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मन्त्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२ वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न:- जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट शरीर प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रसासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते हैं। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ राहु-केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२ वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न:-जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवादि, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न:-जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रसन्नचित तथा तीक्ष्ण बुद्धि वाला होता है। यह न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र, शुभ, सूर्य मंगल बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न:-जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एंव संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दृष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुविचारी, निर्दयी अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य चन्द्रमा मंगल बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २[illegible], २४, २८, ३२ वें वर्ष में होता है।

धनु लग्न:-बड़े कान, लम्बी गर्दन,बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान्, उदार गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कूलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्टकपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, बकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२ वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न:-जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील उदासीन, दार्शनिक, आस्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२ वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न:- जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छहृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी विचारक, रोचकवक्ता एवलं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न:-जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत, बहुकुटुम्बी, सदगृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य शुक्र शनि बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्यादय १६, १२, २८, ३३ वें वर्ष में होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हथेली से भविष्य ज्ञान

आई.ए.एस. अधिकारी:-यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई.ए.एस. अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग:-यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुंच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग:-यदि बुद्ध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुद्ध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी:-मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग:-यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

डाक्टर होने का योग:-यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डाक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग:-बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो।

अभिनेता-अभिनेत्री योग:-अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार:-हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन:-(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हों, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग:-(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है। (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो।

सुखहीन विवाह का योग:-(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत का कम उभरा हुआ होना।

तलाक होने के योग:-(१) विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से रेखा चल कर विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग-विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठा उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

(१) यदि चन्द्र पर्वत अत्याधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है। (२) यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है। (३) यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है। (४) यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है। (५) यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं मे बंट जाती हो तो वायु रोग होता है। (६) यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है। (७) यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं। (८) अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य योग:-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु:-भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता या पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग:-मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु:-जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमे बाजी में जायदाद और धन नाश होना:-दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्मेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग:-(१) चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग:-जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिल:-(१) यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है। (२) शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी में आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है। (३) चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है। (४) हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है। (५) जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धुर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए। (६) बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है। (७) शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्याधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है। (८) जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है। (९) भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में विलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है। (१०) यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धनहानि होती है। (११) यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

नव-रत्नों का चमत्कार

प्राचीन ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार नौ ग्रहों सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु का विभिन्न रत्नों से सम्बन्ध है। इन रत्नों के क्रमश: नाम इस प्रकार है:- माणिक्य, मोती, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद, वैडूर्य अथवा लहसुनिया। इन रत्नों को जब मनुष्य अपने शरीर पर धारण करता है तब वे अपने माध्यम से ग्रहों की रश्मियों को मानव शरीर में प्रविष्ट कर देते हैं जिसके फलस्वरूप रत्न धारण करने वाला मनुष्य उससे सम्बन्धित ग्रह के शुभ प्रभाव का पर्याप्त लाभ उठाने लगता है।

माणिक्य-यह सूर्य का रत्न माना जाता है तथा लाल रंग का होता है। इसके पहनने से शत्रुओं का नाश होता है तथा जीवन में भाग्योदय होता है, नौकरी वालों को पदोन्नति में सहायक होता है तथा मन्त्रियों अथवा सरकारी विभागों में सहयोग मिलता है। मन्त्रियों को यह पहनना लाभदायक है। इसके धारण करने से

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

धारणकर्ता साहसवान आत्मबली, धैर्यवान तथा निर्भीक बनता है। समाज में उच्च और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करता है। अगर जातक की जन्म-कुण्डली में सूर्य नीच का हो अथवा छठे आठवें और बारहवें घर में बैठा हो तो माणिक्य नहीं धारण करना चाहिए। श्रेष्ठ माणिक्य खरीद कर, उस पर सूर्य का बीजमन्त्र "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:" का विधिवत ७००० जप करके कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सोने अथवा तांबे की अंगूठी में जड़वाकर धारण करें।

मोती:-यह चन्द्रमा का रत्न माना जाता है तथा इसके पहनने से मन की बेचैनी दूर हो जाती है, जिन व्यक्तियों को बहुत क्रोध आता है अथवा जिनका ब्लड प्रैशर अधिक होता है उनके लिए यह रत्न लाभकारी है। स्त्रियों के लिए मोती पहनना आवश्यक है क्योंकि उनको यह रत्न सौभाग्यशाली बनाता है। स्वच्छ और दोषरहित मोती पहनने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा यश मिलता है। उच्चकोटि का मोती खरीद कर सोमवार के दिन अथवा रोहिणी, हस्त, श्रवण नक्षत्रों अथवा पूर्णिमा को चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, चन्द्र के बीच मन्त्र "ॐ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्रम से नम:" का विधिवत जप करके अनामिका में धारण करें।

मूंगा:-लाल रंग का यह रत्न मंगल का रत्न माना जाता है। मूंगा धारण करने वाले का साहस बढ़ता है और उसके शत्रुओं का नाश होता है। पुलिस तथा सैनिक सेवाओं में काम करने वालों को विशेष लाभदायक है। यदि भयानक स्वप्न आते हों तो इसके पहनने से ऐसे स्वप्न आने बन्द हो जाते हैं। भूत-प्रेत बाधा से मुक्ति प्राप्त होती है। स्त्रियों को मूंगा सौभाग्य प्रदान करता है। जिसका ब्लड प्रैशर कम हो उनके लिए लाभकारी है। उच्चकोटि का दोष रहित मूंगा खरीद कर मंगलवार के दिन मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्रों में सोने अथवा तांबे की अंगूठी में जड़वा कर "ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भमाय नम:" मन्त्र का विधिवत १०,००० जप करके धारण करें। याद रहे मूंगे के साथ कभी नीलम, गोमेद और लहसूनिया नहीं धारण करना चाहिए। अगर जन्म कुण्डली में मंगल छठे, आठवें तथा बारहवें घर में पड़ा हो तो भी मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।

पन्ना:-हरे रंग का यह रत्न बुध का रत्न माना जाता है। यह रत्न बुद्धि बल देता है तथा इसके पहनने से शरीर पुष्ट होता है। धन, धान्य तथा सम्पत्ति की वृद्धि होती है। इसके धारण करने से जादू, टोने नजर आदि से रक्षा होती है। मिर्गी और पागलपन से बचाता है। नेत्रों में तरावट लाता है। स्वप्नदोष दूर करता है। स्त्री के प्रसव के समय पर बांधने से शीघ्र प्रसव हो जाता है। यह रत्न लेखकों, अध्यापकों, राजनीतिज्ञों, व्यापारियों को अधिक लाभकारी है। उच्चकोटि का दोष रहित पन्ना खरीद कर बुधवार के दिन अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती नक्षत्रों में सोने अथवा चांदी की अंगूठी में जड़वा कर "ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:" मन्त्र का विधिवत् ८००० जप करके कनिष्ठिका उंगली में धारण करें।

पुखराज:-चिकना, चमकदार, पानीदार पीले रंग का पुखराज बृहस्पति का रत्न माना जाता है। यह धन, धान्य, विद्या, बुद्धि, बल, ज्ञान, सम्पत्ति, आयु और यश प्रदान करता है। इसके धारण करने से वंश की वृद्धि होती है। यह भूत-प्रेत की बाधा से रक्षा भी करता है। जिस कन्या के विवाह में बाधा पड़ रही हो तो पुखराज पहनने से शीघ्र उपयुक्त वर प्राप्त हो जाता है। जिसके घर में क्लेश रहता है वहां पति अथवा पत्नी को पुखराज धारण करना अत्यन्त लाभकारी है। यह रत्न मन में धार्मिक विचारों का संचार करता है तथा इससे शराब जैसे बुरे व्यसन छूट जाते हैं। उच्चकोटि का पुखराज खरीद कर बृहस्पतिवार के दिन पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वा भादप्रद नक्षत्रों में सोने की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ बृं बृहस्पतये नम:" मन्त्र का विधिवत १९००० जप करके पहनना चाहिए। मगर लग्न वालों के लिए पुखराज इतना लाभकारी नहीं है।

हीरा:-हीरा शुक्र का रत्न माना जाता है। इसके पहने से धन प्राप्ति, दाम्पत्य सुख, विवाह सुख तथा वाहन सुख प्राप्त होता है। इसको शुक्रवार के दिन भरणी, पूर्वा फाल्गुनी या पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में प्लेटीनम अथवा चांदी की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ शुं शुक्राय नम:" मन्त्र का विधिवत् १६००० जप करके धारण करें। मेष, वृश्चिक तथा मीन लग्न वालों के लिए यह रत्न लाभकारी नहीं है।

नीलम:-यह शनि का रत्न माना जाता है। इसको पहनने से पहले इसकी परीक्षा करना आवश्यक है क्योंकि जहां यह अत्यन्त अशुभ फलदायक भी है, और अपना फल दो/तीन दिन में ही दे देता है। इसे शनिवार के दिन खरीद कर पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्र पद नक्षत्रों में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ प्रां प्रीं प्रौ स: शनये नम: " मन्त्र का विधिवत् २३००० हजार जप करके धारण करें। यदि यह लाभदायक सिद्ध हो तो कारोबार में आकस्मिक धन लाभ तरक्की देता है तथा गैस रोग व अन्य बीमारियों में लाभदायक होता है। यदि थोड़ा सा भी हानिप्रद साबित हो तो फौरन उतार देना चाहिए। यदि जन्म कुण्डली में शनि छठे, आठवें, द्वादश स्थान में बैठा हो तो नीलम कदापि धारण नहीं करना चाहिए।

उपरत्नों का प्रभाव

मुख्य रत्नों का जातक पर क्या प्रभाव पड़ता है। वह ग्रहों के अनुसार ऊपर दिया गया है। परन्तु रत्न मंहगे होने के कारण साधारण व्यक्ति इन्हें कम खरीदते हैं। अत: ज्योतिषी कई बार उन्हें उपरत्न पहनने की सलाह देते हैं। इन उपरत्नों को पहनने से क्या प्रभाव पड़ता है नीचे दिया गया है:-

अकीक:-यह पत्थर प्राय: कई रंगों में मिलता है। कुण्डली में जो ग्रह कमजोर हो उस ग्रह से सम्बन्धित रंग का पत्थर पहना जाता है। अच्छी सेहत, धन सम्पत्ति और हर कार्य में सफलता हासिल करने के लिए यह पहना जाता है। इसे आप चांदी में जड़वा कर किसी भी शुभ दिन को पहन सकते हैं।

फिरोजा:-फिरोजी रंग का यह पत्थर जातक को विषम परिस्थितियों का सामना करने में सहायता करता है। तथा दुर्घटना एवं चोट से बचाता है। विष से जातक की रक्षा करता है। स्त्रियों की प्रजनन शक्ति को बढ़ाता है। फिरोजा बुध और शनि का मिश्रित प्रभाव देता है। इसे चांदी और तांबे की मिश्रित धातु से बनी अंगूठी में जड़वा कर पहनें।

कटैला:-जामुनी रंग का यह पत्थर नेत्र रोग, अधरंग से पीड़ित व्यक्तियों को लाभकारी है। इसके पहले शराबियों की शराब छूट सकती है। और किसी प्रकार के नशे से भी छुटकारा मिल सकता है। माहवारी रोग से पीड़ित स्त्रियों को स्वास्थ्य लाभ हो सकता है। मुकद्दमेबाजी में सफलता प्राप्त होती है।

ब्लड स्टोन:-हरे रंग के इस पत्थर पर लाल रंग के धब्बे होते हैं। जिन स्त्रियों को मासिक धर्म में अत्याधिक खून आता है उनके लिए यह रत्न बहुत उपयोगी है। बावासीर से पीड़ित व्यक्ति इसे पहन कर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

अक्वामैरिन:-इस पत्थर को प्रेमी अपनी प्रेमिका को अथवा प्रेमिका अपने प्रेमी को पहनाए तो दोनों में प्रेम बना रहता है, ऐसी धारणा है। पति और पत्नि के बीच सम्बन्धों को मधुर बनाता है।

केन्द्र, त्रिकोण तथा तीसरे, छठे और एकादश स्थान में बैठा हो तो राहू की महादशा में गोमेद धारण करना लाभकारी है। अगर राहु द्वितीय, सप्तम, अष्टम, द्वादश भाव में स्थित हो तो गोमेद नहीं धारण करना चाहिए। बुधवार के दिन स्वाती, शतभिषा और आर्द्रा नक्षत्रों में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर "ॐ रां राहवे नम:" मन्त्र का विधिवत् १८००० जप करके धारण करें। तो रोग व शत्रुओं के नाश के लिए यह लाभकारी है। आकस्मिक धन लाभ भी कराता है।

वैडूर्य अथवा लहसुनिया:-यह केतु का रत्न माना जाता है। जब केतु लग्न, केन्द्र त्रिकोण अथवा तृतीय, षष्ठ तथा एकादश भाव में स्थित हो तो केतु की महादशा में लहसूनिया धारण करना लाभकारी होता है। यदि केतु द्वितीय, सप्तम, अष्टम और द्वादश भाव में हो तो यह रत्न नहीं धारण करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन अथवा अश्विनी, मघा, मूल नक्षत्रों में चांदी की अंगूठी में जड़वाकर इस रत्न पर "ॐ के केतवे नम:" मन्त्र का १७००० जप करके धारण करना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक शुभाशुभ देखने का चन्द्रकालानल चक्र

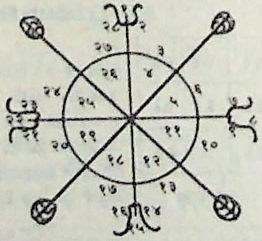

दिये हुए चित्र के समान एक चंद्र कालानल चक्र बनावें। फिर जिस दिन का शुभाशुभ विचार करना हो उस दिन का नक्षत्र देखें कि पंचांग में चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। प्रातःकाल जिस नक्षत्र पर चंद्रमा हो उसको चित्र में १ अंक पर रखकर फिर आगे के २८ नक्षत्रों को अंकों के क्रमानुसार लिखें। इसमें अभिजित का समावेश भी है। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र कहां पड़ रहा है। उसी के अनुसार फल समझें। यदि त्रिशूल में नाम नक्षत्र पड़े तो अशुभ, वादविवाद, रोग, धनहानि आदि। वृत्त के अन्दर पड़े तो आयुवृद्धि, धनलाभ, हर्ष, मित्रों का मिलन आदि शुभ फल हो। यदि वृत्त के बाहर (३,६,१०,१३,१७,२०,२४,२७ अंको पर) पड़े तो कुछ प्रसन्नता और कुछ दुःख। आधा दिन अच्छा और आधा क्लेश, चिन्ता, धन हानि से बीतेगा। इस प्रकार आप रोज देख सकते हैं कि "आज का दिन कैसा बीतेगा।"

शनि पीड़ा नाशक यंत्र

यंत्र

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

यदि किसी व्यक्ति को शनि की ढैया या साढ़ेसाती के कारण बहुत परेशानी आ रही है हो तो चित्र में दिये हुए यंत्र को एक पत्थर की स्लेट के टुकड़े पर लकड़ी के कोयले से शनिवार को व्रत रख कर लिखें। तथा उस शनि से परेशान व्यक्ति के ऊपर सिर से पैरों की ओर सात बार उतार कर उस व्यक्ति के द्वारा ही किसी ऐसे कुएं (या पानी के तालाब) में फिकवादें जिसका पानी वह स्वयं कभी न पियें। उसके बाद वह पीछे मुड़कर न देखें। यह कार्य सांय काल को अधिक प्रभावशाली रहता है। ऐसा करने से उसको शनि की पीड़ा से मुक्ति मिल जाएगी यह अनुभूत है।

सर्वरोग नाशक यंत्र

यंत्र

ह्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
ह्रीं	देवदत्त		ह्रीं
श्रीं			श्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

मंगलवार के दिन भोजपत्र पर अनार की कलम और केशर की स्याही से लिखें। देवदत्त के स्थान पर रोगी का नाम लिखें। फिर उस भोजपत्र को लपेट कर तावीज के रूप में लाल कपड़े में लपेटकर सिल लें। और धूपदेकर तथा घी के दीपक के ऊपर ७ बार फिराकर अपने दाहिने बाजू में बांध लें। यह क्रिया करते समय कोई देखे या टोके नहीं इसलिए एकान्त में करना चाहिये। इसके बांधने से प्रायः सभी रोग नष्ट हो जाते हैं और सुख मिलता है।

व्यापार में वृद्धिकारक लक्ष्मी यंत्र

यंत्र

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	९
२३	६	१९	२	१५
४	१२	२५	८	१६

दीपावली की रात्रि में भोजपत्र पर अनार की कलम और अष्टगंध की स्याही से लिखकर गुग्गुल की धूप तथा दीप से यंत्र की पूजा करें। और उसी समय "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः" मंत्र की २१ माला (१०८ दानेवाली) जपकर प्रत्येक माला के बाद यंत्र पर फूंक मारें। फिर इस यंत्र को दुकान की गद्दी के नीचे लाल कपड़े में लपेट कर रख दें तथा नित्य प्रातः स्नान करके गद्दी पर बैठने से पहले धूप दीप से पूजा करके तब गद्दी पर बैठें। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में व्यापार में आश्चर्य जनक तरक्की होगी।

शत्रु दमन कारक यंत्र

यंत्र

६	७	२
१	५	९
८	३	४

इस यंत्र को चिता की भस्म की पानी में स्याही बनाकर आक (मदार) की लकड़ी की कलम से भोजपत्र पर लिखकर मंगल वार के दिन श्मशान की अग्नि में शत्रु का नाम लेकर डालने से शत्रु पूरी तरह से परास्त होकर वशीभूत हो जाता है और हमेशा के लिए दास बन जाता है।

मुंकदमा जीतने का यंत्र

यंत्र

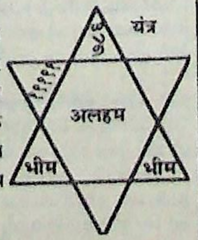

मंगलवार के दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर किसी तांबे के तावीज में भरकर, गुग्गुल की धूप देकर तथा घी के दीपक से पूजा करके अपने गले या दाई भुजा में बांधें जब तक अंतिम फैसला न हो जाय बांधे रखें। मुकदमें में विजय होगी।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारक मंत्र, यंत्र

सूर्य यंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

सूर्यः- यदि सूर्य गोचर में ४, ८, १२वें हो तो कष्ट, रोग, धनहानि, असफलता प्रदान करता है। यही फल विंशोत्तरी दशा आने पर भी करता है। इसके निवारण के लिए सूर्य के बीज मंत्र "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः" का ७००० जप उपयुक्त रहता है। किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से आरंभ करें। लाल कपड़ा, गुड़, ताम्र पात्र, गेहूं का दान करें। रक्त पुष्पों से सूर्य की पूजा करें। सूर्य यंत्र को अष्टगंध की स्याही व अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीप देकर ताबीज की भांति दाहिनी भुजा में रविवार प्रातः को ही धारण करें तो अरिष्ट निवारण होता है, सुखशान्ति मिलती है। ये सभी यंत्र सर्वार्थसिद्धि मुहूर्त में धारण किये जायें तो उत्तम है।

चन्द्र यंत्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

चंद्रमा :- यदि चंद्रमा के कारण अरिष्ट हो रहा है तो इसके निवारण के लिए किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से "ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसेनमः" मंत्र का चन्द्रोदय समय में ११००० जप करें। जप एक सी संख्या में करें। कभी ज्यादा कभी कम, ऐसा करें। श्वेत फूलों से चंद्रमा की पूजा करें। चांदी [illegible], चीनी, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत चंदन का दान करें चन्द्र यंत्र को चांदी के तावीज या श्वेत वस्त्र के कपड़े में (भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखकर) दायां भुजापर धारण करें। सुख-शान्ति होगी।

मंगल यंत्र

८	३	१०
९	१०	५
४	११	६

मंगलः मंगल एक पापी ग्रह है। गोचर में ४, ८, १२वें स्थान में आने पर या विंशोत्तरी दशा आने पर या जन्म कुण्डली में अशुभ होने पर बहुत हानिकरता है। इसकी शान्ति के लिए बीज मंत्र "ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमायनमः" का शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से जप आरम्भ करें। लाल फूलों से मंगल की पूजा करें। सोना, ताम्रपात्र, गुड़, घी, लाल वस्त्र, मसूर, केसर, लालचंदन का दान करें। अष्टगंध, अनार की कलम से भोजपत्र पर भौमयंत्र लिखकर, धूप, दीप देकर दायीं भुजा में धारण करें। शांतिहोगी, दुख दूर होंगे।

बुध यंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

बुधः- पापी या क्रूर ग्रहों के साथ जन्म कुण्डली में बुध के बैठ जाने से बुध भी अनिष्ट कारक फल देता है। इसके निवारण के लिए बुध के बीजमंत्र "ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं ब्रों सः बुधायनमः" का शुक्ल पक्ष के ज्येष्ठ बुधवार से जप प्रारम्भ करें। सुवर्ण, कांसा, मूंग, खांड, घी, हरावस्त्र, फल का दान करें, जप ९००० हजार करें। केशर या अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर बुधयंत्र लिखकर हरे वस्त्र के ताबीज में रखकर, धूपदीप देकर दांयी भुजा में बांधे तो अवश्य कष्ट निवारण होगा।

गुरु यंत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

बृहस्पतिः- यद्यपि गुरु शुभ ग्रह है किन्तु यदि गोचर में ४, ८, १२ हो तो विवाहादि शुभ कार्यों में अड़चन डालता है। अन्य प्रकार से भी अनिष्टकारक हो सकता है। इसकी शांति के लिए बीजमंत्र "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः" का १९००० जप करें। जप शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से शुरू करें। सोना, चने की दाल, घी, पीला वस्त्र, केले के फल, हल्दी का

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दान करें। भोजपत्र पर केशर की स्याही व अनार की कलम से गुरु यंत्र लिखकर तथा सोने के या पीले वस्त्र के तावीज में रखकर दांये हाथ में धारण करें। जप के लिए पीली माला लें।

शुक्र :- शुक्र के अनिष्ट कारक प्रभाव को दूर करने के लिए शुक्र के बीज मंत्र "ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:।" का १६००० जप करें। श्वेत चंदन की माला प्रयोग करें। चांदी, चावल, चीनी, दूध, श्वेत वस्त्र, दही का दान करें। जप प्रात: सूर्योदय काल में करें। अष्टगंध तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर शुक्र यंत्र लिखकर धूपदीप देकर श्वेत वस्त्र या चांदी के तावीज में रखकर दांयी भुजा में धारण करें। अवश्य सुख व शान्ति मिलेगी।

शुक्र यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि :- शनि एक क्रूर ग्रह है। बड़ा विनाशक ग्रह है। इसकी शांति के लिए बीजमंत्र "ॐ प्रां प्रीं प्रौं, स: शनये नम:" का कृष्णा पक्ष के प्रथम शनिवार से जप प्रारम्भ करें। जप संध्याकाल में करें। नीलम, लोहा, उड़द, तेल सरसों, कुलथी, काला, कम्बल व वस्त्र दान करें। जप संख्या २३००० है। भोज पत्र पर अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से शनि यंत्र लिखकर काले कपड़े या सोने के तावीज में मंढवा कर धारण करें। शनि का प्रभाव दूर होगा।

शनि यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहु: शनि की भांति राहु भी एक क्रूर छाया ग्रह है। इसकी शांति के लिए कृष्ण पक्ष के प्रथम शनिवार से बीजमंत्र "ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहवेनम:" का जप रात्री के प्रथम प्रहर में कम्बल के आसन पर बैठ कर करें। जप संख्या १८००० है। तिल, सरसों, तेल, नीले वस्त्र, कम्बल (काले) का दान करें। भोजपत्र पर अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से राहुयंत्र को लिखकर, धूप दीप देकर, सोने के ताबीज में रख कर धारण करें।

राहु यंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु :- मंगल की भांति केतु भी अनिष्ट कारक छाया ग्रह है। इसकी शांति के लिए शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से बीजमंत्र "ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम:" से १७००० जप करें। लहसुनियां, सुवर्ण, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूम्रवस्त्र, नारियल का दान करें। केतु के यंत्र को राहु की भांति धारण करें।

केतु यंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

कतिपय चमत्कारी मंत्र

(१) व्यापार वृद्धि के लिए :- "भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा, उठे तो डंडी बिकैजो माल, भंवरवीर सोखे नहिं जाय।" रविवार के दिन प्रात:काल स्नान करके १ माला जप करें। फिर ११ दाने उड़द के इसी मंत्र से ११ बार पढ़कर अपनी व्यापार की गद्दी पर फैंक दें। तीन रविवार लगातार ऐसा करने से व्यापार में अवश्य वृद्धि होती है।

(२) सर्व मनोकामना पूर्ति के लिए :- श्री दुर्गामाता की मूर्ति सामने रखकर उसका विधिवत पूजन करके, हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए संकल्प करें : फिर निम्नमंत्र का सवालाख जप करें। तो निश्चित मनोकामना पूर्ति होती है। मंत्र "ॐ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमस्तुते॥"

(३) विवाह सम्पन्न करने के लिए:- "ॐ गौरी आवे शिवजी ब्याहवे, अमुक को विवाह तुरंत सिद्ध करै, देर न करै, देर होय तो शिवजी का त्रिशूल पड़े, गुरू गोरखनाथ की दुहाई फिरै" इस मंत्र का ८१ दिन तक लगातार एक माला रोज, जप करै, दीपक व धूप बालै। ग्यारहवें दिन रात को एक कोरे कुल्हड़ में सात डली नमक की, सात काली मिर्च लाल कपड़े में बांधकर रखदें। कुल्हड़ का मुंह भी लाल कपड़े से बांध दें। कुल्हड़ पर बाहर की ओर सात बिन्दी कुमकुम की लगाकर और ऊपर लिखे मन्त्र की पांच माला जप करके, चुपचाप कुल्हड़ को आधी रात को किसी चौराहे पर रख आवें, पीछे मुड़कर न देखें। सारी रुकावटें दूर होकर बहुत जल्द शादी हो जाती है।

(४) आधाशीशी दूर करने का मंत्र:- ॐ नमो बन में ब्याई बानरी, उछल वृक्ष पै जाय। कूद कूद शाखान पै कच्चे बन फल खाय। आधा तोड़े आधा फोड़े आधादेय गिराय, हंकारत हनुमान जी आधा शीशी जाय" इस मंत्र से नीम की डाल या राख से रोगी को दक्षिण को मुख करा कर झाड़ा दें तो तीन दिन में आधा शीशी बिल्कुल ठीक हो जाती है।

(५) पुत्रदायक मंत्र:- "ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते, देहिमे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गत:।" शुद्ध आसन पर पूर्व मुख होकर तुलसी या रुद्राक्ष की १०८ दाने की माला से सवा लाख जप करें। जप के बाद शहद, घी,, शक्कर, तिल मिश्रित सामग्री से १०००० आहुतियों का हवन करें। १००० तर्पण, १०० मार्जन करें। भगवान कृष्ण का ध्यान करें, अभक्ष्य चीजों से दूर रहें। भगवान अवश्य कामना पूर्ति करेंगे।

(६) रोग नाश के लिए मंत्र :- "ॐ रोगान शेषानपहं सितुष्टा, रुष्टा तु कामान सकलान भीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिताह्याश्रयतां प्रयांति।" इस मंत्र का दुर्गा सप्तशती में दी हुई विधि से सवा लाख मंत्र जप करें तो माँ भगवती की कृपा से कठिन से कठिन रोग से भी मुक्ति मिलती है।

(७) धन प्राप्ति के हेतु महालक्ष्मी मंत्र:- श्री लक्ष्मी नारायण जी की मूर्ति के समक्ष, धूप, दीप, फल, मिष्ठान्न रखकर मंत्रजप करें। मूर्ति का मुख पूर्व दिशा में तथा जपकर्ता का मुख उत्तर को रहे जलकलश पर नारियल अवश्य रखें। मंत्र "ॐ श्री ह्रीं श्रीं ह्रीं कमले कमला लये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नम:।" सवा लाख मंत्र जप, हवन करें।

(८) शत्रु विनाशक मंत्र:- शत्रु विनाश के लिए श्री बगलामुखी मंत्र से बढ़कर अन्य कोई मंत्र नहीं है। पीली धोती व दुपट्टा आदि कपड़े धारण करें। बगलामुखी का चित्र सामने रख कर उसकी विधिवत पूजा करें, पीले फूल चढ़ावें, पीले मिष्ठान्न से भोग लगावें, पीली माला (हल्दी की) प्रयोग करें। ५१००० जप करें। जप के बाद नीम के पत्ते, कौए के पंख तथा सरसों के तेल से हवन करें। तो शत्रु का विनाश होता है। मंत्र-"ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा॥"

(९) रोग निवारण तथा दीर्घायु प्राप्ति के लिए:- इसके लिए महामृत्युञ्जय मंत्र का शिव की मूर्ति के समक्ष बैठकर विधि पूर्वक जप करें। जप सवा लाख हो, बाद में हवन, तर्पण, मार्जन दशांश करें। मंत्र -"ॐ ह्रौं जूं स:। ॐ भूर्भुव: स्व:। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम् उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ॐ स्व: भुव: भू:। ॐ स: जूं ह्रौं ॐ।

(१०) मृत संजीवनी मंत्र :- ॐ तत्सवितुर वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं भर्गो देवस्य धीमहि, उर्वारुक मिव बन्धनात् धियो योन: प्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ।। इस मंत्र के सविधि जप से अकालमृत्यु भी टल सकती है।

(११) बिच्छू का विष उतारने का मंत्र:- "ॐ नमो आदेश गुरु को। कालो बिच्छू कांकरवालो, उतर बिच्छू न [illegible] टालो, उतरे तो उतारूं चढ़े तो मारूं, गरुड़ मोर पंख हंकालूं। शब्द सांचा पिं[illegible] कांचा फुरोमंत्र ईश्वरी वाचा।" इस मंत्र को सूर्य ग्रहण में जितना जप संभव हो सके, जप करके सिद्ध करलें। फिर चिमटा, चाकू या झाड़ू से ७ बार मंत्र पढ़कर झाड़ा दे दें। विष उतर जायेगा।

(१२) पीलिया दूर करने का मंत्र:- "ॐ नम: आदेश गुरू को श्रीराम सर साधा लक्ष्मण साधा वाण, काला पीला रीता नीला थोथा पीली पीला पीला चारों गिरि जहि तो श्री रामचन्द्र जी रहे नाम। हमारी भक्ति गुरू की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।" पहले इस मंत्र को सूर्यग्रहण या दिवाली की रात को अधिक से अधिक (१००००) जप करके सिद्ध कर लें। बाद में रोगी को पीतल के पात्र में शुद्ध जल देकर मंत्र का उच्चारण करते हुए सुई से सात बार शनिवार के दिन झाड़े। सात शनिवार तक क्रिया करें। अवश्य लाभ होगा।

द्वादश राशियों के देवता औरजपनीय मंत्र:- स्तोत्र ग्रंथों के अनुसार यदि व्यक्ति अपनी जन्म या नाम राशि के देवता का नियमित रूप से एक माला का जप करता रहे तो उसकी आपदा, कष्ट, रोगादि का स्वत: ही निवारण होता रहता है। राशियों के मंत्र निम्न प्रकार हैं (१) मेष- "ॐ विष्णवे नम:" (२) वृष-"ॐ वासु देवाय नम: (३) मिथुन :- ॐ केशवाय नम: (४) कर्क :- "ॐ राधा कृष्णायनम:" या "ॐ हरिहराय नम:"। (५) सिंह- "ॐ बालमुकुन्दाय नम: (६) कन्या:- "ॐ ह्रीं पीतम्बराय परमात्मने नम: (७) तुला :-ॐ श्रीराम दाशरथये नम:। (८) वृश्चिक:- "ॐ नमो नारायणाय नम:" (९) धनु- ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं धरणी धराय नम: (१०) मकर :- ॐ श्री वत्साय उपेन्द्राय नम: (११) कुम्भ राशि- के देवता गोविन्द गोपाल हैं। "ॐ गोपाल गोविन्दाय नम:।" (१२) मीन- ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं रथाङ्गचक्राय नम:।"

॥ चमत्कारी यंत्रों द्वारा सिद्धि ॥

(१) शत्रु को वश में करने का यंत्र :- इस यत्र को कागज पर हाथी दांत से लिखकर मरघट में गाड़ दें तो शत्रु वश में हो जाय।

५८	३७	५	८
७८	९	२	५२
५४	५	८४	९१
७	८७	६८	५८

यंत्र-१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(२) परदेशी को वापिस बुलाने का यंत्र:- इस यंत्र को तथा आने वाले का नाम तालाब की मिट्टी से बड़ के पत्ते पर लिखकर आगन्तुक की दिशा में गाड़ दे यह शीघ्र आ जावेगा।

यंत्र-२

३८	६५	१	२१
१०	६३	६५	१६
४	५	८७	११
३९	२८	२८	२८

(३) भूत प्रेत नाशक यंत्र:- यंत्र (३) को असगंध से भोजपत्र पर लिखकर घर में रखें तो भय नहीं रहता। या इस यंत्र को चांदी के वर्क पर या भोजपत्र पर श्मशान की मिट्टी से लिखकर भूत के सताये रोगी के सिर पर दो मिनट रखकर तालाब में फेंक आवें तो भूत भाग जाता है।

यंत्र-३

८५	५६	९	१२
१	६१	६२	१४
४६	४	१८	९१
८	६७	२८	५८

(४) बवासीरनाशक यंत्र:- रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में इस यंत्र को भोजपत्र पर नीबू के रस से लिखकर गले में बांध लें तो बवासीर से मुक्ति मिलती है।

यंत्र-४

९	३	८	१३
६५	४	१०	७७
७	६	१५	८०
१२	८२	११	१४

(५) पुरुष वशीकरणयंत्र:- इस यंत्र (५) को भोजपत्र पर पान के रस या केशर से लिखें। अनार की कलम बनावें। फिर स्त्री उसे अपनी साड़ी में या भुजा में बांध ले तो उसका पुरुष उसके वश में रहता है।

यंत्र-५

१	६५	२	९२
७५	९	२	५२
९७	२८	८३	९१
६	७	३९	४५

(६) सर्व कार्य सिद्धि यंत्र :- इस यंत्र (६) को भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखें। गुग्गुल, असगंध की धूप दे कर तांबे के तावीज में भुजा में बांध लें तो मनचाहा कार्य सिद्ध हो।

यंत्र-६

५७	५८	९	११
३३	५७	४८	३७
८६	६	४४	६८
२५	५५	६५	९

(७) नजर (दीठि) दूर करने का यंत्र :- यंत्र (७) को भोजपत्र पर अनार की कलम तथा केसर की स्याही से लिखकर तांबे के तावीज में मढ़कर इतवार या मंगलवार के दिन बच्चे के गले में बांध दें तो बच्चे को कभी नजर न लगे।

यंत्र-७

४६	६	८५	८५
९	८	४२	२५
७८	७२	८	५
७	५	३५	८

(८) सर्व बाधानाशक यंत्र:- पँसठिया यंत्र यह यंत्र सब प्रकार की बाधाओं को नाश करता है। इस यंत्र को भोजपत्र पर, अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से लिखें। इस यंत्र के चारों ओर 'ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः' लिखें। दीपावली की रात को यह यंत्र बनावें। गूगुल की धूप दें। महालक्ष्मी मंत्र का १००८ बार जप कर चांदी के तावीज में मंढवाकर दाहिनी भुजा में बांध लें। तो धन सम्बंधी सारी परेशानियां दूर हो जाती हैं। महालक्ष्मी मंत्र "ॐ श्रीं ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्ये नमः॥"

यंत्र-८

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

(९) मुकदमा जीतने का यंत्र :- दीपावली की रात को या चंद्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण में इस यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर गूगुल, असगंध की धूप देकर चांदी के तावीज में मंढवाकर गले या दांये बाजू में जब तक मुकदमा चले तब तक बांधे रहें। मुकदमे में अवश्य विजय होगी। शराब, मांस का परहेज रखें।

यंत्र-९

५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

(१०) गर्भधारण यंत्र:- जिस स्त्री के गर्भ धारण में असुविधा हो रही हो उस की बांयी भुजा में इस यंत्र को जिस दिन रविवार को मूल नक्षत्र हो उस दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर धूपदीप देकर चांदी के तावीज में रखकर बांध दें। अवश्य सिद्धि होगी।

यंत्र-१०

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

॥ अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष ॥

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्वपूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। जन. २, ११, २०, २९ को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। जन. ३, १२, २१, ३० को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। जन. ४, १३, २२, ३१ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। जन. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों . जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, १७ महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३, तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। जन. १, २४ को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते . तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। जन. ७, १६, २५ में जन्म व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। जन. ८, १७, २६ को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखें जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। जन. ९, १८, २७ में जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९० वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं। तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों सें आकर्षण होता है।

फर. १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इन का लगाव होता है। फर. २, ११, २०, २९ में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१ वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। फर. ३, १२, २१ को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। फर. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९ ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८, १०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। फर. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यकित्यों से गहरा लगाव होगा। फर. ६, १५, २४ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ६, १५, २४ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। फर. ७, १६, २५ को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। फर. ८, १७, २६ इनके लिए

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। फर ९, १८, २७ इनके जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ था ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च में ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्पूर्ण वर्ष, १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं। और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं। तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्पूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्पूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, १०, १९, २८, ९, १८, २७ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, २२, १५, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६, मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की २, ७, ११, १६, २०, २८, २५, १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है।

जून १, १०, १९, २८ जन्मतिथि के लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६९, ६८९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४ ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भा[illegible]यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष ल[illegible]व रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जुलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१, ३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जु. ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे व्यक्तियों के प्रति तीव्र आकर्षण रखते हैं। **जुलाई ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं। तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ६, १५, २४, ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुला. ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। जु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

८,१७, २६ को जन्मे लोगों के लिये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ९, ८, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनकेदि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०, ३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४,१३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, १३, २२, ३१, ८, १७, २६ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेव लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ ता. में जन्म लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आगकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ४, २३, ६, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण रहता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्तू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्तू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। तारीख ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अक्तू. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अक्तूबर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्तू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाब होता है। **नवं. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्पूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ४, १३, ३२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नव. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवं. ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवं. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। **दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। **दिनांक ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं। तथा १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। दिसं. ४, १३, २२, ३१ को जन्मे लोगों के जीनव के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। दिसं. ७, १६, २५ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यकित्यों से विशेष लगाव होता है। **दिसं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसं. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शनि का पाया विचार

जब शनि एक राशि को भोग कर दूसरी राशि में प्रवेश करे उस समय चंद्रमा जिस राशि में संचार कर रहा हो उसे ज्ञात करें। जिन पर शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या आई हो वे अपनी जन्म (या नाम) राशि से चंद्रमा की राशि तक गिनें। यदि उन की राशि से चंद्रमा की राशि २, ५, ९वीं हो तो उन पर शनि चांदी के पाये से आया समझें। चांदी का पाया शुभ होता है। यदि शनि ढैय्या या साढ़ेसाती के कारण अनिष्ट फल करता है तो चांदी के पाये से आने के कारण उतना अशुभ नहीं करता अपितु कुछ शुभ ही करता है। यदि जन्म राशि (नाम राशि) से चंद्र राशि ३, ७, १०वीं हो तो शनि को तांबे के पाये से आया समझें। यदि चंद्र राशि १, ६, ११वीं हो तो सुवर्ण पाद से आया समझें। तांबे का पाया सामान्य शुभ होता है परन्तु सुवर्ण पाद से आने पर चिन्ता, क्लेश, रोग, परिवार में कलह, धन का अपव्यय होता है। यदि जन्म राशि से चंद्र राशि ४, ८, १२वीं हो तो लोहे के पाये से आया समझें जोकि बहुत अशुभ माना जाता है। धन हानि, क्लेश, रोग, बन्धन, मुकद्दमाबाजी, भ्रमण आदि फल होते हैं।

संक्रान्ति नक्षत्र से जन्म नक्षत्र (या नामनक्षत्र) फल

संक्रान्ति के समय जो नक्षत्र हो उससे प्रारंभ करके जन्म नक्षत्र (नाम नक्षत्र) तक गिनें। यदि प्रथम ३ नक्षत्रों में अपना जन्म या नाम नक्षत्र पड़े तो उसमास में यात्रा करनी पड़े, अगले ६ नक्षत्रों में सुख, उससे आगे के ३ नक्षत्रों में पड़ने से पीड़ा, उससे आगे के ६ नक्षत्रों में वस्त्र का लाभ, उसके बाद ३ नक्षत्रों में धन का नाश और उसके बाद ६ नक्षत्रों जन्म नक्षत्र पड़े तो उस मास में धन का लाभ हो। (मुहूर्त चिन्ता.) स्पष्टार्थ नीचे चक्र दिया है:-

नक्षत्रों में	३	६	३	६	३	६
फल	गमन (यात्रा)	सुख	पीड़ा, कष्ट	वस्त्र लाभ	धन हानि	धन लाभ

ग्रहों के स्वगृह, परमोच्च, परमनीच, मूलत्रिकोणादि विचार

स्वराशि

सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सिंह २१से ३० अंश तक	कर्क	मेष १३ से ३० अंश तक वृश्चिक (पू.)	मिथुन (पू.) कन्या में २१ से ३० अंश तक	धनु में ११ से २० अंश तक मीन (पू.)	वृष (पूर्ण) तुला में १६ से ३० अंश तक	मकर (पू.) कुम्भ २१ से ३० अंश तक	कन्या	मीन

मूल त्रिकोण राशि

सिंह १ से २० अंश तक	वृष में ४ से ३० अंश तक	मेष में १ से १२ अंश तक	कन्या में १६ से २० अंश तक	धनु में १ से १० अंश तक	तुला में १ से १५ अंश तक	कुम्भ में १ से २० अंश तक	मीन	कन्या

उच्च राशि

मेष के १ से १० अंश तक	वृष के २ से ३ अंश तक	मकर के १ से २८ अंश तक	कन्या के १ से १५ अंश तक	कर्क के १ से ५ अंश तक	मीन के १ से २७ अंश तक	तुला के १ से २० अंश तक	मिथुन में १ से १५ अंश तक	धनु १ से १५ अंश तक

नीच राशि

तुला के १ से १० अंश तक	वृश्चिक के १ से ३ अंश तक	कर्क के १ से २८ अंश तक	मीन के १ से १५ अंश तक	मकर के १ से ५ अंश तक	कन्या के १ से २७ अंश तक	मेष के १ से २० अंश तक	धनु के १ से १५ अंश तक	मिथुन के १ से १५ अंश तक

राशियों का शीर्षोदय, पृष्ठोदय, उभयोदय विचार

शीर्षोदय राशियां : मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ पृष्ठोदय राशियां: मेष, वृष, धन, कर्क, मकर
उभयोदय: मीन दिन बली राशियां: सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ।
रात्रि बली राशियां: मेष, वृष, मिथुन, धनु, कर्क, मकर दिनरात्रि बली: मीन

नवग्रहों की समिधायें:- शुभ कार्यों में हवन में आम, ढाक की समिधा प्रयोग होती है परन्तु नवग्रहों के दोष शमनार्थ अथवा इष्ट कार्य की सिद्धि के लिए जब नवग्रहों की प्रसन्नता के लिए हवन किया जाता है तो उसमें प्रत्येक ग्रह के लिए विशिष्ट प्रकार की समिधा से हवन किया जाता है जैसाकि वाशिष्ठी हवन पद्धति में लिखा है-"अर्क: पलाश: खदिर: अपामार्गोऽथ पिप्पल:। औदुम्बर: शमी दूर्वा कुशाश्च समिध: क्रयात्" अर्थात् सूर्य के लिए आक (मदार), चंद्र के लिए पलाश (ढाक), मंगल के लिए खैर, बुध के लिए अपामार्ग (चिड़चिटा), गुरु के लिए पीपल, शुक्र के लिए गूलर, शनि के लिए शमी (छोंकर), राहु के लिए दूर्वा तथा केतु के लिए कुशा से हवन करें। ग्रहों की समिधा प्रादेश मात्र (१२ अंगुल की) दोष रहित हों। फटी हुई, दो शाखा वाली, छोटी, अधिक बड़ी, अधिक मोटी घूमी हुई, कीड़ा लगी (घुनी हुई), पतली न हो।

ग्रहों के लिए वैदिक हवन मंत्र

सूर्य- "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्- ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।"

चंद्र- "ॐ इमन्देवाऽसपत्न ७सुवद्ध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय। इमम मुष्य पुत्रम मुष्यै पुत्रमस्यै व्विशऽएषवोमीराजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ७ राजा- ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। इदं चन्द्रमसे इदन्न मम।"

मंगल- "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिव: ककुत्पति: पृथिव्याऽयम्। अपा७रेता७सि जिन्वति- ॐ भौमाय स्वाहा। इदं भौमाय इदन्न मम"

बुध- "ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ७सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थेऽध्युत्तर स्मिन्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत- ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय.।"

बृहस्पति- "ॐ बृहस्पतेऽति यदर्य्योऽअर्हाद्युम द्विभाति क्रतु मज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वसऽऋत प्रजात दतस्मासुद द्रविणन्धेहि चित्रम्- "ॐ बृहस्पतये स्वाहा। इदं बृहस्पतये।"

शुक्र- "ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसम्ब्रह्मणा व्यपिवत् क्षत्रम्पय: सोमम्प्रजापति:। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान७शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु-"ॐ शुक्राय स्वाहा इदं शुक्राय इदन्नमम।"

शनि- "ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तुन:"ॐ शनये स्वाहा। इदं शनये इदन्न मम।"

राहु- "ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदावृध: सखा। कया शचिष्ठया वृता "ॐ राहवे स्वाहा। इदं राहवे इदन्न मम्।"

केतु- "ॐ केतु कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्याऽपेशसे। समुषद्भिर जायथा: "ॐ केतवे स्वाहा। इदं केतवे।"

वर वरण मुहूर्त

"धरणिदेवोऽथवा कन्यकासोदर: शुभदिने गीत वाद्यादिभि: संवृत:। वर वृत्तिं वस्त्र यज्ञोपवीतादिना ध्रुव युतैर्वाह्नि पूर्वात्रयैराचरेत॥"

मुहूर्त चिन्तामणि में लिखा है कि शुभदिन (सोम, बुध, गुरु तथा शुक्रवार) में शुभ तिथियों (२, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३) में ध्रुव संज्ञक, कृतिका तथा तीनों पूर्वा नक्षत्रों और विवाह नक्षत्रों में भद्रादिदोष रहित शुभ मुहूर्त में कन्या पक्ष का पुरोहित अथवा कन्या का सोदर भाई गान-वाद्य आदि मांगलिक उपकरणों के साथ द्रव्य (शक्ति अनुसार), वस्त्र, यज्ञोपवीत, फल, फूल मालादि वस्तुओं के द्वारा वर का पूजन करके तिलक करें अर्थात् वरण करें।

कन्या वरण मुहूर्त

"विश्व स्वाती वैष्णव पूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वाग्नेयैर्वा करपीडोचित ऋक्षै:। वस्त्रालङ्करादि समेतै: फल पुष्पै: सन्तोष्यादौ स्यादनु कन्यावरणंहि॥" (मुहूर्त. चि.)

उत्तराषाढ़ा, स्वाती, श्रवण तीनों पूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृत्तिका और विवाहोक्त नक्षत्रों में पहले कन्या को वस्त्र, आभूषण (अलङ्करण) द्रव्य, रत्न, फल, मिष्ठान्न, फूल आदि सुन्दर पदार्थों से संतुष्ट करके तत्पश्चात् कन्या का वरण करें (इस रस्म को गोद भरना या चुन्नी चढ़ाना भी कहते हैं)।

यंत्र-मंत्र-तंत्र साधन मुहूर्त

सभी प्रकार के यंत्र, मंत्र तथा तंत्र साधनों के लिए विविध ग्रन्थों में वर्णित सूर्य ग्रहण ही श्रेष्ठतम मुहूर्त माना गया है। कतिपय यंत्र, मंत्र-तंत्र साधनों के लिए दीपावली तथा होली की रात्रि का समय भी उत्तम माना गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुछ विद्वान इस प्रकार की साधनाओं के लिए "सायन संक्रान्ति पुण्यकाल", 'क्रान्तिसाम्य काल' "षडशीति मुख संक्रान्ति काल', 'अर्धोदय', महोदय, महामहावारुणी पर्व, महावारुणी पर्व, तथा वारुणी पर्व को भी सूर्य चंद्र ग्रहण के समान ही महत्वपूर्ण मानते हैं। सर्वार्थसिद्धि योग में भी कुछ लोग यंत्र तंत्र साधते हैं। परन्तु कुछ विद्वानों के अनुससार केवल शुभ तिथि, शुभवार (रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र), शुभ नक्षत्र (अश्वि., मृग, उ.फा., हस्त श्रवणादि) तथा त्रिषडाय में पापग्रह की उपस्थिति और त्रिक भावों की शुद्धि ही पर्याप्त मानी गई है।

जमीन या मकान खरीदने का मुहूर्त

दिन: बुध, गुरु, शुक्रवार, तिथि २, ५, ६, १०, ११, १५, नक्षत्र:मृग, पुनर्वसु, अश्ले, मघा, पू. फा. स्वाती, विखाशा, अनु. मूल, पू. षा., उ. भा., तथा मास-मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन (होलाष्टक त्यागकर), वैशाख तथा ज्ये॰ठ मास शुभ हैं।

अथ घात चक्रम्

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मास	कार्ति.	मार्ग.	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गु.
तिथि	१.६.११	५.१०.१५	२.७.१२	२.७.१२	३.८.१३	५.१०.१५	४.९.१४	१.६.११	३.८.१३	४.९.१४	३.८.१३	५.१०.१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनु.	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्ले.
योग	विष्कं.	शुक्ल	परिघ	व्या.	धृति	शूल	शूल	व्यति.	वरी.	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तु.	चतुष्पद
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
चंद्र पु.	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुंभ
चन्द्र स्त्री	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

नोट:-विवाह व उपनयनादि में यह घात चक्र वर्ज्य नहीं है। केवल द्यूत, प्रवास, राजदर्शन और यात्रा में वर्ज्य है।

त्रिज्येष्ठ विचार

"ज्येष्ठ द्वन्द्वं मध्यमं सम्प्रदिष्टं त्रिज्येष्ठं चेन्नैव युक्तं कदाऽपि।
केचित्सूर्यं वह्निगं प्रोज्झ्य चाऽऽहुर्नैवाऽन्योन्यं ज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः॥" (मु. चि. म.)

किसी भी दम्पति की प्रथम सन्तान (प्रथम गर्भ से उत्पन्न सन्तान) को ज्येष्ठ संतान कहा जाता है। यदि वर ज्येष्ठ हो, कन्या भी ज्येष्ठ हो तो इनका विवाह ज्येष्ठ मास में कदापि नहीं करना चाहिये यह अत्यन्त अशुभ योग होता है। यदि कन्या और वर दोनों में से केवल एक (वर या कन्या) ज्येष्ठ हो तो उनका विवाह ज्येष्ठ मास में मध्यम माना गया है। यदि कन्या और वर दोनों ही ज्येष्ठ न हों तो उनका विवाह ज्येष्ठ मास में शुभ है। महर्षि भारद्वाज के मत से जब तक सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में रहे तभी तक ज्येष्ठ में विवाह निन्दित है बाद में ज्येष्ठ में भी विवाह करने में कोई दोष नहीं।

त्रिखलजन्म

किसी दम्पति को यदि प्रथम तीन लगातार गर्भों से कन्या ही उत्पन्न हो और चतुर्थ गर्भ से पुत्र उत्पन्न हो अथवा प्रथम तीन लगातार गर्भों से पुत्रोत्पत्ति के पश्चात् चतुर्थ गर्भ से पुत्री उत्पन्न हो तो यह त्रिखल जन्म कहलाता है। इस का महान दोष है; इस दोष के कारण माता पिता को धन हानि, रोग, भय, कष्ट होते हैं अतः त्रिखल दोष की सविधि शान्ति करानी चाहिए।

विवाह में विशेष विषय (कुल तथा समयान्तर) का विचार

अपने कुल (तीन पुरुष के भीतर) के पुत्र के विवाहोपरान्त ६ मास तक पुत्री (कन्या) का विवाह नहीं करना चाहिये परन्तु पुत्री के विवाह के बाद पुत्र का विवाह हो सकता है एवं कन्या, पुत्र के विवाहोपरान्त ६ माह तक किसी का मुण्डन भी नहीं करना चाहिये। दो सोदर (सगे) भाइयों का विवाह दो सोदर (सगी) बहनों से नहीं करना चाहिये। दो सोदर भाइयों या दो सोदर बहनों का विवाह ६ मास के मध्य नहीं करना चाहिये। वर्ष (संवत) बदल जाने पर दोष नहीं होता। शुभकार्य के उपरान्त पितृक्रिया (श्राद्ध) ६ मास तक निषिद्ध है। दो भाई या दो बहन यमल (एक ही गर्भ से उत्पन्न) हों तो उन दोनों का उपनयन या मुंडन या विवाह (एक कर्म) 'वृद्ध मनुः' के मत से ६ मास के भीतर द्वार भेद, मंडप भेद, आचार्य भेद से हो सकता है। महर्षि पराशर जी की भी सम्मति है।

कुण्डली मिलान (ग्रह मेलापक) विचार

विवाह के समय वर कन्या की कुण्डली का मिलान किया जाता है। यदि दोनों कुण्डलियों के मिलाने पर कोई दोष उत्पन्न नहीं होता तभी विवाह सम्पन्न किया जाता है। इस सम्बन्ध में प्रथम तो देखना चाहिये कि कुण्डली मंगली तो नहीं है। यदि दोनों कुण्डली मंगली हों तो विवाह शुभ होता है। कुण्डली में मंगल यदि १, ४, ७, ८, १२वें भाव में हो तो कुण्डली मंगली मानी जाती है। केवल वर की कुण्डली हो, कन्या की न हो तो विवाहोपरान्त कन्या की मृत्यु की सम्भावना रहती है। इसी प्रकार यदि कन्या की कुण्डली मंगली हो, वर की न हो तो वर की मृत्यु का भय रहता है। अतः दोनों की ही कुण्डली मंगली होनी चाहिये। अथवा दोनों कुण्डली मंगली दोष मुक्त होनी चाहिये। विशेष परिस्थितियों में मंगली परिहार के द्वारा भी विवाह किया जा सकता है। जैसे कि एक की कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२ में से जिस भाव में मंगल पड़ा हो तो दूसरे की कुण्डली के उसी भाव में शनि या अन्य पापग्रह विद्यमान हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है। **"भौमेन सदृशोभौमः पापो वा तादृशोभवेत्। विवाहः शुभदो प्रोक्तश्चिरायुः पुत्र पौत्रदः॥"** चन्द्र कुण्डली से भी इसी प्रकार विचार करके तभी विवाह करना चाहिये। इसके अतिरिक्त जैसाकि प्रचलित है, अष्टकूट परिहार भी करना आवश्यक है। यथा "वर्णोवश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रह मैत्रकम्। गणमैत्रं भकूटं च नाड़ी चैते गुणाधिकाः॥" अष्टकूट हैं। इनमें कन्या वर की राशियों के स्वामी एक ही हों अथवा दोनों में मैत्री हो तो वर्णादि प्रथम ७ भकूटों का दोष परिहार हो जाता है। परन्तु नाड़ी दोष के पहिार के लिए वर कन्या की एक राशि भिन्न नक्षत्र अथवा एक नक्षत्र भिन्न राशि होनी चाहिये। एक राशि व एक ही नक्षत्र होने पर विशेष परिस्थितियों में केवल चरणभेद से ही विवाह संभव है।

चन्द्र बल विचार

विवाहादि अनेक शुभ कर्मों में चंद्रबल का विचार अपेक्षित होता है। अतः जन्मराशि से चन्द्र राशि तक गिनने से यदि चंद्रमा १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वें स्थान पर पड़े तो शुभ है। ४, ८, १२वें स्थान का चंद्रमा अशुभ होता है जैसा कि निम्नश्लोक से स्पष्ट है- "आद्यश्चन्द्र श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके। तृतीये धन संपत्तिश्चतुर्थे कलहागमः। पंचमें ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे संपत्तिरुत्तमा। सप्तमे राजसन्मानो मरणं चाष्टमे तथा। नवमे धर्मलाभश्च दशमे मनसेप्सितम्। एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानि रेव च॥ **ताराबलः** जन्म नक्षत्र से अभीष्ट समय के नक्षत्र तक गिनकर उस संख्या में ९ से भाग दें। शेष १, २, ४, ६, ८, ० बचे तो तारा शुभ होती उससे ताराबल प्राप्त होता है। यदि ३, ५, ७ बचे तो तारा अशुभ जाननी चाहिये, उससे बल नहीं मिलता। शुक्ल पक्ष में चंद्रबल तथा कृष्ण पक्ष में तारा बल का ग्रहण करना चाहिये।

पितृपरोक्ष ज्ञान

(१) जन्म काल में यदि लग्न को चन्द्रमा न देखता हो तो पिता के परोक्ष (उस जगह पर नहीं रहते) बालक का जन्म जानना, यथा-बृहज्जातक में लिखा है "पितुर्जातः परोक्षस्य लग्न मिन्दाव पश्यति। विदेशस्थस्य चरभे मध्याद् भ्रष्टे दिवाकरे॥" (२) लग्न को चन्द्र मान देखता हो तथा सूर्य दशम स्थान से भ्रष्ट अर्थात् अष्टम, नवम, एकादश या द्वादश स्थान में चर राशि का हो तो पिता को विदेश में जानना। यदि इसी योग के रहते सूर्य स्थिर राशि में हो तो पिता को विदेश से समीप ही आया समझें। यदि सूर्य द्विस्वभाव राशि में हो तो पिता को बालक के जन्म समय मार्ग में समझें। (३) लग्न में शनैश्चर स्थित हो और लग्न को चन्द्रमा न देखता हो अथवा लग्न से सातवें मंगल हो अथवा बुध और शुक्र के बीच में चंद्रमा स्थित हो, चंद्र लग्न को न देखता हो तो इन तीनों योगों में पिता के विदेश में रहते बालक का जन्म जानें। **ग्रहों के रोगः**-अनिष्ट, निर्बल, नीच, शत्रुक्षेत्री ग्रह की महादशाऽन्तर्दशा में निम्नरोगों की सम्भावना रहती है:-

ग्रहः-	सम्भावित रोग
सूर्यः	सिरदर्द, ज्वर, महाज्वर, नेत्र विकार, हृदय रोग (हार्ट अटैक)
चन्द्रः	तिल्ली, पांडु, यकृत, कफ, उदर-विकार।
मंगलः	पित्त, वायु, कर्ण रोग, विषूचिका, रक्त विकार, चर्म रोग।
बुधः	खांसी, हृदय संबंधी कोई रोग, कुष्ठ, आंत।
गुरुः	कष्ठ रोग, गुल्मरोग, प्लीहा, फोड़ा, गुप्तांग रोग।
शुक्रः	प्रमेह, मेदवृद्धि, कर्ण रोग, वीर्य विकार, नपुंसकता, वीर्य या इन्द्रिय संबंधी रोग।
शनिः	उन्माद, बातरोग, भगन्दर, गठिया, स्नायुरोग, एक्सीडेंट।

CC-0 In Public Domain, Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राहु: अनिद्रा, उदर विकार, मस्तिष्क विकार, पागलपन।
केतु: चर्म रोग, मस्तिष्क रोग, क्षुधा जनित रोग।

ग्रहों के कारकत्व

ग्रहों के कारकत्व दो प्रकार के होते हैं (१) स्थिर कारकत्व (२) चर कारकत्व। ग्रहों के स्थिर कारकत्व तो सदा अपरिवर्तनीय हैं, परन्तु चर कारकत्व एक जन्म पत्री से दूसरी जन्म पत्री में प्राय: बदल जाते हैं।

स्थिर कारकत्व: सूर्य:-आत्मा, पिता, प्रताप, आरोग्यता, आसक्ति, लक्ष्मी, राजा शासन कार्य, नेत्र, पर्वत आदि का कारक है।
चंद्रमा: मन, बुद्धि, माता, स्त्री, चांदी, चावल, जल, राज-कृपा का कारक है।
मंगल: पराक्रम, रोग, भाई, भूमि, शत्रु, जाति, युद्ध, साहस, सेना, अग्नि, पुत्र का कारक है।
बुध: विद्या, बन्धु, विवेक, मामा, मित्र, वाणी, व्यापार, गणित, शिल्प आदि का कारक है।
गुरु: बुद्धि, विद्या, स्वास्थ्य, पुत्र, ज्ञान, शास्त्र अध्ययन, अग्रज, ब्राह्मण, दादा का कारक है।
शुक्र: स्त्री, वाहन, मकान, भूषण, काम, व्यापार, कला संगीतादि श्वेत वस्तु का कारक है।
शनि: आयु, मृत्यु का कारण, जीवन, विपत्, सम्पत्, सेवक, दु:ख, रोग का कारक है।
राहु: पितामह, गुप्तधन, प्रेत बाधा, तस्कर-व्यापार आदि का कारक है।
केतु: मातामह (नाना), गुप्तशक्ति, चर्मरोग, तंत्रविद्या, धूम्र वर्ण का कारक है।

चर कारक:-जन्मपत्री में पहले ग्रह स्पष्ट करें। उसके पश्चात ग्रहों की राशि को छोड़कर केवल उनके अंश, कला, विकलादि पर ध्यान दें। जिस ग्रह के सबसे अधिक अंश हों वह **आत्म कारक** ग्रह होता है। यदि दो ग्रहों के अधिकतम परन्तु समान अंश हों तो उनके कला विकलादिसे निर्णय करें। आत्मकारक से न्यून अंश वाला **अमात्य** कारक, उससे न्यून अंश वाला **भ्रातृकारक**, उससे कम अंश वाला **मातृकारक**, उससे कम अंश वाला **पुत्रकारक**, उससे कम अंश वाला जाति कारक तथा उससे कम अंश वाला **स्त्रीकारक** ग्रह होता है। कारकांश कुण्डली बनाने की प्रक्रिया यह है कि आत्मकारक ग्रह जिस राशि के नवांश में हो उसको कारकांश कुण्डली का लग्न मानकर सभी ग्रहों को यथास्थान रख देने से कारकांश कुण्डली बन जाती है।

अंगपीड़ा ज्ञान:-षष्ट भाव से मुख्यत: रोग, चोट, ऐक्सीडेंट, बीमारी आदि का ज्ञान होता है। छठे भाव की सूक्ष्मता को समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि कौन-कौन सी राशियां किन-किन अंगों से सम्बन्धित है। इस प्रकार छठे भाव में जो राशि होती है उससे संबंधित जातक अंग ही विशेष रूप से प्रभावित होता है। यदि छठे भाव की राशि शुभ है या शुभ ग्रह युक्त है तो वह अंग ठीक रहता है। यदि पाप या क्रूर ग्रह युक्त है तो वह अंग दुर्बल या रोग युक्त हो जाता है। इसी प्रकार अकारक षष्ठेश जब जब जिन-जिन राशियों पर जायेगा तभी उन राशियों से अंग पीड़ित होंगे। अत: नीचे राशियां तथा उनसे संबंधित अंग दिये जा रहे हैं-

क्रम सं.	राशि	संबंधित मानव अंग
१	मेष	सिर, चेहरा, मस्तिष्क, कान, नाक, ओष्ठ।
२	वृष	गर्दन, गिल्टियां, कंठ, गले का भीतरी भाग।
३	मिथुन	कंधे, हाथ, फेफड़े, रक्त, मांस, भुजाएं, हड्डियां।
४	कर्क	सीना, छाती तथा पेट, हंसली।
५	सिंह	पीठ, कमर, हृदय, रीढ़ की हड्डी।
६	कन्या	लिवर, तिल्ली, गुर्दे, पीठ की हड्डियां।
७	तुला	त्वचा
८	वृश्चिक	जननेन्द्रिय, गुह्यस्थान, जंघाएं।
९	धनु	कमर, नाड़ियां।
१०	मकर	घुटने, हड्डियों के जोड़।
११	कुम्भ	पांव, टखने, पाचन संस्थान।
१२	मीन	एड़ी, पंजा, तलवे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों से शारीरिक अंगों का अध्ययन करना चाहिये। प्रथम भाव से-मस्तक, मस्तिष्क, चेहरा। द्वि भाव से-नेत्र, वाणी, जीभ। तृतीय भाव से-हाथ, कान, कन्धे, भुजाएं, चतु. भाव से-पेट, हृदय, गुर्दा। पंचम भाव से-हृदय, पीठ, कुक्षि, मूत्राशय, गर्भाशय। षष्ठ भाव से-कमर, उदर, आंते, नाभि, गुह्य स्थान। सप्तम से: -नाभि, कमर, गुप्तांग रोग। अष्टम भाव से- गुर्दा, जननेन्द्रिय। नवम भाव से-जांघ। दशम से-घुटने, पेट, पीठ, रीढ़। एकादश से- कान, पिण्डली, पांव, गर्दन, हाथ। द्वादश भाव से-पांव की अंगुली, तलवे के रोगों का अध्ययन करें।

द्वादश भावों के नाम तथा उन से संबंधित विचारणीय विषय

(१) **प्रथम भाव के नाम:**-आत्मा, शरीर, लग्न, होरा, देह, वयु, कल्प, मूर्ति, अंग, तनु, उदय, आद्य, केंद्र, प्रथम, कष्टक, चतुष्टय।
विचारणीय विषय:-रूप, चिह्न, जाति, आयु, सुख, दु:ख, विवेक, शील, मस्तिष्क, स्वभाव, आकृति, आकार, माता-पिता की देहादि का विचार।

(२) **द्वितीय भाव के नाम:**- धन, स्व, वित्त, कोष, अर्थ, कुटुम्ब, पणफर, द्रव्य, मारक आदि।
विचारणीय विषय:- कुल, मित्र, आंख, कान, नाक, स्वर, सौंदर्य, गान, प्रेम, सुखभोग, क्रय-विक्रय, संचित पूंजी आदि।

(३) **तृतीय भाव के नाम:**- उपचय, पराक्रम, सहज, भ्रातृ, दुश्चिक्य, आपेक्लिम आदि।
विषय:-नौकर, चाकर, भाई, पराक्रम, आभूषण, दासकर्म, आयु, शौर्य, दमा, योगभ्यास आदि।

(४) **चतुर्थ भाव के नाम:**-केन्द्र, कष्टक, सुख, पाताल, तुर्य, हिबुक, गृह, सुहृद, वाहन, यान, अम्बु।
विषय:-मातृ पितृ सुख, मकान, गृह, ग्राम, चतुष्पद, वाहन, शान्ति, अन्त:करण, पेट के रोगादि।

(५) **पंचम भाव के नाम:**-पंचम, सुत, तनुज, पणफर, त्रिकोण, बुद्धि, विद्या, वाणी, आत्मज आदि।
विषय:-बुद्धि, विद्या, सन्तान, नीति, व्यवस्था, मातुल सुख, नौकरी छूटना, जठराग्नि, गर्भाशय, हाथ का यश, मूत्र पिण्ड, वस्ति, गर्भ, मंत्र साधना, हृदय, पीठ, कोख, आकस्मिक धन लाभ, पूर्व जन्म, प्रेम सम्बन्ध, मनोरंजन कार्य आदि।

(६) **षष्ठ भाव के नाम:**-रिपु, शत्रु, आपेक्लिम, उपचय, त्रिक, रोग, नष्ट आदि।
विषय:-मामा की स्थिति, शत्रु, रोग, चिन्ता, जमींदारी, गुदास्थान, ऋण, मौसी, पशु, अपयश, सौतेली मां, युद्ध, विश्वासघात, कमर, उदर, आतें, नाभि आदि।

(७) **सप्तम भाव के नाम:**-केन्द्र, मदन, सौभाग्य, जाया, जामित्र, काम, कलत्र, स्त्री आदि।
विषय:-पत्नी, पत्नी सुख, साझेदारी, विवाह समय, प्रवास, न्यायालय विवाद, मैथुन आदि।

(८) **अष्टम भाव के नाम:**-पणफर, चतुरस्त्र, त्रिक, आयु, रंध्र, मृत्यु, गुदारोग, युद्ध, सजा, दुर्घटना, बंधन, वियोग, जननेन्द्रिय, गुप्तधन, स्त्री से धन प्राप्ति आदि।

(९) **नवम भाव के नाम:**-भाग्य, धर्म, पुण्य, त्रिकोण।
विषय:-भाग्य, अधिकार, आदेश, पौत्र, धर्म, तीर्थ यात्रा, नेतृत्व, विदेश यात्रा, भाग्योदयकाल, भाग्योदय स्थान, पिता का सुख, साला, भावज, जांघ आदि।

(१०) **दशम भाव के नाम:**-कर्म, व्योम, गगन, केन्द्र, स्व, नभ, आस्पद।
विषय:-व्यवसाय, पिता का सुख, कर्म क्षेत्र, उद्योग धन्धा, नौकरी, विदेश गमन, घुटने, व्यापार आदि।

(११) **एकादश भाव के नाम:**-लाभ, आय, उत्तम, पणफर, उपचय आदि।
चिन्तन के विषय:-बड़े भाई, बड़ी बहिन, मित्र, लाभ, सम्पत्ति, विद्या, द्वितीय पत्नी, दामाद, कान, पिण्डली, पांव, भाइयों से आर्थिक सहायता आदि।

(१२) **द्वादश भाव के नाम:**-रिष्फ, व्यय, त्रिक, अंतिम, प्रान्त्य आदि।
चिन्तनीय विषय:-मोक्ष, प्रवास, व्यय, अपव्यय, घाटा, अन्तर्जातीय-विवाह, तलाक, आत्म हत्या, गुप्त विद्या, षड्यन्त्र, जेल, राजदंड, बांया नेत्र (पुरुषों का), दांया नेत्र स्त्रियों का । व्यसन, रोग, शत्रु, पैर की अंगुलियां, तलवे आदि।

मनुष्य के शरीर में नक्षत्रों की स्थिति

मनुष्य शरीर के विभिन्न भागों में २७ नक्षत्रों की प्रथक-प्रथक स्थिति ज्योतिषियों ने बताई है जो निम्न प्रकार से है:- (१) अश्विनी पांव के ऊपरी भाग में (२) भरणी पैर के तलवे में (३) कृत्तिका-शिरोभाग में (४) रोहिणी:-मस्तक में (५) मृगशिर- दोनों भौंहो में (६) आर्द्रा-दोनों आंखों में (७) पुनर्वसु: दोनों नथनों में (८) पुष्य: मुख में (९) आश्लेषा- कानों में (१०) मघा-ठोड़ी या होठों पर (११) पूर्वा फाल्गुनी: दायें हाथ में (१२) उत्तराफाल्गुनी- बायें हाथ में (१३) हस्त-अंगुलियों में (१४) चित्रा: ग्रीवा में (१५) स्वाती- वक्षस्थल में (१६) विशाखा-हृदय में (१७) अनुराधा-पेट पर (१८) ज्येष्ठा- आमाशय में (१९) मूल:- बाईं कुक्षि में (२०) पूर्वाषाढ़ा-पीठ में (२१) उत्तराषाढ़ा- रीढ़ की हड्डी में (२२) श्रवण-कमर में (२३) धनिष्ठा- गुदा में (२४) शतभिषा- दाईं जांघ में (२५) पूर्वाभाद्र-बाईं जांघ में (२६) उत्तराभा.- पिंडलियों में (२७) रेवती: टखनों में निवास करता है। जन्मकालीन या गोचरवश जब कोई क्रूर या पापी ग्रह सम्बद्ध नक्षत्र को पीड़ित करता है तब तत् सम्बन्धी शरीरांग में उस ग्रह संबंधी रोग या कष्ट उत्पन्न होता है। (भारतीय ज्योतिष)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य फल (सन् १९९७-९८ ई.)

ए.के. जैन पुत्र श्री पी.सी. जैन पोरसा वाले, ४०, लाइट मशीनरी ठाठीपुर, ग्वालियर (म.प्र.)-४७४०११

जनवरी १९९७— २ से १५ जनवरी तक फली तेल १०० मन्दी साथ में खण्डसारी, डालडा, अरण्डी तेल १५०, सुपारी ३६०, चावल १०० की मन्दी मगर जीरा ३००, ईसबगोल, चांदी २९०, पोस्तादाना २५०, मूँग में ५० की तेजी आ सकती है। वर्षा का अभाव रह सकता है। १८ से सकती है। छोटी इलायची, खोपरा, गोला २५० में १०० की मन्दी, बिनौला तेल, केशर १०००, चना ३०, चीनी में तेजी का झटका तो अरहर २५ जनवरी तक फली तेल १०० की मन्दी आ सकती है। २५ जनवरी से ३ फरवरी तक तिल तेल १५०, काबली चना १२०, अलसी तेल ६५, मसूर ४२ की मन्दी आ सकती है। २ जनवरी को सूर्य से १००, सूत शेयर्स मार्केट में अच्छी तेजी आवेगी। अरहर, सोंठ, सोना में मन्दी चलने की आशा है। २ जनवरी को सूर्य से वक्री R बुध से Inferior Conjunction युति से, सरसों, अरहर, मटर, मसूर+चना में अच्छी तेजी आने की आशा है। **व्यापार में लाभ-हानि की कभी भी जिम्मेदारी नहीं होगी।** १९ जनवरी को सूर्य-गुरु युति से आगे जीरा, हल्दी, धनिया, सुपाड़ी में भारी तेजी, चीनी, गुड़ में २-३ महीने में अच्छी तेजी हो सकती है।

नोट : २३.१.९७ के १५ दिन पूर्व से ५ दिन बाद तक तेल में मंदी बने तो आगे डेढ़ महीने में जोरदार तेजी तेलों में आएगी।

फरवरी १९९७— २३ जनवरी से फरवरी तक फली तेल १५०-२२० की जोरदार तेजी इसके साथ-साथ ग्वार १००, बिनौला तेल १००, चाँदी २५०, चना ६१-८१, शेयर मार्केट में तेजी, गुड़ ३०, बोरिक एसिड ५०० की भड़कती तेजी आवेगी। जबकि अजवाइन, सोंठ, जीरा, खोपरा १०० की एक झटकेदार मंदी की आशा है। १ से १२ फरवरी तक गुड़ ७०, गेहूँ ३६, चाँदी १५०, सोना में ६१, काली मिर्च ३००, हल्दी १००, शेयर Acc २८५ की झड़पी तेजी आ सकती है। मगर खाद्य तेल ११०, तिल तेल में ७ से १२ फरवरी तक एक मंदी का झटका लग सकता है। सन् १९९७ में सुपाड़ी, चना, चीनी, चाय, सरसों, बिनौला, अमचूर, ताँबा, पीतल में भारी घटाबढ़ी से कभी-कभी जोरदार तेजी चल सकती है। **व्यापार में जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।** सन् १९९७ का वर्ष भयंकर घटा-बढ़ी का है अतः तेजी-मंदी के लेख पुस्तकों में पढ़कर जानते रहें।

मार्च १९९७—७ से ११ मार्च तक फली तेल ६१, चना ६१, गुड़ ६५, अरहर भी तेज, साथ जीरा में २५०-५०० की भड़कती तेजी आ सकती है तो ११ से २३.३.९७ तक खाद्य तेलों में १५० की जोरदार मन्दी का धमाका मगर अरण्ड तेल १२०, जीरा २०५, पोस्तादाना में ४०५ की तेजी, बादाम १५०, सूत में तेजी आ सकती है। पानी, वर्षा, बादल से मौसम बिगड़ सकता है। २३ मार्च से ५ अप्रैल तक Acc शेयर १९१, टेल्को ९०, ICIC। शेयर २० की तेजी, सरसों में मंदी होकर अचानक अच्छी तेजी आ सकती है। मैदा, मैथी, छोटी इलायची, चना, लाल मिर्च, धनियाँ में अच्छी तेजी आ सकती है। ११ मार्च को सूर्य-बुध की Superior युति से ५-७ दिन पहले व बाद में रिफाइन्ड तेल, डालडा, सरसों, मसूर में मन्दी नीचे भाव होने के बाद महीने, डेढ़ महीने में जीरा, हल्दी, धनियाँ, सुपारी, सरसों, मसूर, मटर, गुड़, चीनी में जबरदस्त तेजी चल सकती है। बाजार रुख Trend देखकर ही व्यापार करें। १७ मार्च से मंगल वक्री का सूर्य से इनफेरियर युति से आगे तेजी की आशा है। ८ अप्रैल, मंगलवार को नया सम्वत् २०५४ चालू होने से गुड़, चीनी, चना, चाय में जोरदार घटा बढ़ी चल सकती है।

अप्रैल १९९७— २ से ११ अप्रैल तक तिल तेल, अरण्ड में प्रचण्ड तेजी, चना ५५-१११, डालडा, खोपरा, नारियल, सूत में तेजी। गुड़, मिर्ची, चावल, चाँदी में अच्छी तेजी, किशमिश ६०५ की तेजी तो केशर में १००० की झटकेदार मन्दी आ सकती है। ९ मार्च से ११ अप्रैल के मध्य खोपरा, गोला में २५०-५५० की भड़कती तेजी आ सकती है। ११ से १८ अप्रैल तक हल्दी, काली मिर्च ४५०, सौंठ, देशी घी ६५-१००, उड़द २५-१९१ की भड़कती तेजी, बड़ी इलायची में ३०६ की अच्छी तेजी तो चना, अरहर, मसूर, जीरा, गुड़ में मन्दी आ सकती है। १७ से ३० अप्रैल तक चना, फली तेल, उड़द ३०, काली मिर्च ३५०, चाँदी २००, जीरा २५० की, सरसों की ९०-१९९ की भड़कती तेजी आ सकती है। २ अप्रैल को सूर्य-शुक्र की सुपीरियर युति होगी। **सावधानी से व्यापार करें।** २५ अप्रैल को सूर्य-बुध इनफेरियर युति से ११ दिन पहले व बाद, तिलहन, खांड, किराना में अच्छी तेजी चल सकती है। २९.४.९७ (२३.०.१२८) १ मई, १९९७ से १५-२५ दिन पूर्व से तेलों में तेजी तो १५-२० मई तक अरहर+तेलों में मंदी में जो नीचा बने आगे डेढ़ महीने में चना, सरसों, अरहर में अच्छी तेजी आ सकती है।

मई १९९७— २ से ३० मई तक फली तेल में ३९९ की भड़कती तेजी आ सकती है। मगर २ से २१ मई तक तिल तेल २५०-३६० की तेजी, सरसों ९९-१४०, अरण्ड में ७० की तेजी आ सकती है। ३ से १५ मई तक चना ७०-१५०, मसूर ६३, उड़द ५०, मक्का ७०, ज्वार में ४५ तेजी आवेगी। धनियाँ १५०, सौंठ ४००, मूँग ७७, जीरा ३६० की जोरदार तेजी आवेगी। इसके अलावा चावल ७०, नारियल तेल (Coconut Oil), छोटी इलायची ७० तेजी आ सकती है। गेहूँ में मन्दी चल सकती है। मगर रुई १६०, इमली २७, सोयाबीन में ८१ की तेजी चल सकती है। २१ से ३१ मई तक चीनी ७०, मसूर ११०, ज्वार, मक्का ४५, रुई (Cotton) में २०० की तेजी आवेगी। दान, पुण्य, धर्म करने पर ही व्यापार में लाभ संभव है। ३१ जनवरी शनिवार को स्वाति नक्षत्र से गुड़-खाण्ड, चीनी, कालीमिर्च, धनियाँ, जीरा, हल्दी में आगें भयंकर तेजी चल सकती है। चाँदी में २.२.९७ तक, १५-२० पूर्व से तेजी आकर TOP भाव बने हैं तो आगे चाँदी में मन्दी अन्यथा तेजी आवेगी। २१.१०.९७ व १८.८.९८ मंगलवार आर्द्रा नक्षत्र से चना, अरहर, सरसों, फली तेल में ७-१६ दिन अच्छी तेजी चलने की आशा है। फिर जिधर चले उधर का व्यापार करें।

जून १९९७— १ से १८ जून तक खाद्य तेलों में १५०-२०० की भड़कती तेजी, सरसों ४५, हल्दी २०५, Acc शेयर ५००, चना ८१, चीनी ३६, मसूर ७०, मटर ६३, बिनोला तेल ८१, डालडा १०, ज्वार ५०, चाँदी १२५ की तेजी चल सकती है। साथ में गुड़ ७०, जीरा ७००, सोयाबीन तेल १६०, मेथी ४०० की तेजी चलेगी। २१ जून से १ जुलाई तक चीनी में ७० तेजी, लाल मिर्च २५० मन्दी, शेयरों में मन्दी चल सकती है। २५ जून को सूर्य-बुध सुपरियर युति से चाँदी, रुई १०-१५ दिन पूर्व से मंदी का धमाका होगा या फिर तेलों में महीने के नीचे Lowest भाव होकर आगे कभी डेढ़ महीने सरसों ९९-१९९ की भड़कती तेजी आ सकती है। १ जून रविवार को रेवती नक्षत्र होने से धनियाँ, हल्दी, जीरा, अजवाइन, सोना में जोरदार तेजी चल सकती है।

जुलाई १९९७— २ से १० जुलाई तक चीनी ६५ तेजी, चावल ५०, गुड़ ७०, जौ ६५ तेजी तो सोयाबीन ७०, सरसों ७५, तिल तेल १५०, मूँग, मसूर, उड़द में मंदी आवेगी। ९ से ३० जुलाई तक फली तेल १५०-२५० की भड़कती तेजी आवेगी। ९ से ३० जुलाई तक चीनी १५०, ग्वार १००, गेहूँ २५, तिल ५०, बिनौला ७०, उड़द, मसूर में तेजी चल सकती है। २० जुलाई को रविवारी अषाढ़ पूर्णिमा है।

अगस्त १९९७— १ से १६ अगस्त तक गेहूँ १५, मैदा २५, देशी घी १५०, टीन, सोयाबीन तेल में झड़पी तेजी चलेगी। इसके अलावा तांबा, पीतल, काबली चना, शेयर्स मार्केट में अच्छी तेजी चलने की आशा है। ९ से १८ अगस्त तक फली तेल १८० की तेजी तो बाद में मंदी आवेगी। मगर देसी घी, तिल तेल, मटर, लौंग, इलाइची, चना, राजमा, सुपारी में जोरदार तेजी चलने की आशा है। **व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी कभी भी किसी प्रकार की नहीं होगी।** ३१ अगस्त को सूर्य से वक्री बुध की Inferior Conjunction युति होने से, धनियाँ, सरसों, चना, अजवाइन, जीरा में भारी तेजी चल सकती है। पानी, वर्षा की कमी हो सकती है। ९ अगस्त को वक्री गुरु R की सूर्य ग्रह से प्रतियोग, चना, चाँदी, जीरा, चाय में अच्छी तेजी चल सकती है। शायद चीनी, गुड़ शेयर्स मार्केट में तूफानी कोई चाल होगी। बाजार रुख Trend देखकर ही व्यापार करें। २२.८.९७ को रेवती नक्षत्र शुक्रवार को होने से शेयर्स मार्केट टोप भाव वाली तेजी हो तो बेचें, धनिया, अजवाइन, अमचूर, हल्दी, सरसों में तेजी जोरदार चल सकती है। **हमेशा सावधानी से व्यापार करें।**

सितम्बर १९९७— १ से १५ सितम्बर तक चीनी ६५, धनियाँ ३६०, देशी घी, टीन १५०, हल्दी ९९, अमचूर, बड़ी इलायची इत्यादि में तेजी साथ पानी वर्षा की कमी के समाचार यत्र-तत्र सुनने को मिल सकते हैं। मगर ९ से २७ सितम्बर तक बाजरा, मूँग, उड़द, ज्वार, तिल में मंदी का धड़ाका, तो शेयर्स मार्केट में तेजी आवेगी। २५ सितम्बर से ११ अक्टूबर तक सरसों, फली तेल, सोयाबीन तेलों में मंदी मगर मसूर, चना, मटर+इमली, धनिया, जीरा में अच्छी तेजी का जोर पकड़ सकती हैं। १५ सितम्बर से २० अक्टूबर के मध्य सोयाबीन, तिल, फली तेल इत्यादि का फसल के आवक होने से मंदी १५-२५ दिन में मंदी बने तब तिल व सोयाबीन खरीदें, एक-डेढ़ महीने जब अच्छी तेजी आ जावे तब बेच कर नफा (Profit) लेना ही ठीक प्रतीत होता है। १६ सितम्बर मंगलवार भाद्रपद पूर्णिमा है।

अक्टूबर १९९७— १ से ११ अक्टूबर तक शेयर्स मार्केट में तेजी, साथ में गेहूँ, चावल, चीनी में तेजी आकर बाद में चीनी, गुड़ में मन्दी आवेगी। १ से २३ अक्टूबर तक मोम, पैराफीन, पोस्तादाना ७०, पिपरमेंट ७०, पारा २५०, किशमिस ५०६, सोना ६५ की तेजी आ सकती है। १३.१०.९७ को सूर्य-बुध की Superior Conjunction युक्ति से आगे एक-डेढ़ महीने में तिल ३६०, सरसों ९९, बिनोला तेल २९९ की भड़कती तेजी आ सकती है। ३० अक्टूबर गुरुवारी दीपावली एक-दो महीने में अच्छी तेजी होकर जनवरी-फरवरी १९९८ में भीषण मंदी तेलों में चल सकती है।

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवम्बर १९९७—१ से १६ नवम्बर तक तिल १५०-३६० की भड़कती तेजी, साथ में सरसों, सोयाबीन, फली तेल, अरण्डी तेल Castor Oil में भड़कती तेजी आवेगीं। मगर इसके अलावा चाँदी, सोना १५० की तेजी, Acc शेयर ६०५ की तेजी व पिपरमेन्ट, नारियल, देशी घी में जोरदार तेजी आ सकती है। **व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।** बाजार रुख Trend देखकर ही व्यापार करें। २१ से ३० नवम्बर तक तेलों में मन्दी, मगर गेहूँ, राजमा १५०, मसूर ९९, चना १६०, मूँग, मटर में अच्छी तेजी आ सकती है। वर्षा की कमी हो सकती है। चाँदी, सोने में तेजी हो सकती है।

दिसम्बर १९९७—१ से १५ दिसम्बर तक सरसों, तिल-फली, बिनौला, कलौंजी, पिस्ता में रिकार्ड तेजी, इसके साथ-साथ गेहूँ, मैदा, चना, ज्वार, बाजरा में अच्छी तेजी तो १६ या ३० दिसम्बर से २७ जनवरी, १९९८ के मध्य सरसों, फली तेल, बिनौला, सोयाबीन, अलसी इत्यादि में जोरदार मन्दी का धमाका, साथ में पानी वर्षा इत्यादि अच्छी होने से फसल पैदावार अच्छी की उम्मीद बढ़ने से तिलहन Oil & Oil Seeds में धमाके की मंदी चल सकती है। **बाजार रुख देखकर ही व्यापार करें।** १७ दिसम्बर की सूर्य-बुध की Interior युति होने से पानी वर्षा हो जाने से फसलों की अच्छी पैदावार समाचारों से आगे २-३ महीने में सरसों-विनौला में भयंकर मंदी चल सकती है।

जनवरी १९९८—१ से १५ जनवरी, १९९८ तक चावल ७०, मोठ २०५, फली तेल, विनौला तेल, तिल तेल २५० की भड़कती तेजी, साथ ग्वार में १०५ की जोरदार तेजी आ सकती है। मगर देसी घी में भारी मन्दी ५ फरवरी, १९९८ मन्दी घी में चल सकती है। २१ दिसम्बर, १९९७ से ७ फरवरी, १९९८ तक रुई Cotton १५०-४०५ की भड़कती तेजी साथ में पिपरमेंट, पारा, मोम, जस्ता, ताँबा, मूँग में अच्छी तेजी चल सकती है। १५ दिसम्बर, १९९७ से २१ जनवरी, १९९८ तक जौ १५०, चावल, तिलतैल, चना, मसूर, गुड़ में १५-१८ दिन की एक तेजी चल सकती है। चाँदी, सोना, सरसों में जनवरी १९९८ में एक बार जोरदार मन्दी चल सकती है। **व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।** पानी, बादल, वर्षा हो सकती है। १६ जनवरी, १९९८ को वक्री शुक्र से सूर्य से इनफेरियर युति होने से बादल वर्षा फलों, तिलहन के उत्तम पैदावार मगर ज्वार-चाँदी में तेजी चल सकती है।

फरवरी १९९८—२७ जनवरी से १८ फरवरी तक चावल, पारा २५०, महुवा तेल २०५, गुड़, चना, उड़द, मूँग, ज्वार में भड़कती तेजी चल सकती है। सोना, चाँदी, तेलों में मन्दी चलने की आशा है। २१ फरवरी से २१ मार्च १९९८ तक काबली चना, चाँदी, गुड़, चीनी, कालीमिर्च में अच्छी तेजी चल सकती है। २२ फरवरी को सूर्य-बुध की Superior Conjunction युति से, रुई, अरण्ड, शेयर्स मार्केट में अच्छी तेजी चल सकती है। आज ही सूर्य-बुध युति होने से चाँदी, क्लोरिक, गुड़, खांड के बाजार १५-४१ दिन में विशेष प्रभावित होंगे। २६ फरवरी गुरुवार को पूर्ण सूर्य ग्रहण जब बुध+गुरु अस्त काल में ग्रहण का होना, कोई विशेष घटना चक्र होने से बाजारों में भारी उथल-पुथल हो सकती है। सही तो ईश्वर जानें। शायद तेलों में नीचे भाव और चाँदी, सोना में जनवरी या फरवरी के मन्दी में अच्छी तेजी हो सकती है।

मार्च १९९८—१ से २१ मार्च तक गुड़, मूँग, उड़द, ज्वार १००, पारा ४०५, लाल मिर्च में अच्छी तेजी आ सकती है। १९ मार्च से ७ अप्रैल तक गुड़, सरसों, फली तेल में तेजी आने पर बेचें। **व्यापार में जिम्मेदारी नहीं होगी।** सरसों मार्च १९९६ में १००० करीब भाव बने, सन् १९९७ तक कभी भी १६०२-१९९९ के भाव होकर फिर सन् २७.३.९९ तक वापिस भयंकर मन्दी में ९९९ के भाव रह सकते हैं। १२ फरवरी १९९४ को चना १८०० टॉप भाव बने फिर वापिस घटकर दिसम्बर ९५ तक ६००-६५० रह गए। मार्च, अप्रैल १९९६ में फिर ९५०-१००० के भाव हुए अब ९०० के करीब भाव चल रहे हैं। १५.८.९७ से १५ सितम्बर १९९८ के मध्य चना में भयंकर तेजी हो सकती है। चना ९०० वाला १५००-१६०० या १८९९ का भाव काटे तो १९९९-२०९९ के भाव हो सकते हैं। सही भगवान् जानें। १९९६+९७ में किराणा मार्केट कुछ जिन्सों में तूफानी तेजी आ सकती है। सन् १९९७+९८ में रुई Cotton, चीनी में अच्छी तेजी चल सकती है। लाल मिर्ची ६०००-७००० वाली १५.३.९८ तक घटकर ११००-१६९९ के भाव रह सकते हैं। ११ अक्टूबर से ११ दिसम्बर, १९९६ तक शेयर में तेजी के टॉप भाव बने तब तो आगे मंदी समझना, यदि ११ दिसम्बर, १९९६ तक नीचे भाव बनें तो आगे जून १९९७ तक शेयर्स मार्केट में अच्छी तेजी आवेगी। चाँदी, सोना में १४.११.९६ से २५ दिन पहले ७-११ दिन बाद अच्छी तेजी। ५.२.९७ से ११-१५ दिन पहले व बाद चाँदी, सोना में तेजी ५ सितम्बर १९९७ तेजी चल सकती है। बाजार रुख देखकर व्यापार करें। या उस समय पत्र द्वारा जानकारी लें। ३.१०.९७ से चाँदी-सोना में मंदी चल सकती है। जीरा ७० रुपए Kg वाला १९९७-९८ के अन्दर १३० या १६० बिक सकता है। शेयर Acc जो २.४.९२ को १० हजार के भाव थे वो जून १९९३ को १५९० के भाव होकर जून १९९६ में ५ पर ३ बोनस मिलने पर ३८०० से घट कर ३.७.९६ को २४०० के करीब भाव थे जुलाई १९९७ तक मध्यम तेजी तो ३० जनवरी, १९९८ से २० अप्रैल, १९९९ के मध्यम शेयर भयंकर तेजी में २४०० वाला Acc ५४००, ७००० हो सकते हैं। **जिम्मेदारी नहीं होगी।**

ॐ नमः सिद्धोभ्य:

व्यापार दिग्दर्शन वैज्ञानिक अनुसंधान पर जनवरी १९९७ से जून १९९८

(१८ महीने की तेजी-मंदी लाइनें)

पुस्तक मूल्य ८३ रु., डाकखर्च करीब ७ रु., रियायती मूल्य डाक साहित ८७ रु.

यह पुस्तक ग्राफ्फीकल पद्धति से सरसों, फली तेल, सोना-चाँदी+शेर्यस+किराना मार्केट, गुड़, खांड इत्यादि की इकतरफा तेजी-मंदी के चांस लिखे गए हैं। ११ या २७ दिन के उल्लेखनीय घटाबढ़ी के प्राय: चांस पुस्तक में छपे है। **व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।** सन् १९९७+९८ में चीनी+किराना+चना+सरसों में बड़ी जबरदस्त घटाबढ़ी चलने की आशा है। कुछ वस्तुओं के कब ऊँचे भाव बनेंगे, कब नीचे भाव बनेंगे, एक अनुमान ही बताया गया है। किन वस्तुओं के व्यापार करने से लाभ मिलेगा का अनुमान पुस्तक में विवरण देने का प्रयास करेंगे। व्यापार करने के तरीके सरल भाषा में बताएगें। V.P.P. नहीं होगी। मनीआर्डर फार्म के संदेश भेजने के स्थान, पूरा नाम, पता अवश्य लिखें।

१ श्रीमती चम्पादेवी जैन W/o श्री पी.सी. जैन पोरसा वाले C/o जादवानी का मकान, काली भाई, संतर मुरार Morar, ग्वालियर (म.प्र.) ४७४००६

(२) अखिलेश कुमार जैन S/o पी.सी. जैन पोरसा वाले C/o अशोक मेडीकल स्टोर, तेलीवाड़े के सामने ग्वालियर रोड, भिंड Bhind. (M.P.) ४७७००१

S.T.D. ०७५३४ दूरभाष : पी.पी. ३४०६७ भिंड

ज्योतिष महासम्मेलन सम्पन्न

ता. २२.९.९६ से २४.९.९६ को अखिल भारतीय सरस्वती ज्योतिष मंच के संस्थापक पंडित "राजीव शर्मा" (जालंधर) एवम् मैत्री-मंत्र, दिल्ली के महासचिव दीपक मेहरा के संयुक्त प्रयास के सुपरिणामस्वरूप महेन्द्रा पार्क, रानी बाग, दिल्ली-११००३४ में ज्योतिष महासम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसका संयोजन "पंडित एन.के. शर्मा, प्रधान-अखिल भारतीय सरस्वती ज्योतिष मंच (दिल्ली)" ने किया था। सम्मेलन की अध्यक्षता अहमदाबाद के "मोहन भाई पटेल" ने की। इस विशिष्ट ज्योतिष सम्मेलन में गोटे गाँव (मध्यप्रदेश) के धर्म नारायण तिवारी, भिलाई के "विजय कांत भट्ठ", गंगा नगर के "सत्य प्रकाश गोयल", कलकत्ता के "राम किशन तिवारी", पुणे के पंडित "किसन लाल शर्मा", धुले महाराष्ट्र के "ए.आर. तारखेड़कर" वास्तुशास्त्री, शिमला से "अमर गौतम", विदिशा (मध्यप्रदेश) से "एम.पी. सिंह", हॉलैंड से पंडित "सुरेश तिवारी", "आचार्य प्रभाकर मिश्र, उप-कुलपति-दरभंगा विश्वविद्यालय, भोपाल से "धनीराम शर्मा, बनाओ भविष्य के सम्पादक" और बृजभूषण सिंह के साथ-साथ मंदनलाल राजस्थानी, डॉ. भारतभूषण, डॉ. विनायकपाल, एस.पी. पाहवा, डॉ. एच.के. दयाल तथा दिल्ली के प्रमुख विद्वान ज्योतिषी उपस्थित थे। अरूण बंसल (फ्यूचर प्वाइंट) ने भी, जिन्होंने ज्योतिषय गणना को कम्प्यूटर द्वारा काफी आसान किया है और जो कि ज्योतिष-जगत में किया गया एक सराहनीय काम है, सम्मेलन में अपनी उपस्थिती दर्ज कराई। पंडित कृष्ण अशांत, बृज मोहन सेंखड़ी (दिल्ली), ओमप्रकाश शास्त्री (जालंधर), सुरेन्द्र चोपड़ा (अम्बाला) ने लाल किताब के कुछ अनुसुलझे प्रश्नों के सरल भाषा में जनता को उत्तर दिये। कैलाशचन्द्र शर्मा की पुस्तक "वर-वधू मिलापक" तथा पंडित किसन लाल शर्मा (पुणे) की पुस्तक "काल सर्प योग" को काफी सराहा गया। जिसका विमोचन इंदौर, श्री बर्फानी धाम के महाराज जी ने किया। मंच-संचालन दिल्ली के डॉ. मौदगिल ने नयी तंकनीक के साथ जनता को परोसा और उनमुक्त कंठ से प्रशंसा हुई। २२ से २४ सितम्बर, १९९६ के सम्मेलन में नयी सड़क दिल्ली के "**धर्मसन प्रकाशन**" के संस्थापक लाला धर्मपाल गुप्ता जी ने धर्म की पताका को फहराते हुये ज्योतिर्विदों को अपने प्रकाशन के पंचांग एवं जंत्रीय वितरित कीं।

—*संयोजक एवं प्रधान (दिल्ली)*

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सं. २०५४ वि. सन् १९९७-९८ ई. का चन्द्रदर्शन भविष्य विवेचन

खगोलवेत्ता ज्योतिषाचार्य— पं॰ शंकरलाल गौड़ ॥ शंभु कवि ॥

(सम्पादक — पंचांग, जंत्री, कालदर्शक, दैनन्दिनी आदि)

चैत्र (अप्रैल) १९९७ ई. — संवत् २०५४ वि॰ चैत्र शुक्ल १ मंगलवार दिनांक ८ अप्रैल सन् १९९७ ई॰ को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग से दिखाई देगा। फलस्वरूप गेहूँ, चना, मटर, प्रियंगु, उड़द, मसूर के भाव गिर जाते हैं। किशमिश, छुहारा, घी, तेल, लाहा पर एकदम तेजी होती है। अरण्डी, बिनौला, सींगदाना, वेजीटेबल के भाव कुछ गिर जाते हैं। प्रान्तीय मंत्रिमंडल में परिवर्तन होता है। जनता तथा शासन में कहीं-कहीं मतभेद दिखाई देता है। ऐसा फलित ग्रन्थों से स्पष्ट है।

वैशाख (मई) — संवत् २०५४ वि॰ वैशाख शुक्ल २ गुरुवार दिनांक ८ मई सन् १९९७ ई॰ को चन्द्रदर्शन सम शृंग से होगा। जिसका फल विशेष उत्तम है। भारत का सम्मान विश्व में बढ़ेगा। केन्द्रीय मंत्रिमंडल में समय-समय पर हंगामे होते रहेंगे। शासन तथा प्रजा में मतभेद भी हो सकता है। सरसों, सोयाबीन, चना, उड़द, मोंठ, मसूर के भाव गिर जाते हैं। जीरा, धनियाँ, हींग, हल्दी, कवल गहा, गूगल पर अच्छी तेजी होती है। अंधड़, तूफानादि के योग मासान्त में हैं।

ज्येष्ठ (जून) — संवत् २०५४ वि॰ ज्येष्ठ शुक्ल १ शुक्रवार दिनांक ६ जून सन् १९९७ ई॰ को चन्द्रमा का उदय उत्तर शृंग से हो रहा है। अतः शासन तथा प्रजा में मतभेद तथा कूटनीतियाँ अपनाई जायेंगी। प्रान्तीय मंत्रिमंडलों में हंगामे, तोड़-फोड़ वारदातें होती हैं। सोना, चाँदी, स्टील, ताम्बा धातुवाने में सस्तापन होता है। किराना वस्तुएँ विशेषतः जीरा, धनियाँ, काली मिर्च, हींग, हल्दी पर अच्छी तेजी होती है। घी, तेल पर भीषण तेजी होती है। राम जन्मभूमि विवाद पुनः उठ सकता है। कहीं-कहीं तोड़-फोड़ वारदातें हो सकती हैं।

आषाढ़ (जुलाई) — संवत् २०५४ वि॰ आषाढ़ शुक्ल २ रविवार दिनांक ६ जुलाई १९९७ ई॰ को चन्द्रोदय उत्तर शृंग से होगा। इस प्रकार का चन्द्रोदय राष्ट्र में भारी विपत्ति का सूचक है। संभवतः सीमा विवाद उत्पन्न हो सकता है। रुई, कपास, ऊन पर सस्तापन हो सकता है। ऐरण्डा, सींगदाना, गेहूँ, चना, उड़द, मोंठ, मसूर पर कुछ तेजी हो सकती है। पूर्व उत्तर में आकस्मिक हलचल हो सकती है। जिससे सरकार कुछ असमंजस में पड़ जावे।

श्रावण (अगस्त) — संवत् २०५४ वि॰ श्रावण शुक्ल २ मंगलवार दिनांक ५ अगस्त सन् १९९७ ई॰ को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से होगा। रुई, कपास, ऊन, तिली, जौ, चावल, मूंग, मसूर, मोंठ पर अच्छी तेजी होती है। काश्मीर, पंजाब में आतंकवादियों का प्रायः सफाया ही समझना चाहिये। धातुवाने सोना, चाँदी, ताम्बा, स्टील पर तेजी हो। धान्य पर पुनः तेजी आ सकती है। अतः व्यापारी वर्ग लाभ उठा सकता है।

भाद्रपद (सितम्बर) — संवत् २०५४ वि॰ भाद्रपद शुक्ल २ बुधवार दिनांक ३ सितम्बर सन् १९९७ ई॰ को चन्द्रोदय उत्तर शृंग से हो रहा है। जो मार्केट में उतार-चढ़ाव करता है। जनता में खुशी की लहर दौड़ जाती है। गेहूँ, चना, मटर, मोंठ, मसूर, उड़द पर अच्छी तेजी दिखाई देती है। धातुवाने सोना, चाँदी, ताम्बा, स्टील, पीतल के भाव शीघ्र ही गिर जाते हैं। कागज, स्टेशनरी का सामान तेज हो।

आश्विन (अक्टूबर) — संवत् २०५४ वि॰ आश्विन शुक्ल २ शुक्रवार दिनांक ३ अक्टूबर सन् १९९७ ई॰ को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। जो धान्य-धातुवाने पर सामान्य रूप से अच्छी तेजी करने वाला है। रुई, कपास, ऊन, सूती वस्त्रों पर भी अच्छी तेजी आती है। काष्ठ, कोयला, मिट्टी का तेल, कागज, स्टेशनरी का सामान कुछ मंदी की ओर जाता है। चीनी, गुड़ पर तेजी होती है।

कार्तिक (नवम्बर) — संवत् २०५४ वि॰ कार्तिक शुक्ल २ रविवार दिनांक २ नवम्बर सन् १९९७ ई॰ को अनुराधा नक्षत्र में चन्द्रमा का उदय कुछ घटा-बढ़ी के साथ बाजार चलाता है। सामान्यतः, गेहूँ, चना, मटर, सरसों, तिल, घी, तेल, चावल, सोना, चाँदी, ताम्बा, स्टील, किशमिश, छुहारा, चिरोंजी, मखाने, बादाम पर घोर तेजी आती है। खड़ी फसल में हानि हो सकती है। केन्द्रीय मंत्रिमंडल में विभागीय परिवर्तन हो।

मार्गशीर्ष (दिसम्बर) — संवत् २०५४ वि॰ मार्गशीर्ष शुक्ल १ सोमवार दिनांक १ दिसम्बर सन् १९९७ ई॰ को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। जो सुभिक्ष का सूचक है। सुभिक्ष के संचार से जनता सुखी हो। रुई, कपास, ऊन, काष्ठ, कोयला, मिट्टी तेल, सरसों का तेल आदि पर भीषण तेजी आती है। गेहूँ, चावल, चना, जौ, मटर, घी, तेल, उड़द, मोंठ, स्टेशनरी के सामान में तेजी हो।

पौष (जनवरी) — संवत् २०५४ वि॰ पौष शुक्ल २ बुधवार दिनांक ३१ दिसम्बर सन् १९९७ ई॰ को चन्द्रोदय उत्तर शृंग से हो रहा है। इस दिन का चन्द्रदर्शन रुई पर एकदम तेजी लाने वाला है। शीताधिक्य, वायु संचार, कहीं-कहीं उपलवृष्टि भी प्रायः हो जाया करती है। गुड़, तेल सरसों में अच्छी तेजी आती है। गेहूँ, चना, मटर, उड़द, मोंठ, उड़द के भाव भी कुछ बढ़ जाते हैं अतः गल्ले के व्यापारी इस समय लाभ उठा सकते हैं।

माघ (फरवरी) — संवत् २०५४ वि॰ माघ शुक्ल १ गुरुवार दिनाक २९ जनवरी सन् १९९८ ई॰ को चन्द्रदर्शन सम शृंग से हो रहा है। ऐसी आकृति वाला चन्द्रमा सोना, चाँदी में घटा-बढ़ी करता है। रुई, सूत, ऊन, सरसों, तिलहन में भीषण तेजी का योग बन रहा है। घी, तेल, काष्ठ, कोयला, मिट्टी के तेल के भाव बढ़ जाते हैं। प्राकृतिक प्रकोप संभव है।

फाल्गुन (मार्च) — संवत् २०५४ वि॰ फाल्गुन शुक्ल २ शनिवार दिनांक २८ फरवरी सन् १९९८ ई॰ को चन्द्रोदय दक्षिण शृंग से हो रहा है जिसका फल व्यापार पर विलक्षण प्रभाव दिखायेगा। तिल, तेल, सरसों, चाँदी, सोना, स्टील, ऊन पर भीषण तेजी होती है। प्रजा को कष्ट, प्राकृतिक प्रकोप से फसल नष्ट होती है। रुई, कपास के भाव भी चढ़ जाते हैं। गुड़, खाण्ड, हींग, हल्दी, सोंठ, कपूर, कचूर, खेर, कत्था के भाव गिर जाते हैं।

व्यापारिक भविष्य जानने के लिए सम्पर्क करें, फीस डाक व्यय सहित मनीआर्डर से भेजें
वार्षिक १००१ रु॰, षट्मासिक ५०१ रु॰, त्रैमासिक २५१ रु॰, मासिक १२५ रु॰, डाक व्यय २५ रु॰
पता — ज्योतिषाचार्य पं॰ शंकरलाल गौड़, दूरा, आगरा (उ॰प्र॰)

ज्योतिष, आयुर्वेद, साहित्य, धर्मशास्त्र, मंत्र विज्ञान की लोकप्रिय पत्रिका **शंकर भारती**
एक प्रति १० रु॰, वार्षिक मूल्य ३० रु॰ पठनीय श्रेष्ठ पत्रिका आज ही मंगाईये।
सीमित संख्या में छपती है। शीघ्रता करें।
पता — व्यवस्थापक, शंकर भारती, ब्रजबाबापथ, दूरा, आगरा (उ॰प्र॰)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

धन प्रदायक कहे जाते हैं वैदिक यंत्र

पं. केवल आनन्द जोशी, ज्योतिष स्तम्भकार-राष्ट्रीय सहारा, नवभारत टाईम्स, सांध्य टाईम्स

भारतीय धर्मशास्त्रों में प्राचीन काल से ही सद्गृहस्थों के लाभार्थ विशिष्ट प्रकार के तंत्र-मंत्र एवं यंत्रों का अनुसंधान और अनुशीलन करने की विशद चर्चाएँ उल्लिखित हैं। वैदिक युग के आर्यावत काल में देवासुर संग्राम के दौरान भगवान दत्तात्रेय (ब्रह्माजी) ने अपने वैज्ञानिक मस्तिष्क से सृष्टि के क्रम को चलाए रखने के लिए अनेक शस्त्र-शास्त्र और यंत्र-मंत्रों का सृजन किया वहीं मानव सहित देवता, यक्ष, किन्नर एवं ऋषि-मुनियों तथा साधक गणों को उनकी बुद्धि एवं भक्ति की शक्ति की जाँच परख कर उनके युक्ति युक्त मार्गदर्शक करने हेतु कुछ प्रमुख यंत्रों को उपहार भी दिए। कालान्तर में ये यंत्र प्रकृति की उथल-पुथल में लुप्त हो गये और समयानुसार सभ्यताएँ भी युगों के प्रभाव में पनपती और नष्ट होती रही हैं। यह प्रसन्नता की बात है कि आज के युग में जब शिक्षा और विज्ञान ने यथेष्ट प्रगति कर ली है तो पुरातत्व के महत्व को समझने में भी बेहद सहायता मिली है। अतीत के गर्त में डूबी बहुत सी दुर्लभ चमत्कारी शक्तियाँ आज प्रकाश में आने लगी हैं। इन्हीं दुर्लभ प्राकृत सम्पदाओं में यंत्रों के विशिष्ट प्रभाव पर भी अनेक शताब्दियों से अनुसंधान और अनुशीलन हुआ जिनमें कई प्रमुख यंत्रों का रेखांकन आकार और निहित तंत्र-मंत्रों का भण्डार भी बुद्धिजीवियों के हाथ लगा है। वैसे तो कितने यंत्र भगवान श्री दत्तात्रेय ने बनाये। इसकी निश्चित संख्या ज्ञात नहीं है, पर जो कुछ भी यंत्र-शास्त्र के नाम से उपलब्ध हैं उनमें से कुछ प्रधान-यंत्रों का रेखांकन और विवरण यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

यह भी विशेष विचारणीय है यंत्र पूजन के लिए एक नियत स्थान अथवा एकान्त पूजन स्थान अवश्य होना चाहिए। उस स्थान पर सबसे पहले नवग्रह स्थापना विधि के अनुसार दिवार अथवा काष्ठ की वेदी पर करवाकर षोडशमातृकाचक्र में चारों दिशाओं का संधान करना चाहिए। मातृकाचक्र के अनुसार सभी सोलह देवि मातृ शक्तियों का आवाहन करना चाहिए। यह क्रम नित्यावृति में ग्रहण करके फिर निर्दिष्ट यंत्र की ताम्र अथवा चाँदी की अथवा किसी भी अन्य शुद्ध धातु की पट्टिका में उत्कीर्ण कर यानि अच्छे शिल्पी से खुदवा कर निर्धारित रेखांकित ज्योमितीय वृत, कोण, त्रिकोण, चतुष्कोण, षटकोण, मंत्रों आदि का शुद्ध रूपान्तर ही धातु पट्टिका पर करवा कर यथाविधि पूजन प्रक्रिया आरंभ करनी चाहिए। इनमें कुछ यंत्रों का संक्षिप्त वर्णन यहाँ प्रस्तुत है। इनकी सिद्धि और सफलता साधक के श्रम पर निर्भर परन्तु यह कहना व्यर्थ है कि यंत्रों की महिमा अवैज्ञानिक और अकारण है।

श्री यंत्र : (विशेष धन प्रदायक) दीपावली के अवसर पर

यह सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध यंत्र है। इसकी अधिष्ठात्री देवी स्वयं श्री विद्या अर्थात् त्रिपुर सुन्दरी से भी अधिक इस यंत्र की मान्यता है। यह बेहद शक्तिशाली ललितादेवी का पूजा चक्र है। इसको त्रैलोक्य मोहन अर्थात तीनों लोकों का सम्मोहन करने वाला भी कहते हैं। इसे गंगा जल, दूध से स्वच्छ करके पूजास्थान, व्यापारिक स्थान तथा अन्य शुद्ध स्थान पर रखा जाता है। इसकी पूजा पूर्व की ओर मुँह करके करी जाती है।

श्री यंत्र का सीधा मतलब है लक्ष्मी प्राप्ति का यंत्र, मध्य भाग में बिन्दु व छोटे-बड़े मुख्य नौ त्रिकोण इन नौ त्रिकोण से बने ४३ त्रिकोण, दो कमलदल, भूपुर एक चतुरस ४३ त्रिकोणों से निर्मित उन्नत श्रृंग के सदृश्य मेरु पृष्ठीय श्री यंत्र अलौकिक शक्ति व चमत्कारों से परिपूर्ण गुप्त शक्तियों का प्रजनन केन्द्र बिन्दु कहा गया है।

जिस प्रकार सभी कवचों में चण्डी कवच श्रेष्ठ है, उसी प्रकार से सभी देवी-देवताओं के यंत्रों में श्री देवी का यंत्र सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। इसी कारण इसे यंत्रराज व यंत्र शिरोमणि नाम से भी अभिहित किया गया है। दीपावली, धनतेरस, बसन्तपंचमी अथवा पौषमास की संक्रान्ति के दिन यदि रविवार हो तो इस यंत्र का निर्माण व पूजन विशेष फलदाई माना गया है।

श्रीनवनाथ यंत्र : (धनप्रदायक जैन, वैश्य सम्प्रदाय का दुर्लभ महायंत्र)

नवनाथ यंत्र की महिमा प्राचीन काल से ही गुप्त रूप में प्रचलित है। नवनाथ ग्रंथ में इसका विस्तृत वर्णन है और पूर्ण पाठ भी उसमें उल्लिखित है। परन्तु पाठ करने से अधिक सुलभ इस यंत्र का पूजन है। यह यंत्र ताम्रपत्र पर उभारा हुआ होना चाहिए। पूजन के समय पूर्व की ओर मुख करके बैठना चाहिए। इसमें पूर्व आसन शुद्धि, शरीर शुद्धि तथा मन की शुद्धि होना आवश्यक है। एकाग्र चित्त से इस यंत्र की ओर जो भी कार्य करना है उसका संकल्प लेकर नवनाथ का आवाहन करना चाहिए। आवाहन मंत्र से पहले "ॐ नमः शिवाय" का ५ बार उच्चारण करना चाहिए और फिर "ॐ द्रा दत्तात्रेयाय नमः" जप करके नवनाथ यंत्र को अर्पण करें। उसके बाद मंत्र के बीच मंत्र, मन ही मन उच्चारण करके मूल मंत्र को ११ दिन तक नित्य प्रति साधना चाहिए। फिर यंत्र विलक्षण फलदायी प्रभाव देना शुरू कर देता है।

कार्यसिद्धि यंत्र : (विघ्न-बाधा निवारक तथा कार्यसाधक यंत्र)

कार्यसिद्धि यंत्र सर्वत्र उपयोगी, सर्वकार्य साधक और बहुत ही गोपनीय यंत्र है। इस यंत्र को पूजा स्थान में अथवा किसी सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। इसे अपने पास रखने से न केवल कार्य सिद्ध होते हैं बल्कि धन धान्य की भी वृद्धि होती है। मोटे ताँबे की प्लेट में उभरा हुआ यह यंत्र गोलाई में होता है। इस यंत्र की आकृति यहाँ दी गई है। यह यंत्र गोलाकार रूप में सात भागों में बाँटा गया है। प्रत्येक विभाग में सांकेतिक अंक और आकृतियाँ दी गई हैं। जैसे वीणा (९१), साँप (३८), नौका (३३), बाण (५२), [illegible] (६१), [illegible] (२६), पेड़ (८७)। इन आकृतियों को घर से बाहर जाते वक्त दक्षिण को देख लेना ही कार्य साधक होता है। प्राचीन समय से ही लोगों का इस पर विश्वास है। यह यंत्र पूजा स्थान में रखना श्रेष्ठ होता है। कोई मंत्र आदि का अनुष्ठान इसमें नहीं होता।

श्री महालक्ष्मी यंत्र : (सुख वैभव प्रदायक)

श्री महालक्ष्मी यंत्र की अधिष्ठात्री देवी कमला है, अर्थात् इस यंत्र को पूजन करते समय श्वेत हाथियों के द्वारा स्वर्ण कलश से स्नान करती हुई कमलासन पर बैठी लक्ष्मी का ध्यान करना चाहिये। "सिद्धान्त" के अनुसार इस यंत्र के नित्य दर्शन व पूजन से लक्ष्मी की प्राप्ति लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

इस यंत्र की पूजा वेदोक्त न होकर पुराणोक्त है। इसमें बिन्दु षट्कोण, वृत अष्टदल एवं भूपुर की संरचना की गई है। धनतेरस, दीपावली, बसन्तपंचमी, रविपुष्य एवं इसी प्रकार के शुभ योगों में इसकी उपासना का महत्त्व है। स्वर्ण, रजत व ताम्र से निर्मित इस यंत्र की उपासना से उस घर व स्थान विशेष में लक्ष्मी का स्थाई वास हो जाता है ऐसी मान्यता है।

बगला मुखी यंत्र : (शत्रु विनाशक)

"बगला" दस महाविद्याओं में एक है। इसकी उपासना से शत्रु का नाश होता है। शत्रु की जिह्वा वाणी व वचनों का स्तम्भन करने हेतु इससे बढ़कर कोई यंत्र नहीं है। इस यंत्र के मध्य बिन्दु पर बगलामुखी देवी का आह्वान व ध्यान करना पड़ता है इसे पीताम्बरी विद्या भी कहते हैं क्योंकि इसकी उपासना में पीले वस्त्र पीले पुष्प पीली हल्दी की माला एवं केसर की खीर का भोग लगता है।

इस यंत्र में बिन्दु त्रिकोण, वृत षोडशदल एवं भूपुर की रचना की गई है। नुकसान पहुँचाने वाले दुष्ट शत्रु की जिह्वा हाथ से खींचती हुई एवं दूसरे हाथ में मुदगर लेकर शत्रु के मस्तक पर प्रहार करती हुई बगला देवी का ध्यान करते हुये, शत्रु के सर्वनाश की कल्पना की जाती है। इस यंत्र के विशेष प्रयोग से प्रेत बाधा व यक्षिणी बाधा का भी नाश होता है। इस यंत्र की सुवर्ण व रजतमय छोटे आकार की अंगूठी व पैंडल बनाने से भी कार्य सिद्धि संभव है।

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली - 110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री महामृत्युंजय यंत्र : (कष्ट एवं मारक दशा के निवारण हेतु)

इस यंत्र के माध्यम से मृत्यु को जीतने वाले भगवान शिव की स्तुति की गई है। भगवान शिव की साधना अमोघ व शीघ्र फलदायी मानी गई है। मारक दशाओं के लगने के पूर्व इसके प्रयोग से व्यक्ति भावी दुर्घटना से बाल-बाल बच जाता है। शूल की पीड़ा सुई में बदल कर रह जाती है। प्राणघातक दुर्घटना व सीरियस एक्सीडेन्ट में भी जातक सुरक्षित व बेदाग होकर बच निकलता है।

प्राण घातक मौका टल जाता है। ज्योतिषी लोग अरिष्ट ग्रह के निवारणार्थ, आयुष्यवर्द्धन हेतु, अपघात किंवा अपमृत्यु व अकाल मौत से बचने के लिये महामृत्युंजय यंत्र की सिद्धि कराते हैं।

"शिवार्चन स्मृति:" के अनुसार पचकोण, षटकोण, अष्टदल एवं भूपुर से युक्त, मूल मंत्र के बीज से सुशोभित महामृत्युंजय यंत्र होता है। आसन्न रोग की निवृत्ति के लिये एवं दीर्घायु की कामना के लिये इस यंत्र का प्रयोग सर्वाधिक सफल माना गया है। इस यंत्र का नित्य पूजन कर इसका चरणामृत पीने से व्यक्ति निःरोग रहता है। इसका अभिषिक्त किया हुआ जल घर में छिटकने से परिवार में सभी स्वस्थ रहते हैं। घर पर रोग व ऊपरी हवाओं का आक्रमण नहीं होता।

श्री कनकधारा यंत्र : (परिश्रम और साधना की सफलता के लिए)

लक्ष्मी प्राप्ति के लिये एक अत्यन्त दुर्लभ और रामबाण प्रयोग है। इस यंत्र के पूजन से दरिद्रता का नाश होता है। पूर्व में आदि शंकराचार्य ने इसी यंत्र के प्रभाव से स्वर्ण के आंवलों की वर्षा कराई थी यह यंत्र रंक को राजा बनाने की सामर्थ्य रखता है। यह यंत्र अष्टसिद्धि व नव निधियों को देने वाला कहा गया है। इसमें बिन्दु, त्रिकोण एवं दो वृहद त्रिकोण वृत्त, अष्टदल, वृत्त, षोडशदल एवं तीन भूपुर होते हैं यह यंत्र स्वर्ण व रजत पत्रों पर भी बनाया जाता है। इस यंत्र पर "कनकधारास्तोत्र" का पाठ करना अनिवार्य माना गया है।

सिद्ध श्री बीसा यंत्र : (सर्पबाधा निवारक तथा ऐश्वर्य यश प्रदायक)

कहावत प्रसिद्ध है—"जिसके पास हो बीसा, उसका भला करे जगदीशा।" अर्थात् साधकों ने इस बीसा यंत्र के माध्यम से दुनिया की हर मुश्किल आसान होते देखी है। इसलिये कई लोग इसे "यंत्रराज बीसा" भी कहते हैं। निर्वाण मंत्र से सम्पुटित करते हुये इसमें देवी जगदम्बा का ध्यान किया जाता है।

प्रस्तुत यंत्र में चतुष्कोण में आठ कोष्टक एक लम्ब त्रिकोण की सहायता से बनाये गये हैं। त्रिकोण को मंदिर के शिखर का आकार दिया गया है। अंक विद्या के चमत्कार के कारण इस यंत्र के प्रत्येक चार कोष्टक की गणना से बीस की सिद्धि होती है। इस यंत्र के सिद्ध हो जाने पर व्यक्ति को इष्ट-बल की प्राप्ति होती है। वचन सिद्धि भी मिलती है। तथा भूत-प्रेत आदि ऊपरी हवाओं पर काबू पाने व उनको नष्ट करने की शक्ति भी इसी यंत्र के माध्यम से मिलती है।

कुबेर यंत्र : (श्रेष्ठधन दायक तथा व्यापार/व्यवसाय में प्रेरक)

यह धन के अधिपति धनेश व कुबेर का यंत्र है। इस यंत्र के प्रभाव से यक्षराज कुबेर प्रसन्न होकर अतुल सम्पत्ति की वर्षा करते हैं। यह यंत्र व रजत पत्रों पर भी निर्मित होता है। जहाँ लक्ष्मी प्राप्ति की दूसरी साधनायें असफल हो जाती हैं, वहाँ पर इस यंत्र की उपासना से शीघ्र लाभ होता है। कुबेर यंत्र विजयदशमी, धनतेरस, दीपावली तथा रविपुष्य तथा रविगुरु योग पर बनाया जाता है। कुबेर यंत्र की स्थापना गल्ले, तिजोरियों, सेफ व बन्द अलमारियों में की जाती है। लक्ष्मी की गई साधनाओं में कुबेर यंत्र का प्रयोग अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

दाम्पत्य सुख कारक मंगल यंत्र : (मंगल दोष निवारक तथा ऋण निवारक)

विवाह योग्य कन्या या पुत्र के विवाह में बाधा आना, विवाहित दम्पत्ति के जीवन में दीर्घकाल तक सन्तानाभाव रहना, गर्भपात होकर सन्तान हाथ न लगना, मनुष्य का ऋण पर ऋण लेते हुये कर्जग्रस्त होने के बाद कर्ज चुकाने के आसार से निराश हो जाना, इन तीनों दुःखों को दूर करने के लिये ज्योतिष शास्त्र में मंगल व्रत का विधान है। मंगल के व्रत में "मंगलयंत्र" के पूजन का विधान है।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि लड़कियाँ ३०-४० वर्ष की आयु तक पहुँच जाती हैं परन्तु मांगलीक दोष के कारण विवाह तो दूर, सगाई तक नहीं हो पाती। दूसरी ओर वर पक्ष से ऐसे-ऐसे उदाहरण आते हैं कि दो-दो तीन-तीन विवाह कर लिये परन्तु "मंगली दोष" के कारण पत्नी का सुख नहीं। मंगली दोष से व्यक्ति कर्जदार होता है। और कर्जदार भी ऐसा कि उसका कर्जा उसकी मृत्यु पर्यान्त उसके साथ रहता है। ऐसे जातकों की भी कमी नहीं जो आमूलचूल कर्ज से डूबे हुये हैं। उन्होंने लक्ष्मी साधना एवं रुपयों की प्राप्ति हेतु कई यज्ञ व अनुष्ठान किये परन्तु पैसा जाता है, रुकने का नाम नहीं लेता। ऐसे व्यक्तियों को पहले "मंगल यंत्र" की साधना से अपने मंगलीक दोष की निवृत्ति करनी चाहिए प्रयोग से पाया कि "मंगल यंत्र" की विधिवत उपासना के पश्चात २१ मंगलवार पूर्ण होते-होते लोगों को अपने-अपने अभीष्ट कार्यों में बराबर सफलता मिली है। कई परिवारों में विवाह के पश्चात् सन्तान बाधा हेतु भी इसके प्रयोग किये। सभी को अनुकूल लाभ हुये। यदि किसी जातक का पंचमेश मंगल हो, या पंचम भाव मंगल हो या मंगल की दृष्टि हो, तो पुत्र संतान की प्राप्ति हेतु "मंगल यंत्र" का सहारा लेना चाहिये।

सम्पर्क सूत्र— सैक्टर-८/८७९, रामाकृष्णापुरम्,नई दिल्ली-११००२२ दूरभाष : ६१००९९३

सन् १९९७ ई. में ग्रह का शेयर बाजार पर प्रभाव

लेखक—ज्यो. पं. बसन्तलाल व्यास (अनेक उपाधियों से विभूषित)

सम्पादक—विविध जंत्री-पंचांग, राया मथुरा, उ.प्र.-२८१२०४, फोन नं. ०५६५८३३३५३

जनवरी, १९९७—ता. ५ जनवरी शेयर बाजार में तेजी, ९ जन. भावों में मन्दी का मान रहे। १० जन. भावों में कुछ सुधार, ११ जन. घटा-बढ़ी के बाद मन्दे में बन्द हो, १४ जन. सूर्यमुखी चाल में सुधार हो, १९ जन. तथा २१ जन. भावों मे सुधार, २३ जन. मांग से तेजी हो। २७ जन. भावों में तेजी को बल, २९ जन. भावों में तेजी का मान हो, ३० जन. चलते भावों के रुख में परिवर्तन, ३१ जन. बाजार रुख देखें, लाभ उठावें।

फरवरी—२ फरवरी भावों में सुस्ती, कारोबार में गिरावट, ५ फर. शेयर बाजार में सुधार, ६ फर. चलती लाइन में सुधार, ८ फर. भावों में अस्थिरता में सुधार, ९ फर. शेयर बाजार में गर्मी का रुख, १२ फर. मांग के साथ बाजार सूर्यमुखी चाल में, १६ फर. सूर्यमुखी चाल में तेजी का मान करे, १९ फर. उठे भाव टूट जावें, बाजार पर मौसम का प्रभाव हो, २० फर. भाव उठे, २२ फर. भावों में गिरावट में रोक हो, २३ फर. भावों में सुधार हो, २४ फर. शेयर बाजार में मन्दी, २८ फर. मांग के साथ भाव भी उठें।

मार्च—४ मार्च शेयर बाजार में मांग के साथ भाव भी तेजी का मान करें, ८ मार्च शेयर बाजार सूर्यमुखी चाल में तेज, १३ मार्च शेयर चलते बाजार बदलकर तेजी में रोक लगायें, १४ मार्च शेयर बाजार गिरकर उठें, १७ मार्च वायदा बाजार में सुधार हो, २१ मार्च शेयर बाजार में तेजी, २४ मार्च चलते भाव गिर जावें, २७ मार्च चलते भाव बदल जावें, तेजी का मान हो, २९ मार्च शेयर बाजार सूर्यमुखी चाल में मांग करे, ३१ मार्च शेयर बाजार में तेजी का मान हो।

अप्रैल—१ अप्रैल सोमवती मन्दी का मान करे, ७ अप्रैल शेयर बाजार में सुधार हो, ११ अप्रैल शेयर बाजार प्रथम मन्दी का मानकर तेजी को बल, १४ अप्रैल शेयर बाजार में तेजी, १७ अप्रैल शेयर बाजार में मन्दी का भाव हो, २२ अप्रैल बाजारों में सुधार हो, २६ अप्रैल शेयर बाजार में शीघ्र मन्दी बनेगी, २७ अप्रैल शेयर बाजार में कुछ सुधार हो, २९ अप्रैल बाजार खुलते ही तेजी का मान हो। ३० अप्रैल चलते बाजार उठान होना चाहते हैं।

मई—३ मई शेयर बाजार में गिरावट बनाकर तेजी को बल, ४ मई शेयर में कुछ सुधार रहे। ७ मई बाजारों में कुछ मौसम के साथ गर्मी हो, १० मई शेयर बाजार में मन्दी का प्रभाव हो। १० मई भावों में सुधार हो, बन्द बाजार में मन्दी, १७ मई शेयर रुके भाव उठ जावें, २१ मई शेयर बाजार में सुधार हो, २३ मई भावों

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

में तेजी को बल, २५ मई भावों में तेजी का मान हो, २७ मई शेयर चलते भाव भी सुधार लें, ३० मई शेयर बाजार में गर्मी भाव भी तेज हों।

जून—३ जून शेयर बाजार में तेजी का मान, ५ जून शेयर बाजार सूर्यमुखी चाल में उठे, ८ जून शेयर बाजार में तेजी का मान, ९ जून भाव पलट लें, १५ जून शेयर बाजार में तेजी को बल, १५ जून सूर्यमुखी चाल में तेजी का मान, १५ जून बाजारों में सुधार हो, १८ जून भावों में तेजी आकर मन्दी का मान, २२ जून भावों में तेजी का मान हो, २३ जून शेयर बाजार गिरकर तेजी का मान करें, २४ जून चलती लाइन पलट चाहती है, ३० जून शेयर बाजार में मन्दी का मान हो।

जुलाई—१ जुलाई शेयर में सुधार, ५ जुलाई भाव गिर जावें, ७ जुलाई शेयर १५ दिन में मन्दी को बल, १३ जुलाई उठे भाव गिर जाना चाहते हैं, १२ जुलाई शेयर सूर्यमुखी चाल में, १६ जुलाई शेयर बाजार में सुधार हो, १६ जुलाई शेयर बाजार में तेजी का मान, १९ जुलाई शेयर की चलती लाइन में सुधार हो, भाव उठे, २० जुलाई शेयर प्रथम तेज होकर गिर जावें। २२ जुलाई शेयर बाजार में तेजी, २३ जुलाई मांग के साथ भाव उठे, २९ जुलाई भावों में सुधार हो, ३१ जुलाई शेयरों में सुधार हो।

अगस्त—१ अगस्त शेयर बाजार में तेजी को बल, ४ अगस्त चलते भावों में सुधार हो, ९ अगस्त चलते भावों में उठान को बल, २० अगस्त को भावों में मन्दी का मान, २१ अगस्त शेयर बाजार में तेजी का मान कर गिर जावें, २५ अगस्त चलती लाइन में शेयर सुधार लें, ३१ अगस्त शेयर बाजार दो सप्ताह में तेजी का मान करेंगे।

सितम्बर—शेयर सूर्यमुखी चाल में स्थिरता लें, ५ सितम्बर शेयर बाजार में तेजी, ६ सित. भाव गिरकर तेजी का मान करे, ८ सित. शेयर बाजार में भावों में गर्मी, ११ सित. शेयर सूर्यमुखी चाल में तेजी का मान करे, १६ सित. शेयर बाजार में गर्मी बने, १९ सित. शेयर भावों में वृद्धि हो, १७ सित. २ सप्ताह में तेजी, १९ सित. भावों में वृद्धि, २३ सित. चलते भाव सूर्यमुखी चाल में टूटे, २९ सित. भावों में मन्दी का मान, २८ सित. शेयर दो सप्ताह में उठे, ३० सित. चलते भाव भी तेजी का मान करें।

अक्टूबर—२ अक्टूबर शेयर गिरकर तेज हों, ४ अक्टू. शेयर मन्दी का मान कर उठ जावें, ९ अक्टू. शेयर तीन दिन तक मन्दी का मान कर तेज हों, ११ अक्टू. शेयर सूर्यमुखी चाल में तेजी का मान करें, १५ अक्टू. शेयर के भावों में तेजी, १७ अक्टू. शेयर बाजार में सुस्ती को बल, २० अक्टू. शेयर बाजार में सुधार और मांग में वृद्धि हो, २४ अक्टू. बाजारों में गर्मी बने, २७ अक्टू. शेयर बाजार मन्दी का मान करे, ३० अक्टू. शेयर तेज होकर गिर जाना चाहते हैं।

नवम्बर—३ नवम्बर शेयर के उठते भाव रुक जावें और पुन: तेजी की भावना को बल प्राप्त हो, ६ नव. भावों में सुधार होगा, १२ नव. चलते भाव उठ जावें, १४ नव. शेयर बाजार में गर्मी, १८ नव. शेयर बाजार गिरकर तेजी का मान करे, २० नव. बाजार सूर्यमुखी चाल में उछल जावे, १६ नव. शेयर बाजार में तेजी, २४ नव. शेयर बाजार तेजी का मान करे, २७ नव. शेयर बाजार में तेजी तथा मांग में वृद्धि, ३० नव. शेयर सूर्यमुखी चाल में तेजी का मान करे।

दिसम्बर—२ दिसम्बर शेयर बाजार गिरकर तेज हों, ५ दिस. शेयर बाजार में तेजी को बल, ११ दिस. शेयर बाजार में मन्दी का प्रभाव हो, १५ दिस. शेयर बाजार में तेजी आकर भाव गिर जावें, १६ दिस. शेयर बाजार में तेजी को बल, १९ दिस. शेयर गिरकर सूर्यमुखी चाल में उठे। २२ दिस. शेयर बाजार में गर्मी, २५ दिस. शेयर तेज होकर भी बाजार गिर जावें, २७ दिस. शेयर बाजार में गिरावट को बल, २९ दिस. शेयर बाजार में सुधार हो।

शेयर बाजार की जानकारी ग्रह के आधार पर है परन्तु शेयर बाजार में ग्रह ज्योतिष गणना से अधिक ग्रह भी होते हैं—(१) देश की राजनैतिक गतिविधि, (२) मौसम, (३) मूलग्रह सटोरिया (दलाल) भी शेयर बाजार को प्रभावित किया करता है। अत: देश की राजनैतिक गतिविधियाँ मौसम परिवर्तन, दलाल भी इस बाजार के ग्रह हैं। अत: व्यापारी इनका भी ध्यान रखें।

सन् १९९७ का व्यापार भविष्य फल १०० रु., तेजी-मन्दी दर्पण ५१ रु., शेयर की मासिक रिपोर्ट ५१ रु॰, वर्ष के लिये ५०० रु॰ है। व्यापार विजय यन्त्र ५१ रु., स्पेशल १०० रु., ताम्रपत्रों का महालक्ष्मी कुवेर यन्त्र २५० रु॰, दक्षिणवर्ती शंख २०० रु., सिमार सीगी १५० रु., हथ्था जोड़ी २०० रु. सभी सुख रुद्राक्ष आदि का सूचीपत्र मुफ्त मंगावें। **पता—श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया मथुरा (उ.प्र.)**

सं. वि. २०५४ (सन् १९९७-९८ ई.) का व्यापार भविष्य

ले॰—श्री ओंकाराश्रम व्यापार अनुसंधान केन्द्र

संवत् विक्रम २०५४ का राष्ट्रपति भौम होने से मांगलिक कार्यों की वृद्धि करेगा साथ ही चोर भय, अपहरण, चोरी, डकैतियों की वृद्धि, अग्निकांड, जबरदस्त हवाई दुर्घटना तथा जन क्षय विशेष होंगे। मंत्री संवत् २०५४ के भगवान् भास्कर सूर्य नारायण होंगे, ज्योति शास्त्र में सूर्य-भौम आपस में घनिष्ठ मित्र हैं। इस वास्ते राज्य सम्बन्धी कार्य कड़ाई से पालन करेंगे और कीमतों को नीचे लाने की भरसक प्रयत्न सैन्ट्रल गवर्नमेंन्ट का होगा। स्थिर सरकार बनी रहे। नये-२ कानून बनाकर प्रशासन को दृढ़ रखने में कोई कसर नहीं रहेगी। बार-बार डराने-धमकाने से युद्ध जैसी स्थिति, यत्र-तत्र बनेगी। पर भारत सरकार की चतुराई से विदेशी स्तब्ध रहेंगे। इस सं॰ वि॰ २०५४ में सस्येस बुध सस्यपति होने से सुख समृद्धि, प्रचुर जल, धर्मादि कृत्य अधिक होंगे। धान्येश चन्द्रमा है, ज्योति शास्त्र की दृष्टि से बुध ग्रह जी प्रजा वृद्धि चाहते हैं और गेहूँ, सरसों तथा ईख की वृद्धि भी करेंगे। मेघेश शनि सं॰ २०५४ में बने हैं। शनि महाराज—भगवान् भास्कर के बेटे हैं। सूर्य के साथ जलचर राशि में पड़ने से वर्षा का विरोध नहीं करेंगे और अपने क्रूर स्वभाव के कारण सिर्फ मलेच्छों को कष्ट, रोग भय ही देंगे। रसेश शुक्र महाराज सुखसुभिक्ष, स्त्रियों की प्रतिष्ठा वृद्धि कारक हैं। नीरसेश बुध इस वर्ष में शुभ ग्रह: व्यापारियों को लाभ देंगे। छपे वस्त्रों की तेजी होगी तथा फलेश शनि—तस्करों द्वारा फलों के आयात की वृद्धि होगी। धनेश भौम—जनता के पैसों का दुरुपयोग सरकार द्वारा किया जाये। दुर्गेश शनि—इस वर्ष में कृषि धन की वृद्धि तथा मैटीरियल पदार्थों में तेजी कारक रहेगा। विकृति नाम संवत् २०५४ कहलायेगा और वर्ष नाम श्रावण नाम से पुकारा जायेगा। मेघनाम—संवर्त वर्षा की वृद्धि करेगा। रोहिणी निवास संधी में खंड वृष्टि करेगा, समय निवास वणिक गृहे होने से किसी-किसी वस्तु में दुगने होंगे, ड्योढ़े भाव भी होंगे पर सवाया तो इस वर्ष में करीब-२ सभी वस्तुओं में होंगे। धान्य, चावलों, रुई का संग्रह विशेष लाभप्रद रहेगा। वैशाख में धातु पदार्थ की तेजी जेठ बदि दशमी तक विशेष, बाद भाव गिरेंगे।

भैरव-भवानी की गोष्ठी झलक

श्री जगदम्बे भवानी से, पूछैं भैरव लाल। विक्रम चौव्वन आ गया, स्पष्ट कह दो पूर्ण हाल॥ १॥
उ॰—भैरव कह दो सभी से, हाल कहूं समझाय। राजा कुज मंत्री रवि, यह सब को डर पाय॥ २॥
समय निवासा वणिक घर, रोहिणी संधी निवास। खंड वृष्टि का योग भी, कहीं-कहीं वर्षा खास॥ ३॥
सौम्य देव सस्येश हैं, स्तम्भ बने हैं तीन। बिगड़े काम सुधार दें, इसमें मेष न मीन॥ ४॥
आषाढ़ी हले जोत हो, श्रावण जय-जयकार। राम कृष्ण के भजन से, होगा बेड़ा पार॥ ५॥

विक्रम सं॰ २०५४ का राजनैतिक भविष्य

इस वर्ष के ग्रह भारी उथल-पुथल कारक हैं। चौंका देने वाली सैन्ट्रल में हवायें चलेंगी तथा विदेश वाले भी भौंचक्के होंगे। क्योंकि राष्ट्रपति भौम तथा मंत्री भगवान् भास्कर दोनों ही क्रूर ग्रह हैं। पर जहाँ भय जनता को व्याप्त होगा वहाँ जनता से भी सरकार दबेगी। आंदोलन की दुनियाँ में नया मोड़ आयेगा। हम केवल १२ माह का व्यापार भविष्य ग्रहों के बनने वाले डायरेक्शनों पर तथा ग्रहों के वक्र-मार्गी, अस्त, दक्षिण शर, उत्तर शर तथा दृष्टि संबंधी डिग्रियों और वर्गोत्तम पर आधारित लेख लिखकर व्यापारियों की सेवार्थ दे रहे हैं।

चैत्र शुक्ल—इस माह में भौमवारी चन्द्र दर्शन मेष राशि में होने से चन्द्रमा अपने अधिकार की वस्तु जैसे चांदी, चावल, मोती तथा श्वेत वस्तु दूध, घी तथा शहद, समुद्र जल से उत्पन्न पदार्थ, जौ और नमक इन सभी वस्तुओं में भारी लाइन चन्द्र मास में चलेगी। कुछ वस्तु तो भारी मंदी होगी क्योंकि ज्योति शास्त्र में मेष राशि गत चन्द्र दर्शन हो तो अलसी, सरसों में तेजी पर अनाज में मंदी आना लिखा है। इस वास्ते अनाजों के ऊँचे भाव अब लास्ट होंगे और डेढ़ माह में ही चना, गेहूँ, ज्वार में ४२ रु॰ से ६२ रु॰ मंदी होगी। हाजिर में इसका

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर १९ दिन या आगे चन्द्र दर्शन तक चलेगा। इसीलिये तैयारी में तारुणी ही करना। वायदे सट्टे में ऊपर ली वस्तुओं में ता॰ ९ अप्रैल बुध को पिछले शनिवार के ऊँचे भाव कटेंगे तो तेजी ता॰ १४ अप्रैल तक चलेगी द में रियक्शन एक चौथाई का आयेगा। इस माह का दूसरा चांस ता॰ १३ को मेषी संक्रान्ति रात को लगेगी। षे सूर्य वार ३, नक्षत्र ३, प्रगल्भावस्था बैठी मुहूर्ती १५, धान्यादि भावे महर्घता, शुक्रास्त पूर्वस्याम् बाद श्चिमोदय होने से संक्रांति तेजी कारक मानी जाती है। क्रूर वार में तेजी कारक ज्योति शास्त्र में मानी गई है र तेजी १ माह नहीं बल्कि लगते ३ दिन वर्गोत्तम में रहने से आयेगी बाद गेहूँ, चना, जौ, ज्वार में मंदी भी आयेगी। सूर्य नारायण बदलने को ही संक्रान्ति कहते हैं। सूर्य के अधिकार की वस्तु ज्योति शास्त्र में मोती, णि, सोना, ताँबा, रेशम, अस्त्र, चर्म, तुष, धान्य, कड़वी वस्तु, शास्कीय मुद्रा अग्नि से उत्पन्न होने वाली वस्तु सरसों, लाल रंग के पदार्थ तथा सुगंधित पदार्थों का स्वामी भी सूर्य है। ता॰ १४ को बुध वक्री होकर ता॰ १६ अप्रैल की रात को अस्त होंगे। इसे वास्तु चक्र में एक स्थान प्राप्त है। अतः आलू को भूल कर भी मत बेचना। एक सप्ताह में ही तेजी का जोर होगा। दीगर वस्तु मंदी आने पर लेना। ता॰ १७ को गत सोमवार की बनी चाल में सरसों, अरंडा, तेल के नीचे भाव कट जायें तो एकदम बेच जाना। काश नीचे भाव न कटें तो लेना पर शेयर स्टैन्डर्ड खरीदना और चांदी, सोना लेकर वायदे सट्टों से लाभ गुड़ में उठाना। पंसारट में लाल वस्तु, ता॰ १६ अप्रैल को १०० मंदी तो १५० तेजी वायदे सट्टों में लगाकर लाभ २४ घंटों में ही उठाना।

बैशाख—इन्फीरियर लाइन तमाम माह चलेगी। ५ बुध, ५ गुरुवार इस माह रहेंगे। बैशाख बदि ४ ता॰ २६ अप्रैल को २२ घड़ी पर भौम मार्गी होने से मंगल के अधिकारी लाल रंग की वस्तु, गुड़, मद्य, आसव, अरिष्ट पारा, मनसिल, मसरी, ताँबा, लाल रंग की धातु और वस्तु, शस्त्र, मूंगा आदि में तेजी का जोर। हाजिर व सट्टा तथा वायदों के आगाऊ सौदों में एक सप्ताह में खड़ी तेजी आयेगी। ता॰ २७ को प्राईवेट कर्बरेट में जिस वस्तु के भाव हाजिर या वायदों के सौदों के साथ शेयर व बर्तनों में भी एक खड़ी तेजी न टिकने वाली आयेगी। ता॰ २९ अप्रैल को मकरे चन्द्र गुरु के साथ होने से ६ दिन की तेजी हल्दी व पीले रंग के पदार्थों में आयेगी। ता॰ ३ मई बैशाख बदि ११ शनिवार को बढ़े भावों में बेचो, ५ ही दिन में वायदे सट्टों के भावों में हाथों-हाथ लाभ लेना। ता॰ ९ मई बैशाख शुदि ३ शुक्रवार मोहोरम सन् १४१८ हिजरी, अक्षय तृतीया, परशुराम जयन्ती से ता॰ १० मई की रात को मार्गी बुध होने से बुधाष्टमी ता॰ १४ मई तक चीनी, गुड़, बैजीटेविल, चावलों तथा बुध की वस्तु मूँग, ज्वार, मटर, अरहर, द्विपल मात्र, अन्न, वनस्पति, हरे रंग की चीजें, तेल निकालने के बीज, तीखी वस्तु, सुगन्ध, हरे रंग के कपड़ों में तेजी आयेगी या भाव स्थिर रहेंगे। इसके बाद ता॰ १४ की रात बुधाष्टमी मंदी कारक है, परंच इसी दिन वृषे सूर्य तेजी कारक हर वस्तु में करने वाला है। एक चाल मंदी, दूसरी चाल तेजी कारक होने से यहाँ हमारा इन्फीरियर लाइन में यह संदेश विशेष है कि अगर ता॰ १५ मई को गुरुवार के दिन पिछले सोमवार के भाव जिस वस्तु में भी एक पैसा नीचे के क्रौस हो जायें तो भारी मंदी तमाम बैशाख में आयेगी। काश नीचे के भाव न कटें तो तेजी एक सप्ताह तक चलेगी।

नोट—हमारा विशेष है कि ना तो ऊँचे के भाव कटें ना ही नीचे के कटें तो आप समझ लेना कि वायदे सट्टों में बेईमानी का बोलबाला होगा और मार्केट स्थिर होंगे परंच ये आवश्यक है कि इस स्थान पर घी, तेल का स्टौक करना लाभप्रद होगा। पर नजराना तेजी-मंदी गुड़, आलू तथा तेलों में नहीं लगाना चाहिए। बुध व्यापार का स्वामी सही कहलाता है, जब बुध वर्गोत्तम में आता है तभी सभी वस्तुओं में भारी तेजी आया करती है। इसी वास्ते बैशाख माह के वृषे सूर्य १३/२० अंश के बाद २० अंश तक जेठ के माह में सूर्य प्रथम वर्गोत्तम में बाद १६/४० अंश के बाद २० अंश तक बुध के नवांश में आने से बहुत-सी बुध के अधिकृत वस्तुओं में भारी तेजी आयेगी ये अभी से निश्चय करें कि बैशाख की वस्तु जिसमें झटके की मंदी आये ऊपर लिखित १४ मई से ४ दिन में खरीदो, तैयारी हाजिर व सट्टे, वायदों में आगे आलू, चीनी, गुड़, ज्वार आदि यहां तक कि भूषा भी जेठ में लाभ देगा।

ज्येष्ठ—इस माह में ५ शुक्रवार कुछ वस्तुओं में भारी मन्दी कारक है। जैसे वस्त्र रेशमी, कम्बल, सूत, रुई, मणि, हीरा, आभूषण, मिश्रित अन्न, स्फटिक, त्रिफला, दालचीनी, चोब चीनी, जादू-टोना में काम आनेवाली जड़ी-बूटी जैसे बिल्ली लोटन, अगर-तगर, बच, सितावर पठानी, लोध, जायफल आदि में जब-जब शुक्र पड़ेगा या शुक्र की राशि में चन्द्रमा का संक्रमण होगा। तब-तब भाव गिरेंगे। यह योग हाजिरी सौदों में तो पड़ेगा, सम्बन्धित सट्टों में भी असर पड़ेगा। ता॰ २३ मई, ता॰ ३० मई, ता॰ ३ से ६ जून व १३ जून तथा ता॰ १५ से १७ जून में इस माह में विशेष असर होगा। जेठ मास में आगाऊ सौदों में तेजी नजदीक के रियक्शन मंदी के आयेंगे खास तौर से भरपूर मंदी का बोलबाला गेहूँ, चना, ज्वार में लास्ट होकर मार्केट में मोटी चाल निकलेगी। पर तेलवाना, सरसों में मंदी लास्ट बदि पक्ष में आकर स्थिर भाव होंगे। पीतल, ताँबा, कांशी में बदि ५ से २० दिन तेज बाद स्थिर भाव होंगे। वायदे, सट्टे में बदि १ से अष्टमी तक आलू, सरसों में मंदी आकर सट्टे में मार्केट बढ़ेगा। यह तेजी १० दिन चलेगी पर गुड़ में भाव-हाजिर में बढ़ेंगे। सट्टा, वायदा व्यापार में ध्यान रखिये ता॰ ६ जून को अगर पिछले भौम के बने नीचे भाव १० पैसा से ज्यादा १ पैसा भी कट जाये तो ४० से १२० पै॰ की मंदी ९ दिन में आकर वाद ३ दिन में चौथाई रियक्शन आकर वाद ४ दिन ज्यों की त्यों लाइन चलेगी। हाजिर पंसारट में जीरे, हींग के भाव विशेष रूप से बढ़ेंगे पर तेलवाना, वनस्पति आदि अरंडा, तोरिया, सरसों में जेठ बदि ७ से ९ तक पूर्व चालू मंदी समाप्त होकर अमावस्या तक तेजी चलेगी।

नोट—है कि अगर बदि दशमी को पिछले बुध के नीचे भाव न कटेंगे तो मंदी जड़ मूल से समाप्त जानकर व्यापार करें जेठ शुदि में १ से नौमी संक्रान्ति तक मार्केट वायदे के पड़े रहेंगे बाद पूर्णिमा तक तेजी आयेगी। वनस्पति टीन मार्केट से गायब हो जायेंगे। चांदी में सोने से ज्यादा स्टेडी चन्द्र वर्गोत्तम में आयेगी। और स्टैन्डर्ड शेयर भी इसी नीचे लिखे समय पर तेजी ता॰ २५ से २७ मई, ता॰ ३१ मई से २ जून, ता॰ ७ से ९ जून, ता॰ १४ से १६ जून इसी उपरोक्त टाइम में रांगा, जस्ता, अल्मोनियम, ताँबा में भी तेजी का चक्र चलेगा। उपरोक्त टाइम में तेजी-मंदी नजराना लगाना लाभप्रद रहेगा। हालाँकि इस महीने में १०० वर्षीय पत्र में जेठ शुदि ३ इतवार के दिन गुरु वक्री हो रहा है। यह वक्री पोजीशन नवरात्र अशौज शुदि ८ तक रहेगी। गुरु वक्री को ज्योतिष शास्त्र से यहाँ गुरु की चालू संक्रमण मकर राशि में है। मकर राशि ईख, सोना, लोहा, गुल्म, लता, पत्र, कोयला, जस्ता, टीन, कांशा, ताँबा, शीशा का स्वामी होने से पड़े मार्केटों में वक्री गुरु होने के एक माह बाद जान डालेंगे। वक्री अवस्था गुरु अरोग्य दायक धान्यों में मंदी कारक होता है। जब मार्गी होगा तब मंदी के स्थान भारी लम्बी तेजी आयेगी। जिसका विवरण समय स्पेशल रुख हमसे मंगा लेना। तब सोना, हल्दी में सवाये, ड्योढ़े, हल्दी में भी भारी तेजी होगी। ऊपर लिखित समय पर चांस का ध्यान रखिये। हमारा ध्येय पैसा कमाना नहीं बल्कि व्यापारी वर्ग की संतुष्टि, जनता जनार्दन की सेवा करना है। ऊपरे समय मासिक तेजी-मंदी लगाना भी लाभप्रद रहेगा।

आषाढ़—में ५ शनिवार ५ ही रविवार भारी तेजी कारक हैं। इसी के अपोजिट बदि की अष्टमी घटना और शुदि में मंगला चौथ बढ़ना भारी मंदी कारक है। कन्या राशि से लौटकर सिंह राशि में राहू और कुंभ में केतु का प्रवेश होगा। सं॰ २०५५ विक्रम के माघ शुदि दोज तक इसी राशि में राहू, केतु परिभ्रमण करेंगे। ये भारी उथल-पुथल जब-जब कन्जक्शन होगा तब-तब अकाल जैसी स्थिति होगी। जब-जब सिंह के चंद्रमा, सिंह के सूर्य जैसे कि भादों में अक्सर आते हैं या जब सिंह राशि पाप ग्रहों से वेध करेगी तब-तब ही नमक व लाल वस्तु मिर्च, धनियाँ, हल्दी आदि मसालों में, सोंठ, नारियल, किराने की वस्तु हाजिरी में हों या वायदों में भारी तेजी आयेगी। परंच गेहूँ, जौ, चना आदि में तेजी में सरकारी अंकुश से रुकावट होगी। लगते ही आषाढ़ बदि एकम से ४ दिन में सरसों, एसिड ऑयल में १० से १४%, सोयाबीन में १४ से १६% की तेजी आयेगी। गुड़, आलू वायदे में मार्केट पड़ा रहेगा। परन्तु सोमवार आषाढ़ बदि तीज ११ ब॰ ४७ मि॰ तक पिछले गुरुवार के ऊँचे भाव कटें तो तेजी ५ दिन में आकर एकदम मंदी। तिथी टूटन के कारण योगिनी एकादशी तक या तो मंदी या मार्केट में कोई सौदा ही नहीं होगा। इसी पीरियड में मैटीरियल तथा जिंक, सोडा, साबुन, तेल, पीपरमेंट में ३ दिवसीय मंदी आकर पुनः तेजी का आषाढ़ शुदि में बुधोदय होने पर श्रीगणेश होगा। आषाढ़ शुदि ४ भौम के दिन पिछले शुक्र के नीचे बने भाव क्रौस न होंगे तो शुदि सातें शनिवार तक सरसों में ३८ से ७६ या दुगनी तेजी आयेगी गुड़, सट्टे में मंदी पर हाजिर में भाव इसी समय पर पड़े रहेंगे। चांदी शेयर, सोना में मंदी का

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वातावरण बना रहेगा। सोयाबीन नीचे भाव में लेना। शुदि, गुरु धनिष्ठा में होने से उड़द व दालों में तेजी बनेगी, चीनी में भाव स्थिर रहेंगे। लेकिन यहाँ मंदी आने पर लेना। आगे संक्रान्ति कर्क की आषाढ़ शुदि ११ बुध को होने से चांदी शेयर, सोना तथा गुड़, तेल, सरसों में आयेगी। परन्तु पाम तेल नरम होगा। आटा, सूजी में तेजी आयेगी, फिनाइल, राँगा में स्टॉक करना लाभप्रद रहेगा। आषाढ़ शुदि १३ शुक्र को जाँच अवश्य करिये अगर शुदि १४ को शनिवार के दिन जिस वस्तु में मंदी चलेगी। उसी में १५ दिन में धुआँधार बिना रियक्शन के मंदी होगी। पर खास तौर से काली मिर्च में तथा चाय में तेजी धीरे-धीरे उठेगी। आषाढ़ बदि में प्रतिपदा को चन्द्र-शनि की ९ डिग्री तेल, अरंडा, मूंगफली, तोरिया में एक दिवसीय तेजी को प्रदान करेगा। बदि ३ को चन्द्र गुरु एक राशि पर पीली वस्तु जैसे सोना, हल्दी में एक दिवसीय मंदी तथा आषाढ़ बदि ९ से ११ में चन्द्र वर्गोत्तम आलू तथा चांदी वायदों में तेजी का चांस शुदि में प्रतिपदा में चन्द्रवर्गोत्तम तेजी लगाने के लिये चांस प्रदान करेंगे। शुदि में तीज को बुधोदय होने पर एकतर्फा लाइन विद्‌आउट रियक्शन के लाइनें चलेंगी। सिर्फ शुदि ९ से त्रयोदशी सूर्य का वर्गोत्तम सूर्य की अधिकृत वस्तुओं में तेजी-मंदी की लाइन चलेगी। यहाँ चांदी, तेल आदि में नजराना लगाने भी लाभप्रद रहेंगे।

श्रावण—का महीना ५ हो सोमवार ५ हो श्री सूर्यवारों से संलग्न माना जायेगा। लगते ही श्रावण बदि २ सोमवार से बुध तक हर वायदे वस्तु में जैसे हल्दी, गुड़, तेल सरसों, अरंडा, सींगदाना, चांदी, सोना में मंदी का वातावरण रहेगा। इसी अवधि में भारत से गेहूँ का निर्यात की अफवाह भी फैलेगी तथा कुछ तेजी के समाचार विदेशों से प्राप्त होंगे तथा चाँदी की खपत बढ़ेगी। अगर बदि २ को चांदी में १२ ब० ४२ मि० से तेजी १० मिनट भी चली तो जोरदार तेजी आयेगी। काश लिखे १० मिनट में तेजी न चले तो भारी मंदी ३ ही दिन में १४ से ४७ रु० की लाइन चलेगी। समय पर परीक्षा कर १० मिनट की रूपरेखा से बेधड़क व्यापार कर लाभ सट्टे वायदे से उठाना। शेयरों में एकदम भाव घटेंगे तथा पाम तेल का स्टाक करके १८ दिन में लाभ उठाना तथा इस महीने में दक्षिण गुजरात, महाराष्ट्र से मांग उठेगी। उपरोक्त पीरियड में कैमीकल का स्टाक करना लाभदायक आगे डेढ़ माह में अवश्य ही होगा। इन्फीरियर लाइन में सिंहे बुध श्रावण बदि पंचमी या षष्ठी शुक्र से तमाम बदि में जिधर को भी लाइन चले वही लाइन गुड़, तेल, सरसों, अरंडा में चलेगी पर सींगदाना की लाइन खिलाफ चलेगी। बदि ७ शनिवार से बुध चंद्र से नवम् दृष्टि पर जाने से ७ दिन तक हानि ९ से ११वीं दृष्टि तक दालवाने में तेजी तथा चीनी, खंडसारी भी तेज होगी। मैटिरियल में एकदम मंदी का बिगुल बजेगा। कभी भी खरीद यानि स्टॉक मत करना—केवल १५ दिन ठहरकर स्टॉक करने से लाभ की संभावना होगी। पर तेजी-मंदी नजराना मत लगाना। सुपारी, पोस्ता, बड़ी इलायची, गोला, खोपरा में पिछले ४ दिनों में मोटी तेजी आयेगी। श्रावण में बदि १४ को आश्लेषा रवि पर हरियाली अमावस के बाद अलसी व सरसों तेल में ३ दिन मंदी आकर मार्केट स्थिर होंगे परंच चांदी, सोना, शेयर में तेजी आयेगी। सट्टा बदनी आलू, गुड़, सरसों में शुदि ५ शुक्र के दिन पिछले भौम के नीचे भाव कटें तो मंदी आयेगी अगर ऊँचे भाव कटें तो तेजी ३ या ५ दिन में आकर मार्केट ठप्प हो जायेगा। बाद श्रावण शुदि ८ भौम को कन्या शुक्र नीच का लगने के बाद खास तौर से शुक्र का स्वामी होने से चांदी में ७ से २७ रु० की लाइन ५ या १४ दिन में मंदी या तेजी, इसी प्रकार रुई में १०० टके तथा जूट, पाट, बारदाना और श्रृंगार की वस्तुओं में लाइन कल के साढ़े दस बजे से लाइन चलेगी पिछले साढ़े बजे से १० या २२ मिनट में लाइन का अनुशरण करें। सट्टे बदनी गुड़, आलू में सिंह संक्रान्ति शुदि १३ शनिवार को लगने के बाद मंदी चलेगी पर एक नोट ध्यान रखना इस माह में सोमवारी पूर्णिमा को ११ से १ बजे मध्य से चावल तथा चांदी, हीरे, मोती, रत्न में ३ या ५ दिन में मंदी की चाल बनेगी। अगर आलू, गुड़ में आज सोमवार को पिछले गुरुवार के भाव कटें तो मंदी काश ऊँचे भाव जिस वस्तु में क्रॉस होंगे उसी में तेजी निश्चित ही आयेगी। यह खास चांस इस माह का है।

भाद्रपद—इस माह में ५ मंगलवार हैं जो कभी-कभी भारी मंदी मार्केट में करते हैं। इसी माह में कृष्ण पक्ष की बदि तृतीय घटना और शुदि में प्रतिपक्ष तिथी बढ़ना भी ये दोनों संक्रमण भारी मंदी के सूचक हैं। बुध जो ज्योति शास्त्र में व्यापार पति कहलाता है वह भी २ चालों से संलग्न है। प्रथम तो भाद्र बदि ४ को प्रातः १ पल पर वक्री बदि सप्तमी पर अस्त जन्माष्टमी पर होगा। इस वास्ते ध्यान रखिये कि इस चाल के साथ भादों बदि १०, एकादशी पर पहिले ही से चालू सुपीरियर लाइन इन्फीरियर में परिवर्तन होगी। पिछली सट्टे बदनी की सारी लाइनें प्रतिपक्ष से लेकर जन्माष्टमी तक ज्यों की त्यों गुड़, सरसों, चना, खल, आलू, तौम्बे, अरंडा व चलेंगी। भादों बदि ९ से एकदम पलटने लगेंगी। यद्यपि हमारा ध्यान मंदी का है तो भी पिछली लिखी मिति पर ११ बज कर ४२ मिनट की लाइन का अनुशरण करें। शेयरों में मंदी, चांदी में तेजी, सोना अपोजिट जायेगा। बदि पक्ष में ६ को, अष्टमी की नौमी को १०० तेजी तो १०० ही मंदी डालें। ये ही एक चांस है जहाँ आप कम पैसा से मोटा लाभ व्यापार बदनी से उठा सकते हो। पीपरमैंट व तेल, अलसी तथा खल, बिनौला में ऊपर तारीख १ बजकर ४ मिनट से जिस ओर मार्केट १२ मिनट चले उसी ओर का व्यापार ४ से ९ दिन बराबर करना। इस टाइम बड़ी इलायची, सुपारी, गोला और गुवार, लहसुन में मंदी खत्म होकर तेजी का धीरे-धीरे आगमन होगा। भादों बदि १३ पर पू० फा० रवि तेजी कारक और सोमवती मावस पर वक्री मघायां बुध मंदी २ ग्रहों की चाल भिन्न-भिन्न असर कारक होने से ध्यान रखिये शुदि १ भौमवार को ११ ब० ५ मिनट से अगर आज पिछले शुक्र के नीचे भाव गुड़ के कटें तो मंदी, न कटें तो तेजी ५ दिन में ४५ से ६७ या दुगनी आयेगी। साम खल में ८० से १ रु० ८० पैसे आलू में ३८ से ९५ या दुगनी चाल निकलेगी। इसके अलावा फली तेल, सोयाबीन, डालडा, लालमिर्च, काली मिर्च कोचीन में तेजी आयेगी। विशेष रूप से एक चांस यह भी खल वायदे का शुदि में बुधवारी चांद दर्शन का है। अगर शुदि ३ गुरुवार को ११। ४० मिनट तक पिछले सोमवार के नीचे भाव ५ पै० से ज्यादा कटेंगे तो धमाके की बेअंदाज मंदी आयेगी पर नीचे भाव न कटें तो ५ दिन में रियक्शन आयेगा। इस टाइम अरंडा, मूंगफली में केवल मंदी, गुड़ में २ दिन मंदा, २ दिन तेजी। चांदी, सोना के भाव मंदे, शेयर चुनींदा तेजी में तथा दीगर वायदों में १/४ की रियक्शन आकर स्थिर भाव होंगे। चना, गेहूँ, जौ की मांग जो अब तक कमजोर थी बम्बई, गुजरात के व्यापारी तारुणी का व्यापार उत्तर प्रदेश से करने लगेंगे। इसी माह में भादों शुदि ९ को मार्गी बुध होने से पूर्णिमा भादों तक एक ही लाइन सब वस्तुओं में चलायेगा। इन्फीरियर लाइन में यहाँ मार्गी हुआ है। ज्योति शास्त्र में बुध शुभ ग्रह मंदी कारक है। पर यहाँ सूर्य से दबा है इस वास्ते पिछली लाइनों को पलटने की ताकत रखता है। मंदी में तेल, खल, गुड़, सरसों, सूत लेना परंच यह भी ध्यान रखना अगर यहाँ खग्रास चन्द्र ग्रहण न होता तो हम लिख सकते थे कि केवल मंदी करेगा सो नहीं, दूसरी शर्त है कि खाद्य पदार्थ मंदे तो अन्य वस्तु तेजी। शुदि की १४ मिति टूटी भी तेजी कारक है। यहाँ एकादशी, त्रयोदशी को मंदी खाना तेजी लगाना, ग्रहण के एक सप्ताह में यान दुर्घटना आदि राजनीति में उलटफेर का योग है। अतः सट्टे आगाऊ खरीदो। तात्कालिक के बेचो। इसी चाल से आप को बदनी सट्टे से लाभ जरूर होगा।

आश्विन—निरयन सिद्धांत से यह महीना ५ बुधवारों और ५ ही गुरुवारों से संलग्न है। ज्योति शास्त्र में ५ बुध कभी-कभी भारी तेजी करते हैं और ५ गुरुवार तेजी करते हैं पर गुरु का मीन असर केवल पीली वस्तु में ही होता है। इसलिये यहां मंदी के झटके में हल्दी, सोना, पीली दाल खरीद कर हाथों-हाथ लाभ उठाना। वायदे सट्टे गुड़ में लगते माह से बदि ७ तक एकतर्फा लाइन तेजी की चलेगी परन्तु यहाँ हाजिर में ज्यादा तेजी सट्टे में कम आयेगी। तेल, खल, सरसों वायदे में बुध प्रतिपदा को १२ बजकर १४ मिनट तक गत शनि के नीचे भाव न कटें तो तेजी कट जायें तो मंदी चांस ४ दिन में आकर मार्केट ठप्प हो जायेगा। पीतल, अल्मोनियम, तांबा, शीशा मंदा होगा। मैटीरियल सारे पदार्थ मंदे पर कैमीकल सारे पदार्थ तेजी पर बदि ४ से ४ दिन चलकर मार्केट स्थिर होंगे। इस टाइम में गेहूँ, चना, ज्वार, तिल, एरन्डा, सूत, अलसी में तेजी पर सूत, रुई, कपास के ऊँचे बने भाव पिछले लास्ट होंगे। अतः इन वस्तुओं का स्टॉक मत करना। जूट, पाट, बोरी, बारदाना के भाव बढ़ेंगे। नीचे भाव बनने पर स्टॉक से ३ माह में ही मोटा लाभ होगा। आश्विन बदि ११ की रात को बुधास्त पूर्व में होने से इसी दिन गुड़, आलू में १०० तेजी तो १०० ही मंदी डालें। काश एकादशी को न फलै तो आप सोमवार की भी तेजी-मंदी नजराना डालना अवश्य ही लाभ होगा। अगर दोनों दिन तेजी-मंदी न फलै तो आगे चतुर्दशी मंगल को लगाना क्योंकि इस दिन बुध कन्या का जो त्रयोदशी को आये हैं वे चतुर्दशी को कन्या के

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ना अपने ही पिता से कनेक्शन करेंगे। तब चांदी में तेजी करेंगे, क्योंकि चांदी का स्वामी चन्द्रमा खास तौर
ह तेजी ७ या ९ या १८ दिन चलेगी। लाइन इन्फीरियर यहाँ कुछ दूसरी वस्तुओं भी जैसे सूखी मेवा, गोला,
रा, घी, जौ तथा अन्य सभी बुध चन्द्र के अधिकृत वस्तुओं में जानें। अशौज शुदि १ गुरुवार को वृश्चिक
भारी मंदी सफेद वस्तुओं में करने वाला है पर चन्द्रमा भी तुला राशि में आकाश में दर्शन है जो भारी तेजी
क है। इस वास्ते यहाँ से नवरात्रि में शुक्र व चंद्र के अधिकार की वस्तुओं में ७ दिन की लाइन जोरदार
गी। अगर आश्विन बदि ३ शनिवार को ११ ब॰ ४ मिनट तक जिधर की लाइन बन जायेगी वही लाइन ४
दिन चलेगी। शुक्र के अधिकार की ज्योति शास्त्र में रुई, सूत, रेशमी वस्त्र, कम्बल, मणि, हीरा तथा चांदी,
ज वस्तु, आभूषण, स्फटिक, त्रिफला, दालचीनी आदि चन्द्र अधिकार की वस्तु शहद, फल-फूल, चावल,
घी, गेहूँ, रस पदार्थ, मोती, श्वेत वस्त्र, नमक आदि होती हैं। इस चाल के बाद इसी महीने में शुदि ८ की
को मार्गी गुरु हो रहे हैं। यह बहुत ही ग्रेट ग्रह देव गुरु कहलाते हैं। खास तौर से डालर, करंशी नोट में
हल्दी के दबे भावों को ४॥ माह में सवाये भाव हाजिरी में करेगा। परंच सट्टा बदनी चल रहा हो तो
ना वायदा बेचो, नजदीक का खरीदो। जब-जब भी मार्गी गुरु मकर राशि के चन्द्रमा से कन्जक्शन करेगा
पाप ग्रहों से ९० या १८० डिग्री पर जायेगा तभी-तभी तेजी करेगा। शुदि १२ ज्येष्ठा भौम ३४ घड़ी पर
ने से सुवर्ण व अन्य गेहूँ, चना भौम के अधिकार की वस्तुओं में तेजी करेगा। सुवर्ण हर मंदी के झटकों में
दो। अगर ऊपर लिखे टाइम से अगले दिन भौम के नये ऊँचे भाव बनें तो एक दिन और नये भाव बनकर
र रियक्शन १/४ आकर मार्केट स्थिर हो जायेगा। कोई भी चाल मार्केटों में नहीं रहेगी। गुड़ में आखिरी पर
नी में कम मंदी खंडसारी पुरानी बेचना क्योंकि भविष्य में कार्तिक में मंदी के चांस बोल रहे हैं।

कार्तिक—में ५, शुक्रवार शुभ हैं जो मंदी कारक हैं। परन्तु सूर्य संक्रान्ति कार्तिक बदि दोज को शुक्रवारी
की १५ मुहूर्ती तेजी कारक है। बदि पक्ष में मावस से पूर्व ही इन्फीरियर लाइन समाप्त होकर सुपीरियर लाइन
चलना जो मंगशिर तक चलेगी एक बार को जोरदार लाइन चलेगी पर दो पृथक-पृथक तेजी-मंदी की
न्डीशन बन रही है। इस वास्ते धातु पदार्थ तेज तो खाद्य पदार्थ मंदी यह कन्डीशन इस माह बन सकती है।
सलिये सावधान रहें। बदि प्रतिपदा क्षय मंदी कारक होने से २ दिन में गुड़ वायदा मंदी होगा। अगर बदि ३
निवार को बुध के नीचे भाव न कटें तो मंदी समाप्त जानकर आलू, गुड़ में खरीदारी करें। यहाँ की बनी चाल,
पावली तक चलेगी। तेल, सरसों बेचें, वायदा में मूँगफली, अरंडा, बेचान कर शुक्र-भौम को ही लाभ उठा
ना। बदि ६ या ७ पर दोनों दिन सूखी मेवों का स्टॉक तथा हल्दी, मिर्च, केशर, बच सितावर तथा वैजीटेबिल,
रा, चीनी भी स्टॉक करने से ८ या १८ दिन में लाभ देगा। खास तौर से प्याज, लहसुन, आलू भी लाभ देंगे।
स माह गेहूँ का उठाना गोपाष्टमी से अच्छा होगा। मोटे अनाज ज्यादा लाभ देंगे क्योंकि चन्द्र दर्शन इतवारी
। दालों में एक मंदी का झटका शुदि ४ से ७ दिन में आयेगा। पीपरमैंट की मांग बढ़ेगी। कुछ वस्तुओं से
ाबन्दी हटेगी। विदेशी माल की आमद कम होगी। अत: देशी माल की खपत सुपीरियर लाइन शुक्ल पक्ष में
ोने से नयी खंडसारी में तारुणी करना लाभप्रद रहेगा। खास तौर से अष्टमी शुदि में तेल व पाउडर में नरमी
आने का योग बनेगा और चावलों की मांग घटेगी। वायदे आलू में जब भी ऊँचा भाव बने सट्टे बेचो पर गुड़
में शुदि दशमी को गुरुवार पिछले के बने नीचे भाव कटें तो बेचना न कटें तो लेना। ४ ही दिन में ७८ से १) ४०
या सवाई लाइन चलेगी। यहाँ खल लेना, देशी घी, चीनी, ऊँचे में बेचना पर सूत, रुई लेना। सूरजमुखी की
कीमतें शुदि में ७ के बाद बढ़ेंगी।

मंगशिर—में ५ शनिवार ५ ही रविवार हैं। इस माह में तमाम महीने सुपीरियर लाइन प्रथम वृश्चिक
राशि में बाद बदि १० से धनु राशि पर बुध रहेगा। उपरोक्त सुपीरियर लाइन की विशेषता है कि प्रथम तो
वृश्चिक राशि में बदि ९ तक असर तेजी का करेगा बाद १०वीं से पूर्व की लाइन एकादशी से पलटने लगेंगी।
सोने, चांदी की लाइन या तो जोरदार चलेगी या भाव पड़ जायेंगे। अगर १० के बाद एकादशी भौमवार के १२।
बजे से तेजी न चले मोटी मंदी ५ दिन की आकर बाद तेजी चलेगी। विपरीत में विपरीत लाइन जानें। बस ऊपर
लिखे समय पर परीक्षा कर व्यापार से लाभ उठाना। खल की लाइन २) ५० से ३) १५ की मंगशिर बदि मंगला

चौथ से तेजी की चलेगी। पर तैयारी में विशेष रूप से तेल मूँगफली में मंदी होगी। सूरजमुखी में तेजी पर पीपरमैंट, आमला, सत-विरोजा में तेजी की चाल चलेगी जो खासतौर से अमावस्या तक चलकर वनफोर रियक्शन आगे ४ दिन में ही आयेगा पर रियक्शन लेवा को लाभ देगा। एक ध्यान रखिये गुजराती मांग मीठे व गुड़ में बदस्तूर बनी रहेगी। सूर्य वर्गोत्तम में बदि १४ से ३ दिन के लिये आते ही सूर्य के अधिकार की वस्तु तथा अमचूर, धनियाँ, जीरा तथा रोली मौली तथा रंगों में तेजी आयेगी और कैमीकल व रसायनों में मूल्य बढ़ेंगे। हाईड्रोजन लेने का टाइम अब है तथा अमोनिया बाईकार्ब, ब्लीचिंग पाउडर साथ ही ग्लेसरीन के भाव बढ़ेंगे। अन्य वायदों में भाव मजबूत की ओर जायेंगे। मंगशिर शुदि में तृतीया क्षय जोरदार तेजी कारक, गुजरात, मारवाड़, महाराष्ट्र की मांग बढ़ेगी। अत: उत्तर की मंडियों में इस फसल की वस्तु दाल, मूंग, उड़द में तेजी तथा शेयर मंदे, क्योंकि इसी के साथ दूसरी चाल मकर का शुक्र सूर्य-बुध से आगे कच्ची रुई, बिनौला में भी तेजी का बोलवाला साथ ही सोडा ऐश, वोरेक्श, हाईड्रो, पीपरमैंट, कपूर, नील का भी स्टॉक डेढ़ दो ही माह में लाभ। इस माह में सूत, रुई, खल का स्टॉक तो करना ही साथ ही बोरी, बारदाना, सुतली, बुहारी का स्टॉक शुदि पंचमी तक कर लें क्योंकि धनिष्ठा के प्रथम चरण में गुरु महाराज हल्दी, चना, उत्तम क्वालिटी दालों में भी चांस देंगे। आलू वायदे में मंदी। वक्री बुध जब शुदि ८ रविवार को प्राईवेट में होगा तब प्रथम तेजी पूर्व रहकर बाद में मंदी रहेगी। बदि ८ की वक्री होकर बुध देव मंगशिर शुदि १२ गुरु की रात को बुध अस्त हो जायेंगे तब वायदे गुड़ में भारी मंदी १५ दिन में करेंगे और पनघट तथा वैजीटेबिल, देशी घी, चीनी, खंडसारी में भी मंदी का श्रीगणेश होगा। ज्योतिष शास्त्र में बासमती चावल, लाल किला परमल, सेला में ज्यादा मंदी आयेगी। बुध एकमात्र व्यापारियों को लखपति बना देता है। बुधास्त पर २०१ मंदी ५१ तेजी डालेंगे तो भी लाभ होगा पर बुधास्त की डेट के डिफरैंश के कारण एकादशी को द्वादशी के नजराने और न फलैं तो त्रयोदशी की भी गली जरूर डालें। कत्था, इमली, अमचूर तथा क्रीम, घी, नाग केशर, पीपलामूल, कासनी, कुलंजन, हरड़ में एक मंदी जोरदार आयेगी।

पौष—में देशी घी, मिल्क पाउडर जैसे रजत इन्डाना, समस्त मिल्क फूड, क्रीम, घी, डिब्बा, इंडाना-श्वेता, अतुल, मोहन व फूल मार्का तथा किसान में एक मंदी पौष बदि में चावलों के साथ तथा वैजीटेबिल के संलग्न आयेगी। सोने, चांदी के भाव भी बदि १ से ४ मंदी, बदि ५ से ८ तेजी, मिती ९ से ११ तेजी पर बदि १२ से एकदम चांदी में ७ से २८ रु॰ की मंदी आयेगी।

नोट—अगर बदि १२ को १२ से १॥ के मध्य मन्दी न चले तो फौरन सौदा काटकर डबलकर देना चाहिए ये ही इस माह का खास चांस है। बदि १ से ९ में मार्केट पड़े रहेंगे पर ज्यों ही नौमी भौम श्रवण पर आयेगी दशमी बुधवार से एक सप्ताह में तेजी खड़ी आयेगी। पर विशेष नोट है कि बदि १२ को १ ब॰ २२ मि॰ से तेजी न चले तो अभी लिवाली से ता॰ २ जनवरी १९९८ तक दूर रहना। इस माह में हाजिर गुड़ में भयंकर मंदी का श्रीगणेश होगा। पौष बदि ३ भौम को बेचो अगर आज पिछले शुक्र के नीचे बने भाव न कटें तो अच्छी मंदी शुक्रवार बदि ५ तक आकर रियक्शन तेजी का आयेगा। खल मंदा, तेल तेजी पर जायेगा। इसी टाइम में चावलों में एक सप्ताह की मंदी बदि ११ से आयेगी। देशी घी, मिल्क पाउडर मंदा होगा, गोंद, सूखे मेवों, धनियाँ, पोस्तदाना तथा इलायची, जीरा, सौंफ में मंदी आने पर खरीदना, डूबे भाव में बेचना नहीं सिर्फ तारुणी कर सकते हो। काजू, मिश्री, मेथी, बादाम की मंदी बदि में आकर शुदि ४ से हर शुक्र-मंगल में चालू लाइन के ऊँचे-नीचे भाव बनते ही चले जायेंगे। क्योंकि पौष शुदि में नौमी क्षय इन्फीरियर लाइन आगे तेजी का बिगुल बजा रहा है। अत: इलायची दाना, लाल मिर्च, जीरा, धनियाँ, कश्मीरी मेवे व पाकिस्तान से आने वाली चीजें साथ ही केशर, चाय, गोला, लौंग, दालचीनी तथा गोंद में स्टॉक बढ़ाना आगे २ माह में ही लाभ होगा। बने मसालों के डिब्बों में १॥ माह में मोटी तेजी आयेगी। चुन्नी, अरहर, मटर, दाल, मूंग व उड़द तथा सोयाबीन की मंदी का झटका आगे माघ में ही लाभ हो जायेगा। विशेष रूप से मैटीरियल, सीमेंट के भाव पौष में रहेंगे परन्तु महुआ में तेजी धीरे-धीरे बढ़ने लगेगी। माघ शुदि में चन्द्र दर्शन बुधवारी बुध की तमाम वस्तुओं में तेजी का दौर बढ़ेगा। आगे गुरुवार को पिछले सोमवार के ऊँचे भाव कटें तो तेजी न कटें तो मंदी। ५ दिन

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

का चांस खल, विनौला, अरंडा, सींगदाना, गुड़, आलू में जानें। चीनी, चावल, चांदी, चमेली, अभी इस माह स्टॉक न करें पर गुलाबी रंग की वस्तु, गुलाल आदि का स्टॉक शुदि ११ से अगले दिन प्रारंभ करें, मेथी, किरयाना की बहुधा वस्तुओं में स्टॉक करना न भूलें। गल्ले इस माह में मंदे परन्तु स्टॉकिस्ट आगे लाभ उठायेंगे। सोना में तेजी पर चांदी, एल्मोनियम, कॉपर के भाव पड़े रहेगे मंदी में लेना। इस माह में एक बात यह है कि वायदे में ज्यादा असर बुध का होता है। भूले धनुषि बुध एकादशी की रात को भयंकर मंदी कारक है पर इसी के अपोजिट कुंभे गुरु जोरदार तेजी कारक है। इस वास्ते खल, गुड़, तेल सरसों तथा कॉपर बम्बई, अरंडा में पृथक-पृथक लाइनें चल सकती हैं। जिधर की लाइन गुरुवार मध्याह्न से चले उसी ओर विद् आऊट रियक्शन ५ दिन मार्केट चांदी, सोने में भी चलेगा। अगले माह में रियक्शन आयेगा क्योंकि यह महीना जनवरी १९९८ का समाप्त हो रहा है। समाप्ति पर चना, चोबचीनी जरूर लेना जिसका लाभ आगे होगा।

माघ—इस माह में ५ मंगल ५ ही बुध हैं। ज्योतिष शास्त्र में ५ बुध होना तो व्यापारियों को मालामाल करेगा बहुधा बुध की वस्तुओं में ऊँची तेजी गुजरात, महाराष्ट्र, जैसलमेर, बाडमेर से मांग खंडसारी व अन्य वस्तुओं की चलेगी, पर तारुणी करने वाले लाभ उठायेंगे। यह सांकेतिक चांस न समझना बल्कि ठोस समझना। पांच मंगलवार तथा बदि २ की रात को शुक्रास्त होना तथा बदि ५ मिति की रात को २७ घड़ी पर कुंभे भौम बदि १२ की रात शते भौम, शुदि ७ को बुधास्त और माघ शुदि १५ को पू॰ भा॰ भौम का नक्षत्र संक्रमण ये सभी घटाघूम यत्र-तत्र वर्षात करते हैं। बदि १, बदि ६, बदि १४, शुदि ६ व ७, शुदि १३, चौदश। इन सभी अवसरों पर वर्गोत्तम चन्द्र के हैं, अच्छी चाल नये भाव तेजी के चांस सम्पन्न होंगे। श्री सूर्य भगवान् भास्कर का वर्गोत्तम इस माह में लगते माह से बदि ३ तक सोने व सूर्य की अधिकृत तमाम वस्तु खुशबूदार शृंगार के सामान तेल, मूंगफली में तेजी आयेगी। शुदि ७ से ४ दिन में भौम के अधिकार की तमाम वस्तुओं में तेजी जोरदार आयेगी, यहाँ सुवर्ण पर भी असर पड़ेगा क्योंकि भौम लाल वस्तुओं का स्वामी होता है। बुध का वर्गोत्तम बदि १४ से ४ दिन में चलने से तेजी आयेगी। बुध की वस्तु जैसे हरी दाल, अन्य दाल, धान्य और भी मंदी वाली वस्तुओं में लम्बी तेजी या रियक्शन की तेजी तो जरूर ही आयेगी। इस माह में विशेष रूप से मकर की बड़ी संक्रान्ति भूखी बैठने से सूर्य का वर्गोत्तम ३ दिन चलेगा। सोना, लाल वस्तु तेजी के साथ-साथ मसाले पिसे हुए, अच्छे ब्रांडों में और देगी मिर्च, हींग, मेथी, काली मिर्च तथा जीरा, हल्दी, चना, गेहूँ के पड़े भाव भी, केमिकल, पीपरमैंट, तेल के साथ शृंगार के सामान में भी बदि ३ से ४ दिन में तथा बदि ११ से ३ दिन में और शुक्ल पक्ष में प्रतिपदा से २ दिन, शुदि में ७ से ४ दिन में जोरदार लाइन चलने की पूर्ण सम्भावना ही नहीं बल्कि घंटों में खत्म होने वाले चांस जैसे गुड़, आलू, रूई, हल्दी, खल, चूरी में शुदि ७ को दूसरे दिन की १०० तेजी से २०० मंदी डालना। काश अष्टमी शुदि में तेजी-मंदी नजराने नहीं फलै तो दूसरे दिन की भी डालकर लाभ लें।

फाल्गुन—५ गुरु ५ शुक्रवार हैं। इस माह में मार्केट स्थिर पड़े रहेंगे तथा गेहूँ, चना, जौ, मटर, बेझड़ तथा रुई की आखिरी तेजी आकर मार्केट स्थिर होगा। फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा को कुंभे सूर्य ३९ घड़ी पर तेजी कारक है परन्तु दोज को अगले दिन ही अस्त गुरु भारी मंदी कारक है इसलिये फाल्गुन बदि ३ शनिवार को गुड़, चना, खल, हल्दी, कॉपर, अरंडा में १ बजे तक जिधर की भी लाइन चले वही लाइन सीधी १० दिन तक चलेगी। चांदी, सोना में बार-बार मंदी का झटका आकर तेजी की लाइन चलेगी। विशेष रूप से सरसों, एसिड ऑयल में फाल्गुन बदि २ के बाद मंदी चलेगी। सोफ मंदी, मूंग वदी में तेजी का उछाला आयेगा। अगर फाल्गुन में वदि ३ को लिखे अनुसार न चलै तो फौरन सौदा डबल करके लाभ उठाना। शेयर कॉपर बम्बई में तेजी बदि ५ से आयेगी अगर षष्ठी को शुक्रवार बीते के बने भाव क्रॉस न हों तो एक और झटका ४ या ७ दिन में आकर मार्केट में बाद चाल हमारे लिखे अनुसार जानना। विशेष रूप से कॉपर बम्बई तथा स्टैन्डर्ड शेयर हैं उनमें बदि १२ से तेजी आयेगी। घी असली की मंदी शुदि फाल्गुन की द्वितीया से समाप्त होने लगेगी साथ ही यहाँ मोटे चावलों की भर्ती भी लाभ देगी क्योंकि भौम अस्त शुदि २ को होने से समस्त लाल वस्तु भी तेजी पर जायेंगे पर कुछ वस्तु चीनी व सफेद वस्तु, मणि, मोती तथा कपूर आदि में तेजी आयेगी। इसी उपरोक्त अवसर पर हल्दी में लास्ट तेजी आयेगी तथा अखाद्य तेलों में तेजी आयेगी। सूरजमुखी बोरी, बारदाना ... मंदी के झटकों में लेना अच्छा रहेगा। नेपाली वस्तुओं में तेजी का योग बनेगा। शीरा, तम्बाकू में भौमास्त पर तेजी ... फिर लास्ट महीने तक कर्ब रेटों में ... दिन भी चल गई तो ४ या ६ दिन तेजी आकर २ दिन रियक्शन आकर फिर लास्ट महीने तक कर्ब रेटों में ... बनती रहेगी। फाल्गुन शुदि षष्ठी का टूटन भी कुछ वस्तु में तेजी कारक है जो भी वस्तु मिट्टी से सुवर्ण तक तेजी के लिये खरीदोगे लाभ होगा। अतः मंदी के झटकों में लेना फौरी लाभ न भी हो तो भी स्टॉक रखना। फाल्गुन शुदि ९ महुआ, चावल, चीनी लम्बे रुख में लाभ देगी पर गेहूँ, चना, जौ, ज्वार तत्काल लाभ देगा। ... शुक्रवार को पिछले भौम के नीचे भाव जिस वस्तु व्यापार सट्टे में न कटें उसी में तेजी आयेगी पर नीचे भाव कट जायें तो मंदी का चांस निकलेगा ५ दिन में लाभ उठाना।

चैत्र—यह १५ दिन का पक्ष फाल्गुन की चालू लाइनों को बदस्तूर रखेगा। बदि पक्ष में मीन संक्रान्ति बदि १ को तेजी कारक है पर बदि २ की रात्रि को उदय गुरु पीली वस्तुओं में लास्ट तेजी लाकर १० दिन के चक्र से मंदी का चांस देगा। गुड़ में बदि ३ को चालू लाइन ही सीधी एक पक्ष चलेगी। खल, तेल में भाव टूटेंगे पर रेवती भौम के बाद यानि चैत्र बदि ६ से आगे मार्केट न टूटे तो ४ दिन तेजी आकर बाद फिर भी मार्केट ४ दिन बाद लौट जायेगा। बम्बई, अरंडा मंदा, सींगदाना तेज, तेल में स्थिरता, ये तीनों आइटम पृथक-पृथक चलने की संभावना है पर इस पक्ष में तेजी-मंदी के चांस घंटों में खत्म होने वाले चांस भी नहीं हैं। चांदी में बदि ८ शनिवार को मंदी ३ दिन में लाभ देगी यानि यहाँ मंदी आने पर लेकर हाथों-हाथ लाभ उठाना। चैत्र बदि १४ को शनि अस्त होने से शनि के अधिकार की वस्तु तिलहन में जोरदार मंदी आयेगी और बीच-बीच में तेजी के रियक्शन भी आलू में लम्बी तेजी आयेगी पर कब-कब लाइनें चलेंगी इसका विवरण सोने-चांदी शेयर की लाइनों का विवरण अगले सं॰ २०५५ विक्रम के लेख में पढ़ना।

पीतल पर संवत् २०५४ में एक खास तोहफा (संवत् २०५४ का पूर्ण चांस विवरण)

संवत् २०५४ में पीतल पर शुदि प्रतिपदा से लेकर ८ दिन मार्केट स्थिर रहेंगे पर ज्यों ही देवी की अष्टमी बीतेगी तभी से अगले दिन रामनवमी को पश्चिम में बुधास्त होगा तभी दशमी गुरुवार को अजमाइये और मोटी लाइन से २ माह में व्यापार से मोटा लाभ उठाईये। यहाँ से पूर्ण २ माह तेजी लाइनें ५५ रु॰ की चलेगी यह लाइन जेठ शुदि नवमी तक चलेगी। इसके बाद मंदी की लाइन भादों शुदि ४ तक चलेगी। इस पीरियड में मायूसी सख्त छा जायेगी तथा हर ऊँचे भाव में बेचान बोलना चाहिये। आगे भादों शुदि ५ से ५ या १० दिवसीय तेजी आकर १५ दिन आगे मार्केट कार्तिक बदि द्वितीया तक मार्केट स्थिर रहकर भविष्य में २७ दिवसीय तेजी आयेगी बाद में पौष बदि ३ तक या तो मंदी जोरदार आयेगी या नई चाल न निकलकर तैयारी में स्थिरता नजर आयेगी पर इस ऊपर टाइम में फूट का जब भी मंदी का धमाका आये लेना बाद फाल्गुन वदि ५ तक तेजी आकर पूर्ण संवत् २०५४ तक मार्केट गिरेंगे।

॥ श्री ओंकाराश्रम के चांस स्पेशल प्राप्त करें ॥

क्योंकि ऊपर नीचे भाव बाँधकर सट्टे, वायदे, हॉजिरी के चांस दिये जाते हैं, भावों की लिमिट पास होने पर व्यापारी मोटी झांकी में न आने से मोटी हानि से बच जाता है। (ओंकाराश्रम व्यापार अनुसंधान केन्द्र) सन् १९६८ से शांडिल्य भविष्य पूरे वर्ष का छापता है। एक वर्ष के दैनिक चांस अन्य चांस सारांश छपता है, मूल्य ६१ रु॰। सन् १९६८ से प्रांतीय समाचार दैनिक चांसों से संलग्न चन्दा एक वर्ष के ७५ रु॰ है, वायदा चांस एक माह १५१ रु॰ है, हाजिर चांस एक वस्तु एक वर्ष की चांस फीस ३५५ रु॰, छः माह २२५ रु॰, तीन माह १५० रु॰ है। ये सभी स्पेशल चांस हस्तलिखित भावों की लिमिट बाँधकर भेजे जाते हैं, फीस अग्रिम भेजें। वी.पी.पी. नहीं करते हैं। चांस प्रत्येक में गारंटी है। चांस फोन ३१२२३८ हापुड़ से कोई भी सम्मति फ्री प्राप्त करें।

पता—ओंकाराश्रम, ब्रह्मणान स्ट्रीट, प्रो॰ ओंकार दैवज्ञ, पो॰ हापुड़, जि॰ गाजियाबाद (यू॰पी॰)
कोड नं॰ ०१२२, फोन : कार्यालय : ३१२२३८

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली - 110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार भविष्य संवत् २०५४ विक्रमी

लेखक : श्री रामावतार गुप्ता व्यापार भूषण, पो. खोरी, जिला रिवाड़ी-१२३१०१ (हरियाणा)

चैत्र शुक्ल पक्ष--संवत् का राजा मंगल तथा मन्त्री सूर्य होगा। संवत् में आवरेज वर्षा की कमी तथा
प्राकृतिक कारणों से समय-समय पर व्यापक नुकसान की सम्भावना रहेगी। इस पक्ष में रुई, घी आदि में खास
तेजी के झटके आ सकते है। चैत्र-बैसाख के महीनों में तिलहन पदार्थ, चणा आदि लाल रंग की वस्तुएँ, मजीठ
आदि का स्टाक आगे भाद्रपद-आसोज मास में अच्छा लाभ देगा। परन्तु ध्यान रहे कि उपरोक्त वस्तुओं में जो
मन्दे स्तर पर चल रही हो उसका स्टाक विशेष लाभकारी सिद्ध होगा। सुदी चौथ मेष राशि में सूर्य + बुध +
शुक्र का राशि योग अनाजों में तेजी का रुख लायेगा। घी, चावल, चाँदी में तेजी को सपोर्ट करेगा। तारीक ८
से ११ अप्रैल तक किसी भी दिन जिस इलाके अथवा प्रान्त में वर्षा हो तो वहाँ पर वर्षाकाल में निसन्देह उत्तम
वर्षा होगी। तारीख १२ अप्रैल को यदि सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त आकाश बादलों से ढका रहे ऐसा अच्छी तरह
विचार करके गेहूँ आदि अनाज का स्टाक करें। श्रावण मास में बेचने से लाभ होगा। सुदी छट पन्द्रह मुहूर्ती
संक्रान्ति अनाज तथा रस पदार्थों के भावों में तेजी को सपोर्ट करेगी। सुदी अष्टमी मंगलवारी--

"चैत्र सुदी आठें दिना मंगल या बुधवार। जदी किनारे पर बसो पानी के आधार॥" *(भविष्य भारती)*

इस योग से आगे वर्षाकाल में वर्षा की कमी का संकेत मिलता है। सुदी १० शनि का उदय-मूंग, दलहन,
लहसुन, काली वस्तुएँ बिजली के सामान में तेजी। तिलहन में गिरावट। रुई में अच्छी घट-बढ़ चलेगी तथा दो
मास के अन्तर्गत रुई आदि में भारी तेजी के योग बन जायेंगे। सावधान, परन्तु रुख देखना भी जरूरी है।

बैसाख मास--मास में वर्षा की न्यूनता रहे। रसायन पदार्थों, रुई आदि में तेजी चलेगी। कृष्ण पक्ष में सभी
खाद्य पदार्थ, दालें, मसाले, अनाज, तेलों, आलू, प्याज आदि में जनरल लाईन तेज रहेगी। बदी प्रतिपदा--

"बैसाखी पड़वा प्रथम दिन बादल निकसै भानु। उत्तम संवत् की यही, है उत्तम पहिचान॥" *(भविष्य भारती)*

बदी चौथ मंगल मार्गी होगा। अपने वक्र काल में जो वस्तुएँ जिस हिसाब से तेज हुई थीं उसी हिसाब से यहाँ मन्दी आ जायेगी एवं आठ दिन के अन्तर्गत रुई में अस्थाई मन्दी के भारी झटके आ सकते हैं। रुख देखना चाहिए। बदी पंचमी दिन १५ के अन्दर हैजा आदि संक्रामक बीमारियों का किसी इलाके में अत्याधिक जोर रहेगा। शुक्र का उदय सुभिक्ष तथा व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी का प्रभाव। अनाजों में विशेष मन्दी का प्रभाव तो धातुओं में तेजी लायेगा। तारीख ३ मई को यदि आकाश प्रबल मेघों से ढका रहे तो अनाज का स्टाक बेचना लाभप्रद रहेगा। मंगलवारी मावस तेजी को सपोर्ट करेगी। एक सप्ताह के अन्तर्गत प्रायः सभी वस्तुओं में तेजी के उछाले। सुदी पक्ष में सोना-चाँदी में जनरल लाईन मन्दी। चाँदी में विशेष मन्दी के झटके आने संभव हैं। सुदी चौथ मार्गी बुध, एक सप्ताह घट-बढ़ ज्यादा रहे। अलसी, अरण्डी, बिनोला, गुड़, मूँगफली के भावों में प्रायः गिरावट तो अनाजों में तेजी। तथा प्रमुख शेयरों में घट-बढ़ ज्यादा रहेगी। सुदी छट दिन ३ के अन्तर्गत सोना-चाँदी में भारी मन्दी के झटके आने के योग हैं, सावधान! तारीख १३ मई को यदि पूर्व की वायु चले या आकाश बादलों से ढका रहे एवं अल्पवर्षा भी हो तो अन्न का स्टाक करके आगे भाद्रपद मास तक अच्छा लाभ मिलते ही शीघ्र बेच देना चाहिए। सुदी अष्टमी बुधवारी अनाजों में मन्दी कारक है। परन्तु वृष राशि पर सूर्य + शुक्र की दिन १५ करीब मीटिंग चलेगी। अतः तेजी का ही बिल पास होगा।

"सूर्य देव भृगुनाथ का एक राशि पर साथ। पकड़ा देती है फसल, महंगाई को हाथ।" *(भविष्य भारती)*

गुरुवारी पूनम मन्दी कारक है परन्तु तिलहन पदार्थों में दिन तीन के अन्दर एक तेजी का उछाला। यदि आज आकाश में बिजली चमके, वर्षा हो अथवा चन्द्रमा पर कुन्डल (घेरा) हो तो मूंग, मोठ आदि दलहन पदार्थों तथा कपास, रुई में तेजी आ जायेगी।

ज्येष्ठ मास--मास में वर्षा योग मध्यम है। तारीख ८ से १० जून कहीं भयंकर वर्षा से जन-धन की हानि संभव। मास में गर्म हवाएँ संक्रामक बीमारियों का प्रकोप रहे। बदी एकम् शुक्रवारी-सुभिक्षकारी है।

"जेठ बदी प्रतिपदा को सोम-शुक्र-गुरुवार। वर्षा हो अत्यन्त ही उत्तम पैदावार॥" *(भविष्य भारती)*

अन्य योगों के आधार पर दिन २० के अन्तर्गत शासन के प्रति जनता में भारी विरोध, हड़ताल, पशुओं में
बीमारी फैले तथा दिन ८ के अन्तर्गत सड़क दुर्घटनाओं में काफी वृद्धि। बदी सप्तमी रुई में अच्छी मन्दी के
झटके शीघ्र ही आयेंगे। यदि इससे पूर्व रुई के भाव तेज चल रहे हों तो यहाँ भारी मन्दी की संभावना रहेगी।
सावधान! बदी नोमी मिथुने शुक्र अनाज, चावलों में तेजी को सपोर्ट करेगा। बारदाना, गुवार, तिलहन में
गिरावट तथा रुई, घी में अच्छी मन्दी कारक भी है। **नोट**--इस मास में रुई में भारी तेजी तथा भारी मन्दी दोनों
के ही योग पाए गए हैं। अतः आजार का रुख देखकर काम करना चाहिए। बदी त्रियोदशी कन्या राशि का
मंगल लाल रंग की वस्तुएँ, रुई आदि में भारी तेजी कारक है। इसके अलावा धातुएँ, सरसों, रेशम, तिलहन
आदि में भी तेजी का संचार होगा। दिन १० के अन्दर चाँदी, रुई में भारी उतार-चढ़ाव संभव। गुरुवारी
अमावस्या को रोहिणी नक्षत्र में सूर्य + चन्द्रमा योग दुर्भिक्षकारी है। इसे खर्पर योग भी कहा गया है। अनाज
में तेजी को बल मिलेगा तथा एशिया महाद्वीप के कई देशों में भारी उपद्रव, आगजनी आदि हो। सुदी पक्ष में
सोना-चाँदी में जनरल लाईन तेज रहे। तारीख ६ जून स्टै.टा. १७।०४ बजे से सात जून १८।०९ बजे तक जिस
इलाके, गाँव, प्रान्त आदि में यदि वर्षा हो तो वहाँ वर्षा ऋतु में अल्प वर्षा योग बन जायेंगे। अर्थात् वर्षा न्यून
होगी। सुदी दोयज शनिवारी आर्द्रा नक्षत्र युक्त है। आज वर्षा होना अशुभकारी है।

"दुतिया तृतीया जेठ सुदी आवै आर्द्रा रिक्ष। वर्षे तो कर्षे नमी दर्से दुःख दुर्भिक्ष।" *(भविष्य भारती)*

सुदी तीज गुरु वक्री होगा। **"गुरु वक्री सुभिक्षं च। गुरु वक्रे स्थिर रोगो।"** सुभिक्षकारी है। अनाज, तिलहन, धातुएँ आदि में व्यापारिक वस्तुओं में शीघ्र ही मन्दी का प्रभाव दिखाई देगा। रुई में खास मन्दी कारक है। राई, तुअर, रेशम में मन्दी के झटके आयेंगे। सुदी नवमी मिथुन संक्रान्ति काल में आँधियों, समुद्री तूफान आदि से जन-धन की हानि संभव तथा मूल पदार्थों, अनाजों में तेजी लायेगी। शुक्रवारी पूनम मिथुने बुध दो सप्ताह के अन्तर्गत भारतवर्ष में अच्छी वर्षा, सोना-चाँदी, रुई में मन्दी के झटके तथा पूर्णिमा को मूल नक्षत्र का भी समावेश है।

"जेठी पूनम मूल रिख जो थोड़ी ही दिसन्त। साख ढहों दिसी नीपजै, तदानीर पलयन्त॥" *(भविष्य भारती)*

आषाढ़ मास--व्यापरिक दृष्टि से यह मास तेजी प्रधान रहेगा। मास में पूर्वी उत्तर भारत, गुजरात, महाराष्ट्र, सौराष्ट्र आदि में भारी वर्षा से जन धन की हानि। बदी प्रतिपदा--

"साढ़ बदी प्रतिपदा को वर्षा बादल गाज। अनावृष्टि दो मास तक महँगा बिकै अनाज॥" *(भविष्य भारती)*

बदी तीज श्रवण नक्षत्र युक्त होने से अनाज स्टाक करने की राय देती है। आगे लाभ होगा। बदी चौथ
सिंह राशि में राहु का प्रवेश होगा। सोठ (अदरक), काली मिर्च, पीपल, दालचीनी, हल्दी, धनियां, किराना
समान तथा तिलहन पदार्थों में आगे निसन्देह तेजी आयेगी। काली मिर्चों में भारी तेजी आ सकती है। सावधान!
बदी छट पुष्ये शुक्र लाख, चपड़ा, सोना, गुड़, पारा, हींग, खांड आदि में दिन सात के अन्दर मन्दी का जोश भर
जायेगा। रेशम, अनाज के भावों में तेजी चमकेगी। बदी एकादशी पुनर्वसु का बुध रुई, बिनोला, चाँदी आदि में
दिन सात के अन्तर्गत अच्छी मन्दी के रियक्सन लायेगा। शुक्रवारी मावस शेयरों में तेजी का झटका लायेगी।
सुदी पक्ष में भारी वर्षा योग कहीं बाढ़ की स्थिति से जनधन की हानि। बुध + शुक्र का योग कर्क राशि में होने
से दुर्भिक्ष कारक तथा अनाजों में घोर तेजी कारक है तथा महावर्षाकारक है।

"बुध-शुक्र दोनों बसैं, चन्दा के घर जाय। तो दारुण दुर्भिक्ष हो, महंगा अन्न बिकाय॥" *(भविष्य भारती)*

योग पर गुरु दृष्टि से अधिक तेजी की संभावना नहीं रहेगी। तारीख ५ से १७ जुलाई तक भारी वर्षा के
योग बनते है। अतः इस दौरान दूर-दूर तक भारतवर्ष में व्यापक वर्षा होनी चाहिए। सुदी तीज बुध... पश्चिम

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अनाज, बिनोला, अरण्डो, सरसों, चाँदी आदि में तेजी कारक तथा रुई, शेयर्स के भावों में गिरावट। खण्ड वृष्टि होगी। अर्थात् कहीं भारी वर्षा तो कहीं वर्षा अल्प होगी। देवशयनी एकादशी यदि आज (कम या अधिक) वर्षा हो जाए तो आगे रेवती में हानि पहुँचाने वाले जीव जन्तुओं का उपद्रव नहीं होगा। अर्थात् फसल अच्छी हो एवं यहाँ से सात मास तक अनाज के भावों में मन्दापन रहे। यदि आज वर्षा न हो तो विपरीत फल जानना चाहिए। शुक्रवारी त्रियोदशी शेयर्स में तीन दिन के अन्तर्गत तेजी के झटके लायेगी। सिंह का शुक्र-अनाज, लाल रंग की प्रमुख वस्तुएँ, मजीठ, घी, चीनी, रस पदार्थों के भावों में वृद्धि करेगा। चाँदी, रुई में प्रथम मन्दी आकर तेजी। वर्षा में कमी करेगा। आषाढ़ मास में समुद्री तूफान आदि से भारी क्षति की संभावना रहेगी।

श्रावण मास—मास में राजनैतिक हलचलें चलेंगी। तिलहन बाजार तेज। रुई में आगे भारी मन्दी आ सकती है। वर्षा की स्थिति ठीक रहे। परन्तु खंडवृष्टि हो। बदी चौथ चित्रा का मंगल दिन १२ के अन्दर किसी क्षेत्र में कोई संक्रामक रोग फैले। अनाज, धातुओं में तेजी कारक है। दोपहर बाद यदि आज वर्षा हो तो आगे अच्छी वर्षा के योग बन जायेगें। तारीख २४ जुलाई को यदि बादल तो खूब हो परन्तु वर्षा ना हो तो प्रत्येक अनाजों में तत्काल तेजी आ जायेगी। वर्षा होने से विपरीत फल होगा। बदी नवमी कृतिका नक्षत्र युक्त है—

"सावन कृतिका नखत में, यदि वर्षा हो जाए। चार मास वर्षा घणी, मन्दा धान्य बिकाए॥" *(भविष्य भारती)*

बदी एकादशी को मृगशिर नखत दुर्भिक्षकारी है। पू.फा. शुक्र वर्षा कारक एक सप्ताह के अन्तर्गत चावल, चाँदी, रुई, उर्द, मूंग आदि दलहन पदार्थ, बाजरा आदि में मन्दी कारक। बदी त्रियोदशी शनि वक्री होगा दुर्भिक्षकारी है। प्रजा को कष्टकारक। तीन मास महामारी रोग तथा प्रायः व्यापारिक वस्तुएँ, धातुएँ तेज तथा तेल पैदा करने वाली खेतियां सूख जाएं। अनाजों में भारी तेजी। यहाँ गुरु भी साथ-साथ वक्री चल रहा है। रुई में खास मन्दी आ सकती है। सावधान! श्रावण शुक्ल पक्ष में तिथि वृद्धि होकर क्षय मन्दी कारक तथा आगे कार्तिक मास में किसी राज्य का मन्त्री मण्डल भंग अथवा फेरबदल हो। सुदी एकम् सोमवारी दुर्भिक्षकारी है। तेजी को बढ़ावा मिलेगा। एक अन्य पोजिशन—

"शुक्र सिंह तुल भौमः हो, मीन होय शनिचार। धूल उड़ै, वर्षा रुकै, महंगा चले बाजार॥" *(भविष्य भारती)*

तारीख १२ अगस्त तक यह योग है। प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में महंगाई का जोश भर जायेगा एवं आंधियों का जोर रहे। परन्तु रुई में आगे एक महीना या अधिक के अन्तर्गत भारी मन्दी आ सकती है। सावधान! तारीख १० अगस्त यदि आज जिस इलाके में सूर्यास्त समय तक वर्षा ना हो तो वहाँ आगे वर्षा की आस छोड़ देनी चाहिए। सुदी १२ स्वाती का मंगल वर्षा में अवरोध, तिलहन में तेजी कारक। ४५ मुहुर्ती संक्रान्ति अनाज मन्दा करेगी। परन्तु अनाजों में घटा-बढ़ी ज्यादा रहे। सोमवारी पूनम एक सप्ताह के अन्दर प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में अस्थाई मन्दी के झटके।

भाद्रपद मास—व्यापारिक दृष्टि से यह मास तेजी प्रधान रहे। बीच में सोमवती मावस मन्दी का प्रतीक भी है। यह मास जनता के लिए सुख सुविधा, आनन्द शुभफलप्रद है। पूर्णिमा को चन्द्र ग्रहण हो रहा है। कुंभ राशि से संबंधित व्यापारिक वस्तुओं में विशेष तेजी शीघ्र आ जायेगी। कपास, लाल रंग की वस्तुओं में कुछ समय आगे काफी तेजी की उम्मीद है। बदी २ से दिन १३ के अन्तर्गत जो वस्तुएँ तेजी पर रहें बेचना तथा मन्दे स्तर पर हो खरीदना। विशेष लाभकारी रहे। बदी चौथ वक्री बुध-दिन १० के अन्तर्गत खाण्ड, बिनोला, मूंगफली, घी, तेलों सभी प्रमुख शेयर्स, अनाज, सोना, चाँदी, धातुओं में तेजी आ जायेगी। बदी सप्तमी वक्री बुधास्त पश्चिमे गल्ला, अनाज, सोना-चाँदी में भारी तेजी के झटके। दो सप्ताह के लिए अस्त होगा। रुई में भारी फेरबदल संभव हो। सोमवती मावस मन्दी कारक। एक सप्ताह के अन्तर्गत प्रायः वस्तुओं में मन्दी के रियक्शन आयेंगे। एवं दिन १२ के अन्तर्गत गुजरात, सौराष्ट्र के इलाकों में भारी वर्षा से हानि तथा रुई के व्यापारियों रुई में मन्दी का ध्यान जमा लें। सुदी एकम् की वृद्धि—

"पड़वा पाँचें चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मन्दी करें, तेजी हो जब छीन॥" *(भविष्य भारती)*

के अनुसार पक्ष में प्रथम गिरावट आकर पश्चात् में तेजी आयेगी। आज का चन्द्रदर्शन तेजी कारक। नशीले पदार्थ, तम्बाकू, घी, अनाज आदि में आगे तेजी लायेगा। धातुओं, रुई, तिलों में मन्दी कारक। सुदी ३ विशाखा का मंगल तीन सप्ताह के अन्दर रुई, कपास, बिनोला में भारी तेजी ला सकता है। सचेत! तारीख ५ से ८ सितम्बर सायं चार बजे तक जिस इलाके में वर्षा न हो वहाँ वर्षा काल समाप्त हुआ समझ लेना चाहिए। जहाँ वर्षा हो वहाँ आगे भी वर्षा योग समझने चाहिए। तारीख १० सितम्बर को यदि दिन-रात आकाश निर्मल रहे तो सूत, सण, अनाज, बिनोला, मटर, गुवार, सोना-चाँदी, गुड़, चीनी, पाट, बारदाना, नमक आदि में पाँच मास तक बाजार जनरल तौर पर तेज रहेंगे। मंगलवारी पूनम को खग्रास चन्द्रग्रहण होगा। राई, मेथी, जस्ता आदि अन्य वस्तुओं का स्टाक चार मास पश्चात् अच्छा लाभ दें। अन्न बेचकर घी, गुड़, तेल, चणा का स्टाक भी आगे लाभ देगा। पीली वस्तुएँ जैसे मक्का, शहद, सोना आदि में चमक बढ़ेगी।

आश्विन मास—बदी एकम् बुधवारी "प्रतिपत्सर्व माषेशु बुधे दुर्भिक्ष कारिणी।" के अनुसार इस पक्ष में सभी खाद्य पदार्थ, दालें, मसाले, तेलों, घी, साग, सब्जियाँ, आलू, प्याज आदि में जनरल लाईन तेज रहेगी। वृश्चिक का मंगल सभी रस पदार्थ, द्रव्य पदार्थ, सोना-चाँदी के भावों में तेजी तथा सोने में विशेष तेजी के झटके तो रुई में दिन सात के अन्तर्गत एक अच्छी मन्दी का झटका अस्थाई तौर पर आ सकता है। बदी पंचमी रविवारी अभी घी में मन्दी लायेगी परन्तु आगे माघ की अमावस्या के आस-पास अच्छी तेजी भी लायेगी।

"आश्विन कृष्णा पंचमी जो होवे रविवार। माघी मावस को अवश्य घी का तेज बाजार॥" *(भविष्य भारती)*

बदी दशमी हस्ते सूर्य दिन १५ के अन्तर्गत हींग, हल्दी, धनियां, गेहूँ, गुड़, खाण्ड के भावों में वृद्धि करेगा। बदी ११ बुधास्त पूर्व घटा-बढ़ी कारक। लाल रंग के पदार्थों में शीघ्र तेजी आयेगी। तारीख २९ सितम्बर को यदि आकाश में बादल हो तो आगे नवरात्रों में वर्षा होगी तथा कार्तिक में रुई, कपास तेज हो जायेंगे। सुदी एकम् गुरुवारी शेयरों में तेजी के उछाले लायेगी। वृश्चिक राशि में मंगल + शुक्र का योग शासनकर्ताओं की दोषपूर्ण नीति से महंगाई तीव्र गति से बढ़ेगी। विश्व के उत्तर-पश्चिमी देशों में कहीं भारी उत्पात, दंगों आदि से भारी जनधन की आशंका रहेगी। सुदी ४ रविवारी—

"आश्विन शुक्ला चतुर्थी यदि आवे रविवार। घी बेचो अन्न संग्रहों आगे लाभ विचार॥" *(भविष्य भारती)*

अनाज का स्टाक आगे निसन्देह लाभकारी रहे। नोट कर लें। सुदी दशमी चित्रा में सूर्य + बुध का योग व्यापारिक वस्तुओं की तेजी में सहायक, कम्पनियों के शेयर्स, हरे रंग के पदार्थ मूंग आदि पर इसका विशेष प्रभाव होगा। सुदी १२ ज्येष्ठा का मंगल-ज्येष्ठा कुजे स्वल्प जल च रोगा। के अनुसार वर्षा में कमी तथा रोगों में वृद्धि होगी। दिन १२ के अन्तर्गत चाँदी मन्दी तथा रुई में अच्छी घटाबढ़ी होगी। पूर्णिमा-दिन सात के अन्दर सींगदाना, एरण्डा, सरसों, तेलों में एक अच्छी तेजी का उछाला तो अन्य वस्तुओं में मन्दी के रियक्शन भी लायेगी।

"आश्विन पूनम को अगर बिजली बादल गाज। नफा मिलेगा चैत्र तक, खूब खरीदो अनाज॥" *(भविष्य भारती)*

कार्तिक मास—बदी दोयज तुला की संक्रान्ति—

"हानि हाथी हेम की तुला राशि गत सूर। सभी तरह के धान्य में तेजी हो भरपूर॥" *(भविष्य भारती)*

के अनुसार अनाज, सोना, गुड़, खाण्ड, रस पदार्थों, लाल रंग के पदार्थ, लोहा, जस्ता, घी, मजीठ आदि में तेजी। पन्द्रह मुहूर्ती तथा खर्पर योग युक्त से अनाजों, रस पदार्थों आदि में तेजी को बल मिलेगा। यदि आज वर्षा हो तो तिल, तेलों, मूंग आदि दलहन पदार्थों का स्टाक चार मास पश्चात् उत्तम लाभ। रविवारी चतुर्थी रोहिणी युक्त है। वर्षा का अवरोध तथा एक सप्ताह के अन्तर्गत रुई में अच्छी मन्दी के रियक्शन आ सकते हैं। बदी दशमी मघा नक्षत्र युक्त है। चार मास के अन्तर्गत अच्छी तेजी निसन्देह आ जायेगी। सावधान! तारीख २५ से २७ अक्टूबर यदि अनाज मन्दा हो तो स्टाक करना अति विशेष लाभकारी सिद्ध होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सुदी पक्ष में घी आदि में जनरल लाईन तेज रहे। सुदी दोयज आज का चन्द्रदर्शन तेजी कारक है। गुड़, तेल, सोना, चांदी के भावों में वृद्धि होगी। वृश्चिक राशि में बुध का प्रवेश रुई, प्रमुख शेयरों में मन्दी आएगी। धातुएँ, अनाज, तिलहन में शीघ्र वृद्धि होगी। सुदी सप्तमी दिन ३ के अन्तर्गत घी, तेलों में रह-रहकर तेजी के उछाले आते रहेंगे। सुदी अष्टमी श्रवण ४ गुरु मन्दी कारक है। दिन १५ के अन्तर्गत अनाजों, धातुओं, किराना, गुड़, खाण्ड आदि में मन्दी लायेगा। बीच-बीच में रह-रहकर मन्दी के झटके आते रहेंगे। मंगलवारी एकादशी तेजी कारक है। पूनम तक घी में कुछ विशेष तेजी के झटके कभी भी संभव होंगे।

''कार्तिक सुदी एकादशी जो नभ बादल छाए। तो आगे आषाढ़ में उत्तम जल वर्षाए॥'' *(भविष्य भारती)*

पूर्णिमा भरणी नक्षत्र युक्त होने से—

''अश्विनी भरणी का बनै पूनम से संयोग। गुवार जुवार मकई मटर महंगाई अरु रोग।'' *(भविष्य भारती)*

आगे सावनी फसल के मालों में सप्ताह दस दिन बाजार तेज रहें।

मार्गशीर्ष मास—इस मास में पांच शनि तथा पांच रविवार हैं।

''मार्गशीर्ष के मास में पांच होंय रविवार। पांच शनिश्चर वार हों तो तेजी होय अपार॥'' *(भविष्य भारती)*

के अनुसार मास तेजी प्रधान तथा अनाजों आदि व्यापारिक वस्तुओं में तेजी चलेगी तथा ईशान कोण के देशों में भारी उपद्रव, अग्निकाण्ड, भूकम्प आदि प्राकृतिक कारणों से व्यापक जन धन की हानि संभव। बदी दोयज वृश्चिक संक्रान्ति खर्पर योग युक्त है। अनाजों में अच्छी तेजी। इस संक्रान्ति काल में तिल, तेल, राल, कांच (शीशा) से बनी हुई वस्तु का स्टाक एक मास पश्चात् बेचने से उत्तम लाभ हो। तारीख २१ नवम्बर को यदि दिन-रात आकाश निर्मल रहे तो आगे बैसाख में अनाज मन्दा, विपरीत स्थिति से बैसाख में अनाज तेज रहे। एकादशी मंगलवारी इसके प्रभाव से आगे डेढ़ दो मास के अन्तर्गत कभी भी सरसों, बिनोला में भारी तेजी कुछ समय के लिए निसन्देह आयेगी। सावधान! बदी त्रियोदशी उ.षा. शुक्र दिन सात के अन्तर्गत गुड़, खाण्ड, सोना-चाँदी, अलसी, रुई में मन्दी कारक तथा रुई में अच्छी मन्दी के रियक्शन संभव हो। बदी १४ की वृद्धि—

''मगसिरं पहले पाख में कोई तिथि बढ़ जाये। कहीं जगत में युद्ध का भारी बादल छाये॥'' *(भविष्य भारती)*

के अनुसार कहीं संसार में युद्ध छिड़ने की आशंका रहेगी। लाख चमड़ा, लोहा, एरण्डा, काली वस्तुएँ, कत्था, पारा, सुपारी आदि अन्य व्यापारिक वस्तुओं में तेजी। रविवारी मावस रुई, चाँदी, बारदाना में तीन दिन के अन्दर मंडी के झटके लायेगी।

सुदी एकम् आज का चन्द्र दर्शन

''जो राशि उगै सोम-शनि एक अचम्भो जिय जोय। छत्र पड़ै दिन तीस में अन्न जू महंगों होय॥''

के अनुसार एक मास के अन्तर्गत किसी राज्य का मन्त्रिमंडल भंग अथवा परिवर्तन होगा तथा अनाज तेज रहे। सुदी तीज का क्षय—

''किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाये। ग्राहक मांगे मूंग घी विक्रेता नट जाये॥'' *(भविष्य भारती)*

के अनुसार मूंग आदि दलहन एवं घी आदि में पक्ष में तेजी रहे तथा बीच-बीच में अच्छी तेजी के उछाले भी संभव हों। सुदी छट उ.षा. मंगल दिन २० में कभी भी रुई में अचानक तेजी के झटके लायेगा। उर्द, तिलहन पदार्थों के भाव भी बढ़ेंगे। सुदी अष्टमी यदि आज आकाश में बिजली चमके (जिस इलाके प्रान्त आदि में) तो वहाँ श्रावण मास में निश्चय ही उत्तम वर्षा हो। सुदी एकादशी से मंगल + गुरु + शुक्र का योग करीब एक मास रहेगा। स्टाक लाभकारी रहे। यथा—

''भौम भार्गव गुरु बसै, एक राशि पर तीन। अन्न भाव मन्दा रहे, संग्रह करो प्रवीन॥'' *(भविष्य भारती)*

मन्दी कारक योग है, परन्तु त्रियोदशी से वक्री बुधास्त गल्ला, अनाज, चाँदी में अत्याधिक तेजी कारक है। ग्यारह दिन पश्चात् उदय हो जायेगा। अतः उदय तक बाजार की पोजिशन देखकर काम करें। रविवारी पूनम बारदाना, जूट, गुड़, तेलों में तेजी के उछाले लायेगी।

पौष मास—मास में पांच सोमवार उत्तम फलदायक, सुख सुभिक्ष, मंदी कारक हैं। मास में खर्पर योग होने से अनाज के भावों में मजबूती बनी रहे तथा तिलहन पदार्थों में सप्ताह दस दिन के लिए भारी तेजी संभव हो। मास में वस्तुएँ मन्दे स्तर पर खरीद करें। आंधियों का जोर रहेगा। बदी तीज शनि मार्गी होगा।

''वक्र चाल चलते हुये शनि मार्गी हो जाए। चालू रुख बाजार का एकदम पलटा खाए॥'' *(भविष्य भारती)*

स्थूल रूप से प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में प्रथम मन्दी का वातावरण तथा रुई में अच्छी मन्दी संभव हो। बदी अष्टमी धनिष्ठा २ गुरु मन्दी कारक। अनाज, तिलहन, पदार्थ मन्दे। बदी नवमी श्रवणे मंगल—

''श्रवण नखत पर जब कभी हो कोई ग्रह क्रूर। अन्न भाव महंगा रहे, गेहूँ तेज जरूर॥'' *(भविष्य भारती)*

परन्तु यहां बुध का उदय भी मन्दी कारक है। अतः अनाजों में घटा-बढ़ी रहे। मन्दी होने से स्टाक लाभकारी। लाल मिर्च, घी, बिनोला के भावों में वृद्धि करेगा। रुई सोने में घटा-बढ़ी रहेगी। बदी एकादशी शुक्र देव वक्री होंगे। रुई, सोना-चाँदी, मजीठ, घी में तेजी कारक है। परन्तु मकर राशि के अन्तर्गत होने से पिछली जो भी लाईन हो बदल जायेगी। रुख देखना भी जरूरी है। इस पदार्थ तेलों आदि पर भी इसका प्रभाव होगा। सोमवती अमावस्या मन्दी कारक है। एक सप्ताह करीब व्यापारिक वस्तुओं में गिरावट आयेगी। अमावस्या मूल नक्षत्र युक्त है। सुख सुविक्षकारी है।

सुदी पक्ष में घी, तेलों में जनरल लाईन तेज रहेगी। एवं कुछ विशेष तेजी के झटके भी आ सकते हैं। सुदी पक्ष में छः (Six Month) मास के अन्दर सोना-चाँदी में धीरे-धीरे अथवा कभी भी भारी तेजी आने के योग हैं। एवं लगभग छः (Six Month) मास के पश्चात् रुई में भारी मन्दी आ सकती हैं। सावधान! सुदी त्रियोदशी घी आदि का स्टाक करने की राय देती है। आगे लाभ होगा। यह एक चांस है। तारीख ३१ दिसम्बर यदि आज से पूर्व गेहूँ के भाव तेज चल रहे हों तो नोट करें कि पांच दिन के अन्तर्गत गेहूँ में भारी मन्दी आ जायेगी। सावधान! सुदी एकादशी कृतिका नक्षत्र युक्त है—

''पोष सुदी एकादशी जो कृतिका नक्षत्र। लाल वस्तुओं में रहे, खूब लाभ सर्वत्र॥'' *(भविष्य भारती)*

के अनुसार लाल रंग की वस्तुओं में तेजी तथा पहली बरसात तक अनाज के व्यापार से लाभ हो। सोमवारी पूनम मन्दी कारक है। सावणी फसल के मालों में तथा किराना में मन्दी आयेगी।

माघ मास—मास में व्यापारिक वस्तुओं में तेजी चलेगी। बदी पक्ष में अनाजों में भारी तेजी चलेगी तथा एक सप्ताह के अन्दर ही पक्ष में शुक्र का अस्त-उदय होना अशान्ति दुःख दुर्भिक्षकारी है। प्रभाव तेजी का ही होगा।

''अस्त-उदय सप्ताह में अगर शुक्र हो जाए। भ्रान्त अशान्त प्रजा रहे दुःख नितान्त अधिकाए।'' *(भविष्य भारती)*

मकर की संक्रान्ति खर्पर योग युक्त है। अतः अनाजों में अच्छी तेजी को बल मिलेगा। पिछले वर्ष संक्रान्ति भी बुधवारी थी। अतः—

''कर्क-मकर दो बहिन हैं बैठें एक ही वार। कै पिरजा को पति मरे, कै पड़ै अचिन्तो कार॥'' *(भविष्य भारती)*

संक्रान्ति समय चन्द्रमा अपोजिशन में होने से कपड़ा, सूत, कपास, तिल, तेल, ज्वार, सुपारी, तमालपत्र आदि का स्टाक चार या पांच मास पश्चात बेचने से अच्छा लाभ हो। बदी तीज गुरुवारी वर्षाकारक तथा जनता में अनेक प्रकार के मंगलकार्य यज्ञादि हों। यथा-

''माघ बदी दोयज या तीज को वृहस्पति वार। उत्तम वर्षा, शान्ति सुख, बढ़ै मंगलाचार॥'' *(भविष्य भारती)*

बदी छट रविवारी अनाजों में भारी तेजी कारक है। बदी सप्तमी पूर्व में शुक्र का उदय बाजारों का रुख तेजी की ओर अग्रसर होगा। नारियल, पंचवर्ण, सूत, रेशम आदि में भारी तेजी लायेगा। चावल, घी में तेजी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बुधवारी अमावस्या तथा उ.षा. बुध अनाजों में गिरावट। अत: अनाजों में पाँच सात दिन घटा-बढ़ी रहे। सुदी एकम् गुरुवारी सुख सुभिक्ष, मन्दीकारी है। यदि इससे पूर्व (२७-२८ जनवरी) से आज दोपहर तक अनाज का बाजार तेज रहे तो नोट करें कि पांच दिन के अन्दर अनाजों में भारी मन्दी आ जायेगी। सुदी चौथ शनिवारी दुर्भिक्षकारी है। यथा—

"माघ मास में आवै चतुर्थी को शनिवार। चोर अग्नि भय, धान्य क्षय, अति दुर्भिक्ष विचार॥" *(भविष्य भारती)*

सुदी सप्तमी मंगलवारी भरणी नखत युक्त शुभ योग भी है। आगे उत्तम फसल का संकेत मिलता है।

"माघ सुदी सातै दिना भरणी नखत विचार। रोग नाश हो धरा पर उत्तम पैदावार।" *(भविष्य भारती)*

रात को बुधास्त पूर्व यहाँ अटके हुए रुई, सोना-चाँदी में घट-बढ़ से तेजी का तूफान मालूम दे। मतलब पाँच दिन तेज। फिर छ: दिन मन्दा। फिर गत दिन तेज। उदय तक इस चांस का उपयोग करें। लाभ होगा। बुधवारी पूनम दिन सात के अन्दर अलसी में विशेष तेजी के झटके। यदि आज आकाश निर्मल रहे तो आगे आने वाले आषाढ़ मास में प्रत्येक अनाज मन्दा रहे तथा वर्षा भी बहुत हो।

फाल्गुन मास— मास मन्दी प्रधान रहे। इस मास में रुई प्रमुख शेयर्स कालीमिर्चों आदि में भयंकर मन्दी के योग हैं। सावधान! परन्तु बदी चौदश से शनि + मंगल योग से शेयरों में तुरन्त चमक आ सकती है। अत: इससे आगे रुख देखना भी जरूरी है। बदी एकम् संक्रान्ति खर्पर योग युक्त है। अत: अनाजों में अधिक तेजी संभव नहीं है। भावों में मजबूती रह सकती है। बदी दोयज को गुरु अस्त मन्दी कारक योग है। प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी आयेगी। यथा—

"फागुन में गुरु अस्त हो अथवा वक्री चाल। मन्दी कारक योग है मन्दा हो सब माल॥" *(भविष्य भारती)*

बदी पंचमी से रुई आदि में पांच सात दिन के अन्तर्गत अच्छी मन्दी के रियक्शन आने के योग हैं। सावधान! शतभिषा नखत पर सूर्य-बुध-गुरु का योग मन्दी कारक है। पक्ष के अन्त तक यह योग है। प्राय: व्यापारिक वस्तुओं के भावों में मन्दी का संचार होगा। बदी चौदश मीन राशि में शनि का प्रवेश मंगल के साथ भी राशि योग बनायेगा। दुर्भिक्ष युद्ध, दंगे कारक योग है। यथा—

"कर्क मीन कन्या मकर जब शनि मंगलवास। युद्ध विकलता भूमि पर अरु धनधान्य विनाश॥" *(भविष्य भारती)*

किन्हीं दो या अधिक परस्पर देशों में युद्ध की प्रबल संभावना रहेगी। तेजी को कुछ बल मिलेगा। शुक्ल पक्ष में घी में कुछ अस्थाई भारी उछाले आ सकते हैं। सुदी दोयज मंगल का अस्त होगा। बाजार मन्दी की तरफ झुक जाएँगे। विशेष प्रभाव अनाज पर होगा। उ.भा. मंगल तीन सप्ताह के अन्तर्गत सोना-चाँदी, चन्दन, चणा, अनाज, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थों के भावों में वृद्धि करेगा। सुदी तीज बुध का उदय पश्चिमे दुर्भिक्षकारी है। अनाज, घी, तेलों, अरण्डी, सरसों, चावलों के भावों में वृद्धि करेगा। परन्तु रुई शेयर्स के भावों में मन्दी कारक है। अत: इनमें घटा-बढ़ी रहे। सुदी अष्टमी रोहिणी नखत युक्त है।

"कुंभ मीन के अन्तरे अष्टमी रोहिणी होय। अल्पवर्षा दुर्भिक्षदुख भारी तेजी अन्न में होय।" *(भविष्य भारती)*

आगे अनाजों में भारी तेजी आयेगी। सावधान! इस योग से प्रथम बाजार एक दम गिर जाता है। फिर धीरे-धीरे बाजार तेज होकर अच्छी तेजी इस योग के प्रभाव से आती है। सुदी नवमी उ.भा. का शुक्र-चावल, मोती, कपूर, सफेद वस्तुओं एवं फल आदि मन्दे होंगे। दिन दस के अन्दर सब्जियों, फलों के व्यापारियों को सीमित व्यापार करना चाहिए। अन्यथा भारी हानि की संभावना हो सकती है। त्रियोदशी मंगलवारी लाल रंग की वस्तुओं के भावों में वृद्धि करेगी।

चैत्र कृष्ण पक्ष—पक्ष में अनाजों में भारी तेजी आ सकती है। घी के भावों में तेजी चमकेगी। इस मास में समुद्र से उत्पन्न होने वाले पदार्थों के व्यापार से लाभ की आशा न रखें। मीन की संक्रान्ति खर्पर योग युक्त है। गेहूँ आदि अन्न, राई, जीरा, अजवायन, किराना समान का स्टाक इस मास में अथवा दो मास पश्चात् बेचने से लाभ हो। बदी दोयज गुरु का उदय दिन १३ दिन तक बाजार रुख में तेजी का संचार करेगा। रुई, सोना-चाँदी, सूत, मूंगफली, सरसों, गुड़, अनाज आदि पर इसका प्रभाव होगा। वर्षा कारक है। बदी पंचमी बुधवारी अनाज तथा घी में तेजी को सपोर्ट करेगी। यथा—

"चैत्र बदी पाँचै दिना मंगल या बुधवार। गेहूँ अरु घी में तेजी चले बाजार॥" *(भविष्य भारती)*

अत: अच्छी तेजी भी संभव हो। आगे चाँदी में भी अच्छी तेजी के उछाले संभव हों। बदी सप्तमी यदि आज आकाश में बादल छा जाए आगे लाल रंग की वस्तुएँ, जैसे—लाल मिर्च, गुड़ आदि में मन्दी आ जायेगी। त्रियोदशी वक्री बुध-रस पदार्थों में तेजी लायेगा। घी, चावल, चीनी में प्रथम तेजी लाकर मन्दी लायेगा। बदी चौदश शनि का अस्त तेजी कारक है। रुई, अलसी, सरसों, पाट, कुप्टा, बारदाना, फल-फूलों, चाँदी, सुगन्धित पदार्थों में तेजी लायेगा।

नोट—यह लेख ग्रहों के दृष्टि सम्बन्ध, राशि परिवर्तन, वक्री-मार्गी, उदयास्त, तिथी, वार, योग, ग्रहों के नक्षत्र, चरण परिवर्तन आदि अन्य महत्त्वपूर्ण योगों के आधार पर लिखा गया है। होना न होना ईश्वराधीन है। एक ही समय में एक योग तेजी का तथा दूसरा योग मन्दी का हो तो बाजार का रुख देखते हुए काम करना चाहिए। **लाभ-हानि में हमारी किसी भी स्टेज पर कोई जिम्मेवारी नहीं होगी यह ध्यान में रखना चाहिए।**

आवश्यक सूचना—हमारे लेखों से लाभान्वित होने पर हजारों व्यापारियों ने हमें प्रशंसा पत्र भेजे हैं। हम इस सूचना के माध्यम से उनका आभार प्रकट करते हैं। यह लेख बहुत ही संक्षेप में लिखा गया है। पूरा ब्यौरा सिलसिलेवार साल भर का जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक "भविष्य फल प्रकाश सन् १९९७ ई. का मंगाकर व्यापार में लाभ उठायें। पुस्तक समय से मंगा लें। यह संवत् भारी उथल-पुथल वाला है। भारी लाभ देने वाले कई योग आये हैं।

ज्योतिष शास्त्र के आधार पर बाजार भावों की तेजी-मन्दी के बारे में विश्लेषण एवं पूर्वानुमान से सम्बन्धित यह पुस्तक गत् ४९ वर्षों से लगातार प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में साल भर की दैनिक तेजी-मन्दी, मासिक विश्लेषण, माल स्टाक करने के उचित महत्त्वपूर्ण मौके, माल खरीदने-बेचने की महत्त्वपूर्ण लाभकारी तारीखें (प्रत्येक मास की) अनाज, किराना, तिलहन, सरसों, सोना-चाँदी आदि धातुएँ, शेयर्स गुड़, खाण्ड, घी, रस पदार्थ, आलू, प्याज, लहसुन, रुई, पाट, बारदाना आदि। सभी व्यापारिक वस्तुओं के स्पेशल चांस (वर्ष भरके) अलग-अलग वस्तुओं के प्रकाशित किये गये हैं। इसके अलावा शकुन प्रसिद्ध ज्योतिषियों के व्यापार सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण लेख चांस भी प्रकाशित किये गये हैं। मूल्य ७५ रु. प्रति कापी, डाक व्यय रु. १० अलग = ८५ रु. मनीआर्डर द्वारा/पोस्टल आर्डर द्वारा भिजवायें। मंगवाना न भूलें। आज ही आदेश भेजें।

हमारी दूसरी पुस्तक "भविष्य भारती" अर्घकाण्ड सम्बन्धी, अद्भुत कविता पुस्तक (टीका सहित) जो कि हिन्दी के दोहों के रूप में है। इस पुस्तक में ज्योतिष के योगा-योग (फार्मूले) दिये गये हैं। यह लेख भी इसी पुस्तक के आधार पर लिखा गया है। यह पुस्तक प्रत्येक वर्ष हमेशा काम आयेगी। मूल्य ४५ रु. सजिल्द ५० रु. डाक खर्च ५ रु. अलग। पुस्तकें वी.पी. से मंगाने के लिए ३५ रु. का मनीआर्डर अग्रिम भेजें। यह आवश्यक है। अपना पता हर पत्र में हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा में पिन कोड सहित लिखें।

१. प्रकाश पुस्तकालय, मु.पो.-खोरी, जिला-रेवाड़ी (हरियाणा) पिन-१२३१०१

नोट—उपरोक्त पते से आपको कोई जवाब नहीं मिलता है तो निम्नलिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें।

२. पता : श्री रामावतार गुप्ता, आर्य समाज रोड, राव उमराव सिंह मार्केट, नई सब्जी मण्डी, रेवाड़ी-१२३४०१ (हरियाणा)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection